जैनधर्म संबधीगपेला पुस्तकोनु सूचीपत्र.

१ श्री जैन धर्म ग्यान प्रदिपक पुस्तक किमत १॥ रुपया
२ जैन धर्म सिद्धांतसार पुस्तक किमत १। रुपया
३ श्री जैन धर्म ज्ञान प्रकाश पुस्तक किमत १२ आणें
४ श्री रामलक्ष्मण चरित्र कथा युक्त किमत १। रुपया
५ चंदराजाको रास किमत १ रुपया
६ लक्ष्मण बोध नाट किमत १२ आणा
७ श्रीपाल राजाकोरास चार खंडको किमत १० आणें
८जैन शिल्लोका संग्रह किमत ५ आणें
९मानतुंग मानवतीकोरास किमत ०६ आणें
१०रतनकवरकी चोपाई किमत ४ आणे
११भक्तामर स्तोत्र किमत ५ आणें
१२धन्ना शाळभद्र शेठकी चोपाई किमत ४ आणें
१३मंगळ कळसकी चोपाई किमत ४ आणें
१४देवकी राणीको रास (छे भाइनो रास) कि० ४आणें
१५लिलावती राणीकी चोपाई किमत ४ आणें
१६अमरसेन जयसेन राजाकी चोपाई किमत ४ आणें
१७चंदन मलीयागीरीकी चोपाई किमत ४ आणें
१८परदेशी राजाको रास किमत ४ आणें
१९कयवन्ना शाहको रास किमत ०४ आणें
२०महिपती राजा अने मतिसागर प्रधानकी चोपाई किमत ४आणे
२१कांनड कठीयाराकी चोपाई कर्म बंध रास किमत ०४ आणे
२२स्नात्र पूजा तथा वीसथानकनी पूजा किमत ४ आणें
२३स्तवन सझाय संग्रह भाग पहीला किमत ४आणें
२४मेणरहयानी चोपाई किमत २ आणें
२५पांचपदारी मोठी वंदना किमत २ आणें
२६करकंडू आदि चारराजाका चाररास किमत ५ आणें
२७एलापुत्रकी चोपाई अने विमेशेठनो रास किमत ४ आणे
२८श्री जैन काव्यमाला [आठ भाग] किमत १ रुपया
२९ श्रीरामलक्ष्मणजीको रास किमत १। रुपया
३० श्री विषय रतन प्रकाश किमत १२ आणा
३१ हंसराज वछराजको रास किमत ५ आणा
३२ हरीचंद राजाकी चोपाई किमत ४ आणें

॥ श्री अरिहंत परमात्मनेभ्योनम ॥



॥ अथश्री हरीवंस प्रवध ढालसागर लिख्यते ॥



दुहा ॥ श्री जिन आदिजिनेसरु, आदि तणो किरतार ॥ युगलाधर्म निवारणो, वरतावण व्यवहार ॥ १ ॥ शांति सकल सुखदायक, शांतिकरण,संसार ॥ अशंति असुख दु ख आपदा, चारे निवारण हार ॥ २ ॥ नेमनाथ मति निर्मलि, अनामि नमाणव देव ॥ वालब्रह्मचारी प्रभु, सुरनरसारे सेव ॥ ३ ॥ पार्श्वे पार्श्व सारिखो, सुख संपति दातार ॥ क्षुद्रउपद्रव टालणो, नामे सदा जयकार ॥ ४ ॥ वीरस्वामी त्रिभुवन तिलो, गुणमणिनो भंडार ॥ तिर्थंकर चउविसमो, शासणरो सिरदार ॥५॥ काल अतिते जे हुवा, वर्तमान जिन ईश ॥ कोडी दोय केवल धरा, चरण नमु निसदीस ॥६॥ गणहर गोतमगुण निलो, गौतम गुरु यो नाम ॥ गौतमगुरु सर्वमे वडो, गौतम करु प्रणाम ॥ ७ ॥ कामधेनु गौ शब्दथी, तते तरु सुरवृक्ष ॥ ममेयु मणि चिंतामणि, गौतमस्वामी प्रत्यक्ष ॥ ८ ॥ देश देशांतर काइ भमो, मूरखलोक अजाण ॥ घर वेठा हरीपूरिसो, गौतम केरो ध्यान ॥ ९ ॥ ब्रह्माणी ब्रम्हा सुता, सारद मात प्रणाम ॥ करी मागु मति निर्मली, जीम पामु कवि नाम ॥ १० ॥ कविवाणि चारु कही,

जस तूठि तुं माय ॥ तुझ तूठा विण बोलणो, मूरख माहि कहाय ॥ ११ ॥ पढे गुणे मति आगलो, रास सभा सनमान ॥ लहेनिवाजा ताहरा, मोटप मेरु समान ॥ १२ ॥ मात मया करी सांभलो, सेवकनी अरदास ॥ तिमकर जिम पोहचे सहि, माहरा मननी आस ॥ १३ ॥ गुरु नमीए गुरुताभणि, गुरुविण गुरुता नाहि ॥ गुरुजनने प्रगटो करे, लोक त्रिलोका मांहि ॥ १४ ॥ गुरु कारीगर सारिखा, टाके वचन प्रहार ॥ पथ्थरथी प्रतिमा किया, पूजा लहे अपार ॥ १५ ॥ अंधकार अज्ञानता, ज्ञान सलाइ सार ॥ फेरी किया जग देखता, धन्य गुरुना उपगार ॥ १६ ॥ तिर्थंकर गणधर सहु, सारद सुगुरु सकाम ॥ सहु मिलि मुझ आपज्यो, काव्यकला अभीराम ॥ १७ ॥ उतपत्ति श्री हरीवंशनी, हलधर कृष्ण नरेश ॥ नेमी मदन जुग पांडवा, चरित्र भणु सुविशेष ॥ १८ ॥ जादव कथा सुहामणी, जे सुणशे नरनार ॥ सुकृत तणो फल पामशे, नहीं संदेह लिगार ॥ १९ ॥

ढाल १ ली ॥ दश कंधर राजा, चढतो तेज प्रतापे ॥ एदेशी ॥ नहीं संदेह लिगार निरोपम, श्रीहरी वंश वखाणु ॥ उत्तम पुरुषतणा गुण सुणता, थाइ जन्म प्रमाणुं ॥ जंबुद्वीप प्रसिद्ध प्रमाणे, जोयण लाख कहावे ॥ पटकुलगीरीने खेत्रसातशु, शोभा अधिकी पावे ॥ १ ॥ भरत खेत्र जोयणसें पच, छवीसकला

गोठावे ॥ गिरी वेताढ्य विचाल विशेपके, आधोआ
ध कहावे ॥ सोल हजार सुसारदेशमें, आर्य साढापं
चविसे ॥ जिहां जिन पचकल्याणिक होवे, इम जिनम
तमां दिसे ॥ २ ॥ कोसवि नगरी वनवासी, कुवा वा
व विशेपी ॥ गढमढ मदिर पोल पगारक, इद्रपुरी स
म लेखी ॥ राजा राज करत विशेपे, विद्यावत सनूरो ॥
हय गय रथ पायक दल पुरित, राय महा रणसूरो
॥३॥ आयो मासवसत विराजीत, राय सुमुख सरागी ॥
गमतिरग करेवाकारण, नृपतिनी माति जागी ॥ कोइ अ
टाले कोइ माले, नारी तमासे लागी ॥ कौतक जोणुं व
स विगोणुं, हुइ घण अनुरागी ॥ ४ ॥ वीरकोविंदक केरी
नारी, वनमाला सुविशाला ॥ नयणे निरखि हरखि राजा,
राग धरे ततकाला ॥ रुपे रुडी रभा सरशी, वश वर
तावे देवा ॥ आइ इहा हु जाणु ए मुऊ, पास करावं
ए सेवा ॥ ५ ॥ खेली ख्याल बेहाल प्रणामे, राजा
मदिर आवे ॥ मत्रीश्वर उपाय करीने, वनमाला राय
तेडावे ॥ नारी सुसिला पर पुरुषाने, कदिय न आवे
पासे ॥ वायत्तणे बलदेवलनीध्वज हुइ अपुठि नासे
॥ ६ ॥ शीलसुधारी जे ब्रह्मचारी, नारी देखी न चूके
॥ रामचद्रजी सुर्पनखा ज्यु, माथे मारी मूके ॥ नूढे
भुडा दोय मीलता, कोडी अकारज किजे ॥ दीरघ रा
जा चुलणिराणी, केरी उपमा दिजे ॥ ७ ॥ राजाराणी
प्रिततणे वश, भोगवे भोग उदार ॥ विद्युत पाते मरण

लहि तव, हरीवरपे अवतार ॥ त्रिजे प्रहरे के त्रीजे वा सर, त्रण मासे त्रण वरपे ॥ प्रगट उखाणो ए जग जाणो, पुण्य पाप फल वरशे ॥ ८ ॥ नारी विजोगे वि रक्कोविंदक, गह्लिलो गर्व गिमारो ॥ रड्योपड्यो विलव्यो विलखाणो, विक्कल थयो अपारो ॥ तापसरुपी चारित्र पालि, कष्टतणि करी कोमी, स्वर्गसोधर्मेकील्विपीयामे, देव थयो दिन थोमी ॥ ९ ॥ किधाकर्म न कोइ छूटे, काइ राकने राणो ॥ राजा राणि साथे केहिपरे, सालेवेर पु राणो ॥ पहिलि ढाल रसाल रागमे, आणद रगविलासा ॥ श्री गुणसागर सूरिपयपे, सवजुग मिठिआसा ॥१०॥

दुहा ॥ सेवकरुपि देवता, कहे तदा सिरनाम ॥ कु ण कारण सुर उपना, आप प्रकासो स्वाम ॥ १ ॥ अवधिज्ञान करी देखियो, पूर्व भवतर ताम ॥ राजा रा णि पेखिया, युगलपणे अभिराम ॥ २ ॥ अगुठाथि उपनी, अग्नीज्वाल असराल ॥ कालरुप कोप्यो तिहा, आव्यो सुर ततकाल ॥ ३ ॥ मारुतो सुरगति लहे, खे त्रस्वभावे एह ॥ दु खफोड्यो फूटे नहि, तो फिर चिंते तेह ॥ ४ ॥ नरक तणी गति सचरे, पावे दु ख अपा र ॥ एह मतो मनमें धरी, किधो तव अपहार ॥ ५ ॥ साथेलिया सुरतरु तदा, चपापुरी सुर जाय, वनमें मू कि देवता, मनरलियायत थाय ॥ ६ ॥

ढाल २ जी ॥ विसजणासु वाद नकिजे ॥ ए देशी ॥ ॥ आदिनाथनो नदननीको, बाहूबल बलवतजी ॥ भर

तेश्वर भूजवले हरायो, ए वहुलो विरतजी ॥ आ० ॥ ॥ १ ॥ पुत्र पनोता तेहने प्रगटे, तिनलाख गुणधाम जी ॥ सोमजसाथी सोमवसनी, थिरथापन अभिराम जी ॥ आ० ॥ २ ॥ सोमजसा कुवर करमेतो, श्री श्रेयासकुमारजी ॥ आदिनाथने जीणे करायो, इक्षुरस नो आहारजी ॥ आ० ॥ ३ ॥ तेहनो नदन सार्वभौ मजी, तेहनो हुवो सुभुमजी ॥ सुघोपराजा तस पाटे, वैरीकुलनो धूमजी ॥ आ० ॥ ४ ॥ घोषसुवर्द्धन तेह नो नदन, महानद सुनदजी ॥ सुभद्रसुभकर सोमवस मे, उदया पुनमचंदजी ॥ आ० ॥ ५ ॥ को मुगते को सु रगति पामी, एह वसना भूपजी ॥ असख्यातमी पेढी ए उपज्यो, किरतिचद्र अनूपजी ॥ आ० ॥ ६ ॥ नि सतान राजा तव मूवो, दैवतणे सजोगजी ॥ नृप पद वी लायक नहि कोइ, मिलिया सघला लोकजी ॥ आ० ॥ ७ ॥ पचदिव्य करी वनमें आया, सुभट ने मत्रीश जी॥ हरी हरणि युगलपणे देखी, मनमें धरे नगीशजी ॥ आ० ॥ ८ ॥ अबरथी सुरवाणी प्रगटी, सोच करो तुम्हे काइजी॥ चपा नगरीनो भल भूपति, थाप्यो ए ह उछाहिजी ॥ आ० ॥ ९ ॥ राजाराणीनें तुम्हे देज्यो, मदिरा मास आहारजी॥ माहरो वचन न मानशोतो, क रशु साहि संहारजी ॥ आ० ॥ १० ॥ सुर वचने चपापु र नायक, करी थाप्यो सहु तेमजी ॥ वेरी वेरपणुं न वि मूके, अमरख पाल्यो एमजी ॥ आ० ॥ ११ ॥ हरि

नामे राजा तव हुवो, लोक नम्या करजोडजी ॥ पाय
क लायक परीग्रहपूरो, हय गय रथनो कोडजी ॥ आ०॥
॥१२॥ एह थापना हरिवंशनी, वसुधामे विख्यातजी॥
दसमा जिनवरजीने वारे, आगेनी सुणो वातजी ॥
॥ आ० ॥ १३ ॥ हरी हरणीथी नंदन उपज्यो, पृथ्वी
पती गुणधामजी ॥ महागिरी वसुगिरी राजा, उत्तम
नाम प्रणामजी ॥ आ० ॥ १४ ॥ मंत्रिगिरी सुयसा न
र नायक, ए मोटो राजानजी ॥ त्रणखंड पृथ्वी माहि
अखंडीत, वरतावी निज आणजी ॥ आ० ॥ १५ ॥
एवा हरिवंशी नृप हुवा, संख्या रहित अपारजी ॥
किण सुरगति किण सिवगति साधी, सफल कीया अ
वतारजी ॥ आ० ॥ १६ ॥ मुनि सुव्रत स्वामि जगता
रक, राजग्रही हरिवंशजी ॥ मुनि सुव्रत सुत सुव्रत
राजा, वंशतणो अवतंशजी ॥ आ० ॥ १७ ॥ नृपनी नृ
पनो अंतर होता, मथुरापुरी मझारजी ॥ वसु पुत्र व
र बृहतकेतुवर, वंश विभुषण सारजी ॥ आ० ॥ १८ ॥
केतलाएक कालने अंतर, यदुराजा उत्पन्नजी ॥ जेह
थी यादव नाम कहाया, धन ए पुरुष रतनजी ॥ आ०
॥१९॥ यदुराजानो सुत सनुरो, सूर सरीखो रावजी ॥
शाखा प्रतिशाखा हिवे चाली, ते कहेवा चित्त भा
वजी ॥ आ० ॥ २० ॥ बिजी ढाल सुणंता गोरी, दुः
ख दुरमतिनु भाजजी ॥ गुणसागर गुणवंत नमंता.
सिझे सघला काजजी ॥ आ० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ सुरवंश सूरराजाना, नंदन उपज्या दोय ॥ पहेलो सौरी सुलक्षणो, सुवीर विजो होय ॥ १ ॥ सौरीकुमर राजा कियो, अपर कियो युवराज ॥ सूर नृप संजम ग्रही, सारया आतमकाज ॥२॥ सौरीराय सौरीपुरी, वास कियो निज वास ॥ लघु भ्राताने आपीयो, मथुरापुरी निवास ॥ ३ ॥

ढाल ३ जी ॥ इणपुर कंबल कोइ नलेशी ॥ ए देशी ॥ सौरीराय नंदन वखाणु, अंधक विष्णु वडो नृप जाणु ॥ सुविरराय सुत विश्ववदितो, भोजग विष्णु जगमे जस जीतो ॥ १ ॥ रायसुविर मथुरानो राजा, सुतने दिधो जाणीसकाजा ॥ सिंधुदेश जाइ पुरवासी, वास कियो नृप लिल विलासी ॥ २ ॥ अंधक विष्णु कुमर पटथापी, हयगय रथ पायक सहु आपी ॥ सुप्रतिष्ट मुनिपे व्रत पामी, सौरीराय हुवा सिवगामी ॥ ३ ॥ भोजगविष्णु नरेशर राजा, पाले प्रजा ने सारे काजा ॥ उग्रसेन आदिक सुत सूरा, शस्त्र शास्त्रकला गुणपूरा ॥ ४ ॥ अंधकविष्णु घरे पटराणी, रुपेरुडी रंभा समाणी ॥ सुभद्रा नामे गुणखाणी, सतियामांहि अधिक वखाणी ॥ ५ ॥ जाया कुंवर दसहि दसार, पुत्रीदोय अति उत्तम सार ॥ समुद्रविजय गुणनो भंडार ॥ दाता भुक्ता अधिक उदार ॥६॥ अक्षोभ अक्षोभ महारण सूरो, स्तमित नाम कुंवर गुण पूरो ॥ सागर सागर उपमा धारी, हिमतवान सहुने सुखकारी

॥७॥ अचल अचल सग्रामे लहि, धरणिधरसम धरण सग्रहि ॥ पूरण पुरो सघली वात धन्य अभिचव्रत णा अवदात ॥ ८ ॥ श्रीवासुदेव दूगधक देव, जेह नी सारे सुरनर सेव ॥ ए दसही वधवनी जोमी, पू ग्य पसाइ पहुचे कोडी ॥ ९ ॥ समआचारी सघला कहिया, माहोमाहि सप्रिती लहिया ॥ मायवापनि न क्ति करता, वहिनम आशीसे जयवता ॥ १० ॥ वहि न नलि दोइ समसीला, नारयवति अति रुप सुलि ला ॥ कुति रुप कलागुण पात्र, माहेंद्रि महिमावत सुगात्र ॥ ११ ॥ कुतिकुमरि व्याहण काम कवि कु रुवश कहे भ्भनिराम ॥ आदिनाथनो सुत कुरु जाणु, तेहथी कुरुक्षेत्र कहाणु ॥ १२ ॥ कुरुसुत हस्तीराय कहायो, हथीणापुर नल नगर वसायो ॥ हस्ती नृप सतान वखाणु, विश्वविर्ये नरेश्वर जाणु ॥ १३ ॥ तदनतर कुरुवशे वारु, सनतकुमार चक्रीश्वर वारु ॥ शातिकुथु अरजी सुख दाया, दोदो पदवी नाथ क हाया ॥ १४ ॥ इद्रकेतु नृप किरति केतु, शुभविर्य सुविर्य समेतु ॥ रायअनत विर्यकृतविरज, सुभुम च क्रीश्वर अति धिरज ॥ १५ ॥ असख्यात नृप हुवा अनतर, सातनुराय हुवो हथीणापुर ॥ दुखकेदारण साधुउजागर, त्रिजीढालकहे गुणसागर ॥ १६ ॥

दुहा ॥ हस्तिनागपुरवर धणी, पाले राज निश क ॥ पिण राजाने एकए, लाग्यो वमो कलक ॥ १ ॥

साच कहे ए लोकहो, इह लोके अपजस अति पा
मे ॥ अरु विणसे परलोकहो ॥ कु० ॥ २ ॥ मृग सा
थे राजा एकाकी, अटवी माहि आवतहो ॥ गंगा त
ट एक देवल देखी, गाढो सुख पावतहो ॥ कु० ॥३॥
एटले खेचरनी वर कुमरी, अमरीने अनुहारहो ॥ न
यणे निरखी हरखी राजा, चिंतवे चित्त मझारहो ॥
कु० ॥ ४ ॥ के इंद्राणी के हरी राणी, के हर नार उ
दारहो ॥ विद्याधर एक आवी नाषे, सांभल राय
विचारहो ॥ कु० ॥ ५ ॥ जानु सुता ए गगा देवी,
गिरि वैताढ्य निवासहो ॥ ए कुंवरी वर पूछ्यो राजा,
जघाचारण पासहो ॥ कु० ॥ ६ ॥ सातनुराया सीधो
बतायो, गगातट विवाहहो ॥ देवल कीधो कारज सी
धो, स्वामी आणी उछाहहो ॥ कु० ॥ ७ ॥ खेचर ज
इ खेचरपति लायो, माड्यो व्याह मडाणहो ॥ गगा
नाखे तो हु व्याहु, जो मानो मुज आणहो ॥ कु० ॥
॥ ८ ॥ जीम कहीशु तिम करशो राजा, वाद कीया
रसनाहीहो ॥ काम विमासीने धूरे कीजे, अविमास्यो
दुख प्राहीहो ॥ कु० ॥ ९ ॥ काम असोचि कीयोथो
आगे, सूर्यजसा नरनाथेहो ॥ इद्रतणी नाटकणी पर
णी, अरति करी सहु साथेहो ॥ कु० ॥ १० ॥ कणि
क माही पडे जव पाणी, थाये ताम नीकामहो ॥ वा
यस वोटयो कुम्भ अकारज, लोक वचन अभिरामहो
॥ कु० ॥ ११ ॥ पतिव्रता पति साथे न वाऊे, जन्म

अकारज जातहो ॥ ठोकी वजाड घडो लीजे अवर तणी शी वातहो ॥ कु० ॥ १२ ॥ सघली मानी करी पटराणी आव्या मंदिर रायहो ॥ लामीनी लावण्यता निरखी, सहु रलियायत थायहो ॥ कु० ॥ १३ ॥ गगा जायो लोक सुहायो श्रीगागेय कुमारहो ॥ राजा नव नवा कीधा उच्छव जगमाही जयकारहो ॥ कु० ॥ ॥ १४ ॥ गगा वर मागती बोले, स्वामी आहेडो छेडहो ॥ राय न माने पुत्र लेइसा. पिहर गइ मुहमोड हो ॥ कु० ॥ १५ ॥ कुव्यसन वालो वाच न माने मुढ न जाणे मर्महो ॥ नेम न माने प्रेम न माने नवी माने कुल कर्महो ॥ कु० ॥ १६ ॥ मात न माने तात न माने, भ्रात न माने जोरहो ॥ नारी न माने नद न माने, बोले बोल सजोरहो ॥ कु० ॥ १७ ॥ हाथी जेरे हरायो होवे, कीम सामो थया जायहो ॥ नमीए नहीतो नाजी सकीजे, रुसी गइ सा न्यायहो ॥ ॥ कु० ॥ १८ ॥ मात पिता घर नदन शिख्यो, सकल कला गुण वदहो ॥ चउवीसा बरसानो हुओ, नदन आनद कदहो ॥ कु० ॥ १९ ॥ एक दिवस राजा निकलायो, साथे घणा नर वृदहो ॥ गगातटे अति ऊगमो मळ्यो, श्री गागेय नरेदहो ॥ कु० ॥ २० ॥ गगा चिंते दोइ पवाडा, ए मुझ आरति ठामहो ॥ पुत्र मरता निपुत्री प्रीतम, मरता राम कुनामहो ॥ कु० ॥ ॥ २१ ॥ गगा आवी दे समझावी, पाछी गइ ततका

ल्हो ॥ गुणसागर नृप सुत घर आव्या, चोथी ढा
ल रसालहो ॥ कु० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ राजा कुव्यसन नवी तजे, गंगा नावे वा
र ॥ साहुकारी नारीनी, ए सहीनाणी विचार ॥१ ॥
आदरनो नलो कापडो, निरादर स्यो चीर ॥ नली
समुहनी रावडी, महातम विणसी खीर ॥ २ ॥ वालो
सोनु सामटु, वालो नोग विलास ॥ आदर अजराम
र महा, बीजु सहु विखास ॥ ३ ॥ खेचीकुटी कामनि,
लाता वुकाखाय ॥ निःपितामरवाडरे, ते कीम मुह
गी थाय ॥ ४ ॥ तेज नसहे ताजणो, त्रिया नसहे अ
पमान ॥ तिम तिम मूल वाधे घणो, शक धरे राजा
न ॥ ५ ॥ जाय जीवनु रूशणु, गंगादेवी नरेश ॥ ए
क वचनने कारणे, सह्यो न जाय कलेस ॥ ६ ॥ कुवरे
करी नृप सोनीत, कमले करी जिम वार ॥ दिवस क
री दिनकरज्यू, सिलेकरी जिम नार ॥७ ॥ जमुना त
ट नृप आवियो, दिठी कुमरी एक ॥ तनमन लाग्यो ते
हसु, विसरी गयो विवेक ॥ ८ ॥

ढाल ५ मी ॥ बधव वोल मानोहो ॥ ए देशी ॥
राजा प्रेम लगायोहो, लोचन हुवा लालची ॥ लज्या
गुण नाग्योहो ॥ रा० ॥ १ ॥ नयन अन्याइठे खरा,
जिहा तिहा लागेहो ॥ सोच न आगल पाछले, नुमा
पण आगेहो ॥ रा० ॥ २ ॥ कोडी कुहेडा केलवे, ए
केकिमा कुवार्णाहो ॥ चतुरा चहुटे पारिखा, ए मनकी

सहिनाणेहो ॥ रा० ॥ ३ ॥ स्वर्गमृत्य पातालनी, स
ब नारी लुटीहो ॥ जातीथी ऊंची अछरे, अधवचथी
तूटीहो ॥ रा० ॥ ४ ॥ एकहीं अग वखाणता, कवि
पार न पावेहो ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वरू, ए लिला गावे
हो ॥ रा० ॥ ५ ॥ इंद्र चद्र नग राजवी, बलवता ब
लीयाहो ॥ कोई किणरो को नहि, एह माया छलिया
हो ॥ रा० ॥ ६ ॥ नयण न पाछा आवहि, जाणी बा
ध्या ताणीहो ॥ नाविक साथे बोलीयो, राय कोमल
वाणीहो ॥ रा० ॥ ७ ॥ ए कहे केहनी कुंवरी, ढोकर
ते जाणेहो ॥ ए कुंवरी नृप माहरी, राय केरे मुख आ
णेहो ॥ रा० ॥ ८ ॥ सत्यवती नामे भली, सुरतरु
नी वेलीहो ॥ पुण्यवत जे प्राणीया, थाइतसु भेलीहो
॥ रा० ॥ ९ ॥ राय प्रधान बोलावीयो, ए मुझ परणा
वोहो ॥ ढिल किया ढीलो पडे, व्याह वेग करावोहो ॥
रा० ॥ १० ॥ नावडीयो माने नहि, एक अडवी रोके
हो ॥ पुत्री पुत्रा कारणे, नृप पदवी लोकेहो ॥ रा० ॥
॥ ११ ॥ विलखाणो राजा फिरी, निज मदिर आवे
हो ॥ बाप दुचिंतो देखता, कुवर दुख पावेहो ॥ रा०॥
॥ १२ ॥ भक्ति नहि मा बापनी, नवी जाणे पीडाहो ॥
तेतो बेटा जाणवा, पेटना किडाहो ॥ रा० ॥ १३ ॥
जाणी वात सुवेगसु, नाविक समझावेहो ॥ करी दि
लासा तेहने, नृप व्याह मनावेहो ॥ रा० ॥ १४ ॥ रा
ज तणे तो कारणे, सुत बापने मारेहो ॥ गांगेया गुरु

आपणो, गुरु कार्य सारेहो ॥ रा०॥१५॥ माहरो धरणी धरणिनो, हु धणीज कहेताहो ॥ उचा जाइ अवरे, बोले गह गहताहो ॥ रा० ॥ १६ ॥ करी नहि कर शे नहि , को करत न दीठोहो ॥ गुरु गागेया सारी खा, जगमे जस मीठोहो ॥ रा० ॥ १७ ॥ नाविको कुव रसु कहे, एहे नृप कुमरीहो ॥ वेली समां फल नीप जे, एसा नहि अमरीहो ॥ रा० ॥ १८ ॥ सत्यवती सु व्याहती, कीधा रगरोलहो ॥ पचेंद्रि सुख नोगवे, वर पुण्य कलोलहो ॥ रा० ॥ १९ ॥ सत्यवती कूखे उपना, दो नदन सलुणाहो ॥ बाप थकी अधिका हुवा, तेजे करी दुणाहो ॥ रा० ॥ २० ॥ चित्रागद नामे न लो, कुवरजी नीकोहो ॥ चित्रविरज ए दूसरो, कुरु वशी टीकोहो ॥ रा० ॥ ५१ ॥ राजा आहेडो तजी, शुभ मारग आयोहो ॥ साधु सगति चालता, जग मे जस पायोहो ॥ रा० ॥ २२ ॥ पाप खमावी पाळ लो, आतम आराधिहो ॥ काल कीयो धरणि ढली, सुरनी गति साधीहो ॥ रा० ॥ २३ ॥ चित्रागद रा जा कीयो, सब लोका साखीहो ॥ श्रीगागेयनरेश्वरे, नि ज वाचा राखीहो ॥ रा० ॥ २४ ॥ निलागद गाधर्व सु, चित्रागद लडीयोहो ॥ कह्यो न मान्यो नाइनो, स मरागण पडीयोहो ॥ रा० ॥ २५ ॥ माय रोती सुत दु खथी, फिरी सोग मीटायोहो ॥ पाचमी ढाले सांतनुं, गुणसागरे गायोहो ॥ रा० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ सगपण ससारे घणा, भाइ समो नव को य ॥ लक्ष्मण काजे रामजी, कहो केम दीओ गेय ॥ ॥ १ ॥ भीरू पस्या भाइ भजे, भाइ विराणा भाज॥ भरतनृप भर रात्रिमे, दोड्यो लक्ष्मण काज ॥ २ ॥ पुरुषोने नारी घणी, नारीथी सुत होय ॥ मा जाया ब धव हुवे, अतर मोठो जोय ॥ ३ ॥ भाइ वयर वीशो धवा, श्रीगागेय कुमार ॥ निलागद रणमें हण्यो, रा ख्यो कुल व्यवहार ॥ ४ ॥ लघु भ्राता पट थापियो, वरती आण अखड ॥ प्रवल प्रताप महाबली, तस भुज दरू प्रचड ॥ ५ ॥ कासी नृपतिने भली, कन्या तीन प्रधान ॥ अवा बाली अविका, व्याह तणो म भाण ॥ ६ ॥ काशी नृप ते तेडीया, राजा राजकुमा र ॥ गजपुर धणीमे तेडीयो, जाती हिण अवधार ॥७॥

-ढाल ६ ठी ॥ इम जिन पूजीए ॥ ए देशी ॥ आ मण दुमण होइ रह्योरे, गजपुर केरोरे राय ॥ गगासु त पूछ्यो तदारे, जाव नदिणो जायरे ॥ १ ॥ पक्ष भ लो सहि, निपक्षिसिदाथोरे, पक्ष न गजिए, पक्षिणि इ म पायो ॥ प० ॥ ए आकणी ॥ अरति अछुर बाधी घणीरे, गहवरीयो भूपाल ॥ जाणे धरणी विवर दीएरे, तो जइए पायालोरे ॥ प० ॥ २ ॥ जाणी निश्चे वातनो रे, जिपमं जिषम रूप ॥ मुक बइठा लघुता हुवेरे, तो मु रु वमो विरूपरे ॥ प० ॥ ३ ॥ गगासुत चाली ग योरे, काशी नृपने पास ॥ कन्या तीने अपहरीरे,

माञ्यो कुज उल्लासोरे ॥ प० ॥ ४ ॥ नाना लोगा मोचणोरे, बलीया उजड माग ॥ बलीया होड करे जी केरे. नली शिर उपर पागोरे ॥ प० ॥ ५ ॥ हत प्रहत नृपति कीयारे, जीत्यो गगानन्द ॥ कन्या लेइ आवीयोरे, गजपूरमे आणदोरे ॥ प० ॥ ६ ॥ परणावी तीने तदारे, हरख्यो गजपुर इश ॥ पद्म प्रसादे हुइ सहीरे, सफल सकल जगीसोरे ॥ प० ॥ ७ ॥ अबीका कूखे उपनोरे, श्री धृतराष्ट्र कुमार ॥ बाला पाडु जाइउरे, अबा विदूर उदारोरे ॥ प० ॥ ८ ॥ राग वसे आतुर थयोरे, छूट्यां नृपना प्राण ॥ ए दया गति अनुसारथीरे, प्राण लीया घट आनोरे ॥ प० ॥ ॥ ९ ॥ पाडु राजा थापीयोरे, थचण सहु परिवार ॥ पृथ्वी फलदायक माहारे, राजा पुण्य प्रकारोरे ॥ प० ॥१०॥ छठ्ठी ढाल सुहामणीरे, गुणसागर उछाह ॥ नविक जनो तुमे साभलोरे, कुता कुमरी व्याहोरे॥प०॥११॥

दुहा ॥ श्री पाडु पृथ्वीपति, मधु उछवने काज ॥ राजी गाजी वनमे गयो, खेलण केरे साज ॥ १ ॥ खेल खेलता खातसु, एक नर आव्यो नेठ ॥ पलक विलोकन कीजतो, जनो तरुवर हेठ ॥ २ ॥ पलक हाथ राजा लीयो, नारी रूप अपार ॥ सुदरता नख शिख लगे, जोवे वारवार ॥ ३ ॥

ढाल ७ मी ॥ सीताजी दीएरे उलभडो ॥ एदेशी ॥ राजा रज्यो रूपसु, नयन रह्या लोभाय ॥ जोता त्रप

ति न ऊपजे, सोना मुख कही न जाय ॥ १ ॥ ए ज ग माही मोहनी, मोह्यो सहु ससार ॥ पशु पखी न र देवता, वश कीधा इण नार ॥ ए० ॥ २ ॥ पहीले मोह्यो सुरपति, सो लाग्यो इन्द्राणी पाय ॥ इन्द्राणी ला ते हण्यो, तो तस रोष न थाय ॥ ए० ॥ ३ ॥ शंकर स्वअगज ठवियो. राच्यो पार्वती रूप ॥ टेक तजी त्रि या आगले, नाच्यो वरी विरूप ॥ ए० ॥ ४ ॥ राधा रूप रमापति, रमीयो रलियायत होय ॥ रासमरूल रचना कीया ए कौतक प्रगट्यो जोय ॥ ए० ॥ ५ ॥ राजा पुछे पुरुषने ए रूप कहे केहनो होय ॥ कुंति रूप सुहामणो इम भाखे परदेशी सोय ॥ ए० ॥ ६ ॥ खेल सहु ए वीसरयो. वीसारियो सहु काज ॥ क्षुधा त्र षा सहु विसरयो जाणे मिलीए आज ॥ ए० ॥ ७ ॥ कुति कुति कुतिको लाग्यो राजा ध्यान ॥ ऊछे जल जि म माछलो नृप वेदन असमान ॥ ए० ॥ ८ ॥ दीधो दान अनतते पथी सोरीपुर जाय ॥ राजा आगे व र्णवे, गुणवतो गजपुर राय ॥ ए० ॥ ९ ॥ तात गोदे बेठि सुणे कुति नृपना वखाण ॥ रूपकला गुण मन धरयो तव कुवरी कराइ निदान ॥ ए० ॥ १० ॥ के परणु गजपूर धणी के परणु परे भव जाय ॥ अवर पुरुष बधव समा ए निश्चे मन लाय ॥ ए० ॥ ११ ॥ पाडु नृप घर आवियो आहाट दोहट अपार ॥ करे फि रे उचाटीये. न जणावे केहने सार ॥ ए० ॥ १२ ॥ एक

दिवस वनमे गयो, खेचर खील्यो देख॥ आप चिंता तजी पर चिंता, आणी मनसु विशेप ॥ए० ॥ १३ ॥ विरला जाणे परगुणा, विरला पाले प्रेम ॥ विरला पर कारज करे, पर दुखे दुखीया तेम ॥ ए० ॥ १४ ॥ ज रेपरे अवलोकता, खाडो दिठो उदार॥ उपध वलिया दोय नला, एक घाव रुझावणहार॥ ए० ॥ १५ ॥ खी ला काढ्या अगथी, उपधे कीध निरोग ॥ राजा पुछे ए वडो, कीयो तुझ दु ख सजोग ॥ ए०॥ १६ ॥ खे चर कहे सुण मित्रजी, मुझ राणी लीधो को जाय ॥ केड हुवो हु एकलो, तेह कारण दु ख थाय ॥ ए० ॥ ॥ १७ ॥ नि कारण उपगारीयो, हु थारी फिरफीर व लिजाउ ॥ चाम करावु खासडा, तोहि उसीगल नवि थाउ ॥ ए० ॥ १८ ॥ उपध वलिया ए ग्रहो, ए मु द्रडीलीजे स्वाम ॥ बहु गुणगारी ए मुद्रडी, लेइ जा ये वछित ठाम ॥ ए० ॥ १९ ॥ अवसर जाणी काम नो, चित्तमाहि आणावे देव ॥ इम कही सोइ चाली यो, निज स्थाने ततखेव ॥ ए० ॥ २० ॥ मुद्रडी प्र सादथी, मन केरी पहुचे आश ॥ जयति श्रीशुनग ति मति, पामे ते पुण्य प्रकाश॥ ए० ॥ २१ ॥ ढाल सातमीए कह्यो, मिलवा उपाय अपार ॥ गुणसागर उपदेशथी, नवि करजो सर्वने उपगार ॥ ए०॥ २२॥

दुहा ॥ कुती कुमरी चितवे, मन चिंत्या ए काज ॥ दैवन पूरा पाडसे, तो नलो मरवो आज ॥ १ ॥

इम चिंतवि ते नीसरी, गई महावनमांहो ॥ गलफा सो माडी कहे, सुण कुलदेवते प्राहि ॥ २ ॥

ढाल ८ मी ॥ गौतम समुद्रकुमार ॥ ए देशी ॥ तु जई केहेजे माय, माहारा मन तणी, पाडु पृथ्वीपति जणीए ॥ कुंतिकुमरी आज, विरह तुमारडे, प्राण त ज्या विण तु धणीए ॥ १ ॥ इम कही गले पास, मा रे जेटले, सानिध हुई तेटलेए ॥ वर मुद्रनो प्रनाव, मिलवा सुदरी, राजा आव्यो एटले ए ॥ २ ॥ पल क रुप अनुहार, कुमरी उलखी पासो तोडी नाखीयो ए ॥ पदमनिने परसग, आतुरता घणी, नाव हिया नो नाखियोए ॥ ३ ॥ दासी पास मगावी, सामग्री सहू, व्याहतणी विधि साचवीए ॥ पूरो मनना कोड, होडा होमसु, हसीरमी मन राचवीए ॥ ४ ॥ गर्न त णी उत्पाति, चित्त विचारीउ राय जणावी सादरीए ॥ सहिनाणिने काज आपी मुद्रडी, राय गयो घर सच रिए ॥ ५ ॥ कुमरी पिण घरे आवी, माय जणावीए, दिनकेतेए वातडीए ॥ गुप्तपणे सुत जायो जलमे वा हिउ, जई निसरीयो शुन घमीए ॥ ६ ॥ कर्ण कहा यो नाम, मोटो राजवी, माता कीधी उजलिए ॥ कु मरी केरो व्याह पाडुरायसु, प्रगट कियापुगीरलिए ॥ ॥ ७ ॥ शुनसुपना अवलोय सुन वेलासहि युधीष्ट र सुत जाईउए ॥ नीम महा बलवत, कौरव किचक हता नाम धराविउए ॥ ८ ॥ अर्जुन अरी कुलकाल,

निष्म करणनो हणणहार कहाईउए॥ नकुल अने सहदेव, पाडव पचए, जगमांहि जसपाइउए॥ ९॥ परमारथ आराधी, करणिने वले मातासु सिव पाम शेए॥ उत्तमगति मतिवास, लेहसे ते सहि, गीरुआ ना गुणगायशेए॥ १०॥

दुहा॥ तेणे समे देश गधारनो, नृप सुवल इणे नाम॥ आठ छे तेहने अगजा, गधारी आदे गुण ग्राम॥ १॥ गोत्रदेवीना वचनथी, धृतराष्ट्रने गेह॥ शकुनी सुतसु मोकली, कन्या आठे तेह॥ २॥ श कुनी धृतराष्ट्रने. जगनी परणावी आठ॥ माहामोछव मडाणसु, सघलो मेली ठाठ॥ ३॥ कन्या नामे कौमु दीनी, देवक नृपनीताम॥ वीदुर पिण परण्यो वली, सुधारया सघला काम॥ ४॥

ढाल तेहिज॥ श्री धृतराष्ट्र सुगेह, गधारी कूखे, कौरव शतहि सुतपणेए॥ ऊपजीया अद्भूत दुर्योध न आदे, वाधे आनद अतिघणोए॥ ११॥ माहेंद्रि कुमरी व्याही, दमघोषा जणी, सुत शीसुपाल चरी घणीए॥ सक्षेपे सवध, ग्रथ वधतो घणो॥ जाणी कथा न विस्तरीए॥ १२॥ ढाल आठमी एह, नेह धरी सुणे, तस आगणे अफला फलेए॥ गुणसागर गुणगेह, तेह पनोताए, जेह कथा रस सांभलेए॥१३॥

दुहा॥ दुर्योधन कपटि महा, कपटकेलवे कोम॥ पाडव सरल सभाविया, न करे तोमा तोड॥ १॥

कौरव निखस खोटणी, पाडव जोर विशेप ॥ वालप णाहिथी चल्यो, माहो माही अद्वेप ॥ २ ॥ कौरव वावी भीमने, नाखे पाणी मांही ॥ बधन तोडी कुटि या, कौरव सोहि प्राही ॥ ३ ॥

ढाल ९ मी ॥ जुठन हाले ने जुठन चाले ॥ ए देशी ॥ वलवतो जाणी खरो, श्री भीम कुमार होलाल॥ विप दीधो दुर्योधने, आणी द्वेप अपार होलाल ॥१॥ जोजो क्यु न करे अरि, अरिनो शो विश्वास होला ल ॥ कोई म करजो पडितो, अरिथी विपनास होला ल ॥ जो० ॥ २ ॥ काम पड्या वेटो हुवे, काम सरी या वाप होलाल॥ दाव लही दुर्जन घणु, देखावे सहि आप होला० ॥ जो० ॥ ३ ॥ अत करण न मेलवे, मुखे मीठा होय होलाल ॥ सज्जन ललिताग सबदथी, समजो भविलोय होला० ॥ जो० ॥ ४ ॥ जो परमेश्वर पाधरो, नहि पीसु न प्रवाह होलाल ॥ कौरवनी गरसण कला, पाडव जुए राह होला० ॥ जो० ॥ ५ ॥ दरयामे अतर करे, मुगाने ए जोई होलाल ॥ करता राखे जेहने, अरिथी सु होई होलाल ॥ जो० ॥ ६ ॥ विप अमृत होई प्रणमिउ, वायु सुतने सोई होलाल ॥ पूर्व पुण्य प्रसादथी, पहुचे नहि कोई होलाल ॥ जो० ॥ ७ ॥ विजकुखेता दानज्यु, विणपात्र विचार होलाल ॥ वांझणसु घरवासजी, नीफल ते अवधार होलाल ॥ जो० ॥ ८ ॥ कौरवना उपक

र्मथी मारण श्री ज्ञीमहोलाल ॥ एक न लागे आक
रो, वाउल जीम हीमहोला० ॥ जो० ॥ ९ ॥ बठोत्तरसो
एकठा, पढवाने काजहोलाल ॥ कृपाचारज जी जणी,
सोप्या श्री माहाराज होला० ॥ जो० ॥ १० ॥ प्रज्ञा
वले आगे निसरे, अर्जुन ने ए कर्ण होलाल ॥ बुद्धी
विशेप विचारिये, ग्रहे पडता वर्णहोला० ॥ जो० ॥ ११ ॥
दिवस अणोजाने सहू, रमवाने जायहोलाल ॥ गेद
दडे अति खेलता, रलियायत थायहोलाल ॥ जो० ॥
॥ १२ ॥ दडी कूदी कूवे पडी, न कढाई जामहोला
ल ॥ माखि जेम महूआलने, रहे विंटी तामहोला
ल ॥ जो० ॥ १३ ॥ द्रोणाचारज आवीयो, कीधो त
व प्रणाम होलाल ॥ बाणकलासु गहदने, काढी ते
अभिराम होलाल ॥ जो० ॥ १४ ॥ कृपाचारज पू
गियो, ज्ञीष्म धरी स्नेहहोलाल ॥ द्रोणाचारज पा
खति, मेल्या सुत तेहहोलाल ॥ जो० ॥ १५ ॥ अ
स्त्रशास्त्रनीकला, साधे ते सु विशेपहोलाल ॥ कर्ण श
शि तारा विषे, रवि अर्जुन देख होलाल ॥ जो० ॥
॥ १६ ॥ धनुष्य चहाडे खेंचवे, नाखेवे ए बाणहोला
ल ॥ करवे चोट अचुकजी, हरीनद सुजाणहोला० ॥ जो०
॥ १७ ॥ दिन दिन तेज प्रतापसु, वाधतो ए वान
होलाल ॥ सघला माही सामटो, पामे अति सनमा
न होलाल ॥ जो० ॥ १८ ॥ द्रोणाचारज एकदा, का
लिंद्रीमें स्नानहोलाल ॥ करतां तातणिए ग्रह्यो, नवि

दोड्या आनहोलाल ॥ जो० ॥ १९ ॥ अर्जुन तव आयो धसी, गेढावणने हेतहोलाल ॥ हेत घणो गुरु शिष्यने, जेहवा ए युग नेतहोलाल ॥ जो० ॥२०॥ वाहिर आव्या प्रेमसु, न प्रसशो तेहहोलाल ॥ जाएयु कौरव कोपशे, गर्वामे वलि एहहोलाल ॥ जो०॥ ॥ २१ ॥ एकाते हर्षानदसु, गुरु वोल्या एमहोलाल॥ धनुष्यकला अवरा नणि, देवा मुझ नेमहोलाल ॥ जो० ॥ २२ ॥ राधावेद कला शिखवी, अर्जुन वाचा लीधहोलाल ॥ दुर्योधनने नीम गदानी, युद्धतणी विधि साध होलाल ॥ जो० ॥ २३ ॥ यथा योग्य जे जाणिया, नेहवी विद्या आपहोलाल ॥ कला देखावणआपणी, वात विशेपे थायहोलाल ॥ जो० ॥ २४ ॥ एतो नवमी ढाल विशेपे, कुमर विद्या पामहोलाल ॥ श्री गुणसागर सूरजी, गुरु प्रणम्यो शिरनामहोला०॥२५॥

दुहा ॥ निष्म तो नलपण नणी, मचक सच आरन ॥ मढावी पुत्रा तणो, देखण समरारन ॥ १ ॥ बेठा वड वड राजीया, आगल सकल कुमार ॥ कला दिखावे आपणी, शस्त्रास्त्र तणी अपार ॥ २ ॥ रणरगे राच्या सहु, विस्मय पाम्या ताम ॥ लोक सकल मन चिंतवे, मतको थाय अकाम ॥ ३ ॥ दुर्योधनने नीमजी, माहोमाही कलेश ॥ करत निवारया द्रोणसुत, लहि तात आदेश ॥ ४ ॥

ढाल १० मी ॥ तुमे पीतावर पेरो होके मुखने

मरकलडे ॥ ए देशी ॥ एतो गुरु दढक प्रेरयाहो, पा
डव अर्जुन उदाश ॥ एतो विद्या देखावेहो, पाडव ध
नुष्यकी चारु ॥ १ ॥ एतो राधा वेढहो पाम्त्र निरखी
राजानो ॥ एतो सराहण किजेहो पाडव मेरु समान
॥ २ ॥ एतो कौरव रायहो पाडव सयनो वताई ॥ ए
तो करण कराईहो पाडव चपापुरी पाई ॥ ३ ॥ ए तो
सारथ सुतहो पाडव एतजे आयो ॥ ए तो रायके आ
गेहो पाडव करणे वेसायो ॥ ४ ॥ ए तो विपरित वा
तहो. पाडवराय रिसाणा ॥ ए तो खरखावा द्राखहो
पाडवकु दिये सयाणा ॥ ५ ॥ ए तो अर्जुन भीमहो.
पाडव लठिया दोई ॥ ए तो चपाकि उपावेहो. पाम्
व कर्णछे कोई ॥ ६ ॥ ए तो दोई वम्विराहो. पाडव
रणरग मागे ए तो कौरव करणहो पाडव उना आ
गे ॥ ७ ॥ए तो हाकोहाकहो. पाडव रवि रथ वाजी ॥
ए तो चालीया वेगेहो, पाडव रजनी विराजी ॥ ८ ॥
ए तो रजनी उमासहो, पांम्त्र कौरव जाणी ॥ ए तो
मडीया प्रातहो, पाडव गुरु दया आणी ॥ ९ ॥ ए
तो समझीया दोइहो, पाडव मेट लडाई ॥ ए तो कौ
रव तातेहो, पाडव सुत वोलाई ॥ १० ॥ ए तो पूछी
यो वशहो, पाडव मुद्रा देखाई ॥ ए तो करणजी जा
णयोहो, पाडव पाम्व भाई ॥ ११ ॥ ए तो गगामे
आयोहो, पाम्त्र लीयो कढाई ॥ ए तो कियो मोछ
वहो, पाडव खाट वधाई ॥ १२ ॥ ए तो सहणामा दे

स्योहो, पाडव सरस तेजो ॥ ए तो रविसुत नामहो, पाडव लहियो सहेजो ॥ १३ ॥ ए तो करतल कानेहो, पाडव दीठा ताम ॥ ए तो थाप्यो अभिरामहो, पाडव वर्णजो नाम ॥ १४ ॥ ए तो कौरव नृपहो, पाडव मत्छर धरता ॥ ए तो निज घर आवेहो, पाडव सोच करता ॥ १५ ॥ ए तो प्रभुताई पेखेहो, पाडव जगीमझारो ॥ ए तो प्रत्यक्ष खिजेहो, पाडव वंह अतिखारो ॥ १६ ॥ ए तो माहोमाहीहो पाडव उपज्यो विरोधो ॥ ए तो पाडव नृपहो, पाण्डव टालवा क्रोधो ॥ १७ ॥ ए तो देश विलातहो पाण्डव आपिया जुवा ॥ ए तो एवमो पक्षहो पाडव जूआ जूआ हुवा ॥१८॥ ए तो गयाकरो शोकहो, पाण्डव रचन आणे ॥ ए तो हो नारी वातहो पाडव अधिक न ताणे ॥ १९ ॥ ए तो वरत तिवारहो पाडव वरते अपारो ॥ ए तो एहथी जाण्योहो, पाण्डव श्रीहरी प्यारो ॥ २० ॥ ए तो काहि दसमीहा पाण्डव ढाल थुणिजे ॥ ए तो श्रीगुणसागरहो, पाण्डव सुजस सुणिजे ॥ २१ ॥

दुहा ॥ अथक विष्णु दिक्षा ग्रही पाले जिनवर आण ॥ सौरिपुर राज करे भलो समुद्रविजे राजान ॥ १ ॥ नामे शिवादे जामनी, आश्रव तणो परीहार ॥ सुखदाई सहू लोकने शिलतणे शिणगार ॥ २ ॥ रूप शिरे लक्षण शिरे, कलाशिरे गणधाम ॥ श्रीवसुदेव कुमारनो, चरित्र भणु अभिराम ॥ ३ ॥ चारित्र पाली

निर्मलो, नंदिखेण अणगार ॥ करी वेयावच साधुनी, पायो सुजस अपार ॥ ४ ॥ आयु सागर विशनो, जोगवि सुर सुख सार, शेप पुण्यने कारणे, थयो वसु देव कुमार ॥ ५ ॥

ढाल ११ मी ॥ नणदलनी देशी ॥ श्री वसुदेव कुमारजी रूप अनुप रसाल हो कुमर ॥ जोग पुरंदर सुंदरू. सोभागी सुकुमाल हो ॥ कु० ॥ ॥ १ ॥ मोहनवेल कुमारजी ॥ ए आंकणी ॥ अवर अनेरा राजीया. राजा जरत कहेवहो ॥ कु०॥ अवर अनेरा कुमारीया, कुवर तो वसुदेवहो ॥ कु०॥ मो०॥२॥ ॥ मित्र इंद्र समान छे सेवक अमर अनूपहो ॥ कु० ॥ आपण सुरपति साचलो गजऐरावण रूपहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ३ ॥ स्वर्ग सरीखो जाणीए सौरिपुर सुख वासहो ॥ कु० ॥ स्वइछा रमत करे. करतो लिल विलासहो ॥ कु०॥ मो०॥४॥ देव दुगधक सारिखो, काम तणो अवतारहो ॥ कु०॥ मोही रही अति माननी लागी होमे लारहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ५ ॥ करे कुतुहल कामनी बाढी घर व्यापारहो ॥ कु० ॥ फिरे कुदाते हरणली, न लहे घरनी सारहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ६ ॥ केइ अलुणो रावति, केई लुण दोवार हो ॥ कु० ॥ आधो पीरसी पिरसणो, जाइ तजी जरतारहो ॥ कु० ॥ मो० ॥७॥ जूषण थानक पालटे, आधो करी सिणगारहो ॥ कु० ॥ टोले टोले सामटि,

साथे फिरे सब नारहो ॥ कु०॥ मो०॥ ८ ॥ घर उघा डाहि रहे, थाये अति उजाडहो ॥ कु० ॥ साह मिली रावले गयां, वालण पगे किवाडहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ॥ ९ ॥राजा भाखे सादरो, केम पधरया साहहो ॥ कु०॥ पामी आदर अति घणो, साह वदे सोडाहहो ॥ ॥ कु० ॥ मो० ॥ १० ॥ पुज्य प्रसाद तुमारडे सुखि या सगला लोकहो ॥ कु० ॥ लाभ घणो व्यापारमें, अनधन सर्व सजोगहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ११ ॥ तो तुमे केम देखाडगो, आरतिवता आजहो ॥ कु०॥ जे जिमछे तिम दाखवो, लाजे विणसे काजहो॥ कु०॥ मो०॥१२॥ एवात कहंता सकिए अण कहिया नरहायहो ॥ कु० ॥ सापे ग्राहि छछुदरी, एह परे भ्रम थायहो ॥ कु० ॥ ॥ मो० ॥ १३ ॥ दोश न कोई कुमारनो, निरकुशी त्रिय जातहो ॥ कु० ॥ विकल थइ विधुल महा, किशी कराई तातहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ १४ ॥ कान गया लोचन गया, गई लाज विशेषहो ॥ कु० ॥ कुमर दे ख्या त्रियानी, रहिबे हाड्रि शेषहो ॥ कु० ॥ मो०॥१५॥ तरुणि वृध्दि बालिका, एक सरिखि होयहो ॥ कु० ॥ सोवती भाखे सखी, आवतो प्रभु जोयहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ १७ ॥ कुमर न रहे खेलतो, त्रिया न रहे घ र माहिहो ॥ कु० ॥ वास अनेरी जायगा, आप आप नृप प्राहिहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ १८ ॥ नृपने थइ वि च्यारणा, कुमरशु अति प्रेमहो ॥ कु० ॥ लोक विणा

नहीं साहिबी, अब कहो किजे केमहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ १९ ॥ अर्थ मीत दोई राखणो, एह सयाणो कामहो ॥ कु० ॥ विप्रसुता सवधथी, सोच महा अभिरामहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २० ॥ शिख देइ शाहा भणी, महिलमाहि नर देवहो ॥ कु० ॥ आयो आराति जाणके, देवि वदे ततखेवहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २१ ॥ नामे शिवा शिव कारणी, षट गुण धारक नारहो ॥ कु० भेद लही लोका तणो, किम ले बात समारहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ९२ ॥ एतले कुमर आविया, बेठो नृपनी गोदहो ॥ कु० ॥ राजा राणी रिंजवे, चारु वात विनोदहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २३ ॥ प्रिती पोषी परिघल पणे, राय वदे सुविच्यारहो ॥ कु० ॥ आज काल तो अति घणो दुर्वल थयो कुमारहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २४ ॥ राणी भाखे रायशु, आणी अतिशे प्यारहो ॥ कु० ॥ माहारो वचन विशेषथी, माने नहींय लिगारहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २५ ॥ फिरे घणु वन वागमे तने लागे अति तापहो ॥ कु० ॥ थयो खरो ही दूबलो, माहरे मन सतापहो ॥ कु० ॥ मो० ॥२६॥ नूप भणे वछ साभलो, मित्रा केरे सगहो ॥ कु० ॥ खेल करो मन भावतो, मेहेल माहीं मन रंगहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २७ ॥ प्राण थकी प्यारो खरो, भाई पुत्र समानहो ॥ कु० ॥ तुज सुखीए सुखीया हमे, तुझे प्रेम निधानहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २८ ॥ एइ

ग्यारमी ढालमे, मानी वात विशेषहो ॥ कु० ॥ श्रीगु
णसागर सूरिजी, अवकीम उपजे द्वेषहो ॥ कु०॥ २९॥
दुहा ॥ मेहेल माहिंचे वाग वर, तरुवर जात अ
नेक ॥ वृक्ष अशोक सुहामणा, कुवा वाव विशेख ॥
॥ १ ॥ क्षण घरमें क्षण वागमे, क्षण जोई चित
चाव ॥ खेलावे अति खांतशु, जोजाई जल नाव ॥२॥
ढाल १२ मी ॥ ऊठ गोविंदा ऊठ गोपाला ॥ ए
देशी ॥जूठ म हाले जूठ न चाले, जूठ न आघो
थाय होलाल ॥ जेद लही जूठी मायानो, कुमर परदेशें
जायहोलाल ॥ जू ० ॥ १ ॥ वावना चदन कर कचो
ली, दिधी दाशी हाथहोलाल ॥ एतले कुमरजी चली
आयो, मित्रा केरे साथहो लाल ॥ जू०॥ २ ॥ कुमर
पूछे रे ए काई, सा तव वोले गाजहो लाल ॥ देवी शी
वाए चदन जेज्यो,राय विलेपन काजहो लाल॥जू०॥३॥
द्यो मुजने ए चदन चेटी, करु विलेपन आपहो लाल
॥ चेडीनापे जीजकरता, दीए मुह माथे थापहो ला०
॥ जू०॥४॥ चंदन लेई विलेपन करी तन, घणु पो
मावे साईहो लाल ॥ माहरा मारघा वुव न वाहरु, प
हिली न समझी काईहो ला० ॥ जू० ॥ ५ ॥ होइ
खिसाणी वोले ताणी, चेडी चचल जातहो ला० ॥
तन मन जूठी ने अति रूठी, वाणी वदे अकुलात
हो ला० ॥ जू० ॥ ६ ॥ नमणो खमणो माणस नि
को, न नमे न खमे जेहहो ला० ॥ आका केरा इधण

सरिखो, लेखविए नर तेहहो ला०॥ जू० ॥ ७ ॥ जो एहवां लक्षण छे तारां तरे पुकारया लोकहो ला० ॥ न्याये पच्योछे वधीखाने, कुमर कहे ए रोकहो ला० ॥ जू० ॥ ८ ॥ चित्तमे चमकी चतुर पणाथी, करी दिलासा सातहो ला० ॥ पूछता तव प्रगट कीधो, सहु सवध प्रकाशहो ला० ॥ जू० ॥ ९ ॥ साच जूठनी करण परिक्षा, पोले आवे तामहो ला० ॥ दरवाजो रोकि तव जाण्यो, साचो सघलो कामहो ला० ॥जू० ॥ १० ॥ पाछो फीरी मंदिर आयो, चित्तशु चिंते एहहो ला० ॥ कुंकर मुसानो काम नहीं कोई, जाण्यो नाई सनेहहो ला० ॥ जू० ॥ ११ ॥ धिग् मुज जाणपणो ए अधिको, धिग् मुज रूप रसालहो ला० ॥ हु खदाई हुउं हु सहुने, अरु शिर आयो आलहो ला० ॥ जू० ॥ १२ ॥ अहि मणि कस्तूरी मृग मेंगल, दंत थकी विपनाशहो ला० ॥ चमरी पूछ थकी नर रूपे, गुणथी वैरनिवासहो ला० ॥ जू० ॥ १३ ॥ विण गुणहे ए लोक पूकरया, राजा मानी वातहो ला० ॥ अणख आया नाईं रीसे, मेंतो दुःख न खमातहो ला० ॥ जू० ॥ १४ ॥ मान गयो ने माहतम मिटीयो, रेहणो नहि एह थानहो ला० ॥ नांगी शाखाए विलगेघो, तेतो उपजे हानहो ला० ॥ जू० ॥ ॥ १५ ॥ पुरुषा पाणी इम राखेवो ज्युं राखे नालियेहो ला० ॥ गोकलकोतो पैमो न्यारो, साधा सूधो

शेरहो ला० ॥ जू० ॥ १६ ॥ गाम तलाई न तजे ब
गलो, न तजे मालो कागहो ला० ॥ मानसरोवर त
जे ततक्षिण. हस तणो सो भागहो ला० ॥ जू० ॥
॥ १७ ॥ मध्यम राते अश्व चढीने, साथे एक खवा
सहो ला० ॥ निकलियो पुर बाहीरे आयो मतो करे
सोल्हासहो ला० ॥ जू० ॥ १८ ॥ अश्व ग्रहीने रहे
तु अलगो शेवकशु दाखतहो ला० ॥ हु विद्या सा
धु समसाने, भेद न को भाखतहो ला० ॥ जू० ॥
॥ १९ ॥ लाकरु लावे चित्ता बनावे, मृतक आणी ए
कहो ला० ॥ आभूषण पहिरावी बाले, टालण खोज
विवेकहो ला० ॥ जू० ॥ २० ॥ जघा चीरी लोही का
ढी ताम लिख्यो ए लेखहो ला० ॥ में ए किधीराजा
परजा, करज्यो राज विशेखहो ला० ॥ जू० ॥ २१ ॥
पोले चिठी बाधी चाल्यो धरी ब्राम्हणनो वेशहो ला
ल ॥ एहं बारमी ढाले भाखे, गुणसागर सु विशेष
हो ला० ॥ जू० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ प्रात हुआ सहु जागीया कुमर न दीठो
सोय ॥ सुध न लाधी शोधता आरतिवतो होय ॥
॥ १ ॥ भूप भलीपरे पूछीयो सेवक सोई सुजाण॥
विचरी वात कही सहु आभूषण अहिनाण ॥ २ ॥
चिठी दीठी पोलेजी खोले वाची जाम ॥ साची सघ
ली जाणता मुरछाणो नृप ताम ॥ ३ ॥ मुरछाणो भा
ई अवर. मुर्छाणी नृपनार ॥ बान गुलाम आदे करी,

हाहारव ससार ॥ ४॥ चेतन लेई राजा प्रजा गुणनो करे प्रकाश हा वज्रनाग कियो किशु, विलवे राय उदास॥५॥

ढाल १३ मी ॥ सारगीयो गणरुद्धिबे ॥ ए देशी॥

कुमरजी एसी किजे केम समुद्र विजय शीवादेवी विलवे ॥ छेह न दिजे एम ॥ कु० ॥ १ ॥ हा सोभाग निध्यान निरुपम, जादव वश वतस ॥ हा सतवत महत गुणाकर, प्रथ्वि माहि प्रसस ॥ कु० ॥ २ ॥ हा चद्रानन पकज लोचन, हा गुण भरित शरीर ॥ सव विध सुदर भोग पुरदर सायर जेम गभीर ॥ कु० ॥ ३ ॥ हा भाई हा वधु सहोदर, हा वडवीर सधीर ॥ जीवेक्यु चित करि अति गाढो, माछलडि विण नीर ॥ कु० ॥ ४ ॥ पुत्र पनोता पुनरपि होवे, रमणी रूप अनूप ॥ गाम नगर पुर नवि पामिजे, भाईजी भल भूप ॥ कु० ॥ ५ ॥ देवरियो दिल दरियो देखत, पेखत प्रभुता पूर ॥ नजरे न आवे नर कोइ बीजो, किया काम करूर ॥ कु० ॥ ६ ॥ शुं किजे ए लोका साथे, सोर मचायो भूर ॥ वात कहता विचिक्षण शु ऊडी गयो अति दूर ॥ कु० ॥ ७ ॥ रे कुडा किरतार कलेशी, सोच नहीं तुज माहि ॥ साजन मेलि विछोहो करतां, कालज कापे प्राहि ॥ कु० ॥ ८ ॥ इम विलवता राजा राणि, एक नीमतियो ताम ॥ बलते छाट सुधारस केरी, वाणि वदे अभिराम ॥ कु० ॥ ९ ॥ कुमर न मूओ छे जयवतो अ

रति म करजो कोई ॥ छान घणो दिन थोडा माहि, श्रावि मिलशे सोई ॥ कु० ॥ १० ॥ काईक ए निमति वचने, काईक चित्त विचारी ॥ मुसता हुआ राजा राणि, आठाने अधिकारी ॥ कु० ॥ ११ ॥ एतेरमी ढाळे राजा, वरते धरतो कोड ॥ श्री गुणसागर नाई दसनी, छे जग अविहड जोड ॥ कु० ॥ १२ ॥

दुहा ॥ चालतो-पश्चिम दिशे, मेलतो वहु ग्राम ॥ विजय खेडपुर आवियो, ताम ग्रह्यो विसराम ॥ १ ॥ नृप नलो-सुग्रीवजी, सुदरि नामा नार ॥ पुत्र पचउ परेहूई, पुत्रि-दोय सुविच्यार ॥ २ ॥ सोमा नाम सुहामाणे, सोम सुसेना जाण ॥ पढि गुणि मति आगलि पुत्रि गुण मणिखाण ॥ ३ ॥

ढाल १४ मी ॥ राग खेंगारना गीतनी देशी ॥ गुणवताने गुण चढे, किरति हो किरति वधाति जोय ॥ मैंगलनि परे मानवि, जुलेहो जुले मूघा होय ॥ गु० ॥१॥ हीरा लाल पिरोजडा, मोतीहो मोति माणिक मोल ॥ पारखियाथि वाधतो, माणसहो माणस तिम निर मोल ॥ गु० ॥ २ ॥ कुमरी कला गुण आगलि जाणेहो जाणे राग प्रमाण ॥ वेण वजावे चातुरी, रींझेहो रींझे चतुर सुजाण ॥ गु० ॥ ३ ॥ एह आभिग्रह मन धर्यो, अमने हो अमने जिते जेह ॥ वेण बजावी वेगशु पिउडो हो पिउडो म्हारो तेह ॥ गु० ॥ ४ ॥ राय जादा रूयडा राजाहो राजा आवे के

ई ॥ काज न सराहि कोईनो, जाईहो जाइ कर शीर देई ॥ गु० ॥ ५ ॥ कुमर चाली तिहां आवियो, लिधोहो लिधो विणा हाथ ॥ सुघड पणेरे वजावतो, अचरिजहो अचरिज सघले साथ ॥ गु० ॥ ६ ॥ के किन्नर के खेचरु, के हो के ए सुर अवतार ॥ भूचर नरमाणा घणु, कुमरीहो कुमरी मोहि अपार ॥ गु० ॥ ७ ॥ पहिरावी वरमालिका, किधोहो किधो अधिक उछाह ॥ कुमरी दोई शुं भलो हुउहो हुउ ते विवाह ॥ गु० ॥८॥ सुख विलसंता सुंदरु, नदनहो नंदन नाम अकूर ॥ सोम सुसेना जाईयो, दिन दिनहो दिन दिन चढतो नूर ॥ गु० ॥९॥ एक दिवस आगे चालियो, खबर न हो खबर न जाणि केण ॥ सजला वर्त्ते सुहामणो, दीठोहो दिठो सरोवर तेण ॥ गु० ॥ ॥ १० ॥ सरोवर जलमे झीलतां, आयोहो आयो एक गयद ॥ गज शिक्षाए वश करी, चढियोहो चढियो ताम नरिंद ॥ गु० ॥ ११ ॥ खेलावे अति खात शु उलखियोहो उलखियो असवार ॥ मैंगल मनमें मोहियो, उलट हो उलटनो अधिकार ॥ गु० ॥१२॥ कुमरे उचो देखीयो इहाहो इहां नहि निज कोई ॥ जे देखे वल माह्यरो, सोरीहो सोरीपुर कहि सोई ॥ गु० ॥ १३ ॥ आया दोई विद्याधरु, भाखेहो भाखे मीठी वात ॥ नागावर्त्तन पुर भलो, राजाहो राजा विश्वविख्यात ॥ गु० ॥ १४ ॥ असनी वेग वि

राजतो, राणिहो राणि विजया ताम ॥ कुमरी करम यति महा, जाईहो जाई शामा नाम ॥ गु० ॥ १५॥ कुमरीनो वर पूछता, निमतिहो निमति नास्यो सार॥ जे गजने वश आणशे, थाशेहो थाशे सोई नरनार॥गु० ॥ १६ ॥ वेशी विमाने हरखशु, आवेहो आवे पुरमे चाल ॥ राजा राणी रजीया, प्रभुनोहो प्रभुनो नूर निहाल ॥ गु० ॥ १७ ॥ कचननो मडप कियो, मणि ना हो मणिना थभ उदार ॥ पूतलिया मन मोहनी, शोभाहो शोभा विविध प्रकार ॥ गु० ॥ १८ ॥ ढोल दमामा दुन्दभी. वाजाहो वाजा अधिक उदार ॥ विहाह तणी विधि साचवि, वरत्याहो वरत्या मंगल चार ॥ गु० ॥ १९ ॥ ए चउदमी ढालमें, सुखमेहो सुखमें विसरजाय ॥ श्री गुणसागर सूरिजी पूरवहो पूरव पुण्य पसाय ॥ गु० ॥ २० ॥

दुहा ॥ शामा मजुल भाषिणी, सुघडमहा गुणजा ण ॥ विणा वजावि एकदा रजवियो राजान ॥ १ ॥ रजीयो राजाघणु, वाणिवदे अनूप ॥ माग माग व र माननी फिरफिर भाखे भूप ॥ २ ॥

ढाल १५ मी ॥ आदि जिणद मया करो ॥ ए दे शी ॥ तव बोले सा सुदरी, साभल जादव नाथरे ॥ निसदिन रेहेशु पाखति, नवि छेडू तुम साथरे ॥ त व० ॥ १ ॥ प्रभु भणी शु मागीयु, ए लघुतानी वा तोरे ॥ पुरुप अवध सराहयो, बधक परवश थातोरे

॥ त० ॥ २ ॥ अति मनमानि माननी, नर शिर च
ढती जायोरे ॥ गगा देवी शीव तणे, बेठी माथे आ
योरे ॥ त० ॥ ३ ॥ नारी कहे निजसुखभणि, एतो
हु नवि भाखुरे ॥ कारण जाणि विशेषथी, देव तमासो दा
खुरे ॥४॥ खेचर अगारक आकतो, पापीडो मति पींडेरे
॥भूचर जाणी भोळवी, भुज वलशु मति भीडेरे ॥ त०
॥ ५ ॥ नृप भलीपर भाखेरे, एह कवण विचारोरे ॥
रुपाचल दक्षणदिशे, पुरवरहे अति सारोरे ॥ त० ॥
॥ ६ ॥ कीन्नर उठगति एहवो, अर्चितमाली राजारे ॥
प्रभावती कूखे उपन्या, नदन दो अति ताजारे ॥
त० ॥ ७ ॥ अग्निवेग अति आकरो अशनी सुवेग
सोभागीरे ॥ समरथ जाणी नदन, राजा थयो वैरा
गीरे ॥ त० ॥ ८ ॥ प्रज्ञप्ती वर विद्यासु, प्रथमने नृ
पपद आप्योरे ॥ अवर भणी युवराजनो, पदतो स्थी
र करी थाप्योरे ॥ त० ॥ ९ ॥ आपण सजम लेइ
ने, मुनिनो मारग साध्योरे ॥ तप जप करणीने बले,
आपे आप आराध्योरे ॥ त० ॥ १० ॥ विमला ना
म सुलक्षणा, राय घरे पटराणीरे ॥ अगारक सुत जा
इयो, कीरति अधिक वखाणीरे ॥ त० ॥ ११ ॥ युव
राजा घर जाणइ, नामे सुप्रभा नारीरे ॥ तस उरे हु
उपनी, आदि लगे सुविचारीरे ॥ त० ॥ १२ ॥ रा
यतणे पद थापियो, प्रीति भणी लघु भाइरे ॥ वि
द्यासु निज नदन, युवराज पद ठाइरे ॥ त० ॥ १३॥

चारित्र लीधो मुनीवरु, मोटप मेरु समाणीरे ॥ आ
प सरीखा लेखवे, जगमां जे छे प्राणीरे ॥ तं० ॥
॥ १४ ॥ राय अने युवराजमा, उपज्यो अधिक क
लेशरे ॥ भुजबलने विद्यावले, राय गमायो देशरे ॥
त० ॥ १५ ॥ नागावर्त्तसु नगरीए, राजाजी गयो ना
सीरे ॥ पखी पिंजरानी परे, वासर जाए उदासीरे ॥ त
व० ॥ १६ ॥ एक दिवस नदन वने, गयो एह नरिं
दोरे ॥ जघाचारण ज्ञानीजी, मीलियो एक मुणिंदोरे
॥ त० ॥ १७ ॥ पगे लागीने पूछीयो, राज गयो के
आसोरे ॥ पुत्री पतिथी थाशेये, तरे लील विला
सोरे ॥ त० ॥ १८ ॥ पुनरपि भाखे रायजी, पुत्री प
ति कोण थाशेरे ॥ सजलावर्त्त सरोवरे हाथी सा
मो धाशेरे ॥ त० ॥ १९ ॥ गज शीखाइ खेलवी,
हाथीने वश करशेरे ॥ श्री वसुदेव नरेश्वरु, सामा कुम
री वरशेरे ॥ त० ॥ २० ॥ ते उपर ए खेचरु जा
सुसीने हेतोरे ॥ काम सरया प्रभु तुमने, लेइ आ
व्यो गह गहतोरे ॥ त० ॥ २१ ॥ विस्तारथी ए वा
तजी खेचर सगली जाणीरे ॥ पिशुनपणे तुम हण
वानी, बुद्धी अछे तिही ठाणीरे ॥ त०॥२२ ॥ उ खे
चर तुम भूचरू, मतके वीणसे कामोरे ॥ तेहथी हुं
वर मागुछु, साथरही अभिरामोरे ॥ त०॥२३ ॥ तव
वर आपी थापियो गाढो प्रेम अपारोरे ॥ ए पन
रमी ढालमा गुणसागर जयकारोरे ॥ त० ॥ २४ ॥

दुहा ॥ निशिभर निंदमे सोवतो, खेचर ते अगा
र ॥ लेइ गयोवसुदेवने, आणी देश अपार ॥ १ ॥
जागी शामा सुंदरी, पीउ न देख्यो जाम ॥ शस्त्र ग्र
ही पुठे हुइ, आण पहुती ताम ॥ २ ॥ अरि सघाते
सामीका, लागी होई विरूप ॥ अरिने सनमुख होव
ता. कोप्यो जादव नूप ॥ ३ ॥ मुष्टी प्रहारे मारियो,
खेचर जादवराय ॥ नाखी दीधो आकाशथी. पड्यो
सरोवर माह्य ॥ ४ ॥ समरंता नवकारने. आल न
आयो अग ॥ जलपयरी तट आवियो. सुसतो थ
यो सुचग ॥ ५ ॥

ढाल १६ मी ॥ गोरांजी थे मुने गोमे न राख्यो
॥ ए देशी ॥ धन धन करमे तो नर कहीउ जिहा
जाइ तिहा आदर लहीउ ॥ ध० ॥ ए आकणी॥मार
ग जाता वलदेव केरो, देवल देखी हरख घणेरो ॥
जाणी शुभ स्थान राते तिहां वसियो, कर्म चारि लि
खी मनमा हसीयो ॥ ध० ॥ १ ॥ प्रात हुओ एक
आव्यो पूजारो, देखी कुमर मन हरख अपारो॥पूछे प्रभू
जी पुज प्रकासो, ए कवण पुरी कोण नृपनो वासो ॥ ध०
॥ २ ॥ नगरी चपा नामे निकी, सु भामनीने सीर
टीकी ॥ चारुदत्त राजा जयवंतो, विशालाक्ष त्रीय
नो कतो ॥ ध० ॥ ३ ॥ श्री गंधर्व सुसेना कुमरी, रु
पे रुडी जाणी भमरी ॥ चोसठ नारी कला ते
जाणे. राग कलामां अधिकु ताणे ॥ ध० ॥ ४ ॥

वेण वजावे ने मुख गावे, आपे रहीत अधिक दावे ॥ एह कलाए जीते जेही मुज परताग करु हु तेही ॥ ध० ॥५॥ नृपतने नृपतिना जाया. पच सया परिणाम कहाय॥श्री सुदर्शन गंधर्व पासे, रात दिवस ए कला अभ्यासे ॥ ध० ॥ ६ ॥ ग्राम तीन स्वर सात कहीजे. मूछना एकविस कहीजे ॥ गुण पचासय तान वखाणी, जाण कहावे ए विधि जाणि ॥ ध० ॥ ७ ॥ पुण्यने दिन मुजरो होवे, एना मुख सामु जोवे ॥ कारज करवा कोई न सूरो, कुमरी हसी कहे अवतो अधूरो ॥ ध० ॥ ८ ॥ पुनरपि विद्या अधिकी सीखे हठे पडीया ए नृपति नाखे ॥ वणिनावे बे एलेतन मेलत मास मास एक आघो ठेलत ॥ ध० ॥ ९ ॥ कुमर गयो आचारज संगे, साचवतो अति सेव सुचगे ॥ कलाग्रहना वार न लावे, पिण तो वेण विपरीत वजावे ॥ ध० ॥ १० ॥ राजकुमार तव करता हासो, मुख नाखे एवडो तमासो ॥ अवर नही पण ए गुणवंतो, थाशे कुमरी केरो कंथो ॥ ध० ॥ ११ ॥ तामस आणे यादव जाचो, अवही जाणशे कुम्रो साचो ॥ कासो शब्द करेछे जेही, सोना शब्द करे नाहि तेही ॥ ध० ॥ १२ ॥ पुनमनो दिन आयो जामो, कुमरी मंडप आवी तामो ॥ गांद्रवाह वीण वहेली, साथे घणेरी तास साहेली ॥ ध० ॥ १३ ॥ तिलोत्तमा उर्वशी उलासो, सूर्य यक्षने पामण पासो ॥ स्वर्ग थ

की जेम चाली आवी, विश्व मोहनी नाम धरावी ॥
ध० ॥ १४ ॥ गावे अने वजावे विणा, मोहीरह्या सव
लोक प्रवीणा ॥ कुमरी रुप कला गुण देखी, एही स
नामा सुख विपेखी ॥ ध० ॥ १५ ॥ भूप तदा नरमा
णा नारी, विसरीया सुघडाइ सारी ॥ आरतियो आ
चारज होइ, विणा ग्रही कर कुवर सोइ ॥ ध०॥१६॥
उत्तम घाट वनायो रूडो, कोइ वाते नाहिज कूडो ॥
गान वजावणी छे वेउ सरखी, कुमरी घणु मनमाही
हरखी ॥ ध० ॥ १७ ॥ कुमरी नाखे वात नलेरी, ए
सी विणा आंणी अनेरी ॥ विण सुघोषा नामे वारु,
जेही रिंझायो विष्णु कुमार ॥ ध० ॥ १८ ॥ सा विणा
कर सोहि प्यारे, आचरज तव हूओ जगसारे ॥ कहे
अव केवो गाउ गानो, सहुने लागे अमी समानो ॥
ध० ॥ १९ ॥ सा नांखे सुण चतुर सिरोमणि तु दे
खाय छे नन्नो मणि ॥ विष्णु कुमारनो टालण क्रोधो,
उपद्रव्य मेटणने प्रतिबोधो ॥ ध० ॥ २० ॥ हाहा तु
वुरु नारद आयो, जेहि ग्याने ऋपिजी रिंझायो ॥ जो
आवे तो सोहि सुणावो, अवर ग्यान छे मोहि अना
वो ॥ ध० ॥ २१ ॥ नेद सगितहि जाणे सूधो, जेहि
ग्याने ऋषिजी प्रतिबोध्यो ॥ सोहि सुणायो ग्यान स
याणे, नलो नलो कही खलक वखाणे ॥ ध० ॥ २२॥
रजी रामा अति अभीरामा पहेरावी वरमाल सकामा
॥व्याह तणो कीधो मन्नाण, ए पिण मोटो पुण्य प्रमाण

वेण वजावे ने मुख गावे ,आपे रहीत अधिके दावे ॥ एह कलाए जीते जेही मुज भरतार करु हु तेही ॥ ध० ॥५॥ नृपतने नृपतिना जाया. पच सया परिणाम कहाया॥श्री सुदर्शन गंधर्व पासे, रात दिवस ए कला अभ्यासे ॥ ध० ॥ ६ ॥ ग्राम तीन स्वर सात कहीजे. मूर्छना एकविस लहीजे ॥ गुण पचासय तान वखाणी. जाण कहावे ए विधि जाणि ॥ ध० ॥ ७ ॥ पुण्यने दिन मुजरो होवे, एना मुख सामु जोवे ॥ कारज करया कोई न सूरो, कुमरी हसी कहे अवतो अधूरो ॥ ध० ॥ ८ ॥ पुनरपि विद्या अधिकी सीखे हठे पडीया ए नृपति नाखे ॥ वणिना वे ठे एलेतन मेलत मास मास एक आघो ठेलत ॥ ध० ॥ ९ ॥ कुमर गयो आचारज सगे, साचवतो अति सेव सुचगे ॥ कलाग्रहता वार न लावे, पिण तो वेण विपरीत वजावे ॥ ध० ॥ १० ॥ राजकुमार तव करता हासो, मुख नाखे एवडो तमासो ॥ अवर नही पण ए गुणवतो, थाशे कुमरी केरो कथो ॥ ध० ॥ ॥ ११ ॥ तामस आणे यादव जाचो, अवही जाणशे कुमो साचो, ॥ कासो शब्द करेवे जेही, सोना, शब्द करे नाहि तेही ॥ ध० ॥ १२ ॥ पुनमनो दिन आयो जामो, कुमरी मरूप आवी तामो ॥ गाइवाइ वीण वहेली, साथे घणेरी तास साहेली ॥ ध० ॥ १३ ॥ तिलोत्तमा उर्वशी उलासो, सूर्य यक्षने पारुण पासो ॥ स्वर्ग थ

रजी ॥ दिठो देव उछव करता चित्तनो चोरण हा
रजी ॥ कु० ॥ ५ ॥ ए वरपासुं तो परणवो, अवर न
परणु कोइजी ॥ अणसरखे पीउडे पद्मनीनो, आवट
मरणो होयजी ॥ कु० ॥ ६ ॥ धाइ तणा मुखनी सुणी
राजा, ए सघलो वृत्तांतजी ॥ सतोपी वचने वर कु
मरी, चाल्यो आप तुरतजी ॥ कु० ॥ ७ ॥ सोवंतो कु
मर अपहरियो, करीयो काम अनूपजी ॥ नीजपुर
आणी राजाराणी, पुज्यो यादव नूपजी ॥ कु० ॥ ८ ॥
कुमरी अमरी सरखी सघली, सात सया परिमाण
जी ॥ परणावी कुमरने हरखे, किधो अति मण्डाणजी
॥ कु० ॥ ९ ॥ सोर सुणतो पूछे प्रभुजी, एशो सोर
प्रकारजी ॥ प्रतिहारणी भाखे स्वामी, एहनो एह वि
च्यारजी ॥ कु० ॥ १० ॥ कुमरी तणी मातासु भाइ,
बोल्योथो ए बोलजी ॥ जो माहरे होशे सुत सुदर,
ताहरे सुता अमूलजी ॥ कु० ॥११॥ सगपणनो सवध
करेसा, ए हुवो ते न्यायजी ॥ लोक मिली ए झगडो
भाज्यो, नारि कियो नवी थायजी ॥ कु० ॥ १२ ॥ क
मली रमली करतो अति वरते, भोगी भमरो जेमजी ।
श्री वसुदेव कुवर रमतो, पदमनियाने प्रेमजी ॥ कु०
॥१३॥ गिरिसिर खेलत निलकठसो, आयो होई मो
रजी ॥ निलयशाने लेइ गयो तव, काइ नई चाल्यो
जोरजी ॥ कु०॥१४॥ दक्षिणदिश गिरितटवर नगरे,
सोमा राज कुमारिजी, देवतणे वादे जीती प्रभु, पर

॥ ध० ॥ २३ ॥ वहू वरनी सरखीछे जोडी, पोहोचावे मन केरा कोडी ॥ धर्म विषे पिण सरिखा दोइ, सुखमा वासर जाता जोइ ॥ ध० ॥२४ ॥ एक दिवस हरी उछव हेते, आवे कुमर निज महिलसमे ते ॥ ढाल सोलमी कही सुणावे. श्रीगुणसागरजी गुण गावे ॥ ध० ॥ २५ ॥

दुहा ॥ विद्याधर आव्या घणा. हरीउछवने काज ॥ हमत रमत खेले तिहा, नरनारी शुभ साज ॥ १ ॥ विद्याधरनी कुमरी, नीलजसा नामेण ॥ कुमरी रूपे रगी ली. अमरी जीती नेण ॥ २ ॥ नीलजसा वसुदेवने, दृष्टी रागनी चूर ॥ उपजी जाणी विशेषथी, चमकी भुचरी नूर ॥३॥ प्रीतम लेइ पाधरी आवी निज आवास ॥ विद्याधर उछव करी, चाली गया आकाश ॥४॥

ढाल १७ मी ॥ हम मगनभये प्रभु ध्यानमे ॥ ए देशी ॥ कुमरी हूइरे उदासणी, हसत न बोलत डोलत चित्तडो, कुमर चरण निवासणी ॥ कु० ॥ १ ॥ भोजन त्याग न पिवत पाणी सोवत निंद न आवती ॥ लाबा अति निसासा लेती, यदुपतिने चित्त धावती ॥ कु० ॥ २ ॥ प्रेम रागछे तीखोकाती. कालिजने अति कापती ॥ जो सुख चाहे साजनी मनमा, परने चित्त मत आपती ॥ कु० ॥ ३ ॥ जाणी आरती अपार अनोपम, धाइ पूछे वातजी ॥ भुत तणा छलनीपरे तुतो, दिसेछे अकुलातजी ॥ कु० ॥ ॥ ४ ॥ तव सा धाइ प्रते भाखे, श्रीवसुदेव कुमा

ढाल १८ मी ॥ चांदालिनी देशी ॥ हाथी आकाशे चालित, विद्याधर विद्या बलित ॥ जन नाखें कुंवर बलियोहो ॥ कुंवरजी ॥ १ ॥ कुंवरजीरुपे निको, कुव रजी प्यारो जीको ॥ कुवर कुमरा सीर टिकोहो ॥कु० ॥ २ ॥ हाथी तों चाल्यो जाये, राख्यो कोइनो न र हाये ॥ कुवर चित चिंता थायेहो ॥ कु० ॥ ३ ॥ तव मुष्टि प्रहारे मारयो, हाथिनो मद उतारयो ॥ आ पणु काम समारयोहो ॥ कु० ॥ ४ ॥ पडीयो गगाज ल माही, नवकार जणतो आहि ॥ अगे दूखाणो ना हिहो ॥ कु० ॥ ५ ॥ गंगाजल पयरी जामो, अटवि मे पडीयो तामो ॥ आगे आयो एक गामोहो ॥ कु० ॥ ६ ॥ सिंहगुहा तस नामो, विमलप्रभ नृप गुण धामो ॥ त्रीय श्रीमति अजीरामोहो ॥ कु० ॥ ७ ॥ पुत्री पोमावाइ वारु, अति वेद कला इंचारु ॥ सा जीति आणी उदारुहो ॥ कु० ॥ ८ ॥ परणीने सुख मानीजे, आपणु पूधन जाणीजे ॥ आगेकि मति ठां णिजेहो ॥ कु० ॥ ९ ॥ जयपुरना तो पति साधी, एक कुमरी नीकी लाधी ॥ दिन दिन अति किरति वाधीहो ॥ कु० ॥ १० ॥ नहिलपुर चाली आयो, ति हा राजा पोद्र सुहायो ॥ प्रभुजी सौने मन जायो हो ॥ कु० ॥ ११ ॥ कुमरी धारयो पूर्व वेसो, तस रुप कला सुविशेसो ॥ परणे जदुराय नरेशोहो ॥ कु०॥१२॥ पुरुष वेशनो नेवो, तव पूछे श्रीवसुदेवो ॥ सा उत्तर दे

एी रति भ्रवतारीजी ॥ कु०॥१५॥ ए केहेता रायथी सुर आवी, लेइ गयो ततखेवजी ॥ यक्ष तणा देवल मांही मूक्यो, साचवतो अतिसेवजी ॥ कु० ॥१६॥ राक्षस एक तणोछे वासो, पेहेला देवल माहीजी ॥ देश नगरना लोक सहुने राक्षस दुःख दे त्राहीजी ॥ कु० ॥१७॥ राक्षसने वश करवा सुरवर करता ज य जय कारजी ॥ रायथी पण सघले आवीने, प्रणम्यो कुमर उदारजी ॥ कु० ॥ १८ ॥ कन्या पाच सया प रीमाणे, परणावी भूपालजी ॥ सुख मानता विविध प्रकारे. पुछ्यो सालो स्यालजी ॥ कु० ॥ १९ ॥ कुल अणजाणया किम परणावी, कन्या ए सतपचनी ॥ सालो भाखे स्वामी साभल, सघलीनो एक सचजी॥ ॥ कु० ॥ २० ॥ निमति वचने यदूनायक, राक्षस जी तण सूरजी ॥ कन्या सकल तणो वरथाशे वाज्या ए जसतूरजी ॥ कु० ॥ २१ ॥ यादव राजा रायराया ना, जिहा जइए तिहा आपजी ॥ गुणसागर सत्तरमी ढाले पूर्व पुण्य प्रतापजी ॥ कु० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ अचलपुरी प्रभु आवीयो, वनमाला सुखका र ॥ पुत्री सारथ वाहनी परणावी प्रेम अपार ॥ १॥ सचरतो सोमापुरी, आइ गयो ते स्वाम ॥ कपीलरा यनी कुवरी परणि कपिला नाम ॥ २ ॥ विविध प रे सुख मानता, सरोवरमा झीलत ॥ निलकठ गजरू प धरी आइ कुमर चढंत ॥ ३ ॥

क ऊमालिहो ॥ कु० ॥ २६ ॥ अष्टादशमी ढाले प्रे
मो, सुख विलसे सुरपति जेमो ॥ गुणसागर नांखे ए
मोहो ॥ कु० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ लाभे लोभ वाधे घणो, उद्यमे अधिको ला
भ ॥ लाभे सीर जाइ अहे, उचो तो अति आभ॥१॥
लाभ विशेष विचारवे. आगे चाल्यो स्वाम ॥ महापु
री आयो सहि, हरख्यो अचरज पाम ॥ २ ॥ ठाम
ठाम दिसे घणा; मंदिरना मभाण ॥ निश्चे करवा का
रणे पूछयो पुरुष प्रधान ॥ ३ ॥

ढाल १९ मी ॥ पाचमी वाडे परमेश्वरु ॥ ए दे
शी ॥ पुरुष कहे प्रभुजी सुणो, ए वातज वारु ॥ अ
चरजकारीछे घणी, चतुरा चितचारु॥ १ ॥ सोमदत्त
राजा भलो, राणी सुविचारी ॥ पूरणभद्रा जाणीए,
नृपने सुखकारी ॥ २ ॥ सोमश्री नामे भली, कुमरी
अभिराम ॥ स्वयवर मडप तेहनो, ए कीधा धाम ॥३॥
राय घणा चाली आवीया, ए भिरूभरीखो ॥ विचे
हुवो सवधजी, ते सुणण सरीखो ॥ ४ ॥ उपर भोमी
एकदा, सा राजकुमारी ॥ देखे लग्न चद्रनु, लय ला
गी भारी ॥ ५ ॥ ऋषि केवल उछव भणी; सुर जाता
देखी ॥ जाति समरण पामियो, मूरछा सुविशेखी
॥ ६ ॥ उठाडी वेठी करी, करी सीतलताइ॥ मौन ग्र
हिने मा रहि, कही वात न काइ ॥ ७ ॥ धाय माय
ने पूछता, दिए जबाव गरीठो ॥ ज्ञान बले परभव

ततखेवोहो ॥ कु०॥१३॥ तव एक निमती राइ, पुठयो मुज वरने ताइ ॥ तिहां नाम लीयो गोसाइहो ॥ कु०॥ ॥ १४ ॥ योग कहो किम मिलशे, रुडे जइ रुडु भलशे ॥ ए आरति वेगे टलशेहो ॥ कु० ॥ १५ ॥ रूप पुरुषनो ठाणि, सा राज राखति जाणि ॥ प्रभुजी मिलसे वेगो आणिहो ॥ कु० ॥ १६ ॥ गुरु गोत्रजने सुपसाइ ए एकसरीखे दोइ ॥ सातमे वासर जाइहो ॥ कु० ॥ १७ ॥ अगारक क्रोधे भरीयो, तिहा रुप हसको करीयो ॥ सुखे सोवतो अपहरीयोहो ॥ कु०॥ ॥ १८ ॥ मुष्ठी प्रहार ज्या दीधो ॥ चेतनथी अलगो कीधो ॥ गगामे पभीयो सीधोहो ॥ कु० ॥ १९ ॥ पाणि तरी काठे आवे, अटवि तजी वसती पावे ॥ इलावर्धन नगर सुहावेहो ॥ कु० ॥ २० ॥ हाटे वेठा वेपारी, ते लक्ष्मीवता भारी ॥ एक शेठ अछे अधिकारीहो ॥ कु० ॥ २१ ॥ कुमर वेठो तस पासे, तिहा मिलिया लोक तमासे ॥ ए मोटो शेठ विमासेहो ॥ कु० ॥ २२ ॥ तव अन्न वस्त्रने नाणु, जुहरीयाने किरीयाणु ॥ ते दिन अधिकु वेचाणुहो ॥ कु० ॥ २३ ॥ लाभतणो नही पारो, तव शेठ करे सुविच्यारो ॥ ए तो एहनो उपगारोहो ॥ कु० ॥ २४ ॥ आदर अधिके घर आण्यो, भोजनशु प्रेम परमाण्यो ॥ वस्त्र तावर पुरुष पिछाण्योहो ॥ कु० ॥ २५ ॥ कन्या छे रूप रसाली. सा रतनवति सुविशालि ॥ परणावी भा

कोप्योठे काल ॥ २१ ॥ ठलवल केलवी घणो, हाथी वश आएयो ॥ उवारी कुमारीका, जग जादव जाएयो ॥ २२ ॥ राय त्रीयाने कुमरी, हरख्या मनमाहि ॥ ए मोठो उपगारियो, पुरुपोत्तम प्राहि ॥ २३ ॥ सूर घणो ने बल घणो, धन्य यौवनवतो ॥ ए उग णिसमी ढालमा, गुणसूरि कहतो ॥ २४ ॥

दुहा ॥ विस्मय उपजावी घणो, सहू नणी सुकुमार ॥ शेठ कुबेरज दत्तने, घर आयो तेणिवार ॥ १ ॥ कुमरीने राणी सहु, निज घर करे प्रवेश ॥ वाट वधी ए अति घणी, उठव कीयो विशेप ॥२॥

ढाल २० मी ॥ सुगण नरनारी रूप नजोय ॥ ए देशी ॥ एह सुणी नृप हरखीयोरे, करे प्रशस अपार ॥ वारवार वधामणारे, मिलियो सहु परीवाररे ॥ मोहनजी ॥ १ ॥ तु सूरतिका सोहनजी, तु रूपजलका प्रोहणजी ॥ तु गुणमणिका रोहणजी, तु चित्त कजका बोहनजी॥तेरारे तेरा धन अवताररे, मोहनजी॥ मेरारे मेरा तुजशु प्याररे ॥ त्रुठ्यो त्रुठ्यो मुज किरताररे, पायोरे पायो जल नरताररे ॥ मो० ॥ ए आकणी ॥ व्याह तणी विधी साचवीरे, जेसा चित्त वित्त होय ॥ आनद रग विनोदमा रे, वासर जाता जोयरे ॥ मो० ॥२॥ मनोवेग मनोहररे, विद्याधर वलवत ॥ निशानर सुखे सोवतोरे, आइ गयो मयमंतरे ॥ मो० ॥ ॥ ३ ॥ सोमश्री कुमरी हरीरे, चाली गयो आकाश॥

तणो, मे प्रितम दीठो ॥ ८ ॥ हुं हुती देवांगना, तु हुतो देवो ॥ भोगवी आयु सुरगति तणो, चवीयो ततखेवो ॥ ९ ॥ तु उपज्यो हरीवंशमे, हु आइ इहाजी ॥ दैवे विगोहो पामियो, केम कीने माजी ॥ १० ॥ जो पति पामु मूलगो, तो थें परणावो ॥ नहीतर परणवा आखडी, सही सजम लेवो ॥ ११ ॥ धाय जणावी वातडी, राजाने जाइ ॥ लोक विसरजा वेगशु, मन मा दुचिंताइ ॥ १२ ॥ तुठे नृचरं राजवी, माह्यरो खग नाम ॥ विषम वात आवी बनी, केम सीझे काम ॥ १३ ॥ एटले एक निमीत्तीयो, भाखे सुसनेहो ॥ इद्र उछव देखण तणी, आवशे एहो ॥ १४ ॥ हाथी पासे छोडायने, परणाशो आमो ॥ इस सुणता हरखीयो, कुमरीनो बापो ॥ १५ ॥ हरीध्वजने देखण तणी अतेउर आयो ॥ वाहन विविध प्रकारनां, अति सोर मचायो ॥ १६ ॥ बधन तोडी जोरशु, हाथी विखरायो ॥ अबला उपरे आकुलो, होइने धायो ॥ १७ ॥ सुभट न आवे आसना, सहु जाइ नाग्या ॥ शस्त्र ग्रहिने सामटा, सबाहुण लाग्या ॥ १८ ॥ साचो सूर सिरोमणी, यादवजी जाचो ॥ अटल टल्यो नही ठामथी, नरफाडे फासो ॥ १९ ॥ अग्नी झाल गज केसरी, एह सामु होणु ॥ नि सत्व नरने दोहिलु, साहसियाने ओणु ॥ २० ॥ भ्रासनरी आवी धसी, शरणे सा बाल ॥ राख राख - प्राणेशजी

रे ॥ मो०॥१५ ॥ सोमश्री साची सतीरे, जोर न चा
ल्यो चोर ॥ केश मणिने कामनिरे, न लेवाइ जोररे
॥ मो० ॥१६ ॥ हु सखीछु तेहनीरे, प्राणहीथी प्या
र ॥ मोकलीछु तुम्ह कन्हेरे, आणी एह विचाररे ॥
मो० ॥१७॥ मुऊ सघाते छे घणोरे, नाथजीको नेह ॥
वाकतो होइ खरोरे, मति तजे नीज देहरे ॥ मो०
॥ १८ ॥ रूपे मोही प्रजुतणेरे, शुद्धही नाठी दूर ॥
हणि मनमथ बाणशुरे, उपज्यो राग सनूररे ॥ मो०
॥१९॥ रूप धरीने बेहनी तणोरे, मानीयो मे जोग ॥
स्वारथीयो ससार छेरे, आपवगो लोकरे ॥ मो०॥२०॥
स्वामी थारी सुदरीरे, हु हुइ सुख हेत ॥ गमी मणि
चिंतामणीरे, काच कुण चित्त देतरे ॥ मो० ॥ २१ ॥
सोमश्री अपहारनिरे, एहवी सुणी वात ॥ हुउ नूप
उदासीयोरे, अरतिमें दिन जातरे ॥ मो०॥ २२॥ ढा
ल जली ए विसमीरे, करत जोग विलास ॥ श्री गुण
सागर सूरिजीरे, पुण्ये पूरे आशरे ॥ मो० ॥२३ ॥

दुहा ॥ श्री वसत ऋतु राजीयो, आयो अधिक
विराज॥ फूल फल शोजा खरी, कोयल बोले गान ॥१॥
मीत्रोना परीवारसु, खेले वसत नरेश ॥ सुखे सोवतो
अपहरयो, मानसवेग विशेष ॥ २ ॥ मुष्ठी प्रहारे मा
रता, शुद्ध रही नही कोय ॥ समरतो नवकारने, उर
होइ आयो सोय ॥३॥ गगा तट विद्याधरु, विद्या साधे
जाम ॥ आपी पड्यो उपर प्रजु, विद्या सिद्धी ताम ॥ ४ ॥

जाग्यो श्री वसुदेवजीरे, देवी न दिठी पासरे ॥ मो० ॥ ४ ॥ प्रीया प्रीया पुकारता रे, सोमश्री आकार ॥ आरि नगनी आवी धसीरे. वेगवति वर नाररे ॥ मोह० ॥ ५ ॥ भेद न जाण्यो भूपतिरे, पूछण लाग्यो तास ॥ किहा गइथी बाहीरारे, बोले सा उल्हासरे ॥ मो० ॥ ६ ॥ गर्मि हुइ मुजने घणीरे, सीतलताइ जाण ॥ तनीथी हुं वायरेरे, प्रीतम आरति मत आणरे ॥ ॥ मो० ॥ ७ ॥ रामा रची रूपसुरे, ना कीयो किश्यो विचार ॥ करी अति खिजमत खरीरे, भोगवे भोग उदाररे ॥ मो० ॥ ८ ॥ पोढ्यो प्रभुजी पालकेरे, पोख्यो पदमनी प्रेम ॥ विमासण विधी साचवीरे, अवसर पामी तेमरे ॥ मो० ॥ ९ ॥ एक दिन सुखे सोवतारे, खेचरी ए अभिराम ॥ रूप धरियो मूलगोरे, जागीयो प्रभु तामरे ॥ मो० ॥१० ॥ भाल मुद्रा शशिकलारे, युवा हारचा दाम ॥ दिवस भीजे प्रगटेरे, तिमही एह अकामरे ॥ मो० ॥ ११ ॥ पुछी प्रभुजी पद्मनीरे, कोणछो तुमे आप ॥ रजुपणे भाखो भलोरे, कोइ न राखे पापरे ॥ मो० ॥१२ ॥ रुपाचल दक्षणदिशेरे, स्वर्ण प्रभपुर देख्य ॥ चित्तवेग विद्याधररे, राय रुडो पेख्यरे ॥ मो० ॥१३ ॥ त्रीय अगारवति कहीरे, मनोवेग तसु नंद ॥ नंदनी तो हुं भलीरे, अधु नयनानंदरे ॥ मो० ॥ १४ ॥ रूप अधिको साभलीरे, मनोवेग नरेश ॥ सोमश्री लेइ गयोरे, सीता ज्यु लंकेशरे ॥

निमतीए गुणवत हेयादु ॥ ऊ० ॥ १० ॥ चंडसुवेग कुमारने हेयादु, विद्या साधन जोइ ॥ पऋशे खाधा उपर हेयादु, पुत्रीनो वर सोइ हेयादु ॥ ऊ० ॥ ११ ॥ ते दिनथी लघु नाइजी हेयादु, निश्चय करवा हेत ॥ विद्या साधे वेगशु हेयादु शुनवगीत फलदेत हेयादु ॥ ऊ० ॥ १२ ॥ नननु तिलक सुहामणु हेयादु, नगर नीरोपम नाम ॥ श्री त्रिशिखर नरेश्वर हेयादु, सर्पक सुत गुण धाम हेयादु ॥ ऊ० ॥ १३ ॥ तेहने अरथे मागता हेयादु, पुत्री नापी तात ॥ युद्धे हरावीता तेहने हेयादु, चाल्यो लेइ आरात हेयादु ॥ ऊ० ॥ १४॥ वधीखाने राखीया हेयादु, देव हमारो बाप ॥ जोरन चाले माहरो हेयादु, अरिनो प्रबल प्रताप हेयादु ॥ ऊ० ॥ १५ ॥ पुज्य प्रताप करी खरो हेयादु, सरसे सघलो काज ॥ आज थकी तो आगले हेयादु, कुमरने सबलि लाज हेयादु ॥ ऊ० ॥ १६ ॥ विद्या साधी सादरी हेयादु बधव तुम प्रसाद ॥ साह्यजे करी स्वामिने हेयादु, होसि ए अहिलाद हेयादु ॥ ऊ० ॥ १७ ॥ दीन वचन सान्नली हेयादु, गठयो मूठ मरोड ॥ आरति कोइ मतराखजो हेयादु, करशु कारज कोड हेयादु ॥ ऊ० ॥ १८ ॥ साला पासे शिखयो हेयादु अस्त्र अनेक प्रकार ॥ आग्नि अने ब्रह्मान्नला हेयादु, श्री महेंद्र उदार हेयादु ॥ ऊ० ॥ १९ ॥ वैष्णव वारु नामथी हेयादु, जमदड अस्त्र विचार ॥ स्थन्नन मोहन तो

ढाल २१ मी ॥ आजको दिहाडो मोहे भावे हो न
णदी ॥ ए देशी ॥ आवी एक विद्याधरी हेयादु, ले
इ चाली जाम ॥ प्रभुने मेली वागमे हेयादु, खबर क
री अभिरामहेयादु ॥ १ ॥ ऊगमागियोराय तेहवे, पर
खड परदेशमे हेयादु ॥ शोभा अधिकी पावे हेया
दु ॥ ऊ० ॥ २ ॥ राजा अमृत द्वारना हेयादु, खेचर
वधव तिन ॥ दधिमुख दिलनो सूरहे हेयादु, चतुर
शिरे सुप्रविण हेयादु ॥ ऊ० ॥ ३ ॥ दृढसुवेग वि
राजतो हेयादु, चडसुवेग प्रचड ॥ आया प्रभुनी सा
मा हेयादु, माने आण अखंड हेयादु ॥ ऊ० ॥ ४ ॥
पधरावी निज मदिरे हेयादु, श्रीवसुदेव नरेश ॥ मद
न सुवेगा वेगसुं हेयादु, परणावी सुविशेष हेयादु ॥
ऊ० ॥ ५ ॥ प्रीतम पद्मनी प्रेमशु हेयादु, मग्न महा
मनमाही ॥ उलट अति घणी मानतो हेयादु, सुख मा
ही दिन जाइ हेयादु ॥ ऊ० ॥ ६ ॥ उगतो दिनकार
नो हेयादु, घणीए वधतो तेज ॥ तिम नरिंद वसुदेव
नो हेयादु, चढतो तेज सहेज हेयादु ॥ ऊ० ॥ ७ ॥
बाप भेलावण कारणे हेयादु, दधिमुख भाखे वात ॥
श्रीनमीवश विशेपथी हेयादु, विद्युत वेग विख्यात हे
यादु ॥ ऊ० ॥ ८ ॥ पुत्र पनोता तेहना हेयादु, एह म
ति नविआण ॥ थारा मननी भावती हेयादु, पुत्री चो
थी जाण हेयादु ॥ ऊ० ॥ ९ ॥ निमित्तिने पूछीयु हेया
दु, कुमरी कारण कत ॥ निर्मल मति बोलीयो हेयादु

साथी, असवारे असवाररे ॥ रथसाथे रथ भिडीया भारी, मच्यो युद्ध अपाररे ॥ पु० ॥ २ ॥ नील सुक ठ अगारक आतुर, सूर्पक मानसवेगोरे ॥ चन्ऋसवे ग तणे आगे ए, हारयो नफूरी तेगोरे ॥ पु० ॥ ३ ॥ खेचरने यादवने लडवे, एवो अचरिज पायोरे ॥ विवि ध प्रकार विशेप विशेषे, बाणे अवर छायोरे ॥ पु०॥४॥ अग्निसु बाणे अग्नी विकुर्वि, हाथी घोडा बालेरे ॥ वारुण बाणे घन वरसावी, एह उपद्रव टालेरे ॥ पु० ॥ ५ ॥ मोहन बाणे निंदतणे बल, लोक सहु ते सोयरे ॥ बा ण प्रबोधे निंद निवारी, हुशीयारिमां होयरे ॥ पु० ॥ ॥ ६ ॥ श्री माहेन्द्र बाणे हणतो; खेचर पडीयो मद रे ॥ यादवनी जग जीत गवाणी, उपज्यो अति आ नंदरे ॥ पु० ॥ ७ ॥ सुसरो बंधनथी छोडावी, देइ द मामे घावरे ॥ पासी संग निज नगर भणी ते, आ वे सहु परीवाररे ॥ पु० ॥ ८ ॥ सुर्पनखा नामे अरि नारी, वेर विशोधन आवीरे ॥ मदन सुवेगा रूप वि राजी, प्रभुजीके मन भावीरे ॥ पु० ॥ ९ ॥ छल पा मीने प्रभु सोवतो, चाली लेइ आकाशरे ॥ मान सवे ग भणी प्रभु सोप्यो, करवा काज विनाशरे ॥ पु० ॥ ॥ १० ॥ अरि करथी खसी अणु माही, पडीयो ला गी थोभीरे ॥ राजग्रही नगरी चाली आयो, जीती कचन कोभीरे ॥ पु० ॥ ११ ॥ कचन वाटे देतां बोले, किरति चारण भाटोरे ॥ श्रीवसुदेव पधारया पहिली,

टिका हेयादु, अण रोहण अविधार हेयादु ॥ ज० ॥ ॥ २० ॥ वधनमोक्ष न जाणीए हेयादु, जनननें ए सान ॥ वायव्य छेदन भेदना हेयादु, आरुढ अस्त्र प्रधान हेयादु ॥ ज० ॥ २१ ॥ सर्व सुअस्त्राहि गढना हेयादु, शल्य निवारण हार ॥ गुणसागर गुण गाजतो हेयादु, ढाल एकवीसमी सार हेयादु ॥ ज० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ साहण वाहन सामटो, साथे घणा नरेश ॥ चढीयो आडवर घणे, अरि उपरे सुविशेष ॥ १ ॥ मगल मिलियो मलपतो, घोमो दक्षिण हाथ ॥ मगल गाती गोरमी, सात पाचनो साथ ॥ २ ॥ उदयो न णती योगिनी, सामो आव्यो शाह ॥ दक्षिण भयरव कलकली, उपज्यो अति उगाह ॥ ३ ॥ खर देवी मा बी भली, बोले होमाहोड ॥ कुंकर वामे उतरचो, का ज समारे कोम ॥ ४ ॥ हरिणमाल अधूरडी, जमणी जाइ प्रात ॥ साड चास दक्षिण दिशे, वामे वायस जात ॥ ५ ॥ डाबा लाली बोलीया, अवर अनेरा सार ॥ शुकन विच्यारी चालीयो, श्री वसुदेव कुमार ॥ ६ ॥ अरि पिण आयो सामुहो, दल बलनो नही अत ॥ रेणु रही उची चढी, समके न कोई पहत ॥ ७ ॥

ढाल २२ मी ॥ तेतरीया भाई तेतरीया ॥ ए देशी ॥ पुण्य बले अधिको यदुराजा, करतो अधिक दिवाजारे ॥ खेचर सामे आणी अढीयो, वाज्या शुभ जश वाजारे ॥ पु० ॥ १ ॥ हाथीउथी हाथी साथीउथी

दुहा ॥-वेगवति साची सती, आवी पीउने काम ॥ प्रिती विशेष विच्यारवे, अति सनमानि साम ॥१॥ गिरि काठे उद्यानमे, खेल खेलता जाम ॥ नागपाश बाधी थकी, दीठी कुमरी ताम ॥ २ ॥ बंधन छोड्या हाथशु, सा भाखे सुविच्यार ॥ विद्या सिद्धी माहरी, ए प्रभु तुम उपगार ॥ ३ ॥

ढाल २३मी ॥ चेधक जग विरला ॥ ए देशी ॥ उप गारी राजाहो, थारा अधिक दिवाजा हो ॥ उ० ॥ ए टेक ॥ दक्षिण श्रेणि नगर निरुपम, नामे गगन प्रि य वारुहो ॥ विद्युतदत नरेश्वर निको, गुणमणिनो भ डारु हो ॥ उ० ॥ १ ॥ तेनो नदन बाल सुधाकर, हुं बु तास कुमारी हो ॥-विद्या साधत वैरीए मुझने, बा धी बधन भारीहो ॥ उ० ॥ २ ॥ बधन छोड्यां करुणा आणी, हु थाइश तुमारी राणीहो ॥ अमृत छंडी खारो पाणि, कोण पीए सुख जाणीहो ॥ उ० ॥ ३ ॥ विद्या आपु विविध प्रकारे, अतर न आणु कोइ हो ॥ वेगवतिने आप पनोति, भाखे प्रितम सोइहो ॥ उ० ॥ ४ ॥ प्रभु आदेशे वेगवतिने लेइ निज घर आवीहो ॥ विद्या साधन करती बरते, वेगवति सुख पाविहो ॥ उ० ॥ ५ ॥ तापस स्थानक पधारयो वनमे, अचरिज अधिको पायोहो ॥ नौतम तापस ते सहु दिसे, एक तदाव्रत लायोहो ॥ उ० ॥ ६ ॥ सो भाखे तु साभल स्वामी, वात अचभा कारिहो ॥ साभरती

जरासध उच्चाटोरे ॥ पु० ॥ १२ ॥ निमीत्तिने पुछयोथो राजा, मुजने मारण हाररे ॥ वेग बतावी करु उपक र्मा, केरो कोइ विचाररे ॥ पु० ॥ १३ ॥ जोतिपि जा ए कहे जीतशे, जूआ खेली जेहरे ॥ कचन कोडी त णा वरदाता, गुण मणि केरो गेहरे ॥ पु० ॥ १४ ॥ तेनो जायो कृष्ण कुवर वर, ते तुम हता जाणरे ॥ निश्च य वात विशेप विचारी, सशय एक न आणरे ॥ पु० ॥ १५ ॥ एम सुणी नासुसिकारण, नृपना लोक फिरतारे ॥ कचन जाती त्याग करता, मिलीयो तते तं तारे ॥ पु० ॥ १६ ॥ चाम तणा नाथामें घाली, डु गरथी नाखतोरे ॥ गरू गरूतो आवी पड्यो तू उपर, प रमेष्ठि नाखतोरे ॥ पु० ॥ १७ ॥ वेगवति राणी साभ लीयो, जब ए श्री नवकारोरे ॥ नाया खोली देखत दी ठो, प्यारो प्राण आधारोरे ॥ पु० ॥ १८ ॥ वेगवति रोवे प्रभु आगे, प्रभुजी सुसतो होइरे ॥ नारी निहा ली नेह धरीने, पूठी नाखे सोइरे ॥ पु० ॥ १९ ॥ तुम अपहरी श्रेणी दोयमें, शोधी शोध्ये नरतीरे ॥ मद न सुवेगा घरथी तुमने, सुर्पनखा अपहरतीरे ॥ पु० ॥ ॥ २० ॥ सुर्पनखाथी मानस वेगे, लीधो मारण हेतो रे ॥ मारी न शक्यो राजग्राहिमें, आयो शुभ सकेतोरे ॥ पु० ॥ २१ ॥ ढाल बाविसमी हु धन प्रभुजी, जे तुम सेवा लाधीरे ॥ श्रीगुणसागरसूरि, जलो जे, जा णे अवसर साधीरे ॥ पु० ॥ २२ ॥

रो, सोइ वर सुखदाइहो ॥ उ० ॥ १७ ॥ एम नीसु
णी मन स्यालज लाग्यो, देउलमांही जायहो ॥ सवी
वार ए अर्गला केरो, द्वार खोल्यो रायहो ॥ उ० ॥
॥ १८ ॥ देखी प्रभुने देवलमाही, शेठ आश्चर्य पाइ
हो ॥ परणावी पुत्री निज हाते, ढील न कीधी काइहो
॥ उ० ॥ १९ ॥ ढाल ए तेविशमी वरचारु, भोगवे
भोग उदारुहो ॥ श्री गुणसागर सूरि पयंपे, यादव
यश विस्तारुहो ॥ उ० ॥ २० ॥

दुहा ॥ अतेउर परीवारशुं, राजा वनमें जाय ॥
दिठो प्रभु बाजारमे, नयण रह्यां लोभाय ॥ १ ॥ लो
भाया लोचण घणा, देखी कुमरनी शोभ ॥ कुमरीने
सभोगनो, लाग्यो अधिको लोभ ॥ २ ॥ शोध करंतां
साभल्यो, बधुमति भरतार ॥ बोलावी पूछे तदा, स
खियणने सुविचार ॥ ३ ॥

ढाल २४ मी ॥ धन धन जंबुस्वामीने ॥ ए देशी
॥ बहिन भणे वाइ सुणो, ए वसुदेव कुमार ॥ भोग
पुरदर सुदरूं, कामतणो अवतार ॥ १ ॥ भाग्य प्रब
ल वसुदेवनो, एतो गुणमणि रयण भडार ॥ भाग्यवं
ति जे भामानि, एतो पामे भल भरतार ॥ भा० ॥२॥
एकाते तव दूतिका, आवी प्रभुजीने पास ॥ कुमरी
काम समारवा, आप करे अरदास ॥ भा० ॥ ३ ॥ देव
पधारो मदिरे, पूरो कुमरीनी आस ॥ हसी रमी रस
रगमे, कीजीए भोगविलास ॥ भा० ॥ ४ ॥ जो नवि

नगरीनो नायक, इंद्र तणो अवतारीहो ॥ उ० ॥ ७ ॥
एणो पुत्र पवित्र पनोतो, तास सुदरी नारीहो ॥ कुम
री अमरीने अनुसरती, प्रियगु सुदरी प्यारीहो ॥ उ०
॥ ८ ॥ स्वयंवर मडप तेहतणेजी, नूप घणा बोलाव्या
हो ॥ कुमरीने मन कोइ न मान्यो, ताम घणुं अक
लायाहो ॥ उ० ॥ ९ ॥ ऊगडो मच्यो कुमरी पिताशुं,
दिए पुत्री परणावीहो ॥ कुमरी हठीली अधिक अटी
ली, समझे नही समजावीहो ॥ उ० ॥ १० ॥ नूप न
ए हम जोरे वरसां, कुमरी पिता तव कोप्योहो ॥
युद्ध करवा कारण काठो, सद्रपणाथी रोप्योहो ॥ उ०
॥ ११ ॥ कोइ नरपति लढी लढी मूआ, कोइ नाठा
जुजूआहो ॥ लाज धरी वनवास ग्रहीने, तापस रुपि
हूआहो ॥ उ० ॥ १२ ॥ ते कुमरीने देखण केरी, य
दुपतिनी मति जागीहो ॥ नगरी वनमे चाली आयो,
अत्रयतो अनुरागीहो ॥ उ० ॥ १३ ॥ देवल एक
नलोडे उत्तम, द्वार जमीत अति वारुहो ॥ पखी पू
र्वित पुरष प्रभाविक, सो जांखे सुविचारुहो ॥ उ० ॥
॥ १४ ॥ सकल सिरोमणि शेठ प्रसीद्धो, कामदेवस
नामहो ॥ ताघर सुदरी सुदर नारी, रूपगुण अभि
रामहो ॥ उ० ॥ १५ ॥ तासपुत्री अडे गुणवति, ब
धुमति सुकुमारीहो ॥ जोवन तन जन मोदन गारी, बा
ली झाकझमालीहो ॥ उ० ॥ १६ ॥ शेठे पूछ्यो निमत्ति
कवारु, सुता वर कुण थाइहो ॥ द्वारखोलशे देवल के

दुहा ॥ सावरथी नगरीनो धणी, शीलायुध नरिंद ॥ घोडे खाच्यो आवीयो, तापस वन आनद ॥१॥ पगे लागता तापसे, आदर दीयो अपार ॥ तापस पुत्री साचवे, विनय तणा आचार ॥ २ ॥ भोजन भक्ति विशेषथी, करती वरते जाम ॥ आ पुण्य माहीं उपज्यो, काम राग अभिराम ॥ ३ ॥

ढाल २५ मी ॥ हु तुझ साथे नही बोलु ॥ ए देशी ॥ काम राग अछे जग मोटो, जेहथी खाइ खोटोजी ॥ एकलडे तीहु जग हरायो, कुण बभो कुण छोटोजी ॥ का० ॥ १ ॥ राजानी आतुरता जाणी, ऋषिपुत्री व्रत राखेजी ॥ व्याहतणो विधि साचवी, प्रेम तणो रस चाखेजी ॥ का० ॥ २ ॥ राजा बोले काडम भोले, नाम प्रकासे मारोजी ॥ सावरथी नगरीनो नायक, छे मुझ प्रितम प्यारोजी ॥ का० ॥ ३ ॥ विविध प्रकारे सुख विलसंता, वारु वचन वदे एवोजी ॥ जो उधान रहेशे माहरे, तो शो उत्तर देवोजी ॥ का० ॥ ४ ॥ राजा निकली गया पिछे, लोक घणा अकुलायाजी ॥ शुद्ध न लाधे तास पुत्री, पुछ्या उत्तर पायाजी ॥ का० ॥ ५ ॥ तापस वन राजा छे नीसुणी सामा लोक सिधावेजी ॥ राजा सन्मुख देखी आवत परम महा सुख पावेजी ॥ का० ॥ ६ ॥ तापस पुत्री मातपिताने, वात जणावी एहोजी ॥ छानी राखत जायो बेटो रुपकला गुण गेहोजी ॥ का० ॥ ७ ॥ वात सुणीने मा

मानो वात ए तो थाशे विपरित॥ प्राण तजशे कुमरी अति दुखदाइ छे प्रित॥ ना० ॥ ५॥ उत्तर दीधो अवसरे, ज्ञानी दीठो होइ ॥ सतोपी घर मोकली, हरखी कुमरी सोइ ॥ ना० ॥ ६ ॥ वडमाता कुमरीतणी, वितरणि अभिराम॥ चलण प्रज्ञ सह चारणी, नागश्री तसु नाम ॥ ना० ॥ ७॥ सोवतो नरनिंदमे, देवी कीयो अपहार॥ आवी बेठी वागमें, वाणी वदे सुविचार ॥ ना० ॥ ८ ॥ आरति कोइ मत आणजे, हु थारी हितकार ॥ चरी सुणावु आपणी, आलस निंद निवार ॥ ना० ॥ ९ ॥ अमोघ दर्शन नामथी, चदनपुर नो राय ॥ चारुमति पति जाण ए, लोक सहुने सुखदाय ॥ ना० ॥ १० ॥ चारुचद्र नामे नलो, नदन महा सुखकद ॥ राज करे रलीयामणो, छे सुख कद निकद ॥ ना० ॥११॥ अनगसेनानी सुता, सरुपे अति अभिधान ॥ कान पताका प्रगटी, हवी नामनी नीने वान ॥ ना० ॥ ॥१२॥ काम पताका कामनी, ललित मनोहर गात ॥ राजा कीधी रागनी, सख माही दिन जात ॥ ना० ॥ ॥ १३ ॥ दिन केताने अतरे राजा तापस थाय ॥ गर्ने वहे वैरागनी, साथ रही सुख पाय ॥ ना० ॥ ॥ १४ ॥ तापसी दिन पूरते, प्रसवी पुत्री सार ॥ ऋषिदत्ता अभिधानथी, वाधे रूप अपार ॥ ना०॥१५॥ ए चोवीसमी ढालमे, श्रावकना व्रत पच॥ श्री गुणसागर आदरे, नग न आणे रच ॥ ना० ॥ १६॥

साचो शीयल विचारोजी ॥ बालक लीधो कारज सीधो, मान्यो अति उपगारोजी ॥ का० ॥ १८ ॥ इण पुत्र कीयो वम्रराजा, राय हुवो व्रत धारीजी ॥ नेमि तीर्थंकर तीर्थे एतो, वात तणो विस्तारोजी ॥ का० ॥ १९ ॥ इण पुत्र तणेवर पुत्री, प्रियगु सुदरी बालाजी ॥ रुपकला गुण सुदर साची, स्वामी ते सुखमालाजी ॥ का० ॥ २० ॥ तुमसु राग धरे अधिकेरो, सारो एहनो काजजी ॥ जाणी अदत्ता मत खींचावो, मे दीधी ए आजजी ॥ का० ॥ २१ ॥ ए घरमे हु हरतां फिरता, महारु कीधु चालोजी ॥ राजाजी तो एकमनो अति, आण हमारी पालोजी ॥ का० ॥ २२ ॥ कामदेवना देवल मांही, प्रित पनोती पोखीजी ॥ करी विवाह विनोद करीने, सुदरीने सतोखीजी ॥ का० ॥ ॥ २३ ॥ देवल माहि देवि ज्ञापित, कीधो लीधो लाहोजी ॥ राय लिखी वींतरणी विलसीत, प्रगट कीयो विवाहोजी ॥ का० ॥ २४ ॥ ए पचाविशमी ढाले ज्ञाखी, जिहा तिहा अधिकाइजी ॥ श्रीगुणसागरसूरि कहेजी, पुण्य सदा सुखदाइजी ॥ का० ॥ २५ ॥

दुहा ॥ एकवार एकलपणे, जागी जोवे जाम ॥ किंचित् कुमरी आगले, उभी दीठी ताम ॥ १ ॥ कवण अछो तुम कामनी, कहो आपणो नाम ॥ काम किने आवीअछो, सोइ प्रकाशो काम ॥ २ ॥

ढाल २६ मी ॥ श्री सिमदर साहेब मेरा ॥ ए

ता मूइ सुरगतिनो अवतारोजी ॥ साहू नाग आवि तराणि, नही सदेह लिगारोजी ॥ का० ॥८॥ श्री जिनधर्म अछे जग साचो, जो आराधे कोईजी ॥ मोक्ष तणा घल आपणहारो, सुरगाते सहेजे होइजी ॥ का० ॥ ९ ॥ ज्ञान बले मे देख्यो पाछो, जाग्यो नेह घणेरोजी ॥ मातपिताने सुत सघाते, मोही रह्यो मन मेरोजी ॥ का० ॥ १० ॥ चाली आव्या मातपितातो, दुखीया दीठा दोइजी ॥ मा पाखे वालक जिम जीवे, करे विमासण सोइजी ॥ का० ॥ ११ ॥ बालपणे माता मरी जाइ, तरुण पणे जो नारीजी ॥ वृद्धपणे सुत मरता भाख्या, ए तिने दुःख भारीजी ॥ का० ॥ १२॥ आप जणावी मातपितानी, आरातें अलगी टालीजी ॥ इणभरे आप पधरावी, बालक लीधो पालीजी ॥ का० ॥ १३ ॥ इणे पुत्र कह्ो बोलाव्यो, तापस सघले तामोजी ॥ एहज नाम प्रसिद्धो चाल्यो, लोक वचन अभिरामोजी ॥ का० ॥ १४ ॥ मरण समे निज मातपिताने, जिनमतशु स्थिर स्थापीजी ॥ अणसणने आराधन वले, सुरवर पदवी आपीजी ॥ का० ॥१५॥ तापसणी होइने हुतो, वालक लेइ लारोजी ॥ शिला युद्ध तणे घर आवी, सुपण बाल कुमारोजी ॥ का० ॥ ॥ १६ ॥ राजा साथे वदे मृदुवाणी, ए ल्यो थारो नदोजी ॥ अपुत्रियाने नदन क्याथी, भाखे ताम नरिंदोजी ॥ का० ॥ १७ ॥ मूलथी वात सुणावत, जाण्यो,

माहरुं, अबला तो धुर नामोरे ॥ पुरुषपणो तेहनो श्यो उप्राजो, जेहथी न सरे कामोरे ॥ स्वा० ॥ ११ ॥ दिन वचन मे एही वीनविउ, जिम जाणो तिम कीजे रे ॥ एटलो जाणी जोर अरिनो, क्युए सुयश न लीजेरे ॥ स्वा० ॥ १२ ॥ चालो तो प्रभुने पोहोचावु, सोमश्रीने पासेरे ॥ चाली कहता चतुरपणाथी, चाली लेइ उलहासेरे ॥ स्वा० ॥ १३ ॥ स्वामी निरखी सुदरी हरखी, आरति कीधी कोणेरे ॥ नारी रुप धरी प्यारो पिउडो, पद्मनिशु सुख माणेरे ॥ स्वा० ॥ १४ ॥ काम समारी सैह्यर केरो, प्रभावति घर चालीरे ॥ लोकाचार व्यवहार विशेखे, चितमो पिउने आलीरे ॥ स्वा० ॥ १५ ॥ दिन केताने अंतरे मानस, वेगे लिखी ए वातोरे ॥ कोपतणो वश कलकलिउ अति, कालो पीलो थातोरे ॥ स्वा० ॥ १६ ॥ मांडी समर तणीरे संनाइ, शोचन कीधो कोइरे ॥ सिहतणीपरे सूरपणाथी, आणी अडीयो दोइरे ॥ स्वा० ॥ १७ ॥ जाणी अन्याइ छोडे न्याइ, न्याइ धर्म सहाइरे ॥ खेचर प्रभुनो पक्ष करता, मची अधिक लडाइरे ॥ स्वा० ॥ १८ ॥ तव तो वेगवतिनी माइ, जाणी जमाइ प्यारोरे ॥ दिव्य तीरना तरकस दोइ, दीधो धनुष्य उदारोरे ॥ स्वा० ॥ ॥ १९ ॥ प्रज्ञापति वर विद्यावारु, प्रभावतिथी पाइरे ॥ विद्या बलने भुज बले वली, बांध्यो त्रीयनो भाइरे ॥ स्वा० ॥२०॥ सासु सामी आवी मागे, पुत्र भिक्षा

देशी ॥ स्वामी मुणेने सुंदरी भाखे, सप कोइ न राखे रे ॥ काज करवा कारण आवी, सोइ कारज दाखे रे ॥ स्वा० ॥ १ ॥ गिरि वैताढ्ये नगरी निरोपम, गध्र स्मृद्धि सोहावेरे ॥ गुणनो सागर अधिक उजागर, राय गधार कहावेरे ॥ स्वा० ॥ २ ॥ प्रथवी राणी रजा जाणी, कुमरी तेहनी जाइरे ॥ नाम प्रासिद्धि प्रजावति हु, सुजनपणे सुखदाइरे ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ मानस वेग तणे घर गइथी, स्वर्णसुप्रजपुर माहीरे ॥ मात अगारवति सतीयामे, सती सीरोमणि प्राहिरे ॥ स्वा० ॥ ॥ ४ ॥ वेगवति निज पुत्री केरी, आश अधिकी आणेरे ॥ मे पुत्री सा क्यां गइछे, खबर कोइ न जाणेरे ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ सखियापणे सोमश्री बोली, माहरे काम सिधावीरे ॥ श्री वसुदेव नरेश्वर पासे पिण, पापणि फिरी न आवीरे ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ मानसवेग महा मयमतो, मुजशुं भडीयो आवेरे ॥ माय दवावे शील सुधर्मणी, पोहचो वान वीमावेरे ॥ स्वा० ॥ ७ ॥ तु उपगारी सिरोमणि सान्वी, माहरो कारज सारेरे ॥ सदेसो लाइ सघाते, कहिता जीव उवारेरे ॥ स्वा० ॥ ॥ ८ ॥ आश वले मे ए दिन लिधा, आगे आशा तुटेरे ॥ झुरी झुरी पजर हुइ, अब मुझ हियडो फूटेरे ॥ स्वा० ॥ ९ ॥ वेगे वार कीजीए माहरी, नहीतर छोडु प्राणेरे ॥ शीलजगथी नर्के जाणो, प्राण घणा घट आणेरे ॥ स्वा० ॥ १० ॥ जीवन मरण तणुं शु

किणही कीधो मांमो दोरो ॥ जे जीम हशे तिम भासोरे, हु जोशु एह तमासो ॥ ६ ॥ कोई मंत्रवादियो आयो रे, ते आपण परे खीजायो ॥ ए तेहनां कीधां कामो रे, ए छे राजसुता अभिरामो ॥ ७ ॥ ए परवश हुं जा मोरे, धूर फेंकीयो तेहनो ठामो ॥ ए मारीविदारी दे होरे, तस हाडा साथे सनेहो ॥ ८ ॥ तव करुणा नीम ति आणीरे, सा कीधी ताम सयाणि ॥ श्री नवकार प साइरे, न वाछित काम सराइ ॥ ९ ॥ नम रुपीया ज ण ध्यायारे, राजाना रोश भराया ॥ उपकार कोई न जाण्योरे, प्रभु राजग्रहि में आण्यो ॥ १० ॥ पुछता उत्तर भाखेरे, ते कोई न छानो राखे ॥ ए केतुमतिने वापेरे, वर एक निमितिए आपे ॥ ११ ॥ ए पुछ्येथी पे हलु वारुरे, जगजीवन आ सहु मारु ॥ मुक्ष हता आ प्यवता विरेरे, तु भाल्य भावि भलीपेरे ॥ १२ ॥ तव जाणे नर साहि नाणिरे, कही दासीए अहिनाणि ॥ तुम पुत्री सारी करस्येरे, तस नंदनथी तुम रस्ये ॥ ॥ १३ ॥ ते दिनथी नृप आदेशरे, हुशियारीमे सुविशे ष ॥ वरतता तु अब लाधोरे, सुर इष्ट भणी आराधो ॥ १४ ॥ अब वध भूमीका लेइरे, तुज घाव करेस्यां केइ ॥ ए सुंदर काया कापीरे, दिश देवाने बलि आ पी ॥ १५ ॥ स्वामीनो काम समारीरे, हम वाहला हो स्या भारी ॥ एह सुणता वातोरे, प्रभुनो मन अकुला तो ॥ १६ ॥ चिंताए चाप्यो जामोरे, एक खेचर आयो

मुझ दीजेरे ॥ बंधन छोडी साला साथे, परिघल प्रीति कीजेरे ॥ स्वा० ॥ २१ ॥ सोमश्रीने प्रभु पहिरावी, साथे हुवो खग सोयरे ॥ बेसी विमाने महापुरी आया, सासरीया सुख होयरे ॥ स्वा० ॥ २२॥ वीस अने पटमी ए ढाले, दिन जाता न जणाइरे ॥ श्री गुणसागर सुरि सलुणो, साजनीयो सुख दाइरे॥स्वा०॥२३॥

दुहा ॥ सुरपक नामे खेचरु, खेचरपणे तिवार ॥ रूप धरी घोडा तणो, कीधो नृप अपहार ॥ १ ॥ उचो जाता अबरे, दीधो मुष्टि प्रहार ॥ गंगाजल माही पड्यो, श्री वसुदेव कुमार ॥ २॥ गगाजलथी नीकल्यो, तापस वन आवत ॥ अवसर देखी अति घणो, गाढो सुख पावत ॥ ३ ॥

ढाल २७ मी ॥ वनमालीनी देशी ॥ एक दीठी रमणी राइरे, सासु धन जाणे काइ ॥ विकल रुपणी दीसेरे, सा दात घणेरु पीसे ॥ १ ॥ वस्त्र विहुणी बालीरे, नर हाड धरया विकराली ॥ ए गेली नाम धरतीरे, नृप देखीने रग करती ॥ २ ॥ तव पूछीयो तापस राजारे, ते उत्तर आपे ताजा ॥ ए जरासधनी जाइरे, ए केतुमतिरे कहाइ ॥ ३ ॥ जीतशत्रु नरेशर राणीरे, ए रूपे रम्भा समाणी ॥ ए सर्व सुलक्षणा धारीरे, ए मात पितानी प्यारी ॥ ४ ॥ ए कर्म न छूटे कोइरे, सुदर दानव होइ ॥ एह अवस्था पामीरे, तव पुनरपि पूछे स्वामी ॥ ५ ॥ ए वाय तणो छे जोरोरे,

रुडोने रलीआमणो ॥ तव घर घरवार वधामणो ॥ ज० ॥ ४ ॥ सुख सागरमाही झीलेए, तव तन मन शु अति फूलेए ॥ तव नेम सुराति पूलिए, पाछो सघ लो हि भूलिए ॥ ज० ॥ ५ ॥ सुपॅक आप विगोवतां, तव आणी पोहतो जोवतां ॥ अति निंद्रावश होवतां, प्रभु लेइ चल्यो सुखे सोवता ॥ ज० ॥ ६ ॥ अवर जातां जागीयो, तव काठो दोइ लागीयो ॥ गरदन मे गडदो वागीयो, तव वैरीनो वल भागीयो ॥ ज० ॥ ॥ ७ ॥ उण्डा पाणिमे पड्यो, जल पयरीने कां अड्यो ॥ प्रभु वसति भणि अति दडवड्यो, तव कुंदनपुरी आवी चड्यो ॥ ज० ॥ ८ ॥ राजा राज करे भलो, ते पद्मप्रभ छे निर्मलो ॥ ते गुण आचारे उजलो, ते तेगने त्यागे आगलो ॥ ज० ॥ ९ ॥ पद्मश्री नारी सती, त स पुत्री छे गुणवति ॥ सा चाले चाले मलपती, सा कोमल वाणी जलपती ॥ ज० ॥ १० ॥ सा राग कला ए अति ताणे, अभिमानपणो मनमा आणे ॥ सा भली बुराइ न पीछाणे, जग सगलो हि तृण करी जा णे ॥ ज० ॥ ११ ॥ इम सुणी आयो चाली, जीती ने परणी सा वाली ॥ सा नारी मेली जे टाली, लही ए जो जिन आज्ञा पाली ॥ ज० ॥ १२ ॥ रस रगे रमतो सचरे, तव निलकठनी अपहरे ॥ तव सीख दे ता करगरे, प्रभु पर्मीयो चंपा सरवरे ॥ ज० ॥ १३ ॥ मत्रिनी पुत्री परणी, सा कचन वरणी सुख करणी ॥

तामो ॥ प्रभु लेइ चाल्यो गेडाइरे, ते सुभट रह्या मो
हवाइ ॥ १७ ॥ आकाशे जाता जोइरे, खग साथे पु
छे सोइ ॥ तु कुण अछे सुखकारीरे, कहे वात विशेष
विचारी ॥ १८ ॥ हु प्रभावतिनो वावोरे, माहरो छे आ
धिक असावो ॥ मुझ भागीरथी अभीधानोरे, हं राया
नो राजानो ॥ १९ ॥ अब पोतिने परणावारे, वैताढ्य
गिरिरे वसावा ॥ तुझ लेइ जाछवु विरारे, तुम साहस
वत सधीरा ॥ २० ॥ ए दष्टीरागनो साजोरे, छे प्रभा
वति शु झाझो ॥ ए सत्ताविशमी ढालोरे, गुणसु
रि कहे सुविशालो ॥ २१ ॥

दुहा ॥ भूमफलने परहरी, गावो वीसहजार ॥ उचो
जाता अवरे, दक्षिण श्रेणि उदार ॥ १ ॥ गधसमृद्धा
पुरवरां, आइ गया ततकाल ॥ खबर जणावी सादरी,
सहु भणी सुविशाल ॥ २ ॥

ढाल २८ मी ॥ तुं साभल हो जिनपति ॥ ए दे
शी ॥ जग जाचो हो यदुपति, तस माथे दिपति राति
॥ सुर मानवने माटायति, अति किराति गावे छति ॥
ज० ॥ १ ॥ साजन सनमुख आवीया, ते प्रभुजीने
मन भावीया ॥ पुरमाहि सीधाविया, ते परम महा सु
ख पाविया ॥ ज० ॥ २ ॥ मुहूर्तनो महाणोजी, तव
कीजे कोमकल्याणोजी ॥ तव भेल्या जोसी जाणोजी,
दिन साध्यो सार प्रधानोजी ॥ ज० ॥ ३ ॥ प्रभाव
तिने प्रभु तणो, तव कीधो व्याह सोहामणो ॥ वर

प्यो ॥ श्रेणीमांहि मुख्य करी गप्यो, सघलो तेहनो दुःख काप्यो ॥ ज० ॥ २४ ॥ निलयशा आवी घरी, हाथ जोडी विनति करी ॥ ए दोइ विनावर सहचरी, ए सह सवहुं तेरे गुणनरी ॥ ज० ॥ २५ ॥ ए ढाल आठावीशमी, शीवपुरी जाशे आतम दमी॥ ए नारी सहु सरखी समी, श्री गुणसागर मनसा रमी॥ज०॥२६॥

-दुहा ॥ शुद्धि सघली लेइ करी, श्री वसुदेव कुमार ॥ मध्य खरूमे आवता, सुणीयो एह विचार ॥ १ ॥ श्री अरिष्ट पुरवर भलो, श्री हरी ब्रह्म नरेश ॥ पट राणी पदुमावति, पद्मा वास विशेष ॥ २ ॥ कुमरी नामे रोहिणी, अमरीनो सुविलास ॥ नख-शिख तांइ शोभति, स्वयवर मंडप तास ॥३॥ जरासध सुत बांधवा, पाडव कौरव राय ॥ यादव खेचर नृप अवर, मिल्या एकठा आय ॥४॥ बैठा वड वड आसणा, वडा-वडा भूपाल ॥ चडी वधी शोभा करी, दिसे झाकझमाल ॥५॥

ढाल २९ मी ॥ धन प्रभु-रामजी, धन्य-परिणाम जी ॥ए देशी॥ कुवर आयो श्री वसुदेववे॥ रुप विरुप करी कोलिको, भाइ न लहे भेववे ॥ कुं० ॥ १ ॥ रोहिणी रभा सरस विराजे, साजी सवरो वेसवे ॥ मंडप आवी जगत सोहावी, भिन्न करी सुविशेषवे ॥ कुं० ॥ २ ॥ प्रतिहारणि आगे होइ, प्रगट करे नृप नामवे ॥ जरासध श्रीखरू नरेश्वर, ए प्रभुजी अभिराम वे ॥ कु० ॥ ३ ॥ अपराजीत वधन कुवरजी, कालयवन

सा रुपे रंभा मनहरणी, सा इंद्राणी उपम धरणी ॥ ज० ॥ १४ ॥ सुखकारी सुधरे घणी, जाणे सुख पात्र एहतणी ॥ पिण जेहनो रखवालो धणी, तिहा कीसी चले वैरि तणी ॥ ज० ॥ १५ ॥ तव अरि आ खुण जाणयो कीयो, प्रभु जल क्रिडा करतो लीयो ॥ तव मुष्टिशुं हणता हियो, ते अबरथी नाखी दियो ॥ ज० ॥ १६ ॥ तव पडीयो गंगाजल माहि. तव भ्मट विमे फीरतो प्राहि ॥ प्रभुवन राजा उठाहि, नगरीए आणयो धरी वाहि ॥ ज० ॥ १७ ॥ कुमरी राज पर णावता, तव गीत घणेरा गावता ॥ तव मंगलाच्यार करावता, तव सुंदरीशु सुख पावता ॥ ज० ॥ १८ ॥ तव नंदन नीके जाइउ, रानाने आणी सुणाइयो ॥ तव दाने दरिद्र गमाइउ, तेजरथ कुमर मन भाइउ ॥ ज० ॥ १९ ॥ तव अयवति सुंदरी करी, तव सुरसे न्याशु वरी ॥ सामा देवी तव आवे खरी, विनति क रे करधरी ॥ ज० ॥ २० ॥ बेसी विमान प्रभु आवे, अशनीवेगने सोहावे ॥ सेन सकल लेइ जावे, आ ली अरिनोपुर पावे ॥ ज० ॥ २१ ॥ अंगारक तर्डी आयो, सुर्पक निलकंठ बोलायो ॥ रणथंभ तीहारो पा यो, बहुविध युद्ध बणायो ॥ ज० ॥ २२ ॥ विद्याध र बहु थाठा, युद्ध करता अति त्राठा ॥ जाए अ पुष्ठा नाठा, प्रभुजीशु अति गाठा ॥ ज० ॥ २३ ॥ अशनीवेगने राज आप्यो, सहु वदीतो स्थिर स्था

॥ १४ ॥ कर्महिनने क्लेश किहांथी, कांइ करन चढा यवे ॥ पाणिग्रहणने रजक ए मोठो, अण सरज्यां न लहायवे ॥ कु० ॥ १५ ॥ निर्जगर्यो ते जरासंघशुं, वो ल्यो चटक लगायवे ॥ ए मातग अछे मयमतो, हम सरखा शुं थायवे ॥ कुं० ॥ १६ ॥ जरासंध कोपे कल कलीयो, वड वमा सुभट सजायवे ॥ हाथी घोडा रथ थी उठी, रेणु रही नभ गायवे ॥ कु० ॥ १७ ॥ श्री हरि ब्रह्म नरेश भाखे, अवसर जाण कहायवे ॥ जो तरी रथ कुमरी वेसारी, अब तो तुं टली जायवे ॥ कु० ॥ १८ ॥ कुमर कहे सुसराजी एहवो, बोलन फेरी बो लवे ॥ एतो सग लाचार हमारी, था दढता मम डो लवे ॥ कु० ॥ १९ ॥ विद्या बलने मन बले बलीयो, बलीया छे भूज दंडवे ॥ तृण जीम सुभट उनाइ ना स्या, प्रभुनी पवन प्रचंडवे ॥ कु० ॥ २० ॥ बीजी फो ज वनी अति आवी, कुवर कुलीयो घेरवे ॥ काइ अ धरम करो सुर कहेतां, लाजी चल्या दल फेरवे ॥ कु० ॥२१॥ सघकेतु भूपाल पधारयो. दल बल सबलो साज वे ॥ जदुपति सिंह उठावणी आगे मृग जेम चाल्या भा जवे ॥ कु० ॥२२॥ महाबल राजा अति बलवतो, सन्मुख आयो चालवे ॥ उगता रवी आगे तम जीम, सोपिण गयो मुह टालवे ॥ कु० ॥ २३ ॥ उदाधिविजय नृप वीडो पायो, ए तुम सरीखो काजवे ॥ जादव जोर विशेष जणावत, आवत करत अवाजवे ॥ कु० ॥२४॥

कुलमांहिवे ॥ दाता भोक्ता दल दरिआको, नाम धरा
चत प्राहिवे ॥ कु० ॥ ४ ॥ पाडव पच प्रतापबले भ
ति, कौरवसत ए देखवे ॥ कर्ण कहावे कल्पतरु जे,
जे ए परतख पेखवे ॥ कु० ॥ ५ ॥ उदधिविजय भा
दे नव भाइ, अधिकाइमे आणवे ॥ उग्रसेन अलेल
करंता, यादव राजा जाणवे ॥ कु० ॥ ६ ॥ खेचर नू
चर सर्व प्रकारे, आगे एह नीहालवे ॥ कुमरी मुह म
चकोडी चाली, हा आगेरे चालवे ॥ कु०॥७॥ वड वड
राणा वड वड राजा, फरहरीया सब दूरवे ॥ चतुरपणाथी
चाली आवी, श्री वसुदेव हजूरवे ॥ कु०॥ ८ ॥ आप
वजावे बाजा वारु, सुघमाइनो संचवे ॥ कुमरी देखे रु
प मूलगो, नजर न खचे रंचवे ॥ कु० ॥ ९ ॥ धौ धौ
धप पम मुक्रवर, मादल शब्द करतवे ॥ वसी वरमा
ला रलियात रोहिणी, कुवर कंठ धरतवे ॥ कु० ॥ १०॥
आप मने कुमरी तो कीधो, एतो सर्व सयाणवे ॥ म
मे अणल हेवे राजा सघला, हुया अधिक अयाणवे
॥ कु० ॥ ११ ॥ उधत कुवर कालयवनजी, कोप व
शे उचरतवे ॥ अवर वरानी नाठी पडीथी, ए वर न्या
य वरतवे ॥ कु० ॥ १२ ॥ कुमरी भूली हम नहि भू
ल्या, ल्यो वरमाल छिनायवे ॥ काग गले कचननी मा
ला, एतो भली न देखायवे ॥ कु० ॥ १३ ॥ चाकर
आवी माला मागे, नृप सुत वचन सुणायवे ॥ कुमर
कहे किम राज करेछे, करता एहवो न्यायवे ॥ कु० ॥

सौरिपुर आवंतवे ॥ घर घर मंगलाचार वधाइ, साजन सुख पावतवे ॥ कु० ॥ ३५ ॥ साह सहु मिलि चरणे लाग्या, प्रभु दीधो सनमानवे ॥ रामचद्र जेम गुणनो ग्राहक, नाणे मनमे आनवे ॥ कु० ॥ ३६ ॥ गज सायरने चद सिंहवर, देखी सुपना च्यारवे ॥ शुभ वेलाइ रोहिणी जायो, श्री बलभद्र कुमारवे ॥ कु० ॥ ३७ ॥ एकुणत्रीशमी ढाल रसाल, उपज्यो पुरुष प्रधानवे ॥ गुणसागरे हरि वश तणेछे, दिन दिन चढतो वानवे ॥ कु० ॥ ३८ ॥

चोपाइ ॥ खड खड रस छे नव नवा, सुणता मीठा साकर जेवा ॥ श्री हरिवश चरित्र जयजयो, प्रथम अधिकार ए पूरो थयो ॥ १ ॥ इति ढालसागर प्रबधे श्री हरिवश विस्तार वर्णनो नाम प्रथम खंड समाप्त॥

॥ अथ हरिवश ढाल सागर ग्रथस्य द्वितीय खड प्रारभ ॥

दुहा ॥ श्रीमधर स्वामी तणा, चरण नमु चित्त लाय ॥ अब बीजो अधिकार वर, य भणतां सुख थाय ॥ १ भुजगविष्णु नरेंद्रजी, मनमे करे विचार ॥ अब अवसर सजम तणो ॥ तजिए विषय विकार ॥ ॥ २ ॥ वय पलट्या वाला पणो, वा छे विविध प्रकार ॥ विटल विगोवे आपने, नह ले शोच लिगार ॥ ३ ॥ उग्रसेन निज पुत्रने, राजभार आपंत ॥ धर्मघोष मुनिवर कने, सजम लीयो तुरत ॥ ४ ॥ सजम पाल्यो

आनंददुंदुभी साहमो आयो, हाको हाक होवंतबे ॥ अचरिज पामी अवरस्वामी, कौतुक अति जोवतबे ॥ कु० ॥ २५ ॥ आगे पाव न ठावे कोई, होइ रह्यो ए सोचबे ॥ किंउ न धसे अरि उपर राजा. लोगा ए आलोचबे ॥ कु० ॥ २६ ॥ सिर लोचनने भुज पिण द क्षिण, राजाना फूरकतबे ॥ करत विचारण ए स्थिर स्थापी, कोइक इष्ट मिलतबे ॥ कु० ॥ २७ ॥ कुमर क हे लम्बो नहि जुगतो, नृप मुज बाप समानबे ॥ स्व अक्षर बाण चलाव्यो आव्यो, नृप आगे अहिनाणबे ॥ कु० ॥ २८ ॥ अक्षर वाच्या लघु भाइना, झीलो प्रभु प्रणामबे ॥ बहुत्तर सहस ए गुण राणी, जाणी आज सकामबे ॥ कु० ॥ २९ ॥ साजन मेले वसीए सोतो, वास भलो कहेवायबे ॥ साजन मेला पाखे व सवो, जंगल माही गणायबे ॥ कु० ॥३०॥ भाइ धाइ सन्मुख आयो, कुंवर लाग्यो पायबे ॥ उठाइलियो जे अग्रिकेरे, लीधो कंठे लगायबे ॥ कु० ॥ ३१ ॥ चाम रुधिरने मास हाडथी, मींजी भीतर जाइबे ॥ प्रचाहि पुट भेदाणी भारी, गाढी सीतलताइबे ॥ कु० ॥ ३२ ॥ जरासंध नरेश्वर आदे, हरख्या राय अपारबे ॥ धन रोहणी कुमरी करमैति, पायो भल भरतारबे ॥ कु० ॥ ॥ ३३ ॥ सो वर साने अंतर आयो, ऋद्धि घणेरी पायबे ॥ विद्या विविध प्रकारे लायो, लब्धि वली बहु रायबे ॥ कु० ॥ ३४ ॥ सघली रमणिशुं प्रभु प्रगट्यो,

हो ॥ रा० ॥ ८ ॥ सौरीपुर व्यवहारीयोहो, शेठ सुभ द्र उदार ॥ कांसाथी काढी लीयोहो, नामे कस कुमा रहो ॥ रा० ॥ ९ ॥ वालाने विहामणोहो, कस स्वभा वे आप ॥ शक न माने कोईनीहो, न छपे तेज प्रता पहो ॥ रा० ॥ १० ॥ शेठ कलेस विचारवेहो, कीधो राय हजूर ॥ श्रीवसुदेव कुमारनेहो, दिधो जाणी सनूरहो ॥ रा० ॥ ११ ॥ पासे रहे वसुदेवनेहो, सारे सेव अ पार ॥ कुमर न क्षण अलगो करेहो, विनय वडो सं सारहो ॥ रा० ॥ १२ ॥ ब्रहद्रथ वारु महाहो, हरिवं शी राजान ॥ राणी नामे श्रीमतिहो, जायो पुत्र प्रधा नहो ॥ रा० ॥ १३ ॥ जरासंध वड राजविहो, त्रिख ड तणो नृपाल ॥ राज ग्रहिमा राजतोहो, पिशुन न रानो कालहो ॥ रा० ॥ १४ ॥ अपराजित आदे क रीहो, बंधव केरी जोड ॥ कालयवन आदे घणाहो, कुमर मूछ मरोमहो ॥ रा० ॥ १५ ॥ सिंहरथ राजा बाधीयोहो, राय तणे आदेश ॥ श्री वसुदेव कुमरजी हो, सुजश लियो सुविशेषहो ॥ रा० ॥ १६ ॥ करत जमाइ आपणोहो, हरख्या लोक अशेष ॥ कुमरी जा णी कुलक्षणीहो, कीधो कस नरेशहो ॥ रा० ॥ १७ ॥ निश्चय लाधो वातनोहो, लोक वचनथी जाम ॥ मा स्यु रीस न उपजीहो, ज्ञान विचारत तामहो ॥ रा० ॥ १८ ॥ पतित पिताछे गेमवोहो, माय न गेडी जाय ॥ गर्भ धरेवे पोखवेहो, मा मोठी कहेवायहो ॥ रा० ॥

साचशुं, केवल कीधो प्रकाश ॥ जुगंगाविण्णु महा मुनि, साध्यो मोक्ष निवास ॥५॥ मथुरा पुरी राज करे भलो, उग्रसेन राजान ॥ न्याय निति गुण धारणो, शोभा गुण मणि खाण ॥ ६ ॥

ढाल ३० मी ॥ रामको सुजश घणो ॥ ए देशी ॥ राजा गुणवंतो, न्याय धर्म प्रतिपालहो ॥ रा० ॥ गुरु छ गोत्र गोवलहो ॥ रा० ॥ ए टेक ॥ उग्रसेन राजा भलोहो, पाले राज उदार ॥ प्रजा तणी प्रतिपालणा हो, नहि अनित्य लिगारहो ॥ रा० ॥ १ ॥ आप आ पणो साचवेहो, सहुए कुल आचार ॥ जोर न जस्ती करी सकेहो, को केहनी कण वारहो ॥ रा० ॥ २ ॥ नाम प्रणामे धारणीहो, पटराणी सुविशाल ॥ पति भ क्ति साची सतीहो, गजगति चाल रसालहो ॥ रा० ॥ ॥ ३ ॥ आनन एह्नु विराजतोहो, वयण सुधारस सा र ॥ मनसा धर्मज तत्वनीहो, रति देवि आकारहो ॥ रा० ॥ ४ ॥ स स्नेहि परीवारशुहो, देव गुरुशु प्रेम ॥ पोसा पडिक्कमणा करेहो, पाले सुधा नेमहो ॥ रा० ॥ ५ ॥ प्रीतमशु अति प्रीतडीहो, जीव एक तनुदोय ॥ आनद रग विनोदमेहो, राजा राणी होयहो ॥ रा० ॥६॥ तापस एक निदानशुहो, राणी उर अवतार ॥ उपजावे ते मोहलाहो, पति कालेजानो हारहो ॥ रा० ॥ ७ ॥ मत्रि बुद्धि विशेषथीहो, डोहलो पूरो हो य ॥ जयो जलहि प्रवाहिउंहो, भुंडा सगो नही कोय

नी ए वाणी ॥ प० ॥ १ ॥ मथुरा नामे नगरी वोली, जाणी ए इंद्रपुरी सम तोली ॥ भानु नामे शेठ उदार, कचन कोडी अछे तसुवार ॥ प० ॥ २ ॥ जमुना नामे निरुपम नारी, साहने सुहाणीछे अति प्यारी ॥ पुत्रो सात जनी ले माता, जगमाहि छे अधीक विख्याता ॥ प० ॥ ३ ॥ सुभानुने भानुकिरति, भानुखेण ए त्रिजो विरति ॥ चोथो सूरजने सूरदेवो, छठो सूरदत्त कहेवो ॥ प० ॥ ४ ॥ सूरसेन ए साते भाइ, नारी साते ए परणाइ ॥ कालिंद्रि तीलकाने काता, श्री काता सुंदरी अति माता ॥ प० ॥ ५ ॥ द्युति समद्युति वेसे विशाली, चद्रसु काता रुप रसाली ॥ सात सहोदर साते नारी, साता माने विविध प्रकारी ॥ प० ॥ ६ ॥ शेठ अने शेठाणी दिक्षा, लेइ पाले सुधी सिक्षा ॥ सथारो करी छोडी प्राणो, ततखिण पाम्या अमर विमानो ॥ प० ॥ ७ ॥ पाछे कुंवर कुव्यसने पडीया, धन उजाडीने रडवडीया ॥ आपद चुरथाने अति भाग्या, तव ते चोरी करवा लाग्या ॥ प० ॥ ८ ॥ उजेणी नगरे चाली आया, चोरी करवा काज सीधाया ॥ लघु भाइने मूकी मसाणे, बिजो चोरीनी मति ठाणे ॥ प० ॥ ९ ॥ तिणे अवसर तिहा राजा निको, वृषध्वजराय राया सिर टिको ॥ कमलाराणी मगी कुमरी, रुपे रुडी जेहवी अमरी ॥ प० ॥ १० ॥ दृढ मुष्टिने सात विवाही, सासरडे आवीरे उमाहि ॥ सासु क्रोध

॥ १९ ॥ मांगी कर मेलावणेहो, मथुरा करण उपाव ॥ वाप दियो कठ पिजरेहो, वयर विलय नविजायहो ॥ रा० ॥ २० ॥ असमजस देखी घणोहो, श्री अतिमुक्त कुमार ॥ पाले चारित्र साटरोहो, राग न रोस लिगारहो ॥ रा० ॥ २१ ॥ कस वतसक सारीखोहो, वरते आण अखड ॥ मर्दन मान महावलीहो, पाले राज प्रचम्हो ॥ रा० ॥ २२ ॥ ढाल नली ए त्रिसमीहो, निसुणे जे नरनार ॥ गुणसागर गर्जे महाहो, अन धनने अधीकारहो ॥ रा० ॥ २३ ॥

दुहा ॥ अनिकनस्या जस आगलो, अनत सेन दयाल ॥ अजीत सेन सुहामणो, अनहित रिपु सुकुमाल ॥ १ ॥ देवसेन तो देवता, शत्रुसेन अतिधीर ॥ उपजशे हरी माहिरे, सामल वरण शरीर ॥ २ ॥ वीरा वरणे सामला, वीरा शोन निधान ॥ वीरा सवला सारिखा, वीरा पुरुप प्रधान ॥ ३ ॥ वीरा नोगी नमरला, नोगवशे नल नोग ॥ त्यागी तो त्रिभुवन सीरे, योगवशे वरयोग ॥ ४ ॥ वीरा साधु सलुणडा, जोता सहस्त्र अढार ॥ होशे शिवपद साधणा, साचा सजम धार ॥५॥ ए पटहि वीरा तणा, पूर्व नवतर सार ॥ मुक्त कहेता तुमे सानसो, नविक जनो सुविचार ॥६॥

ढाल ३१ मी ॥ परनव वात सुणावेरे स्वामी ॥ ए देशी ॥ पट नाइना पूर्व नवतर, देवकी नदन छेरे सुहकर ॥ चरम शरीरी उत्तम प्राणी, नेम जिनेसरजी

हवो, ते सानलिए जे छे जेहवो ॥ सूरसेन मसाणे वे
सायो, ते मगीनो दृष्टि आयो ॥ प० ॥ २१ ॥ रूप
घणो ने यौवनवंतो, तरुणी त्रियानो चित्त हरतो ॥
मगी मोहि देखी तासो, पति करवानी माडी आसो
॥ प० ॥ २२ ॥ वनिता वेली सरखी साची, पासे ल
हे तस साथे राचि ॥ ते शु मगी घाले नाखो, सुख
विलसणनि छे अभिलाषो ॥ प० ॥ २३ ॥ चोर कहे
तुझ पतिथी सकु, मगी मुह कियु तव वकु ॥ पति मा
री तुझ साथे आवु, पिण जो थारी वाचा पाउ ॥ प०
॥ २४ ॥ कौतुक जोवा वाचा आलि, मगी पति तव
आयो चालि ॥ खाडो मगीने पकडायो, ऋषि पग पू
जणने चित्त लायो ॥ प० ॥ २५ ॥ मगी चोट करति
जाणि, मा कहि बोल्यो करुणा आणि, रडी चडीरे कु
लनडी, शु चाहे नीजपति शीरखमी ॥ प० ॥ २६ ॥
प्रितम प्रेम वसे हसी नाखे, ए शुं सा तव उत्तर दा
खे ॥ जाने मारी मुझ कर कंपे म्यान पड्यो छटकी
इम जपे ॥ प० ॥ २७ ॥ चुम्माने उपजे अति आइ,
पेठी जिम यक्ष मूरति लाइ ॥ प्यारि थइ प्रितमने
नमाइ, तिम मगीए वान बणाइ ॥ प० ॥ २८ ॥ ना
इ चोरीनो धन लाया, वाटा साथे ताम कराया ॥ ल
घु नाइ वाटो नवि इछे, सजम लेवो मनमा वछे ॥ प०
॥ २९ ॥ नाइ पूछे ए किण कारण, मगी चरीत्त सु
णायो तारण ॥ हलुकर्मी वैरागे राता, धन सघलो ले

णी नहु वडवेति, नीत लमाइ सासु सेति ॥ प० ॥ ११॥ सासु हुय थाए वहु आगे, तो वहु सासुने पगे लागे ॥ जो सासु अति आप खेचावे, तो वहु सासुने वश नावे ॥ प० ॥ १२ ॥ पापज प्यारो ने धर्म न प्यारो, घरमे वरते वहुनो वारो ॥ नारी नेहनो नाथ्यो पिउमो, माथी दूर त्रियाथी नेडो ॥ प० ॥ १३ ॥ आयो मास वसत विराजी, खेलण केरो साज सुसाजी ॥ राय जमाइ वनमे आवे, खेल करी रलीयायत थावे ॥ प० ॥ १४ ॥ पापणी पाप विच्यारे गाढो, विपहर मोटो आंणी सदाढो ॥ घटमे राखी कहे विकराला, वहु ला वो कुसुमकी माला ॥ प० ॥ १५॥ विषहर दउमे सा ह्यो हाथो, सा मुर्छाणी मिलीयो सहु साथो ॥ मुइ जा णी मसाणे मेली, परम महासुख पामि पेलि ॥ ष० ॥ ॥ १६ ॥ राते घर आयो नरतारो, दुचिंतो देखि प रिवारो ॥ खबर लहि समसाने आवे, एक ऋषि देखी सुख पावे ॥ ष० ॥ १७ ॥ पगे लागीने ऊनो होइ, नाखे आरतिवतो सोइ ॥ जो हु मगी नारी पाउ, तो तुम चरणे अति चित लाउ ॥ ष० ॥ १८ ॥ आगे जाता मगि पामी, साधु समीपे लायो स्वामी ॥ ऋषि तनुवाये फग्सी जामो, विपहर विष उतरीयो तामो ॥ प० ॥ १९॥ मगी मूकी मुनिवर सगे, आपण घर आ यो मन रगे ॥ लेवा महिला साज सुचगे, आभूषण वस्त्र बहु चगे ॥ प० ॥ २० ॥ एतले चितक चितो के

वह नामे वारु. नगर दसारण सोने अपारु. देवसे न राजा गुण भरीयो, बहु परिवारे अछे परवरियो ॥ प० ॥ ४० ॥ धन देवि राणी सुखदाइ, नंदजस्या जीव उपजी आइ ॥ देवकि नामे कुमरी जाइ, रूप कला गुणनि अधीकाइ ॥ प० ॥४१॥ उहा पट बंधव लीयो अवतारो, किण विध तेनो सुणो अधीकारो ॥ ढाल एक त्रिसमी इम भाषे, श्री गुणसागर पुन्य प्रकाशे ॥प०४२॥

दुहा ॥ कस प्रशस करी घणी, श्री वसुदेव नरेश ॥ दीधी देवी देवकि, किधो व्याह विशेष ॥ १ ॥ हय गय रथ कचन रयण, घणा तेम पटकुल ॥ आप्या वरने दायजे, मणी माणिक बहु मूल ॥ २ ॥ एक सहस गोकल वली, नद गोकूलि साथ ॥ देवक राय पुत्री भणि, आपे बहुली आथ ॥ ३ ॥ कस नद साथे ग्रही, श्री वसुदेव नरिंद ॥ मथुरा नगरी आविया, मनमा धरी आणद ॥ ४ ॥ कस हिवे तिहा पिण करे, सहुने जिमणवार ॥ विचमे जे चितक हुवो, ते सुणजो सुविचार ॥ ५ ॥

ढाल ३२ मी ॥ हरीया मन लागो ॥ ए देशी ॥ एक दिन बेठि गोखमें, जीवजस्या वरनाररे ॥ मुगधा मानभरी ॥ नणदि साथ कुतुहलि, सखियनके परीवाररे ॥ मु० ॥ १ ॥ करे पवन प्रतिचारणा, आपे केइ मुखवासरे ॥ मु० ॥ केइ अमृत जलथी भरी, दासी उभी पासरे ॥ मु० ॥ २ ॥ केइ विलेपन [illegible],

इ वड भ्राता ॥ प० ॥ ३० ॥ घर आवी वहु याने आ
पी. आपण सजमनी मती थापी ॥ कारण जाणी स
हु हुए वैरागी, चउदे माणस हुआ त्यागी ॥ प० ॥
॥ ३१ ॥ दृढ मुठिने मगी मीलिया, सोले माणस सु
रगति चलिया ॥ दो सागरनो पालि आयो, स्वर्ग सो
धर्मे पुण्य प्रभावो ॥ प० ॥ ३२ ॥ द्वाइ सडे भरत
वखाणु, गिरी वैताब्य दक्षिण दिसी जाण ॥ नित्या
लोक नगरिनो नामो, चित्रचूड राजा अभिरामो ॥
प० ॥ ३३ ॥ नामे प्रणामे नारि मनोहर, साते सुत
उपना तस उदर ॥ एक निमतिज मोठा देख्यो सा
त जने वैराग्या विशेस्यो ॥ प० ॥ ३४ ॥ सजम पा
लि सनतकुमारे, देव थया करणि अनुसारे ॥ सागर
साते आयुज हुवो वड बधव उपजीयो जूवो ॥ प०
॥ ३५ ॥ कुरु जंगल हथीणापुर केरो, गगदेव छे नृप
भलेरो ॥ नदजसा राणि मन भावि पटाहि सुत उपजी
या आवी ॥ प० ॥ ३६ ॥ गंग गग दत्त गग सुमित्रो
नद सुनद नदिखेण पवित्रो ॥ ए षटाहि बधवनि जो
रु मात पिताना पुरे कोड ॥ प० ॥ ३७ ॥ माता पु
त्रो चारित्र लिधो मीनप जन्म क्रतारथ किधो ॥ अ
णसण अवसर सुत मुख जोवे मात मोह तणे वस
होवे ॥ प० ॥ ३८ ॥ किधो एह नियाणो माइ आगे
होज्यो एह सगाइ ॥ स्वर्ग सातमे तेह सिधाया सो
ले सागर आयु लहाया ॥ प० ॥ ३९ ॥ देश मृगा

ए सुख जातो जाणरे ॥ मु०॥१३॥ नणदलनो सुत सा
तमो, करसे सही सहाररे ॥ मु० ॥ तुझ पिताने कत
नो, नहि सदेह लिगाररे ॥ मु० ॥ १४ ॥ साधु वचन
तव सांभलि, जीवजस्या मद जायरे ॥ मु० ॥ मन
मे भय अति उपन्यो, मुझ कोप्यो ऋषिरायरे ॥ मु०॥
॥ १५ ॥ आवि कतने विनवे, साधु कह्यो विरततरे ॥
मु० ॥ नीसुणी कस मनमें धरे, साधु वचन एकत
रे ॥ मु० ॥ १६ ॥ को नवी जाणे ज्या लगे, त्या पहीलो उपायरे ॥ मु० ॥ साते गर्भ देवकी तणा, मागी
स हु समझायरे ॥ मु० ॥ १७ ॥ माग्याजो मुज नाप
से, सात गरभ निज तेहरे ॥ मु० ॥ तो प्रतिकार बि
जो करी, जिम तिम राखीस देहरे ॥ मु० ॥ १८ ॥ इम
चिंतवी निज चित्तमे, महुआ जनपरे कसरे ॥ मु० ॥
आयो घर वसुदेवने, राखेवा नीज वसरे ॥ मु० ॥
॥ १९ ॥ दूर थकी करजोडीने, देखी करतो सेवरे ॥
मु० ॥ आदर देइ मिली करी, इम बोले वसुदेवरे ॥
मु० ॥ २० ॥ प्राण थकी मुज वहालो, ताहरे मन शी
वातरे ॥ मु० ॥ कहे तिम तुझ चिंतत करु, ए मुज
वात सोहातरे ॥ मु० ॥ २१ ॥ कस कहे करजोडने,
माणस ते मुज किधरे ॥ मु० ॥ जीवजस्या देवरावी
ने, सुजन पणे जस लीधरे ॥ मु० ॥ २२ ॥ तिम हि
वे देवकी पुत्रना, सात गरभ यदुरायरे ॥ मु० ॥ प्रसु
ति मात्र देवरावशो, जिम मुज मन सुख थायरे ॥ मु०

कुकुम गंटे केयरे ॥ मु० ॥ केह तनी मुख आगले, आदरसी कर लेयरे ॥ मु० ॥ ३ ॥ सूरज रथ खेचित ह्यो, मध्याने आकासरे ॥ मु० ॥ जोवा नृप नारी त णा, रूप रंग सुविलासरे ॥ मु० ॥ ४ ॥ एहवे मुनी वर मलपतो, ऐमतो ऋपीराजरे ॥ मु० ॥ उच तीच मझम कुले, फिरतो आहारने काजरे ॥ मु० ॥ ५ ॥ मुह मचकोडी माननी, देखि देवर लाग्यरे ॥ मु० ॥ एहवा रतन ते जनमीया, धन्य माता तारो भाग्यरे ॥ मु० ॥ ६ ॥ मद ग्राकि बोले इसु, जीवननस्या त जी लाजरे ॥ मु० ॥ भले आव्या ऋपिरायजी, उव व दिन छे आजरे ॥ मु० ॥ ७ ॥ धन्य घडी धन्य आ जनी, मुझ मन अधीकि प्रीतरे ॥ मु० ॥ आवो देव रजी आपणे, मिलीने गाइए गीतरे ॥ मु० ॥ ८ ॥ नि सुणि वचन ते मुनिश्वरु, निरखे उचो ते वाररे ॥ बेठी दिठि गोखडे, वड वधवनी नाररे ॥ मु० ॥ ९ ॥ अ समलस देखी थयो, रोमाकुल ऋपिरायरे ॥ मु० ॥ आ जो कीमी बापडी, चमी सोनइए जायरे ॥ मु० ॥ १० ॥ ज्ञानी तव बोले इस्यु, दुर करण अहकाररे ॥ मु० ॥ मतकर अजस कारमा, नाची मुगध गिमाररे ॥ मु० ॥ ॥ ११ ॥ देखी जोवन धन आपणो, तु मन फूलेने एमरे ॥ मु० ॥ पिण जेम चितिपातने, कुफल आखर तेमरे ॥ मु० ॥ १२ ॥ थोडा दिवसने कारणे, ग्रहे किस्यो अभिमानरे ॥ मु० ॥ सब्भ ॥ राग ॥ तसि पुरे,

ए सुख जातो जाणरे ॥ मु०॥१३॥ नणदलनो सुत सा
तमो, करसे सही सहाररे ॥ मु० ॥ तुझ पिताने कत
नो, नहि संदेह लिगाररे ॥ मु० ॥ १४ ॥ साधु वचन
तव सांभलि, जीवजस्या मद जायरे ॥ मु० ॥ मन
मे भय अति उपन्यो, मुझ कोप्यो ऋषिरायरे ॥ मु०॥
॥ १५ ॥ आवि कतने विनवे, साधु कह्यो विरततरे ॥
मु० ॥ नीसुणी कंस मनमे धरे, साधु वचन एकत
रे ॥ मु० ॥ १६ ॥ को नवी जाणे ज्या लगे, त्या पछी
लो उपायरे ॥ मु० ॥ साते गर्भ देवकी तणा, मागी
स हु समझायरे ॥ मु० ॥ १७ ॥ माग्याजो मुज नाप
से, सात गरभ निज तेहरे ॥ मु० ॥ तो प्रतिकार वि
जो करी, जिम तिम राखीस देहरे ॥ मु० ॥ १८ ॥ इम
चिंतवी निज चित्तमे, महुआ जनपरे कसरे ॥ मु० ॥
आयो घर वसुदेवने, राखेवा नीज वसरे ॥ मु० ॥
॥ १९ ॥ दूर थकी करजोडीने, देखी करतो सेवरे ॥
मु० ॥ आदर देइ मिली करी, इम बोले वसुदेवरे ॥
मु० ॥ २० ॥ प्राण थकी मुज वहालो, ताहरे मन शी
वातरे ॥ मु० ॥ कहे तिम तुझ चिंतत करु, ए मुज
वात सोहातरे ॥ मु० ॥ २१ ॥ कस कहे करजोडने,
माणस ते मुज किधरे ॥ मु० ॥ जीवजस्या देवरावी
ने, सुजन पणे जस लीधरे ॥ मु० ॥ २२ ॥ तिम हि
वे देवकी पुत्रनां, सात गरभ यदूरायरे ॥ मु० ॥ प्रसु
ति मात्र देवरावशो, जिम मुज मन सुख थायरे ॥ मु०

॥ २३ ॥ सरल चित्त नृप सांभली, कहे कंसने एमरे ॥ मु० ॥ अंगीकार किधो अमे, वयण कह्यो ते तेमरे॥ मु० ॥ २४ ॥ कंस वात अणजाणतां, कहे नृप वसु सुविचाररे ॥ मु० ॥ मुज सुत ते सुत ताहरा, इहा अंतर मत विचाररे ॥ मु० ॥ २५ ॥ ते जे अम जोडी करीरे, तेणे तोसु अति प्याररे ॥ मु० ॥ तुमनो उणो मत हुवे, वालाजी तन आधाररे॥ मु० ॥ २६ ॥ घणो बोल्यो कारमो, लागे कहे दसाररे॥ मु० ॥ सात गर्भ देवकीतणा, देवरावे सुविच्याररे ॥ मु० ॥ २७ ॥ ढालभली बत्रीसमी, निपट रसिली वातरे ॥ मु० ॥ श्रीगुणसागर ए कही, हरीया गीतनी जातरे ॥मु०॥२८॥

॥ दुहा ॥ महापसाउ लही करी, मद पर दुरगमाय॥ प्रिती करी वसुदेवशु, कंस हिवे घर जाय ॥ १ ॥ मुणिनी वात सुणी करी, सोचे हिवे दसार॥ देखो कंसे हु छल्यो, वचन ग्रही अविच्यार ॥ २ ॥ गर्भ धरे जब देवकी, तब तिहा कंसराय ॥ चोकी राखी पाखथी, कपटे खेले दाय॥ ३ ॥

ढाल ३३ मी ॥ कोमल वचनेरे कंत प्रत्ये कहे ॥ ए देशी॥ भावी न मिटे भावियण सांभलो, भाविनो घनजोरोरे ॥ रचन आघीपाछी होइ सके, सिद करोगे सोरोरे ॥ भा० ॥ १ ॥ बाधु कीयारे जतन अनेक जी आगे, नायो कोइरे ॥ बाधव दोइ बावी मुवा सही चंपक ग्रहपति होइरे ॥ भा० ॥ २ ॥ गर्भ धरेरे

राणी देवकी, चरम शरीरी जीवोरे ॥ केम मरे ते छ
छे आवुषे, ए जिन वचन सदिवोरे ॥ भा० ॥ ३ ॥भ
दील पुरनीरे वासण श्राविका, सुलसा एहवो नामो
रे ॥ सूर आराध्योरे सुतने कारणे, सुत सहुने अभी
रामोरे ॥ भा० ॥४॥ सूर भाखेरे पुण्य प्रभाविका, तुं
मृत वछा नारोरे ॥ आणि आपु हु तुज पारका, देव
कुमर अनुहारोरे ॥ भा० ॥ ५ ॥ वलतु वनिता इणी
परें उचरे, सांभल सुर सुख दायोरे ॥ हु स्यु जाणुं तुं
लावे केहना, ते मुजने न सुहायोरे ॥ भा० ॥ ६ ॥
कसरायेरे मारण मागीया, देवकी तनया नदोरे ॥ आ
णी आपीश तुजने माननी, करीदेशुं आणदोरे ॥
भा० ॥ ७ ॥ एक समेरे राणी श्राविका, गर्भ धरे ते
दोयोरे ॥ सारयो फेरो सुर शक्ति करी, भावीने बल
जोयोरे ॥ भा० ॥ ८ ॥ इम बिजो ने त्रिजो चतुरथो,
पचम छठो तेमोरे ॥ सुलसामंदिर होइ वधामणा, पु
णय तणे बल एमोरे ॥ भा० ॥९॥ षट सुतनी जोडी
बिराजती, मातपिता आणदोरे ॥ बत्रीस बत्रीस नारी
सुहामणी, परण्या सघला नदोरे ॥ भा० ॥ १० ॥ द
स दस वार आवि दायजे, कचन केरी कोडीरे ॥ नेमजी
वचने वैरागी थायशे, कामनि कंचन छोडीरे ॥ भा०॥
॥ ११ ॥ करणीने बले केवल पामशे, लेहसे मोक्षनो
वासोरे ॥ एहवा मुनिवर केरा होइए, चरण कमलना दा
सोरे ॥ भा० ॥ १२ ॥ मूत्रा बालक कसे पछाडीया,

रिस तणें वस जोयोरे ॥ तेह तणा फल आगे लाग शे, ते सुणज्यो सहु कोयोरे ॥ ना० ॥ १३ ॥ वडा ब फेरी जगमा नाखण, स्यो कुठो अभिमानोरे ॥ चद त णी तव लागे चांदणी, जब लग न उगे भाणोरे ॥ ना० ॥ १४ ॥ मींढक मातो मलपतो फीरे, सर्प न जरेथी दूरोरे ॥ हरण हरिलो हरीने आगले, न सके आइ हजूरोरे ॥ ना० ॥ १५ ॥ ढाल तेत्रीसमीरे हो णहार होवे, न होवे बीजो कोइरे ॥ गुणसागर सम भावे वरतए, भले भलाइ होइरे ॥ ना० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ एक उगे एक आथमे, एक हरखे एक सोग ॥ एक संकुचे एक विकसता, सहु सरखा नही लोग ॥ ॥ १ ॥ जे भाखे बालक छता, जें भाखे अणगार ॥ जे भाखें वरकामनी, ते निफल न हुवे लिगार ॥ २ ॥ दुष्ट दैत्य निकंदवा, करवा जग उद्धार ॥ विष्णुदेव शिवमत्तमें, फिर फिर लीए अवतार ॥ ३ ॥

ढाल ३४ मी ॥ बिंदलीनी देशी ॥ हरीके गुण गा उ, हरिलीला कहीय सुहावो ॥ हरी रसतें अधिक सुख पावोहो ॥ ह० ॥ हरी योगीमाहि योगी, हरी भोगीमाहि वड भोगीहो ॥ ह० ॥ १ ॥ हरी न्हाना मा हे नाहनो, हरी मोठो गगन समानोहो ॥ ह० ॥ हरी एकण रुपेही एक, हरी पसरो रुप अनेकहो ॥ ह० ॥ ॥ २ ॥ हरी आपन बुढो बालो, हरी जग मेलावो चालोहो ॥ ह० ॥ हरी लोग लगायोलारे, हरी भां

जे घमे समोरेहो ॥ ह० ॥ ३ ॥ हरी नव नव नाम घ रावे, पिण गणतां पार न आवेहो ॥ ह० ॥ हरी सां धा जोडा लावे, हरी मांहोमांहि भीडावेहो ॥ ह० ॥ ॥४॥ हरी हेतु हेत जणावे, अणहेतु सार न पावेहो ॥ह०॥ हरी नौतन वस्तु निपावे, हरी निपजी वेग खपावेहो ॥ ह० ॥५॥ हरी रूप निरखन काया, हरी घट घट माहि समायाहो ॥ ह० ॥ हरी जिहां जोवु तिहां तेह वो, पिण तेहवानो तेहवोहो ॥ ह० ॥ ६ ॥ हरीब्रह्मा व्यास वखाण्यो, किणही तो अंत न जाण्योहो ॥ ह० ॥ सो हरी करण उपाया, हरी वसुदेवा घर आयाहो ॥ ह० ॥ ७ ॥ हरी उदर देवकी माया, हरी सुपना सात देखायाहो ॥ ह० ॥ सिंहणी सुत सिंह सनूरो, माय देखी प्राक्रम पूरोहो ॥ ह० ॥ ८ ॥ आनंद अं ग अपार, धनधन राणी अवतारहो ॥ ह० ॥ तेज पुं ज रवि रूडो, हेतकार महा नही कूडोहो ॥ ह० ॥ ९ ॥ अग्नी सिखा दिपती, ते मगल गुण जीपतीहो ॥ ह० ॥ गज गाजंतो आवे, राणी मन हरख उपावेहो ॥ ह० ॥ १० ॥ ध्वज गगने अवलव्यो दिसे, सुभकारी वि स्वा विशेहो ॥ ह० ॥ देव विमाने बिराजे, तिहा धप मप मादल वाजेहो ॥ ह० ॥ ११ ॥ पद्म सरोवर पाणी, भरीयो अति शोभा वखाणीहो ॥ ह० ॥ ए सुपना देखी माइ, पियु पासे वधाइ लाइहो ॥ ह० ॥ १२ ॥ गर्भ वधतो जाणी, प्रिय साथे वदे तव राणी हो ॥

ह०,॥ तुम मुझ पुत्र मराया, पिण मे गाढा दुख पा
याहो ॥ ह० ॥ १३ ॥ पुत विना जग सुनो, त्रिय जा
णे जगत अलुणोहो ॥ ह० ॥ पशु पखीणी धन क
हीए, जे पुत्र तणो सुख लहिए हो ॥ ह० ॥ १४ ॥
थारे तो पुत्रा केरी, नही कोइ मणा अनेरीहो ॥ ह०
॥ हु दुखीयारी झुरू, विण पुत्र आशा किम पुरूहो ॥
ह० ॥ १५ ॥ जिणे कीधो ए कर्म अपार, तिणे फि
री करता सिवारहो ॥ ह० ॥ दूधे दाधा नर जेह, ग
शे सि लावे तेहहो ॥ ह० ॥ १६ ॥ ए बालक किमही
उगारो, इहा रहेशे नाम तुमारोहो ॥ ह० ॥ ए सुपना
ने अनुसारे, पिउडा तु क्युं न विच्यारेहो ॥ ह० ॥
॥ १७॥ नदतणि जे नारी, ते नाम जसोदा प्यारीहो
॥ ह० ॥ ते साहियर छे मेरी, नपति जु नारी अनेरी
हो ॥ ह०॥१८॥ गर्भ वृद्धि जीम पावे, तिम तिम दो
हला उपजावेहो ॥ ह० ॥ सिंहा साथ रमीए, माता ह
स्तीने अति दमिएहो ॥ ह० ॥ १९ ॥ खड्गमाहि मु
ख जोवे, तिम तिम रलियायत होवेहो ॥ ह० ॥ शत्रु
शिरे पाद धरेवा, ए माय मनोरथ करेवाहो ॥ ह० ॥
॥ २० ॥ गर्भ सातमो जाणि, नृप कंस तणा आगे
वाणिहो ॥ ह० ॥ रखवालि कारण रहिया, तिहा क
ष्ट महा दु ख सहियाहो ॥ ह० ॥ २१ ॥ छवेला नावि
पामि, जिहा कारज सिझे स्वामिहो ॥ ह० ॥ मिनिना
बाळ्या सिका, नवि तुटे जे छे निकाहो ॥ ह० ॥२२॥

रखवाला सघला सूता, निंद्रावसे होए विगुताहो ॥ ह० ॥ को मति जलफल करजो, सहु सरजासु अनु सरज्योहो ॥ ह० ॥ २३ ॥ कस हणेवा काजे, एहि उतावल साजेहो ॥ ह० ॥ मास घटावे दोइ, तव सात मासनो होइहो ॥ ह० ॥ २४ ॥ शुभ वेला सुत जायो, तनु तेजे तिमिर मिटायोहो ॥ ह० ॥ स्वजन घरे उल्लासो, दुर्जन घर पडियो त्रासोहो॥ह०॥२५॥ कोइ न विलंब करायो, तव राणिये राय बुलायो ॥ ह० ॥ छत्र सुरासुर झाल्यो, तव नृप सुत लेइ चाल्योहो ॥ ह० ॥ २६ ॥ दोइ पासे चामर ढाले, दिपकसु पथ दिखवालेहो ॥ ह० ॥ सानिधकारी देवा, हरजोकि सारे सेवाहो ॥ ह० ॥ २७ ॥ दीधा छे दरवाजा, ए आरति अधिकी राजाहो ॥ ह० ॥ हरी पाय अगुठा अमीया, तव ताला तो झड पमियाहो ॥ ॥ह०॥२८॥ उग्रसेन कहे ए कोइ, तुम बंधन छोडसे सोहिहो ॥ ह०॥ एह सुणि सुखदाइ, कहे वेगे सिधावो जाइहो ॥ ह० ॥ २९ ॥ पुर बाहिर चालि आया, जमुनामे मारग पायाहो ॥ ह० ॥ सुत जाइ जसोदा दिधो, मनवंछित कारज सिधोहो ॥ ह० ॥ ३० ॥ जसोदा जाइ वाला, नृप लेइ आया ततकालाहो ॥ह० ॥ कर्म जेहनो बलियो, स्यो किजे अमरख अलियो हो ॥ ह० ॥ ३१ ॥ नंद घरे आणंदा, तव वाजे मांदल छंदाहो ॥ ह० ॥ गोकलाकि नारी हरखी, ते हर

जीको मुख निरखिहो ॥ ह० ॥ ३२ ॥नाचे नाच रसालि, ते हाथे बजावे तालिहो ॥ ह० ॥ उवारणां फेरी लिजे, ए लाल सदा चिरजीवीजेहो ॥ ह० ॥ ३३ ॥ हरी कोड पवाडा किधा, ए बालपणे जस लिधाहो ॥ ह० ॥ ए चो त्रिसामि ढाल, गुणसागर अधिक रसालहो ॥ ह० ॥३४॥

दुहा ॥ जाग्या हिवे ते पोहरु, देखे कन्या तेह ॥ आणि कसन्नणी दिए, सेवक धरी मन नेह ॥ १ ॥ कन्या देखी कस हिवे, धारे मनमा एम ॥ मारण ए तो महारे, थास्ये कन्या केम ॥ २ ॥ मारणन्नणी ग्रह सातमो, मुनि मुझ नाख्या जेह ॥ पिण जाणयो इण जाण मति, कूमो हूवो तेह ॥ ३ ॥ तो मारु ए स्या न्नणी; इम निज मनशु जोय ॥ नासापुट वेदीकरी, ब हिन्नणी दिए सोय ॥ ४ ॥

ढाल ३५ मी ॥ मोरा साहिबहो श्री सितलनाथ के, हूबुं सेवक ताहरो ॥ ए देशी ॥ हिवे बालकहो का लो ते देहके, कृष्णनाम सहू तिण कहे ॥ राखिजेहो देवोनितु तेहके, वाधे नंद घरे सुख लहे ॥ १ ॥ ने हगेहलिहो गोवालनि नारके, हरी देखि हिअडुं हसे ॥ हाथोहाथेहो सचरतो बालके, भ्रमर ज्युं कर कमले वसे ॥ २ ॥ आलिंगनहो चुंबन लख कोडके, कोइ क मल कठे ठवे ॥ केइ लावेहो रमकडा रंगके, मुक्ताफल सीर सोहवे ॥ ३ ॥ हुसेलिहो हरखे लेइ गोदके, धवरावे पय पानने ॥ आखे काजलहो घाले केइ ना

रके, करे चुंबन मुख कानमे ॥ ४ ॥ सीर भूषितहो सीहा अभिरामके, भाल विराजीत चंदलो ॥ जग वल्लभहो नंदन तुझ मातके, लाल अनोपम बदलो ॥ ५ ॥ हिवे पूछेहो मास दुहरे मातके, श्री वसुदेव भणी कहे ॥ उत्कंठाहो देखण निज पुत्रके, जाइस गोकुल जिहा रहे ॥ ६ ॥ तव बोलेहो वसुदेव नरिंद के, रखे कंस तुझने ओलखे ॥ तिहां जाताहो नितप्र ते तुझ पूत्रके, देखता कारण पखे ॥ ७ ॥ तेणे लेइहो बहू नारी साथके, गाय पुजंति शुभपरे ॥ तुम्हे पहूचो हो गोवालीइणे सचके, देवकि पिण तिमहिज करे ॥ ॥ ८ ॥ नीलपणुहो दलसम तनु कंठके, हियमे श्रीव च्छ शोभतो ॥ चक्रादिकहो लक्षण पग हाथके, सहु जनना मन मोहतो ॥ ९ ॥ एहवो निजहो नंदन अभिरामके, गोद जसोदाने रह्यो ॥ देवकिहो देखि नीज नयणके, मनमाहि बहु सुख लह्यो ॥ १० ॥ माता भीडीहो निज हियमा साथके, गोद धर्यो हरी नान डो ॥ तुज विरहेहो चित्त क्षण क्षण मुजके, खटके ज्युं विंछी आकडो ॥ ११ ॥ सच्या पोढाहो पातिक अति जोरके, मे किधा कोइक पूर्वभवे ॥ तुज सरीखो हो नंदन गुणवतके, पिण मुज चिंतीत नव हुवे ॥ १२ ॥ पुत्रजहो दीठा तुम दिदारके, धन वेला धन आजुनी ॥ निज अंगजहो देखी न भजे रागके, एतो दशा मुनिराजनी ॥ १३ ॥ धवरावीहो निज स्तन पियपानके, पालणी

ए पोढावीयो ॥ मोह गातिहो कोइ मधुरे सादके, हे
त घणो हुलरावीयो ॥ १४ ॥

देवकीरा गीत ॥ ऊरमरीयानी देशी ॥ धन्नऐ राणी देव
कीहो, त्रिभुवन सिर टिको ॥ वाइ थारो वालुभो निको ॥
॥ तुजवड वखत यशोमतिहो, थारे एकीको ॥ सुरनर
ना मन मोहतोहो, प्यारो हमजीको ॥ बा० ॥ १ ॥
अदभूत सुहामणोहो, मदन कीयो फिको ॥ रग र
मावे गोदमेहो, भाग्य ताहिको ॥ वा० ॥ २ ॥ मान
महा मद मारणोहो, देवि केरीको ॥ कुवर कनइयो सा
लसेहो, उपज्यो वयरिको ॥ वा० ॥ ३ ॥ आननचद
विराजतोहो, वालो सव त्रियको ॥ ग्वाल ग्वालणी
भावतोहो, दर्शन जग पियको ॥ वा०॥४॥ सजन जन
जननी तणोहो, हार ज्यु गतिको ॥ दुरजन जन अ
सुहामणोहो, घाव ज्यु कातीको ॥ बा० ॥ ५ ॥ शो
भा गुण विस्तारहो, किरति कातिको ॥ देवादेवि खे
चराहो, रगे रातिको ॥ बा० ॥ ६ ॥ दहिअरु दुध ख
वाडजेहो, धेनु मातिको ॥ हम तुम कुल उजवालणो
हो, दिवो वातिको ॥ बा० ॥ ७ ॥ नखसीखताइ स
लुणभोहो, सुखसोभागीको ॥ जोता तृपति न पाइ
एहो, धन जीवत माजीको ॥ बा० ॥ ८ ॥ दरस फ
रस कुपथमेहो, नाह इद्राणिको ॥ सो खेले तुझ आ
गेणेहो, सारग पाणीको ॥ बा० ॥ ९ ॥ योग ध्यान
ध्यावे अतिहो, सुयश वधारीको ॥ पूत कहावे ताह

रोहो, अचरिजकारीको ॥ बा० ॥ १० ॥ नाम वल्लभ जग जाणियोहो, गीरवरधारीको ॥ गुणसागर सुख पा वहिहो, अमीय आहारीको ॥ बा० ॥ ११ ॥

ढाल तेहिज ॥ जे लेणोहो सो लिजए आजके, एह मनमा निश्चे धरे ॥ मन मेलिहो निज सुतने पासके, राणि आवि नीज घरे ॥ १५ ॥ जिण दिनथीहो गोकुल हरी मातके, गोपूजा व्रत करी गइ ॥ तिण दिनथीहो सगले जगमाहिके, गोपूजाव्रत तिथि थइ ॥ ॥ १६ ॥ इम करताहो वितो एक वरसके, एहवे एक वितक भयो ॥ सभा सजीहो बेठा कसरायके, एक विवुद्ध तव प्रगट थयो ॥ १७ ॥ देइ आदरहो तेड्यो निज पासके, पूछे ऋषि भाखीत सहि ॥ सो भाखेहो भवि तव्य जेहके, अन्यथा ते होवे नहि ॥ १८ ॥ नृप भाखेहो केम जाणु तेहके, अनुग्रह करी मुझने कहो ॥ तुमनेहो मिलसे बहु द्रव्यके, मुझ अरिनो होए निग्रहो ॥ १९ ॥ निमित्तकहो बोले तव एमके, पूरो ज्ञान न अभ्यासियो ॥ माहि नाणीहो तुझ देउ बतायके, जिम तुमने होए विसासियो ॥ २० ॥ तुझ मासिहो पूतना छे दोयके, निस्यदता चूसी करे ॥ जिम लुतेहो ग्रहि मक्षिका जाणके, प्राण दोयना तिम हरे ॥ ॥ २१ ॥ तुम शत्रुहो जाणो नि सदेहके, इम काहि वि वुद्ध गयो ॥ कसे तेडीहो काहि वेरीनी वातके, मासी मन उत्कर्ष थयो ॥ २२ ॥ हिवे तिहाकणेहो निज वा

पनो वयरके, लेवाने अती उमही॥ वसुदेवसुहो नवि
लागे जोरके, सवलासुं वल को नही ॥ २३ ॥ इम चिं
तविहो मनमाहि विचारके, सुरपनखारी ढिकरी ॥
मदमातिहो आणे अहंकारके, सकुनी पूतना खेचरी
॥ २४ ॥ कंसे प्रेरीतहो गइ गोकुल माहीके, बालक
ने मारण जणी ॥ गोवालणीहो सतारूं निज बालके,
जीती मन आणी घणी ॥ २५ ॥ नंद सदनहो चा
ली गइ तेहके, विष खरमी स्तनमे धरी॥ धवरावती
हो तव जसोदा देखके, मागे हरीने ओसे करी॥२६॥
अश्रु पूरितहो थइ आप्यो जाणके, हरि मनमाहि
विचारियो ॥ ए दिसेहो सहि कोइ विपक्षके, एहथी
जय अब धारियो ॥ २७ ॥ चूसि लीधोहो रुधिरने
दूधके, अलि जिम कुसुमनी वासने ॥ थइ निश्वास
हो फाव्या तस नयणके, हरि गया मातने आसने
॥ २८ ॥ बोलाव्योहो नंदने तेणिवारके, आव्यो अ
ति उतावलो ॥ जसोदाएहो कह्यो सर्व व्रतातके, नि
सुणी मनमा खलभल्यो ॥ २९ ॥ हु मुंझियोहो मुख क
हेतो नंदके, कृष्ण जणी खोले धरि ॥ तिहा जोवेहो
हरिनो ते अंगके, वारमवार हेते करि ॥ ३० ॥ नि
शा समेहो गोवालिया पासके, प्रेत वने सबने धरयो
॥ नंदसहित आव्या निज गेहके, प्रछनपणे सहुए क
रयो ॥ ३१ ॥ इम बिजीहो कंत पूतना नामके, सा पि
ण थइ तिणहीजपरे ॥ कंसे जाणीहो मासीनी वा

तके. प्रेत कार्य तेहना करें ॥ ३२ ॥ गोकुलमांहेहो क
रें वारमवारके, उदघोसण जाणण भणि ॥ नदे वरजी
तहो न करे कोइ वातके, जिम घुक सूर्य तणी॥३३॥
गोवालियाहो पूछ्यो हिवे नदके, अमे ए मरम न जा
णियो ॥ किम मुइहो साइण सम एहके, एह अचं
भो आणियो ॥ ३४ ॥ पाडोसणहो इण गीते जाण
के, ढाल कहि पेत्रिसमी ॥ सारगेहो रागे मन लाय
के, सूरि गुणसागर मनशु गमी ॥ ३५ ॥

दुहा ॥ गोप कहे हिवे नंदने, बाल एकेले एण॥खे
चरीया बे मारीया, टाल्यो विघन बलेण ॥ १ ॥ एह
वात नद सांभली, दाखे उत्तर तिवार ॥ एहनी खब
र मुजने नही, मानो प्रपचाचार ॥ २ ॥ कस सोचे
निज हृदयमा, अहो अहो दैव कुलक्ष ॥ मासी मूइ
वैरीतणी, काइ न थयो प्रतक्ष ॥ ३ ॥ मत्रीने तेमी
कहे, शो करवो हिवे उपाय ॥ विण उलख्या पोहोचे
नही, मारा मननो दाय ॥ ४ ॥ सचिव कहे तुम बेहे
नीने, पुत्री हुइ एकत ॥ ए सर्व प्रत्यक्ष निरखता,
मूको एहनो तत ॥ ५ ॥ नद घरे आव्यो धसी, बो
लावी निज नार ॥ करी शिखामण एहवी, मत जा
जे कोइ ठार ॥ ६ ॥ कृष्ण एकेलो मूकिने, पडते पि
ण घृत ठाम ॥ते अनत्र न जाइवु, किणहि विजे का
म ॥ ७ ॥ कान्ह भणी शुभपरे रखे, हिवे जसोदा मा
य ॥ तोपिण चचल बल करी, आघो पाछो थाय ॥

॥ ८ ॥ तिणसुधी नथी विहतो, दामणिसु हरी तेह॥ वाधी उखलसु जइ पाडोसण रही गेह ॥ ९ ॥ वयर पितामह सांनली, सुर्प्पक सुत तिहा आय ॥ पिठवाडे श्री कृष्णने, जमलार्जुन तरु वाय ॥ १० ॥ ह्रिवे तेणे वेहु तरुविचे, हरीने मारण रुप ॥ नांजी ते तरु हरी सूरा, मारे तेह विरुप ॥ ११ ॥ हरी कुजपर ऊखणथा, जमलार्जुन तरु जाण ॥ नद जसोदा गोपने, मुख थी ए सुणि वाण॥ १२॥ नद जसोदा आवीने, नुज सु नीडे वाल ॥ दामोधर तिण दिन थकी, नाम कहे गोपाल ॥ १३ ॥ सिवादेवि सिवकारीया, सुपना दे खी उदार॥ प्रितम पासे विनवे, स्वामी कहो सुविच्या र ॥ १ ॥ नूपति नाखे नामनी, होस्ये कुवर सार ॥ तिन नूवन सिर सेहरो, सुरनरको आधार ॥ १२ ॥ वाय अनुकुल वाह्या, हरखित सहु परिवार ॥ श्रा वण सुदी पचमी दिने, जनम्या नेक कुमार ॥ १३ ॥

ढाल ३६ मी ॥ कोइलो परवत धुधलोरे लाल ॥ ए देशी ॥ शुन वेला सुत जाह्योरे लाल, वरत्यो ज य जय कार ॥ सुख दातारे॥ सुरनर घरहि वधामणीरे लाल ॥ हरख्यो सहु ससार ॥ सु० ॥ १ ॥ मेरे मन जिनजी वस्यारे ॥ ला० ॥ श्री श्री नेमकुमार ॥ सु०॥ मुरति सुरति मोहनीरे ॥ ला० ॥ शोना गुण नम्भर ॥ सु०॥ मे०॥२॥ आवी छप्पन कुवारीकारे ॥ ला०॥ नि ज निज करवा काज ॥ सु० ॥ गावे गीत सुहामण

रे ॥ ला० ॥ सफल गणे दिन आज ॥ सु० ॥ मे० ॥
॥ ३ ॥ चउसठ इंद्र पधारीयारे ॥ ला० ॥ मंदिर गी
रीने श्रृग ॥ सु० ॥ जन्म महोत्छव करवा भणीरे ॥ला०
॥ आणी अति उछरग ॥ सु० ॥ मे० ॥ ४ ॥ पच्र रू
प करे भलां रे ॥ ला० ॥ सोहम इंद्र उदार ॥ सु० ॥
हाथे लिया एक रूपशु रे ॥ ला० ॥ त्रिभूवन तारणहा
र ॥ सु० ॥ मे० ॥ ५ ॥ बिजे छत्र धरे भलोरे ॥ ला० ॥
चामर ढाले दोय पास ॥ सु० ॥ वज्र लेइ आगे चले
रे ॥ ला० ॥ करतो अरिअण नाश ॥ सु० ॥ मे० ॥
॥ ६ ॥ न्हावण केरी विधी साचवीरे ॥ ला० ॥ पहि
रावे शिणगार ॥सु०॥ भावे भक्ति घणी करेरे ॥ ला० ॥
नाटक नृत्य अपार ॥ सु० ॥ मे० ॥ ७ ॥ धौं धौं धपमप
वाजहिरे ॥ ला० ॥ मादल नव नव छद ॥ सु० ॥ झा
झर नाद उपागसोरे ॥ ला० ॥ होइ रह्यो आनद ॥
सु० ॥ मे० ॥ ८ ॥ इंद्राणी नाचे भलीरे लाल, थै थै शब्द उ
चार ॥ सु० ॥ प्रभू उपर करे लुछणारे ॥ ला० ॥ जा
इ हरी बलीहार ॥ सु० ॥ मे० ॥ ९ ॥ माता पासे मे
लीयारे ॥ ला० ॥ सुर पोहोता निज ठाम ॥ सु० ॥
राये मोहोछव माडीयोरे ॥ ला० ॥ मिलीया साजन आ
ण ॥ सु० ॥ मे० ॥ १० ॥ यादव जलधर उमह्योरे ॥
ला० ॥ वरसे कचन धार ॥ सु० ॥ याचक जन सतो
खीयारे ॥ ला० ॥ घर घर मगल च्यार ॥ सु० ॥ मे०
॥ ११ ॥ टोले टोले सामटीरे ॥ ला० ॥ आवे कामनी

चाल ॥ सु० ॥ धवल दिए नृप आगणेरे ॥ ला० ॥
रमती रंग रसाल ॥ सु० ॥ मे० ॥ १२ ॥ बारसमो
दिन आइयोरे ॥ ला० ॥ सुतिक कर्म नीवार ॥ सु० ॥
नाम दियो वर नेमजीरे ॥ ला० ॥ थजण सहु परीवा
र ॥ सु० ॥ मे० ॥ १३ ॥ चदकला जिम वाधतोरे ॥
ला० ॥ देह कला गुण सार ॥ सु० ॥ रुप करे सुर
तेहवारे ॥ ला० ॥ जेहवा प्रभुने प्यार ॥ सु० ॥ मे०॥
॥ १४ ॥ राखण चलण हसतथेरे ॥ ला० ॥ नृत्यने गा
यन ग्यान॥ सु० ॥ जलपने जन मन रजवेरे ॥ ला०॥
लाल ने लीला थान ॥ सु० ॥ मे० ॥ १५ ॥ वनक्रि
गाने कारणेरे ॥ ला० ॥ राजा वनमे जाय ॥ सु० ॥
अतेउर परीवारसुरे ॥ ला० ॥ साथे नेम सुहाय ॥
सु० ॥ मे० ॥१६॥ इण अवसर सोहमजीरे ॥ ला० ॥
इद्र अनोपम ज्ञान ॥ सु० ॥ क्रिडारग विनोदसुरे ॥
ला० ॥ दिठा श्री भगवान ॥ सु० ॥ मे० ॥ १७॥जेह
जेहना होय रागीयारे ॥ ला० ॥ तेह तेहना गुण गा
य ॥ सु० ॥ अणरागी असुहामणारे ॥ ला० ॥ हुता
पिण न कहाय ॥ सु० ॥ मे ॥ १८ ॥ इद्र प्रससाआ
करीरे ॥ ला० ॥ जननी करे तेहिवार ॥ सु० ॥ वाल
पणे बल आगलोरे ॥ ला० ॥ नही बीजो ससार ॥
सु० ॥ मे० ॥ १९ ॥ एक आमी सहु लोकनोरे ॥ ला०
॥ एक आदी जिनराय ॥ सु० ॥ तोहि न होवे स
रावरीरे ॥ ला० ॥ जिन बल अधीक कहाय ॥ सु० ॥

मे० ॥ २० ॥ एह वचन सहि नाशक्योरे ॥ ला० ॥ अमरख आणी अपार ॥ सु० ॥ सुर सुरलोकथी उत रयोरे ॥ ला० ॥ आयो विपन मझार ॥ सु० ॥ मे ॥ ॥ २१ ॥ काका साथ कुतुहलीरे ॥ ला० ॥ होइ रह्या जिनराय ॥ सु० ॥ एक खेलावे गोदमेरे ॥ ला० ॥ एकलीए कठ लगाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ २२ ॥ एक आंगुलीया लेइ फिरेरे ॥ ला० ॥ एक खेलण खेलाय ॥ सु० ॥ एक नचावे रंगसुरे ॥ ला० ॥ तालि नाद सुणाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ २३ ॥ घम घम वाजे घूगरीरे ॥ ला० ॥ ठम ठम ठमके चाल ॥ सु० ॥ मेरे ढगन मगनारे ॥ ला० ॥ होइ रह्यो अति स्याल ॥ सु० ॥ मे० ॥ २४ ॥ कबहु आख अंजावतोरे ॥ ला० ॥ परहो ढटकि जाय ॥ सु० ॥ बोलायो फिर नावहिरे ॥ ला० ॥ माता पकडे धाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ २५ ॥ तव प्रभुजी रहे रिसायनेरे ॥ ला० ॥ टबकि गाल कराय ॥ सु० ॥ विद्याधर सुर मानविरे ॥ ला० ॥ सबहु रहे रीझाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ २६ ॥ गगने विलवि वारागनारे ॥ ला० ॥ मोहनसु मन मेल ॥ सु० ॥ सूरज रथ थम्भी रह्योरे ॥ ला० ॥ देखि कुमरनी केळ ॥ सु० ॥ मे० ॥ २७ ॥ तृणचरा त्रण ढोडीयारे ॥ ला० ॥ पखी चूग न चुगाय ॥ सु० ॥ जंगम जीव जिके तिकेरे ॥ ला० ॥ प्रभुसु रहे लवलाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ २८ ॥ अवगुणहारा देवतारे ॥ ला० ॥ गुणतो को न ग्रहाय ॥ सु० ॥

माखी चंदन नादरेरे ॥ ला० ॥ असाच तेहां चालि जा
य ॥ सु० ॥ मे० ॥ २९ ॥ अमृत थान लगावतारे ॥
ला० ॥ जोकन दूध पिवाय ॥ सु० ॥ रगतरसे राचे
घणुरे ॥ ला० ॥ बिजो हेत न कहाय ॥ सु० ॥ मे० ॥
॥ ३० ॥ सुवा शब्द सुहामणोरे ॥ ला० ॥ माननिने न
सुहाय ॥ सु० ॥ नाच निहालि मोरनुरे लाल, पापीयो पल
न तजाय ॥ सु० ॥ मे० ॥३१॥ निहारण वैरी कह्यारे
॥ ला० ॥ मृग मछ मारणहार ॥ सु० ॥ गुन वर्पता
विण साधुनेरे ॥ ला० ॥ नीच दहत अपार ॥ सु० ॥
मे० ॥ ३२ ॥ खेल करी प्रभु पालणेरे ॥ ला० ॥ सो
षे सोवता लिध ॥ सु० ॥ गगने चल्यो देवतारे ॥
॥ ला० ॥ जाणयो कारज सीध ॥ सु० ॥ मे० ॥ ३३ ॥
अवधि ज्ञानपर जुह्योरे ॥ ला० ॥ जाणे भेद द
याल ॥ सु० ॥ लेशमात्र बल फोरव्योरे ॥ ला० ॥ सुर
चाप्यो पयाल ॥ सु० ॥ मे० ॥ ३४ ॥ सूतो सिंह ज
गावियोरे ॥ ला० ॥ अहि-मुख घाले हाथ ॥ सु० ॥
किम सुख पावे आपडोरे ॥ ला० ॥ जे छेडे जगनाथ
॥ सु० ॥ मे० ॥ ३५ ॥ एतले सुरपति आवियोरे ॥
ला० ॥ सुर छोडावण काज ॥ सु० ॥ राख राख जग
राजीयारे ॥ ला० ॥ तुमहिने सहु लाज ॥ सु० ॥ मे०
॥ ३६ ॥ छोडाव्यो ते देवतारे ॥ ला० ॥ खाम्यो नीज
अपराध ॥ सु० ॥ आगल बनो विनवेरे ॥ ला० ॥
किधाते फल लाध ॥ सु० ॥ मे० ॥ ३७ ॥ पोढाव्या

प्रभु पालणेरे ॥ ला० ॥ पाखर सुरनी कोड ॥ सु० ॥ सेवा कारण मूकियारे ॥ ला० ॥ इंद्र नमे करजोड ॥ सु० ॥ मे० ॥ ३८ ॥ खेलि स्याल घर आवियारे॥ बाल गोपाल नरिंद ॥ सु० ॥ घर घर होवे वधामणारे ॥ ला० ॥ घर घर परमानद ॥ सु० ॥ मे० ॥ श्री हरी वसे विगजीयोरे ॥ ला० ॥ नेम जिनद दयाल ॥ ॥ सु० ॥ प्रवल प्रताप महा वलिरे ॥ ला० ॥ हलधर कृष्ण कृपाल ॥ सु० ॥ मे० ॥ ४० ॥ ढाल चली वत्रीसमीरे ॥ ला० ॥ पढत गुणत सुख दाय ॥ सु० ॥ लीला नेम जिणदनीरे ॥ ला० ॥ गुणसागर गुरुराय॥ सु० ॥ मे० ॥ ४१ ॥

दुहा ॥ आवण जावण होवता, रखे लखे के वात ॥ इम जाणि पासे रहे, हलधर नामे भ्रात ॥ १ ॥ अक्रुरादिक कसने, नवि गना सुत एह ॥ मूक्यो कस अणजाणियो; तेणे रामगुण गेह ॥ २ ॥ दस धनुष्य उंचा बेहु, गोकुल रमे कुमार ॥ काम तनी तिहा ग्वालणी, देखे आवि अपार ॥ ३ ॥ कृष्ण ग्रहि सघलि कला, राम पासे सुखकार ॥ धनुष्य कला तिम वलि भणे, क्षत्रिनो आचार ॥ ४ ॥

ढाल ३७ मी ॥ जीहो मथुरा नगरीनो राजीयो ॥ ए देशी ॥ जीहो राम अने हरी मीलि हिवे लाला, धरता अधीक सनेह ॥ जीहो एकजीव तनु जुजूआ लाला, जाणी जइ न सदेह ॥ १ ॥ चतुर नर हरी रमे रसरग ॥ जीहो सुदर रुप सुहामणा लाला चलणे उ

ऐ अनंग ॥ च० ॥ ए टेक ॥ जीहो हिवे हरी चल
ता वलदने लाला, पूठ ग्रहे जइ जाम ॥ जीहो कृष्ण
जोर ते देखीने लाला, अचरिज पामे राम ॥ च० ॥
॥ २ ॥ जीहो जिम जिम हरी वाधे तिहां लाला, तिम
तिम गोपिरे चित ॥ जीहो काम विकार लहे घणो
लाला, घुमे लागी प्रीत ॥ च० ॥ ३ ॥ जीहो राधा सु
ता व्रखुनाननि लाला, कचन कोमल गात ॥ जीहो स्या
ल लागी हरी आगले लाला, महि वेचण मीस जात
॥ च० ॥ ४ ॥ जीहो रोके तव आडो फिरी लाला,
मोहन श्री नदलाल ॥ जीहो हठ नरी हरी आगले
लाला, वोले राधा वाल ॥ च० ॥ ५ ॥ जीहो हम गो
पीयनपर दाननी लाला, किण किधीभेरे आद ॥ जी
हो आपसमे हरी राधीका लाला, करतां ऊखवख वा
द ॥ च० ॥ ६ ॥ जीहो आ व्रजमा वसता थका ला
ला, कदिय न दिधोरे दाण ॥ जीहो कुवर बाबा नंद
ना लाला, जात नहि व्रखुनान ॥ च० ॥ ७ ॥ जीहो
जावाद्यो हठ किम करो लाला, मुऊ वेचण हनी मा
ट ॥ जीहो वेला वनमें बहू थइ लाला, माता जोति
हशे वाट ॥ च० ॥ ८ ॥ जीहो नीत नीत हम हरी रा
धीका लाला, करे वचन रस केल ॥ जीहो नेह घेलि
आवे तिहा लाला, काज सकल अवहेल ॥ च० ॥९॥
जीहो सोलेसहस्स गोवालणि लाला, हरीने रजन का
ज ॥ जीहो दाखे नव नव चातुरी लाला, हाव भाव करी

लाज ॥ च० ॥ १० ॥ जीहो गोपी हरी पावल मिली लाला, घुमर गावेरे रास ॥ जीहो लुवधा भमरा जीम भमे लाला, कमल तणे नीत पास ॥ च० ॥ ११ ॥ जीहो हरीने जोती गोपिका लाला, नयण न मिचेरे केम ॥ जीहो कृष्ण कृष्ण इम बोलवे लाला, हो वनमेले तेम ॥ च० ॥ १२ ॥ जीहो एकसमे गोपि तिहां लाला, गाय दुहे भूपिठ ॥ जीहो टलि नजाणे दोहणा लाला, हरीसु लागी दिठ ॥ च० ॥ १३ ॥ जीहो विविध कुसुम गुथातिके लाला, माल करी उतकठ ॥ जीहो वरमाला पेरे गोपीका लाला, घाले हरीने कठ ॥ च० ॥ १४ ॥ जीहो निमतिम विध करी हरीभणि लाला, गोप तणिते नार ॥ जीहो बोलावे फरसे मिले लाला, करति काम विकार ॥ च० ॥ १५ ॥ जीहो मोरपिछ माथे धरी लाला, हरी गोवालणि साथ ॥ जीहो गावे धूनि पूरेतिके लाला, झाली हरखे हाथ ॥ च० ॥ १६ ॥ जीहो निर अथाहे झील तो लाला, इसपरे हरी जाण ॥ जीहो पकज गोपी मागीया लाला ॥ लिलाए दिए आण ॥ च० ॥ १७ ॥ जिहो गोवालणीया रामने लाला, उलभे एकवार ॥ जीहो तुम बधव अम नेहरे लाला ॥ अण दिठे बहुवार ॥ च० ॥ १८ ॥ जीहो मधुर बजावे वासली लाला, गिरिकढणे आणद, जीहो घणु हसावे रामने लाला ॥ नाचे नव नव ढद ॥ च०॥१९॥ जीहो गोवालणी साथे

लाला, नाचे कृष्ण कुमार, जीहो रंगाचार तणी परे लाला, तालदिए हलधार ॥ च० ॥ २० ॥ जीहो इम रमता हरी रामने लाला, वोल्या वरस इग्यार ॥ जी हो गुण सागरसूरि ए कही लाला, ढाल साडत्रिस मी सार ॥ चतुर० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ कंसराय मथुरापुरी, सुखमे राज करत ॥ वहिन तणे घर आवीयो, कन्या देखी हसत ॥ १ ॥ वहिने गर्भ जे सातमो, किम मुझ मारण हार ॥ के ऋपि भास्यो अन्यथा, के कोइ वात विचार ॥२॥ निमतियाने पूछीयो, ऋपिवर वचन विच्यार ॥ सो भाखे नृप नवी मीटे, होण हार विवहार ॥ ३ ॥ नृप भणे निमति सुणो, हु किम जाणु तास ॥ अण जाण्या अ णओलख्या, किम करु तस नास ॥ ४ ॥ निमतिए स ही नाणीका, राय बतावे ताम ॥ केसी हय खर मख वृ प ॥ एहनो फोडण ठाम ॥ ५ ॥ धनुष्य चोहेमे भुज ब ले, नाथे कालिनाग ॥ तुम युग हाथी पाटना, मारी मेलावे माग ॥ ६ ॥ मल्ल आखाडे मल्लने, झाली पछा ड्ये जोर ॥ ते तुम वेरी जाणजो, एह हलावी ढोर ॥७॥ कंस नृप अति खलभल्यो, अरिनो सुणी अधीकार ॥ वृषभ मेल्यो मोकलो, पुठे घणा असवार ॥ ८ ॥

ढाल ३८ मी ॥ मत कोइ रमज्यो हो साजन सोगटे ॥ ए देशी ॥ हिवे संझकाले हो कंसनरिंदनो, अरिष्टबलद बलवत ॥ चतुरनर ॥ व्रजरावनमे हो

आवे आकतो, करतो कोप अनत ॥ च० ॥ १॥ सु
णजो साजन अचरिजनी कथा ॥ ए आंकणी ॥ सिं
गे उपाडी पगाडे गायने, नदीय कडपपरे ताम॥च०॥
तिम वली कोप धरी पग पाछले, ढोले घृतना ठाम॥
च० ॥ सु० ॥ २ ॥ राम सहित गोविंद तव सांभले,
कोलाहल अति होय ॥ च० ॥ लेइ हथीयार धसी ह
री आवीयो, अरिष्ट बलद तिहां जोय॥च०॥सु०॥
॥ ३ ॥ वारे सहु इहां नद गोवालीया, नहीं गो घृतनो
काम ॥ च० ॥ विनवे सहु पिण नवी रहे, बलद बो
लावे ताम॥च०॥सु०॥ ४ ॥ सोषिण आयो हो हरी
ने उपरे, रिस भरयो विकराल ॥ च० ॥ मारे अपुठो
हो हरी निज भुज बले, हरख्या बालगोपाल॥ च०
॥ सु०॥५॥हरी रमता वली आयो हो अन्यदा, केसी
कंस किशोर ॥ च० ॥मही तल गाजे हो पग खुड ता
लसु, हय हिंसारव जोर ॥ च० ॥ सु० ॥ ६ ॥ ग्रहतो
हो दंत विचाले लोकने, खुरे हणतो गाय ॥ च० ॥ दे
खिहो सोर मच्यौ वन गोकुले, गोधन नाठो जाय ॥
च० ॥ सु०॥७॥ लोक पुकार सुणी हरी आवीयो,
तुरीने पासे जाय ॥ च० ॥ हरीने हो मारण धायो ह
यवरु, लोक रह्या अकुलाय ॥ च० ॥ सु० ॥८॥ना
खीहो फाल केसी जव आवीयो, दोड करी हरी आ
प ॥ च० ॥ मुखशु हो झाली ताम विदारीयो, टाल्यो
सबल सताप ॥ च० ॥ सु० ॥ ९ ॥ कस तणा खरमे

ख तिमहिज वली, गोकुलमे समकाल ॥ च० ॥ फि रतां वनमे हो हरी द्रष्टे पडे, नाखे ताम उगाल ॥ च० ॥ सु० ॥ १० ॥ एक दिन जमुना हो जलमे परिसरे, हरि रमे सुविचार ॥ च० ॥ गिंदुक उच्छलीने तत्र प ड्यो, कालिंद्रह मझार ॥ च० ॥ सु० ॥ ११ ॥ ते ले वाने हरी द्रहातर गया, सोधी लीयो गयद ॥ च० ॥ पिठे फिरता तव पेखीयो, आवास तजनो कद ॥ च० ॥ सु० ॥ १२॥ भितरे दीठी एक गवाक्षिका, कौतुक अधिको पाम ॥ च० ॥ दइ फलाग माहि गया, निरी क्षण करे काम ॥ च० ॥ सु०॥१३ ॥ आगे जाता पलग पें झीलता, देखे कालीनाग ॥ च० ॥ सहस्रफणो सु तो सुख निंदमे, महीधर विखनो गग ॥ च० ॥ सु० ॥ १४ ॥ करे तिहा नागणी नागपतालनी, नव नव भात विनोद ॥ च० ॥ पामी अचरिज ताम हरी भणी, बोले वचन सरोद ॥ च० ॥ सु० ॥ १५ ॥

नागणिवाच ॥ काइ तु वाट विसारियोरे वाला, काइ तु मारग भुलियो ॥ काइ ते तारो कालघटियो, जे इणे मारग आवियो ॥ जल -कमल छंडि जायरे बाला, स्वाम मोरो जागसे ॥ १ ॥ कानवाच ॥ नहि ते वाट विसारियोरे नागण, नहि ते मारग भुलियो ॥ न हि ते मारो काल घटियो, हु एणे मारग आवियो ॥ जल० ॥ २ ॥ नागणीवाच ॥ किहा तुमारो वेसणोरे बा ला, कुण तुमारो गामरे ॥ कुण रायना चलण माले,

स्यु छे तुमारो नामरे ॥ ज० ॥ ३ ॥ कानवाच ॥ मथु
रा हमारो बेसणोरे नागण, गोकुल हमारो गामरे ॥
कमरायना चलण चाले, गोवालीमो माहरू नामरे ॥
ज० ॥ ४ ॥ नागण जगाडो तोरा नाहने, वली केसे
जे विसासीयो ॥ कसरायथी जुवटे रमतां, नाह तुमा
रो हारीयोरे ॥ ज० ॥ ५ ॥ नागणी नाग प्रबोधनवा
च ॥ चरण चोली अग मोमी, नागणीए नाहो जगा
वीयो ॥ उठोने बलवत बेठा थाउ, बालुमो हम घर
आवीयोरे ॥ जल० ॥ ६ ॥

देशी तेहिज ॥ उठ्यो हो महिधर विष भरे लोच
ने, कोप धरी ततकाल ॥ च० ॥ आयोहो सन
मुख हरीने उपरे, रोस भरयो विकराल ॥ च० ॥ सु०
॥ १३ ॥ नाथ्यो हो झाली वेल तणीपरे, पाम्यो अधि
को त्रास ॥ च० ॥ उपरे बेशी हो हयपरे वाहियो, जोर
कीसो हरी पास ॥ च० ॥ स० ॥ १४ ॥ थाको हो नाग
तजी अभीमानने, प्रणमे प्रभुना पाय ॥ च० ॥ हुं
तुम पायक लायक साहीवा, मेहेर करो महाराज ॥
च० ॥ सु० ॥ १५ ॥ हिवे हु सेवक आजथी ताहरो, न
भजु अवर भूपाल ॥ च० ॥ लेइ सतकार आयो ह
री निज घरे, मिलीया वालगोपाल ॥ च० ॥ सु० ॥
॥ १६ ॥ हिवे वृषभादिक हणीया साभली, वयरी जाण
ण हार ॥ च० ॥ सारग धनुष्य पूजण थापीयो, परख
दामे महाराज ॥ च० ॥ सु० ॥ १७ ॥ कसे करावीहो

ख तिमहिज वली, गोकुलमे समकाल ॥ च० ॥ फि
रता वनमे हो हरी द्रष्टे पडे, नाखे ताम उगाल ॥ च०
॥ सु० ॥ १० ॥ एक दिन जमुना हो जलमे परिसरे,
हरि रमे सुविचार ॥ च० ॥ गिंदुक उछलीने तत्र प
ड्यो, कालिंद्रह मझार ॥ च० ॥ सु० ॥ ११ ॥ ते ले
वाने हरी द्रहातर गया, सोधी लीयो गयद ॥ च० ॥
पिठे फिरता तव पेखीयो, आवास तेजनो कद ॥ च०
॥ सु० ॥ १२॥ भितरे दीठी एक गवाक्षिका, कौतुक
अधिको पाम ॥ च० ॥ दइ फलाग माहि गया, निरी
क्षण करे काम ॥ च० ॥ सु०॥१३ ॥ आगे जाता पलग
पें झीलता, देखे कालीनाग ॥ च० ॥ सहस्रफणो सु
तो सुख निंदमे, महीधर विखनो गाग ॥ च० ॥ सु०
॥ १४ ॥ करे तिहा नागणी नागपतालनी, नव नव
भात विनोद ॥ च० ॥ पामी अचरिज ताम हरी भणी,
बोले वचन सरोद ॥ च० ॥ सु० ॥ १५ ॥

नागणिवाच ॥ काइ तु वाट विसारियोरे वाला, काइ तु मारग भुलियो ॥ काइ ते तारो कालघटियो, जे इणे मारग आवियो ॥ जल कमल गडे जायरे वाला, स्वाम मोरो जागसे ॥ १ ॥ कानवाच ॥ नहि ते वाट विसारियोरे नागण, नहि ते मारग भुलियो ॥ न हि ते मारो काल घटियो, हु एणे मारग आवियो ॥ जल० ॥ २ ॥ नागणीवाच ॥ किहा तुमारो वेसणोरे बा ला, कुण तुमारो गामरे ॥ कुण रायना चलण चाले,

लडथड्यो तामहो होइ अधोमुखे, पडीयो नूमी आ य ॥ च० ॥ हासो करताहो देखि सना सहु, तव उ ठो हरी राय ॥ च० ॥ सु० ॥ २७ ॥ मो धर्म फरसे हो जीम निज वव्वने, सारगपति पिण तेम ॥ च० ॥ चोहडी धनुष्यने टकारव कियो, हरी बल अधीको ए म ॥ च० ॥ सु० ॥ २८ ॥ लेइ वरमालाहो हरी कंठे धरी, नवल सनेहि नार ॥ च० ॥ ढाल आत्रिसमी गुणसागर कहे, घरे आयो मूरार ॥ च० ॥ सु० ॥२९॥

दुहा ॥ कसराय हिवे एकदा, आखाडे मल्ल युद्ध ॥ करवा कारण तेडिया, राय अनेक विसुध ॥ १ ॥ व सुदेवने तेडीया, सघला आपणा जाय ॥ अक्रुरादिक पुत्रसु, कस हिवे चित लाय ॥ २ ॥ सनमानी बेसा डीया, कसे ते सहु कोह ॥ उचे माचे दिपता, पामे सो ना सोह ॥ ३ ॥ मल्ल युद्ध हिवे सानलि, कृष्ण राम ने एम ॥ कहे मथुरा जाइए, अचरिज जोवा जेम ॥ ॥ ४ ॥ मानी वचन बलनद्रजी, एम जसोदा पास ॥ न्हावण कर अम्हे जावसा, मथुरा चित्त उलास ॥५॥ देखि जसोदा मातने, हटक कहे बलदेव ॥ कस ह णयो हरी बधवा, वात कर सुन टेव ॥ ६ ॥ पाहे लु णो स्यु विसरयो, तुझने दासी नाउ ॥ जिन न कि यो कारज तुरत, वचन गणयो अम्ह वाउ ॥ ७ ॥ एह सुणि हरि कोपीयो, उपजी रीस अपार ॥ बोलाव्यो बोले नहि, तव चिंते हलधार ॥ ८ ॥

तिहां उदगोपणा, नामा कुमरी व्याह ॥ च० ॥ सा
रग धनुष्य चढावे जे भुज वले, परणे तेह उछाह ॥च०
॥ मु० ॥ १८ ॥ एम नीसुणीहा आवे तिहा कणि, अ
लगाथी राजान ॥ च० ॥ धनुष्य चमावी पिण को न
वी सके, सारग जे अभीधान ॥ च० ॥ सु० ॥ १९ ॥
एहवे नदन श्री वसुदेवनो, शूर सुभट गुणधीर ॥ च०
॥ उलाकि रथ उपर वेसीने, अनाधृष्ट वडवीर ॥ च०
॥ सु० ॥ २० ॥ मारग जाताहो गोकुल गाममें, वास
रह्यो सुभटेव ॥ च० ॥ मथुरा वाट देखाडण तव लि
या, साथे हरी वलदेव ॥ च० ॥ सु० ॥ २१ ॥ वड उ
नमे लियो हरी मारग करे, हरस्यो वल महि राण
॥ च० ॥ हरी वल देखिहो मन अचरिज लह्यो, रये
तेरू राजान ॥ च० ॥ सु० ॥ २२ ॥ अनुक्रमे जमुना
तट जल उतरी, पइसे मथुरा माहि ॥ ॥ च०॥ धनुष्य
सभाइमे आया रगसु, वेठा धरी उछाहि ॥ च०॥ सु०
॥ २३ ॥ भामाहो हुइ अति अनुरागणि, निरखी हरी
नु रूप ॥ च० ॥ सारग धनुष्य खेचण तव उठिया, हु
स धरी वड भूप ॥ च० ॥ सु० ॥ २४ ॥ निरखि धनु
ष्यहो पाग उसरे, महिपाति मोठा राय ॥ च० ॥ हो
इ अपुठाहो नव परणीत परे, उभा मुख छिपाय ॥
च० ॥ सु० ॥ २५ ॥ एतले कुमर श्री वसुदेवनो, होइ
सनध तनु मोर ॥ च० ॥ चडवडी चाल्योहो नय मन
अवगुणि, चाप ग्रही करे जोर ॥ च० ॥ सु० ॥ २६ ॥

लडथड्यो तामहो होइ अधोमुखे, पडीयो भूमी श्रा य ॥ च० ॥ हासो करताहो देखि सभा सहु, तव उ ठो हरी राय ॥ च० ॥ सु० ॥ २७ ॥ मो धर्म फरसे हो जीम निज वचने, सारगपति पिण तेम ॥ च० ॥ चोहडी धनुष्यने टकारव कियो, हरी बल अधीको ए म ॥ च० ॥ सु० ॥ २८ ॥ लेइ वरमालाहो हरी कंठे धरी, नवल सनेहि नार ॥ च० ॥ ढाल आमत्रिसमी गुणसागर कहे, घरे आयो मूरार ॥ च०॥ सु० ॥२९॥

दुहा ॥ कसराय हिवे एकदा, आखाडे मल्ल युद्ध ॥ करवा कारण तेम्हिया, राय अनेक विसुध ॥ १ ॥ व सुदेवने तेडीया, सघला आपणा भाय ॥ अक्रुरादिक पुत्रसु, कस हिवे चित लाय ॥ २ ॥ सनमानी बेसा डीया, कसे ते सहु कोह ॥ उचे माचे दिपता, पामे सो भा सोह ॥ ३ ॥ मल्ल युद्ध हिवे सांभलि, कृष्ण राम ने एम ॥ कहे मथुरां जाइए, अचरिज जोवा जेम ॥ ॥ ४ ॥ मानी वचन बलभद्रजी, एम जसोदा पास ॥ न्हावण कर अम्हे जावसा, मथुरा चित्त उलास ॥५॥ देखि जसोदा मातने, हटक कहे बलदेव ॥ कस ह एयो हरी वधवा, वात कर सुज टेव ॥ ६ ॥ पाहे लु णो स्यु विसरयो, तुझने दासी भाव ॥ जिन न कि यो कारज तुरत, वचन गण्यो अम्ह वाउ ॥ ७ ॥ एह सुणि हरि कोपीयो, उपजी रीस अपार ॥ बोलाव्यो बोले नहि, तव चिंते हलधार ॥ ८ ॥

तिहां उदगोपणा, जामा कुमरी व्याह ॥ च० ॥ सा
रग धनुष्य चढावे जे भुज बले, परणे तेह उगाह ॥च०
॥ सु० ॥ १८ ॥ एम नीसुणीहा आवे तिहा कणे, अ
लगाथी राजान ॥ च० ॥ धनुष्य चमावी निण को न
वी सके, सारंग जे अभीधान ॥ च० ॥ सु० ॥ १९ ॥
एहवे नदन श्री वसुदेवनो, शूर सुभट गुणधीर ॥ च०
॥ उलाकि रथ उपर वेसीने, अनाधृष्ट वडवीर ॥ च०
॥ सु० ॥ २० ॥ मारग जाताहो गोकुल गाममें, वास
रह्यो सुभटेव ॥ च० ॥ मथुरा वाट देखाडण तव लि
या, साथे हरी बलदेव ॥ च० ॥ सु० ॥ २१ ॥ वड उ
नमे लियो हरी मारग करे, हरख्यो बल महि राण
॥ च० ॥ हरी बल देखिहो मन अचरिज लह्यो, रथे
तेडे राजान ॥ च० ॥ सु० ॥ २२ ॥ अनुक्रमे जमुना
तट जल उतरी, पइसे मथुरा माहि ॥ ॥ च० ॥ धनुष्य
सभाइमे आया रगसु, वेठा धरी उछाहि ॥ च० ॥ सु०
॥ २३ ॥ जामाहो हुइ अति अनुरागणि, निरखी हरी
नु रूप ॥ च० ॥ सारंग धनुष्य खेचण तव उठिया, हु
स धरी वड भूप ॥ च० ॥ सु० ॥ २४ ॥ निरखि धनु
ष्यहो पाग उसरे, महिपाति मोठा राय ॥ च० ॥ हो
इ अपुठाहो नव परणीत परे, उभा मुख छिपाय ॥
च० ॥ सु० ॥ २५ ॥ एतले कुमर श्री वसुदेवनो, होइ
सनध तनु मोर ॥ च० ॥ चडवम्भी चाल्योहो जय मने
अवगणि, चाप ग्रही करे जोर ॥ च० ॥ सु० ॥ २६ ॥

खे ए, वात न को लखे ए ॥१३॥ बांधव दसे दसार, जादवनो परिवार ॥ तुझ सीर राजतो ए, जग जस गाजतो ए ॥ १४ ॥ हुं वड बध्रव सार, गुपतपणे सु विच्यार ॥ रहु मन नेहथी ए, प्रेम विसेषथी ए ॥ ॥ १५ ॥ दासी जणी करी रीस, तिण कारण तुम इस ॥ अलेक गुनो कहेए, वछ वीरच्यो सहिए ॥१६॥ ढाल नवत्रिसमी सार, पाम्यो जेद मूरार ॥ फिरी पूछे इसुंए, गुणसागर कीसुंए ॥ १७ ॥

दुहा ॥ हिवे पूछे बलभद्रने, किम मूक्यो मुझ तात ॥ कारण विण इहां कणे, तेम जणो सहु वात ॥ ॥ १ ॥ वलतु बलभद्र कहे, वात सविविस्तार ॥ कसे तुझ बाधव हणया, कोप धरी तिण वार ॥ २ ॥ तात मात मथुरा रहे, कस तणे हठ जोर ॥ सोल वरसतो वही गयां, कोय न आवे नोर ॥ ३ ॥ जरासधना पक्षथी, चसकी न शके कोय ॥ मोटा साथे बाधवी, घणी विमासण सोय ॥ ४ ॥ आज कंस वड राजीयो, पाले राज अखरू ॥ आवीने केइ नम्या, पुहवी पाल प्रचड ॥ ५ ॥ वछ आपण सुत पाशति, वरते ए विरतंत ॥ तो एम जाणी सींधनो, खाज सीयाल जखत ॥ ६ ॥ बाधव मरण सुणी करी, कोप्यो कृष्ण मूरार॥ चरीत करे जे आगले, ते सुणजो सुविच्यार ॥ ७ ॥

ढाल-४० मी ॥ राणापुरो रळीयामणोरे लाल ॥ ए देशी ॥ आज पवाडो कसनोरे लाल ॥ इम करी

ढाल ३९ मी ॥ मेलि माथे मार ॥ ए देशी ॥ ह
लधर साहि हाथ, बोलावे नरनाथ॥ जाइ किम आप
मणो ए, वचन दयामणो ए ॥ १ ॥ वादल गयो चं
द, दुरवल दिसे मद ॥ तिम तुम मुख इसो ए, क
हो कारण किस्यो ए ॥ २ ॥ इणवाते गुणगेह, त्रुटो
दिसे नेह ॥ बधव तुम तणो ए, साचो मुज जणो ए
॥ ३ ॥ हरी जाखे इम वाय, तु मोटो महाराय ॥ हु
मन जाणतो ए, हठ नवि ताणतो ए ॥ ४ ॥ पिण तु
म अधीक गुमान, दिसेछेरे राजन ॥ मुज जननी व
डि ए, कही तुम दासकी ए ॥ ५ ॥ इण वाते तुम ला
ज, नवि आवि माहाराज ॥ विण वेधे वह्यो ए, अणघ
टतु कह्यो ए ॥ ६ ॥ पामी अतर जेय, हसि बोले ब
लदेव, नहि तुम जामनि ए, जसोदा स्वामनि ए ॥
॥ ७ ॥ तुमारी देवकि माय, देवक सुता सुखदाय ॥
वह्र तुम मावडी ए, वसुधामां वडी ए ॥ ८ ॥ नद स
दन सुख हेत, माता धरीय सकेत ॥ मूक्यो तुम्र जन
णि ए, आरति मन घणि ए ॥ ९ ॥ पिण न करे तु
ज गोर, कस तणो जय जोर ॥ तुज विरहातुरीए, रहे
मथुरा पुरी ए ॥ १० ॥ मास मासने छेह, माता धरि
मन नेह ॥ आवे विलखती ए, तुम मुख निरखती ए
॥ ११ ॥ नद जसोदा नार, सखीयपणे सुविच्यार ॥
राखे हेत धरी ए, हेजघणो करीए ॥ १२ ॥ वसुदेव
आपणो तात, मुज मूक्यो विख्यात ॥ कस कारण प

ला० ॥ रामकृष्ण रढियालरे ॥ सो० ॥ श्रा० ॥ ९ ॥ कंस विना परीवारसुरे ॥ ला० ॥ बेसे हरीहलधाररे ॥ सो० ॥ मोठा एक माचा थकीरे ॥ ला० ॥ सुनट सव उताररे ॥ सो० ॥ श्रा० ॥ १० ॥ राम देखावे कृष्णनेरे ॥ ला० ॥ कंस नणी तेवाररे ॥ सो० ॥ समुद्रविजय श्रादे करीरे ॥ ला० ॥ ए श्रापणडो परिवाररे ॥ सो० ॥ श्रा० ॥ ११ ॥ हिवे तिहां मल्ल जुऊतारे ॥ ला० ॥ जोवे राणो राणरे ॥ सो० ॥ कंस श्रादेसे उठियोरे ॥ ला० ॥ चाणुरमल्ल बलवानरे ॥ सो० ॥ श्रा० ॥ १२ ॥ मेहतणी परे गाजतोरे ॥ ला० ॥ थापोटे निज हाथरे ॥ सो० ॥ उचे स्वरे इम वोलतोरे ॥ ला० ॥ सकल नरेसर साथरे ॥ सो० ॥ श्रा० ॥ १३ ॥ वीर जननी जे जाइयारे ॥ ला० ॥ राजपुत्र मछरालरे ॥ सो० ॥ श्रावि श्रडो मुऊ श्रागलेरे ॥ ला० ॥ श्रहो मोठा नूपालरे ॥ सो० ॥ श्रा० ॥ १४ ॥ श्रणसहेतो हरी उठियोरे ॥ ला० ॥ न्हानो पिण मन मोटरे ॥ सो० ॥ माचेथी श्रायो उतरीरे,॥ला० ॥ नुजा श्राप थापोटरे ॥ सो० ॥ श्रा० ॥ १५ ॥ कृष्ण थापोटे बाहनेरे ॥ ला० ॥ गयण धरा कंपायरे ॥ सो० ॥ देखी गयण घन उमह्योरे ॥ ला० ॥ श्रष्टापद श्रकुलायरे ॥ सो० ॥ श्रा० ॥ १६ ॥ दूधमुखे ए वालडोरे ॥ ला० ॥ सेवे सदा वनवासरे ॥ सो० ॥ तिण वढवो जुगतो नहिरे ॥ ला० ॥ एक हाणने वलि हासरे ॥ सो० ॥ श्रा० ॥ १७ ॥ मुलकि दामो

पण रीसालरे ॥ सोभागी ॥ हरी हलधर बेहु चालीयारे ॥ लाल ॥ साथे घणा गोपालरे ॥ सो० ॥ श्रा० ॥ १ ॥ हरी हलधरने कानजीरे ॥ ला० ॥ बेहु गुणे श्रमोलरे ॥ सो० ॥ मथुरा दिसे चालतारे ॥ ला० ॥ पामे पुरनी पोलरे ॥ सो० ॥ श्रा० ॥ २ ॥ पद्मोतर चपक चलारे ॥ ला० ॥ कस तणा गज दोयरे ॥ सो० ॥ पुर प्रवेश करता थकारे ॥ ला० ॥ साहमा श्राव्या सोयरे ॥ सो० ॥ श्रा० ॥ ३ ॥ दात उखेडी मारीयोरे ॥ ला० ॥ हरी पदमोतर तेहरे ॥ सो० ॥ तिम बलचद्रे मारीयोरे ॥ ला० ॥ चपक गज तिहा जेहरे ॥ सो० ॥ श्रा० ॥ ४ ॥ राम कृष्ण बेहु देखीनेरे ॥ ला० ॥ कहे लोक सहु कोयरे ॥ सो० ॥ श्ररिष्ट प्रमुखइणे हण्यारे ॥ ला० ॥ नदपुत्र ए दोयरे ॥ सो० ॥ श्रा० ॥ ५ ॥ लुटे बाजार दयामणारे ॥ ला० ॥ गोवालीया तेणीवाररे ॥ सो० ॥ वस्त्र चुपनने सुखडीरे ॥ ला० ॥ कोइ न वर्जनहाररे ॥ सो० ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ व्यापारी मिली एकठारे ॥ ला० ॥ कंस भणी कहे तामरे ॥ सो० ॥ गोवालीए पुर लुटीयोरे ॥ ला० ॥ न राखी कोइनी मामरे ॥ सो० ॥ श्रा० ॥ ७ ॥ कस कहे धीरा रहोरे ॥ ला० ॥ श्रावणद्यो इण ठामरे ॥ सो० ॥ कुटी करशु पाधरारे ॥ ला० ॥ पोचाडीस जम धामरे ॥ सो० ॥ श्रा० ॥ ८ ॥ निले पीले फूलडेरे ॥ ला० ॥ कठे भरी वरमालरे ॥ सो० ॥ मल्ल श्रखाडे श्रावियारे ॥

सुरे ॥ ला० ॥ किण हरी जोर खमायरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २६ ॥ मुहडे लोहि नाखतोरे ॥ ला० ॥ फाटि देखि आखरे ॥ सो० ॥ प्राण गंज्यो पापीएरे ॥ ला० ॥ हरी पिण दिधो नाखरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ ॥ २७ ॥ ढाल नली चालिसमीरे ॥ ला० ॥ युद्ध करी बहू जातरे॥ सो० ॥ गुणसागर हिवे कसनीरे॥ ला०॥ आगे निसुणो वातरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २८ ॥

दुहा ॥ कस हिवे नय कोपथी, बोले कपित देह॥ आलस तजी गोवालीयो, मारो उन्नो एह ॥ १ ॥ जेणे ए पापि पोसीया, ते पिण मारो नद ॥ ग्रथ ग्रहो सहू तेहनो, काढी घरनो कद ॥ २ ॥ नीड करे जो वीचको, तेहने राखण काज ॥ ते हणवो मुझ आणथी, नीश्चे सुतजी लाज ॥ ३ ॥

ढाल ४१मी॥नृपति आइ मिल्या ए देशी॥ईम सुणी हरी कोपीयोरे, कस नणी कहे एम ॥ चाणुर मारया तु जीवावरे, मूरख वंछे केम ॥ १ ॥ सो अवसर आय मिल्यो, ऋषिवर नाख्यो जेह॥ सो० ॥ ए आकणी ॥ राख्य जीव तु ताह्यरोरे, जबलग हणु तुझ ॥ पछी नद हणवा जायजेरे, देखी पराक्रम मुझ॥ सो० ॥ २ ॥ इम कहि कूदि आवियोरे, माचापर हरीराय॥ कस पामी नय आकरोरे, नाठो मुख विलखाय ॥ ॥ सो० ॥ ३ ॥ सासनरयो आव्यो धसीरे, अतेउरमें चाल ॥ जीवजस्या रहि बारणेरे, मान नरी मछरालरे

धर घोलीयोरे ॥ ला० ॥ वचन वदे तव गोररे ॥ सो० ॥ आव्य चाणुर उतावलोरे॥ला०॥नोड थारो जोररे॥सो० ॥ आ० ॥ १८ ॥ नद गोपनो पुत्रतुरे ॥ ला० ॥ दू ध तणी मुज देहरे॥ सो०॥ तो हु हरी गजनी परेरे॥ ला० ॥ उतारु घल एहरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १९ ॥ वचन चातुरी कृष्णनीरे ॥ ला० ॥ देखी बीजो मल्लरे ॥ सो० ॥ कस आदेसे उठियोरे ॥ ला०॥ मूष्टीक ना मे मुगल्लरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २० ॥ उठि बीजा म ल्लनेरे॥ला०॥साथे अभो हलधाररे॥सो०॥ थापटी नु ज तिम आवियोरे ॥ ला० ॥ चाणुर हरीनी लाररे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २१ ॥ राम अने मूष्टीक लडेरे ॥ ला० ॥ तिम हरीने चाणुररे॥ सो० ॥ विंद्धाचल गज नी परेरे ॥ ला० ॥ लाग्या रोस आतुररे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २२ ॥ कंपे धरा पगला तसुरे ॥ ला० ॥ उम्मे रज अतिपूररे ॥ सो० ॥ उठि सभा अलगी थइरे॥ ला० ॥ निरखे जना दूररे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २३ ॥ केशव मूठे चाणुरनेरे ॥ ला० ॥ नाख्यो धराति उटरे ॥ सो० ॥ वज्र जिम सक्रेसनोरे ॥ ला० ॥ पडीयो ग्र हे कुण चोटरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २४ ॥ सात धनुष्य पाछो पड्योरे ॥ ला० ॥ तिण घाते चाणुररे ॥ सो० ॥ सासलहि चाणुरनेरे ॥ ला० ॥ कृष्ण हकारे सुररे॥सो० ॥ आ० ॥ २५ ॥ केरू जाली नीज जानसुरे ॥ ला० ॥ बाहे सीस न मायरे ॥ सो० ॥ छिपके हणीयो मूठ

जी, जमुनाने तट जाय ॥ सो० ॥ १५ ॥ कसनि मा त तिम नारीएजी, जलतणी अजली दीध ॥ जीवज स्या निज पति तणोरे, प्रेत कारज नवी कीध ॥ सो० ॥ १६ ॥ राम अने कृष्ण तणोजी, प्रेत कारज करी तेम ॥ कारज करी सहु नाहनोरे, कोप धरी कहे एम ॥ सो० ॥ १७ ॥ एकतालीसमी ढालमेरे, प्रगट्यो श्री हरी आप ॥ गुणसागर जादव तणोजी, प्रबल पुण्य प्रताप ॥ सो० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ सतनामा पुत्री त्नणी, परणावे त्या नृप ॥ उग्रसेन हरी रायने, अनीनव रंना रूप ॥ १ ॥ नित नित नवला आत्नणों, नित्य नित्य नवला वेश ॥ नित्य नित्य नवली रतिकला, करे हरी सुविसेश ॥ २ ॥ सोरिपुर आव्या हिवे, जादव सकल विख्यात ॥ श्रोता सान्न लजो तुमे, जीवजस्यानी वात ॥ ३ ॥ विलखी जीव जस्या हिवे, जरासधने गेह ॥ पाहोती परतक्ष चालती, अखी रूपे एह ॥ ४ ॥ जरासध पूछे थके, रोति जपे वा त ॥ जादव कुमर हरी हलधरु, करी मुझ प्रितम घात ॥ ५ ॥

ढाल ४२ मी ॥ सोवन सिंघासण रेवति ॥ ए दे शी ॥ आसुडाने लुह्या निज हाथसुं, चापी चापी हि यमाने वाररे ॥ गहेवरयो मन अति वापनो, पूछयो पू छयो सकल विच्याररे ॥ १ ॥ आवीरे पनोति जरास घने, कतनो करीय सहाररे ॥ वाप तणो करवा त्नणी, बंधव काली कुमाररे ॥ आ० ॥ २ ॥ सोमसुन्नट तव

॥ सो० ॥ ४ ॥ रामे तव मूटीक जणिरे, पोहोचाड्यो ज म पास ॥ लोक नाठा सहु वेगलारे, पामीने अति त्रास ॥ सो० ॥ ५ ॥ एटले सुजट कसनारे, धाया ले इ हथीयार ॥ हरी हलधर हणवा जणिरे, सुजट मो ठा सिरदार ॥ सो० ॥ ६ ॥ इस एक माचा तणिरे, राम लेइ निजदाय ॥ मधुपर मांखिनी परेरे, नासी सुजट सहु जाय ॥ सो० ॥ ७ ॥ जिवजस्या आडी फिरीरे, बोले गेडी जाल ॥ मामि अब अलगा रहो रे, मामो मिलवो आन ॥ सो० ॥ ८ ॥ इम कहि तल पि आवियारे, लाते जागी किवाड ॥ जाणे कंस दर बारमेंरे, पडीउ चिंति धाड ॥ सो० ॥ ९ ॥ अतेउर स हू अवगणिरे, रोस जरयो हरीराय ॥ केशग्रहि कस रायनेरे, नांख्यो धरणी आय ॥ सो० ॥ १० ॥ मुगट पड्यो हार गीर गयोरे, तरवा लाग्या नयण ॥ मरण दशा आवि कसनेरे, कान्ह वदे इम वयण ॥ सो० ॥ ॥ ११ ॥ जीव तव राखेवा कारणेरे, बालक हणिया जेह ॥ हमणा फल ते पामीयोरे, परतख पापी एह ॥ सो० ॥ १२ ॥ कस शिर दाते मारतारे, वरजे तव द सार ॥ देखि हरी निज ताতनेरे, गेड चल्या सुवि च्यार ॥ सो० ॥ १३ ॥ रामकृष्णने नीज रथमारे, अ नादृष्टी बेसाण ॥ समुद्रविजय आदेसथीरे, मूके नी ज घर आण ॥ सो० ॥ १४ ॥ उग्रसेन साथे मिलि जी, समुद्रविजय नरराय ॥ कसनो प्रेत कारज करे

णी निज भुज बले, त्रिखड धणी होसे स्वामरे॥आ० ॥ १३ ॥ नेमने हलधर कृष्णजी, जेहना वशमां होय रे ॥ देवजो आप कोपे घणु, पोहची शके नही कोय रे ॥ आ० ॥ १४ ॥ एह स्थानक तुमे परीहरो, इहा सुख नहि लिगाररे ॥ तात तलाहि जाणके, खाइ खाइ गारी गिमाररे ॥ आ० ॥ १५ ॥ पश्चिमदिश तुम्हे शीद्र करो, सायर तट अभिरामरे ॥ सतभामा सुत जनमस्ये, भानु भमरतसु नामरे ॥ आ० ॥ १६ ॥ तिहारे करज्यो तुमे सादरो, वासतणोरे मडाणरे॥ अन्न धन चिरकपुस्सु, पामशो कोड कल्याणरे ॥ आ० ॥ ॥ १७ ॥ अष्टारदश कुल कोरूस्यु, चालीयो जादवरायरे ॥ मरने व्यापे घणो पावलो, तेहथी निकल्या जायरे ॥ आ० ॥ १८॥ नेमिने मत कोइ भूरज्यो, नेमी तजी किम जायरे ॥ नेमीतजी भल जादवा, अवरतणी कुण वातरे ॥ आ० ॥ १९॥नृपति भलीपरे भाखही, कोयठे बावनवीररे॥ जादव साथेरे लागणी, जे करे साहसधीररे ॥ आ० ॥ २० ॥ काल कुवर ग्रह्यो बिडलो, हु जाउ यादवालाररे ॥ जिहा रे जाय तिहा केडले, जइ लावु परीवाररे ॥ आ० ॥ २१ ॥ यवन अनुज राजा पाचसे, हय गय पायक तेमरे ॥ काल कोपे करी घड हल्यो, दडवड्यो जादवा केडरे ॥ आ० ॥ २२ ॥ जेहनो पुण्य सखाइयो, तेहना वड रखवाल रे ॥ तिहांरे न चाले वल देवनो, केतलो ए कुवर का

मोकल्यो, समुद्रविजे नृप पासरे ॥ कसना मारणहारने. मोकलो शिख दियो तासरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ समुद्र विजय कहे सोमजी, ए हमकुल शिणगाररे ॥ रामने कृष्ण दो नाइला, थमण सहु परीवाररे ॥ आ० ॥४॥ नाम तु सीसके धनुष्यने, मुक्य त मानके बाणरे॥ वर शीर आपके टोपने, वहाला जोयंग प्राणरे ॥ आ०॥५॥ पुत्र तो प्रभु नही स्वामीजी, जो प्रभु तो नहि पुत्ररे ॥ दोइमे एकज होवशे, तिम करो जीम रहे सुतरे॥ आ० ॥ ६ ॥ पुत्र तो आपथी उपजे, प्रभु करे आपनो भेदरे ॥ जड विना डालतो सुकशे, थाशेथाशे वस विछेदरे ॥ आ० ॥ ७ ॥ एह सुणी हरी कोपीयो, उठियो खडग सभालरे ॥ सोमने राहु ज्यु सांभलो,वेगे देज आमलो टालरे ॥ आ० ॥ ८ ॥ नृप भत्रिज शु विनवे, मारवो नही अवसिठरे ॥ स्वामीने बले बलियो महा, शेवक होवे अति ढिठरे ॥ आ० ॥ ९ ॥ सोम सुभट तव चालीयो, पोहोतो नृपति सगरे ॥ वात सुणी अति परजल्यो, अग्नी ज्यु घृत प्रसगरे ॥ आ० ॥ १० ॥ समुद्रविजय सहु तेडिया, किधो किधो वात विच्याररे॥हिवरे इहा रहेवो नही, रह्या होवे असुख अपाररे ॥ आ० ॥ ११ ॥ कोष्टक एक नीमातियो, पूछ्यो पूछ्यो यादव नाथरे ॥ किहांरे गया हम उगरा, विगडीछे मोटका साथरे ॥ आ० ॥ १२ ॥सोरे कहे नृप सांभलो, आरति काइ न ठामरे ॥ नृप ह

दुःकरथि दुःकर महा, जे जग दिसे काम ॥ ते तप करी आराधीए, इम चिंते नृप ताम ॥ ४ ॥ निमतिए दिन आपियो, स्नान कियो वलि कर्म ॥ सायर पूजा साचवि, साधेवा सुख शर्म ॥ ५ ॥

— ढाल ४३ मी ॥ एक दिवस लंकापति ॥ ए देशी ॥ कृष्ण करे उपवासजी, त्रण महा उलासजी, वासजी वास करेवा कारणे ए ॥ त्रिजा दिननी जामनि, जाणे के प्रगटि दामनी, स्यामनी जाय ते सुर उवारणे ए ॥ १ ॥ हरीके शंख पचायण, दियो रोहिणि नंदन, नंदन शख सुघोष सुहामणो ए ॥ वर वस्त्र पहिरमणि, किधी सायरने घणी, अति घणी भक्ति करी भाखे घणो ए ॥ २ ॥ कहे हुं किम आराधियो, तप वले आयो साथीयो, मुजने ते दियो कारज आदेशडो ए ॥ हरी भाखे सुर सांभलो, आपो थानक निरमलो, अतिभलो थानक अमारो पडपडो ए ॥ ३ ॥ सुर सुरपति पासे गयो, सुरपति मन हरखित थयो, हरखीत थयो धनदने कारज सोंप्यो सहु ए ॥ धनद समारे अति भली, पुरी द्वारीका मन रलि, मन रलि पुगी आस फलि बहु ए ॥ ॥ ४ ॥ नव जोयण वीस्तारजी, लांबपणें ते बारजी, सारजी सुवर्ण कोट-गढ़ भलि ए॥ हाथ अढार उचा पणे, नव धरणी पायो खणे, पोलापणे हाथ बार रागु चलि ए ॥ ५ ॥ रत्न तणा वर कांगुरा, देखी

ळरे ॥ आ० ॥ २३ ॥ लगवग आया ए आशना, त व सूरि करेहि विच्यारर्रे ॥ तेम पग्पच उठाइयो, का ल कियो तव कालरे ॥ आ० ॥ २४ ॥ यवन कुंअर स हु राजवी, पाग वली चालीया तेहरे ॥ नृपती सुख दुख पामीयो, यात गुणी धुर तेहरे ॥ आ० ॥ २५ ॥ वीर सहारीयो पापाणी, लाग्यो लाग्यो पाप अपाररे ॥ वलतीरे जिहा जाइ गाडरी, तिहा तिहां वालण ए हाररे॥आ०॥२६॥जादव विघन सहुए टल्योरे, सहु ट ल्यो रुर ततखेवरे ॥ दान ने पुन्य किया घणा, किधी गुरु देवनी शेवरे ॥ आ० ॥ २७ ॥ सल्प प्रीयाणरे आवीया, सोरठ देशमझाररे ॥ दूरथी दीठो अति रु यडो, विमल पणे गीरनाररे ॥ आ० ॥ २८ ॥ साय रने तट आसना, आवीया जादवरायरे ॥ सतभामा सुत जनमीया, तिहा कियो कटक पडावरे ॥ आ० ॥ ॥ २९ ॥ ढाल भली बेंतालीसमी, जय हरणी अभी रामरे ॥ श्रीगुणसागर पूरवे, मन तणा वछित कामरे ॥ आवीरे० ॥ ३० ॥

दुहा ॥ उदधी विजय परीवारशुं, करेरे मसलत ताम ॥ विण सुरवर आराधीया, सरे न मोटो काम॥ ॥ १ ॥ जिहा जबुक वासो वसे, ते तो बहुला ठाम॥ते तरुवर जग थोरुला, जिहा ले गज वीश्राम ॥ २ ॥ त प विन सानिधी नवि करे, देव महा सुखदाय ॥ तप विण लब्धि न उपजे, पाप विलय नवि जाय ॥ ३ ॥

विसालहो, विशालहो कल्पवृक्ष घर बारणे ए ॥ वा विनो विस्तारहो, नीरपूरीत सारहो, सारहो नारी मजण कारणे ए ॥ १३॥ एकखमा द्वारिका कही, त्रिखमा सतखंडा लही, गह गह्या साठ कोडी वस्ती खरी ए॥ नाम जुजूआ धारिए, ऋद्धी घणी विस्तारीए, वि स्तारीए अन धनसु भेल्या भरी ए ॥ १४॥ दिपंती घर उलहो, बणति बणति पोलहो, पोलथीहो पोलु तो उचि कहिए ॥ कलस कांति अपारहो, उगंतो दिनकारहो, कारहो कांतिकिरणे मिलराहिए॥१५॥हाट तणि वर सोहहो, सोहनो सदोहहो, दोहनहो सोह गुणे धन गाजीयो ए॥स्वर्ग मृत्यु पातालहो, तिन लोक र सालहो, रसालहो सार सोधीने आणियो ए ॥१६॥ कुवा वाव सरोवरु, वन वाडी अति मनोहरु, हरी पुर हरीपुर सरस कहावियो ए॥ एसघलो विस्तार ए, गढमढ पोल प्राकार ए, वारुहो अहोरात्रि माहि कियोए॥ १७॥पितांबर अति निर्मलो, नक्षत्रमाला अ ति भलो, कौस्तुभहो गरुडध्वज रथआपियो ए॥कौमुदि गदावर, सारग धनुष्य भला सर, नंदकहो खड्ग मुगुट ह रिने दियो ए॥ १८॥ वनमाला मुसल हळ, वमन ता ल ध्वजरथ भल, हलधरहो पुजो तृण धनुष्य दे इ ए ॥ ग्रीवा आभरण वेहेरखा, हारसु कुडल नवल खा, जिनजीनेहो आये भूषण सुर केइ ए ॥ १९॥ गग तरग विराजता, वसन समुजल राजता, पुन

मोहे सुरनरा, किधा एकोठा नवरंग झलकंता ए ॥ एकसो अडसठ पोलहो, दिसे सरखि उलहो, उल हो सात भोमी ध्वज लहकता ए ॥ ६ ॥ वृतत्रस चउरसहो, देव करे परसस हो, किधी मंदिरनि भ ति मान्मणी ए ॥ दस भोमी रत्ने जमी, सहे सवहुं तेरे परघडी, वसुदेवना मेहेल तणी शोभा घणी ए ॥ ॥ ७ ॥ मध्य एकविसे भोमियो, थन हजारे शोभीयो, शोभीयो मणि माणीकज लुमीयो ए ॥ धनद करे हरी हेतथी, नव नव घाट विशेथी, रंगभुवन करी थापीयो ए ॥ ८ ॥ इद्राणी अनुहारना, सहेस बत्री से नारना, नारना मेहेल तणि शोभा घणी ए ॥ बां ध्या सोवन घाटहो, माहि हिंडोला खाटहो, विविध प्रकारे कोरणीए॥९॥मेहेल सोल हजारहो, उची भोमी अढारहो, दिपे श्री बलदेवना ए ॥ गोल त्रस चउकुणिया मोल विविध सुहाविया, सुहाविया दस भोमी द सारना ए ॥ १० ॥ सभा सुधर्मी मन रलि, किधि शोभा झलमलि, झलमलि रामकृष्ण घर आगले ए ॥ वमा श्री गजराजहो, मद झरत सकाजहो, का जहो हाथी साडा पाचसे ए ॥ ११ ॥ मोटा वि वीध भातहो, मोल भोमीया सातहो, सातहो छ प्पन क्रोड परीवारने ए ॥ राज मार्गने पासहो, सोव न जडीता वासहो, वासहो राय उग्रसेन कारणे ए ॥ १२ ॥ घर घर घोडा सालहो, उत्तम जाग

॥ कमला सर्व व्यापिरही, तीन लोक परसग ॥ २ ॥ कमला ब्राह्मण वाणीया, कमला अवर अशेष ॥ कमलापतिना राजमा, कमला तणो विशेष ॥३॥ यादव जगमे झगमगे, यादव जोति अपार ॥ यादवपतिनी साहेबि, चंद कला विस्तार ॥ ४ ॥

ढाल ४४ मी ॥ वंदु श्री आदि जीणंद ॥ ए देशी ॥ चद कला जिम वाधे श्री हरी तेज अपार, कारन लोपे सुरनर मानव एक लिगार ॥ श्री हरी वंस वतस कहस प्रसस अनूप, कृष्ण कृपाल के सुरीजनं दुरीजन सालस रूप ॥ १ ॥ सोमकि सीतल ताइके तेजे तपत दिणद, मेरु ज्युं धीर गंभिरके गुणे गिरुउ गोविंद ॥ सिंह अबिह सुलिहके सुरमे सुर सनूर, इद्रकिं प्रभुता प्रगटित पूरव पुण्य अंकुर ॥ २ ॥ दाता दिल दरीयाको नाम धरंत अनंत, पिण ए तिनु त्याग तणे मनं नेम वसंत ॥ परनारीने हियो ने न दिधी वैरीने पूठ, याचिकने नाकारो न किधो साहमो ऊठ ॥ ३ ॥ सव विधि सुंदर राज करंत कलेस न कोइ, नामें सुनामा नामनी गुण अभिरामा जोइ ॥ चंदमुखी अदुखी सखि सुंदर सोहे, मेलि आण अनूपके उपमनारे सदेहे ॥ ४ ॥ नेह घणेरे घडीयो विधीना घाटसुघाट, अवर सकल त्रिया साथ मथ्यो विधी फोगट माट ॥ रुप सोहागणी रागणी राजा राग असेष, पंचेंद्रि सुख माणत जाणत जन्म विसेष ॥ ५ ॥

रपीहो रतन तेज हार सुंदरुंए ॥ समुद्रविजयने वस्त्र जी, दिव्य सुररथ शस्त्रजी, खाडुहो चंद्रहास्य नामे खरुए ॥ २० ॥ यथा योग्य ते जाणीया, ते सहूए स नमानीया, मानीयाहो राजा राज कुमार तदाए॥इंद्रतणे आदेसए, ए सघलो विसेषए, किधोहो देव कुबेरे धरी मुदाए ॥ २१ ॥ राम रथे सिघारथी, हरीने दारुक सारथी, परवारथि बेसी रथ उपर भला ए ॥ पेसारो पुरमा कियो, सहूको मन हरखीत थयो, देखिहो सु दर नगरी झलामलाए ॥ २२ ॥ सुरपति साथे मिलि, करता मोहोछव मन रलि, मन रलि पधराव्या द्वा रामातिए ॥ रत्न कनक धनधानसु, वरसावे मन खांतसु, खातसु त्रण दिवस लगे गतिए ॥ २३ ॥ नर सु र असुर विद्याधरु, धनददेव अग्रेसरु, अग्रेसरु मग ल चार किया भला ए॥ किधो नृपपद अभीषेक, ह री हलधर सुविशेष, तेन पुज्य गुण आगला ए॥२४॥ भुचर खेचर राजीया, सेवकरे अति साजीया, गाजी या नगर द्वारका यदुपति ए ॥ लोक भोगवे भोग ए, सुपनातर नहि सोग ए, लोक ने आरति चिंता नहि रति ए ॥ २५ ॥ आप आपणो आचार, सहु पाले सुविच्यार, अविच्यारको नसके तिहा करीए ॥ ढाल ए त्रेंतालिसमी, गुणसागर गुरु मनरमी, मनरमी कमला केल करे खरीए ॥ २६ ॥

दुहा ॥ कमला केल करे खरी, कमला हरी अरधंग

॥ कमला सर्व व्यापिरही, तीन लोक परसग ॥ २ ॥ कमला ब्राह्मण वाणीया, कमला अवर अशेष ॥ कमलापतिना राजमा, कमला तणो विशेष ॥३॥ यादव जगमे झगमगे, यादव जोति अपार ॥ यादवपतिनी साहेबि, चद कला विस्तार ॥ ४ ॥

ढाल ४४ मी ॥ वंदु श्री आदि जीणंद ॥ ए देशी ॥ चद कला जिम वाधे श्री हरी तेज अपार, कारन लोपे सुरनर मानव एक लिगार ॥ श्री हरी वंस वतस कहस प्रसस अनूप, कृष्ण कृपाल के सुरीजन दुरीजन सालस रूप ॥ १ ॥ सोमाकि सीतल ताइ के तेजे तपत दिणद, मरु ज्यु धीर गंभिरके गुणे गिरुउ गोविंद ॥ सिंह अबिह सुलिहके सुरमे सुर सनूर, इद्रकि प्रभुता प्रगटित पूरव पुण्य अंकुर ॥ २ ॥ दाता दिल दरीयाको नाम धरंत अनत, पिण ए तिनु त्याग तणे मनं नेम वसंत ॥ परनारीने हियो ने न दिधी वैरीने पूठ, याचकने नाकारो न किधो साहमो ऊठ ॥ ३ ॥ सब विधि सुंदर राज करंत कलेस न कोइ, नामे सुभामा भामनी गुण अभिरामा जोइ ॥ चंदमुखी अदुखी सखि सुंदर सोहे, मेलि आण अनूप के उपमनारे सदेहे ॥ ४ ॥ नेह घणेरे घडीयो विधीना घाटसुघाट, अवर सकल त्रिया साथ मथ्यो विधी फोगट माट ॥ रुप सोहागणी रागणी राजा राग असेष, पंचेंद्रि सुख माणत जाणत जन्म विसेष ॥ ५ ॥

एक दिवस नारायण परखदा पूरी जाम, समुद्रविज
य राजादिक राजा वेठा ताम ॥ गगनथी उतरतो
दीठो एक सतेज, अग्नी पुन्यको को कहे सूरज तेज
सहेज ॥ ६ ॥ एटले ते यति नेमो आयो जाण्यो
जेवार, तिम ऋषिश्वर दिठो के नारद नाम उदार ॥
नारायण पगे लाग्यो के जाग्यो भरम अपार, हर्षी
ऋषिश्वरने आप पूछे सुख वारवार ॥ ७ ॥ नारद ना
रायणने पूछे प्रित प्रकार, तुम्ह पटराणि सुणि मे भ
मरीनु अवतार ॥ सो हु देखण चाहु बधव तुम आदे
श, कृष्ण कहे धन स्थानक जिहा तुम्हे करो परवेश
॥ ८ ॥ मुनि जाण्योथो भामा भामनि लागशे पाय,
भाविने वस रहि कछु उपजी इहा आय ॥ दैवने दु
खण दिजे कह्यो नर एक लिगार, होवणहार होवे स
हि निश्चे एह विचार ॥ ९ ॥ सतभामा तव आगले
मांडी दरपण सार, मनगमता रस आण्या तनुपरे
शिणगार ॥ प्रिति रूपे मोहि सोहि करे हास विलास,
आप सराहण करति के धरति अग उलास ॥ १० ॥
पाछल उभो आइ रह्यो तिहा महा मुनिराय, अंग
वभुत जटा शिर रुप विरुप देखाय ॥ मुलकि मुख
कि सतभामा भाखे मनसु ताम ॥ एक रूप ए एक
ए जोजो विधीको काम ॥ ११ ॥ मेरोतो वदन चद
के जाणी सुधारस वास, ए कोढ मुखको राहु चद
आयो पास ॥ मुह मचकोडी ऋषीनी सुभामा किधी हा

स, चाल्यो तव पिवताय नारद मन हुउ उदास ॥ ॥ १२ ॥ वानरडो अति चचल पिधो मदिरा पान, विंछूडे चटकायो के लाग्यो भूत अयान ॥ आगे नारदने हरीनारी खिजायो जोइ, खिजावणना फल लागे ते सुणज्यो सोइ ॥ १३ ॥ अणदीवाज्या जे नर नाचे नाच अपार, वाजा वाजे ते नर केमन नाचणहार ॥ अण छेड्योहि अनर्थ कारी नारद होय, छेड्यो क्यु क्यु न करे विमाशी जोय ॥ १४ ॥नारद चिंते काहु आयो इस घर आज, जे घर मान न पाइए के तिहा नही जावानो काज ॥ जइ वेठो कैलासगिरे समुदोष प्रणाम, जो ए खुणसु न काढु तो स्यो मुफ नारद नाम ॥ १५ ॥ जो अपहार करावु तो दुख पावे मित्त, जोरे कलंक चढाउ तो ए चिंता चित्त ॥ सति शिरोमणी डीन तणे वले साची थाय, आगे हि मुज वचन न माने को हरीराय ॥ १६ ॥ इम चिंतवता उपजी ए ऋषिने मनमाहि, शोक्य तणो दुख गाढो के नारीने अति प्राही ॥ चम्मालीसमी ढाल भली-नारद सुविलास, श्रीगुणसागर पुण्य तणे वले पूरे आस ॥ १७ ॥

दुहा ॥ दुसमण दाव न चूकही, वैरी न तजे वाण ॥ वेरी वाघथकी वुरो, अरति उपावे आण ॥ १ ॥ सहु साथे सुख राखीए, सहु साथे समभाव ॥ पूरो पडवो दोहिलो, जल अध विचे नाव ॥ २ ॥ भामा भमे

मूली घणु, मुझ सम नारी न कोय ॥ पिण एतो जा
एयो नही, वडा वडेरी होय ॥ ३ ॥ नारद ए निश्चे
धरयो, शोक्य तणो वड साल ॥ नारीने साथे घणु,
बिजो सहु जजाल ॥ ४ ॥

ढाल ४५ मी ॥ राम रसेरे राची घणु ॥ ए देशी ॥
सोक्य तणो दु ख अति घणो, सोक्य दहे मनमांहिरे
॥ सोक्य साल साले खरो, जावा जीवाहि प्राहिरे ॥
॥ सो० ॥ १ ॥ सोकने सुली सारखी, सुलीकाठ न्यु ए
कोरे ॥ सोक्य काठ दिसे घणो, विंधे हाड अनेकोरे ॥
॥ सो० ॥२॥ सोक्यने आग समी कही, सोक्य तणे
अधीकाइरे ॥ आग वली वुजे सही, सोक्य न सीली था
इरे ॥ सो० ॥ ३ ॥ सोकने घाव बरावरी, घाव तो
रुझी जाइरे ॥ सोक्य घाव रुझे नही, खटके कालजा
मांहिरे ॥ सो० ॥ ४ ॥ सोक शस्त्र सरीखो नही, शस्त्र
एक अग व्यापेरे ॥ सोक्य शस्त्र वहे आकरो, अ
गोअंगथी कापेरे ॥ सो० ॥ ५ ॥ सोक्य सोहाग्य वि
लोकता, सोक्य लहे दुख केतोरे ॥ जीभे न एक क
ही शके, मोटो अबर जेतोरे ॥ सो० ॥ ६ ॥ सोक्य
प्रियु सम लेखवे, आधो सुख वटावेरे ॥ नाम न जावे
सोक्यनो, परतक्ष केम सुहावेरे ॥ सो० ॥ ७ ॥ मूवा
ही पाछे वली, आणी दहत अपाररे ॥ जाणी अशा
ता आकरी कठ वहति विच्याररे ॥ सो० ॥ ८ ॥ क
रजोभी किरतारने, नारी पुकारी जाइरे ॥ नारी मतक

रजे जो करे, मतकरे एह सगाइरे ॥ सो० ॥ ९ ॥ वर दालीद्र गोरडी, वाळपणे अजीमानोरे ॥ वर पखणी व र टोरडी, पिण नही सोक्यही नामोरे ॥ सो० ॥ १०॥ ए दु:ख जाणी सोक्यनो, नारद निश्चे किधोरे ॥ जा मा उपर सोक्यनो, जाणे के विडो लिधोरे ॥ सो० ॥ ॥ ११ ॥ अढी द्वीप माहे फिरू, जिहा तिहाथी आणी रे ॥ जामा उपर जामानि, थापु हरी पटराणीरे ॥ सो० ॥ १२ ॥ श्रेणी दोय वइताढ्यनी, सोधि तिहां अजीरामोरे ॥ नारी न निरखी एहवी, जेहवी ए स तजामोरे ॥ सो० ॥ १३ ॥ उत्तर दक्षण जरतमा, फि र फिर नारी जोइरे ॥ जामा पग अगुठडे, पहुची न शके कोइरे ॥ सो० ॥ १४ ॥ उलजो दिए दैवने, रे पापीशु किधोरे ॥ रुप हतो जे नारीनो, जामाने सहू दि धोरे ॥ सो० ॥ १५ ॥ झारा फोडा पेटना, फूटता न देखायरे ॥ इम चिंतवतो आवीयो, श्री कुडनपुर मा ह्यरे ॥ सो० ॥ १६ ॥ कुडन पुरना पाणीथी, उपजे आ वि बालरे ॥ श्वेत सजावे सुदरी, दिसे झाकझमालरे ॥ सो० ॥ १७ ॥ जीषम जुपनी परखदा, आयो नारद चालरे ॥ उचो आसण माडीयो, किधी जक्ति रसाल रे ॥ सो० ॥ १८ ॥ एतले आयो रुकमीयो, कुमर कु ळ शिणगारो रे ॥ रुप कला गुण निरखता, नारद हर ख अपारोरे ॥ सो० ॥ १९ ॥ नारद पूछे रायने, ए तुह्म कुण कहावेरे ॥ प्राणथकी अति पीयारमो, नद

न नाम धरावेरे ॥ सो० ॥ २० ॥ अतर हरखि पूछि
यो, एहने वहिनड कोइरे ॥ पुज्य प्रसाद तुम्हारडे,
वहिन नलेरी होइरे ॥ सो० ॥ २१ ॥ परणावि के कु
वारीका, राजा उत्तर दिधोरे ॥ आजलगी तो कुंवारी
का, ऋषिनो कारज सिधोरे ॥ सो० ॥ २२ ॥ ऋषिने
लागी चटपटी, अतेउरमे आवेरे ॥ रलियायतमे रु
खमणी, नुवा आणि वढावेरे ॥ सो० ॥ २३ ॥ ऋषि
जी दिधी आशिसका, कृष्णा घरे पटराणीरे ॥ होजे
नाग्य विशेषथी, जूठ नहि अम वाणीरे ॥ सो० ॥२४॥
नाम सुणी हरजी तणो, रुखमणिनो मन राच्योरे ॥
गयणागण घन गाजीयो, मोर महितले नाच्योरे॥ सो०
॥२५॥ पिसतालिसमी ढालमे, नारद वंछित फलसेरे ॥
गुणसागर गुरु इम नणे, रुडे रुढो मिलशेरे॥सो०॥२३॥

दुहा ॥ रुखमणि नाखे सुण नुवा, किसी कहे ऋ
षि वात ॥ कवण कृष्ण नरेशरू, कवण पुरी विख्यात
॥ १ ॥ कवण सदेसा देसडो, कवण वस विलास ॥ क
वण ऋद्धि रुपे कवण, कवण तास परीवार ॥२॥ कवण
नाम माता पिता, कवण शु बधव जोड ॥ बधवने प
रसादडे, पोहोचे सघला कोड ॥ ३ ॥ कवण बहिन सु
हामणि, विक्रम तणो विच्यार ॥ नुवा नणे ऋषिरा
यजी, कहो सहु विस्तार ॥ ४ ॥ नारद बोल्यो गहगहृ
ह्यो, सुणो वडबाइ वात ॥ सनलावुं धुर गेहथी, कृ
ष्णतणा अवदात ॥ ५ ॥

ढाल ४६ मी ॥ इडर आंबा आंबलिरे, इडर दाडम द्राख ॥ ए देशी ॥ द्वारीकां नगरी अति भलि हो, द्वारीका कृष्ण नरेश ॥ द्वारीकां सहु मन भावति हो, द्वारीकां पुण्य विशेस हो ॥ हरजी द्वारीका केरो राय, जेहना सेवे सुरनर पाय हो ॥ ह०॥ ॥ १ ॥ देश सोरठ देशडो हो, देसांनो शिणगार ॥ रत्न पांचसु राजतो हो, शोभा अधीक उदार हो ॥ ह० ॥ २ ॥ जळ तंबोल रेवत भलो हो, द्वारीकां अधीक उदार ॥ वश श्री हरीवशजी हो, सहु वसा शिरदार हो ॥ ह० ॥ ३ ॥ वय जोवन जेहाने अछे हो, वहे जे वर नार ॥ ऋद्धि कुबेर सारखिहो, लाख वसे घरबार हो ॥ ह० ॥ ४ ॥ रुप अनूप सुहामणो हो, मदन तणो अवतार ॥ दश दशार आदे करी हो, यादवनो परीवार हो ॥ ह० ॥ ५ ॥ माता नामे देवकि हो, करमेति कहेवाय ॥ बाप भलो वसुदेवजी हो, महिमा कह्यो न जाय हो ॥ ह० ॥ ६ ॥ बधव श्री बलदेवजी हो, दिसे केइ हजार ॥ बहिन सुभद्रा शोभति हो, अर्जुन तस भरतार हो ॥ ह० ॥ ७ ॥ विक्रम शक्र तणो वहे हो, जे नहि केहने मान ॥ रिपु कुल काल कहावियो हो, गुण मणि केरी खाण हो ॥ ह० ॥ ८ ॥ बालपणे उपामीयो हो, गोवरधन गीरी तेण ॥ दुष्ट व्यतरी पुतना-हो, मारु करी हरी तेण हो ॥ ह० ॥ ९ ॥ जमना जळमे झीलता हो, ना

ध्यो कालि नाग ॥ गज जेठि मामो हएयो हो, पा
म्यो जग सोभाग हो ॥ ह० ॥ १० ॥ सायर तिरे
साधीयो हो, सायर पति सुरराज ॥ घन देवजीए सा
रिया हो, हरिना सघला काज हो ॥ ह० ॥ ११ ॥ ले
क त्रिलोका राजीयो हो, नेमनाथ जगदिश ॥ जेहने
पासे शोभता हो, अतिशय वत आधिश ॥ ह० ॥१२॥
एक जीभे केम वरणवु हो, हरीगुण पार न कोय ॥
सुर गुरु आप वखाणता हो, अत न पामे सोयहो ॥
॥ ह० ॥ १३ ॥ नारद वचन सुणिकरी हो, भुवा भ
तिजी दोइ ॥ परम माहासुख पाइयो हो, ज्ञानि जा
णे सोइहो ॥ ह० ॥ १४ ॥ भुवा भतिजीसु कहे हो,
साचि रूपीनी वणि ॥ किम साची रुख
मणि कहे हो, हु दिधी वर आणि हो ॥ ह० ॥ १५ ॥
भुवा कहे इमहि कह्यो हो, अयमतो ऋषिराज ॥ मुज
सुणता वर पूछियो हो, श्री भिषम तुझ काज हो ॥ ह० ॥
॥१६॥ साधु सीरोमणी गुणनिलो हो, अयमतो अणगा
र ॥ एह वचन नहि अन्यथा हो, सासो मत कर लिगा
र हो ॥ ह० ॥ १७ ॥ नारद अयमतो मुनि हो, सा
चा दोनु प्रकार ॥ हु वर मागी शिसुपालने हो, ए मु
झ सोच अपार हो ॥ ह० ॥ १८ ॥ तु राजा शिसुपा
लने हो, दिधी बधव देख्य ॥ मात पीता दिधी नथी
हो, ए भमीसु विसेष हो ॥ ह० ॥ १९ ॥ मात पिता
बेठा थका हो, बधव कियो न होय ॥ एह बात

राधरी हो, सोच न किजे कोइ हो ॥ ह० ॥ २० ॥ नुवातणो तो मानजे हो, साचो वचन विलास ॥ करी कृष्णनि कामनि हो, पहुचावु सहु आसहो ॥ ह० ॥ २१ ॥ मन वचन कामणासुध हो, रुखमणि केरो प्रेम ॥ कृष्ण गामी अवरा नराहो, कवण करावण नेम हो ॥ ह० ॥ २२ ॥ कल्पतरु तजी केरम्हेहो, हाथ न घाले कोय ॥ चिंतामणी तजी काकरो हो, लियो न चाहे लोय हो ॥ ह० ॥ २३ ॥ गयवर तेजी अति गाजता हो, कुण गहाडो लेत ॥ कामधेनु तजी हुजणि हो, कुण गाडर चित देतहो ॥ ह० ॥ २४ ॥ कण नांखी कुण कुसका हो, ग्रहे मुढ गिमार ॥ सीतल अम्रत जल तजि हो, कोण पिये जल खार हो ॥ ह० ॥ ॥ २५ ॥ आबो तजी कुण आवलिहो, खाइ मुरख लोग ॥ हरख तजी हियडा तणो हो, कुणसु वंछे लोगहो ॥ ह० ॥ २६ ॥ कृष्णकत तजी रुखमणि हो, किम वंछे शीसुपाल ॥ कृष्ण कधालो केसरि हो, ज सीसुपाल सियालहो ॥ ह० ॥ २७ ॥ रुखमणि राग मजिठ ज्यु हो, कृष्ण साथ सुविलास ॥ नारद उपजो जाणके हो, आयो गीरी कैलासहो ॥ ह० ॥२८ ॥ ढाल ए सेतालिसमि हो, प्रिती उपजावण नाम ॥ गुणसागर जे सांभले हो, सरे अचिंता काम हो ॥ ह० ॥ २९ ॥ दुहा ॥ रुखमणि रुप अवलोकियो, नख सिख लगी अभिराम ॥ गुपतपणे पट राखियो, प्रगट न सिझे

ध्यो कालि नाग ॥ गज जेठि मामो हएयो हो, पा
म्यो जग सोभाग हो ॥ ह० ॥ १० ॥ सायर तिरे
साधीयो हो, सायर पति सुरराज ॥ धन देवजीए सा
रिया हो, हरिना सघला काज हो ॥ ह० ॥ ११ ॥ त्रे
क त्रिलोका राजीयो हो, नेमनाथ जगदिश ॥ जेहने
पासे शोभता हो, अतिशय वत अधिश ॥ ह० ॥१२॥
एक जीभे केम वरणवु हो, हरिगुण पार न कोय ॥
सुर गुरु आप वखाणता हो, अत न पामे सोयहो ॥
॥ ह० ॥ १३ ॥ नारद वचन सुणिकरी हो, भुवा भ
तिजी दोइ ॥ परम माहासुख पाइयो हो, ज्ञानि जा
णे सोइहो ॥ ह० ॥ १४ ॥ भुवा भतिजीसु कहे हो,
साचि रूपीनी वणि ॥ किम साची रुख
मणि कहे हो, हु दिधी वर आणि हो ॥ ह० ॥ १५ ॥
भुवा कहे इमहि कह्यो हो, अयमतो रुषिराज ॥ मुज
सुणता वर पूछियो हो, श्री भिषम तुझ काज हो ॥ ह० ॥
॥१६॥ साधु सीरोमणी गुणनिलो हो, अयमतो अणगा
र ॥ एह वचन नहि अन्यथा हो, सासो मत्त कर लिगा
र हो ॥ ह० ॥ १७ ॥ नारद अयमतो मुनि हो, सा
चा दोनु प्रकार ॥ हु वर मागी शिसुपालने हो, ए मु
झ सोच अपार हो ॥ ह० ॥ १८ ॥ तुं राजा शिसुपा
लने हो, दिधी बधव देख्य ॥ मात पीता दिधी नथी
हो, ए भ्मीसुं विसेष हो ॥ ह० ॥ १९ ॥ मात पिता
बेठा थका हो, बधव कियो न होय ॥ एह वात सहु

सुदर कटिनो भाग विराजे लकथि होलाल ॥ वि० ॥ भावे करतल भाग भलो मध अकथि होलाल ॥ भ० ॥ सुडा चाच समान सोहावे नासीका होलाल ॥सो० ॥ मणि दरपण उपमान कपोले भोमिका होलाल ॥ क० ॥ ४॥ काने कुडल जोरु सोहे शिणगारथी हो० ॥ सो० ॥ रति पतिने घर एहवि न दिठि आकारथी होलाल ॥ न० ॥ देखि कृष्ण मुरार थयो मदनाकुलो होलाल ॥ थ० ॥ वाध्यो विरह विशेप अलेख उपापलो होलाल ॥अ० ॥ अहो अहो रूप निहाल चतुर गुण धारीका होलाल ॥च०॥५॥ परणिछे ए वाल के हजी कुवारिका होलाल ॥ ह०॥ कवण अछे ए जात रहे किहा वली होलाल ॥ र० ॥ नाम कवण कुण तात विचारे महा वलि होलाल ॥ वि० ॥ ६ ॥कहे कहे नारद एह सरुप तु सादरो होलाल ॥ स० ॥ सुऋशु आणि सनेह मथाइस निरादरो होलाल ॥म० ॥ देश कुरूलपुर तणि महिमा अति होलाल ॥ त० ॥ राय भीपम घरे पटराणि श्रीमति होलाल ॥ प० ॥ते हनि जाइ नामे रुखमणि गुणवति होलाल ॥ रु० ॥ रूपे रभा समान कहु उपमा अति होलाल ॥ क० ॥ भमियो भोमी अपार जीहा रवि सचरे होलाल॥जी० ॥ बिजी कोइ न नार जे एहनि सरीकरे होलाल॥जे० ॥८॥ए परणी के कुवारि हो नारद ते कहो होलाल॥ ना०॥तुरत कुमारी मूरारि ए साचु सरदे होलाल ॥ए०

काम ॥ १ ॥ राजसभा आयो घसी, कृष्ण दियो बहू मान ॥ कुशल वात पूछि खगी, नयण बतावी सान ॥ २ ॥ निर्वजन स्थानक जइ, हरी ऋषी बेठा जाम ॥ पट पसारि दिखाइयो, नारी रूप चित्राम ॥ ३ ॥ रुखमणि रूप विलोकता, विस्मय पाम्यो नृप ॥ नारद ने पूछे तदा, कवण नारीनु रूप ॥ ४ ॥ आप विधाता निरमइ, नारी निरोपम प्राहि ॥ एहवि हृइ न हू वसे, कृष्ण चिते मनमाहि ॥ ५ ॥

ढाल ४७ मी ॥ ताहरा मेहला उपर मेह, झबुके विजलिहो लाल॥ झबुके विजलि ॥ ए देशी ॥ गीरधर रुखमणि रूप, निहाले फिरी फिरी होलाल ॥ निहाले फिरी फिरी ॥ ए कुण नवलि नार, अपछरा किन्नरी होलाल ॥ अ० ॥ निरखि सुदर अग, वखाणे तेहनो होलाल ॥ व०॥ फूल्या ज्यु सुरग, चरण तल एहना होलाल ॥ च० ॥ १ ॥ मस्तक वेणि शाम के जैसि नागणी होलाल ॥ के० ॥ मुख उदय पूनम चद, के रूप सोहागणि होलाल ॥ के० ॥ नव पल्लव केसुवान, अधर रग रातडो होलाल ॥ अ० ॥ लहके लोडावे वाहके, मोह्यो जग वापडो होलाल ॥ मो० ॥ २ ॥ कठण कचुकि नाग, निलाबर खेचियो होलाल ॥ नि० ॥ देइ तवु काम, आवि जग वचियो होलाल ॥ आ० ॥ जेहवु पोयण पान, उदर तस पातलु होलाल ॥ उ० ॥ झलके सोवन वान, सोहे जेम मादलु होलाल ॥ सो०॥३॥

ग्रत वरी होलाल ॥ खा० ॥ १४ ॥ अणदिठा अनुरा ग ए उपज्यो अति घणो होलाल ॥ ए० ॥ जो जो अति सोभाग के जग रुखमणि तणो होलाल ॥ के० ॥ चित्ततो पद्मनि पास वस्यो हरी रायनो होलाल ॥ व० ॥ श्रवण सुणत उल्हास सकल सुखदायनो होला ल ॥ स० ॥ १५ ॥ रुखमणी रुखमणी नाम जपे जी हा जापथी होलाल ॥ ज० ॥ तरुफडे तनु अकुलाय के मिलवा आपथी होलाल ॥ के० ॥ ढाल चालीसने सात भली सरसि तिहा होलाल ॥ भ० ॥ गुणसागर वरबाल वेहु मिलशे इहा होलाल ॥ वे० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ एह अवसर शिसुपाल नृप, लग्न गणायो जोइ ॥ मनगमता कारज भणी, ढिल करे नही कोइ ॥ १ ॥ रुडाने चाहे सहु, ए जगनो व्यवहार ॥ पिण रुडे रुमो मिले, इहा नही कोइ विच्यार ॥ २ ॥ रुख मणि मनमा खलभली, कहे भुवासु जाय ॥ चदेरी पति आवियो, कहावे जादवराय ॥ ३ ॥ मुझ मन ए निश्चे सहि, वरु तो देवमुरार ॥ कनक कुसमनी उप मा, मन माहरा मझार ॥ ४ ॥ भुवा भतीजीसु कहे, चिंता मतकर लिगार ॥ आपणा इतने आसनो, गरु ड तणो असवार ॥ ५ ॥ कुमरी चित चिंता खरी, र खे न आवे स्वाम ॥ नयणे आसुडा झरे, मोह त णो ए घाम ॥ ६ ॥

रुखमणीना कागलनी ढाळ ॥ तट जमनानोरे अति

मांगी नृप शिमुपालने मए सुणि खरी होलाल॥ म०॥
पिण तुम्ह स्या नृपालने योग्य ए कुमरी होलाल॥ यो०
॥ ९ ॥ नारद रढ लगाइ गयो तव सचरि होलाल ॥
ग० ॥ मूरछाणोहगी राय सचेत थयो फिरी होलाल ॥
स ० ॥ एहवे कुमरी लेख लिखी नेज्यो जले होलाल
॥लि० ॥हेत जणवाण काज हरीने आगले होलाल॥ह०
॥ १० ॥ माधवे सकल उदत चतुरपणे वाचियो हो
लाल॥च० ॥पद पद अंग अनत हरख रोमाचियो
होलाल॥ह०॥ तुम विरहें मुऊ काय रहि ए खलवलि
होलाल ॥ र० ॥ नेट देइ महाराय करो हिवे सिय
लि होलाल ॥ क० ॥ ११ ॥ वाचि इम विरतत हरी
मन वेधीयो होलाल ॥ ह० ॥ नेह निवडने तत वेहु
मन सधीउ होलाल ॥ वे० ॥ हरी लिख्यु सुण बाल,
करो चिंता किसी होलाल ॥ क० ॥ करवा तुम सना
ल आवि सहु उलसी होलाल ॥ आ० ॥ १२ ॥ ला
गी चटपट चित्त चद्रानन उपरे होलाल ॥ च०॥ जीम
तनु खुल्यो साल कह्यो इम सुनरे होलाल ॥ क०॥ हलध
रे जाण्यो एम हरी उदासीयो होलाल ॥ ह० ॥ मरम
लहि सुख हेत वचन प्रकाशीयो होलाल ॥ व० ॥
॥ १३ ॥ रुखमणी लेसु जाब देसु शिसुपालने होला
ल ॥ दे० ॥ हुवो निसुणि वातके सुख गोपालने होला
ल ॥ के० ॥ नामा थइ निकाम रुखमणिरूपे
करी होलाल ॥ रु०॥ तेल न लागे मीठ खाधो जीपे

एति अवधारजोरे, राची हु तुमचेरे राग ॥ आपण ढो कारिनेरे राखो दिलजरीरे, आपीजे मुज एह सोहाग ॥ च० ॥ ९ ॥ नाइ रुखमियोरे एहेनी वातमारे, जाणे जेका एह जगदीश ॥ माहरा मनथीरे मेंतो एम आदर्योरे, जीम गौरीधर इश ॥ चद्र० ॥ १०॥ अतरजामीरे दुर दुःख त करेरे, जाणिथे आपणी लाज ॥ हिवे गोरी किजेरे निज साचापणेरे, किस्यु घणु गरीब निवाज ॥चं०॥११॥ कागलीयो तो नीनोरे लिखता आसुएरे, तेहवीज बीटीने दिध ॥ पूरव लिख्याथीरे सवध जे हुयोरे, वली मुख वचने इम किध॥च०॥१२॥

दुहा ॥ कुमरी काज समारवा लेख लिखी अभीराम ॥ दूत चलाव्यो द्वारीका, करह चढावी ताम॥१॥

ढाल ४८ मी ॥ करहला तु वेगो चालेरे, तुने चारिश अमृतवेल ॥ क० ॥ तु जाजे मारग ठेल ॥ क० ॥ ए आकणी ॥ शुभ सुकने प्रेरयो घणु, दूत कुशल अभिधान ॥ आयो नगरी द्वारीका हो, देख्या वहु मडाण ॥ क० ॥ १ ॥ अनुक्रमें आयो चालके, देवतणे दरबार ॥ प्रतिहार आगे धरीहो, किधोराय जूहार ॥ क० ॥ २ ॥ राजा पूछे कवण तु, कहे विदेशी दूत ॥ वेठो नृप आदेशथी हो, चतुराइ अदभूत ॥ क० ॥ ३ ॥ रामकृष्णने दूतए, बेठा जइ एकत ॥ लेख धरयो आगे मुदा हो, वाचे कृष्ण तुरत ॥ क० ॥ ॥ ४ ॥ कागल माड्यो वाचवा, वरणन दिसे काइ ॥

रलीयामणोरे ॥ ए देशी ॥ रुखमणीना मनमारे चिंता वली उपनीरे, हजीय न आव्यो दिनारे नाथ ॥ आतुर थइ बेठीरे लिखवा लेखनेरे, कुमरी मन हुइ अनाथ ॥ १ ॥ चंद्रगढ घेरोरे वेलेरा पधारजोरे, करो मुज अबलानी मार ॥ हुतो मामी बेठीरे आशा तुम उपरेरे, अहो प्रभु प्राणनारे आधार ॥ च० ॥ २ ॥ अरनिंद्रामा सुतारे आज मज मंदीरे रे, दिठो काइ सुपनोरे रसाल ॥ जाणयु मे सानलीयोरे आव्यो मुज परणवारे, साथे लेइ बधवनो परीवार ॥ च० ॥ ३ ॥ चोरी विचे बेठारे नाथ माहरा एकठारे, हाथे बाधी मीमलनोरे आचार ॥ आमी नजरे झाखुरे फिरी फिरी साहिबोरे, परो करी घुंघटपट उदार ॥ च० ॥४॥ इन सुपनामारे आठे पोहोर माहेरारे, जायठे काइ मिलवानी आश ॥ पिउजी उवेखिरे अलगा केम रहोरे ॥ नाखी मुने प्रेमनो पास ॥ च० ॥ ५ ॥ आज उदयथीरे दिवस सातमेरे, शुक्ल अष्टमी भ्रगुवार ॥ जान लेइ जोरे रे दावल राजीयोरे, आवशे काइ नयरी मोजार ॥ च० ॥ ६ ॥ मुज अतरनीरे साहिब मारा जाणजोरे, तुजथी काइ बाध्या ए प्राण ॥ तुम नवि आव्यारे मुज मरणो सहिरे, जावे एम जाणमजाण ॥ च० ॥ ७ ॥ करुणा किजेरे हिवे मुज वालहारे, हे जे धरी लिजेरे हाथ ॥ ते आपवसुरे किधो जग जोवतारे, वसनाहि तु केहनेरे नाथ ॥ च० ॥ ८ ॥ आसना अवलबनरे

हरीनो हेत विचारवे हो, हलधर उत्तर दिध ॥ क० ॥
॥ १६ ॥ अबला प्राण उगारवा, पुरुष तणो ए धर्म
॥ एम विमासी पूछीयो हो, मिलवा केरो मर्म ॥ क०॥
॥ १७ ॥ प्रमोद नाम उद्यानमे, कामदेवनो ठाम ॥
वृक्ष अशोक सुहामणो हो, उपर ध्वज अभीराम
॥ क० ॥ १८ ॥ ए सहि नाणी कर धरीने, गमन जा
णवा काम ॥ वेग करी पाउ धारजो हो, गुप्तपणे सु
ण स्वाम ॥ क० ॥ १९ ॥ चतुर शिरोमणी रुखमणि,
पूजानो मिस ठाण ॥ ओहि थानक चली आवशे हो,
चोरी सकलके काण ॥ क० ॥ २० ॥ जो प्रभु वयणे
निरखशे हो, तो होसे सुख प्रित ॥ अण दिठी आ
तुर थइ हो, करसे अति विप्रीत ॥ क० ॥ २१ ॥ ह
मे जणावी वात ए, कारज तो प्रभु हाथ ॥ देइ दा
न नावि सरजे हो, दूत तदा जगनाथ ॥ क० ॥ २२॥
दूत चल्यो ते वेगसु हो, आयो रुखमणी पास ॥ का
ज सरयो दु ख विसरयो हो, उपज्यो अति उल्लास
॥ क० ॥ २३ ॥ हरजी हलधर हरखसुरे, जोतरीया रथ
दोय ॥ शस्त्रतणो करी सग्रहो हो, सधनबध अति
होय ॥ क० ॥ २४ ॥ नामा जय नारे धरीरे, गुप्तप
णे निसी प्राही ॥ चाली आया उतावला हो, कुन्न
पुर वनमाहि ॥ क० ॥ २५ ॥ रथ गोमी हय वाधीया,
जोवे रुखमणी वाट ॥ फूल्या अगन मावहि हो, र
चन करे उचाट ॥ क० ॥ २६ ॥ए ढाल आठेचालीस

जिहा तिहा टबका आसुडा तणा हो, ममकयो मनमा माहि ॥ क० ॥ ५ ॥ आसुमा आदे न लिखी सकिरे, माहरे विरहे एम ॥ हु न गया ए नामनि हो, दिवस निगमशे केम ॥ क० ॥ ६ ॥ मुख वचने कहे दूतजी, सानल देव विच्यार ॥ श्री कुडनपुर राजीयो हो, नी पम नाम उदार ॥ क० ॥७॥ पटराणी तस श्रीमतिहो, तस उदरे ऊतपन्न ॥ सर्व सुलक्षण गुणवति हो, रुख मणि कुमरी रतन ॥ क०॥८॥ सुरलोका सोधी घणु, मा णस लोक मझार ॥ पाताला पामि नहि हो, रुखम णिनि अनुहार ॥ क० ॥ ९ ॥ मागी नृप शिसुपालने, बधव लहि बहु मान ॥ एतले नारद नाखियो हो, वरतो श्री नगवान ॥ क० ॥ १० ॥ माघ शुक्ल अ ष्टमि दिने, लग्न लियो राजान ॥ कांतो थाउ प्रजु वा हरू हो, कातो तुटे प्राण ॥ क० ॥ ११ ॥ प्रजुने उ पनि सोचना, ए मोटो जजाल ॥ न गया मरणो रु खमाणि, गया मरे सीसुपाल ॥ क० ॥ १२ ॥ मार्ग न मेले मानविरे, ना नाहीए न्याय ॥ नारी प्रतिज्ञा नवि तजेहो, कहो किसी परे थाय ॥ क० ॥ १३ ॥ कुशल कहे तुम्हाहि आगे, अतरजामी आप ॥ सोइ करो जीम एहि मिटेहो, रुखमणीनो संताप ॥ क०॥१४॥ सिखे ते तुमाहि थकीरे, तुम्ह किहा शिखण जाउ ॥ सोच्यो सल बेसे नहीहो, एम मतो ठहराउ ॥ क० ॥ ॥ १५॥ हलधरने हरी पूछीयोरे, दुत कहो शु किध ॥

म हो ॥ ना० ॥ च० ॥ ६ ॥ एम कही ऋषी पागर्यो
रंगमाहि करी नग हो ॥ ना०॥ जगत माहि अति प्र
गटो, ए कु सेहेजो अग हो ॥ ना० ॥ च० ॥ ७ ॥
शिसुपाल हिवे जाननी, करे सजाइ जोर हो ॥ ना०॥
वद टकोरा गडगडे, गुहिर निसाणे घोर हो ॥ ना०॥
च० ॥ ८ ॥ साथे सबला राजवी, जोर जुगति झूझा
र हो ॥ ना० ॥ हयगय रथ पयदल तणा, कहेतां ना
वे पार हो ॥ ना० ॥ च० ॥ ९ ॥ को कबाण आगे कि
या, तोफारो नहि हो पार ॥ ना०॥ झूजाला साथे लिया,
साथीडा सिरदार हो ॥ ना० ॥ च० ॥ १० ॥ सलकर
मिलीउ सामटु, पचक्षोणी परमाण हो ॥ ना० ॥ हय
दल पयदल गज घणा, मिलीया आप समान हो॥ना०
॥च० ॥ ११ ॥ सकल सनाह सजी करी, हयगय र
थ परीवार हो ॥ ना० ॥ राजा रुक्मे रावणे, आयो हो
इ हुसीयार हो ॥ ना० ॥ च० ॥ १२ ॥ कुन्दनपुर विं
टी रह्यो, तारा जिम गिरि मेर हो ॥ ना०॥ अहि जिम
चदन तरूवरा, विंटाणा चौफेर हो ॥ ना०॥ च०॥१३॥
राजाना बेसी गया, दरवाजे दरवान हो ॥ना०॥ आवाग
मन न होइ सके, कुमरी दु ख असमान हो ॥ ना०
॥ च० ॥ १४ ॥ जुवा जलीपरे मेलवे, पूजा तणा प्र
कार हो ॥ ना० ॥ मगल गीत सुछदसु वाजे नाद
अपार हो ॥ ना० ॥ च० ॥ १५ ॥ पाच सात साहे
लीया, अलबेलीया उदार हो ॥ ना० ॥ चाली जाये

मी, हरी आयो त्रिय हेत ॥ गुणसागर गुरु इम भ
णे हो, शुभ वगीत फल देत ॥ क० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ नारद नाम प्रणामथी, नारद सोचन को
इ ॥ साजो भाजन फोडके, फेर घडतो जोइ ॥ १ ॥
अणमिलते मेलो करे, मिलते करे विकार ॥ ज्ञान विना
नवि जाणीये, नारद चरित्र अपार ॥ २ ॥ रुखमणी म
न हरी भाणीयो, हरी मन रुखमणी नार ॥ चदेरी
पतिसु जइ, बोल्यो कवण प्रकार ॥ ३ ॥

ढाल ४९ मी ॥ नणदलनी देशी ॥ हो नारद, च
देरी पतिसु कहे, मे सुण्यो तुमरो विवाह हो ॥ ना० ॥
घर घर रग वधामणा, तुझ मन अधीक उगाह हो
॥ ना० ॥ च० ॥ १ ॥ कलहकारी जनमारणो, मन वच
न योग समपाप हो ॥ ना० ॥ साधा जोडा मेलवे, करे
अधिक सताप हो ॥ ना० ॥ च० ॥ २ ॥ हसी बो
ल्यो सिसुपालजी, स्वामी तुम प्रसाद हो ॥ ना० ॥
रग व्याह हम ए हुसे, बिजा व्याह सोवाद हो॥ ना०
॥ च० ॥ ३ ॥ कवणपुरी किणकी सुता, किस्यो कुमरी
को रुप हो ॥ ना० ॥ कुन्दनपुर भीषम सुता, रुखमणी
रूप अनूप हो ॥ ना० ॥ च० ॥ ४ ॥ कवण लग्न ते
व्याहको, लग्न देखायो राय हो ॥ ना० ॥ ऋषि भा
खे दूषण घणा, इहा उपद्रव थाय हो ॥ ना० ॥ च०
॥५॥ हम निसप्रही दरवेसनी, नही, ग्रह चिंत्या काम हो
॥ ना० ॥ प्रिती भणी तुमसु कहुं, हुसीयारीको का

ख हो ॥ ना० ॥ एकाते आराधता, आपे देव विशेष हो ॥ ना० ॥ च० ॥ २६ ॥ जा पुत्रि उतावलि, पूरे मनोरथ कोम हो ॥ ना० ॥ सेव घणि नीज स्वामीनि, करजे बे करजोड हो ॥ ना० ॥ च० ॥ २७ ॥ स्वामी सेव्यने पाइए, अणसेव्यो अति दूर हो ॥ना० ॥ एह सिख मनमे धरी, रहेजे स्वामी हजूर हो ॥ ना० ॥ च० ॥ २८ ॥ एम सुणि वनमे चलि, जय अति हियरा मझार हो ॥ ना० ॥ युग्म भ्रष्ट जिम हरणली, जोवे दृष्टि पसार हो ॥ ना० ॥ च० ॥ २९ ॥ दृढ थामे आवि साते, तरु अतर जरी नेयण हो ॥ ना० ॥ निरखता प्रभु पाइयो, अधीक महा सुख चयन हो ॥ ना० ॥ च० ॥ ३० ॥ ए गुणपचासमि ढालमे, मिलियो तंतोतंत हो ॥ना० ॥ गुणसागर कुण लिखी शके, हरिके चरीत्त अनत हो ॥ ना० ॥ च० ॥ ३१ ॥

दुहा ॥ रुखमणि वचन प्रकाशियो, हो त्रिभुवनना नाथ ॥ अतरजामी आसना, आइ ग्रहो मुज हाथ ॥ १ ॥ एटले हरी परगट थयो, श्री बलदेव नरेस ॥ लज्जा पामी रुखमणी, मनमा हरख विशेस ॥ २ ॥ बाहे धरी सा सुदरी, वेसारी रथ माहि ॥ आप जणावण कारणे, इम बोल्यो हरी प्राहि ॥ ३ ॥

ढाल ५० मी ॥ कडखानि देशी ॥ सुण हो शिसुपाल नृप भीषम सुत रुखमीया, जाणवा तुमने सुणावा ॥ द्वारिकानाथ श्री कृष्ण हलधर इमे, रुखम

रंगमें, रोकाणी दरबार हो ॥ ना० ॥ च० ॥ १६ ॥
चाकर ठाकर विनवे, कुमरी वनमे जाय हो ॥ ना० ॥ जा
ण न पावे इम कहे, चंदेरीनो राय हो ॥ ना० ॥ च०
॥ १७ ॥ भुवा भणे भाइ सुणो, कहो रायने जाय
हो ॥ ना० ॥ तुम्ह तनमन सुख कारणे, एह अभि
ग्रह थाय हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ १८ ॥ चंदेरी पति व
रपणे, जइ देसे तु देव हो ॥ ना० ॥ लग्न तणे दिन
आयके, करस्यु थारी सेव हो ॥ ना० ॥ च० ॥ १९॥
कामदेव मुरति तणी, पूजा करवा जाय हो ॥ ना० ॥
अणपूज्या नही परणवो, जइ सुणावो राय हो ॥ ना०
॥ च० ॥ २० ॥ कपटतणो बल अति घणो, कपटे व
शीत थायहो ॥ ना० ॥ विष्णुरुप कोलिक सुत, राय कुम
री वरे जाय हो ॥ ना० ॥ च० ॥ २१ ॥ एह वचने रा
जा कह्यो, काम करो ततकाल हो ॥ ना० ॥ प्रवल जो
र भावी तणो, किस्यु करे सिसुपाल हो ॥ ना० ॥ च०
॥ २२ ॥ नृप आदेस लेइ करि, सेवक लाग्या लार
हो ॥ ना० ॥ वनद्वारे ऊभा करी, बाइ कहे सुविच्या
र हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ २३ ॥ आपण सहु इहां रहो,
कुमरी वनमें जाय हो ॥ ना० ॥ एकाकी निज स्वाम
नी, सेव करे मनमाय हो ॥ ना० ॥ च० ॥ २४ ॥ पहे
लो वर एह वातनो, बिजो पिउनो मान हो ॥ ना० ॥
त्रिजो सोकन परभवे ॥ चोथो पुत्र प्रधान हो ॥ ना०
॥ च० ॥ २५ ॥ नारि मनना वालहा, एच्यारे वर दे

॥ सु० ॥ ९ ॥ उदधी किलोल दल पसरीयो चिहु दिसे, रे रे गोपाल किहां जाय भाग्यो ॥ नृप शिसुपाल कुवर वर रुखमीयो, इम कहेतो प्रभु पुठे लाग्यो ॥ सु० ॥ १० ॥ आवता दल हरि हलधरे रोकिया, नदितना पुर जिम उदधी रोके ॥ फोज बाधी रह्या सुभट अति गहगह्या, पिण कहो सिंहने कुण रोके ॥ सु०॥ ११॥ देखि दल पूर घटि नूर रुखमणि हुइ, आरति उपजि एह अपारो ॥ एह घणो रावणो अधीक विहामणो, एह तो बधव दोइ सारा ॥ सु० ॥ १२ ॥ कठिन घन लोह तन लोक माहि भण्यो, पिण वहु मिले जो लीहाला॥ गालवे लोहनें एह अचरिज वडो, एम जाणी थरहरी एहि बाला ॥ सु०॥ १३॥ कृष्ण बोले हम कोण तोले अछे, घणी थोमा तणो स्यो पथारो॥ रातनो संचियो अति घन माचियो, उगंते सूर नासे अधागे ॥ सु० ॥ १४ ॥ तोइ पिण शक जाइ नहि रुखमणी मुद्रडि वज्र हरी तामचूरे॥ करी अति चून पडी पुन चिपटि करी, साथीयो हाथ माहेज पूरे॥ सु०॥ १५॥ एक बाणे करी विंधीया तव हरी, ताड साते त्रियाने दिखावे॥ तव अति खलभलि एह अतुलि वलि, मारसे सहि मुज बाप भाइ ॥ सु० ॥ १६ ॥ कृष्ण बोल्यो हसी एह चिंता कीसी, ताहरो बाप भाइ नवि मारू ॥ अवगुण सा सहु अवर केति कहू, बूरो न मनावसु देवि थारु ॥ सु० ॥ ॥ १७ ॥ हलधर इम क

णि कुमरि लेइ सिधावा ॥ सु० ॥ १ ॥ अवर जे सु
भट अति विकट बल धारके, जोध जे जगतमें रह
तदावे ॥ आवियो धावियो वेग करि पाछले, माग
धारि हम साथ्य आवे ॥ सु०॥२॥ एम सुणता शिसु
पाल नृप परजल्यो, अग्नी जाणे घृत होम पायो ॥ सेन
दल सबल अतिप्रबल प्रतापसु, आप बल प्रबल लेइ
धायो ॥ सु०॥ ३ ॥निपम राय अति लाज पाम्यो घ
णि, रुखमियो कुवर जिम काल कोप्यो ॥ उठियो व
समसी धरणि तव कसमसी, दसमसी आगले आणि
रोप्यो ॥ सु० ॥ ४ ॥ गडगडे गयवर हिंसता हयवर,
वीर रथ शोभ अभ्रकेरो पावे ॥ पायक लायक काज स
हायक, नायक नव जस काज धावे ॥ सु० ॥ ५ ॥ ढा
ल नेजा वरा फरहरे फरहरा, बगतर तोफ तब तेज
झलके ॥ आयुधकारका जे बत्रिस स्वयवरा, झलहले
खग्ग अतिसय चलके ॥ सु०॥ ६ ॥ ढोल निसाण स
रणाइ वर काहला, झुझको राग सिंधु सुणावे, काय
र थरहरे जीव-आशा धरे, परहरी स्वामि परहापलावे
॥ सु० ॥ ७ ॥ रेणु उडी घणी गयण रवि-ढाइयो,
आपणो पर नवि जाय जाणयो ॥ देव देवी घणी च
उसठ जोगणी ॥ अबरे, आप सुख आज मान्यो ॥
॥ सु० ॥ ८ ॥ नाचतो नारद फिरत रस रगमे, अग
मे आनद अधीक पावे ॥ खिणक सिसुपाल नृप खि
णक हरी हलधरा, बाप म्हारा-इम-काहि सुणावे ॥

दैन भगवानजी, साधुपरे त्राण ए श्रीदलिको ॥ श्री गुणसागर अधीक उजागर, नागर नवलजस सुजस टिको ॥ सु० ॥ २८ ॥

दुहा ॥ रुखमणी रिंझी अति घणी, देखी जेठ पति काम ॥ एह अदभुत पराक्रमी, अवर पुरुष स्यो नाम ॥ १ ॥ करजोमीने विनवे, पिउजी केरे पसाय ॥ बधव बधज छोडीए, माहरे मन ए भाय ॥ २ ॥ बंधन छोड्यो हाथसु, कृपा करी जगनाथ ॥ सुजन पणे अति राखज्यो, प्रिती भाव हम साथ ॥ ३ ॥

ढाल ५१ मी ॥ रघुपतिजीत्योरे ॥ ए देशी ॥ यदुपति जीत्योरे, जीत्यो जीत्यो श्री वसुदेव कुमार ॥ ॥ यदु० ॥ जीत्यो जीत्यो रुखमणीनो भरतार ॥ य० ॥ जीत्यो जीत्यो बाइ सुभद्रानो वीर ॥ य० ॥ जीत्यो जीत्यो साहसवत सधीर ॥ य० ॥ जयजयकार करे घणो, आकाशे सुरनार ॥ देइ ददामा जीतनाहो, चाल्यो देवमुरार ॥ य० ॥ १ ॥ श्रीगीरनारे आवीया, मननें अति उछाह ॥ आरण कारण साचविचो हो, कियो रुखमणी व्याह ॥ य० ॥ २ ॥ व्याह हुउ जेह थानके, रुखमणी वन तस नाम ॥ सघलि मोटा मा णसा हो, सवहीपरे अभीराम ॥ य० ॥ ३ ॥ खबर हुइ द्वारानति, परणी आवो नाथ ॥ सजन सुजटजन सामटा हो, आइ मिल्या सहु साथ ॥ य० ॥ ४ ॥ नगरीनी शोभा करी, आणो भात अनूप ॥ घरघर वार वधामणा

हे कुण मुझ बल सहे, पिण सिसुपाल नृप मारयो न जा य ॥ अवरने आगसु रग रणमे रमु, अति दमु सा हमो तु जेह थाय ॥ सु० ॥ १८ ॥ कहे हरी केसरी खाग उचो करी, कुण सिसुपाल सियाल साचो ॥ र ण माहि रोलवु पवन तृण डोलवुं, तो जाणजो पितु दुध काचो ॥ सु० ॥ १९ ॥ इम रुखमणि मूकि वेरी नणि आविया, दोइ बधव रण माहि सनूरा ॥ कृष्ण सिसुपाल असराल क्रोधे चढ्या, नटनि ज्या आप आप माहि सूरा ॥ सु०॥२०॥ श्री बलदेव ततखिण रण रोसे चढ्यो, वरू वडा राय जाइ पुलाणा, सिंहकि दोरू गजरा ज गिर गिर परे, आकतां प्राण ठेमि खलाणा ॥ सु० ॥ ॥ २१ ॥ सेन दल भग रणतरग देखि करी, रुखमीये ब लभद्रप्रति बाण साध्यो ॥ वज्र काया नणि बाण लाग्यो नहि, नागपासे करी सोइ बाध्यो ॥ सु० ॥ २२ ॥ न खशीखे जखडीयो गाढो करी पकडियो, अकडीयो अंग मिट गयो दावो॥आणि रथमे धरयो वयण इम उचरयो, कुल वहू नाइ माखि डमावो ॥ सु० ॥ २३ ॥ कृष्ण सि सुपाल चिरकाल रण साचव्यो, अस्त्र शस्त्रकरी माहो माहि ॥ जितीयो इस-जगदिस-जग जल्पना, पुण्य प्र सादे जय हुवो प्राही ॥ सु० ॥ २४ ॥ दोय वरू विर अति धीर गभिररण करी, रुखमणि तणे पास आया ॥ ढाल करूखातनी सुणत सुहामणी, तिस अरु वि समी हरष पाया ॥ सु० ॥ २५ ॥ पिसुन मद मान म

नव खणो, अधीक अनोपम सार ॥ रुखमणिने हरि आपियो हो, अन धन नरित अपार ॥ य० ॥ १७॥ हय गय रथ वर वाहणि, आयुध विविध प्रकार ॥ हरि आनुपम अति घणा हो, ते घर नाहि उदार ॥ य० ॥ १८ ॥ दास अने दासि तणो, बहुलो तस परीवार ॥ स्वामी मयाथी सहु हुवे हो, ए सुधो व्यवहार ॥ य० ॥ १९ ॥ स्नान अने जोजनपणे आसन सयन विचार ॥ हसन विलोकन नांखणो हो, रुखमणिनो अवीकार ॥ य० ॥ २० ॥ मनसा ने वाचाये करी, काया केरो तेम ॥ खीर नीर जीम मिलि रह्यो हो, श्री हरी रुखमणि प्रेम ॥ य० ॥ २१ ॥ दक्षणश्रेणि जवुपुरी, जावु पुत्रि जाण ॥ जवुवति रुपि वाक्यथि हो, आणि श्री नगवान ॥ य०॥ २२ ॥ ततक्षण रोमज राजियो, सघला नायक जोइ ॥ लखमणा नामे कुवरी हो, परणि श्री हरी सोइ ॥ य० ॥ २३ ॥ राष्ट्रवर्धन रायजी, सोरठ केरो इस॥सुसिमा पुत्रि वरि हो, वधव हणी जगदिश ॥ य० ॥ २४ ॥ सिंधु देशनो स्वामीजी, मेरु जून वड राय ॥ पुत्रि गौरी गुणभरी हो, गीरधरने सुखदाय ॥ य० ॥ २५ ॥ हलधरनो मामो नरो, हिरण्य नाम नरेश॥पुत्रि सो पद्मावति हो, स्वयवर वरीय विशेस ॥ य० ॥ २६ ॥देश महा गधारजी, इन्द्रगीरी पति तास ॥ पुत्र मागी पुत्रि वरी हो, गधारी सोल्हास ॥ य० ॥ २७ ॥ ए आठे पटराणि, ए

हो, हरख्या यादव नृप ॥ य० ॥ ५ ॥ कोइ हटाले उग्डे, कोइ आगणे अपार ॥ गोखे चढी कोइ गोर डीहो, को चातुरी चोवार ॥ य० ॥ ६ ॥ को गलीए को चोतरे, चाचर उभी कोइ ॥ लाजन गुसरा जेठकिहो, कोतुक मीठो होइ ॥ य० ॥ ७ ॥ विंद विटणी देख वा, लालच लागी नार ॥ होइ रही बेफूमताहो, तन मन सुधन विसार ॥ य० ॥ ८ ॥ अचारिज किधा ए तला, चुपावध उदार ॥ केडे पेहेरयो कटीमेखलाहो, माथे करत सिणगार ॥ य० ॥ ९ ॥ कुकुम लाया लोच ना, काजल दियो कपोल ॥ उघाडे माथे फिरेहो, नि र्लज थइ निटोल ॥ य० ॥ १० ॥ पुत परायो लेचली, आपरो वतो मेल ॥ अलजा लगे आधी धसेहो, एक एकने टेल ॥ य० ॥ ११ ॥ कोइ वधावे फूलडे, कोइ हिरालाल, मणी माणिकने मोतीया हो, अक्षत थाल रसाल ॥ य० ॥ १२ ॥ कोइ वदे वरकामनी हो, धन रुखमणी अवतार ॥ सब विध सुदर सामलो हो, जे ह पाम्यो भरतार ॥ य० ॥ १३ ॥ अवर अनेरी भा मनि हो, भाखे वारवार ॥ वडवखता श्री कृष्णजी हो, पामि नार उदार ॥ य० ॥ १४ ॥ विविध विनोद वि चारनि, वात सुणता स्वामी ॥ सोहासण कत मगले हो, मदिर आया ताम ॥ १५ ॥ धन्य धन्य माता दे वकि, वर वहु लाग्या पाय ॥ दिये आसिस सुहामणि हो, फूलि अग न माय ॥ य० ॥ १६ ॥ मदिर ऊंचो

नव खणो, अधीक अनोपम सार ॥ रुखमणिने हरि आपियो हो, अन धन नरित अपार ॥ य० ॥ १७॥ हय गय रथ वर वाहणि, आयुध विविध प्रकार ॥ हरि आनुपम अति घणा हो, ते घर नाहि उदार ॥ य० ॥ १८ ॥ दास अने दासि तणो, बहुलो तस परीवार ॥ रुगमी मयाथी सहु हुवे हो, ए सुधो व्यवहारे ॥ य० ॥ १९ ॥ स्नान अने भोजनपणे आसन सयन विचार ॥ हसन विलोकन भांखणो हो, रुखमणिनो अवीकार ॥ य० ॥ २० ॥ मनसा ने वाचाये करी, काया केरो तेम ॥ खीर नीर जीम मिलि रह्यो हो, श्रीहरी रुखमणि प्रेम ॥ य० ॥ २१ ॥ दक्षणश्रेणि जवुपुरी, जावु पुत्रि जाण ॥ जवुवति रुपि वाक्यथि हो, आणि श्री भगवान ॥ य०॥ २२ ॥ ततक्षण रोमज राजियो, सघला नायक जोइ ॥ लखमणा नामे कुवरी हो, परणि श्री हरी सोइ ॥ य० ॥ २३ ॥ राष्ट्रवर्धन रायजी, सोरठ केरो ईस॥सुसिमा पुत्रि वरि हो, बधव हणी जगदिश ॥ य० ॥ २४ ॥ सिंधु देशनो स्वामीजी, मेरु भूप वड राय ॥ पुत्रि गौरी गुणभरी हो, गीरवरने सुखदाय ॥ य० ॥ २५ ॥ हलधरनो मामो जचो, हिरण्य नाम नरेश॥पुत्रि तो पद्मावति हो, स्वयवर वरीय विशेस ॥ य० ॥ २६ ॥ देश महा गधारजी, ध्रुगीरी पति तास ॥ पुत्र मारी पुत्रि वरी हो, गधारी सोल्हास ॥ य० ॥ २७ ॥ ए आठे पटराणि, ए

आठे समतोल ॥ ए आठे मित्र नामनि हो, एआठे निरमोल ॥ च० ॥ २८ ॥ ए एक्रावनमी ढालमे, वलि त फलि जगीश ॥ श्री गुणसागर सुरिजी हो, पुन्य क रो निशदिश ॥ च० ॥ २९ ॥

चोपाइ ॥ खड खड रस हे नव नवा, गुणना मीठा साकर जेवा ॥ श्री हरीवंश चरित्र जय जयो, बीजो खड ए पूरो थयो ॥ १ ॥ इति द्वीती खडसमाप्त ॥

॥ श्री हरी वंस ढाळसागर ग्रन्थे त्रीतीय खंड प्रारम्भ ॥

दुहा॥अरि हणवे अरिहतजी, तास करी परणाम ॥ अब त्रिजा अधीकारनो, उद्यम करु सकाम ॥ १ ॥ रुखमणी रागे राचियो, सुख माने हरी राय ॥ तिम तिम भामा आवटे, ते दुःख कह्यो न जाय ॥ २ ॥ नारद आवि बोलियो, भामासु ततखेव ॥ वाल्यो मुख किया तणो, ए फल भोगव देह ॥ ३ ॥ तिम तिन सा गाढि वले, आरति घणि मन माहि ॥ सोक्य सा ल हियडे घल्यो, ते उतरे नाहि क्याहि ॥ ४ ॥ उत्तम उत्तमता भजे, न करे ताणो ताण ॥ रुखमणी हरिसु विनये, भामा आराति जाण ॥ ५ ॥

ढाल ५२ मी ॥ श्री श्री मंदिर साहिब मोरा ॥ ए देशी ॥ एक दिवस रुखमणी हरि साथे, किधी ए अ रदासोरे ॥ भामा घर प्रीतम पाव धारो, सहुने पिउ नि आशोरे ॥ ए० ॥ १ ॥ कृष्ण कहे ए सा अहकार

णि, तेहथी न लहे मानोरे ॥ ते सोनो सुं करवो सुं
दरी, जेहथी त्रुटे कानोरे ॥ ए० ॥ २ ॥ रुखमणी बो
ले अमृत तोले, यद्यपी जो त्रुटे कानोरे ॥ तोपिण सो
नोकोई न नाखे, ए प्रगट उखाणोरे ॥ ए० ॥ ३ ॥ आ
पण आदरीयु केम अलगु, किधु जाइ कलोरे ॥ विष
अने विषधर दुखदाइ, शंकर संग वसतोरे ॥ ए० ॥
जोगवणो जग खाटु खारु, जेतो लाग्यु लारोरे ॥ उ
मा आगे नहि नहि भाखे, शिव साता दातारोरे ॥
॥ ए० ॥ ५ ॥ नोतन हिरो लाल नगीनो, नोतन नारी
निरखिरे ॥ जोरे पुरातनने परहरीये तो ए नहि घर
सरखीरे ॥ ए० ॥ ६ ॥ आग थकि अधिको अति उ
न्हो नारीनो निसासोरे ॥ नाह नीपटनी तेह पण त्रि
य, तजवी नही नीरासोरे ॥ ए० ॥ ७ ॥ वेगे सिधावो
वार म लावो, पोखो परीघल प्रेमोरे ॥ जो न
गया तो तुम्हसु बोलण, आज थकी मुज नेमोरे ॥ ए० ॥ ८ ॥ रुखमणी वेचने राय विच्यारी,
वात सकलहि वारुरे ॥ निर नरेसरे न्याय क
हाणा, फेरणहारा सारुरे ॥ ए० ॥ ९ ॥ रुखमणि
मुखनो सुरभी सुगधो, लेइ तंबोल नरिंदोरे ॥ भामा
भामनिने घरआयो, भामा मन आणंदोरे ॥ ए० ॥
॥ १० ॥ वक्र वचनसु भामा भाखे, ए तुम्ह गेह न
होवेरे ॥ भूलें पधारया प्रथविपति तुम्हे, रुखमणि
मारग जोवेरे ॥ ११ ॥ कृष्ण कहे हा उ घर नोहि, पि

ए आयो सो आयोरे ॥ नर्मसु गर्म वचन केलवता, चाना अति सुख पायोरे ॥ ए० ॥ १२॥ कृष्ण कहे तुझ निद्रा आवे, एतो मे धूर जाणिरे॥ सोवा कारण हम घर आया, उ नव परांणत राणिरे॥ए० ॥ १३॥ जिम जिम आवो नीत नीत आवो, सुख निंद्रा प्रभु किजेरे ॥ हमे पुरातन उतो नोतन, नव नव लाहो लिजेरे ॥ ए० ॥ १४ ॥ कृष्ण कहेरे तु इम शुं बोले, नवि घणेरी नारीरे ॥ तु महारे धुरकी पटराणी, आदि लगे सुविचारीरे ॥ ए० ॥ १५ ॥ कपट निदमें प्रभुजी पोढ्यो, अचल गाठ निहालीरे ॥ खोलीलियो तबोल तेवारे, भ्रमे भुली सा बोलीरे॥ ए० ॥१६॥ उर सीए मूकी चदन साथे, घसी लियो सतभामारे ॥ करे विलेपन वदन शरीरे, वशीकरण अभीरामारे ॥ए० ॥ १७ ॥ एतले जागी उठ्या जगपति, रे भोली भर माणीरे ॥ रुखमणी मुख तबोल शरीरे, तु दिसे लप टाणीरे ॥ ए० ॥ १८ ॥ हांसो कृष्ण तणो न समावे, हाथे वजावे तालीरे ॥ होइ खिसाणी हरी पटराणी, बोले उत्तर वालीरे ॥ ए० ॥ १९ ॥ थारो सेहज न गयोरे गोवालीया, स्यु वम्राय कहायोरे ॥ प्रीती पनोती काजे आज, ए जाणी बुझी तनलायोरे ॥ ए० ॥ ॥ २० ॥ कृष्ण कहे हा तो तुं साची, पुनरंपी भागा भाखेरे ॥ रुखमणी मिलवा तणो उमाह्यो, पिजम्हा जो दिन दाखेरे ॥ ए० ॥ २१ ॥ नृप भणे हु तुझ न पति

ज्यू, के साची के झुठीरे ॥ झुठ कहे झुठाना जाया, जाणी के अधिको उठीरे॥ए०॥२२॥ सुलकत मुलकत तान मुरारी, माननीनु मन मोहेरे ॥ ए नव हीथि रीस करेवि, सुंदरी शु सति सोहेरे ॥ ए० ॥ २३ ॥ सुस करे जो बाबाजीका, कपट न करवो कोइरे ॥ खिरानिर जिम मांहोमाहे, मिलस्या वहेनड दोइरे ॥ ए० ॥ २४ ॥ तो हु तुझने रुखमणी मेलु, भामा कहे ए नीकीरे॥खिसाणी पिण हुइ अयाणी, न गिणंणी प्रभुकीकिरे ॥ ॥ ए० ॥ २५ ॥ कृष्ण देव रुखमणी घर आया, भामा पाय लगावारे ॥ कुण उपाय करे करमे तो, लागो चाउ सुणावारे ॥ ए० ॥ २६ ॥ स्वेत साटीकारक काचली, भल भुषण पाहिरायोरे ॥ वृक्ष अशोक तळे भाना वन, पद्मासन पूरायोरे ॥ ए० ॥ २७॥ भामा शु भाखे भल भावनि, सही करी रुखमणी मिलसेरे॥ कृपानाथ कृपा जो करशो, दुवे साकर भलसेरे ॥ ए० ॥ २८ ॥ आप गुल्ममें गुप्तपणे रही, कौतुक जोवे जाओरे॥सतभामा एकाकी रामा, वनमे आवि तामोरे ॥ ए० ॥ २९ ॥ पद्ममीला उपर सा वइठी, दिठी रूप रसालीरे ॥ सतभामा जाणी वनदेवी, लागी तनमन तालीरे ॥ ए० ॥ ३० ॥ के अमरी के किन्नरी सारदा, रोहीणी रति जगजाचीरे ॥ कमला नाग तणी वरकुमरी, सुरपति रमणी साचीरे ॥ ए० ॥ ३१ ॥ कोइ होज्यो ए देवि परतक्ष, पुण्य जोगे प्रगटाणीरे ॥ से

वा फल देसे इम जांणी, लात्री पाती पाणीरे ॥
॥ ए० ॥ ॥ ३२ ॥ पूजी प्रणमीने वर मागे, माधव
मो वश आवेरे ॥ मात मया करशो परकिजे, रुखम
णीना मन नावेरे ॥ ए० ॥ ३३ ॥ नाथ्रा बेलतणी
परे चाल्यो, हरी आवे मुज पासेरे, तो तुम सेवा
जाणु साची, उनथी अलगो नासेरे ॥ ए० ॥ ३५ ॥
एम कही पगे लागी नामा, करती लालच लखोरे
॥ अरथी दोस न देखे कोइ, सहुने सुख अभि ला
खोरे ॥ ए० ॥ ३५ ॥ ए वावनमी ढाले नाख्यो, पगे
लागण अधिकारोरे ॥ गुणसागर कहे माही सोहागण,
जेहने वश नरथारोरे ॥ ॥ ए० ॥ ३६ ॥

दुहा ॥ नामा नरमपडी घणु, नाखे वारवार ॥
देवि वरदे वेगशु, रुखमणी आवणहार ॥ १ ॥ आ
ख नरे आतुर थइ, देवी न आपे वाच ॥ एतले हरी
परगट थयो, माग माग वर साच ॥ २ ॥

ढाल ५३ मी ॥ सीयल सुर तरुवर सेविए ॥ ए
देशी ॥ माग्य माग्य वर माननी, अवर न एहवी दे
वि हो ॥ जो चाहे सुख सपदा, सुधी एहने सेवि हो
॥ मा० ॥ १ ॥ इरी हरणाक्षी शु कहे, तजी बिजो न
जाल हो ॥ रुखमणी रागे राचतां, सघळी वात रसा
ल हो ॥ मा० ॥ २ ॥ उठी ततक्षण तारणी, रुठी मार
णहार हो ॥ अन्नर न देवी एहवी, जेहवी एह वरनार
हो ॥ मा० ॥ ३ ॥ क्रोध न किजे, कामनी, क्रोधे होय

विणास हो ॥ क्रोध तजी एधावता, पूरेम ननि आश हो ॥ मा० ॥ ४ ॥ नामाजरी वडवके, उठी अति वरडाय हो ॥ रे रे धूरतासि रोमणी, वादे हस्या शु थायहो ॥ मा० ॥ ५॥ ए पर देशण प्राहुणी, सगो न को कहेवाय हो ॥ जो हुं मन खेची रहु, फाटी हियो मरी जाय हो ॥ मा० ॥ ६ ॥ ते माटे पगे लागीने, मे दिधो सनमान हो ॥ नंद नंदन तु मोहशुं, मेलण लागो तान हो ॥ मा० ॥ ७ ॥ जे नर बाहिर सामला, मनमा मइला सोइ हो ॥ दुमुहा माणस माणसा, माहि गणे नहिकोइहो ॥ मा०॥ ८॥ उदर वस्यो जव मायने, तबहीथी परपच हो ॥ उप जीवाथी अति घणा, आजलगेउ सच हो ॥ मा० ॥९॥ बाध्या जइ घर ग्वावालने, ग्वालतणा गुण जोडहो ॥ नाच्यो राच्यो रगशुं, करत कुतुहल कोडहो ॥ मा० ॥ ॥ १० ॥ रित न जाणी राजनी, जाणी गाय चराय हो ॥ किसो पलेखो किजीए, देवा अवलो न्याय हो ॥ मा० ॥ ११ ॥ जिषमनि ओझि हरि, करि घणा सहार हो ॥ जोगीनि वाहे वहि, लागी तो नटलारहो ॥ मा० ॥ १२ ॥ जेति मनमा उपजे, तेति मुहडे मतआण हो ॥ लोहिने लज्जे करी, चमालि चित आण हो ॥ मा० ॥ १३ ॥ कृष्ण कुतुहल केलवि, आयो पुर मझार हो ॥ लेहणो लाजे आपणो ए दोइ वडनार हो ॥ मा० ॥ १४ ॥ रुखमणि उठि धसमसि लागी नामा पाय

हो ॥नामाये नल नावसु लिधो कंठ लगाय हो ॥ मा० ॥ १५ ॥ कुशल वात पूछि घणि, नामा धरी अति प्रेम हो ॥ थारी देवि क्रपा थकि, महारे नित हि खेम हो ॥ मा० ॥ १६ ॥ हसी रमी हेत प्यारसु, चालि लहिय पसाया हो॥ आवो पाक्यो उपरे, माहि न जाय कसाय हो ॥ मा० ॥ १७ ॥ अवर अनेरी वातनो, थेरु धरे गुमान हो ॥ नामाने पगे लागणो, साले साल समान हो ॥ मा० ॥ १८ ॥ जलए जल तो जाणिये, जलसु रहिए लाग हो ॥ जो जळ आप णाहि जले, तो किहा जाय नगायहो ॥ मा० ॥ १९॥ जो पिउ पाढे आतरो, लोगासुं स्यो रोस हो॥ नामा मन समझावसि, कर्म आपणो दोश हो॥मा०॥२०॥ ए त्रेपनमी ढालमे, रग विनोद विलास हो॥ गुणसा गर शुभ कर्मथी, पोहोंचें मननि आश हो॥मा०॥२१॥

दुहा ॥ रवि उगे शशी आथमे, शशी उगे रवि तेम ॥ रवि शशी होवे एकठा, एक अकाशे केम॥१॥ वासुदेव वसुधा विपे, आण मनावे ताम ॥ प्रतिमल मद मारवे, सुजस लहे अभिराम ॥ २ ॥

ढाल ५४ मी ॥ बे बे मुनिवर वोहरण पागरयारे ॥ए देशी॥ होवे हो कृष्ण सकल जगनो धणि, जोवो हो नवमां प्रतिमल्लने हणिरे ॥ ए आकणी ॥ पवनद्वी पथी आवियारे, वेपारी वड नामोरे ॥ रत्न कावल रु यडारे, मूल घणे अभीरामोरे ॥ हो० ॥ १ ॥ लाभ वि

च्यारी अति घणोरे, राजग्रहि आवतोरे ॥ जीवज
स्याने आगलेरे, वरतु नलि लावतोरे ॥ हो० ॥ २॥
घटी मोल जब सानल्योरे, विणजारा बोलतोरे ॥ गो
मी नगरी द्वारिकारे, न्याय हमे मोलतोरे ॥ हो० ॥३॥
चमकि जीवजस्या खरीरे, सुणि नवलो अनीधानोरे
॥ कवण देश पुर केवडोरे, केहेनि वर्ते आणोरे ॥
हो० ॥ ४ ॥ सोरठ देश सुहामणोरे, सायरदत्त नि
वासोरे ॥ नव बारी नगरी नलीरे, कृष्ण नरेसर ता
सो रे ॥ हो० ॥ ५ ॥ आदि विगोइ व्यतरिरे, नाथ्यो
कालि नागोरे ॥ गोवर्धन गीरि धारीयोरे, जेहनि अ
विचल पागोरे ॥ हो० ॥ ६ ॥ दात उखालण गय
वरो, मल्ल पगाडण हारोरे ॥ कंस कद निकदणोरे, उ
ग्रसेन आधारोरे ॥ हो० ॥ ७ ॥ चदेरि पति मद मा
रणोरे, अरि कुल केरो कालोरे ॥ कृष्ण कहावे के हरीरे,
नामे दुर्जन सालोरे ॥ हो० ॥ ८ ॥ विरुद सुणया अ
ति आकरोरे, अगुठायि झालोरे ॥ नथी आवि मस्त
केरे, आतुर थइ असरालोरे ॥ हो० ॥ ९ ॥ हइइचो
हटा आण केरे, कत अने जलानाइरे ॥ विरहे विगो
हि विलविलेरे, वेदन सहि न जायरे ॥ हो० ॥१०॥ य
दुपतिनी पदमणिरे, पोखे पियसु प्रेमोरे ॥ हु रनापो नो
गवुरे, अव मुज जीवण नेमोरे ॥ हो० ॥ ११ ॥ ज
रासध पासे जइरे, पापणि मरणो मागेरे ॥ कत अ
ने नाइ तणोरे, अरि फिरे मुज आगेरे ॥ हो० ॥१२॥

नृप नणे मत रोवहिरे, रोसे तुक रिपु राणिरे ॥ अरितो वरतो जीवतोरे, पिण मे ग्वबर न जाणिरे ॥ हो० ॥१३॥ स्वामी द्रोहना पातकिरे, रे मत्रि नृ दिसेरे ॥ वयरी किम वधवा दियोरे, होठ डसे नृप रीसेरे ॥ हो० ॥ १४ ॥

ढाल तेहीज ॥ राग कडखो ॥ कोपियो राज ग्राहि पति राजवि, वयरी निसुणि पुत्रि तणा बोल नारी ॥ कहे राजा जरासंध सुण पुत्रिका, पूरवु आज आशा तुमारी ॥ को० ॥ १ ॥ मूलथी वस उनमूलसुं यदु तणो, कोपियो मगधेश कहे एम वाणि ॥ चढतरी वात सेना नणि, आदिसे मत्र विवारीयो पिण राय गुमानि ॥ को० ॥ २ ॥ थयो परनात करी शिणगार शोना धरी, ननासाले ताम ननावजावे ॥ राय राणाजीको हाथ लोढो धरे, नाना मोटा कोइ रेण न पावे ॥ को० ॥ ३ ॥ निसुणि प्रबल दल सबल नेला हुवा, केरू कशीया तणा देइ तशीया ॥ थापरे कध एक एक हयवर तणा, मूठ वल घाल सग्राम रसिया ॥ को० ॥ ४ ॥ रज चढि गयण रणथन जिम उपज्यो, पाखरे रोल घमसाण वाजी ॥ स्वामि तणि वात अखियात करवा नणि, सुनटानि नयन ब्रह्माड लागी ॥ को० ॥ ५ ॥ सब लढि चाल सीशुपाल मुगल तिम, सकल सिमाडिया नृप आया ॥ पुत्र सहदेव आदिक वग राजवि, शस्त्र छत्रिस धरी वेग धाया ॥ को० ॥ ६ ॥ तेम दुर्योधनादिक वडा रा

जवि, राए राजा नरा उतर ढाला ॥ सहस्र गमे ति
हा नृप आवी मिल्या, केइ गजरथ तुरगम केइ
पाला ॥ को० ॥ ७ ॥ चढतवेला मुगट सीसथी गीर
पड्यो, त्रटकी निज हाथशु हार त्रुठ्यो ॥ वाम तसु
आख फूरके घणु उपरे, लोक सघला कहे पुण्य खुठ्यो
॥ को० ॥ ८ ॥ गृध्र अंबरे फिरे छिंक आगल करे, वा
यरो ते प्रतिकुल वाजे ॥ बहुल अपसुकन वारी जतो
राजीयो, खिजतो आपणा बोल काजे ॥ को० ॥ ९ ॥
पारविण पायदल तुरीय गयवरतणो, कलकलाट श
ब्दे बधीर लोक थायो ॥ अश्व शुरा आहणी सबल
रज साधणी, छल भणी जाय आकाश गयो ॥ को०
॥ १० ॥ घडहडे धरणीतल सबल सेनाभरे, जलधी
जल उछले अति जोरे ॥ सघसले पनग भारे करी
सकतो, खलभल्या देव कटक घणघोरे ॥ को० ॥११॥
मगध देशाधीपति मदे भरयो मलपतो, गध हस्ती चढे
गर्व गेहलो ॥ सामुहो द्वारकां नगरी सीमा भणी, चाल्यो
सेन्या लेइ राय वहेलो ॥ को०॥ १२ ॥ एहवे आवीयो
नारद मुनी कौतुकी, जरासधशु हसी इम भाखे आज
हरी हलधरे प्रबल प्रताप धर, नवी चाले एहथी घणु
शु भाखे ॥ को० ॥१३॥ राय सुभट तव कोपी नारद
भणी, देइ चपेटा चरण लात कुट्यो ॥ फोमी कमंडलु
कोपिन खेंचो घणो, हा हा नहि नहि करी मारुठ्यो
॥ को० ॥१४॥ राग आशा अने सिंधुए ए सुणी, जरा

सिंधु चढतरी वार ए ठामे ॥ जात कमखे कही ढाल ढावण जणि, सुणता सूरमा सूर पामे ॥ को० ॥ १५॥

ढाल तेहीज ॥ राग मूलगो ॥ जना वजावी ततखी णेरे, किधो राय प्रयाणोरे ॥ वेलापुगी आण केरे, दूर गयो सयाणोरे ॥ हो० ॥ १५ ॥ साहण वाहण साम टोरे, साथे सह राजानोरे ॥ धसमस धाया आवही रे, दलवलने प्रमाणोरे ॥ हो० ॥ १६ ॥ ए चोपनमी ढालमेरे, जावी लीधे जातोरे ॥ गुणसागर नवी शुक रेरे, होवे होनहाररी वातोरे ॥ १७ ॥

दुहा ॥ सेन लेइ जरासध ते, आयो रणनी सीम ॥ चक्र व्युह आकारमे, सप साजथी जीम ॥ १ ॥ आ रा महस्त्र किया जला, लशकर मेली थाट ॥ एक आ रे राय सहस्त्रछे, रोके आडा घाट ॥ २ ॥ रथ बे सह स्त्र माहे जला, गज एक सहस्त्र वखाण ॥ पाच सह स्त्र तेजी तपे, पाय सोल प्रमाण ॥ ३ ॥ आठ सह स्त्र जोधा जला, सुरामें सीरदार ॥ चक्र मुखे कौरव घणा, कहेता नावे पार ॥ ४ ॥ मध्य जाग पोते रहे, आरा सहस्त्रने माहि ॥बल अरि चाली नवी सके, अ तुली बलछे त्यांही ॥ ५ ॥ नारद मुनि कोपे चढ्यो, अवगुणीयो मुज आज ॥ गुमानी माने चढ्यो, रा खी नही मुज लाज ॥ ६ ॥ उत्पत्यो अंबर मारगे, क लुप जरयो ऋषी ताम ॥ आयो नगरी द्वारीका, हरी ने जणावण काम ॥ ७ ॥ तव नारद कृष्णने कहे, आ

ण्यो नृप जरासध ॥ कृष्णे जना वजाडीने, करी क
टकनोबध ॥ ८ ॥

गाथा ॥ हरी सुतो थइ सधीर, आव्यो जगसिं
धु नडवीर ॥ मुऊ दीठे सही करी मानो, कीम अरी
अणराखस्ये गनो ॥ १ ॥

ढाल ५५ मी ॥ थारा मेहेला उपर मेह, ऊबुके
वीजली हो लाल ॥ ऊबु० ॥ ए देशी ॥ मिल्या तिहा
दशे दशार, जाणे दुर्धर केशरी हो लाल ॥ जा० ॥
समुद्रविजय अति सूर, समुद्र जीत्यो तनुजे करि हो
लाल ॥ जी० ॥ १ ॥ माहानेमी सत्यनेमी द्रढ, नेमीसुं
नेमी लह्यो हो ॥ ला० ॥ नेमी० ॥ रथनेमी श्री अरि
ष्ट नेमी, जिनवर जग गुरु ते जयो हो॥ ला०॥ जि०
॥ २ ॥ माहाजयने जयशेन गौतम, चित्रा स्वछे
गुणि हो ॥ ला० ॥ चि० ॥ सुकल्क तेजशेन, मूग
माहि जे शिरोमणि हो ॥ ला० ॥ सु० ॥ ३ ॥ जय
मेघ अने सिवनद, विश्वकसेनादि वळे पुराहो ॥ ला०
॥ वि० ॥ समुद्र विजयना ए पुत्र, एकरथी छे अधी
क सूरा हो ॥ ला० ॥ छे अधिक० ॥ ४ ॥ बिजो दशा
र अक्षोभ, आठ पुत्र तेहना जाणिए हो ॥ ला० ॥
ते० ॥ उद्धव अक्षुभित, वामदेव द्रढव्रत वखाणिए हो
॥ ला० ॥ द्र० ॥ ५ ॥ महो अनोजळने आगल्ये, नि
धी शब्द जिहारे जोमिए हो ॥ ला० ॥ निहा० ॥ हो
जी थाए तिहारे त्रिणे ताम, सूत्रने किम अवखोमीए

हो ॥ ला० ॥ कि० ॥ ६ ॥ स्तमित त्रिजो दशार, पा
चते पुत्र तेहने अछे हो ॥ ला० ॥ ते० ॥ ऊर्मिमांन
ने वसुमान, विरपाटल स्थीर युत्रे गेछे हो ॥ ला० ॥
यु० ॥ ७ ॥ सागर चोथो दसार, पट पुत्र तेहना वा
ल्हेसरि हो ॥ ला० ॥ वा० ॥ कंपन निःकंप लक्षिमवा
न, श्रीमान युगातने केशरि हो ॥ ला० ॥ यु० ॥ ८ ॥
पाचमो दशार हेमवान, त्रण पुत्र तेहना जाणजो तुमे
हो ॥ ला० ॥ जा० ॥ विद्युतप्रभने माल्यवान, गंध
मादन गणया अमे हो ॥ ला० ॥ ग० ॥ ९ ॥ अच
ल छठो दशार, सात पुत्र तेहनां समकि लिया हो ॥
ला० ॥ ते० ॥ माहेंद्र मलय माहागिरी शेल, नाग बले
कुल निर्मल किया हो ॥ ला० ॥ कु० ॥ १० ॥ धरण
नामे सातमो दशार, पंच पुत्र तेहना पूछयो हो ॥ ला०
॥ ते० ॥ विश्वरुप धनजय कर्कट, श्वेतमुख वासुकि
ए थयो हो ॥ ला० ॥ वा० ॥ ११ ॥ पूरण नामे आठ
मो दशार, सुत चार तेहने सुदरु हो ॥ ला० ॥ ते०
॥ कर्मुख कर्कर क पुर, कर्धर महाबल नाधरु हो ॥ ला०
॥ म० ॥ १२ ॥ नवमो दशार अभीचद्र, पट पुत्र ते
हना जाणो खरा हो ॥ ला० ॥ ते० ॥ शशि चद्र च
द्राभ शशाक, सोम अमृतप्रभ सुदरा हो ॥ ला० ॥
अमृ० ॥ १३ ॥ दशमो दशार वसुदेव, तेहने तो पुत्र
छे घणा हो ॥ ला० ॥ पुत्र० ॥ कुर- अकुर, ज्वलनप्र
भ ॥ अशनीवेग वायुवेग, नही मणा हो ॥ ला० ॥ १४ ॥

माहेंद्रगती सिद्धार्थ, अमितगती वली सादरयो हो॥ ला०॥वली०॥सुदारुक दारुक अनादृष्टी, रेंमसुष्टी सिला युद्ध कर्यो हो ॥ ला० ॥ सिला० ॥ १५ ॥ जरा कुमारने वाह्लीक, गधार पिंगल आदे घणा हो ॥ ला० ॥ पिंगल० ॥ राम विदुरने शारणं, रोहीणीना पुत्र त्रणे हो ॥ ला० ॥ पुत्र० ॥ १६ ॥ देवकीनो पुत्र श्रीकृ
ा, जग विख्यात जाणो जेह हो॥ ला०॥जाणो०॥शू
ीर कोटीर, अधिक तेजे जाण जो हो॥ ला० ॥ ते
० ॥ १७ ॥ राम पुत्र नीरुध उल्मुक पीठ, मारुदत्त
कदमणो हो ॥ ला० ॥ शक०॥ कृष्णनो पुत्र एक, ना
नमर आगे सुणो हो ॥ ला० ॥ आगे० ॥ १८ ॥
र गनीर गौतम, सौधर्मा उदधी वली हो ॥ ला०
द० ॥ धर्मप्रशेन जिन सूर्य, चंद्रमारु कण्णक भा
मीली हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १९॥ उग्रसेन आदि
यादव वशी ना गण्या हो॥ला०॥ वशी०॥ अ
व जाणो अनेक, ज्ञानी वीण न जाए गण्या हो
॥ न जा० ॥ २० ॥ मामाह फूइयाइ अनेक,
पक्षना जाणजो हो॥ ला०॥ पक्ष०॥एतो ढाल
, उदय करी मनमा आणजो॥हो॥ला०॥म०॥२१॥
ा ॥ कोष्टुकेथकी तसु सुहुरते, गरुडध्वज रथारु
ष्ण थया तव दारुके, अश्व ते जोड्यो प्रौढ ॥
चतुरगी सेनासजी, लिया सहु जादव साथ॥
कुने इशान दिशामां, चाल्या श्री यदुनाथ॥२॥

हो ॥ ला० ॥ कि० ॥ ६ ॥ रतमिन त्रिजो दशार, पा
चते पुत्र तेहने अठे हो ॥ ला० ॥ ते० ॥ श्रुर्मिमान
ने वसुमान, विरपाटल स्थीर युग्रे गेठे हो ॥ ला० ॥
यु० ॥ ७ ॥ सागर चोथो दसार, पट पुत्र तेहना वा
ल्हेसरि हो ॥ ला० ॥ वा० ॥ रुपन नि कप लक्ष्मिवा
न, श्रीमान युगातने केशरि हो ॥ ला० ॥ यु० ॥ ८ ॥
पाचमो दशार हेमवान, त्रण पुत्र तेहना जाणजो तुमे
हो ॥ ला० ॥ जा० ॥ विद्युतप्रभने माल्यवान, गंध
मादन गण्या अमे हो ॥ ला० ॥ ग० ॥ ९ ॥ अच
ल ठठो दशार, सात पुत्र तेहना समझि लिया हो ॥
ला० ॥ ते० ॥ माहेद्र मलय माहागिरी शैल, नाग वळे
कुल निर्मल किया हो ॥ ला० ॥ कु० ॥ १० ॥ धरण
नामे सातमो दशार, पच पुत्र तेहना पूठयो हो ॥ ला०
॥ ते० ॥ विश्वरुप धनजय कर्कट, श्वेतमुख वासुकि
ए थयो हो ॥ ला० ॥ वा० ॥ ११ ॥ पूरण नामे आठ
मो दशार, सुत चार तेहने सुदरु हो ॥ ला० ॥ ते०
॥ कर्मुख कर्कर क पुर , कधर महाबल नाधरु हो ॥ ला०
॥ म० ॥ १२ ॥ नवमो दशार अभीचद्र, पट पुत्र ते
हना [illegible] खरा हो ॥ ला० ॥ ते० ॥ शशि चद्र चं
द्राभ शशा[illegible] सोम, अमृतप्रभ सुदरा हो ॥ ला० ॥
अमृ० ॥ १३ ॥ द[illegible] दशार वसुदेव, तेहने तो पुत्र
छे घणा हो ॥ ला० ॥ पु[illegible] 'कर अकुर ज्वलनप्र
भ ॥ अशनीवेग वायुवेग न [illegible] ॥ ला० ॥ १४ ॥

माहिद्रगती सिद्धार्थ, अमितगती वली सादरव्यो हो॥ ला०॥वली०॥सुदारुक दारुक अनादृष्टी, रेममुष्टी सिला युद्द करयो हो ॥ ला० ॥ सिला० ॥ १५ ॥ जरा कुमारने वाहलीक, गधार पिंगल आदे घणा हो ॥ ला० ॥ पिंगल० ॥ राम विदुरने शारणं, रोहीणीना पुत्र त्रणेए हो ॥ ला० ॥ पुत्र० ॥ १६ ॥ देवकीनो पुत्र श्रीकृष्ण, जग विख्यात जाणो जेह हो॥ ला०॥जाणो० ॥शूरवीर कोटीर, अधिक तेजे चाण जो हो॥ ला० ॥ तेजे० ॥ १७ ॥ राम पुत्र नीरुध उल्मुक पीठ, मारुदत्त शक्रंदमणो हो ॥ ला० ॥ शक्र०॥ कृष्णनो पुत्र एक, नानु नमर आगे सुणो हो ॥ ला० ॥ आगे० ॥ १८ ॥ धीर गंभीर गौतम, सौधर्मा उदधी वली हो ॥ ला० ॥ उद० ॥ धर्मप्रशेन जिन सूर्य, चद्रमारु कृष्णक भ्राता मीली हो ॥ ला० ॥ भ्रा० ॥ १९॥ उग्रसेन आदि नरेस, यादव वशी ना गण्या हो॥ला०॥ वशी०॥ अंग जाव जाणो अनेक, ज्ञानी वीण न जाए गण्या हो ॥ ला० ॥ न जा० ॥ २० ॥ मामाइ फूइयाइ अनेक, स्वशुर पक्षना जाणजो हो॥ ला०॥ पक्ष०॥एतो ढाल रसाल,उदय करी मनमा आणजो॥इ॥ला०॥म०॥२१॥

दुहा ॥ कोष्टुकेथकी तसु सुहुरते, गरुडध्वज रथारुढ ॥ कृष्ण थया तव दारुके, अश्व ते जोड्यो प्रौढ ॥ ॥ १ ॥ चतुरगी सेनासजी, लिया सहु जादव साथ॥ शुभ शकुने इशान दिशामां, चाल्या श्री यदुनाथ॥२॥

हो ॥ ला० ॥ कि० ॥ ६ ॥ स्तमित त्रिजो दशार, पा
चते पुत्र तेहने अछे हो ॥ ला० ॥ ते० ॥ ऊर्मिमान
ने वसुमान, विरपाटल स्थीर युधे गेछे हो ॥ ला० ॥
यु० ॥ ७ ॥ सागर चोथो दसार, षट पुत्र तेहना वा
ल्हेसरि हो ॥ ला० ॥ वा० ॥ कंपन नि कप लक्ष्मिवा
न, श्रीमान युगातने केशरि हो ॥ ला० ॥ यु० ॥ ८ ॥
पाचमो दशार हेमवान, त्रण पुत्र तेहना जाणजो तुमे
हो ॥ ला० ॥ जा० ॥ विद्युतप्रभने माल्यवान, गंध
मादन गणया अमे हो ॥ ला० ॥ ग० ॥ ९ ॥ अच
ल छठो दशार, सात पुत्र तेहना समझि लिया हो ॥
ला०॥ ते० ॥ माहेंद्र मलय माहागिरी शैल, नाग बले
कुल निर्मल किया हो ॥ ला० ॥ कु० ॥ १० ॥ धरण
नामे सातमो दशार, पच पुत्र तेहनां पूछ्यो हो ॥ ला०
॥ ते० ॥ विश्वरुप धनजय कर्कट, श्वेतमुख वासुकि
ए थयो हो ॥ ला० ॥ वा० ॥ ११ ॥ पूरण नामे आठ
मो दशार, सुत चार तेहने सुदरु हो ॥ ला० ॥ ते०
॥ कर्मुख कर्कर क पुर , कर्धर महाबल नाधरु हो ॥ ला०
॥ म० ॥ १२ ॥ नवमो दशार अनीचद्र, षट पुत्र ते
हना जाणो खरा हो ॥ ला० ॥ ते० ॥ शशि चद्र चं
द्राभ शशाक, सोम अमृतप्रभ सुदरा हो ॥ ला० ॥
अमृ० ॥ १३ ॥ दशमो दशार वसुदेव, तेहने तो पुत्र
छे घणा हो ॥ ला० ॥ पुत्र० ॥ कुर अकुर ज्वलनप्र
भ ॥ अशनीवेग वायुवेग नही मणा हो ॥ ला० ॥ १४ ॥

माहेद्रगती सिद्धार्थ, अमितगती वली सादस्यो हो॥ ला०॥वली०॥सुदारुक दारुक अनादृष्टी, रेमसुष्टी सिला युद्ध करयो हो ॥ ला० ॥ सिला० ॥ १५ ॥ जरा कुमारने वाह्लीक, गधार पिंगल आदे घणा हो ॥ ला० ॥ पिंगल० ॥ राम विदुरने शारण, रोहीणीना पुत्र त्रणे ए हो ॥ ला० ॥ पुत्र० ॥ १६ ॥ देवकीनो पुत्र श्रीकृष्ण, जग विख्यात जाणो जेह हो॥ ला०॥जाणो०॥शूरवीर कोटीर, अधिक तेजे जाण जो हो॥ ला० ॥ तेजे० ॥ १७ ॥ राम पुत्र नीरुध उल्मुक पीठ, मारुदत्त शक्रदमणो हो ॥ ला० ॥ शक्र०॥ कृष्णनो पुत्र एक, जानु नमर आगे सुणो हो ॥ ला० ॥ आगे० ॥ १८ ॥ धीर गम्भीर गौतम, सौधर्मा उदधी वली हो ॥ ला० ॥ उद० ॥ धर्मप्रशेन जिन सूर्य, चद्रमारु कृष्णक भ्राता मीली हो ॥ ला० ॥ भ्रा० ॥ १९॥ उग्रसेन आदि नरेस, यादव वशी ना गणया हो॥ला०॥ वशी०॥ अग जाव जाणो अनेक, ज्ञानी वीण न जाए गणया हो ॥ ला० ॥ न जा० ॥ २० ॥ मामाह फूइयाइ अनेक, स्वशुर पक्षना जाणजो हो॥ ला०॥ पक्ष०॥एतो ढाळ रसाल,उदय करी मनमा आणजो॥हो॥ला०॥म०॥२१॥

दुहा ॥ कोष्टुकेथकी तसु सुहुरते, गरुडध्वज रथारुढ ॥ कृष्ण थया तव दारुके, अश्व ते जोड्यो प्रौढ ॥ ॥ १ ॥ चतुरगी सेनासजी, लिया सहु जादव साथ॥ शुभ शकुने इशान दिशामा, चाल्या श्री यदुनाथ॥२॥

जादवने पांरुव तणा, कटक तणो नही पार ॥ चाल्‍ता अचलाचले, फूलाचल जाएया तीणीवार ॥ ३ ॥ पेतालीस जोजन अरहा, आवी करयो पडाव ॥ ग्रपालि गामानि सिममा, वहुविध करिय वनाव ॥ ४ ॥ एहवे तिहा कृष्ण सैन्यमा, वेताढ्य वाशि अनेक ॥ विद्याधर आवि नमे, समुद्रविजयने विवेक ॥ ५ ॥ कहे स्वामि तुज वाधवे, वसुदेवे धरि नेह ॥ सेवक करि अम थापिया, उपकार किया अछेह ॥ ६ ॥ युद्ध समय जाणि करि, आव्योछु तुम पास ॥ सेवक अमने लेखवि, काम बतावो खाश ॥ ७ ॥ वचन सुणिने हरखिया, समुद्रविजय राजान ॥ नेह नजरे निरखि तदा, आपे अति सनमान ॥ ८ ॥ वसुदेवे पिण तव तिहा, खेंचरने बहु प्रेम ॥ अति सनमानि राखिया, पूछि कुशलने खेम ॥ ९ ॥ विद्याधर कहे रायजि, राम कृष्ण समजात ॥ जगमा कोइ लाजे नहि, जरासिंधु कुण मात ॥ १० ॥ वलि खेचर हरिने कहे, अमने द्यो आदेश ॥ वैताढ्य वाशि विद्याधरा, अन्य अछे सुविशेष ॥ ११ ॥ जरासिंधुना पक्षथी, तुमने न माने जेह॥तेहने जीतवा कारणे, जाइए अमे गुण गेह ॥ १२ ॥

ढाल तथादेशी तेहिज॥सुणी नारद वयण वेधाला, वाजे गुहीर त्रबालु गुंजाला॥सिंहनाद हरी तव मूके, सज यादव थइने घूके ॥ १ ॥ दस सेने दसारथ चाल्या, जुजुआ नवी रहे खाल्या ॥ उठ कोड पुत्र परवरीया,

पेहेरी सनाह खड्ग वेगे धरीया ॥ २ ॥ उग्रसेन कटक पोतानो, लेइ चाल्यो देइने तानो ॥ माहसेन राजा युद्ध रागी, बलतेग चीहु खुटवागी ॥ ३ ॥ माहे पांच पाडव वड जोध, रण करतां न आवे बोध ॥ तीम सुसरा साला बहु मिलीया, कायराचीत माही खलभली या ॥ ५ ॥ सर्व कटक मिल्यु शुभ शुकने कुण चूके ए जाणी लकने॥रण वाजिंत्रभभा वाजे, रथ बेठा श्रीकृष्ण बिराजे ॥ ५ ॥ वली निखट कुमर सीरदार, धरयो महानेमी सेननो भार ॥ आवी खेच्या रणने तीर, फेरा देइने उतराधीर ॥ ६ ॥ गरुड व्युह आकारे कही ए, चचु अग्रे बलभद्र लहीए ॥ एहवे इद्रपुरीमे बेठो, अवधे सौधर्मे इद्रे दीठो ॥ ७ ॥ प्रभु युद्ध कारण परवरीया, बालपणे कौतुक रस भरीया ॥ मूक्यो सारथी मातुल सार, रथ पोताने तैयार ॥ ९ ॥ छत्री से आयुद्ध धरीया, भेट मूकीने सचरीया ॥ कचन सनाह पहेरी सयणे, चाल्यो सारथी नेमने वयणे ॥ ॥ १० ॥ प्रभु वेशी रथ सोभाव्यो, सवी जोता सैन्यमे लाव्यो ॥ केइ सूर सूभट सज्ज थावे, अष्टापद ज्यु उपमा पावे ॥ ११ ॥ माहे भीम गदानो रसियो, परसेन देखीने हसीयो ॥ एम सुभटनी कोडा कोडी, रण करवाने होमाहोमी ॥ १२ ॥ समपाधर जोइन चो खाल्यं, सेन आप आपणु वाल्यु ॥ रणथभ तीहा आरोप्यो, धज दडे करी बहु ठप्यो ॥ १३ ॥ वी

जादवने पांडव तणा, कटक तणो नहीं पार ॥ चालं ता अचलाचले, फूलाचल जाण्या तीणीवार ॥ ३ ॥ पेतालीस जोजन अरहा, आवी करयो पडाव ॥ श त्रपालि गामनि सिममा, बहुविध करिय बनाव ॥ ४॥ एहवे तिहां कृष्ण सैन्यमां, वेताढ्य वाशि अनेक ॥ वि द्याधर आवि नमे, समुद्रविजयने विवेक ॥ ५ ॥ कहे स्वामि तुज बाधवे, वसुदेवे धरि नेह ॥ सेवक करि अ म थापिया, उपकार किया अठेह ॥ ६ ॥ युद्ध समय जाणि करि, आव्योछु तुम पास ॥ सेवक अमने ले खवि, काम बतावो खाश ॥ ७ ॥ वचन सुणिने हर खिया, समुद्रविजय राजान ॥ नेह नजरे निरखि तदा, आपे अति सनमान ॥ ८ ॥ वसुदेवे पिण तव तिहा, खेंचरने बहु प्रेम ॥ अति सनमानि राखिया, पूछि कु शलने खेम ॥ ९ ॥ विद्याधर कहे रायजि, राम कृष्ण समजात ॥ जगमा कोइ लाजे नहि, जरासिंधु कुण मात ॥ १० ॥ वलि खेचर हरिने कहे, अमने द्यो आ देश ॥ वैताढ्य वाशि विद्याधरा, अन्य अछे सुविशेष ॥ ११ ॥ जरासिंधुना पक्षथी, तुमने न माने जेह॥ते हने जीतवा कारणे, जाइए अमे गुण गेह ॥ १२ ॥

ढाल तथादेशी तेहिज॥सुणी नारद वयण वेधाला, वाजे गुहीर त्रबालु गुजाला॥ सिंहनाद हरी तव मूके, स ज यादव थइने घूके ॥ १ ॥ दस सेने दसारथ चाल्या, जुजुआ नवी रहे खाल्या ॥ उठ कोड पुत्र परवरीया,

गे खग्डाट सुन नेतेगे ॥ खलके लोही वहे जीम वारी, पमीया हय गय पाय पसारी ॥ २४ ॥ योगणी पत्र पुरेरे असखी, त्रपत हुया घणा ग्रघ पखी ॥ महाने मी तणा तिर बूटे ,रुखमीया रथनी साव वछूटे ॥ ॥ २५ ॥ रुखमायो ने दुर्योधन नूपाल, कोपे चढीया आ असराल ॥ वेणुदाली प्रमुख सरोखी, खटरा घ आव्या वल पोखी ॥ २६ ॥ महानेमी तणो रथ घेरी, आठे राय रह्या चहु फेरी ॥ नाइ सनारो इष्ट तुम्हारो, आज आव्यो सही जमवारो ॥ २७ ॥ रे रे सोर करे स्यो गिमार, आव्य सनमुख था हुसीयार ॥ इम कही त्रोडे सरधारा, धनुष आठे तणा तिणीवारा ॥ २८ ॥ सक्ति पुरण दाव अरिने, मूके रुखमइयो री स नरीने ॥ तड तड नाद करत जोर, देखी सुनट करे अति सोर ॥ २९ ॥ नाखे शस्त्र घणा सुरचगा, जाणे अग्नी माहि वले पतगा ॥ एहवे अरिष्ट नेमी सर स्वामी ॥ सूर मातली कहे शिरनामी ॥३०॥ वली इद्र थकी इणे पामी, एह शक्ति महा तप कामी ॥ पामी प्रभुतणोरे आदेश, सुर सानीध्य करे सुविशे ष ॥३१॥ तिणे वज्रशरे अति त्राडी, लेइ शक्ति नणी भूए पाडी ॥ जयजयकार करे नरदेव, जादव विघन टल्यो ततखेव ॥ ३२ ॥ हुइ साजने विल्यो सग्राम, आव्या आप आपणे मुकाम ॥ गुणसागर कहे श्र नीराम, ढाल पचावनमी गुणधाम ॥ ३३ ॥

र विद्याधर बहु मिळीया, सघट्टे सह आरो चलीया ॥ कोइ कौतुक जोवा आवे, भट देखीने भय पावे ॥ १४ ॥ गजसुंडे साकलनां खलका, मेरघा बांधी करे वलका ॥ हयवर पाखरीया पलाणे, भाता वलगाव्या भरी बाणे ॥ १५ ॥ वीर रसे चढ्या रजपूत, रणखेत मच्यो अदभूत ॥ दल पसरीया चीहुं ओर, काळीखाम घटा घनघोर ॥ १६ ॥ वरशीए करत जुहारा, बीजली जेम वहे खगधारा ॥ मच्योया अति जोध अखाडा, शीर वीना धड करे रमाडा ॥ १७ ॥ आव्यो शूर सहो असिधारी, जो हय होस अपछरा नारी ॥ बोले बोल सुभट एम हाडा, एक कायर धरे हाथ आडा ॥ १८ ॥ जादव सुभट चढ्या रसपूर, करे सिंधु सेना चकचूर ॥ दल भग देखीने राय, आव्या धसमसता अति धाय ॥ १९ ॥ प्रियगद धुमकेतु नरिंद, जादव सेनने पाडता मद ॥ वही एक धारी करपाण, हरी कटकमां पडचु भगाण ॥ २० ॥ उठ्यो महानेमी तीणीवार, अनादृष्टी निखट कुमार ॥ चाल्या रथ वेशी गुणवत, आवता रीपू दल रोकत ॥ २१ ॥ रोसे भर्यो रुखमीयो राय, दुर्योधन साथे सहाय ॥ साते नृप आव्या रण खेत, एक एकने पाडल लेत ॥ २२ ॥ समकाले साते नृप होडे, भरमुठी अने सर छोडे ॥ महानेमी सुभटने आगे, रुखमीया साथे अच्यो मध्य भागे॥२३ ॥ सणण बाण वहे अति वेगे, वा

चली, उपाडी गदारे आयो अमीर ॥ र० ॥ २ ॥ से
नानी रथ उपरे, मेली गदा बलपुर ॥ सेनानी पागो
खस्यो, रथ भागीरे हुवो चकचूर ॥ र० ॥ ३ ॥ आ
व्यो केसरी जेम गाजतो, भीम उपर धरी छाग ॥
तिक्षण बाण वरसावतो, कोइ नवीपामेरे रेहवालाग
॥ र ॥ ४ ॥ जयसेन कुमर माहा वलि, समुद्रविजेनो
नद ॥ आवि आमो आतरयो, खेचि धनुष्य उनो सो
नद ॥ र० ॥ ५ ॥ राय हसी इम वोलिउ, तु का मरे
भाणेज ॥ इम केहेता तस सारथी, हणियोरे जयसेन
सहेज ॥ र० ॥ ६ ॥ खेंचि बाण अति आकरो, सेना
नी सरदार ॥ तस सारथी भेदी करी, काइ मारयोरे
जयसेन कुमार ॥ र० ॥ ७ ॥ महाजय आयो वेगसु,
बधव मारयो देख ॥ ते पिण मारयो सेनानीए देखि
कोप्योरे अनादृष्टी विशेप ॥ र० ॥ ८ ॥ हिरणनाभी
राजा तणो, छेदे धनुष मनरग ॥ भीम अर्जुन याद
व अवर, काइ फुजेरे बीजा नृप सग ॥ र० ॥ ९ ॥
अनादृष्टीने मारवा, रथथि उतरीउ वेग ॥ होठ पीसे
रीसे भरयो, हिरणनाभीरे आव्यो धरी तेग ॥ र० ॥
॥ १० ॥ आनदृष्टी पिण रथ थाकिरे, उतरीयो ले तर
वार ॥ आमो खेडो देइने, काइ वदेरे तसु बहुवार
॥ र० ॥ ११ ॥ आनदृष्टि छल पामीने, लब्ध लिखि
करवाल ॥ हिरणनाभीने हाथि करी, काइ नास्योरे शिर
उगल ॥ र०॥१२॥ अट विस पुत्र रायना, पोहोचाड्या

दुहा ॥ नित्य प्रते युद्ध होवे घणा, कहेता नावे पार ॥ जरा मूकी एहवे, ते सुणजो अधीकार ॥ १ ॥ नालधव्रुके नवनवी, रजमें गायो जाण ॥ सुरा रणमें आथरे, रथ जूत्या केकाण ॥ २ ॥ तमलीम करता थका, एक एक ने ग्रही बाह ॥ जस जगमे करो जय करशे जगनाह ॥ ३ ॥ सुकलीनी माता तणा, धाव्या हशे जे दूध ॥ ते पग पाछा नही दिए, घणा किया छे युद्ध ॥ ४ ॥ इम हुकाहुक करी रह्या, जाणे हनुमत वीर ॥ जइ आफ्रा रण थमने, वडा वडा रण धीर ॥ ५ ॥ बाणधार वरशे घणी, धरणी न धरे धीर ॥ कायर नर छाना छपे, साहसीक शाम सधीर ॥ ६ ॥ युद्धारंभ थयो घणो, नवीको हारे ताम ॥ एहवे सेनानीं सिंधु तणो, हिरण्य नामे अभीराम ॥ ७ ॥ कहे एम नीज स्वामी भणी, सुणजो जादव रंक ॥ द्यो आदेश सयामनो, टालु एहनो वक ॥ ८ ॥ राय पसाय लेइ करी, रथ बेशी तिणीवार ॥ चढीयो आडवर घणे, दल बलनो नही पार ॥ ९ ॥

ढाल ५६ मी ॥ श्रेणीकराय हुरे अनानी निग्रंथ ॥ ए देशी ॥ सेनानी रोसे भरयो, आवेहि दल ठेल ॥ घसरयो दल सिंधु-तणो, जीम साअरनि वेल ॥ १ ॥ रंगीला राय आवी मिल्या रणखेत, कोइ पाछीरे पुठ न देत ॥ १० ॥ ए आकणी ॥ आरजुन सेनानी तणो, आवता छेदे तिर ॥ एहवे जीम नूजा

॥ २३ ॥ कृष्ण पूछे प्रभु नेमने, स्वामी अब किम हाय ॥ किंक आया सुर साहमो, दुग धरीरे जोवे सेवे सहु कोय ॥ रं० ॥ २४ ॥ हरी आरति देखि करी, मातुलि कहे इम वात ॥ प्रभु न्हवण जल छाटता, कांइ रेहेशेरे वक्रनो उपघात ॥ र० ॥ २५ ॥ प्रभु पूजी प्रणमी करी, नवण छाटे तिणीवार ॥ जरा नाठि लोटि बठिया, काइ सूरारे सुभट शिरदार ॥ र० ॥ ३६ ॥ प्रभु रथ रेणु फरमी जेहने, अगे अडे तिल मात ॥ तेहना उपद्रव्य सर्वे टले, अकथ कथानि छे वात ॥ ॥ र० ॥ २७ ॥ ढाल ए षट पचासमी, प्रभु महिमानि वात ॥ ब्रह्मचारी जिन बाविसमो, गुणसागर गुण गात ॥ र० ॥ २८ ॥

दुहा ॥ हिवे जरासिंधु आपणा, मत्रि तेड्या ताम ॥ नामे हाम्रोहिशके, उभा करी प्रणाम ॥ १ ॥ यादव सेन जिहा अछे, जइ आवो करी गुज ॥ सेना साहमा आवजो, वहिला करजो जूझ ॥ २ ॥ नृप जुना जाणे नाहि, पूरण प्राक्रम मोय ॥ समुद्रराघने विनवि, कृष्णनी शरे तोय ॥ ३ ॥ पशु टोले गोवालियो, आपो नृजने लाज ॥ हलधर जुग प्राडव वलि, आपजो सरशे काज ॥ ४ ॥ हाम्रो आव्यो तिहा थकि, प्रणमे समुद्रना पाय ॥ विनति स्वामी चक्रनी, करवा साधी ठाय ॥ ५ ॥ समुद्रविजय त्राटके कहे, रे साभल मत्रिश ॥ मागवा कृष्ण तु आवियो, हिन बुद्धी

परलोक ॥ भीम अर्जुन करी आकरी, देखिरे गत हुओ निशोक ॥ग०॥१३॥ कुमर वध देखि करी, सेन्या नागी ताम ॥ जगभिधु चित चिंतवी, तिणे अवसर कुलदेवी अभिगम ॥ र० ॥१४॥ जरादेवी कुलमें वसी, समग्या आवो आज ॥ अरी अटारा रणमें मिल्यो, काइ ग खोरे कुलनि लाज ॥ र० ॥ १५ ॥ देवि कोपि ततखि णे, आवि यादव सेन ॥ जरा विकुर्वि अति घणि, जाणे प्रगट्योरे अचानक पेन ॥ र० ॥ १६ ॥ उठकोडी उ ज्वल करया, मुख चूवे बहु लाल ॥ मध्य निसाने मुकिने, गइ देविरे अवर ततकाल ॥ र० ॥ १७ ॥ प्रसरी जरा जादव सेनमा, व्याकुल थया नरराय, नेम हरी हलधर विना, शेप जरामय सहु थाय ॥ र० ॥१८॥ झूरे हलधर एकलो, निसुणि कृष्ण एह वात ॥ सुर सुभट विण किम थायशे, उपनोरे सूरि तणो उतपा त ॥ र० ॥ १९ ॥ एहवे मातुल सारथी, प्रभुने क हे वारवार ॥ हणिए प्रति विष्णु आपणे, तो काइ प्र मे हार अपार ॥ र० ॥ २० ॥ देव वयणे प्रभु इम कहे, विष्णु हणे प्रति वीष्ण ॥ ए नित परपरा छे चलि, होतेरे त्रिखडाधीप कृष्ण ॥ र० ॥ २१ ॥ इम कहि चा ल्यो रथ भूतले, करतो नाद गभीर ॥ क्षिरोदधीमा जीम नावडि, काइ तरतिरे दिसे तिर ॥ र० ॥ २२ ॥ जंभा काप्या जोरसु, विर्य अनत भगवत ॥ सिधु से न भागी गयो, जिम सिंह देखिरे अजाना सत ॥ र०,

वी नेरो थयो उमाह, मुसडी सल हाथमा साही ॥
॥६॥रणथन्न आवीने रोप्यो, करण जादव उपर को
प्यो ॥ देखे करण केरी अधीकारी, नाठा सुनट हता
जे नारी ॥ ७ ॥ त्रास पामी आव्या हरी पासे, पा
ए लागीने वचन प्रकाशे ॥ आव्या करणने नीषम
दोह, प्रनु अमथी तो काये न होइ ॥ ८ ॥ निम गदा
लेइने सनूर, अरजुण उनो बाणावरी सुर ॥ सज थया
रण रमवाने काज, तव वरजे जुधीष्टर माहाराज ॥९॥
नीपम पितामहने करणछे नाइ, इणथी वढता न होए
वडाइ ॥ मारीए मरीए तो नरके जइए, ते माटे सा
मा नवि थइए ॥ १० ॥ तव वसुदेव चढीया आप, द
सार हाथ ग्रही रणथाप ॥ उग्रसेन केरी अधीकाइ,
चाल्या वढवाने दसे नाइ ॥ ११ ॥ हलधर तव हेत
ज जाणी, कहे तात प्रते एम वाणी ॥ लेओ गदा
अमारी पास, इणथी वेरी पामशे त्रास ॥ १२ ॥ ग
दा लेइ प्रनु रणमाआवे, देखी करण प्रते बोलावे ॥
आवो सामा सुरजनानद, आपणे लरुशु दोए आन
द ॥ १३ ॥ वसुदेव करण ए दोए, वढे हुश न राखे
कोए ॥ एकबीजाने करे प्रहार, वदे कोप चड्यां अ
सराल ॥ १४ ॥ उग्रसेन गागेयज साथ, जूझे बिजा
घणा नरनाथ ॥ उमाया अति रण रसीया, एकबीजा
ने मारण धशीया ॥ १५ ॥ नीपम नडमोडे अति ना
र, करे चोट हुइ हुशीयार ॥ नीषम विद्याधरीनो वे

तुझ इश ॥ ६ ॥ हरी जे कंसने मारीयो, करतो कुल में उतपात ॥ उग्रसेनने पांचसे, मारंतो कसा घात ॥ ७ ॥ इम निसुणि पाछो वल्यो, चीनव्यो निज नरेश ॥ अव केटलवो मलो, जादव जोर विसेष ॥ ८ ॥ थयो प्रभात उग्यो तपत, कर्ण राजा तेणीवार ॥ सेनापतीने तेडीने, भाखे वात विचार ॥ ९ ॥ सेना सज्ज करो सहु, जासु जादव लार ॥ संग्राम करवा कारणे, मत लगावो वार ॥ १० ॥ इम सुणी सेनापती, कीधु कटक तैयार ॥ हय गय रथ पायक घणा, ते कहेतां नावे पार ॥ ११ ॥

ढाल ५७ मी ॥ चीत्रोमा राजानी ॥ ए देशी ॥ करण सज्ज थयो हिवे जाम, वदवाने अती अभीराम ॥ आयो जरासिंधुने आगे, पाए लागीने अनुमति मागे ॥ १ ॥ प्रभु किरपा करो तुमे नाथ, आज जइ देखाडु हाथ ॥ इम बोले मधुरी वाणी, जरासिंधु कहे गुणखाणी ॥ २ ॥ जावो वेगे मतलावो वार, रणमांहे रहेजे हुशीयार ॥ इम सुणी राजी थयो मनमा, पहेर्यो संनाह कछोटो तनमा ॥ ३ ॥ करपा किरण समले तेज, जग देखता उपजे हेज ॥ रथे बेठो करवा काज, हाथ मुदगल लेई माहाराज ॥ ४ ॥ नाग ससरो सानीध्यकारी, आवीरथे बेठो अधीकारी ॥ ओर देव घणा तस लार, करण आव्यो थइ हुशीयार ॥ ५ ॥ गांगेय गुरुवो गुणखाणी, करण रण चल्यो इम जाणी ॥ आ

खीने अतिशे मारे नाग सामो आव्यो तस लारे ॥ जल लेइने अगन ओलावे, बाण देव ते नाशी जावे ॥ २७ ॥ करण बाणावरी केवाए, एथी जोध जीत्यो नवि जाए ॥ वली नाग साह्य जो पामी, वढता काये न राखे खामी ॥ २८ ॥ वसुदेव तणा भट जेह, रे तो नासी गया ततखेव ॥ देखी हियडे रह्या विचारी, कर ए मोटो ए अधिकारी ॥ २९ ॥ वसुदेव विचारे मन, करण मोटो ए राजन ॥ तेज प्रताप करीए पूरो, जो ध लश्करमा अति सूरो ॥ ३० ॥ जोधे जीत्यो ए नवी जाए, वली पाछु पिण न खसाए सापे श्रही वलुदर वे इ, ए उखाणु मिलीउ एह ॥ ३१ ॥ एटले नारदऋषीस र आवे, वासुदेव प्रते बोलावे ॥ शु राय ऊखाणोछो आज, आव्या रण रमवाने काज ॥३२॥ वसुदेव कहे ऋषीदेव, पाए लागीने करी शेव ॥ मे नवी दीठो ज गतमा कोइ, जेवो करण लडेछे सोइ ॥ ३३ ॥ नारद कहे मत विमासो, करण रथे वेठो देव खासो ॥ वाण तुमतणा सरवे भागे ॥ करणरायने एक नवि लागे ॥ ॥ ३४ ॥ हिवे एहनो उपाव करशु, राए चिंत्या सघ ली हरशु ॥ एम कहिने ऋषि सर जाए, प्रभु देखीने व हु सुख पाए ॥ ३५ ॥ मातोली प्रते कहे ऋषीराज, चालो सग्राम देखण काज ॥ देवमा पिण एवो न दे स्यो, वसुदेव करण लडे ते पेखो ॥ ३६॥ एम कहीने ऋषी तेमी आवे, वसुदेव तणे रथ वेठावे ॥ नाग देखत

टो, भीषम उग्रसेन रायने जेटो ॥ १६ ॥ उग्रसेन त
णु दळ मोरे, वली मनुष्य रायना तोडे ॥ दिसे दंडे मु
सदी प्रहार, राय मूर्च्छा पड्यो तेणीवार ॥ १७ ॥ भी
षम युद्धग्रहे पिण नानो, भीषम रणमा न रहे छानो
॥ भीषम मारे हाक रजावे, भीषम सुर सुभट नवी
सारे ॥ १८ ॥ सारथी जोवे नजर पसारी, राय मूर
छी पड्यो दुखकारी ॥ हाहा भीषमे अनरथ कीधो, रा
यने प्रहारज दीधो ॥ १९ ॥ रथथकी वाहेर लीधो, व
ली जळसिची सावध कीधो ॥ एम कीधा घणा उपचार,
राय सुसता थया तेणीवार ॥ २० ॥ करण वसुदेव स
ग्राम भार, जोवा देव आव्या तेणीवार ॥ जोवो मा
णस पिण देव जेवा, सा वढता दीठा तेवा ॥ २१ ॥
करण कोप करी करसाइ, ग्रही मुदगर मूके धाइ ॥
बाणवरी अधिके जोरे, मूके श्रीवसुदेवनी कोरे ॥२२॥
मुदगर आवतो दीठो जाम, हलधरे गदा दीधी ते
ताम ॥ गदा उपाडी ते ताडे, मुदगरने ते चूरए पाडे
॥ २३ ॥ वसुदेव कहे सुणाराय, कर्ण उजोरे पग ठाय
॥ अगन बाण थकी तुजने बारु, सेन सघलीनु क्षा
रज सारु ॥ २४ ॥ डुंगर उपर देवथी पामी, हाथ ली
धु वसुदेवे स्वामी ॥ मूके करण राजानी लार, अगन
झार वहे असराळ ॥ २५ ॥ अगन देखीने देवज ख
शीया, सहु आघा पाछा धशीया ॥ नाग नेरा हता
जे देव, सुर नाशी गया ततखेव ॥ २६ ॥ बाण दे

ए वेहु सबला जाणीने, पामत्र सेवा काजजी ॥ गरव न
जी गुण मनमे आणी, जोरावर शीर ताजजी ॥ ए०
॥७॥ जाणे विजा हरिनेहलधर, महा नेमि नीखट कुमा
रजी ॥ अथवा जमनेजोर भयकर, भीम अर्जुन अवता
रजी ॥ ए०॥८॥ किस्युं अनेरा सुभट वखाणे, एकलो ने
म कुमारजी ॥ लीलाए करी करे भुजाबली, धराणे छत्रा
कारजी ॥ ए० ॥९॥ दमघोष अगज रुकमीयो बेउ,
तुझ कटकमे वल धीरजी; एणे वल दिठो वलभद्र रण
मे, रुखमणीने अपहारजी ॥ ए० ॥१०॥ दुर्योधनने
सकुनि नरेसर, आपणे कटके एहजी ॥ न गणे कोइ सुभ
ट एयारी, सूरवीरमे रेहजी ॥ए०११॥ अंगाधिपती ति
म करण कहीजे, आपणे कटके दुठजी ॥ तेतो कृष्ण कट
क सागर विच, जेणे सोतु मुठजी ॥ ए० ॥ १२ ॥ जेह
नि अच्युतादिक सघला, सेव करे सुरनाथजी ॥ जुद्ध भ
णी कहो कुण सजाइ, श्री नेमीसर साथजी ॥ ए०॥१३॥
दिसे गिरवर कटक सनुरो, जोता सघली वातजी ॥ इणे
उणे कटके घणो घणो अंतर, जाणे दिनने रातजी ॥ ए०
॥ १४ ॥ कृष्णपक्ष आदरीने देवी, मारयो तुझ सुत का
लजी ॥ तेणे मरवे प्रतिकुल दिहाडो, दिसे तुज भूपाल
जी ॥ ए० ॥१५॥ तृण ताणे परे तुझने गणता, जोराव
र असमानजी ॥ मथुराछाडी गया द्वारापुरी, दे सुरपति
सनमानजी ॥ ए० ॥ १६ ॥ गिरीकदर मांहे ते सूतो,
कोइ जगावे सिहजी, उछलतो बलवंत हिवे केम, गणशे

त्रासो मन्न, खडजमीत अति घणु तन्न ॥ ३७ ॥ ते अद्रतणो देव मोटो, कदीए नवी थाए खोटो ॥ जो जीवित राखवी आशा, तो एथी जावो नाशा ॥३८॥ देव नाशी गयो निज भुवन, सूरज आथम्यो हुवो तम ॥ दोइ राजा रथ वाली वरीयां, सज्जन जनमा सहु गिली या ॥ ३९ ॥ एतो ढाल भली रसाल ॥ पुण्यें फले म नोरथ माल ॥ गुणसागर कहेसार ॥ सत्तावनमी राग रसाल ॥ ४० ॥

ढाल ५८ मी ॥ शियल सुंदरमी खरीरे प्यारी, जे पाले नर नारजी ॥ ए देशी ॥ एहवे राजग्रहि पति आगे, बिजा मुहता सगजी ॥ वचन कहे इम हासो मुहतो, करी आलोच अनगजी ॥ ए० ॥ १ ॥ पहिलु पिण अविमासु कीधु, कस मूवो अकालजी ॥ विण आलोच कोया दुख थाये, निश्चे उतर कालजी ॥ ए० ॥ ॥ २ ॥ अरि सबलो निबलो जो एहवो, लेवो जेहनो गुऊजी ॥ ए सबलो-गोपाल बले करी, तेशु इणशुं ऊ ऊजी ॥ ३ ॥ सयवरा मडप रोहिणी, श्री वसुदेव दसा रजी ॥ तुऊ नृपति सघला भाज्या, ए आगे तिणवा रजी ॥ ए० ॥ ४ ॥ जुवटे जीति कोडी इणे तुऊ, सुता जीवाडी भावीजी ॥ इण अहिनाणे, मराव्यो न मूवो, ए वसुदेव सभाविजी ॥ ए० ॥ ५ ॥ जीणथी हुआ रा म अने हरी, नंदन अति बलवतजी ॥ ज्यांने का जे धनदे किधी, पुरी द्वारका कतजी ॥ ए० ॥ ६ ॥

कुनि जने सिंधव नृपनो बल, पुठे रहे गज गाहजी ॥ मगधेश नृप वामे भागे, आगल गए नर नाहजी ॥ ए० ॥ २८ ॥ साधी साधी रहे तिहां नरपति, कटक व्युह पचासजी ॥ विच विचमे रह्या वीजाइ पिण, पुरेवा मननी आशजी ॥ ए० ॥ २९ ॥ जरासींधुए तव थाप्यो, सेनानीने ठामजी ॥ दावल राजा दल बले वलियो, शिसुपाल इण नामजी ॥ ए० ॥ ३० ॥ सुणतां मिठी गोडी रागे, ए सत्तावनमी ढालजी ॥ गुणसागर इणिपरे पभणे, वेधक वचन रसालजी ॥ ए० ॥ ३१ ॥

दुहा ॥ युद्ध करवा चलि सज्ज थया, पाडवादिक परीवार ॥ यादव कुमर चढिया भला, सेन विद्याधर सार ॥ १ ॥ रथ चूरे मुठे करी, हय नाखे परतिड ॥ गज उगाले गयणमे, भाजे सुभटा भीड ॥ २॥ युद्ध करता थाके नहि, चाल्या आगे ताम ॥ डेरा उपर जइ अड्या, जरासिंधुने ठाम ॥ ३ ॥ शिसुपाल नाठो हिवे, थयो कोलाहल जोर ॥ देखीने जरासिंधुनो, कप्यो कालिज कोर ॥ ४ ॥ ॥

ढाल ५८ मी ॥ चेतन ग्यान अजुवालिये ॥ ए देशी ॥ रोसे करी अति रातडो, राणो जरासिंधु तामरे ॥ हुंकारव करी उठियो, मेरुपरे अभीरामरे ॥१॥ राजद आयो जरासिंधुजी, वाजे भभा रण तूररे ॥ जेहवि वादल नि घनघटा, चाले गगने पूररे ॥ रा० ॥ २ ॥ मेघाडवर शिर झलकता, पाखरे जडीया हेमरे ॥ पवन पता

ताहरी लीहजी ॥ ए०॥१७॥ सानली वचन कोप्यो न
प वोले, जरासिंधु धरी खेदजी ॥ सहि सुध तु यादव
फेरव्यो, तिणे देखावे भेदजी ॥ ए०॥१८॥ शत्रुतणा गु
ण काहि माने, विहाम्ये इण वारजी ॥ पिणंर दुरमति
सिंह अव्यासु, स्याल तणो फेकारजी ॥ ए० ॥ १९॥
फिट तोने जे रणथी वारे, आव्या रण अधिकारजी ॥
वालगोपाल गोवाल तियाने, हु मारीश करी वारजी
॥ ए० ॥२०॥ हिवे वोले हंसक मंत्रिसर, गमतो नृप
ने एमजी ॥ अवसर आव्या रणनो कारज, गमे क
त्री केमजी ॥ ए० ॥२१॥ सामेपाइ रणमे नडता, म
रण तिको जस कामजी ॥ नाग्यारो जीवत अकारथ,
होय न आदर ठामजी ॥ ए० ॥२२॥ चक्रव्युह करी
निज कटके, हणस्यु ए शत्रु निकजी ॥ भलो कह्यो
मंत्रिसर मुजने, तु मंत्रि निरभिकजी ॥ ए०॥२३॥ ए
हवे हिंसक रुनक बेहु मुहता, बिजा वीरा जानजी ॥
चक्रव्युह करे नृपने वचने, रीपु पिण असमानजी ॥
ए० ॥२४॥ सहस आरानें ठामे सेहेस नृप, तेहनो ब
हु परीवारजी ॥ एकण राजाने केडे, सहेस पांच अ
सवारजी ॥ ए० ॥ २५॥ दोय सहस रथ तिमहि गय
वर, पायक सोल हजारजी ॥ सवा सेहेस ञ तटक नृ
पति, रहे चक्र नीरधारजी ॥ ए० ॥२६॥ पाच सहेस
मारगने माथे, तुबि विचे मगधेशजी ॥ रहे तिंहा कौ
रव सो बंधव, नृपने दक्षण देशजी ॥ ए० ॥२७॥ स

कुनि जने सिंधव नृपनो वल, पुठे रहे गज गाहजी ॥ मगधेश नृप वामे जागे, आगल गण नर नाहजी ॥ ए० ॥ २८ ॥ साधी साधी रहे तिहा नरपति, कटक व्युह पचासजी ॥ विच विचमे रह्या बीजाहि पिण, पुरेवा मननी आशजी ॥ ए० ॥ २९ ॥ जरासींधुए तव थाप्यो, सेनानीने ठामजी ॥ दावल राजा दल बले वलियो, शिसुपाल इण नामजी ॥ ए० ॥ ३० ॥ सुणतां मिठी गोडी रागे, ए सत्तावनमी ढालजी ॥ गुणसागर इणिपरे पभ्नपो, वेधक वचन रसालजी ॥ ए० ॥ ३१ ॥

दुहा ॥ युद्ध करवा वलि सज्ज थया, पाडवादिक परीवार ॥ यादव कुमर चढिया भला, सेन विद्याधर सार ॥ १ ॥ रथ चूरे मुठे करी, हय नाखे परतिड ॥ गज उगले गयणमे, भाजे सुभटा भीड ॥ २ ॥ युद्ध करता थाके नहि, चाल्या आगे ताम ॥ मेरा उपर जइ आव्या, जरासिंधुने ठाम ॥ ३ ॥ शिसुपाल नाठो हिवे, थयो कोलाहल जोर ॥ देखीने जरासिंधुनो, कप्यो कालिज कोर ॥ ४ ॥ ॥

ढाल ५८ मी ॥ चेतन ग्यान अजुवालिये ॥ ए देशी ॥ रोसे करी अति रातडो, राणो जरासिंधु तामरे ॥ हुकारव करीं उठियो, मेरुपरे अभीरामरे ॥१॥ राजद आयो जरासिंधुजी, वाजे भभा रण तूररे ॥ जेहवि वादलनि घनघटा, चाले गगने पूररे ॥ रा० ॥ २ ॥ मेघाडवर शिर झलकता, पाखरे जमीया हेमरे ॥ पवन पता

ताहरी लीहजी ॥ ए०॥१७॥ सांभली वचन कोप्यो न प बोले, जरासिंधु घणे खेदजी ॥ सहि मुध तु यादव फेरव्यो, तिणे देखावे भेदजी ॥ ए०॥१८॥ शत्रुतणा गुण कांहि माने, विहांके इण वारजी ॥ पिणरे दुर्मति सिंह अव्यामु, स्याल तणो फेकारजी ॥ ए० ॥ १९॥ फिट तोने जे रणथी वारे, आव्या रण अधिकारजी ॥ वालगोपाल गोवाल तियाने, हु माघीश करी वारजी ॥ ए० ॥२०॥ हिवे बोले हंसक मंत्रिसर, गमतो नृप ने एमजी ॥ अवसर आव्या रणनो कारज, वारे मंत्री केमजी ॥ ए० ॥२१॥ साभेपाइ रणमे भडता, मरण तिको जस कामजी ॥ भाग्यारो जीवत अकारथ, होय न आदर ठामजी ॥ ए० ॥२२॥ चक्रव्युह करी निज कटके, हणस्यु ए शत्रु निकजी ॥ भलो कह्यो मंत्रिसर मुझने, तु मंत्रि निरभिकजी ॥ ए०॥२३॥ ए हवे हिंसक भनक बेहु मुहता, बिजा वीरा जानजी ॥ चक्रव्युह करे नृपने वचनें, रीपु पिण असमानजी ॥ ए० ॥२४॥ सहस आरानें ठामे सेहेस नृप, तेहनो बहु परीवारजी ॥ एकण राजाने केडे, सेहेस पाच असवारजी ॥ ए० ॥२५॥ दोय सहस रथ तिमहि गयवर, पायक सोल हजारजी ॥ सवा सेहेस उ तटक नृपति, रहे चक्र नीरधारजी ॥ ए० ॥२६॥ पाच सहेस मारगने माथे, तुबि विचे मगधेशजी ॥ रहे तिहा कोरव सो बंधव, नृपने दक्षण-देशजी ॥ ए० ॥२७॥ स

कुनि जने सिंधव नृपनो वल, पुठे रहे गज गाहजी ॥ मगधेश नृप वामे जागे, आगल गण नर नाहजी ॥ ए० ॥ २८ ॥ साधी साधी रहे तिहा नरपति, कटक व्युह पचासजी ॥ विच विचमे रह्या बीजाहि पिण, पुरेवा मननी आशजी ॥ ए० ॥ २९ ॥ जरासींधुए तव थाप्यो, सेनानीने ठामजी ॥ दावल राजा दल वले वलियो, शिसुपाल इण नामजी ॥ ए० ॥ ३० ॥ सुणतां मिठी गोडी रागे, ए सत्तावनमी ढालजी ॥ गुणसागर इणिपरे पभणे, वेधक वचन रसालजी ॥ ए०॥ ३१ ॥

दुहा ॥ युद्ध करवा वलि सज्ज थया, पाडवादिक परीवार ॥ यादव कुमर चढिया भला, सेन विद्याधर सार ॥ १ ॥ रथ चूरे मुठे करी, हय नाखे पराति ड ॥ गज उगाले गयणमे, भाजे सुभटा भीड ॥ २॥ युद्ध करता थाके नहि, चाल्या आगे ताम ॥ मेरा उपर जइ अव्या, जरासिंधुने ठाम ॥ ३ ॥ शिसुपाल नाठो हिवे, थयो कोलाहल जोर ॥ देखीने जरासिंधुनो, कप्यो कालिज कोर ॥ ४ ॥ ॥

ढाल ५८ मी ॥ चेतन ग्यान अजुवालिये ॥ ए देशी ॥ रोसे करी अति रातडो, राणो जरासिंधु तामरे ॥ हुंकारव करीं उठियो, मेरुपरे अभीरामरे ॥१॥ राजद आयो जरासिधुजी, वाजे भभा रण तूररे ॥ जेहवि वादल नि घनघटा, चाले गगने पूररे ॥ रा० ॥ २ ॥ मेघाडंबर शिर झलकता, पाखरे जडीया हेमरे ॥ पवन पता

का ते फरहरे, उमे वग पक्ति जेमरे ॥ रा० ॥ ३ ॥ शीरपर मुगट धरयो वाकडो, आंरुडे जीडो सनाहरे ॥ केमे कटारो रतन जरुयो, आवी बेठो रथे उछाहरे ॥ रा० ॥ ४ ॥ हय साजे करी साजतो, पाखरीया घ मरोलरे ॥ अपराजीत आदे करी, सूरा सुभटनी को डरे ॥ रा० ॥ ५ ॥ सिहनाद अति मूकतो, घुकतो आयो रण शिमरे ॥ जादव पग पाग खसे, अधिक देखी वल इमरे ॥ रा० ॥ ६ ॥ मगध नरिंद इम उचरे, हणे कटक उजमालरे ॥ कहे हिंसक मुज आगले, कु ण सुभट भूजालरे ॥ रा० ॥ ७ ॥ एहवे हिंसक कर उचो करी, देखामे सुण भूपालरे ॥ कमोत घोडा जे रथ तणा, ते अनादृष्टी रसालरे ॥ रा० ॥ ८ ॥ नि ला अश्वरथी जे हुवे, ते धर्म पुत्र पिछाणरे ॥ धवल अ श्वे अर्जुनजी, धनुर विद्यानो जाणरे ॥ रा० ॥ ९ ॥ निलुतपल अश्व छे भीमना, उभा कोपे विकरालरे ॥ सोवन वर्णे अश्व छे सहि, समुदविजय दयालरे ॥ रा० ॥ १० ॥ हसले घोमे शनो कटकमा, गरुडध्वजे गोविंदरे ॥ दाहीण पाखे तिम रामजी, ताल ध्वज भ ट चदरे ॥ रा० ॥ ११ ॥ इम देखावे सुभटने, पार विगर अनेकरे ॥ मगधेश सुणी धनुष्य आफले, कोप धरी अविवेकरे ॥ रा० ॥ १२ ॥ युवराय मगध नरिंद नो, जवन नामे कहायरे ॥ वसुदेव सुत अक्रुरादिक भणी, हणण काजे धायरे ॥ रा० ॥ १३ ॥ अपरा

सेनानी शिसुपाल हिवे, हसतो जप वाणर, गोकुल न हुवे कान्ह ए, क्षत्रिसो रण जाणरे ॥ रा० ॥ २५ ॥ कृष्ण कहे हिवे नाशतु, नाश पछे अयाणरे ॥ रुक्मीया ने रण तु मिल्यो, चिता नावे प्राणरे ॥ रा० ॥ २६ ॥ मरम वचन शर विधीयो, धनुष्य ताणी शिसुपालरे ॥ शर छेदे हरी रायनो, तेहवे श्री गोपालरे ॥ रा० ॥ २७ ॥ धनुष्य तेम सनाह रथ, छेदे हरी ततकालरे ॥ खड्ग काढीने आहण्यो, मुगट सहित शिसुपालरे ॥ ॥ रा० ॥ २८॥ तेहवे मगधेशराजवी, नाम जरासिंधु तामरे ॥ वध देखी शिसुपालनो, कोपियो रिपुने कामरे ॥ रा० ॥ २९ ॥ निज नरपति सुतशु मीली, मारे सबलो फुजरे ॥ उचे स्वरे कहे यादवा, काइ मरोरे अबूफरे ॥ रा० ॥ ३० ॥ हजी लगे काइ नवी गयो, आपो वेहु गोवालरे ॥ सुखे रहो इम सानली, यादव कोपे करालरे ॥ रा० ॥३१॥ हणो हणो करता धाइया, छेडता बहु तिररे ॥ तेहवे मगधनो महिपति, युद्ध घोर करे रणधीररे ॥ रा० ॥ ३२ ॥ मागधेश सैन्य दीसोदिशे, नाजियो इम प्रतिकुलरे, तिम रहि नवी शक्यो कोइ मुखे ॥ वाय मुखे जिम तुलरे ॥ रा०॥ ॥३३॥ जरासिंधु सुत रामने, रोके तिहा अष्ठावीसरे ॥ गुणहत्तरी सुतहि मिली, कृष्णभणी शुं जगीसरे ॥ रा० ॥ ३४ ॥ घोर फूज थयो तिहा, रामदले हिवे खेचीरे अष्ठावीस ए कुमारने, पिसे मुसल सींचिरे ॥ रा०॥३५॥

मगधेश कहे गोवालिया, तुमहारे मुझ नदरे ॥ इम कहीने मारी गदा, राम पाड आक्रदरे ॥ रा० ॥ ३६॥ गदाघाते लोही वहे, यादव कटके तामरे ॥ हाहारव सूराकरे, कहेतां मुख श्रीरामरे ॥ रा० ॥ ३७ ॥ ते हवे देखी रामने, कोपियो श्रीगोपालरे ॥ गुणहत्तरी ये कुमारने, हणे सबल ततकालरे ॥ रा० ॥ ३८ ॥ जरासिंधु चित चिंतवे, मरसे वलि इण ध्यायरे ॥ अर्जुन मारयो शु होवे, कृष्ण हणु इम धायरे ॥ रा० ॥ ॥३९॥ कृष्ण हणयो इम कटकमे, पसरी सघले वातरे ॥ तेहवे मातलिने मने, विनति करे विख्यातरे ॥ रा० ॥ ४० ॥ साम्राज आपो प्रभु एहने, हरीनो संशय जायरे ॥ स्वव करे यादव चमुरे, धरणी गगन शोभायरे ॥ रा० ॥ ४१ ॥ सूरि गुणसागर एक हि, वादु, अठावनमो ढालरे ॥ हिवे नवी तुह्मे साभलो, प्रभुलीला गुण मालरे ॥ रा० ॥ ४२ ॥

दुहा ॥ नेम कथने मातुली हिवे, रथ फेरे रण माह ॥ तिर वाह सबलि करे, सामी सहेज उछाह ॥ १ ॥ एकले पिण सामीये, भाज्या लाख नरिंद ॥ जरासिंधुने नवि हणयो, हणशे तसु गोविंद ॥ २ ॥ कृष्ण हणे प्रति कृष्णने, राखे प्रभुनो मान ॥ रथ स्यु रोक्या स्वामीये ॥ शत्रु तणा राजान ॥ ३ ॥ ताम वगोहा छुटिया, यादव नृप जय गेह ॥ अनुज हणियो पाडवे, लडतां रणमें जेह ॥४॥ सुख थयो बलदेव पुण, उपाडी निज

सेनानी शिसुपाल हिवे, हसतो जप वाणर, गोकुल न हुवे कान्ह ए, क्षत्रिसो रण जाणेर ॥ रा० ॥ २५ ॥ कृष्ण कहे हिवे नाशतु, नाश पठे अयाणरे ॥ रुकमीया ने रण तु मिल्यो, चिंता नावे प्राणेरे ॥ रा० ॥ २६ ॥ मरम वचन शर विंधीयो, धनुष्य ताणी शिसुपालरे ॥ शर छेदे हरी रायनो, तेहवे श्री गोपालरे ॥ रा० ॥ २७ ॥ धनुष्य तेम सनाह रथ, छेदे हरी ततकालरे ॥ खड्ग काढीने आहण्यो, मुगट सहित शिसुपालरे ॥ ॥ रा० ॥ २८ ॥ तेहवे मगधेशराजवी, नाम जरासिंधु तामरे ॥ वध देखी शिसुपालनो, कोपियो रिपुने कामरे ॥ रा० ॥ २९ ॥ निज नरपति सुतशु मीली, माण्डे सबळो झुजरे ॥ उचे स्वरे कहे यादवा, काइ मरोरे अबूझरे ॥ रा० ॥ ३० ॥ हजी लगे काइ नवी गयो, आपो वेहु गोवालरे ॥ सुखे रहो इम सांभली, यादव कोपे करालरे ॥ रा० ॥३१॥ हणो हणो करता धाइया, छोडता बहु तिररे ॥ तेहवे मगधनो महिपति, युद्ध घोर करे रणधीररे ॥ रा० ॥ ३२ ॥ मागधेश सैन्य दीसोदिशे, भाजियो इम प्रतिकुलरे, तिम रहि नवी शक्यो कोइ मुखे ॥ वाय मुखे जिम तुलरे ॥ रा०॥ ॥३३॥ जरासिंधु सुत रामने, रोके तिहा अठावीसरे ॥ गुणहत्तरी सुतहि मिली, कृष्णजणी शुं जगीसरे ॥ रा० ॥ ३४ ॥ घोर झूज थयो तिहा, रामदले हिवे खेंचीरे अठावीस ए कुमारने, पिसे मुसळ सींचिरे ॥ रा०॥३५॥

बल लेवा ए, उन्ना आकाशे बलदेवा ए, गयणे दे-
वा ए जोवा मीलिया कौतकी ए ॥ हरीये तव सना-
री ए, कुऊ मच्यो अति नारी ए, घ्याज अटारीए
देखी नाठा जोतकी ए ॥ ७ ॥ वेहु सामा रथ फेरे
ए, फेरता ठल हेरे ए, बहु तेरे ए शस्त्र कुऊ करे स-
हि ए ॥ नृप मागधीने काजे ए सबलपणे हरी राजे
ए, शीर ताजे ए कीयो शस्त्र मन उमही ए ॥ ८ ॥ म
न विलखो अती थावे ए, जरासिंधु रीसावे ए, स
वाइ ए चक्र सनारे एहवे ए ॥ चक्र हाथे आवे ए,
ागधेश मन नावे ए, सनावे ए वचन कहे इम तेह
वे ए ॥ ९ ॥ मथुरा माहि जारक ए, रहेतो करी घ-
णी ठारक ए, कस मारकए आव्योवुं इहा एकलो
ए ॥ वैर पूर्वनु मातो ए, तिणे घणी मुज वातो ए,
रखे जातो ए मार्ग जाणी वेखलो ए ॥ १० ॥ हिवे न
मु कुलआरो ए, करवा टिपणो तारो ए, कहेवु सा
रो ए रण साधेळे थइने नलो ए ॥ इम घणु ललकारी
ए चक्र नमाडी नारी ए, ननचारी ए नाखे राखी
आमलो ए ॥ ११ ॥ खेचर देखि त्रासे ए, सैना
जन सहु नासे ए, तसु पासे थे सूरा पग माडी
रह्यो ए ॥ चक्र उपद्रव टाले ए, पांख्व ठना निहा
ले ए, तसु खाले ए शस्त्र तणी धारा वहे ए ॥
॥ १२ ॥ गयणा गण गाजे ए, चक्र तणे आवाजे ए,
विराजे ए आवी उनो हरी आगले ए ॥ वधव परे

रीस ॥ जग करते ऋाहृण्यो, रणयोरी रीपु इम ॥ ५ ॥

ढाल ५९ मी ॥ देखी दुरगध दरथी, मुह मच॰ कोडे माणरे ॥ ए देशी ॥ हिवे मगधेश नरिंदो ए, क हे सुण गोविंदोए, ऋानदो ए ताहरी मायाये वणो ए॥ हृणियो कस ज्जुजालो ए, हणियो तिमज कालो ए, ए जालो ए सघलोहे माया तणो ए ॥ १ ॥ शिर्वायो र ण नाहि ए, ठले सूर कहाहि ए, हिवे वाहिण जो जो हृम स्त्रि तणो ए ॥ तुऊ प्राण सेति ए, वे माया जे ति ए सवि तेति ए, तिने मेलु तु धणी ए ॥ २ ॥ उं त्री तणी वाचा ए, पुराउ मन साचा ए ॥ ते काचा ए जाण्या मानु गोवालिया ए ॥ हृशी माधव इम बो॰ लेए, शु न्नूपति तु वोले ए, किण तोले ए साचा वोल सन्नालिया ए ॥३॥ हृतो माया जालो ए, नहि कूडो न्नूपालो ए, सन्नालो ए थेतो रजवट ऋापणीये ॥ ऋाप ण ऋधीकाई ए, ते परने न कहाई ए, पिण न्ना॰ इ ए तु जोजे वडाइ हृमतणी ए ॥ ४ ॥ तुऊ ऋाग॰ ल ऊपावु ए, तो हु कान कहावु ए, सराहु ए तुम पुत्री वाता खरी ए ॥ इम मरमनी वाणी ए ॥ हरी मु॰ खथी सहु जाणी ए, सर ताणी ए बहु मुके ऋती रो से करी ए ॥ ५ ॥ बेहु मिली सर गोडे ए, रणने हो॰ डा होडे ए, तिम त्रोफे ए तिर धनुष्य एक एकना ए ॥ बेहु सबल बिहावे ए, जल रासि खोन्नावे ए, कपा॰ वे ए गीरी खेचर नामना ए ॥ ६ ॥ देव व्यतर

ए ध्यान रुद्र नरेशनो ए॥ १९ ॥ जय जय शब्द करत ए, सुरनर मिलो हरखत ए, करतत ए फूल वर्षा हरी उपरे ए॥ यादव कुल विशाल ए, उपना एह नृपाल ए, महिमाल ए जिणे दिठां दिलडु ठरेए॥ ॥ २० ॥ समुद्रविजे सहु राय ए, करे दिलासा जाय ए, करे राय ए प्रेत कार्य जरासींधुनो ए॥ ए गुणसठमी ढाल ए, हरी हलधर जस माल ए उजाल ए, गुणसागर गुण एहनो ए॥ २१ ॥

दुहा ॥ नृप विणास्यो भुजवले, किधो न्यारे काम ॥ सुरनर जय जय उचरे, वाजे सुजस ददाम ॥ १ ॥ घर घर बार वधामणा, घर घर मंगल चार ॥ गीत घणा हरजी तणा, गावे गुणी अपार ॥ २ ॥

ढाल ६० मी ॥ झुमखडानी देशी ॥ रंगीला खेलणा ॥ ए देशी ॥ नरेश्वर जीत्यारे, जीत्यो जल मडाण॥ न० ॥ राय सकल आवी नम्यारे, दिधा बहु सनमान ॥न०॥१॥ पूज्यो मातली सारथीरे, स्वर्गे पोहत्यो जाय ॥ न० ॥ स्वामि प्रशंसा सांभलीरे, सुरपतिने सुख थाय ॥ न० ॥ २ ॥ सहदेवादिक सुत भलारे, राजग्रही थापत ॥ न० ॥ महानेमी कुमर भणीरे, सौरीपुर आपत ॥न० ॥ ३ ॥ पांडव राय परगडारे, दिधा वंछित देस न० ॥ अवरा सहुने सामीजीरे, आपे देश विशेष ॥ न० ॥ ४ ॥ चक्र बले चित चावशुरे, तीने खंड अखंड ॥ न० ॥ साधीने प्रभु आवियारे, कोटी सिलाए प्र

सुहावे ए, देखि हरी मन भावे ए, लेइ वधावे ए च क मणि मुक्ताफले ए ॥ १३ ॥ यादव कटक तेवारो ए, हरख्यो सहु ससारो ए, नरनारी ए मिलिश्रोच्छ करे घणो ए ॥ सूर मिलि गुण गावे ए, फूल पगर वरसावे ए, नळ भावे ए करे महिमा हरजी तणी ए ॥ १४ ॥ गगन तले इम वाणी ए, कहे प्रगट्यो गु ण खाणी ए, महिराणी ए वासुदेव नवमो सहि ए॥ हरख्या यादव रायो ए, पञ्या निशाणे घाउ ए, म नराउ ए जरासिंधु चिता लहि ए ॥ १५ ॥ हरी क हे करो राज ए, में गइ किनी श्राज ए सुण रा ज ए, श्राण वहे तुह्मारी ए ॥ हठ अधीक मति ताण ए, जीव तणा कल्याण ए, इम वाण एवी सुणी कोप्यो प्रतिहरी ए॥ १६ ॥ रे मूरख स्यु भा खेए, अणघटतु इम आखे ए, दिन भाखे ए किम खत्री रण आवियो ए ॥ पुण्य विल्या इणि वार ए, तो कुण राखण हार ए, निरधार ए टेक न मुके राजीयो ए ॥ १७ ॥ चक्र मेले हरी रायए, रिपु न णी मन लाय ए, ते जावेए लेवा शीर वैरीतणो ए ॥ मोटाने शिर आइ ए, पुण्य खुटा इम ध्याइये, सु णो भाइ ये शस्त्र परायो आपणो ए ॥ १८ ॥ चक्र आयो जिहा राजा ए, करतो अधिक अवाजा ए, तजी माजाये शिर छेदे मगधेशनो ए ॥ पामी मर ण अकाम ए, उपन्यो चोथे ठाम ए, जाणो ताम

नारे, पति शेव्यानो लोभ ॥ न० ॥ १६ ॥ ए च्यारे आदे करीरे, रमणी रूप अपार ॥ न० ॥ श्री वलभ द्रजी तणीरे, नारी आठ हजार ॥ न० ॥ १७ ॥ इन्द्र तणा सुख भोगवेरे, पूरव पुण्य प्रकार ॥ न० ॥ आनद रग विनोदमारे, पाले राज मुरार ॥ न०॥१८॥ दुर्योधन नामे भलोरे, कुरु जगलनो राय ॥ न० ॥ दूत तेहनो आवीयोरे, लाग्यो हरीजी पाय ॥ न०॥१९॥ कागद दुर्योधन तणारे, माहे एह विच्यार ॥ न० ॥ म्हारे तुम ठाकुर धणीरे, थासु प्रेम अपार ॥ न० ॥ ॥ २० ॥ प्रेम वधामण कारणेरे, मुजने उपजी एह ॥ न० ॥ गेरुना सवधथीरे, निश्चे किजे नेह ॥ न० ॥ ॥ २१ ॥ थारे पटराणी तणोरे, पूत पनोतो होय ॥ न० ॥ मुझ नारी कुमरी जणेरे, व्याह करेवो सोय ॥ न०॥ ॥ २२ ॥ दैवजोगे एहवो हुवेरे, मुझ त्रिय जणे कुमार ॥ न० ॥ तुम्ह नारीने पुत्रीकारे, तोपिण व्याह विच्यार ॥ न० ॥ २३ ॥ हरी हरखी बोल्यो साहिरे, ए वारु विधी वात ॥ न० ॥ दोय घरा वधामणारे, आनदमे दिन जात ॥ न० ॥ २४ ॥ ए साठमी ढालमेरे श्रीहरीजी सुख राज ॥ न० ॥ श्रीगुणसागर सूरिजीरे, सवही विधी सुभ साज ॥ न० ॥ २५ ॥

दुहा ॥ दोगधक सुर निपरे, विलसे भोग अपार ॥ रुखमणी उरे उपजे, श्री परजुन कुमार ॥ १ ॥ भामाने मन भावतो, भानु भलो गुण जाण ॥ एहनो पि

चड ॥ न० ॥ ५ ॥ उचि जोजन एकमीरे, छात्री चो डी जाण ॥ न० ॥ च्यार आगुल धरती थकीरे, उपाडी वल प्रमाण ॥ न० ॥ ६ ॥ वरस आठ लगे सहीरे, करता दिगजय देख ॥ न० ॥ खेम कुशल घरे आवि यारे, तेज प्रताप विशेप ॥ न० ॥ ७ ॥ दरू सुनद धनुष्य नलीरे, चक्र सुशक्तिसु चग ॥ न० ॥ शख गदा हरजी तणारे, साते रत्न शुचग ॥ न० ॥ ८ ॥ सहस सहस वर देवतारे, रत्न तणा रखवाल ॥ न० ॥ ए आठे हजारशुरे, सेवीजे गोपाल ॥ न० ॥ ९ ॥ रत्नशु मा ल गदा नलीरे, हलमुसल वर रत्न ॥ न० ॥ हलधरना ए जाणीएरे, च्यार रत्न सुयत्न ॥ न० ॥ १० ॥ य क्ष हजारे शेवीएरे, च्यारे श्री बलदेव ॥ न० ॥ महीय ल महीमा महमहेरे, सारे सुरनर शेव ॥ न० ॥ ११ ॥ हयवर गयवर रथवरुरे, सख्या लाख बयाल ॥ न० ॥ पायक पौढ प्रतापशुरे, कोडी कह्या अडताल ॥ न० ॥ १२ ॥ सोल सहस सोहामणारे, देश महा अभीराम ॥ न० ॥ राजाजे पिण तेसलारे, शेवक रूप स काम ॥ न० ॥ १३ ॥ सत्यभामाने रुकमणीने, जाबु वती गुण जाण ॥ न० ॥ गोरी गधारी नलीरे, पदमा वती प्रधान ॥ न० ॥ १३ ॥ सुसीमा लखमणा कही रे, आठे नारी उदार ॥ न० ॥ सोल सहस रमणी तणारे, माधवजी भरतार ॥ न० ॥ १५ ॥ बधुमतीने रेव तीरे, सीता सुंदर शोभ ॥ न० ॥ वर राजीव सूलोच

क स्वर त्रणी, आंबा केरो मोर हो ॥ ना० ॥ ९ ॥ कहशे ते सहशे सही, आपा अलगी एह हो ॥ ना० ॥ रुखमणी तो रस रंगमे, वचन वदे ससनेह हो ॥ ना० ॥ १० ॥ माहरे तो भामा वडी, भामा जेह सुहाय हो ॥ ना० ॥ सो में करवो सहि करी, कहे भामासु जाय हो ॥ ना०॥११॥ हरी हलधर साखी दिया, सो का पाडी होड हो ॥ ना०॥ दीन न पिगएयो आपणो, किम पोहोचे मन कोड हो ॥ ना० ॥ १२ ॥ कोमल सेजे सोवता, रजनीने अवसान हो ॥ ना० ॥ रुखमणी सुपन विलोकीयो, पेहेले देव विमान हो ॥ ना० ॥ १३ ॥ विजो कुंजर इद्रनो, देखी सुपन ए सार हो ॥ ना० ॥ आनंदि मन आपणे, विनवियो भरतार हो ॥ ना० ॥ ॥ १४ ॥ कृष्ण कहे कामनी सुणो, सुपन तणो प्रमाण हो ॥ ना० ॥ होशे कुंवर कुलातिलो, कोटि कला गुण जाण हो ॥ ना० ॥ १५ ॥ मुक्ताफल सुक्ता विशे, आइ उपजे जेम हो ॥ ना० ॥ कामदेव माता उदरे, आवी उपनो तेह हो ॥ ना० ॥ १६ ॥ मधु नृपतिनो जीव जे, जणनीने सुखकार हो ॥ ना० ॥ स्वर्ग बारमां वीचथी, आवी लीयो अवतार हो ॥ ना० ॥ १७ ॥ भामाही सुपना लह्या, देख्या पुण्य प्रकार हो ॥ ना० ॥ नृपतिने जाइ कह्यो, नृपति कह्यो सुविचार हो ॥ ॥ ना० ॥ १८ ॥ स्वर्ग थकी चवी आवियो, ए पिण जीव उदार हो ॥ ना० ॥ होड जीतवा कारणे, आशा

ए सवधवर, साभळवो धरी कान ॥ २ ॥ नामाने श्रा रति घणी, नामा करे उपाय ॥ ध्मरल आपणम प म्हे ए जग प्रकट कहेवाय ॥ ३ ॥

ढाल ६१ मी ॥ हमीरानी देशी ॥ नामा ळल ता के घणा, रुखमणीना नीसदिश हो ॥ नामा० ॥ वा त्त न वाको करी शके, जो सवलो जगदीश हो ॥ ॥ ना० ॥ १ ॥ दुर्योधननी वातनो, नामा नेद लहाय हो ॥ ना० ॥ रुखमणी दु ख देवा नणी, नाएयो एह उपाय हो ॥ ना० ॥ २ ॥ जेहनो कुवर परणशे, सो क्य तणा शिर केश हो ॥ ना० ॥ तेहना पग तले माडवा, ए दु ख ठाम विशेप हो ॥ ना० ॥ ३ ॥ वये करी तनु करी हु वमी, माहरे होशे नद हो ॥ ना०॥ रुखमणीने होशे नहि, आनदे आनद हो ॥ ना० ॥ ॥ ४ ॥ इम जाणी रुखमणी कन्हे, वेगे मोकली दासि हो ॥ ना० ॥ वात जणावी रुखमणी, दीधी अति साबा श हो॥ना०॥५॥मे अनुमाने विचारीयो, नामा नोली श्रा हि हो ॥ ना० ॥ खल खावानो मोहलो, शाह सुदर नाम हो ॥ ६ ॥ ऊचा ऊची वाळना, नीचा नीची जाण हो ॥ ना० ॥ ऊचा नीची मति नजे, तो होइ ऊर्चिति हा एहो ॥ ना० ॥ ७ ॥ सुकना माहि शिरोमणी, वाणी सुकन सुहाय हो ॥ ना० ॥ सुख दुखना अनुसारथी, वाणी ऊपजे श्राय हो ॥ ना० ॥ ८ ॥ हाम अछे जो होमनी, का नवी पाडे ऊर हो ॥ ना० ॥ का ननखे पि

एटले जगपति जागीयो, उठि बेठो होय हो ॥ ना० ॥ चिरजीवो काहि बोलिया, रुखमणीना नर सो य हो॥ ना०॥ ३०॥ देव वधाइ पाइये, रुखमणी जा यो नद हो॥ ना०॥ नदन निरखण सारीखो, दरशन परमानद हो ॥ ना० ॥ ३१ ॥ राज चिन्ह गमी करी, अवर अनोपम वस्तु हो॥ ना०॥ पुत्र वधाऊआ नणी, आपी राय समस्तु हो ॥ ना०॥३२॥ जाणी सचल पाव ले, वाकि ग्रीवे जोय हो ॥ ना०॥ नामा सुत जाया तणी, लीये वधाइ सोइ हो ॥ ना०॥ ३३ ॥ एतो एकसठमी कही, ढाल नलेरी होय हो ॥ ना०॥ कहे गुणसागर दो य घरां, आनंद बरत्यो जोय हो ॥ ना० ॥ ३४ ॥

दुहा ॥ कृष्ण नरेशर इम नणे, शेवक सुणो वि चार ॥ मत्रीसर बोलाइ ल्यो, वेगे मतलावो वार॥ १॥ मत्रीसर आया सहु, नरपति दिये आदेश ॥ पुत्र महोछव पुर तणी, शोना करो सुविशेश ॥ २ ॥

ढाल ६२मी ॥ राजा दसरथ दिपतो ॥ ए देशी ॥ पुत्र महोछव किजीए, मिलीयो सहु परीवारोरे ॥ रुखमणी सतनामा तणे, मदीर हर्ष अपारोरे ॥ पु० ॥ याचक जन जुगतशुं, दिजे वछीत दानोरे ॥ करुणा नावे कृ ष्णजी, मूक्या वधीवानोरे ॥ पु० ॥ २ ॥ तोरणनी र चन. नलो, उपर कलस उदारोरे ॥ लहलहति ध्व ज अति घणी ॥ दिसे घर घर वारोरे ॥ पु० ॥३ ॥ ठोके रचना केलिनी, नारी नणे गुण गाथोरे ॥ आर

धरे अपार हो ॥ जा० ॥ १९ ॥ पुण्य प्रमाणे डोहला, गुरु वादे पोशाल हो ॥ जा० ॥ दान शीयल तप भाव ना, चउविह धर्म रसाल हो ॥ जा० ॥ २० ॥ श्री जि न सेवा साचवे, सवर साधे प्रित हो ॥ जा० ॥ आश्र वा अलगी रहे, एतो मोठी रीत हो ॥ जा० ॥ २१ ॥ उदर वसता गर्भ ए, रुखमणी मन उल्हास हो ॥ जा० ॥ आरीसा प्रतीबिंब ज्यु, पेट न पीड़ा तास हो ॥ जा० ॥ ॥ २२ ॥ गर्भ वधे दीन दीन प्रत्ये, उदर न वाधे र च हो ॥ जा० ॥ त्रवलि पेटे विलोकता, शोक लिख्यो परपच हो ॥ जा० ॥ २३ ॥ एवे जूठा पट पटा, नहि गर्भ अहिनाण हो ॥ जा० ॥ पिण तो माथो मुकता, जास सयल सयाण हो ॥ जा० ॥ २४ ॥ साचाने सो च नहि, जूठा सोच अनेक हो ॥ जा० ॥ साचा सर ल सभावीया, सोच न व्यापे एक हो ॥ जा० ॥ २५ ॥ दिन पूरे सुत जनमीयो, शुभ वेला शुभ वार हो ॥ ॥ जा० ॥ रुखमणी अती सुख पाइयो, परीयण हरख अपार हो ॥ जा० ॥ २६ ॥ पुरुष वधाउ आविया, भूपति पासे जाम हो ॥ जा० ॥ प्रभुजी पोढ्यो पे- खियो, पग तले बेठा ताम हो ॥ जा० ॥ २७ ॥ भामाना पिण आविया, मोठा पुरुष प्रधान हो ॥ जा० ॥ शीराणे तें जइ कीयो, बेसणनो मडाण हो ॥ जा० ॥ जेहना ठा कुर जेहवा, तेहवा चाकर होय हो ॥ जा० ॥ जो नृपति जो मानवी, एतो परतक्ष जोय हो ॥ जा० ॥ २९ ॥

णं ॥१॥ भली रीत ए पारको, दु ख देख्यो नवी जाय ॥ होइ तो भलपण करे, नहीतर अलगो थाय ॥ २ ॥

ढाल ६३ मी ॥ कदीए मिलशेरे मुनिवर एहवा ॥ ए देशी ॥ कर्म आगे बलीयो कोइ नही, राव रं क एक साथोरे ॥ रुखमणी सुतसुं सुख निंद्रा भजे, किशुं करे जगनाथोरे ॥ क० ॥ १ ॥ रमणी रंगेराती ज गावही, गावे गीत उदारोरे ॥ वाजे मादल धोंधोंका रशुं, नाचे पात्र अपारोरे ॥ क० ॥ २ ॥ सुभट घणा घ र पासे मूक्या, रखवालीने काजोरे ॥ विविध प्रकारे आयुध धरिने, सूर रह्या सजी साजोरे ॥ क० ॥ ३ ॥ करी हुशीयारी कृष्ण नरेश्वरु, सुख निद्रावसे थाइरे ॥ अन्त्र कथातर एतले वितीयो, रुखमणीने दुख दाइरे ॥ क० ॥ ४ ॥ हेमरथ राजा आगे जे हुतो, इंदुप्रभा तस राणीरे ॥ मधु राजाए जोर करी घणु, सो राणी घ र आणीरे ॥ क०॥५॥ मोह वसे सो हेमरथ राजीयो, ता पसना व्रत धारीरे ॥ सुरगति पदवी लाधी रुअमी, करणी तो फल कारीरे ॥ क० ॥ ६ ॥ बेशी विमाने सो सूर एकदा, निज लीलाए जायोरे ॥ रुखमणी मंदीर उपर आवीयो, एतले विमान थभायोरे ॥ क०॥७॥ दे व विशेपे चिंतातुर थयो, किम मुझ गतीनो भंगोरे ॥ का को हेठेरे दुखीयो जीवअछे ॥ केको शत्रु विरंगोरे ॥ क० ॥ ८ ॥ केको मित्रज कष्टे पूरीयो, चरम शरीरी दे होरे ॥ मोटा मुनिवर सुरगतो भगनो, कारण भाख्या

ए कारण साचवे, कुमना दिए टाटोरे ॥ पु० ॥ ४
गुहीर स्वरे तव गोरमी, गावे मगल श्यागेरे ॥ ध
ल दिए तस आगणे, वरते जय जय कारोरे ॥ पु०
॥ ५ ॥ सहु सुहागण मामटी, नागे आरुत्रणो लावे
रे ॥ दोय घरा अति पूरतो, ते तो आदर पावेरे ॥
॥ पु० ॥ ६ ॥ ढोल ददामा ढडवडे, सरणाइ सुख का
रोरे ॥ वाजा वाजे अति घणा, नाचे पात्र अपारोरे
॥ पु० ७ ॥ दिजे सोना सावटु, वागा वेस विशेषेरे ॥
दिजे हयवर हाथीया, मांहो माहि आदेखोरे ॥ पु० ॥
॥८॥ तुवा भतीजी भाणेजी, वेटी वहुने बोलावेरे ॥ रित
भात अने प्रितशु, आप आपणी पावेरे ॥ पु० ॥ ९॥
सज्जन सहु सतोषीया, सतोष्या सहु भाइरे ॥ यथा यो
ग्य जे जाणीया, दिधी तास वधाइरे ॥ पु० ॥ १० ॥
पुज्य पुरुष ते पूजीया, सह गुरु सेवा साधीरे ॥ सा
हामी वछल मन मानीया, कुल देवी आराधीरे ॥ पु० ॥
॥ ११ ॥ हुस मनावी अति घणी, खाति न राखे का
इरे ॥ पिण तो देवा उपहरया, कोण सके न रहाइरे
॥पु०॥१२॥ एहवे रग विनोदमा, करता कोडी प्रकारोरे
॥पाच दिहाडा वोलीया, छठीनो अधीकारोरे ॥पु०॥१३॥
एतो बासठमी भली, ढाल कहावे सारोरे ॥ गुणसागर
कहे साभलो, केम होवे अपहारोरे ॥ पु० ॥ १४ ॥

दुहा ॥ रुखमणी नदन अपहरण, महा वडो दु ख
जाण ॥ सूजे आप आथमी गयो, पसरयो जग तम आ

दुहा ॥ पुण्य सवाई जेहनो, तेहनो पूरो आय ॥ वाल न वाको करी शके, जइ रुसे जमराय ॥ १ ॥ भावे को भल पण ग्रहो, ग्रहो बूरापण कोय ॥ सरज्याना अनुसारथी, भलो बूरो जग होय ॥ २ ॥ जात मात जलवाहिया, कुस कर्ण नीज माय ॥ पिण ते शुभ कर्मा थकी, हुआ वडेरा राय ॥ ३ ॥ जीवाभे तो सिलातले, मारे प्रभु ते जोय ॥ मदन सगरना नंद ज्यु, करता करे सो होय ॥ ४ ॥ रुपाचल दक्षण दिशे, मेघकुट पुर नाम ॥ जमसवर राजा भलो, राज करे गुणधाम ॥ ५ ॥ तेहने घर जल भामनी, कनकमाला सुकुमाळ ॥ बेसी विमाने दपति आय गया ततकाल ॥ ६ ॥ बालक मुखने वायरे, ऊची नीची थाय ॥ प्रौढि शिला ते परगडी, ताम विलोकी राय ॥ ७ ॥ उपाडी अलगी करी, दीठो देव कुमार ॥ सब विध सुदर मनोहरु, करतो हास्य अपार ॥ ८ ॥

ढाल ६४ मी ॥ पवडीयाकी देशी ॥ मो मन मोह्यो मोहमा, मोहन रूप रसाल हो ॥ खेचर खेचरणी सु कहे, लाल सबे विधी लाल हो ॥ मो० ॥ १ ॥ कोमल कुनल वाकमा, शाम महा सुकुमाल हो ॥ आठमकेरो चदलो, भाल भलो सुविसाल हो ॥ मो० ॥ ॥ २ ॥ भूह भमरकी ढपमा, कर्ण सुवर्णाकार हो ॥ नयन कमल दळ पाखडी, सुक नाशा सुविचार हो ॥ मो० ॥ ३ ॥ मुख जाणे पूरो शशी, आवे लाल कपो

एहोरे ॥ क० ॥ ९ ॥ ज्ञान करी तब देखे देवता, मधु राजानो जीवोरे ॥ रुखमणी पासे बाळक पेखीयो, जाग्यो धेख अतिवोरे ॥ क०॥ १ ॥ इण पापीडे मदमाते घणु, मुजसु कियो जोरोरे ॥ एहने ते फल आज देखाडसु, किया पाप अघोरोरे ॥ क० ॥ ११ ॥ तब तो ए नृप हुतो समर्थ, हु असमर्थ ते वारोरे ॥ अब तो हुवु समर्थ अति घणु, ए असमर्थ अपारोरे ॥ क० ॥ ॥ १२ ॥ एम जाणीने वेरे द्वेषशु, लिनो बाळ कुमारोरे ॥ रुखमणीनी गती आगेथी ॥ किणहि न जाणी सारोरे ॥ क०॥१३॥ किउ किजेरे साजन सुभटसु, आडवर उगाहोरे ॥ सहु तारागण अवर देवता, चन्द्रग्रशी जे राहुरे ॥ क० ॥ १४ ॥ आशा को केहनी मति करो, आशा प्रभुने हाथोरे ॥ रुखमणी सुत कुण मनोरथे, जाग्या आथन साथोरे ॥ क० ॥ १५ ॥ सुर आकाशे जाइ चिंतवे, कुण कुण जाणस्ये मारुरे ॥ चरम शरीरी पूरो आउखो, ए जिन वचने वारुरे ॥ क० ॥ १६ ॥ तक्षक पर्वत खदीराअटवीमे, आयो ते ततकालोरे ॥ बावन हात मोटी शीला तले, सुर चाप्यो ते बालोरे ॥ क० ॥ १७ ॥ निज कृत कर्मनो फळ भोगवे, एम कही गयो तेहोरे ॥ पुण्य विशेषे नख शिख लगे सहि, आलन आवी देहोरे ॥ क० ॥ १८ ॥ एतो त्रेसठमी ढाले जाणीयो, मदन हरण अधीकारोरे ॥ श्री गुण सागर ए उपदेश अखे, पुण्य वडो संसारोरे ॥क०॥१९॥

मुह अने शीर चुबता, राजा अति सुख थाय हो ॥ मो० ॥ १५ ॥ राजा राणीसु कहे, तुठ तुठो कीरतार हो ॥ सर्व सुलक्षण गुण निलो, दीधो एह कुमार हो ॥ मो० ॥ १६ ॥ राणी राजासु कहे, थारे बहुला पूत हो ॥ सघलामे ए नान्हडो, किसो वधे घरसूत हो ॥ मो० ॥ १७ ॥ राजा मुख तबोलशु, तिलक कीयो शिर ताम हो ॥ युगराजा पद थापियो, राणी जाणी उल्लास हो ॥ मो० ॥१८॥ दुर्जन रुठो स्यु करे, जेहना शुभ अकुर हो ॥ मयगल जिहा जिहा सचरे, तिहा तिहां वाधे नूर हो ॥ मो० ॥ १९ ॥ राणी बालक झीलीयो, जाणी जाचो रयण हो ॥ प्राण थकी प्यारो खरो, पामी अधीको चयन हो ॥ मो० ॥ २० ॥ राजा मदिर आवीयो, मिलियो सहु परीवार हो ॥ राणी नदन जाइयो, वरत्यो जय जयकार हो ॥ मो० ॥२१॥ महा महोत्व माडीयो, वाजे ढोल निसाण हो ॥ मगल गावे गोरडी, दीजे वछित दान हो ॥ मो० ॥ २२ ॥ कीधी शोभा पुर तणी, मिळीया सहु साज हो ॥ बदीखाना छोडीया, कीधा सीधा काज हो ॥ मो० ॥ ॥ २३ ॥ बारसमे दीन थापियो, राजा नाम उदार हो ॥ पर दमवानि कारणे, श्रीप्रद्युम्न कुमार हो ॥ मो० ॥ २४ ॥ जिम जिम वाधे वये करी, तिम तिम वाधे नूर हो ॥ हयवर गयवर साहेबी, कण कचन भरपूर हो ॥ मो० ॥ २५ ॥ कमल कमल

ळ हो ॥ दात कली दाडम तणी, अधर प्रवाल अमो
ळ हो ॥ मो० ॥ ४ ॥ ग्रीवा कनु सारखी, उनत अंस
उदार हो ॥ कमलनाली उनिहारडे, वाहु तणो वि
स्तार हो ॥ मो० ॥ ५ ॥ उदर अनोपम शोभतो, क
टि केहरीको लंक हो ॥ जघा गयवर सुन्दसी, तनमे
को न कलंक हो ॥ मो० ॥ ६ ॥ सोवन वान सुहाम
णो, चचल पाणी ज्यु पाय हो ॥ कामदेव ए उपज्यो,
शोभा कहि न जाय हो ॥ मो० ॥ ७ ॥ राता
सात सुलक्षणा, कर पग लोचन अत हो ॥ अधर
होठ नख तालुडे, जिह्वा एनो ए कत हो ॥ मो० ॥८॥
उनत ए खट वे सहि, कक्षा कुख ललाट हो ॥ खाग
नाक उचो हियो, घडीयो देवे सुघाट हो ॥ मो० ॥९॥
दिर्घ पचे देखीए, नयणा सरने बाहु हो ॥ नास्या थ
माने हडवची, लागि न नमे बाहु हो ॥ मो० ॥ १० ॥
सोक्ष्म पच प्रशसीए, पर्वांतरने केश हो ॥ नह देह
दशन वली, सुक्ष्म मृदु सुविशेष हो ॥ मो० ॥११॥
लघु ग्रीवा जघा नलि, लघुहि पुरुषाकार हो ॥ स्वर
गम्भीर सराहीए, नाभी सत्व सुखकार हो ॥मो०॥१२॥
भाल विशाल वखाणियो, पोहले माथे इश हो ॥ पोह
लि दाती बे घणी, लक्षण ए बत्रिस हो ॥ मो०॥१३॥
सर्व गुणाकर सांभलो, सर्वहि शोभ नीध्यान हो ॥
दैत्य महा रिपुजी तणो, दर्शन अमृत पान हो॥ मो०॥
॥ १४ ॥ हेज घणे उठाडयो, लीधो कठ लगाय हो ॥

नों विण बाधवा, घर सुनो विण पूत ॥ पूत
पनोता बाहीरो, कुण राखे घर सूत ॥ वि० ॥ ६ ॥
बहुले मिलीए साजने, हेत घणां गुणग्राम ॥ पूत
पनोता बाहीरो, कुण लेवावे नाम ॥ वि० ॥ ७ ॥ न
ली सपूती पखणी, इडां पालणहार ॥ चुगन लावे
रनी चांचमी, उलीए मुख पसार ॥ वि० ॥ ८ ॥ हुं
का सरजी मनुष्यणी, रे कूडा किरतार ॥ गर्भ मा
हि गाली नही, आपी आरति अपार ॥ वि० ॥ ९ ॥
जन्म समें मूइ नही, झोली न पडी तुट ॥ रोग
तणो कारण लही, न मुइ हियडा फूट ॥ वि० ॥ १० ॥
बाल रमना ख्यालमें, पाती लेवा जात ॥ हु कानड
शी एह रुये ॥ मरी जाती विललात ॥ वि० ॥ ११ ॥
सो का हु आवी हरी घरे, का पाम्यो बहु मान ॥ सो
क सालथी सहेजहि, छूटी जाता प्राण ॥ वि० ॥ १२ ॥
तो का सुपना देखिया, का जायो वरनद ॥ नद तो
आनद करी गयो, किशुं करु मतिमद ॥ वि० ॥ १३ ॥
का हुं अबीकी बजनजी, का में पाडी होम ॥ मु
ऊ दुखिनारीना सखी, कोइ न पुगी कोड ॥ वि० ॥
॥ १४ ॥ वहडी तो हु गीरवरा, नाखतोरे पयाल ॥ आ
वी वावि आगणें, तबही लियो उलाल ॥ वि०
॥ १५ ॥ रे पापिष्ठ अनिष्ट तु, रे दुष्टनिठोर ॥ दैव द
या नाहे तुजकने, राक साये शो जोर ॥ वि० ॥ १६ ॥
हुं जाणीथी माहरे, सहु वाता सुविसाल ॥ खार भरी

जिम सचरे, ज्ञमरो जोगी नाम हो ॥ हाथोहाथे में चरे, तिम ए कुमर काम हो ॥ मो० ॥ २६ ॥ स्वघर आदर पामीए, एतो सधी वात हो ॥ पिण जे पर घर सादरो, ए अधिको अखीयात हो ॥ मो० ॥ २७ ॥ ढाल ए नी चोसठमी, खेचर घर उल्हास हो गुणसागर दिपक जिहा, तिहा तिहा करे प्रकाश हो ॥ मो० ॥ २८ ॥

दुहा ॥ श्री पद्युम्न हरया पिछे, त्रिलक नित्यो जे ह ॥ मक्को ने तुमे साजलो, मुज कहेता ज्ञत्रि तेह ॥ ॥ १ ॥ ततक्षण जागी रुखमणी, बाल न देखे पास ॥ हियडे झाल उठी घणी, आवी मूर्छा तास ॥ २ ॥ स चेतन किधी सति, फिरी फिरी मूरछाय ॥ कुमर न सो ध्यो पाइयो, करुणापणे विललाय ॥ ३ ॥

ढाल ६५ मी ॥ हरी विण राधा किम रहे ॥ ए देशी ॥ हाताशु हियडो हणे, कुरलेसा असराल, दि न वचन भाखे घणा, किधु किस्युरे दयाल ॥ १ ॥ विलवे राणी रुखमणी ॥ ए आकणी ॥ रे सुदर सुकुमाल किहा गयो मुझने तजी, ए दुःख झालकराल ॥ वि० ॥ २ ॥ उठी उठे कुर करी, वेदन सहि न जाय ॥ जाया तुझ सम को नही, जे देख्या सुख थाय ॥ वि० ॥३॥ गुडथी मीठी खाड ए, खांडा साकर जोय ॥ साक रथी अमृत भलो, पूत न पुगे कोय ॥ वि० ॥ ४ ॥ पूत पनोतीमा गणे, पूत सपूते नाम ॥ ए मेरे अबतणी भूतणी ॥ विण पुताए काम ॥ वि० ॥ ५ ॥ दिश स

॥ वि० ॥ २८ ॥ रुखमणीने दुखे सहु दुखी, कृष्णे सु णयो तव सोर ॥ घरी आव्यो उतावलो, अहो अहो सुत चोर ॥ वि० ॥ २९ ॥ कृष्ण हिये दु ख सवरी, त्रि यसु कहे सुविच्यार ॥ नदन मीलशे ताहरो, करशु सोइ प्रकार ॥ वि० ॥ ३०॥ जे पाखरीया परगडा शो धन काजे सोय ॥ मोकलीया फीरी आवीया, काज न सरीयो कोय ॥ वि० ॥ ३१ ॥ सुसति किधी सुदरी, चारु वचन कही वाण ॥ एतले चाली आवीयो, ना रद पुण्य प्रमाण ॥ वि० ॥ ३२ ॥ ढाल एतो पासठ मी, विजोगणीए नाम ॥ गुणसागर सुज कर्मथी, स रसें सघला काम ॥ वि० ॥ ३३ ॥

दुहा ॥ नारद जाखे सुण सुता, आरती म कर ली गार ॥ तेहने आरती शु करे, जेहनो हरी जरतार ॥ १ ॥ जे तुऊ कुखे उपज्यो जेहनो माधव तात ॥ न मरे उठे आउषे, ए निश्चे विधी वात ॥२॥ पूर्व जवा तर वैरीए, किधोछे अपहार ॥ दिन थोरु शोधी करी, मेल आणी कुमार ॥ ३ ॥ जो ए कारज नवी करुं, तोशु माहरो नाम ॥ जामाना मन जावता, जाणे सरघा सब काम ॥ ४ ॥ ज्ञान विना निश्चे न ही, ऊलफलीया शु थाय ॥ श्रीमधीर स्वामी कने, चाली गयो ऋषीराय ॥ ५ ॥ देइ प्रदक्षणा विधी करी, प्रजुना प्रणमी पाय ॥ जीड जाणी माणस तणी, रह्यो तखते तेले माय ॥६॥ लघु काया करमे करी, जाणीने

छेदी सही, वेंत्र मनोरथ माल ॥ वि० ॥ १७ ॥ पुढवी
छेदन चंदना, में कियो वहुवार ॥ सर फोड्या द्रह
सोसव्या, अणगल निर अपार ॥ वि० ॥ १८ ॥ आ
ग उल्हावी निरश, दव दीधा वननांहि ॥ वाय
कराव्या विजणे, मसाव्या सढ मांही ॥ वि० ॥ १९ ॥
फूलण मसली पावशु, चाप्या नव अंकुर ॥ फलनो
लेवा कारणे, वेंठी होइ सुर ॥ वि० ॥ २० ॥ वेरी
ना वध किया, मारी जूंन लिख ॥ किडी नगरा वाहि
या, ते मुझ लागी शिख ॥ वि० ॥ २१ ॥ छाणे
विंछी चापीया, लोक वताया सांप ॥ माला तोड्या वि
हकना, लाग्या मोटा पाप ॥ वि० ॥ २२ ॥ पशु पं
खणी मनुष्यणी, वाल विछोहो दिध ॥ उन्हो ज
ल दर पूरीया, प्रोढा पातिक किध ॥ वि० ॥ २३ ॥
मछी जाल पसारीया, हरण पाड्या पास ॥ कर्म
कसाइना किया, गो वकरा विणास ॥ वि० ॥ २४ ॥
मोसानभे प्रकाशीया, नाख्या कुडा अपराध ॥ प
रने मोड्या करकमा, ते में ए फल लीध ॥ वि० ॥ २५ ॥
चोरी कियो परतणी, लीधा हिरा लाल ॥ लाल निरो
पन निगम्यौं, हे हे रही वेहाल ॥ वि० ॥ २६ ॥
साच न राख्यो शिलनु, जेहथी लहीए लील ॥ ज
गमांहि अपजश लियो, शेत्री शेत्री कुशील ॥ वि० ॥
॥ २७ ॥ ढ्हि० ॥ लोटे उटे जइ, ढ्हिरामें चढे चोवार ॥
कदीए देखुं मुझ नान्हडो, प्यारो प्राण आधार ॥

थ्या दोय ॥ मिलशे माय वापनेरे, वरस सोलमे सोय ॥ श्री० ॥ ११ ॥ मिलणतणी सहि नाणकारे, जणावी ए सारे ॥ पान्हो चडशे पदमनीरे, उपजशे अति प्यार ॥ श्री० ॥ १२ ॥ होस्ये सुकि वावडीरे, जलशु नरीत अपार ॥ विकशीत पंकज पाखडीरे, भमर करे गुंजार ॥ श्री० ॥ १३ ॥ सुका वृक्ष अशोकनीरे, फलसे विवीध प्रकार ॥ ऋतु विण फल फूले भरयारे, तरुवर अवर अपार ॥ श्री० ॥ १४ ॥ कोइल नाट हू कमारे, मोरा केरा नाच ॥ थाशे दिविध वधामणारे, सुदर भेली साच ॥ श्री० ॥ १५ ॥ मुगा वचन प्रकासशेरे, वाका सरला होय ॥ अवा लहेस्ये आखडीरे, रुप कुरुपा जोय ॥ श्री० ॥ १६ ॥ इण लक्षणे मा जाणसेरे, नदन आगम वात ॥ मानल नूप सुलक्षणारे, वयरीना अवदात ॥ श्री० ॥ १७ ॥ देश मगध सुहामणोरे, सालीसुग्राम प्रधान ॥ सोमदत्त नामे भलोरे, ब्राह्मण गुणनो जाण ॥ श्री० ॥ १८ ॥ तस अश्रेळी कामनीरे, नदनवर अभीवान ॥ अग्नीभूती गुण आगलोरे, वायभूती सुजाण ॥ श्री० ॥ १९ ॥ श्री नदीवर्धन गुरु भलारे, आया विपन मझार ॥ करवा वाद पधारीयारे, वधव दोय ते वार ॥ श्री० ॥ ॥ २० ॥ विच मिल्यो मुनी सत्यकीरे, भाखे वचन विलास ॥ विप्र किहा तुम्हे चालीयारे, करवा वाद उल्हास ॥ श्री०॥२१॥ होम किसी हारया तणीरे, विप्र क

आकार ॥ चक्री चतुराई करी, पुछे सकल विचार ॥अ।
ढाल ६६ मी॥ वहेनीं जेहनो जेहशु रग ॥ ए देशी
॥ श्रीमिंधर कहोने एह विचार, स्वामी कहे सुण रा
जीयारे ॥ चरित तणो नही पार ॥ श्री० ॥ १ ॥ शीं
ल शिरोमणी गुण निलोरे, नारद नाम उदार ॥ भर
त खेत्रथी आवीयोरे, काइक पुछणहार ॥ श्री० ॥
॥ २ ॥ द्वारामती नगरी भलीरे, कृष्ण नरेशर तास॥
पटराणी वर रुखमणीरे, शील तणो सहवास ॥ श्री०
॥ ३ ॥ तेहनो नदन अपहरयोरे, छठी रात्रमझार॥
वैरी वैर न विसरेरे, ए जगनो व्यवहार ॥ श्री० ॥४॥
गाम नगर गीरी कदरारे, सोधाव्या ते राय ॥ शुद्ध
न लाधी तेहनीरे, अति दु ख आणे माय॥ श्री०॥५॥
निश्चे करवा कारणेरे, ए ऋषी आव्यो जोइ ॥ पक्ष
करे जे जेहनोरे, तेही दुखे दुखियो होइ ॥ श्री० ॥६॥
पट खड नायक विनवेरे, स्वामी प्रकासो एह ॥ कुण
वैरी जेह अपहरयोरे, बाल किहाछे तेह॥ श्री०॥७॥
काल केतले आवशेरे, कुवर कुल शणगार॥ मात पिता
मन भावसेरे, निसुणे परखदा बार ॥ श्री० ॥ ८ ॥ मा
त कन्हेथी बालुनोरे, दैते लिधो जाम ॥ तक्षक पर्व
त शीला तलेरे, पाम्यो खेचर ताम ॥ श्री० ॥ ९ ॥
दिन दिन वाधे वये करीरे, चद कला जिम जोय ॥
अरि त्रिय मित्रहि ब्रातीयारे, साळ सरीखो सोय ॥
॥ श्री० ॥ १० ॥ षोडस लाभ लही भलारे, वारु वि

मेरे, निर्द्धाटण मीथ्यात ॥ गुणसागर आगे कहेरे, ए तो वारु वात ॥ श्री० ॥ ३३ ॥

दुहा ॥ मुनी भाखे भवियण सुणो, धरी परतीत अपार ॥ प्रवर विप्रनी आगले, चरित कहु सुविचार ॥ १ ॥ हिंस्या कर्म समाचरी, काल कियो तिही वार ॥ मोह वशे आवी लियो, नदन घर अवतार ॥ २ ॥ देखी मदीर मालिया, जाति समरण लाध ॥ पुत्र पिता जननि वहु, केम कहु अपराध ॥ ३ ॥ एम जाणी मौ ने रह्यो, लोगा मुगो नाम ॥ मुनि भाषित साचु वदे, आगे उभो ताम ॥ ४ ॥

ढाल ६७ मी ॥ सुग्रीव नगरी सुहामणीजी ॥ ए देशी ॥ चक्री भाखे देवशुजी, तेह मुनीवर केम ॥ बो लाव्यो भाष्या भलीजी, सुणवा लाग्यो प्रेम ॥ १ ॥ जिनेश्वर धन धन थारो ज्ञान ॥ सशय तिमर निवार वाजी, जाणे उग्यो भाण ॥ जि० ॥ २ ॥ मुगाशु मुनि वर कहेजी, ए जगनो व्यवहार ॥ माता जाये दीकरी जी, पुत्र पिता अवतार ॥ जि० ॥ ३ ॥ बहिन फीरी होय सोकडीजी, बधव वैरी थाय ॥ विज्ञ लहे मुर्खप णोजी, मूरख विज्ञ कहाय ॥ जी० ॥ ४ ॥ ठाकर ते चा कर होवेजी, चाकर ठाकर होय ॥ निर्धन ते धने आ गलाजी, सधन निर्धन होय ॥ जी० ॥५॥ ए व्यवहारे वरततजी, दोष न एक लिगार ॥ मुगो भाषा बोलि योजी, लीधो सजमभार ॥ जी० ॥ ६ ॥ हारया वाद

हं ल्यु दिख्य ॥ थाप्यो वाद विशेषथीरे, विप्र न माने शीख ॥ श्री० ॥ २२ ॥ मुनी नाखे पूछो तुम्हेरे, संश य होवे जेह ॥ हमने संशय कोइ नहीरे, तुम्हे पूछो सदेह ॥ श्री० ॥ २३ ॥ तुम्हे किहाथी आवीयारे, भा खो विप्र विच्यार ॥ हम आया निज घर थकीरे, ए स्यो प्रश्न प्रकार ॥ श्री० ॥ २४ ॥ ए आगम पूछु न हीरे, पूछु परभव वात ॥ परभव कुण कही सकेरे, होइ माणस मात ॥ श्री० ॥ २५ ॥ विप्र सुणो परभव त णोरे, भाखु एह विच्यार ॥ इणही ग्रामे विप्र हुतोरे, नामे प्रवर उदार ॥ श्री० ॥ २६ ॥ सो खेति करतो घणीरे, हल खेडावा जाय ॥ आयो जलहर उमहिरे, सो घर मुखो थाय ॥ श्री० ॥ २७ ॥ सात दि हाडा वरशीयोरे, जल हलधार अखंड ॥ उवराभ्यो दिन आठमेरे, व्यापी भूख प्रचंड ॥ श्री० ॥ २८ ॥ जंबुक युग तिहा आवियारे, खाधी नाभी तोड ॥ पेट आफरीउ ढोल ज्युरे, चाल्या दशहि छोड ॥ श्री० ॥ २९ ॥ सो जंबुक तुम्ह उपनारे, नहि संदेह लिगार ॥ प्रत्यय कारण सांभल्योरे, आगे एह अधीकार ॥ श्री० ॥ ३० ॥ खेत धणी तिहा आ वियोरे, खीज्यो देखी जाम ॥ जंबुकनी करी भाथडीरे, मेली उपर वान ॥ श्री० ॥ ३१ ॥ जो न पति जो ब्राह्म णोरे, जाइ देखो सोय ॥ लोक गया तिहा देखवारे, वी स्म खीसाणो होय ॥ श्री० ॥ ३२ ॥ ए गसठमी ढाल

वीयाजी, साधु दया प्रतीपाल ॥ वंदन जाता वाटनेजी, मिलियो एक चडाल ॥ जी० ॥ १८ ॥ तेहने साथे कुव रीजी, दोइ साथे प्रेम ॥ दुष्ट जातीसु उपनीजी, हे त जणाव्यो केम ॥ जी० ॥ १९ ॥ श्रुनि श्रने चडाल नेजी, हेज हिये न समाय ॥ नयण जणावे नेहलोजी, श्रचरिज कह्यो न जाय ॥ जी० ॥ २० ॥ त्यारे श्राया चालकेजी, श्री मुनिवरके पास ॥ सशय हरवा मुनि कहेजी, पूर्व नवातर तास ॥ जी० ॥ २१ ॥ एह थकि नवति सरेजी, मात पिता तुह्म जेह ॥ समकित धर्म वीराधीयोजी, तेहनो फल छे एह ॥ जी० ॥ २२ ॥ ब्रा ह्मण नव पहिले हुवोजी, जीतशत्रु राय उदार ॥ ब्रा ह्मणी होइ रुखमणजी, राजा कीधो प्यार ॥ जी०॥२३॥ वरस सहस्र सुख नोगवीजी, नरके पोहतो नूप ॥ मृग हुइ मानस हुवोजी, हुउ गजराज श्रनूप ॥ जी०॥२४॥ जाति समरण ज्ञानसुजी, श्रणसण दिवस श्रढार ॥ सु र गतिना सुख नोगवेजी, एह चडाल विचार ॥ जी० ॥ २५ ॥ ब्राम्हणी नव नमी स्वाननिजी, पामी गती विपरीत ॥ पुरवला सबधथीजी, माहो मा हे प्रीत ॥ जी० ॥ २६ ॥ समकीत धर्म ग्रहावियो जी, श्रावकना व्रत बार ॥ श्रणसण मास ज्यु एकनो जी, श्राराधी श्रती सार ॥ जी० ॥ २७ ॥ पहिले सु रलोके गयोजी, ते चंमाल ते वार ॥ पच पल्योपम श्राउखोजी, नित्य जिहा जयकार ॥ जी० ॥ २८ ॥

विशेषथीजी, होई ग्वीसाणा दोई ॥ घर आव्या पिता मायजी, अति खीजाव्या सोइ ॥ जी० ॥ ७ ॥ साधु उपद्रव कारणेजी, राति आव्या चाल ॥ यक्ष उपद्रव टालियोजी, थया ते ततकाल ॥ जी० ॥ ८ ॥ करुणा आणी अति घणीजी, छेडाव्या ते राय ॥ दोइ बंधव माय बापसुजी, हर्ष्या समकित पाय ॥ जी० ॥ ॥ ९ ॥ माय बाप ते मुलगेजी, मारग लाग्या जाण ॥ देश व्रति होइ बांधवाजी, आराधन प्रमाण ॥ जी० ॥ ॥ १० ॥ पेहेले स्वर्ग सुलक्षणाजी, पंच पल्योपम आय ॥ दोइ बंधव देवताजी, विलशे पुण्य प्रभाव ॥ जि० ॥ ११ ॥ नाम अयोध्या छे भलीजी, नगरी अति अभीराम ॥ जयशत्रु नामे भलोजी, राजा गुणनो धाम ॥ जी० ॥ १२ ॥ शेठ सहु माहे वडोजी, सागरदत्त सुजाण ॥ नारी नामे धारणीजी, पाले अरिहंत आण ॥ जी० ॥ १३ ॥ देव चविने उपनाजी, शेठ घरे संतान ॥ माणिभद्र मनोहरुजी, पूरणभद्र प्रधान ॥ जी० ॥ १४ ॥ प्रज्ञा बले पढिया घणाजी, जोबननि वय पाय ॥ परणी सुंदर सुंदरीजी, सुखमें सहु दिन जाय ॥ जी० ॥१५॥ श्री महेंद्र मुनीश्वरुजी, वनमें आया जाण ॥ राजा शेठ सिधावियाजी, सुणवा श्री गुरु वाण ॥ जी० ॥ १६ ॥ वाणी सुणी वैरागीयाजी, हुवा संजमधार ॥ श्रावकना व्रत आदरेजी, तव ते शेठ कुमार ॥ जी० ॥ १७ ॥ काल केतले आ

नुम गुण रागी ॥ ए देशी ॥ राजा राज करंत, युवरा
जा जयवंत ॥ सूरी चदनी जोड, पूरे मन केरा कोड
॥ १ ॥ सारे परजाना काज, जगमाही जस गाज, श
त्रु कद कुदाल, मोटा जेह नृपाल ॥ २ ॥ एक दिन सु
रयो कोलाहल, नृप पूछे ए स्यु कल कल ॥ प्रतिहारीयो
नाषे, स्वामी देश विणाशे ॥३॥ नीमसेन नामे नूपाळ,
दुर्ग वले सुविसाल ॥ पशु माणस लेइ जाय, उज्ज
ड देश ए थाय ॥ ४ ॥ नूपति लाग्यो जइ चाहे, दु
र्ग तणो वल साहे ॥ फोज फीरी तव आवे, पागे सो
र मचावे ॥ ५ ॥ पुर वाहिरथी जे पावे, तेतो लेइ सि
धावे, तेथी ए सहु लोक, पामेछे प्रनु पोक ॥ ६ ॥ ए
म सुणता ते राव, देइ ददामे घाव ॥ हयवर गयवर
गाजी, दलवल अति घणो साजी ॥ ७ ॥ चढीयो वा
र न लाइ, रेणु रही नन गाइ ॥ वाटे सूर वधाए ॥
कायर धूजणी थाए ॥ ८ ॥ आया वटपुर चाली, ना
वी सके कुण टाली ॥ हेमरथ सामो आयो, राय त
णे मन नायो ॥ ९ ॥ हेमरथ हाथाशु खोवे, आपे
आप विगोवे ॥ नृपने मंदिर लावे, जाणे नारी गमा
वे ॥ १० ॥ आदर अति घणा किधा, जिमवा वेसण
दिधा ॥ इन्द्रप्रना पट नारी माये कहे अविच्यारी ॥
॥ ११ ॥ नामनी नाजग फलीयो आज दिहाडो ए
वलीयो ॥ आपण पिरसणो ए किजे, राय तणो मन
रिझे ॥ १२ ॥ कामनी कतशु वोले, नृपनु का डगडो

श्रुनि पिण दिन सातनोजी, अणसण पाल्यो जोय ॥ काल करी नृप कुंवरीजी, तिणहि नगरी होय ॥ जी० ॥ २९ ॥ स्वयंवर मंडप मांमीयोजी, आया राय अनेक ॥ देव करे समझावणीजी, कुमरी लहे विवेक ॥ जी० ॥ ३० ॥ चारित्र पाली निरमलोजी, पाम्या सुर अवतार॥ एह प्रसंगे नाखीयोजी, काम नणी विस्तार ॥ जी० ॥ ३१ ॥ ए जीव दोई थायस्येजी, वट पुर केरा नाथ ॥ कंचनरथने चंद्रप्रनाजी, राजा राणी साथ ॥ जी० ॥ ३२ ॥ अणसण आराधी खरोजी, बंधव दोयसु जाण ॥ स्वर्ग सुधर्मे देवताजी, पांच पल्योपम मान ॥ जी० ॥ ३३ ॥ ए सडसठमी ढालमेजी, समकीत शुद्धी देख ॥ गुणसागर अराधीयाजी, पामे फल सु विशेप ॥ जी० ॥ ३४ ॥

दुहा ॥ कुशल घणोवे कोसला, नगरी अति मंनाण ॥ पद्मनान जग परगडो ॥ राज करे राजान ॥ १ ॥ नाम प्रणामे धारणी, तास धारणी नार ॥ शिलवंति साची सती, सत्यवति संसार ॥ २ ॥ सुरलोके सुख नोगवी, बंधव दोइ उदार ॥ राणी उरे उपना, युगल पणे अवतार ॥ ३ ॥ वडा तणो मधु नाम वर, लघुनो कैटन नाम ॥ थापियो महा मोहोछवे, कुमर दोइ सकाम ॥४॥ परणावि योवन पणे, मधुने दीधो राज ॥ युवराज पदवि लघु नणि, नृप सारया निज काज ॥ ५ ॥

ढाल ६८ मी ॥ शांति जिणंद सोनागी, हुतो थयो

ल समान ॥ ४ ॥ सस्नेहा तो दुख लहे, निस्नेहा सुख होय ॥ तिल सरसव जग पिलीए, रेतन पीले कोय ॥ ॥ ५ ॥ रागे वाह्यो उकले, वैरागी समजाय ॥ चोल मजीठा रस लीए, वाकस नवि मिसलाय ॥ ६ ॥

ढाल ६९ मी ॥ नेमीश्वर विनती मानीएजी ॥ ए देशी ॥ राजेसर कहीयो मानीएजी, कहे मत्रीस सुजाण ॥रा०॥ ए टेक ॥ कुव्यसन केरो सग न किजे, कुविस न दु ख दातार ॥ तिण माही ए अति मोहोटो, परत्रीय केरो प्यार ॥ रा ० ॥ १ ॥ विण दोरे ए वधन कहीए, विण व्याधे असमाध ॥ विण काजल ए काली मा कहावे, विण मदिरा असमाध ॥ रा ० ॥ २ ॥ आंख उमी दो निंद तणोक्षय, छिण छिण दाझे देह ॥ तेहने नित्य चद्र वारमोरे जेहनो परघर नेह ॥ रा ० ॥ ३ ॥ वरस सात साढानो नाख्यो, थावरनो अति लाग ॥ जाव जीव लगे ए अति पीडे, पर रमणीनो राग ॥ रा ० ॥ ४ ॥ जगमाहे अपजसनो पडहो, आपदनोरे सकेत ॥ शिवपुर धारक पाट कहावे, पर रमणीनो हेत ॥ रा० ॥ ५ ॥ परनारी मुख जोता पलटे, पलक पलक जेतीवार ॥ तेताहि वर्ष पचेवो, कुनी नरक मझार ॥ रा० ॥ ६ ॥ पररामासु राग करता, देवा द्रव्य विणास ॥ साभसा सातमो गाडी अनेरो, ठामन दिसे तास ॥ रा० ॥ ७ ॥ राजा भाखे सुण मन्त्रिश्वर, ए सब साची वात ॥ पिण माहरे मन तो रढ लागी,

ले ॥ भूप भुयंगम कालो, तेहथी दिजे टालो ॥ १३ ॥
भटकी बोलीयो इस, मन आणी अति रीस ॥ एवडो
स्यो अभीमान, तुतो दासी समान ॥ १४ ॥ राणी
पीरसवा आवी, रायतणे मन भावी ॥ राजा रीजीयो
जाणी, उलखीयो मन राणी ॥ १५ ॥ राजा उठी सी
धायो, ततक्षण मत्री बुलायो ॥ ए राणी घर लावो,
हमशु प्रेम मीलावो ॥ १६ ॥ मत्री राय सकेत, चा
ल्या कटक समेत ॥ आई भीमशु अभीयो, सूर महारण
लभीयो ॥१७॥ झगमो अति घणो लाग्यो, नृपति भी
मजी भाग्यो, वाधीने जव लीधो, कारज रायनो सीधो
॥ १८ ॥ राजा पाछो ए वलीयो, मनमथ भुते ए वली
यो ॥ तन मन रागसुराच्यो, राणीशु मन माच्यो ॥
॥ १९ ॥ वडा पयाणेए आवे, वटपुर वाट भुलावे ॥
मत्री मत्र उपायो, राय अयोध्याये आयो ॥ २० ॥ ए
अडसठमी ढाल, जीती आयो भूपाल ॥ श्रीगुणसाग
र राय, राजाजी वयर वसाय ॥ २१ ॥

दुहा ॥ राय अयोध्या आवीयो, मनमें अति उ
चाट ॥ खीजी कहे केम भुलीयो, वटपुर केरी वाट ॥ १ ॥
वाचा पालतु आपणी, अहो मोटा प्ररधान ॥ सो वाता
की वात ए, जो चाहे मुझ प्राण ॥२॥ कलीमल अरती
असुख अती, सूता निंद म जोय ॥ अन्न न पाणी भा
वही, सोक्यो जाइ सोय ॥ ३ ॥ रायकुमरी नवयौवनी,
साथे गमन राजान ॥ इदुप्रभा राणी हीवे, साले सा

खिण आगणे खिण सेज ॥ खिण गोखे चड वारे दे
खे, फाटे हियडो हेज ॥ रा० ॥ १९ ॥ वस्त्र विहुणो वि
कल रूपे, धुले धूसरी अग ॥ प्रीया प्रीया मुख अधी
क पूकारे, सबहि वात विरंग ॥ रा० ॥ २० ॥ पुरी अ
ज्योध्या चालि आयो, जमे पाड्यो भूपाल ॥ नारी नि
रखणनो अभीलाषी, साथे फिरे बहु बाल ॥रा०॥२१॥
सोर सुणता गोखे चढिने, नारी निहाल्यो नाथ ॥
धाय मोकली लीयो बुलाइ, दूर करी सब साथ ॥
रा० ॥ २२ ॥ का तु एहवो पूछे पदमनी, पूरव प्रेम प्र
कार ॥ नारी विछोहो महा दुखदाइ, कवण अछे तुझ
नार ॥ रा० ॥ २३ ॥ तु प्यारी हु प्रितम थारो, राख
ले माहरा प्राण ॥ पहिलि शीख न मानी पापी, जल
बहि गयो मुलतान ॥ रा० ॥ २४ ॥ जोरे जाके जाण
लहिने, राजा करशे न्याड ॥ न्याड पुरुपनु कोइ न था
शी, न्याड थइ तु राक ॥ रा० ॥ २५ ॥ को हिरा वने मां
हि कसारी, पडिया निपट निकाम ॥ वैयर जातिने वा
हिर हींडी, न लहे एकहि दाम ॥ रा० ॥ २६ ॥ चित
डा भींतर चिटपट लागी, साल सरिखो बोल ॥ सा
चो शिल सलुणो जाणयो, विखीया विख सम तोल ॥
रा० ॥ २७ ॥ मधु राजा माननीसु मोह्यो, माने मेरु
समान ॥ आपणा पोज पतले आयो, मोह तणो अव
सान ॥ रा० ॥ २८ ॥ परनारी लपट दृढ बाध्यो, आण्यो
राजा पास, राजा भाखे वेग विणासो, इहा नही अरदास

कल्प समा दिन जात ॥ रा०॥८॥ पति पतिने दिवसे न सुझे, राते न सुझे काग ॥ मुझने तो दिन रात न सुझे, केहेण तणो नहि लाग ॥ रा०॥९॥ ढोल वजावे ढोलियारे, पिण वाहरे नवि जाय ॥ हेतवता तो हेत बतावे, जोर न कोइ थाय ॥ रा०॥१०॥ एतले ऋतु राजा चलि आयो, नामे वसत वेसत ॥ वनराजी फल फूलवीराजी, लोक हसत रमत ॥ रा० ॥ ११ ॥ ठाम ठामना राय बोलाया, खेलणको मीस ठाए ॥ इन्द्रप्रभासु राजा तेड्यो, हेमरथ प्रीत प्रमाण ॥ रा० ॥ ॥ १२ ॥ रमणीए राजा समझाव्यो, ए मुझ उपर खेल ॥ मधु नृप माड्यो मूरख गिजडा, मकर मकर मन मेल ॥ रा० ॥ १३ ॥ रावण पर त्रिया दोष न जाण्यो, राम हेम मृग जेम ॥ जोया दूषण राय युधीष्टर, जाणी शक्यो नहि तेम ॥ रा० ॥ १४ ॥ वात अनेक कहि समझावे, राय न माने एक ॥ होण हार साथे कुण वलियो, ए नर आण विवेक ॥ रा०॥१५॥ राणी लेइ आयो राजा, मधु राजा सुख पाय ॥ खेलि वसत ज्यु लोक विसर्ज्या, राणी राखी राय ॥ रा० ॥ १६ ॥ पटराणी करी थापी सुदरी, मधु राजा मन रग ॥ सुख माने ते विविध प्रकारे, इन्द्र इन्द्राणी सग ॥ रा० ॥१७॥ हेमरथ राजा वात सुणी जब, विव्हल थयो अपार ॥ बलिया साथे जोर न चाले, अइ अइ कर्म विचार ॥ रा०॥१८॥ खिण रोवे खिण जोवे दह दिशि,

स्वर्ग तणा सुख भोगवी, पूर्व पुण्यने हेत ॥ १ ॥ श्री परजन कुमारजी, रुखमणी उर उत्पन्न ॥ कृष्ण घरे हरी वशमे, माचो पुत्र रतन्न ॥ २ ॥ कैटभ सुर सुख भोग वी, लेस्ये वर अवतार ॥ जावुवती उरे सही, होस्ये साब कुमार ॥ ३ ॥ राय हेमरथ नारीनी, आणी अर ति अपार ॥ काल करी भवमें भमी, कोप तणे प्रकार ॥ ४ ॥ धुमकेतु नामे हुओ, असुरां केरो राय ॥ ते ए बालक अपहर्यो, वयर विलय नवी जाय ॥ ५ ॥

ढाल ७० मी ॥ राधा लोचन रगमो ए देशी ॥ जिनवाणी श्रवणे सुणी, भवि पाम्या प्रतिबोध ललना ॥ करे आपणमे खामणा, टाले वैर विरोध ललना ॥ १ ॥ धन श्रीमिंधर स्वामीजी, जे भाजे सदेह ललना ॥ धन चक्री जिणे पुछीयो, पूर्व भवातर एह ललना ॥ ध० ॥ ॥ २ ॥ नारद ऋषी करकोसथी, निकलीयो तेहीवार ॥ ल० ॥ अलजयो आतुर थयो, देखण बाल कुमार ॥ ल० ॥ ध० ॥ ३ ॥ गीरी वैताढे आवीयो, यमसवर घर जाय ॥ ल० ॥ कनकमालानी भक्तीथी, ऋषी रली आयत थाय ॥ ल० ॥ ध० ॥४॥ गूढ गर्भणी तु सुणी, जायो सुदर नद ॥ ल० ॥ ऋषीजी तुम प्रासादथी, न दन आनद कद ॥ ल०॥ ध०॥ ५ ॥ देखु थारो नानभो, परखु लक्षण सार ॥ ल० ॥ ऋषी आगे लोटावीयो, दिए आशीश तेवार ॥ ल०॥ ध० ॥६॥ चिरजीवो चिंरनदजे, पूरे मातनी आश ॥ ल० ॥ ऋषी आदेशे उ

रा०॥२९॥ राणी पूछे का मारिजे, स्वामी ए नर आन ॥ राजा बोले एणे किधो, मोटो आज अकाज ॥ रा० ॥ ३० ॥ ए काडी ए सतरे पातिक, तोले घाली जोय ॥ ए कामी परनारी गमननो, पातिक भारी होय ॥ रा० ॥ ३१ ॥ परनारीना दूषण ए तो, आप तुम्हे शु किध ॥ हु परनारी किधी प्यारी, जगमे अपजस लिध ॥ रा० ॥ ३२ ॥ कहेणी तो जगमाही बहुली, करणी विरला जोय ॥ मोटा भाडा वोत न लागे, राक हृदया सु होय ॥ रा० ॥ ३३ ॥ एह वचने राजा वैरागयो, मनमे करे विचार ॥ कुजने एह कलक चढायो, धीग धीग मुक अवतार ॥ रा० ॥ ३४ ॥ नवजोबनमें वाध्यो जे नर, नृप छोडावे ताम ॥ वोहरो तेमी शीखज आपी, ए हम करजे काम ॥ रा० ॥ ३५ ॥ इण अवसर मुनिराज पधारया, वोहरण केरे काज ॥ नृप आहार सुजतो दिधो, सफल गण्यो दिन आज ॥ रा० ॥ ३६ ॥ जेष्ठ पत्र तव पदवी थाप्यो, मधु कैटभ नृप सोय ॥ सजम लेइ स्वर्ग बारमे, देव हुआ ते दोय ॥ रा० ॥ ३७ ॥ इद्रप्रभा दिक्षा व्रत पाली, राजा साथे सहाय ॥ कनकमाला ए आय उपनी, नेह छप्यो न रहाय ॥ रा० ॥३८॥ एगुणसत्तरमी ढाल भलेरी, पूर्व भवांतर भेद ॥ गुणसागर जिनवरने वचने, टलीयो सघलो खेद ॥ रा० ॥ ३९ ॥

दुहा ॥ मधु भूपतीनो जीव जे, चारित्रने सकेत ॥

स्वर्ग तणा सुख भोगवी, पूर्व पुण्यने हेत ॥ १ ॥ श्री परजन कुमारजी, रुखमणी उर उत्पन्न ॥ कृष्ण घरे हरी वशमे, माचो पुत्र रतन्न ॥ २ ॥ कैटभ सुर सुख भोग वी, लेस्ये वर अवतार ॥ जाबुवती उरे सही, होस्ये साब कुमार ॥ ३ ॥ राय हेमरथ नारीनी, आणी अर ति अपार ॥ काल करी भवमें भमी, कोप तणे प्रकार ॥ ४ ॥ धुमकेतु नामे हुओ, असुरां केरो राय ॥ ते ए बालक अपहर्‍यो, वयर विलय नवी जाय ॥ ५ ॥

ढाल ७० मी ॥ राधा लोचन रगमो ए देशी ॥ जि नवाणी श्रवणे सुणी, भवि पाम्या प्रतिबोध ललना ॥ करे आपणमे खामणा, टाले वेर विरोध ललना ॥ १ ॥ धन श्रीमिंधर स्वामीजी, जे भाजे सदेह ललना ॥ ध न चक्री जिणे पुछीयो, पूर्व भवातर एह ललना ॥ ध० ॥ ॥ २ ॥ नारद ऋषी करकोसथी, निकलीयो तेहीवार ॥ ल० ॥ अलजयो आतुर थयो, देखण बाल कुमार ॥ ल० ॥ ध० ॥ ३ ॥ गीरी वैताढे आवीयो, यमसवर घर जाय ॥ ल० ॥ कनकमालानी भक्तीथी, ऋषी रली आयत थाय ॥ ल० ॥ ध० ॥४॥ गूढ गर्भणी तु सुणी, जायो सुदर नद ॥ ल० ॥ ऋषीजी तुम प्रासादथी, न दन आनद कद ॥ ल०॥ ध०॥ ५ ॥ देखु थारो नानमो, परखु लक्षण सार ॥ ल० ॥ ऋषी आगे लोटावीयो, दिए आशीश तेवार ॥ ल०॥ ध० ॥६॥ चिरजीवो चिं रनदजे, पूरे मातनी आश ॥ ल० ॥ ऋषी आदेशे उ

ठाइयो, हियडे धरयो उलहास ॥ ल० ॥ ध० ॥ ७ ॥ गान
मुखो अरि सनमुखो, लक्षण गूण गरीठ ॥ ल० ॥ म
व चित्र सुदर देखता, लोचन अमीय पइठ ॥ ल० ॥ ध०
॥ ८ ॥ नारद आव्या द्वारीका, हरी रुखमणीके पास
॥ ल० ॥ जिनवर वचन सुणावीया, धूरठे हालगे ता
स ॥ ल० ॥ ध० ॥ ९ ॥ हीरा चुनी लालडा, मोती मा
णिक जोय ॥ ल० ॥ जिहा जाये तिहा सादरा, तिम
करमे तो होय ॥ ल० ॥ ध० ॥ १० ॥ हरी रुखमणी आ
नदीया, सुणी सुतना अवदात ॥ ल० ॥ परम महा
सुख पामीयो, आनदमे दिन जात ॥ ल० ॥ ध० ॥ ११ ॥
आशा सब जग वालही, आशा अमर अपार ॥ ल०
॥ धर्म कर्म आशा भली, आश म राखो लिगार ॥ ल०
ध० ॥ १९ ॥ आशाए धन सपजे, आशाए सतान
॥ ल० ॥ आशाए रण जीतिए, आशाए सनमान ॥
ल० ॥ ध० ॥ १३ ॥ एक न हुती पाधरी, नदीषेणनी
नार ॥ ल० ॥ सहे सबहु तेरे परगटी, आशाने अधी
कार ॥ ल० ॥ ध० ॥ १४ ॥ आशाए हरीचद्रजी, उ
ग्रसेन नृप देख ॥ ल० ॥ आपद काढी आकरी, पुन
रपी राय विशेष ॥ ल० ॥ ध० ॥ १५ ॥ रावण सीता
अपहरी, पमीयो राम विछोह ॥ ल० ॥ सा जीवी आ
शा थकी, फिरी पामी अति सोह ॥ ल० ॥ ध० ॥ १६ ॥
पवनराय घरे अजना, पतिनो अति अपमान ॥ ल०
आशाए देवावीयो, आदर मेरु समान ॥ ल० ॥ ध० ॥

॥ १७ ॥ रामचद्र नल पामत्रा, आशा तणे बल जो
य ॥ ल० ॥ फिरी वहोडावि आपणी, आश करे सो
होय ॥ ल०॥ ध०॥१८॥ वरस जाशे आशा वसी, फल
शे मननी आश॥ ल० ॥ आश बले रुखमणी तणो,
होसे लिल विलास ॥ ल० ॥ ध० ॥ १९ ॥ मदिर सं
वर कालने, वाधे वाल कुमार ॥ ल० ॥ हाथोहाथे
सचरे, उपजावे अति प्यार ॥ ल० ॥ ध० ॥ २० ॥
जिम जिम वाधे वए करी, तिम तिम वाधे एह ॥
ल० ॥ ऋद्धी वृद्धी सुख सपदा, अरु वाधे धन नेह
॥ ल० ॥ ध० ॥ २१ ॥ प्राण थकी प्यारो घणो, मा
ताजीने सोइ ॥ ल० ॥ पिता परम सुख दायकु, परी
अण त्रितो जोइ ॥ ल० ॥ ध० ॥ २२ ॥ पढीगुणी
पम्ति थयो, निर्मल बुद्धि उदार ॥ ल० ॥ शस्त्र शास्त्र
आदेकला, बहोत्तरना जणनार ॥ ल० ॥ ध०॥ २३॥
बालपणो बोली करी, यौवननी वय पाय ॥ ल० ॥ धि
र विरने साहसिक, सूर शीरे कहेवाय ॥ ल० ॥ ध०
॥२४ ॥ हयगय रथ पायक तणी, सेना सजी अपार
॥ ल०॥ सीमाप्ता सहु साधीया, साध्या जेह कूजार ॥
॥ ल० ॥ ध० ॥२५ ॥ देश जीती घर आवीयो, ला
वीयो वर वस्त ॥ ल० ॥ भूचर खेचर मानवी, माने
आण समस्त ॥ ल० ॥ ध० ॥ २६ ॥ ए शीत्तरमी
ढालमे, आण मनावण नाम ॥ ल० ॥ गुणसागर गुरु
आपणे, प्रगट थयो जग काम ॥ ल० ॥ ध० ॥ २७ ॥

चोपइ॥ खम खड रसहे नवनवा, सुणता मिठी साक र जेवा॥ श्रीहरी वश चरित्र जय जयो, त्रिजो ख ण्ड ए पूरण थयो ॥ १॥ इति श्री हरी वस विस्तार प्रबधे ढाल सागर तृतिय खण्ड समाप्त ॥

॥ श्री ढालसागर हरीवस प्रबध चतुर्थ खड प्रारम्भ॥

दुहा॥ कर्म हणी केवल लह्यो, मुगति पहोता स्वा मि॥ त्रिविध त्रिविध त्रिहु कालना, सिद्ध नमु शिर नामि॥ १॥ अब चोथा अधीकारना, भवियण सुणो सुविचार॥ गुणवताना गुण ए, साम्भलता सुख अपार ॥ २॥ मात पिता सुख पामिया, देखी कुमरना काम ॥ लोक प्रासिद्धो आपियो, युवराज पद ताम॥ ३॥ प्रचुर वित्तनु व्यय करी, सतोस्यो ससार॥ याचक जन मुख उच्चरे, मदन सुयश विस्तार ॥ ४॥ नृप तिने भळ भामनी, पचसया परीवार॥ नदन पिण त स तेतला, महा कला गुण जाण॥ ५॥ प्रभुता पेखी कामनी, दुमनी पड़ी दुमात॥ आप आपणा पुत्रसु, एह जणावी वात॥ ६॥ सिंहणी एकज सुत जणी, निर्भय थाए अपार॥ खरी खरी दश पुत्रणी, वहे गा रको भार॥७॥ मदन बलि महिमा निलो, तुमतो सघ ला रक॥ दिन थोडामा देखज्यो, राजा हुउ निसक ॥८॥

ढाल ७१ मी॥ इण पुर कबल कोइ न लेशी ॥ ए देशी॥ वचन सुणी निज माता केरा, कोपे चम्पा

ने पुत्र घणेरा ॥ मारा मदनने वार न लावा, तो तुम आगे हम फिरी आवा ॥ १ ॥ मदनसु माडे प्रिति अपार ॥ माहरे तुं ठाकोर अधार ॥ कूड केलवे कप टि केता, सानलजो मुफ कहेता तेता ॥ २ ॥ नोजन आसन शयनमझारी, खान पानमे दिए विष नारी ॥ अम्रत होई प्रणमे सोइ, पहुची शके उपावन कोइ॥३॥ डाकणी शाकणी न सके लागी, नूत पिशाचणी जाए नागी ॥ वाको ते फिरी सुधो थाय, दिन दिन महिमा अधिक दिवाय ॥ ४ ॥ गिरी वैताव्य गया एकवार, सहेस शिखरनो नुवन उदार ॥ सहुको आवी बेठा जाम, वात करे आपसमें ताम ॥ ५ ॥ गिरी शिखरे एक गोपुर देखि, वज्र मुखे तव वात विशेखी ॥ जो जाए कोइ गोपुर माहि, मन वछित फल पावे सोहि ॥ ६ ॥ मदन गयो तिहा हाली चाली, जाग्यो देव वजावी ताली ॥ मदन साथे कियो सग्राम, हारि दियो सिंघासण ताम ॥ ७ ॥ मत्र तणो गण दिधो वारू, अवर दियो नडार अपारू ॥ मुकट दियो रत्नाको निको ॥ आभ्रण सहितसु दीधो टीको ॥ ८ ॥ गूफा दुसरी मांहि सीधावे. छत्र नलो युग चामर पावे ॥ खड्ग मनोहर वस्त्र विशालु, कुसुम वासन अधिक रसालु ॥ ९ ॥ गूफा तिसरी माहि आवे, नाग सेज वर वेण लहावे ॥ पाय पिढ सिंघासण कोमल, वस्त्र विनूपण पावे सो नल ॥ १० ॥ मदिर कारी विद्या विधि, सेन तणी र

खवाली सीधी ॥ ए दोए विद्या आपी देवा, करजोडी
ने मागे सेवा ॥ ११ ॥ चउथीवारे सो अवगाहे, ज
ल वावीने पमीयो हलावे ॥ मकरध्वज वर वारु लहि
यो, मकरकेतु सो नाम कहियो ॥ १२ ॥ अर्ग्नीकुम मा
हे पग ठावे, वार पचमीसु शोभा पावे ॥ कनक व
स्त्र अग्ने धोवाए, युग्म लह्या ते पुण्य पसाए ॥१३॥
मेपाकारे पर्वत दोई, छठिवार गयो तिहा सोइ ॥ मि
लता कोपर साथे खडे, कुडल युग्म लहि अती तडे
॥ १४ ॥ वार सातमीए सहकार, उपर चढियो मदन
कुमार ॥ ऊजोडी फल पाडी नाखे, वानर रूप तदा
सुर भाखे ॥ १५ ॥ आप जणावी चरणे लागी, बो
ल्यो देव प्रभु वमभागी ॥ गगन गतिनी पावडी वि
शाला, आपे मुकट सुधारस माला ॥ १६ ॥ वार आ
ठमी कपीठ तणे वन, चाल्यो मदन महा निर्भय म
न ॥ तरु उपर चाढियो ततकाल, गज रूपि सूर अ
ती विकराल ॥ १७ ॥ युद्ध करी प्रभुने वश होइ, मन
गमतो वर आपे सोइ ॥ गज रूपी सूर हु बु स्वामी,
समय समरवो अवसर पामी ॥ १८ ॥ नवमी वारे पर
वत उपर, चाल्यो कामदेव साहस धर ॥ भुजगासुर
मेहेला तव जाइ, उठियो करी संग्राम सजाइ ॥ १९ ॥
जाती भणी दीधो हयरत्न, काठो कवच जीवनो यत्न
॥ मुद्रीका मन मोहन आपी, चाल्यो तास तिहा थीर
थापी ॥ २० ॥ दशमी वार सराव मुखे गिरी, हरी

अगज आयो जिम निज घरी, अगद कठीका वर लाधी, कदोरो लायो सूर साधी ॥ २१ ॥ एकादशमी वार मनोभव, वराह तणे आकारी गयो तव ॥ धनुष्य पुष्प जय पाम्यो पूरो, जय नामा वर शख सनूरो ॥ २२ ॥ वारसमी वारे बलवतो, पकज वनमे जाय रमतो ॥ विद्याधर बाध्यो गेंमावे, कन्या काम ज णि परणावे ॥ २३ ॥ विद्या दोइ अनेरी दिधी, इद्र शु जाल करी प्रसिद्धी ॥ हार हरख शु आप्यो रुडो, मान्यो गुण नवि ए कूडो ॥ २४ ॥ तेरसमि वारे अति तडन, काल वने आयो कुल मरुन ॥ जीत्यो दैत्य न लागी वार, आप्यो कुसम धनुष्य उदार ॥ २५ ॥ मदन मोहन तायन सोषण कर, उन्मादन ए पच वाण वर ॥ जन मोहन युवति उन्मादन, मदन नाम तिहाथी हरीनदन ॥ २६ ॥ चउदशमी वारे सु उपचारे, भीम गूफा माहे पाव धारे, वत्र पुष्पको फूलक्रि सेज, आपे असुर धरी अती हेज ॥ २७ ॥ भाइ मरवा कारण मेल्यो, आपणमे चतुराइ खेल्यो ॥ पुण्य वले रुखमणीको जायो, तिम तिम वधतो जाय सवायो ॥ २८ ॥ वने रणे अरीधे रणमाहि, अग्नी नीर सागरमें प्राही ॥ सोवन जागत विच विचाले ॥ पुण्य एक मोटो रखवालो ॥ २९ ॥ एकाहत्तरमी ढाल वखाणी, वक्ता श्रोता ने मन मानी ॥ श्री गुणसागर पुण्य करीजे, मदन कथा मन माहि धरीजे ॥ ३० ॥

दुहा ॥ लाज देखी नव नव परे, आणे रीस अ पार ॥ जोर न चाले जवरस, पिण न तजे अविचा र ॥ १ ॥ खेदि काढे नित्यको, सूरज जग हितकार ॥ तिमर न व्याप्या विण रहे, ए दुर्जन अविचार ॥२॥

ढाल ७२ मी ॥ निमजी ज्ञान वरसोनी ॥ ए देशी ॥ वज्रमुखो कहे जाइजी ॥ मन मोहना ॥ तुम्ह सम अवर न कोइ ॥ लाल मन मोहना ॥ जिहा जिहा जाई स चरो ॥ म० ॥ लाज घणेरो होय ॥ ला० ॥ १ ॥ पनरस मी वारे हिवे ॥ म० ॥ विपुल वन पाउधार ॥ ला० ॥ ग ज जिम आयो गाजतो ॥ म० ॥ तव ते विपन मझार ॥ ला० ॥ २ ॥ नाग जयतक छे तिहा ॥ म० ॥ वाहनी एक विसाल ॥ ला० ॥ तेहने काठे तरु तले ॥ म० ॥ पद्म शिला सुवीशाल ॥ ला० ॥ ३ ॥ रुपशु यौवन गु णवती ॥ म० ॥ पद्मासन आकार ॥ ला० ॥ रुफटीक तणी जप मालिका ॥ म० ॥ ध्यावे ध्यान अपार ॥ ला० ॥ ४ ॥ श्वेत वसन विराजता ॥ म० ॥ मस्तक छुटा केस ॥ ला० ॥ शोभा पोखे सुदरी ॥ म० ॥ वर्णे गोर विशेष ॥ ला० ॥ ५ ॥ चद्रमुखी मृगलोचनी ॥ म० ॥ वाकी भमुह कमाण ॥ ला० ॥ तिन लोकनी नारीनो ॥ म० ॥ वेठी लेइ गुमान ॥ ला० ॥ ६ ॥ स र्व अवेवा सोहनी ॥ म० ॥ रमणी रुप रसाल ॥ ला० ॥ मदन तणे मन मोहनी ॥ म० ॥ लागीए ततकाल ॥ ला० ॥ ७ ॥ पच बाण लागा खरा ॥ म० ॥ म

दन थयो बेफाम ॥ ला० ॥ हम न जावा पावही ॥ म० ॥ जेसु जीनकी रहाम ॥ ला० ॥ ८ ॥ विवुधवत शक आवीयो ॥ म० ॥ उन्नो करीय जुहार ॥ ला० ॥ कुवर पूछे देवसु ॥ म० ॥ कुमरीनो सुविचार ॥ ला० ॥ ९ ॥ देव नणे कुवर सुणो ॥ म० ॥ खेचर प्रनजन नाम ॥ ला० ॥ वाग देवी दिपती नली ॥ म० ॥ जाइ कुमरी सकाम ॥ ला० ॥ १० ॥ रती नामे गुण आगली ॥ म० ॥ नव योवनमे एह ॥ ला० ॥ कुअर कहे कष्टे करी ॥ म० ॥ का खीजावे देह ॥ ला० ॥ ११ ॥ रायतणे घर आवियो ॥ म० ॥ योगी लेवण आहार ॥ ला० ॥ कुमरी वर पूछीयो ॥ म० ॥ नाख्यो मदन कुमार ॥ ला० ॥ ॥ १२ ॥ योग मिले तेहनो किहां ॥ म० ॥ इणही वन अनीराम ॥ ला० ॥ ते माटे तप ध्यानशुं ॥ म० ॥ एवढे वर काम ॥ ला० ॥ १३ ॥ लक्षण गुण आकारशु ॥ म० ॥ सो प्रनु तुही सकाज ॥ ला० ॥ कृपा करी कन्या तणा ॥ म० ॥ पूरो मनोरथ आज ॥ ला० ॥ ॥ १४ ॥ पाणी ग्रहण करावीयो ॥ म० ॥ पूग्या मनना कोड ॥ ला० ॥ कामदेव रती कामनी ॥ म० ॥ ए दोई अविहड जोड ॥ ला० ॥ १५ ॥ लाज सोलमो तीणे वने ॥ म० ॥ सकटा सुरथी होय ॥ ला० ॥ कामधेनु पामी नली ॥ म० ॥ पुष्प तणो रथ जोय ॥ ला० ॥ ॥ १६ ॥ एव सोलह लाजशु ॥ म० ॥ मदन महा मयमत ॥ ला० ॥ पामी शोजा पुण्यथी ॥ म० ॥ पुण्य

वडो एकत ॥ ला० ॥ १७ ॥ जोतरी र र पुप्प तणो ॥ म० ॥ काम अने रतीनार ॥ ला० ॥ वशी आवे लितशु ॥ म० ॥ माथे छत्र सुधार ॥ ला० ॥ १८ ॥ चामर ढोले खेचरी ॥ म० ॥ आगे वहु परिवार ॥ ला० ॥ दीन मुखा जाइ सहु ॥ म० ॥ सेवक रूपी अपार ॥ ला० ॥ १९ ॥ सोले लाजे शोभतो ॥ म० ॥ आवे काम कुमार ॥ ला० ॥ नगरी तणी शोभा करी ॥ म० ॥ मुख मुख जय जयकार ॥ ला० ॥ २० ॥ कामनी कौतकने मिली ॥ म० ॥ तरुणी वुढी वाल ॥ ला० ॥ रती रतीपतीने देखवा ॥ म० ॥ करे कुतुहल ख्याल ॥ ला० ॥ २१ ॥ खबर नही अवर तणी ॥ म० ॥ था नवीपर्यय थाय ॥ ला० ॥ तुट्यो हार न जाणही ॥ ॥ म० ॥ मोती खीर खीर जाय ॥ ला० ॥ ककण काने पहेरीयो ॥ म० ॥ गले कटी सूत्र उदार ॥ ला० ॥ माथे पहेरी मेखला ॥ म० ॥ कटी पेहेर्यो वरहार ॥ ला० ॥ २३ ॥ आखे कुकुम आजीयो ॥ म० ॥ काजल लगायो गाल ॥ ला० ॥ आडबरी अलते करी ॥ म० ॥ आई तमासे चाल ॥ ला० ॥ २४ ॥ एक भणे भल भामनी ॥ म० ॥ ए कर्मे तो कत ॥ ला० ॥ पामी परतक्ष पद्मनी ॥ म० ॥ रती राणी गुणवत ॥ ला० ॥ २५ ॥ एक वदे वनीतावली ॥ म० ॥ ए धन नारी उदार ॥ ला० ॥ सर्व सुलक्षण गुणनिलो ॥ म० ॥ पामी भल भरतार ॥ ला० ॥ २६ ॥ हयवर ग

यवर वाहनी ॥ म० ॥ लोक तणो नही पार ॥ ला०॥ दाने जलहल वरसतो ॥ म० ॥ आया राज दुवार ॥ ला० ॥ २७ ॥ राय तणे पाय प्रणमीयो ॥ म० ॥ राय दियो बहु मान ॥ ला० ॥ प्रभुता पेखी पुत्रनी ॥ म० ॥ जाएयो जन्म प्रमाण ॥ ला० ॥ २८ ॥ मा मिलवाने अलजीयो ॥ म० ॥ आवी लागो पाय ॥ ला० ॥ उठाइ उचो लीयो ॥ म० ॥ चुठ्यो कठ लगाय ॥ ला० ॥ २९ ॥ विनय करी विधीशु तदा ॥ म० ॥ आगे बेठो काम ॥ ला० ॥ वारवार अवलोकही ॥ म० ॥ रूप अनोपम ताम ॥ ला० ॥ ३० ॥ कृष्ण श्वेतने रातडा ॥ म० ॥ लोचण निला धाम ॥ ला० ॥ कबु कंठसु कोमलु ॥ म० ॥ चद्र वदन अभीरामी ॥ ला० दत पक्ति मुक्तामणि ॥ म० ॥ राति जिहा जास ॥ ला० ॥ नाक शिखा दिवा तणी ॥ म० ॥ अधर प्रवाला तास ॥ ला० ॥ ३२ ॥ कोमल कुतल शामला ॥ म० ॥ जाडी जघा जाण ॥ ला० ॥ भूजा ललित लाबि घणी ॥ म० ॥ पोहला पाय वखाण ॥ ला० ॥ ३३ ॥ वक्षस्थल बनतो महा ॥ म० ॥ मेरु भित आकार ॥ ला० ॥ मृगपतिनी कटि उपमा ॥ म० ॥ वर्णो सुवर्ण अपार ॥ ला० ॥ ३४ ॥ माता देखी मनोहरु ॥ म० ॥ सुतनी सुदर शोभ ॥ ला० ॥ रमण हसण सभोगनो ॥ म० ॥ लाग्यो मनमे लोभ ॥ ला० ॥ ३५ ॥ वेधी मनमथ बाणसु ॥ म० ॥ दीन मुखी ततकाल ॥ ला० ॥ पाले

मारी पोयणी ॥ म० ॥ तेहवी थइ सा बाल ॥ ला०॥ ॥ ३६ ॥ हाथ कपोला थापियो ॥ म० ॥ आतुर अ धीक उदास ॥ ला० ॥ टसक डसक रोवे खरी ॥ म० ॥ लांबा लिये निसास ॥ ला० ॥ ३७ ॥ एह विधी देखी खेचरी ॥ म० ॥ उठि चल्यो मयण ॥ ला० ॥ आव्यो मंदिर आपणे ॥ म० ॥ मनमांहे सुख चयन ॥ ला० ॥ ३८ ॥ ए बोहोत्तरमी ढालमें ॥ म० ॥ रति सा थे घरवास ॥ ला० ॥ गुणसागर कही को शके ॥ म०॥ कोड पवाम्रा तास ॥ ला० ॥ ३९ ॥

दुहा ॥ मदन गयो मंदीर चली, माननी मनहि म झार ॥ अरति हिलुर वाधी महा, सो जाणे किरतार ॥ १ ॥ रूप नहि ए पासवे, हिए विमासी जोय ॥ दिवे पम्रे पतगीयो, शोच करे नहि कोय ॥ २ ॥

ढाल ७३ मी ॥ एकवार घर आवे हो मोहना ॥ ए देशी ॥ मोहन नावे जब लगे तब लगे चयन न होय ॥ उन्हालाकी वेलु ज्यु हो, सुकी जाये सोय ॥ मो० ॥ ॥ १ ॥ रात न आवे निंदडी, लेता सास उसास ॥ दि वस न लागे भूखमी हो, नाहीं पाणीकी प्यास ॥मो० ॥ ॥ २ ॥ सुणि न जावे वातडी, आपणपे न कहाय ॥ उ ची नजरे आवलोकवो हो, माथे सोर न थाय ॥ मो० ॥ ॥ ३ ॥ ए असहणी वेदना, मुझ किम सहेणी जाय ॥ सर्व शरीरे साल ज्यु हो, आज घणो अकुलाय ॥मो० ॥ ४ ॥ लाज गइ निर्लज्ज थइ, विविध प्रकारे विकार ॥

॥ वर वक्षोज विलोकहि हो, नहि जनाइ पार ॥ मो०
॥ ५ ॥ आभूषण उतारीया, उचाटे न सुहाय ॥ जाणे
अहरु काटणा हो, सो दुख माहि गिणाय ॥ मो० ॥
॥ ६ ॥ का सरजी हु कामनी, का सरज्यो वर रूप ॥
रूप विरूप हमारडो हो, विण रति कत अनूप ॥मो०
॥ ७ ॥ मदन ताप तपे खरी, कदली केरो वाय ॥ बा
वना चदन लेपणो हो, शितलता न लहाय ॥मो०॥८॥
चद्र तणे कीरणे करी, हार अने घन सार ॥ तनकी
तपति मिटे नहि हो, विण श्री काम कुमार ॥ मो०॥९॥
बेद विचक्षण आवियो, देखे नाडी जाम ॥ हाथ न
आवे रोगहि हो, नृप चिंता तुर नाम ॥ मो० ॥ १० ॥
एक दिवस कुवर भणि, बोले खेचर राय ॥ माय दुहे
लि ताहरी हो, रयणि छ मासी जाय ॥ मो० ॥ ११ ॥
तु सुखमे रमतो फिरे, न लहे मानि सार ॥ छोरु नीछोरू
होवे घणा हो, माने आश अपार ॥ मो० ॥१२॥ कुम
र कहे सुण तातजी, हु नवि जाणु एह ॥ रोग दुसा
ध्य जे उपनो हो, मातजीने देह ॥ मो० ॥ १३ ॥ मा
ता तीरथ सारखी, माता मोटी होय ॥ गर्भे धरे वे पो
खवे हो, मा सरखी नहि कोय ॥ मो० ॥ १४ ॥ अडस
ठ तीरथ जे किया, तेतीसे सुर कोड ॥ सहस आठ्या
सी मानिया हो, मा मान्या करजोड ॥ मो० ॥ १५ ॥
आयो मदन उतावलो, माताजीनी पास ॥ देखी मा
जिम साभली हो, आरती माही उदास ॥ मो०॥१६॥

उपर पडीयो अडवडी, माय माय पोकार ॥ देदेवा उ लम्भो हो, करे किशु किरतार ॥ मो० ॥ १७ ॥ महा रे ए दो आखडी, ह्मारे अवर न कोय ॥ एम जाणी विधीसो करे हो, माय समाधी होय ॥ मो० ॥ १८ ॥ डाहापणे नाडी ग्रहे, वैदक सहुनो जाण ॥ विविध प्र कारे विचारही हो, रोग तणो प्रमाण ॥ मो० ॥ १९ ॥ ताव नही सिस को नही, नही त्रिदोषो दोष ॥ काटी नही नही कुरु करी हो. कवण रोगनो पोख ॥ मो० ॥ २० ॥ रोग न जाण्यो जाय ए, वेदन तो असरा ल ॥ माय दुखे दुखीयो महा हो, कामदेव नृपाल ॥ मो० ॥ २१ ॥ एतो तिहुत्तरमी कही, ढाले सघन स नेह ॥ गुणसागर सूरी जोयज्यो हो, विषय विरूवन एह ॥ मो० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ लोग सहु अलगा किया गुलाम अलगा कीया ॥ ढडी गेकरी गडके, अलगा राख्या ताम ॥१॥ लाज खोली लालच जणी, विकलाइने वात ॥ करवा लागी कामनी, नाम धरावी मात ॥ २ ॥ फिट फिट फिटकार तु, फिटकारो सो वार ॥ विषिया माथे ताहरे, ए तुऊ चरित्र अपार ॥ ३ ॥

ढाल ७४ मी ॥ नाथ तेरे साथ चलुगीरे ॥ ए देशी ॥ लालन लिल करुगीरे, आगे नेह धरुगीरे ॥ तेरे सग रहु गीरे ॥ ला० ॥१॥ पूर्व जवतर केरो प्यारो, नयणे नेह जणायो ॥ यौवन मद मदिरा मतवाली, मन हार्थी

विफरायो ॥ ला० ॥ २ ॥ न आले देवाले माले, लारे चित्त लगायो ॥ रोम रोमथी झाली सिलगी, युहिमत रु न रहायो ॥ ला० ॥ ३ ॥ काइ सुद्धी न बुद्धि वितु झे, आधाहिथी आधी ॥ भुह कमान गुमान घणेरे, रहि नयणा सर साधी ॥ ला० ॥ ४ ॥ वाप न भाइ बेटो जाणे, विरह करालि बालि ॥ आप विगुति भु डणी, चहुटे चम्मी चम्मालि ॥ ला० ॥ ५ ॥ न कटोल आले मूके, पासे पड्यो जे पावे ॥ वनिता वेलि विल गी आवे, वेगे वार न लावे ॥ला० ॥६॥ निर तणी ग ति नीची जेहवी, तेहवी ए जग नारी ॥ काम अका म करत न लाजे, आदि लगे अविच्यारी ॥ ला० ॥ ॥ ७ ॥ पक्कजणी नारी दो सरखी, अतर नहिय लि गार ॥ हस भमरने सम करी जाणे, नाणे किमपि वि च्यार ॥ ला० ॥ ८ ॥ अवर रमे अवरासु भासे, अव रा साहमु जोवे ॥ चिंते अवर अवर शीर दूषण, दे इ आप विगोवे ॥ ला० ॥ ९ ॥ दिने डर आणे दोरे दिठे, राति अहि फण मोढे ॥ जवर अडवडती अ णिआले, डुगर चढवो लोडे ॥ ला० ॥ १० ॥ उदर थी डर माने अधीको, केसरी काने साहे ॥ नारी च रीत्र लिखे ब्रह्माजो, भाखे घणेउमाहे ॥ ला० ॥ ११ ॥ चुलनि रुलानि कुविसन वाटे, सूरि कता साची ॥ उंतो सुत उंतो पति हणेवा, परतक्ष थइ पै साचि ॥ ला० ॥ १२ ॥ काम कटकमे नारी नायका, ए दल पुठे ला

ग्या ॥ मारी लीया जे साहमा आया, वृक्ष्या जे न
जाग्या ॥ ला० ॥ १३ ॥ हुतो सुंदरी सामा साची,
यौवन मदमातो ॥ वय विलसि जे लाहो लिजे, फि
नावे दीन जातो ॥ ला० ॥ १४ ॥ वुढो बयल ने वु
घोडो, वुढो हाथी हासो ॥ वुढो मानव मान न पा
तरुणी साथे तमासो ॥ ला० ॥ १५ ॥ माथो धूणे
र कपावे, मुहडे लाल खरति ॥ अति असुहावो नाह
जावो, नारी नेह धरती ॥ ला० ॥ १६ ॥ विण सर
हुण वखाण करेवो, देवि हाथ गहेवि ॥ वुढापणे त
णी परणवी, ए पर काजे कहेवि ॥ ला० ॥ १७ ॥ म
मन हाथी इछाचारि, फीरे महा मतवालो ॥ होइ
हावत जोग अकुसे, वहतो पाछो वालो ॥ ला०
॥ १८ ॥ मुदि कान मिचि युग लोचन, मुहडे धी
धीग जापे ॥ रे पापणी शु पाप प्रकाशे, तुझ पा
जग नासे ॥ ला० ॥ १९ ॥ हु तुझ नदनतु मुझ माता
इम किम कहेता आवे ॥ यद्यपि मास जखे नर ल
ट, हाड गले नरहावे ॥ ला० ॥ २० ॥ खेचरी जाखे
तु नहि नदन, हु नहि थारी माता ॥ पढीयो पाम्यो
लेइ उछेरयो, हम तुम्ह विचे विधाता ॥ ला० ॥२१
आपण वावियो व्रक्ष विशेषे, को फल तास न खाय
॥ राखी निवाण आपे जल पिता, कहो शु दूषण
थाय ॥ ला० ॥ २२ ॥ छोडी विच्यार विच्यार शिरो
मणी, कथनी दीसे कोडी ॥ मान बोल मुझको तुम

माये, जासु काया गोमी ॥ ला० ॥ २३ ॥ वात विरुध सो सुद्द विहुणी, एतो परवश नाखे ॥ पुरुष पनोता काज अकारज, जाणी आपु राखे ॥ ला० ॥ २४ ॥ उत्तर आपे मात मयाकर, इम मुझथी किम बूझे, निंद्यथकी अति निंद्य काम ए, कुलवंता नवी सूझे ॥ ला० ॥ २५ ॥ हाथी बारो वाटे फिरतो, अंकुशथी फिरी आवे ॥ पीहर सासरा केरी लाज, नारी आप रखावे ॥ ला० ॥ २६ ॥ वारूवार विच्यार विशेषे, माताजी समझावी ॥ वात न माने मयणराय तव, वनमें बेठो आवी ॥ ला० ॥ २७ ॥ ढाल चमोत्तरमाही खरी ए, खेचरणी खलखाती ॥ श्रीगुणसागर मदन उवारी, त्रिण पाणी वही जाती ॥ ला० ॥ २८ ॥

दुहा ॥ उठी एकाकी आवीयो, साथे शील सुलतान ॥ कुमर कदर्थन देखीने, मन धरतो शुभ ध्यान ॥ १ ॥ बाग नगरने बाहीरे, सुतो धरी मन धीर ॥ कनक माताए शु कह्यु, चित चिंते वडवीर ॥ २ ॥

ढाल ७५ मी ॥ मुनिश्वर माहरे व्रतशु काम ॥ ए देशी ॥ एकाकी उदाशीयोजी, मदन नरेश्वर जाम ॥ दिठा मुनिवर पाखतीजी, जाइ करे परणाम ॥ १ ॥ मुनिवर भाखे एह विच्यार ॥ ए आकणी ॥ माताने केम उपजीजी ॥ सुतसु काम विकार ॥ मु० ॥ २ ॥ चरित्र सुणावी पाछलाजी, ज्ञान तणे बल जोय ॥ इद्रप्रभानो जीवडोजी, कनकमाला ए होय ॥ मु० ॥ ३ ॥ काम

रागनी व्यापनाजी, पोखाणीथी नूर ॥ तेही अन्यासे उपनीजी, ए तुझ साथे चूर ॥ मु० ॥ ४ ॥ काम कहे करुणा करोजी, गुण मणीना संदोह ॥ जणणीए किम पामीयोजी, मुझशु एह विछोह ॥ मु०॥५॥ जंबुदीपे जाणीएजी, खेत नरत गुण धाम ॥ मगधदेश माहे नलोजी, लक्ष्मीपुर अनीराम ॥ मु० ॥ ६ ॥ सोमशर्मा नामे वसेजी, ब्राह्मण विद्या पात्र ॥ कमला कमला सारखी जी, नारी मनोहर गात्र ॥ मु० ॥ ७ ॥ पुत्री तो लक्ष्मीवतीजी, सा अहंकारणी सोइ ॥ एक दिवस ऋषी आवीयाजी, वोहोरण काजे जोय ॥ मु०॥८॥ रुप निहाले आपणोजी, आरीसामे ते जाम ॥ पाछो ऋषी उनो हुवोजी, किधी निंद्या ताम ॥ मु० ॥ ९ ॥ मुनी निंद्याना दोपथीजी, लही कोढनो रोग ॥ पामी सादीन सातमेजी, मरण तणो संजोग ॥ मु० ॥ १० ॥ खरोखरी दुखणी थइजी, मरी सुकरी होय ॥ कोटवाले बाणे हणीजी, सनी कुकरी जोय ॥ मु०॥११॥ अग्नी झालमाहे वलीजी, तव धीवरणी थाय ॥ पूर्व पाप प्रनावथीजी, देही घणु गधाय ॥ मु० ॥ १२ ॥ गंगा पासे कुटीकाजी, रहे स्वजनथी दूर ॥ वनफल नखी नीरुंर पिएजी, करे उदर नरपूर ॥ मु० ॥ १३ ॥ शित काले फिरतो थकोजी, सोइ ऋषीश्वर जाण ॥ ध्यान योग्यने ध्यावतोजी, दिठो पुण्य प्रमाण ॥ मु०॥१४॥ सा अतिशेवा साचवेजी, शुन कर्माने योग ॥ पूरव न

व समजावीयोजी, ज्ञान तणे उपयोग ॥ मु०॥१५॥ प
श्चाताप करे घणोजी, मुनी निंयाना पाप ॥ आलोइ
शुभ भावशुजी, शुद्ध कियो घट आप ॥ मु० ॥ १६ ॥
समकीत धर्म समाचस्योजी, श्रावकना व्रतधार ॥ आ
वी नगरी कौसलाजी, आतमने हितकार ॥ मु०॥१७॥
साधवीया पासे रहेजी, तप नाना विध किध ॥ राज
ग्रही आव्या वहीजी, उत्तम सगति लीध ॥ मु० ॥१८॥
गुफा माही साधवीजी, बार रही सा बाल ॥ विलुरी वा
घे घणुजी, प्राण तज्या ततकाल ॥ मु० ॥ १९ ॥ पही
ले सुर लोके उपनीजी, भोगवे सुख अपार ॥ नगरी
कोसवीए थइजी, राय घरे पट नार ॥ मु० ॥ २० ॥
रामत मिसे हाथे लियाजी, मोरली इडा जोय ॥ धर्मी
सोळने आतरेजी, आदरीया फिरी सोय ॥ मु०॥२१॥
विमलमती गुरुणी कन्हेजी, राणी सजम लीध ॥ अ
णसण उत्तम मासनोजी, विणआलोयण किध ॥ मु०॥
॥ २२ ॥ स्वर्ग बारमे सासतीजी, सुरपदना सुख पा
य ॥ हुइ राणी रुखमणीजी, कामदेव तुह्म माय ॥ मु०
॥ २३ ॥ किधा कर्म न छुटीएजी, वरस सोळ लगी दे
ख ॥ विरह तुह्मारो पामीयोजी, माताए सुविसेष ॥
मु० ॥ २४ ॥ माता पासे जाइनेजी, लहो विद्या दोय ॥
प्रज्ञापतीने रोहीणीजी, अती वरदाइ सोय ॥ मु० ॥२५॥
साख ऋुपी पच्योत्तरमीजी,ढाल भली कहेवाय॥ गुणसा
गर रुखमणी तणोजी, चरीत्र महा सुखदाय॥मु०॥२६॥

दुहा ॥ मदन कुमर फीरी आवीयो, खेचरणीने स ग ॥ विण प्रणाम बेठो सही, साची ते मन रग ॥१॥ रूपनायने नावीयो, ए आयो हम पास ॥ वचन वि शेषे मानशे, दिसेछे उल्हास ॥ २ ॥

ढाल ७६ मी ॥ रान नमरानी देशी ॥ तव बोले सा सुदरी, सुण जोग पुरदर ॥ मान वचन मुज आ ज, शुण सुण जोग पुरदर ॥ विविध प्रकारे ताहरा ॥ सु० ॥ सारु वछित काज ॥ शु० ॥ १ ॥ प्रज्ञापतिने रो हिणी ॥ सु० ॥ मोटी विद्या एह ॥ शु० ॥ प्रित रीतशु रिझवी ॥ सु० ॥ आपु आणी सनेह ॥ शु० ॥ २ ॥ धु तो धूतेवा जणी ॥ सु० ॥ वोले मीठा वोल ॥ शु० ॥ आज लगी लोप्या नहि ॥ सु० ॥ थारा बोल अमोल ॥ शु० ॥ ३ ॥ हु छु किंकर ताहरो ॥ सु० ॥ आज्ञाका री जोय ॥ शु० ॥ द्यो विद्या परमेश्वरी ॥ सु० ॥जे ते जाखी दोय ॥ शु० ॥ ४ ॥ विषया वश आतुर थइ ॥ सु० ॥ धोलो जाण्यो दुध ॥ शु० ॥ दीधी विद्या बीधी क ही ॥ सु० ॥ होय गइ अति शुद्ध ॥ शु० ॥ ५ ॥ मत वालीथी अती घणी ॥ सु० ॥ मतवाली ए जोय ॥शु० ॥ उतो धन नवि दाखवे ॥ सु० ॥ ए रही विद्या खोय ॥ शु० ॥ ६ ॥ विद्या साधी सक्ष करी ॥ सु० ॥ पायो बहु सतोष ॥ शु० ॥ खेचरणीशु खरखरा ॥ सु० ॥ वोले वचन सरोष ॥ शु० ॥ ७ ॥ मे नवि दीठो ता तजी ॥ सु० ॥ नवि दिठि निज मात ॥ शु० ॥ तात

मात तुहि सहि ॥ सु० ॥ मत कहे बीजी वात ॥ शु० ॥ ॥ ८ ॥ वाचा पाली विशेपथी ॥ सु० ॥ जगमे वाचा सार ॥ शु० ॥ वाचा विचली जेहनी ॥ सु० ॥ वादी गयो अवतार ॥ सु० ॥ ९ ॥ कहे रामजी भरतशु ॥ सु० ॥ बोल न बोले आण ॥ शु० ॥ हिन प्रतिज्ञा नो धणी ॥ सु० ॥ तजवो जेम मसाण ॥ शु० ॥ १० ॥ किंवा को निंद्या करे ॥ सु० ॥ कोइ करे गुण ग्यान ॥ शु० ॥ लक्ष्मी जाउ फीरी आउ ॥ सु० ॥ न तज्यु न्याय निधान ॥ शु० ॥ ११ ॥ पहिलि तो तु माय जी ॥ सु० ॥ पालवाने काज ॥ शु० ॥ विद्या दान त णि दाता ॥ सु० ॥ गुरुणि हुइ आज ॥ शु० ॥ १२ ॥ वज्रपात समानडा ॥ सु० ॥ साभलि वचन विचार ॥ शु० ॥ उठि वाघणी वलगवा ॥ सु० ॥ चाल्यो करीय जुहार ॥ शु० ॥ १३ ॥ हाथ घसे कूटे हियो ॥ सु० ॥ शोच करत अपार ॥ शु० ॥ ठग न ठग्यो ठगे हु ठ गी ॥ सु० ॥ विद्या खोइ सार ॥ सु० ॥ १४ ॥ कोइ उ पाय केलवी ॥ सु० ॥ लाउ शिख जे वार ॥ शु० ॥ दुख ज्वाला शिलि करु ॥ सु० ॥ पामु चयन ते वार ॥ शु० ॥ १५ ॥ आप विलुरि तन घणु ॥ सु० ॥ मा रे अति तोफान ॥ शु० ॥ रोति न रहे राखता ॥ सु० ॥ पूछे तव राजान ॥ शु० ॥ १६ ॥ विलचिवा घणी वलवले ॥ सु० ॥ ए तुम सुतना काम ॥ शु० ॥ हो य वटाउ आपणा ॥ सु० ॥ तो घरनो स्यो नाम ॥ शु०

॥ १७ ॥ जे निज ते निज जाणीए ॥ स० ॥ जे पर ते पर होय ॥ शु० ॥ मदिर वसे न प्राहुणो ॥ सु० ॥ इम भाखे सहु कोय ॥ शु० ॥१८॥ प्रभुजी तुझ प्रसादथी ॥ सु० ॥ गोत्रजदेव पसाय ॥ शु० ॥ शील न भांग्यो मूलथी ॥ सु० ॥ पिण न रह्यो तनुमे काई ॥ शु० ॥ १९ ॥ द्रीठा लुड कुलठने ॥ सु० ॥ जो परन व पोचाउ ॥ शु० ॥ तो तो जिववो सहि ॥ सु० ॥ नहितर काठ धखाउ ॥ शु० ॥२०॥ आत तपे अति आकरी ॥ सु० ॥ अति विना न तपाय ॥ शु० ॥ सोक्याना ऊगडा विषे ॥ सु० ॥ माता कूठी थाय ॥ शु० ॥ २१ ॥ राजा रीसे परजल्यो ॥ सु० ॥ न लह्यो मर्म लिगार ॥ सु० ॥ पुत्राने तेडी कहे ॥ सु०॥ मारो मदन कुमार ॥ सु० ॥२२॥ जन अपवाद निवारवा ॥ शु० ॥ गुपत पणे ए काज ॥ सु० ॥ करवो ए उतावलो ॥ सु० ॥ दाव लह्यो हम आज ॥ सु० ॥ ॥ २३ ॥ मदन कुमर आगे करी ॥ सु० ॥ स्नान करेवा जाय ॥ सु० ॥ विद्या भेद जणावियो ॥ सु० ॥ बीजो रूप धराय ॥ सु० ॥ २४ ॥ आपण अलगो जइ रह्यो ॥ सु० ॥ पोते करे सुकुमार ॥ सु० ॥ दृढ चढि ढाकी पछे ॥ सु०॥ ऊले वावि मझार ॥ सु०॥२५॥ शिला विकुर्वी मोटकी ॥ सु०॥ वावि तणे परीमाण ॥सु०॥ उर्द्ध पाव अधोमुखे ॥ सु० ॥ दाख्या तेहि अयाण ॥ ॥ सु० ॥२६॥ एक न खिल्यो ते गयो ॥सु०॥ राजा पासे

पुकार॥सु०॥ साहण वाहण सामटे ॥सु०॥ राय चढ्यो तेहिवार ॥ शु० ॥ २७ ॥ चतुरगी सेन्या सजी ॥ सु० ॥ साहमो काम कुमार ॥ सु० ॥ आयो आडवर घणे ॥ सु० ॥ जाग्यो जरम अपार ॥ सु० ॥ २८ ॥ दुर्जय मदन विचारीयो ॥ सु० ॥ विद्या मागे राय ॥ सु० ॥ नारी कहे लेइ गयो ॥ शु० ॥ राजा तव पिछताय ॥ शु० ॥ २९ ॥ ए नारी व्यजिचारिणी ॥ सु० ॥ चरित करे लख कोड ॥ शु०॥ फिरी आयो रणजूमीका॥शु० ॥पुत्र नम्यो करजोरु ॥ शु० ॥ ३० ॥ जनक जीति ज स वधीए ॥ सु० ॥ सो अपजस अवधार ॥ शु० ॥ तिरथ माहे मानीयो ॥ सु० ॥ जनक वमो ससार ॥ शु० ॥ ३१ ॥ वृद्ध विशेषे वाधीयो ॥ सु० ॥ गयो जेदि आकाश ॥ शु० ॥ यद्यपी ऊची नाशीका ॥ सु० ॥ तो ही पिण शीर तले वास ॥ शु० ॥ ३२ ॥ एह विवेक विच्यारवे ॥ सु० ॥ कामे तज्यो अजीमान ॥ शु० ॥ तावेता कचन तणो॥ सु० ॥ वेधे वधे घनवान॥ शु० ॥ ३३ ॥ ज्वार साल ने तरु फल्यो ॥सु ० ॥ चउथो साजन देख ॥ शु० ॥ सहेजे हिनमणा हुवा ॥ सु० ॥ मदन तो जाण विशेष ॥ शु० ॥ ३४ ॥ बधव वधन छेडीया ॥ सु० ॥ मिलीयो बहु परीवार ॥ सु० ॥ घर घर रग वधामणा॥ सु० ॥ वरत्यो जय जयकार॥ शु० ॥ ३५ ॥ विनय करीने विनवे सु० ॥ तात करो शुविच्यार ॥ शु० ॥ तेग फिरे किम तेहनी ॥ शु० ॥ जेहनो

॥ १७ ॥ जे निज ते निज जाणीए ॥ सु० ॥ जे पर ते पर होय ॥ शु० ॥ मदिर वसे न ब्राह्मणो ॥ सु० ॥ इम भाखे सहु कोय ॥ शु० ॥१८॥ प्रभुजी तुझ प्रसादथी ॥ सु० ॥ गोत्रजदेव पसाय ॥ शु० ॥ शील न भाग्यो मूलथी ॥ सु० ॥ पिण न रह्यो तनुमे काइं ॥ शु० ॥ १९ ॥ ढीठा लुड कुलठने ॥ सु० ॥ जो परभव पोचाउ ॥ शु० ॥ तो तो जिववो सहि ॥ सु० ॥ नहितर काठ धखाउ ॥ शु० ॥२०॥ आत तपे अति आकरी ॥ सु० ॥ अति विना न तपाय ॥ शु० ॥ सोक्याना झगडा विषे ॥ सु० ॥ माता झूठी थाय ॥ शु० ॥ २१ ॥ राजा रीसे परजल्यो ॥ सु० ॥ न लह्यो मर्म लिगार ॥ सु० ॥ पुत्राने तेडी कहे ॥ सु०॥ मारो मदन कुमार ॥ सु० ॥२२॥ जन अपवाद निवारवा ॥ शु० ॥ गुपत पणे ए काज ॥ सु० ॥ करवो ए उतावलो ॥ सु० ॥ दाव लह्यो इम आज ॥ सु० ॥ ॥ २३ ॥ मदन कुमर आगे करी ॥ सु० ॥ स्नान करेवा जाय ॥ सु० ॥ विद्या भेद जणावियो ॥ सु० ॥ बीजो रूप धराय ॥ सु० ॥ २४ ॥ आपण अलगो जइ रह्यो ॥ सु० ॥ पोते करे सुकुमार ॥ सु० ॥ वृक्ष चढि डाकी पड्ने ॥ सु०॥ झूले वावि मझार ॥ सु०॥२५॥ शिला विकुर्वी मोटकी ॥ सु०॥ वावि तणे परीमाण ॥सु०॥ उर्द्ध पाव अधोमुखे ॥ सु० ॥ दाख्या तेहि अयाण ॥ ॥ सु० ॥२६॥ एक न खिल्यो ते गयो ॥सु०॥ राजा पासे

कुमार, सुण नारद सुविचार ॥ आबे लाल ॥ माय
बापने भूझो ए ॥ ते तो गमन कराय ॥ अणपूछ्या
न जवाय ॥ आबेलाल ॥ आगल पाछल शुझोए ॥१॥
मात पिताना पाय, प्रणमे बहुले जाय ॥ आ० ॥ को
मल वचन प्रकासतो ए ॥ तात खमो अपराध ॥ मे दि
धो दुख दाह ॥ आ० ॥ दिनपणो अति भाषतो ए॥
॥२॥ माता सुण अरदास, हुवु थारो दास ॥ आ० ॥ आ
श हमारी पूरवी ए ॥ पडीयो पत्थर माही ॥ उठायो
उठाही ॥ आ० ॥ आरती चिंता चूरवी ए ॥ ३ ॥ वेरी
केरे वास, तुह्म पसाइ आश ॥ आ० ॥ पुगी माहरा म
न तणी ए ॥ भाइ भाया आन ॥ करता हरता प्राण
॥ आ० ॥ पहुची न शक्यो तुम्ह भणी ए ॥ ४ ॥ हुतो
दीन अनाथ, म्हारो कोइ न नाथ ॥ आ० ॥ गगन पड
तो झिलीयो ए ॥ थारा किधा काज ॥ ए सघला शु
भ साज ॥ आ० ॥ पाप पराभव पिलीयो ए ॥ ५ ॥ जेह
ने पोढा पाप, प्रगटे आवीयो आप ॥ आ० ॥ माय वि
छोहो तेहमें ए ॥ भूडा माही एह ॥ भलपण केरी रेह
॥ आ० ॥ तुम्हशी जणणी जेहने ए ॥ ६ ॥ विसारे म
ती मोय, माय विनवुं तोय ॥ आ० ॥ हियमा भीतर रा
खवो ए ॥ मुझने बालक जाण, चूबी मुह शीर पाण
॥ आ० ॥ प्रेम अमीरस चाखवो ए ॥ ७ ॥ छाती फाटे
माय, पितापिण इम थाय ॥ आ० ॥ चउधारा आशु
वहे ए ॥ विसारयो नवि जाय, राख्यो पिण न रहाय

हिण आचार ॥ शु०॥ ३६ ॥ साठ अने वली सोलमी सु० ॥ ढाले शिल वखाण॥ शु० ॥ गुणसागर उपदेशीयो॥ सु० ॥ शिलसु धर्म प्रधान ॥ शु० ॥ ३७॥

दुहा ॥ नारदऋषी अवलोकियो, पुत्र पराक्रम कोड ॥चाली आयो आशनो, मदन नम्यो करजोड ॥ ॥ १ ॥ मदन कहे सुण बापजी, माहरे जग नही कोय॥ माय बाप वयरी थया, कहो किशी गती होय ॥ २॥ तुझसम अवर सोभागीयो, को नही जगत मझार ॥ बाप कृष्ण मा रुखमणी, यादवनो परीवार ॥ ३ ॥ हु आयो तुझ तेडवा, चाल मतलावीश वार, अवसरनो आगम भलो, जिम जगमें जलधार ॥ ४ ॥ अवसर आयो पवनसुत, सत्यवती उछरग ॥विसाला पिण अवसरे, फरसे लक्ष्मण अग ॥ ५ ॥ अवसरथी सुग्रीवना, रामे समार्या काम ॥ रावण वधव पामीयो, लक पतीनो नाम ॥ ६ ॥ अवसर पांडु पधारीया, कुतीका पिण फद ॥ अवसर पाण्डव प्रगटीया, करवा कौरव मद ॥ ७ ॥ अवसर यादव देखीए, भलो कियो उपगार ॥ अवसर चूक्या मानवी, सोच करे अपार ॥ ८ ॥ धूलनी पाणी पाइयो, जीवतढाने जोय ॥ घडा सो रेड्या उपरे, मुआ पछी शुं होय ॥ ९ ॥ भामा पुत्रना, व्याहमें तुझ माता शिर केस ॥ लियासा जीवे नही, तुझ मन थाय कलेश॥ १० ॥

ढाल ७७ मी ॥ माठे लालनी देशी ॥ बोले मदन

॥ १५ ॥ हुतो बुढो देख, तु तरुणो सुविशेष ॥ आ० ॥ किउ न करे मन भावतो ए ॥ रचे विमान रसाल, सबहि विधी सु विशाल ॥ आ० ॥ रविमडल जिम आवतो ए ॥ १६ ॥ चाले थोडी चाल, कहे नारद त तकाल ॥ आ० ॥ किउ न चले वेगो वहि ए ॥ नारद वदन तुरत, तुटेखो परदत ॥ आ० ॥ वेगे चलायो ति म साहिए ॥ १७ ॥ रुपाचल गिरि सोइ, उलघीया ते दोइ ॥ आ० ॥ प्रथवी उपरे आवीया ए ॥ खदिरा अट वि जेह, तक्षक परवत तेह ॥ आ० ॥ शिला थान दे खाविया ए ॥ १८ ॥ भूमडलना ख्याल, गिरी सरी ता सुविशाल ॥ आ० ॥ विविध प्रकारे देखता ए ॥ म ध्य देशमे देव, आइ गया ततखेव ॥ आ० ॥ वारु वस्तु विशेषता ए ॥ १९ ॥ नारद लायो लाल, एतो ढाल रसाल ॥ आ० ॥ भाखी सत्योत्तरमी ए ॥ श्री गु णसागर एम, बोले बोल सप्रेम ॥ आ० ॥ मदन कथा मुझ मन रमी ए ॥ २० ॥

दुहा ॥ सेना दिठि सामटी, हय गयनो नहि पार ॥ राज कुमार राजा घणा, वाजे वाजा सार ॥ १ ॥ मदन कहे ऋषि ए किहा, जाइ दल बल पूर ॥ खेच रमे नवि पुखीया, एहवा लोक सनूर ॥ २ ॥ ऋपी भां खे गजपुर धणी, दुर्योधन भूपाल ॥ चतुरगी सेन्या भली, तेहनि ए सुविशाल ॥ ६ ॥ होड पडी जेही कारणे, रुखमणी भामा माहे ॥ उदधी नामे सा कुअ

॥ आ० ॥ जेह लेहणो सोर लहे ए ॥ ८ ॥ अवर मा
ताने शीश, नामी लहे आशीश ॥ आ० ॥ कोडी वर
स चिरजिवजे ए॥ जाइ तणो परीवार, स्वामि मदन
कुमार ॥ आ० ॥ जाइ जणे आनद जे ए ॥ ९ ॥ सु
ण मोटा मत्रीश, खामु विशवा वीश ॥ आ० ॥ जे भे रो
स धरावीयो ए ॥ सुभट सहु करजोम, आपनमे मन
मोड ॥ आ० ॥ खमज्यो जोर करावीयो ए॥ १० ॥ जे
ता वान गुलाम, तेहने पिण सलाम ॥ आ० ॥ डरण हुइ
ने हालीयो ए ॥ नान्हा मोटा साथ, घाली गलामा
बाथ ॥ आ० ॥ चित्त चोरीने चालीयो ए ॥ ११ ॥
मस्तक विण जेम देह, नाक विना मुख एह ॥ आ० ॥
तारा विण जिम लोयणा ए ॥ पान विना जिम वेल,
जल विण सरोवर मेल॥ आ० ॥ लुण विणा जिम भो
जणो ए ॥ १२ ॥ विद्या विण जिम देवि, हर्रा विण
दरिये कहेवी ॥ आ० ॥ देवा विण जिम देहरो ए ॥
विण श्री काम कुमार, सुना घर दरबार ॥ आ० ॥
लालन घर शिर सेहरो ए ॥ १३ ॥ बेसी विमाने ता
म, नारदशु अभीराम ॥ आ० ॥ सूडो जिम उडी ग
यो ए ॥ हेज हिये न समाय, हिंसे जिम वछ गाय
॥ आ० ॥ मा मिलवाने अलजीयो ए ॥ १४ ॥ ना
रद कातिशु विमान, तोफे लात प्रमाण ॥ आ० ॥
हास्य हिए न समावही ए ॥ बावाजीशु ताम, बो
ले कुमर काम ॥ आ० ॥ कामे शु न सोहावइ ए॥

॥ १५ ॥ हुतो बुढो देख, तुं तरुणो सुविशेष ॥ आ० ॥ किउ न करे मन जावतो ए ॥ रचे विमान रसाल, सवहि विधी सु विशाल ॥ आ० ॥ रविमडल जिम आवतो ए ॥ १६ ॥ चाले थोडी चाल, कहे नारद त तकाल ॥ आ० ॥ किउ न चले वेगो वहि ए ॥ नारद वदन तुरत, तुटेखो परदत ॥ आ० ॥ वेगे चलायो ति म सहिए ॥ १७ ॥ रुपाचल गिरि सोइ, उलघीया ते दोइ ॥ आ० ॥ प्रथवी उपरे आवीया ए ॥ खदिरा अट वि जेह, तक्षक परवत तेह ॥ आ० ॥ शिला थान दे खाविया ए ॥ १८ ॥ नूमडलना स्याल, गिरी सरी ता सुविशाल ॥ आ० ॥ विविध प्रकारे देखता ए ॥ म ध्य देशमे देव, आइ गया ततखेव ॥ आ० ॥ वारु वस्तु विशेषता ए ॥ १९ ॥ नारद लायो लाल, एतो ढाल रसाल ॥ आ० ॥ नाखी सत्योत्तरमी ए ॥ श्री गु णसागर एम, बोले वोल सप्रेम ॥ आ० ॥ मदन कथा मुझ मन रमी ए ॥ २० ॥

दुहा ॥ सेना दिठि सामटी, हय गयनो नहि पार ॥ राज कुमार राजा घणा, वाजे वाजा सार ॥ १ ॥ मदन कहे ऋषि ए किहा, जाइ दल बल पूर ॥ खेच रमे नवि पुछीया, एहवा लोक सनूर ॥ २ ॥ ऋपी ना खे गजपुर धणी, दुर्योधन नूपाल ॥ चतुरगी सेन्या नली, तेहनि ए सुविशाल ॥ ३ ॥ होड पडी जेही कारणे, रुखमणी नामा माहे ॥ उदधी नामे सा कुअ

री, परणवा चालि उगहे ॥ ४ ॥ जामा घरे दिन बा रमे, सुतनो थाप्यो नाम ॥ जानु विशेषे जानुने, ते हसु व्याहण काम ॥ ५ ॥

ढाल ७८ मी ॥ नणदलनी देशी ॥ कुमर कहे सुण तातजी, नारद ए मुझ वात ॥ कुमर ॥ कौतुक करतो नहि रहु, राखे शु अखियात ॥ कु० ॥ कौ० ॥ १ ॥ रूप धरयो तव जिलनो, विरलो वदन विशाल ॥ कु० ॥ मोटा दात विहामणा, प्रौढ बणायो जाल ॥ कु० ॥ कौ० ॥ २ ॥ उडा कुआ सारिखा, गाल डरावणा हार ॥ कु० ॥ डिले वली अति लोल्हरी, पिला केश अपार ॥ कु० ॥ ३ ॥ लोचन दिसे रातडा, दिसे मोटी काय ॥ कु० ॥ ठेटा कर अति दुबला, मोठो पेट कहाय ॥ कु० ॥ ॥ ४ ॥ जाडी जाघ सल घणा, रूपे रूप कुरूप ॥ कु० ॥ बेठि चिपटी नाशिका, कान विराजे सूप ॥ कु० ॥ ५ ॥ अकुश अति आकरा, जागी केड देखाय ॥ कु० ॥ भृकुटी जाले जमजडे, जोला केरो राय ॥ कु० ॥ ६ ॥ हाथे तीरने कामठो, थोथा बाण बेच्यार ॥ कु० ॥ गाति वालि गरवसु, वचन वदे अविचार ॥ कु० ॥ ७ ॥ मारग रोकीने रह्यो, कोइ न सके जाय ॥ कु० ॥ कौरव केलवणी करे, आगे उना आय ॥ कु० ॥ ८ ॥ रे जाड तुं स्यु कहे, क्यु रोकीजे माग ॥ कु० ॥ सो जाखे तुह्म साजलो, दाण तणो मुझ लाग ॥ कु० ॥ ९ ॥ कौरव बोले जीलडा, बोल विमासी बोल ॥ कु० ॥ स्यु ह

म मोला वाणीया, आपे दमडा खोल ॥ कु० ॥ १० ॥
कृष्ण कह्यो छे मुझ जणी ॥ झारा देश मझार ॥ कु०॥
वस्तु नलि ते ताहरी, हु छु कृष्ण कुमार॥कु०॥ ११॥
तुम्ह सरीखा छे केटला, कृष्ण तणे घर नद ॥ कु० ॥
मुझ सरीखो तो हुज छु, कृष्ण तणे कुल चद ॥ कु०॥
॥ १२ ॥तु साचोरे तु साचो, माता जायो रत्न ॥कु०॥
रत्न अछु चिंतामणी, क्यु न करो तुम्ह यत्न॥ कु० ॥
॥ १३॥ यत्न करे सा अति घणु, पूजे स्या तुझ पाय
॥ कु०॥ ए आवी हाथ विहथमे, जीन किया स्यु था
य ॥ कु० ॥ १४ ॥ तो हु जायो कृष्णनो, मारु थारो
मान ॥ कु०॥ठाकुर करडा चाहीए, ए गो एह मेदान
॥ कु० ॥ १५ ॥ ता लगे तेमनी व्यापना, ज्या लगे
न उगे सूर ॥ कु०॥ नाचे कूदे हरणलो, नायो सिंघ
हजूर ॥ कु०॥ १६ ॥ कौरव तुझ कपटी घणा कपट
तणे वल जोय ॥कु० ॥ भूमी छडावी पाडवा रीस घ
णी मुझ सोय ॥ कु०॥ १७ ॥ उधीत पोधीन थाहरी,
झूठो करो गुमान ॥ कु०॥वडमाता व्यभिचारणी, था
रा एह वखाण ॥कु०॥कौ०॥१८ ॥आधे जाया आध-
ला, होइ फिरो तुझ आप ॥ कु० ॥ मीडु दीठाछे
घणा, मिल्योन कालो साप ॥ कु०॥ कौ० ॥ १९ ॥
यद्यपी वादल ढाकीयो, तेज जणावे भाण
॥कु०॥ विणसी जाणी गोठमी, विच करे प्रधान ॥
॥कु०॥ २० ॥ले घोमो ले हाथीयो, जे थारे मन भाव

री, परणवा चालि उगाहे ॥ ४ ॥ नामा घरे दिन बा रमे, सुतनो थाप्यो नाम ॥ जानु विशेषे जानुने, ते हसु व्याहण काम ॥ ५ ॥

ढाल ७८ मी ॥ नणदलनी देशी ॥ कुमर कहे सुण तातजी, नारद ए मुझ वात ॥ कुमर ॥ कौतुक करतो नहि रहु, राखे शु अखियात ॥ कु० ॥ कौ० ॥ १ ॥ रूप धरयो तव भिलनो, विरलो वदन विशाल ॥ कु० ॥ मोटा दात बिहामणा, प्रौढ वणायो भाल ॥ कु० ॥ कौ० ॥ २ ॥ उडा कुआ सारिखा, गाल डरावणा हार ॥ कु० ॥ डिले वली अति लोल्हरी, पिला केश अपार ॥ कु० ॥ ३ ॥ लोचन दिसे रातड़ा, दिसे मोटी काय ॥ कु० ॥ ठोटा कर अति दुबला, मोठो पेट कहाय ॥ कु० ॥ ॥ ४ ॥ जाडी जाघ सल घणा, रूपे रूप कुरूप ॥ कु० ॥ वेठि चिपटी नाशिका, कान विराजे सूप ॥ कु० ॥ ५ ॥ अकुश अति आकरा, जागी केड देखाय ॥ कु० ॥ भृकुटी भाले भरूभडे, भोला केरो राय ॥ कु० ॥ ६ ॥ हाथे तीरने कामठो, थोथा बाण बेच्यार ॥ कु० ॥ गाति वालि गरवसु, वचन वदे अविचार ॥ कु० ॥ ७ ॥ मारग रोकीने रह्यो, कोइ न सके जाय ॥ कु० ॥ कौरव केलवणी करे, आगे उभा आय ॥ कु० ॥ ८ ॥ रे भाइ तुं स्यु कहे, क्युं रोकीजे माग ॥ कु० ॥ सो भाखे तुह्म सांभलो, दाण तणो मुझ लाग ॥ कु० ॥ ९ ॥ कौरव बोले भीलडा, बोल विमासी बोल ॥ कु० ॥ स्यु ह

वाद सहु निस्वाद हो, स्वाद नहो स्वाद न लागे को भलो ए ॥ साही नाखो दूर हो, चालो एहने चूर हो, चूरनहो चूरी चल्यो को मति टलो ए ॥ २ ॥ एक थो दरवेस हो, मनोरथ सुविशेष हो, शेषनहो लाते फूट्यो खापरो ए ॥ हुवे भांगो गेह हो, तेहवो दिसे एह हो, एह नहो मारी किजे पाधरो ए ॥ ३ ॥ दल चाल्या अभीराम हो, दल रोकाया ताम हो, तामनहो ताम रोक्या ए दल सहु ए ॥ सुभट मारण काज हो, धाया सजी साज हो, साजनहो साज सजे ते बहु ए ॥ ४ ॥ कुकुभ सुणी कान हो, खबर मिलीया आण हो, आणनहो खबर मिलीया अति घणा ए ॥ विविध आयुधवत हो, युद्धमे बलवत हो, वत नहो मान मोरू परतणा ए ॥ ५ ॥ भूमीने गिरी श्रृग हो, वृक्ष उपरी रग हो, रगनहो रगी रमता देखीए ए ॥ कृष्ण अगज कोडीहो, भड शीरोमणी जोभी हो, जोडीनहो होड को न विशेखीए ए ॥ ६ ॥ सुभट नाठा जाय हो, को न साहमा थाय हो, थायनहो सिंघ साहमा हर्णेला ए ॥ उदधी कुमरी लिध हो, भीलनो कारज सिध हो, सिधनहो काज अती वाधी कला ए ॥ ७ ॥ देखीयो रूपी राय हो, ए न लीधो जाय हो, जायनहो ए न लीधो सुरनरु ए ॥ लावीयो ततकाल हो, साधु पासे वाल हो, वाल नहो कियो रूप पुरदरु ए ॥ ८ ॥ दूरथी देखत हो, पूग्ही गुणवत हो, व

॥कु०॥ जेहनी जेहने सुपता, गेस किसो तुम्ह राय ॥ ॥कु०॥२१॥ घोडा हाथी शु करु, लेशु आठी वस्तु ॥ कु० ॥ माहरा मनमे नावती, देसी वस्त समस्त ॥ कु० ॥ २२ ॥ आठीमे आठी घणी, आठी कु मरी जोय॥ कु० ॥ सोइ आपो मुझ नणी, हरी रली यायत होय ॥ कु०॥२३॥ थारे तो ए हासठे, पिण मा हरे ए साच ॥कु०॥ तो हु जायो वापनो, पालु बोली वाच ॥ कु० ॥ २४ ॥ जिम जिम हठ पोखीयो, पातसा हके पास॥कु०॥ तिम हठ पोखु हु घणो, तो देज्यो शाबास ॥ कु०॥२५॥ ढाल नली अठोत्तरमी, कौरव सु सवाद ॥ कु० ॥ गुणसागर जस पामशे, पूरव पुण्य प्रसाद ॥ कु० ॥ कौ० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ रे रे निर्लज्ज दीठ तुं, नाखे किस्यु गिमार ॥ सोड देखी धूर आपणी, किजे पाउपसार ॥ १ ॥ नान्हे मुहरूे मोटाका, बोले बोल न कोय ॥ बोले तो पावे सही, गाल चपेटा सोय ॥ २ ॥ हुश करी जे ते तली, जे तो पुण्य प्रकाश ॥ आवो अवर जइ रह्यो, वामन शिफल आश ॥ ३ ॥

ढाल ७९ मी ॥ नेम आयो सावन मास हो ॥ ए देशी ॥ वामन शीफल आश हो, कौरव नाखे तास हो, तास नहो नाखे कौरव राजवी ए ॥ नैरव ऊपा पात हो, करी निज आतमघात हो, घात नहो पावे नारी अनीनत्री ए ॥ १ ॥ पशु स्यो ऊखवाद हो,

यनहो आवे श उतावलो ए ॥ पूरीसु शकेत हो, माय मिलवाने हेत हो, हेतनहो चित्तमे उमाहलो ए ॥ ॥१६ ॥ जाति कौरव काल हो, आवीयो सकुमाल हो, मालनहो ढाल ए एकुणऐशीमी ए ॥ मदन महिमा माल हो, सुरनीने सुविशालहो, सालनहो गुणसागर मन सारमी ए ॥ १७ ॥

दुहा ॥ मदन कुमर मन रगशु, यनी गगन विमान ॥ आवे नगरी द्वारिका, गुप्तपणे गुण जाण ॥ ॥१॥ धुर आयो चोजगानमे, वधव नयणे दिठ ॥ सुदरता अविलोकता, लोयण अमीय पइठ ॥ २ ॥ पूछे विद्या सो कहे, नानु नानुं सम देख ॥ नामा सुत आनदमें, पुण्य प्रताप विशेष ॥ ३ ॥ घोमा खेलावे घणा, घोडासु अति प्रेम ॥ आप जणावु एहने, मा सुख पामे जेम ॥ ४ ॥

ढाल ८० मी ॥ विछियानी देशी ॥ कौतुक केलवे घणु, तव श्री काम कुमाररे ॥ नाइ ॥ चरित तणो नहिं पार ए, कोइ न जाणे साररे ॥ नाइ ॥ कौ०॥ १ ॥ लबोदर काया वमी, चचल गति विस्ताररे नाइ ॥ सर्व अवेवा शोनतो, सर्व सुलक्षण धाररे ॥ ना० ॥ कौ०॥ २ ॥ ते उचे स्वर सारिखो, अश्व अनोपम वानरे ॥ना० ॥ विविध प्रकारे शृगारीयो, सोना केरो पलाणरे ॥ ना० ॥ कौ० ॥ ३ ॥ एहवो घोडो कर धरी, सो सोदागर थायरे ॥ना०॥ पाणि पाव शिर कपणी, ज्या

तनहो कवण ए सुख कारीका ए कहे नारद ताम हो, सुणही कुवर काम हो, कामनहो ए ॥ वर नगरी द्वारीका ए ॥ ९ ॥ स्वर्ग खड समान हो, उपमानो थान हो,थाननहो एहवो बिजो को नहीं ए ॥ कृष्ण राय निवास हो, महा साल आवास हो, वासनहो वास रुडोछे सही ए ॥ १० ॥ हेममे पागार हो, तुग न हाथ अठार हो, ठारनहो रत्न मणीमे कागुरा ए॥ देव निर्मीत काम हो, स्वर्गपुरी सम ठाम हो, ठामन हो पूरीये वरुवरा नरा ए ॥ ११ ॥ वावीको विस्तार हो, नीर पूरीत सार हो, सारनहो नारी मजन कारणे ए ॥ वसा श्री गजराज हो, मद झरत सकाज हो, काजनहो मदजले रज वारणे ए ॥ १२ ॥ मेहेल तणी वरओली हो, वणती वणती पोली हो, पोलीनहो पोली तो उची कही ए ॥ सकल काती अपार हो, उगतो दिनकार हो, कारनहो काति किरणे मीली रही ए ॥ १३ ॥ हाट घर वर सोह हो, सोहनो सदोह हो, दोहनहो सोह गुणे धन जाणीयो ए॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल हो, तिन लोक रसाल हो, सालनहो सार शोधीने आणीयो ए ॥ १४ ॥ पूरी देखण जाय हो, साधु आडो थाय हो, थायनहो थाए आडो सादरो ए ॥ यादवनो अति जोर हो, थारो चित्त चकोर हो, कोरनहो सोर माचे सखरो ए ॥ १५ ॥ शहेर माहि जाय हो, मिलसु तुमने आय हो, आ

रहि लाजरे ॥ ना० ॥ कौ० ॥ १४ ॥ बुढा बाबा बाउ ला, जीन करग्या स्यो काजरे ॥ ना० ॥ चढि घोडे दे खुं साहि, चतुरपणु तुऊ आजरे ॥ ना० ॥ कौ० ॥ ॥१५ ॥ घोरुे चढीयो जाय जो, वेचणनो स्यो कामरे ॥ ना० ॥ कोइ चढावे जोरसुं, देखाउ गति तामरे ॥ ना० ॥ कौ० ॥ १६ ॥ सात पाच नर आवीया, उपाड्यो आकाशरे ॥ ना० ॥ पड्यो अपूठो उपरे, खोपर दत विणासरे ॥ ना० ॥ कौ० ॥ १७ ॥ बीजी वारे इम सही, दाठ्या सुनट अपाररे ॥ ना० ॥ ती जीवार चढावता, चाप्यो नानुं कुमाररे ॥ ना० ॥ कौ० ॥ १८ ॥ नानु हिये पग देइने, आपहि चाढियो जामरे ॥ ना० ॥ लागो अश्व खेलाववा, तरुण तणी परे तामरे ॥ ना० ॥ कौ० ॥ १९ ॥ नाचण कूदण चालणे, राग वागु अनुमानरे ॥ ना० ॥ राजपुत्र अ ति रजिया, रज्यो कुवर नानुरे ॥ ना० ॥ २० ॥ आ काशे उचो जइ, सुगमाइनो सचरे ॥ ना० ॥ देखावि आघो गयो, कुमर लिख्यो परपचरे ॥ ना० ॥ कौ० ॥ २१ ॥ एतो ऐगीमी कही, ढाल अनापेम नामरे ॥ ना० ॥ गुणसागर कामे कियो, नामा सुत गत मा मरे ॥ ना० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ आगे जाता अति नलो, दिठो वन सुख ठाम ॥ पूठि कर्ण पिसाचिका, नामा वन अनीराम॥१॥ घोमा रूपे चारीया, घास अने तरुपान ॥ विध्वसी घन

की बुद्धि कायरे ॥ जा० ॥ कौं० ॥ ४ ॥ चल चल करतो आवीयो, जानु कुमरनी पासरे ॥ जा० ॥ अश्व रत्न अविलोकता, पाम्यो अति उल्हासरे ॥ जा० ॥ कौं० ॥५ ॥ पूछे पथी कुण तु, हु परदेशी स्वामीरे ॥ जा० ॥ हयवर आण्यो हिंसतो ॥ देव तुमारे कामरे ॥ ॥ जा० ॥ कौं० ॥ ६ ॥ कहे मोल मतिवत तु, कचन केरी कोमरे ॥ जा० ॥ परखी आपे आपजो, को नवी जाणो खोमरे ॥ जा० ॥ कौं० ॥ ७ ॥ आप कुदि घोडे चढ्यो, चावक लीधो हाथरे ॥ जा० ॥ वाहे घोडो वेगशु, अचरिज सघले साथरे ॥ जा० कौं० ॥ ८ ॥ सूरज रथ थभी रह्यो, करे विचारण प्राहिरे ॥ जा० ॥ के ए हनो के माहरो, भलो किस्यो दोय माहिरे ॥ जा० ॥ कौं० ॥ ९ ॥ वक्र अने सन भावशु, नाचे कूदे सोयरे ॥ जा० ॥ कुमर न सवाह्यो पडे, ताम विमासण होयरे ॥ जा० ॥ कौं० ॥ १० ॥ उपरणी ने पागभी, छटकी पडी ए दोयरे ॥ जा० ॥ पाछे पडियो आपहि, लोगा हासो होयरे ॥ जा० ॥ कौं० ॥ ११ ॥ उठाइ ऊभो कियो, सोदागर त्रासतरे ॥ जा० ॥ थारा जाया छोकरा, बावा किम भासतरे ॥ जा० ॥ कौं० ॥ १२ ॥ कृष्ण तणे घर जाणीए, तु पाटोधर पूतरे ॥ जा० ॥ भानु भारे एहि लक्षणे, किम रहेस्ये घरसूतरे ॥ जा० ॥ कौं० ॥ १३ ॥ घोडो राखी नवी शक्यो, तो किम राखीश राजरे ॥ जा० ॥ तुझ स्या पुत्रा कृष्णने, कुलनी न

जा ॥ लोक कहे सुविच्यार, एहना अधिक दीवाजा ॥ १० ॥ के कोइ असुर कुमार, के इद्र जाल कहावे ॥ यादवनो परीवार, माहे जय नवि पावे ॥ ११ ॥ कोइ होज्यो एह, तुह्मने शिकणवार ॥ बुढा आणी सनेह, वरजे वारवार ॥ १२ ॥ डोकरीने नृप सार, पूछी काइ करेवो ॥ योगीनो व्यापार, काज न कान धरेवो ॥ १३ ॥ मदन करे ए काज, किधो रुप अनेरो ॥ मा मिलवाने आज, आणे हरख घणेरो ॥ १४ ॥ तिस एक अने पचास, ए ढाल कहाणी ॥ श्रीगुणसूरी जगीश, श्रीहरी नद वखाणी ॥ १५ ॥

दुहा ॥ रूप अनेरो धारीके, चाल्यो जाइ जाम ॥ दृष्टे आवी वावरी, सवही विधी अभिराम ॥ १ ॥ कचन केरो कामठे, पयडीनो मडाण ॥ पच वरण रत्ना तणो, तेहनो किस्यो वखाण ॥ २ ॥ रखवाली नारी रहे, निर न लीधो जाय ॥ पण जाणी नामा तणो, मदन करे उपाय ॥ ३ ॥

ढाल ८२ मी ॥ साधु सगती नित किजीए ॥ ए देशी ॥ रुप कियो ब्राह्मण केरोरे, श्वेत जनोइ किधी साररे हो ॥ वच्नणा ॥ धोली धोती पहेरणेरे, फेटानो अति विस्तार हो ॥ व० ॥ रु० ॥ १ ॥ मस्तके बाध्यो फालीयोरे, पवीत्री पावन पहेरायरे हो ॥ व० ॥ पगे गुजराती खासडारे, वर्ण गुरुनो विरद धरायरे हो ॥ व० ॥ रु० ॥ २ ॥ उपरणीने ओढवोरे, काने सोनानो जा

वेलडी, कीधो अर्धीको जान ॥ २ ॥ आगे अपर वि लोकियो, नामा केरो वाग ॥ जगमे तरुवर जेतला, तेतानो तिहा लाग ॥ ३ ॥ वानर रूप रतिपति, रिस विशेषे जोय ॥ पान फूल फल तोडीया, तुठ कियो व न सोय ॥ ४ ॥ नगरी माही आवता. दिठो रथ वर एक॥ आवे चाल्यो सनमुखे. दिसे शोना अनेक॥५॥

ढाल ८१ मी ॥ रामचन्द्रके वाग चपो मोरी रह्यो री ए देशी॥ दिसे शोना अनेक, सोवन रत्न विराजे ॥ मगल कुन्न वियेरु, वारु वाजा वाजे ॥ १ ॥ आरी साकी सोह, सोहे ध्वज अन्नीराम ॥ नारीजण सदो ह, गावे गीत सकाम ॥ २ ॥ पूर्गी विद्या काम, नाखे शयल विच्यारो ॥ कुनारा घरनु नाम, परणे हरख अपारो ॥ ३ ॥ कुनारा घर जाय, लावे कुन्न उदारु ॥ तुऊ माता दुखदाय, नामा शा अहकारु ॥ ४ ॥ कि धो रूप विकार, उट अने खर केरो ॥ जोतरीया रथ नार, खेरू आप घणेरे ॥ ५ ॥ हाशो करे ते नार, हाको हाक मचावे ॥ नाजे रीसमजार, सो रथ आप पुमावे ॥ ६ ॥ खडीत किधा कान, पाड्या दात जी वारे ॥ आयो कोपर जान, फाड्या वस्त्र तेवारे ॥७॥ गीतथाने विलाप, करती नारी नाठी ॥ किम राखेवो आप, हरीथी हरणी त्राठी ॥ ८ ॥ शेरी शेरी सोह, हिंडे आप सुहायो ॥ कामणगारो होइ, सबके मन नायो ॥ ९ ॥ किन्नर सुर अवतार, खेचर नुचर रा

जा ॥ लोक कहे सुविच्यार, एहना अधिक दीवाजा ॥ १० ॥ के कोइ असुर कुमार, के इद्र जाल कहावे ॥ यादवनो परीवार, माहे जय नवि पावे ॥ ११ ॥ कोइ होज्यो एह, तुह्मने शिकणवार ॥ वुढा आणी सनेह, वरजे वारवार ॥ १२ ॥ डोकरीने नृप सार, पूछी काइ करेवो ॥ योगीनो व्यापार, काज न कान धरेवो ॥ १३ ॥ मदन करे ए काज, किधो रुप अनेरो ॥ मा मिलवाने आज, आणे हरख घणेरो ॥ १४ ॥ तिस एक अने पचास, ए ढाल कहाणी ॥ श्रीगुणसूरी जगीश, श्रीहरी नद वखाणी ॥ १५ ॥

दुहा ॥ रूप अनेरो धारीके, चाल्यो जाइ जाम ॥ दृष्टे आवी वावडी, सवही विधी अभिराम ॥ १ ॥ कचन केरो कामठे, पयडीनो मडाण ॥ पच वरण रत्ना तणो, तेहनो किस्यो वखाण ॥ २ ॥ रखवाली नारी रहे, निर न लीधो जाय ॥ पण जाणी भामा तणो, मदन करे उपाय ॥ ३ ॥

ढाल ८२ मी ॥ साधु सगती नित किजीए ॥ ए देशी ॥ रुप कियो ब्राह्मण केरोरे, श्वेत जनोइ किधी साररे हो ॥ वभणा ॥ धोळी धोती पहेरणेरे, फेटानो अति विस्तार हो ॥ व० ॥ रु० ॥ १ ॥ मस्तके वाध्यो फालीयोरे, पवीत्री पावन पहेरायरे हो ॥ व० ॥ पगे गुजराती खासडारे, वर्ण गुरुनो बिरद धरायरे हो ॥ व० ॥ रु० ॥ २॥ उपरणीने ओढवोरे, काने सोनानो भा

रेरे हो ॥ व० ॥ आगुलीया वर मुद्रडीरे, माथे किधो तिलक उदाररे हो ॥ व० ॥ रु० ॥ ३ ॥ माता ने अरु फादशुरे, पिली आल्या जोति अपाररे हो ॥ व० ॥ हाथे कमडलु लाकडीरे, देव ध्वनीनो करे उचाररे हो ॥ व० ॥ ॥ रु० ॥ ४ ॥ गया दिसे द्वारकारे, गगा केरो माथे मडरे हो ॥ व० ॥ मथुरा माल विराजीतारे, किरीया काडे करी प्रचडरे हो ॥ व० ॥ ॥ रु० ॥ ५ ॥ करमे रातो टिपणोरे, वाचे नक्षत्र वार विच्याररे हो ॥ व० ॥ जोशी जोतिप पूरीयोरे, लग्न तणी लहेवेला वाररे हो ॥ व० ॥ रु० ॥ ६ ॥ आशीर्वाद प्रकाशीयोरे, दाशी दोमी लागी पायरे हो ॥ व० ॥ कमन्लु जल जाचीयोरे, पेट नराइ सुखमे थायरे हो ॥ व० ॥ रु० ॥ ७ ॥ ए जल मत्री आपीशुरे, मन रलीयायत सोइरे हो ॥ व० ॥ देसे शीधो सामटोरे, तुझने पुण्य घणेरो होइरे ॥ व० ॥ रु० ॥ ८ ॥ चेमी चचल जातनीरे, लाज नही निर्लज्ज अपार हो ॥ व० ॥ वाम्ण मानण आवीयोरे, खेसो धोती मतलावो वाररे ॥ व० ॥ रु० ॥ ९ ॥ आवी वलगी वानरिरे, सो पूछे ए कुण विच्याररे हो ॥ व० ॥ गुन्हेगार हमारडोरे, किजन लही नामा की साररे हो ॥ व० ॥ रु० ॥ १० ॥ नामाछे को नुतणीरे, के को देवीनो अवताररे हो ॥ व० ॥ उरमथकी तु उतरयोरे, नामा कृष्ण तणी पटनाररे हो ॥ व० ॥ रु० ॥ ११ ॥ माता नानु कुमारनीरे, तेहनी वाची विशेषे धाररे

हो ॥ व० ॥ हम रखवाली आकरीरे, लेण न पावे कोइ वाररे हो ॥ व० ॥ १२ ॥ जामा साथे भूपतीरे, ए जलमाहे झीले सोइरे हो ॥ व०॥ के जामा सुत भानुजीरे, अवरने जल न पावे कोइरे हो ॥ व०॥ १३ ॥ तुझ सरिखानी स्यु चालीरे, राव न राणीनो पइसाररे हो ॥ व० ॥ विप्र पधारो वेगसुरे, नहीतर जाणसो तुमे साररे हो ॥ व० ॥ १४ ॥ एह वचन सुणी खीजीयोरे, तु दासी केलणि कोइरे हो ॥ व० ॥ ब्राह्मण पग रज खेरवेरे, सब जग पावन होइरे हो ॥ व० ॥ १५ ॥ हलवे हलवे चालीयोरे, पोहतो वाव तणा जल पास हो ॥ व० ॥ दासडीया मिली साहीयोरे, कर फरस्या गुण उपज्यो तासरे हो ॥ व० ॥ रु० ॥ १६ ॥ गिरी हुइ सामलीरे, सोजा पामी सघली दासरे हो ॥ व० ॥ करेहि प्रशसा सादरीरे, पात्र वडो मुख दे शाबासरे हो ॥ व० ॥ रु० ॥ १७ ॥ बाहिर आवी गोरडीरे, आपण माहि निहाले रुपरे हो ॥ व० ॥ ए मोटो उपगारीयोरे, एह पसाइ रुप अनूपरे हो ॥ व०॥ रु०॥१८॥ जरी कमंडलु नीरसुरे, निसरीयो विप्र ते वाररे हो ॥ व० ॥ खाली दीठी वावडीरे, दासी सघली लागी लाररे हो ॥ व०॥ रु०॥ १९ ॥ जळ शोसन ऐसी दोयमीरे, ढाल वारु विशेष एहरे हो ॥ व० ॥ श्री गुणसागर सूरजीरे, मदन चरीत्रनो नावे जेह हो ॥व०॥रु०॥२०॥

दुहा ॥ रिस वसे ते दासडी, जाखे वचन सरोस॥

अति अट्ट अगाह जल, का किधो ते सोस ॥ १ ॥ के माकि के सोहरो, विप्र नहि चडाळ ॥ एहवो काम न को करे, जीव दया प्रतीपाल ॥ २ ॥

ढाल८३मी ॥ हु वारी घन्ना ए देशी ॥ वनणारे ॥ क जल लिधो जाय, वनणारे हम लागा तुझ पाय ॥ वनणारे जगम थावर जीव, वनणारे जल विण कर शे रीव ॥ वनणारे ॥ का० ॥ ए टेक ॥ जल राजा न लदेवतारे, जळ सम अवर न कोय ॥ जळ जगने जी वाडणोरे, जळ विण तृपति न होय ॥ व० ॥ का० ॥ ॥ १ ॥ अन्न विना आवुसरेरे, जल विण एक लिगार ॥ सरे नहि तिहा कारणेरे, जळमोटो ससार ॥ व० ॥ का० ॥ २ ॥ अम्रत पच वखाणियारे, जळ सव आदि सार ॥ घणु किस्यु विस्तारवुरे, जळथी जग व्यवहार ॥ व० ॥ का० ॥ ३ ॥ हम वलिहारी ताहरीरे, वावा सु ण अरदास ॥ पाप तणी छे पाळलीरे, धरी स्वामीनी को त्रास ॥ व० ॥ का० ॥ ४ ॥ चूस्या करो नगीना रहिरे, जाय जिम गजराज ॥ शक न माने कोइनिरे, गाजे जिम घन गाज ॥ व० ॥ का० ॥ ५ ॥ विविध प्रकारे चेष्टारे, करतो जाय उदार ॥ एटले आगे आ वियोरे, नामानो बेजाररे ॥ व० ॥ का० ॥ ६ ॥ हाटानि शोना हरेरे, मणि मोतीने रयण ॥ हरे करे अति आ करोरे, लोका साथे कुवचनरे ॥ व० ॥ का० ॥ ७ ॥ अन्न लुण कपुरसुरे, सुधा विविध प्रकार ॥ शस्त्र व

रुद्र आदि करीरे, द्रव्यतणो अपहार ॥ व० ॥ का० ॥ ॥ ८ ॥ घोडा हाथी वाहिणीरे, नामा नानु नाम ॥ जे देखे ते अपहरेरे,सोर मचायो स्वाम॥व०॥का०॥९॥ सात पाच मिलि सामटिरे, वेगे वेगे सोइ ॥ चोर ह मारो चोतरेरे, चोहडे वोए होइ ॥ व० ॥ का० ॥१०॥ वाहारा साथे वोलिवोरे, पुरुषा जोर न कोइ ॥ कमडलु फोडी दियोरे, जल वहि चाल्यो सोइ ॥ व० ॥ का०॥ ॥ ११ ॥ काइक जलतो वाविनोरे, काइक विद्या जोर ॥ चोहटो वाह्यो वेगसुरे, माचि रह्यो अति सोर ॥ व० ॥ का० ॥ १२ ॥ कोडी कीराणा कापडारे, कोइ न लहे पार ॥ वस्तु अमोलीक वाहवेरे, पाम्यो हर्ष अपार ॥ व० ॥ का० ॥ १३ ॥ पाणीपूर पडुरथीरे, दासी गइ ते नास ॥ आपण दृष्टी अगोचरुरे, माने मन शावास ॥ व० ॥ का० ॥१४॥ एतो त्र्यायशीमी कहीरे, ढाल विशाल विशेष ॥ गुणसागर नवी सान्न लेरे, न करो कांइ अदेख ॥ व० ॥ का० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ तदनतर किधो नलो, यौवन रुप रसाल ॥ व्राह्मण गुणको आगलो, गले तुलसीकी माल ॥ १ ॥ चर्म शरीरी प्राणीयो, काठे वेठो आय॥ मोह वसे मदम स्तना, विजानु शु जाय॥ २ ॥

ढाल ८४ मी ॥ झुमखडानी देशी ॥ रगे रमतो राजीयो राजीयो, पेखे पुष्प पडुर ॥ रामा सुत मोह ना ॥ पूछे विप्रा सो कहे सो कहे, ए सव फूल सनूर ॥

रा० ॥ १ ॥ भानु कुमर विवाहनी, गुंथे माल अपार ॥ रा० ॥ मालि पास मागतो, आपो फूल बे च्यार ॥ रा० ॥ २ ॥ नापे तव ते खीजीयो, फरसे हाथ लगा य ॥रा०॥ विविध जातना फूलडा, आक तणा कहेवा य ॥ रा० ॥ ३ ॥ गांधी शाले आवीयो, मागे वास सुवास ॥ रा० ॥ नापे ते तव वासनी, किधी वास कुवा स ॥ रा० ॥ ४ ॥ गजथाने भेइसा करे, भेइसा ने गज राज ॥ रा० ॥ हयथाने खर वाधीया, खरयाने हयसा ज ॥ रा० ॥ ५ ॥ उट थानके बोकडा, बोकडा थानके उट ॥ रा० ॥ खरही खूटने साधुजी, साधु करे खरखूट ॥ रा० ॥ ६ ॥ धान जातीने फेरवे, चावल तुरी थाय ॥रा०॥ तुरीने चावल करे, इम सब अनाज फिराय॥ रा० ॥ ७ ॥ लुण करे घनसारजी, घनसारानो खार ॥ रा० ॥ रत्न करे ते कांकरा, काकरा रत्न अपार ॥ रा० ॥ ८ ॥ हिंग करे कस्तुरीका, कस्तुरी फिरी सो इ ॥ रा० ॥ सोनानो पितल करे, पितल सोना जोय ॥ रा० ॥ ९ ॥ घीनो तेल समाचरे, तेल तणो घृत धार ॥ रा० ॥ ज्वारी करे मोती तणी, मोती करे ज्वा र ॥ रा० ॥ १० ॥ पाटु वस्त्र विराजता, सोतो किधा टाट ॥ रा० ॥ टाट सरीखा जे हुता, ते फिर किधा पाट ॥ रा० ॥ ११ ॥ घोले दिन बाजारमें, एतो पाडे वाट ॥ रा० ॥ बुब न वारह तेहनी, साह करे उच्चाट ॥ रा० ॥ १२ ॥ वेपारी घाघा हुवा, ठावी वस्तु न

पाय ॥ रा० ॥ ग्राहक आया फिर गया, वेपारी पिछताय ॥ रा० ॥ १३ ॥ लाभ सरीखो व्यय करे, वेपारी आचार ॥ रा० ॥ लाभ विना धन खोयवो, सोइ दृढ विच्यार ॥ रा० ॥ १४ ॥ चाक फिरते निपजे, मोटो भाडो जोय ॥ रा० ॥ अण फिरते करवो नही, साह विमासण सोय ॥ रा० ॥ १५ ॥ कौतुक करतो चालीयो, आयो राजदुवार ॥ रा० ॥ वाबाजीनो देखीयो, मदिर सब विधी सार ॥ रा०॥१६॥ मेखकरीने लावीयो, जाणी वावा प्यार ॥ रा० ॥ वाबो वैठो देखीयो, इद्र तणे अवतार ॥ रा० ॥ १७ ॥ दाता भुगता अरु गुणी, सायर जेम गभीर ॥ रा० ॥ मात सुभद्रा जाइयो, मेरु तणी परे धीर ॥ रा० ॥ १८ ॥ स्वदेशे स्वजातीमे, मान लहे सहु कोय ॥ रा० ॥ ए परभूमी पंचाइण, भाग्य वली अति होय ॥ रा० ॥ १९ ॥ राय तणे गोडे लभे, मेष महा मयमत ॥ रा० ॥ पहीली दोभे गिर पडे, कृष्ण पिता बलवत ॥ रा० ॥ २० ॥ कर्मे तो नवी गुदरे, बावाहीसु सोय ॥ रा० ॥ सिंहा सगा न साउका, ए उखाणो जोय ॥ रा० ॥ २१ ॥ श्री वसुदेव नरिंदशु, भूचर खेचर राय ॥ रा० ॥ आगे कोइ न जितीयो, पोते जीत्यो जाय ॥ रा० ॥ २२ ॥ ए चोराशीमी ढालमे, पोते वावा दिठ ॥ रा० ॥ श्री गुणसागर सूरिजी, नयणे अमीय पइठ ॥ रा० ॥२३॥

दुहा ॥ आगे दिठो अति भलो, भामा भुवन उ

दार ॥ ध्वज तोरण माला नली, पोखे शोन्न अपार ॥ १ ॥ विद्या नाखे स्वामी सुणो, जो तु दुर्यन साल ॥ करवु ते करजे इहां, बिजो सहु जंजाल ॥ २ ॥ स्नान कियो सरोवर जले, अरु शिर बूटा केस ॥ माथे टिको चिरनो, विप्र तणो वर वेश ॥ ३ ॥ वरस चतुरदश नो सही, ब्राह्मण वाल कुमार ॥ नाम धरावे वेदीयो, गाढो बोलणहार ॥ ४ ॥

ढाल ८५ मी ॥ इम जिन पूजीए ॥ ए देशी ॥ श्री हरी राज कुमारजीरे, राचे केली मझार ॥ पेखी पम्नरा पर तणारे, अमरखवत्त अपारोरे ॥ १ ॥ आवो वेदवो, दरसण मोहन वेलेरे ॥ सुरगुरु जेहवो ॥ ए आंकणी ॥ नोजन अर्थे आवियोरे, नामा नामनी पास ॥ स्वस्ती कही उनो रह्योरे, सा बोले उल्हासोहो ॥आ० ॥ २ ॥ विप्र कहो चाहो किशुरे, माता नोजन आप ॥ क्षुधा वेदनी व्यापथीरे, आज जीमवु धापहो ॥आ० ॥ ३ ॥ पहीला ब्राह्मण तेमीयारे, नोजन अर्थे उदार ॥ आवी मिल्याछे एकठारे, अगणीत केइ हजारहो ॥ आ० ॥ ४ ॥ नोजननु शु मागवोरे, कृष्ण वल्लना संग ॥ हय गय धन कंचन मणीरे, माग माग मनरंगहो ॥ आ० ॥ ५ ॥ विप्र कहे विप्रो सुणोरे, वारु वचन विचार ॥ तुह्म तो विद्या वेचणारे, न लहे पुण्य प्रकारहो ॥ आ० ॥ ६ ॥ दान तणा फलछे घणारे, अन्न समो नही कोइ ॥ अवरा त्रपाती न उपजेरे, त्रपती अ

नथी होइहो ॥ आ० ॥ ७ ॥ अन्न याचना तेहथीरे, पहीली किधी एह ॥ मुझ तुशी जग तु सहिरे ॥ इहा न ही संदेहहो ॥ आ० ॥ ८ ॥ नामा नाखे परीयणोरे, नल भोजनसु आज ॥ विप्र जिमावो वेगशुरे, भूख्या भोजन काजहो ॥ आ० ॥ ९ ॥ पुनरपी नाखे नाम नीरे, सघलामाही जाय ॥ मनगमतो भोजन करोरे, त्रपती घणेरी थाय हो ॥ आ० ॥ १० ॥ विप्र माहे नवी जिसुरे, एतो विधी वाता हीण ॥ ब्रह्म क्रिया पाले नहीरे, पापाचार प्रविणहो ॥ आ० ॥ ११ ॥ सर्व सु लक्षणवत हुरे, विद्यानो भडार ॥ मुझ भोजन दे साद रोरे, लचपच मतकर लिगारहो ॥ आ० ॥ १२ ॥ गौब्राह्म णने तिर्थजेरे, मुझ तृपते तृपताय ॥ पात्र न मुझ सो दुसरोरे, मात विमासे काइ हो ॥ आ० ॥ १३ ॥ क्रिया हिण लक्ष कोडीनेरे, भोजन दिधो वादी ॥ क्रि यावत एकही भलोरे, सुणीजे आदी अनादीहो ॥ आ० ॥ १४ ॥ बेठो सघला आगलेरे, पग धोवाने काज ॥ विप्र कहे रोसे भर्योरे, आवेछे शिर खाजहो ॥ आ० ॥ १५ ॥ ज्ञान वृध वय वृधजेरे, समझावे प रीवार ॥ कलह तणो अवसर नहीरे, मौन तणो आ चारहो ॥ आ० ॥ १६ ॥ वइठो पहीले आशणेरे, ब्राम्हण आव्या वाजी ॥ चाल्या थानक दुसरेरे, जा णयो वूटा भानीहो ॥ आ० ॥ १७ ॥ तिहा पिण अ गनीम आसणेरे, जाइ वेठो सोइ ॥ तवते ब्राम्हण कल

द्वार ॥ ध्वज तोरण माला झली, पोखे शोभ अपार ॥ १ ॥ विद्या जाखे स्वामी सुणो, जो तु दुर्यन साल ॥ करवु ते करजे इहा, त्रिजो सहु जजाल ॥ २ ॥ स्नान कियो सरोवर जले, अरु शिर वूटा केस ॥ माथे टिको चिरनो, विप्र तणो वर वेश ॥ ३ ॥ वरस चतुरदश नो सही, ब्राह्मण बाल कुमार ॥ नाम धरावे वेदीयो, गाढो बोलणहार ॥ ४ ॥

ढाल ८५ मी ॥ इम जिन पूजीए ॥ ए देशी ॥ श्री हरी राज कुमारजीरे, रावे केली मझार ॥ पेखी पम्न रा पर तणारे, अमरखवत अपारोरे ॥ १ ॥ आगे वेद वो, दरसण मोहन वेलोरे ॥ सुरगुरु जेहवो ॥ ए आंकणी ॥ भोजन अर्थे आवियोरे, भामा भामनी पास ॥ स्वस्ती कही उभो रह्योरे, सा बोले उल्हासोहो ॥आ० ॥ २ ॥ विप्र कहो चाहो किशुरे, माता भोजन आप ॥ क्षुधा वेदनी व्यापथीरे, आज जीमवु धापहो ॥आ० ॥ ३ ॥ पहीला ब्राह्मण तेमीयारे, भोजन अर्थे उदार ॥ आवी मिल्याछे एकठारे, अगणीत केइ हजारहो ॥ आ० ॥ ४ ॥ भोजननु शु मागवोरे, कृष्ण वल्लभा संग ॥ हय गय धन कचन मणीरे, माग माग मनरगहो ॥ आ० ॥ ५ ॥ विप्र कहे विप्रो सुणोरे, वारु वचन विचार ॥ तुह्म तो विद्या वेचणारे, न लहे पुण्य प्रकार हो ॥ आ० ॥ ६ ॥ दान तणा फलछे घणारे, अन्न समो नही कोइ ॥ अवरा त्रपाति न उपजेरे, त्रपती अ

नथी होइहो ॥ आ० ॥ ७ ॥ अन्न याचना तेहथीरे, पहीली किधी एह ॥ मुक तुशी जग तु सहिरे ॥ इहा न ही सदेहहो ॥ आ० ॥ ८ ॥ नामा नाखे परीयणोरे, नल नोजनसु आज ॥ विप्र जिमावो वेगशुरे, भूख्या नोजन काजहो ॥ आ० ॥ ९ ॥ पुनरपी नाखे नाम नीरे, सघलामाही जाय ॥ मनगमतो नोजन करोरे, त्रपती घणेरी थाय हो ॥ आ० ॥ १० ॥ विप्र माहे नवी जिमुरे, एतो विधी वाता हीण ॥ ब्रह्म क्रिया पाले नहीरे, पापाचार प्रविणहो ॥ आ० ॥ ११ ॥ सर्व सु लक्षणवत हुरे, विद्यानो नडार ॥ मुक नोजन दे साद रोरे, लचपच मतकर लिगारहो ॥ आ० ॥ १२ ॥ गौब्राह्म णने तिर्यंजेरे, मुक तृपते तृपताय ॥ पात्र न मुक सो दुसरोरे, मात विमासे काइ हो ॥ आ० ॥ १३ ॥ क्रिया हिण लक्ष कोडीनेरे, नोजन दिधो वादी ॥ क्रि यावत एकही नलोरे, सुणीजे आदी अनादीहो ॥ आ० ॥ १४ ॥ बेठो सघला आगलेरे, पग धोवाने काज ॥ विप्र कहे रोसे नरयोरे, आवेछे शिर खाजहो ॥ आ० ॥ १५ ॥ ज्ञान वृध वय वृधजेरे, समजावे प रीवार ॥ कलह तणो अवसर नहीरे, मौन तणो आ चारहो ॥ आ० ॥ १६ ॥ वइठो पहीले आशणेरे, ब्राम्हण आव्या वाजी ॥ चाल्या थानक दुसरेरे, जा णयो वृदा नाजीहो ॥ आ० ॥ १७ ॥ तिहा पिण अ गनीम आसणेरे, जाइ वेठो सोइ ॥ तवते ब्राम्हण कल

दार ॥ ध्वज तोरण माला जली, पोखे शोभ अपार ॥ १ ॥ विद्या भाखे स्वामी सुणो, जो तु दुर्यंन साल ॥ करवु ते करजे इहा, त्रिजो सहु जजाळ ॥ २ ॥ स्नान कियो सरोवर जले, अरु शिर छूटा केस ॥ माथे टिको चिरनो, विप्र तणो वर वेश ॥ ३ ॥ वरस चतुरदश नो सही, ब्राह्मण बाल कुमार ॥ नाम धरावे वेदीयो, गाढो बोलणहार ॥ ४ ॥

ढाळ ८५ मी ॥ इम जिन पूजीए ॥ ए देशी ॥ श्री हरी राज कुमारजीरे, राचे केली मझार ॥ पेखी पमारा पर तणारे, अमरखवत अपारोरे ॥ १ ॥ आछे वेदवो, दरसण मोहन वेलेरे ॥ सुरगुरु जेहवो ॥ ए आकणी ॥ भोजन अर्थे आवियोरे, भामा भामनी पास ॥ स्वस्ती कही उभो रह्योरे, सा बोले उल्हासोहो ॥आ० ॥ २ ॥ विप्र कहो चाहो किशुरे, माता भोजन आप ॥ क्षुधा वेदनी व्यापथीरे, आज जीमवु धापहो ॥आ० ॥ ३ ॥ पहीला ब्राह्मण तेडीयारे, भोजन अर्थे उदार ॥ आवी मिल्याछे एकठारे, अगणीत केइ हजारहो ॥ आ० ॥ ४ ॥ भोजननु शु मागवोरे, कृष्ण वल्लभा सग ॥ हय गय धन कचन मणीरे, माग माग मनरगहो ॥ आ० ॥ ५ ॥ विप्र कहे विप्रो सुणोरे, वारु वचन विचार ॥ तुह्म तो विद्या वेचणारे, न लहे पुण्य प्रकार हो ॥ आ० ॥ ६ ॥ दान तणा फलछे घणारे, अन्न समो नही कोइ ॥ अवरा त्रपाति न उपजेरे, त्रपती अ

लोपाणी सयल सगाइ ॥ आधे आधो पेलाइ, नवि जाणे आप पराइ ॥ ४ ॥ आचारज उना थाइ, हल कार करे आगे आइ ॥ उपाध्याय आप वझाइ,निरखाणी लघुता पाइ ॥ ५॥ जोशी जोतिष वरताइ, न सक्या ए जाणी बुराइ ॥ जानि अनीमांनी जाइ, चउवे दुवे अधीकाइ ॥ ६ ॥ तिरवाडी आवे धाइ, पछीतावे के स गहाइ ॥ नट मिश्रा एह वत्ताइ, महिमा तो आ प गमाइ ॥ ७ ॥ महा बलनी एम वलाइ, कुछ्या वि ण जाइ न काइ ॥ मारता नूत नमाइ, नटजीए कथा सुणाइ ॥ ८ ॥ करताने साथे कीजे, तो पुण्य न पाप गणिजे ॥ होथाका लाहो लिजे, उजागर होइ फिरी जे ॥९॥ नवलीनो सुत कहावे, आपणाहि आप वधावे ॥ मकोडो खीज्यो आवे, तो मास आपणो चावे ॥१०॥ ते विप्र लथावथ होवे, तव लोक तमासो जोवे ॥ ते लाज निकामो खोवे, ते आपे आप विगोवे ॥११॥ ते धरति साथर सोवे, मार्‍या लाता ना रोवे ॥ विण वेल ण पोलि पोवे, विण लोटि मुहडो धोवे ॥ १२ ॥ ते लझता माथा फूटे, ते छोडाव्या नवि छूटे ॥ ते आप आपमे कूटे, ते माहोमाहि लूटे ॥ १३ ॥ ते तझफडता अति त्राठा, भडभझता साहे नाठा ॥ ते थोथे घावे घाठा, लझथडिया जाइ नाठा ॥ १४ ॥ ते गाढा होइ लागा, जब लात धवुका वागा ॥ तेतो उघाडा नागा गहेवरीया जाइ नागा ॥ १५ ॥ जे लुद पणाथी लडी

कल्यारे, अजब तमासो होइहो ॥ आ० ॥ १८ ॥ वेदशास्त्रना जाण थैरे, न लहो वेद विच्यार ॥ हिं स्यादिक पातीक करोरे, न तजो क्रोध लीगार हो ॥ आ०॥ १९॥ गर्व करो जाति तणोरे, जाति न तार्या कोइ ॥ तारे तो करणी करीरे, रीस कीया स्यु होइ हो ॥ आ० ॥ २० ॥ पचायशीमी ढालमेरे, विप्रा कीधो क्रोध ॥ श्री गुणसागर सूरिजीरे, धन तजे अविरोध हो ॥ आ० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ सुधी वात न सरदहे, सुधीसु नहि राग ॥ मूरखने उपदेश ते, टाढि उपध्र लाग ॥ १ ॥ सहजन फीटे कोइनो, ब्राह्मण जाति विशेष ॥ उठ्या मारेवा भणी, विप्र कहे मा देख ॥ २ ॥ माय कहे हु शु करु, विप्रा साथे न जोर ॥ तु पिण निचलो नवि रहे, ए चपाणी कोर ॥ ३ ॥ हलकारी विद्या घणु, हल हल थइ अपार ॥ आपणा माहि आधला, लागा करण प्रहार ॥ ४ ॥

ढाल ८६ मी ॥ वनमालानी देशी ॥ लाग्या ते करण प्रहार, नवि जाणे कोइ विच्यार ॥ आपणा माहि अपार, वलगे ते गहेल गिमार ॥ १ ॥ पहिली तो जीभ लडाइ, बीजी तो ढिंग बजाइ ॥ तीजी तो लात लगाइ, चउथी तो दाता खाइ ॥ २ ॥ पचमी वार सुभटाइ, लोटिनी मार मचाइ ॥ ऊठे लाकमी उठाइ, ते साहमा आवे लाइ ॥ ३ ॥ बाबाने बेटो भाइ,

तर जाउ परश्चान ॥ ए० ॥ ३ ॥ भोजनने व्यवहा रनो, घाठो नावे ठाम, पहिलो चोकसी किजीए, इम कहे त्रिभुवन स्वाम ॥ ए० ॥ ४ ॥ भामा भापे शु कहो, एहवि उगि वात ॥ ए घर दीपे हाथीया, माणसनी शिमात ॥ ए० ॥ ५ ॥ पहेला मेवा पिर शीया, पिस्ता द्राख वदाम ॥ चारोली चतुराइशु, खाडतली अभीराम ॥ ए० ॥ ६ ॥ खाजा गाजा सा रीखा, लाडुनी बहु भात ॥ घेवर फीणी लापसी पिर से मननी खात ॥ ए० ॥ ७ ॥ खीर खाड घृत साम टा, माड्यो मोटे मान ॥ वडा विशेखे पिरशीया, विप्र तणो हित जाण ॥ ए० ॥ ८ ॥ घोलवमाने घारवंमी, पूरी परीघल भाव ॥ सालदाल ने सालणा, पिरसे चितने चाव ॥ ए० ॥ ९ ॥ घीनी धार न खेचइ, दु ध दहींने गोल ॥ दाखछुहारी रायता. ए अति वस्तु अमोल ॥ ए० ॥ १० ॥ भामा भाखे सादरी, अमृ त करे आहार ॥ कोइ काणी न राखवी ए सहु तु ज परीवार ॥ ए० ॥ ११ ॥ पिरसता वेला थइ, जि मता वार न कोइ ॥ वैश्वानर मुख मेल्हता, घास तणी परे जोइ ॥ ए० ॥ १२ ॥ लावोरे लावो ला वो वली, एकज लागी तास ॥ ताम अनेरा पिरस णो, पिरसे आणी उल्हास ॥ ए०॥१३॥ केइ हजारा कारणे, अन्न अने पकवान ॥ किधुथु ते वावरयु, अचरिज ए असमान ॥ ए० ॥ १४ ॥ पाकाने काचा

या, जे मूढपणे जडजडिया ॥ ते पोरप पोखे पडीया, ते अलगायी अरुवमीया ॥१६॥ जे था मुगाला माटी, ते पिता उपध वाटी ॥ बल हेते खाता काटी, थर ह रीया लागा साटी ॥ १७ ॥ मोकरडानि कडी जागी, ते खिर न मिठि लागी ॥ जब चोट पराइ वागी, ला डुनि लालच तागी ॥ १८ ॥ भोजन तो बहुला दे स्या, ए भोजन आज विसेस्या ॥ अवराने लाडु खाधा, भामाने गडधा लाधा ॥ १९ ॥ ए भारथ हुतं भारी, ते दिठो हरि पटनारी ॥ गोमावि अलगा किधा, लघु विप्र समिपे लीधा ॥ २० ॥ ए गाशीमी टाल र साली, ए विप्र विनोद विसाली ॥ श्री गुणनागरजी भाखी, परजुन चरित्र छे साखी ॥ २१ ॥

दुहा ॥ परीयणशु भामा कहे, बालिक ब्राह्मण एह ॥ जीमावो हम आगले, आणी घणेरो नेह ॥ ॥ १ ॥ माडो उचि माढणि, उपर थाल विशाल ॥ विविध प्रकारे पीरसणा, पीरसावो ततकाल ॥ २ ॥

ढाल ८७ मी ॥ गौतमने मेल दियो महाविर ॥ ए देशी ॥ भामानो भाष्यो करे, आज्ञाकारी सोय ॥ जगति जलेरी साचवे, राचवे रागण होय ॥ १ ॥ ए विप्र हमारे मन वस्यो, ए टेक ए विप्र करामतगार ॥ ए विप्र तणा गुणसारु ॥ ए बाणे ढाक्यो रयन ए विप्र, देखत हम चयन ॥ ए० ॥ २ ॥ विप्र भणे सुण स्वा मनी, पुरो परुतो जाण ॥ बेसावे जिमवा भणी, नहिं

पसार ॥ गेटी सोझे सोवतां, लागे थंडी अपार ॥ ॥ ए० ॥ २६ ॥ पूरो न पडे एकको, तो एस्यो विस्तार ॥ पेट न दुखे थो खरो, घर सारु व्यवहार ॥ ॥ ए० ॥ २७ ॥ आडबर माहे घणो, न लहे घरनी सार ॥ ते तो माणस बावला, लोक हसावण हार ॥ ॥ ए० ॥ २८ ॥ ब्राह्मण सायर अम्नीनो, पूरो पझ्वो दूर ॥ अन्न अने जल इधणा, जो दिजे नरपूर ॥ ॥ ए० ॥ २९ ॥ यद्यपि में किधो घणो, आगे नायो सोय ॥ नुस्यो तो अति नडनडे, दोपण एह न कोइ ॥ ए०॥३०॥ सत्याशीमी ढालमें, आयो नामा गेह ॥ श्रीगुणसागर सूरिजी, सा अती आणे नेह ॥ ए०॥३१॥

दुहा ॥ कुवजा दाशी ए वली, सरली किधी जाम ॥ रूप सोहागण सुदरी, नामा दिठी ताम ॥ १ ॥ विस्मय पामी नामनी, जाणी जाय न दास ॥ पूछे री तु कुण ए, सा बोले उल्हास ॥ २ ॥ देव तुम्हारी दासडी, कुब्ज्या हमारो नाम ॥ लघु ब्राम्हण परसादथी, रूप थयो अनीराम ॥ ३ ॥ लालच लागी नामनी, ए अति विद्यावत ॥ हाथ ग्रही आघो लीयो, जइ वेठा एकत ॥ ४ ॥

ढाल ८८ मी ॥ संजम लेवा सचरयोरे, साथे सहु परीवार ॥ ए देशी ॥ रहस्यपणे पूछे खरीरे, ज्ञान तणो अनुमान ॥ नामा नूलिरे ॥ देव प्रकासो आपणोरे, प्रष्ण तणो छे थान ॥ नामा नलिरे० ॥ १ ॥

करी. नाल नरीने ठेली ॥ पाछे काइ न देखिए, श्राम घडे जल मेली ॥ ए० ॥ १५ ॥ मुग मोठ मका घ णी, चावलने जव जेह ॥ गिहु चणा आदी करी, खाइ गयो तव तेह ॥ ए० ॥ १६ ॥ हय गय उट त णो सहु, दाणो पिण तेह खाय ॥ आणी उधारो पिर गोयो, तृपती तोहिन लाध ॥ ए० ॥ १७ ॥ अग्नी का लमे वालीए, लाकम गाडा लाख ॥ तोपिण ते धापे नही, तिम एहनी अनीलाख ॥ ए० ॥ १८ ॥ या दवनी नारी मिली, करे कुतुहल कोम ॥ निज निज घरथी आणके, पिरसे होडाहोड ॥ ए० ॥ १९ ॥ कोलाहल माच्यो घणो, मिलीया लोक तिवार ॥ तृपती न पावे खायवे, देव तणो अवतार ॥ ए० ॥ २० ॥ विप्र नणे सुण नामनी, आपणो वोल्यो पाल ॥ का थाइ अति सुखडी, अवर किशी दिउ गाल ॥ ए० ॥ २१ ॥ नानु तणी माता नली, ना रायणनी नार ॥ उग्रसेन कुवरी कही, अवसर सहु तुऊलार ॥ ए० ॥२२॥ ऋपणपणो नवी बूझीए, तुज सरखीने देख ॥ लघुनोजी हु बालुमो, नूरूयो राख्यो विशेष ॥ ए० ॥२३॥ ना हुवो आहारजी ना हुवो उ पवास ॥ अधवीचो होइ रह्यो, कारे कियो विश्वास ॥ ए० ॥ २४ ॥ निका मदीर नान्हडा पावे सघली लाज ॥ मोटा घरडर मूखना साच मिलीए आज ॥ ए० ॥ २५ ॥ पाय पसारण तेतलो जे तो सोड

वे माहरेरे, नवि ले रुखमणी नाम ॥ मा० ॥ दोरो डां डो दाखवोरे, देउ मनगमता दाम ॥ मा० ॥ ११ ॥ दुध मलावणी उतनेरे, वानरने फल जेम ॥ मा० ॥ सिल मलावण लपटारे, एह मलावण तेम ॥ मा० ॥ १२ ॥ ठगा ठगोरी मामिकारे, आरती माही एम ॥ मा० ॥ आप ठगावे ठग कनेरे, अवर न ठगइ केम ॥ मा० ॥१४॥ विप्र भणे भामा सुणोरे, जो वीधी कीधी जाय ॥ मा० ॥ सहस गुणो आदर लहेरे, रुखमणी पगे ठे लाय ॥ मा० ॥ १५ ॥ जेहि कहो सोइ करुरे, न करुं शोच लिगार ॥ मा० ॥ लाज हमारी तुह्म मणिरे, तु गति मति दातार ॥ मा० ॥ १६ ॥ मुड मुडाइ मुह मोरे, कालो करिय अपार ॥ मा० ॥ फाटा घुथा पहे रीनेरे, मौन तणो आचार ॥ मा० ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीँ अरू वरू रुढ मुरुशुरे, अठ्योत्तरसो वार ॥ मा० ॥ जाप जपंता पामसोरे, रुप अनोपम सार ॥ मा० ॥ ॥ १८ ॥ इद्राणी अलगी थकीरे, थाशे साहिय उदाश ॥ मा० ॥ एवो रूप न माहरोरे, जेहवो भामा पास ॥ मा० ॥ १९ ॥ देव दुर्लभा थायसोरे, कृष्ण तणी शी वात ॥ मा० ॥ रुखमणी तो पासगमेरे, नहि आवे सु ण मात ॥ मा० ॥ २० ॥ जो दुख तो सुख जगतरेरे, दुख विण सुख नवि होय ॥ मा० ॥ कान सहे विंधाव णोरे, कुन्मल परे सोय ॥ मा० ॥ २१ ॥ जो तरुवर धु री ऊडी पडेरे, तो नव कुपलि लाल ॥ मा० ॥ दिन

भूलि भरमें भामनीरे ॥ ए आकणी ॥ जोसीडो जग मे वडोरे ॥ भाखे वचन विच्यार ॥ भा० ॥ तत्र मत्र जाणु घणारे, वस आणु भरतार ॥ भा० ॥ २ ॥ च द्र सूर्य वरु देवतारे, वश वरतावु दोइ ॥ भा०॥ इंद्र करु घरे प्राहुणोरे, शेपनाग शु सोइ ॥ भा० ॥ ३ ॥ पायाले पेसु सहिरे, आकाशे पिण जाउ ॥ भा०॥ जग त तणा नोवाहरुरे, वेगे करीने थाउ ॥ भा० ॥ ४ ॥ अणभावतानो कालठुरे, भावतानो लाल ॥ भा० ॥ पुछे वु पूछे सहिरे, काज करु ततकाल ॥ भा० ॥ ५ ॥ ह म तुम्ह विच न आतरोरे, आंतप नाठि दूर ॥ भा०॥ तुझ गुणमेरे वाधीयोरे, बेठो आणी हजूर ॥ भा० ॥ ६ ॥ पगे लागी हाहा करेरे, आसु नाखे नयण ॥ भा० ॥ हियो भरयो आवे घणुरे, मनमे अधीक कुचयन ॥ भा० ॥ ७ ॥ तु महारो वालेसरुरे, तुझ सम अवर न कोइ ॥ भा० ॥ पिता पुत्र भाइ भलोरे, क री दे काइक सोइ ॥ भा० ॥ ८ ॥ साल समाणी सालतिरे, सो कहिए निश दिश ॥ भा० ॥ दिन दि न आवे शिर चढिरे, ए दुख विश्वाविस ॥ भा० ॥ ९ ॥ साधी त्रिकोटि रोमछेरे, एक एकने एह ॥ भा० ॥ अमरख आणी अती घणोरे, पापणी पाके वेह ॥ भा० ॥ १० ॥ आवटणु अती आकरुरे, लोही चढे नहि मस ॥ भा०॥ निशदिन लागुं झुरणुरे, शातानो नहि अस ॥ भा० ॥ ११ ॥ हरी वश आ

वे माहरेरे, नवि ले रुखमणी नाम ॥ ना० ॥ दोरो डां
डो दाखवोरे, देउ मनगमता दाम ॥ ना० ॥ १ ॥ दुध
नलावणी उतनेरे, वानरने फल जेम ॥ ना० ॥ सिल
नलावण लपटारे, एह नलावण तेम ॥ ना० ॥ १३ ॥
ठगा ठगोरी नामिकारे, आरती माही एम ॥ ना० ॥
आप ठगावे ठग कनेरे, अवर न ठगइ केम ॥ ना०
॥१४॥ विप्र नणे नामा सुणोरे, जो वीधी कीधी जाय
॥ ना० ॥ सहस गुणो आदर लहेरे, रुखमणी पगे ठे
लाय ॥ ना० ॥ १५ ॥ जेहि कहो सोइ करुरे, न करु
शोच लिगार ॥ ना० ॥ लाज हमारी तुह्म नणिरे, तुं
गति मति दातार ॥ ना० ॥ १६ ॥ मुड मुडाइ मुह
मोरे, कालो करिय अपार ॥ ना० ॥ फाटा चुथा पहे
रीनेरे, मौन तणो आचार ॥ ना० ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीँ
अररु वररु रुढ मुरुशुरे, अष्टोत्तरसो वार ॥ ना० ॥
जाप जपता पामसोरे. रुप अनोपम सार ॥ ना० ॥
॥ १८ ॥ इद्राणी अलगी थकीरे, थाशे सहिय उदाश
॥ ना० ॥ एवो रूप न माहरोरे, जेहवो नामा पास ॥
ना० ॥ १९ ॥ देव दुलंना थायसोरे. कृष्ण तणी शी
वात ॥ ना० ॥ रुखमणी तो पासगमेरे, नहि आवे सु
ण मात ॥ ना० ॥ २० ॥ जो दुख तो सुख जगतरेरे,
दुख विण सुख नवि होय ॥ ना० ॥ कान सहे विंधाव
णोरे, कुन्ल परे सोय ॥ ना० ॥ २१ ॥ जो तरुवर धु
री जडी पडेरे, तो नव कुपलि लाल ॥ ना० ॥ दिन

थोडामे थायस्येरे, शोजनिक सुविशाळ ॥ जा० ॥ ॥ २२ ॥ डरु डरु डरता रहेरे, उद्यम नहिय निगार ॥ जा०॥ आखी सरीया मानवीरे, काजलनो शिनगार ॥ जा० ॥ २३ ॥ इम नीसुणी शा जामनीरे, आतुर थइ अपार ॥ जा० ॥ विप्र वचन वाल्हा करिरे, हुइ विप रीत ते वार ॥ जा० ॥ २४ ॥ परने चिंते जेहवुरे, तेह वु पावे आप ॥ जा० ॥ एतो परतक्ष देखजोरे, जामा लाग्यु पाप ॥ जा० ॥ २५ ॥ वळे आपणी आगशुरे, परशु द्वेपीणी होइ ॥जा०॥ शिर मुडावे आपणोरे, जा मनि परे जोइ ॥ जा० ॥ २६ ॥ कीधीथी ठाकुर जणि रे, अवर परे अरदास ॥ जा० ॥ घोमो फिरी उपर च ढ्योरे, ते परे हुइ तास ॥ जा० ॥ २७ ॥ फीरी आवु आगे जइरे, जापजपे मन सुध ॥ जा० ॥ इम कही आ गे चल्योरे, कारज कराय विरुध ॥ जा० ॥ २८ ॥ अ ठ्यायसीमी ढालमेरे, जामाने जरमाय ॥ जा० ॥ श्री गु णसागर गुरु कहेरे, मा मिलवाने जाय ॥जा०॥२९ ॥

दुहा ॥ माता सुखनो आसनो, काम कुमर मन र ग ॥ चाल्यो अति उछरगसु, आणी हेत अजग ॥ १॥ काम कुमर आव्यातणी, वेळाने अधिकार ॥ माय मनो रथ मालनी, ढाल रसाल अपार ॥ २ ॥

ढाल ८९ मी ॥ मेरी सहियां गीरघर आवेगो ॥ ए देशी ॥ मेरी सहिया लालन आवेगो, प्यारो प्राण आधार ॥ मेरो मदन कुमार ॥ यादव कुळ शिणगार ॥

मे०॥ए आंकणी ॥ एह वासर जे गया, माहरे नावे वा दी ॥ पेट नरती दिन प्रति,न जिम्यो अन्न सवादी ॥ ज न मन जीवी तणीरे, आजहीथी आदी ॥ मे० ॥ १ ॥ चामरुपी होइ रहीया, मिंडका जग जोइ ॥ मे ह वुठे दैव त्रुठे, मूवा जीवे सोइ ॥ जीव जीवन आ वीयाए, एह परे हम होइ ॥ मे० ॥ २ ॥ सुनचीती स दा रहती, चेतना सुतनी पास ॥ गाय वनमे जाय हा की, चरती फिरत उदास ॥ हिंसति आवे घणु, वाछ रीया घर जास ॥ मे० ॥ ३ ॥ चक्रवाकी जीम चाहे, उगतो दिनकार ॥ चंदने चाहे चकोरी, बपैयो जलधा र ॥ आबनो वन कोकिला, विरहणी नरतार ॥ मे० ॥ ॥ ४ ॥ क्षुधावतो अन्न चाहे, तृषावतो वारी ॥ स्यैर णी स्वघरमेरे, रोगीया उपचारी ॥ तेम ए मन माहरो, पुत्रने अधीकारी ॥मे०॥ ५ ॥ स्वामी श्रीमधर वतावी, सोइ वेला आज ॥ जलदनीपरी वाट जोता, मिल्यो ए सुन साज ॥ देवगुरु प्रसादथी, सरच्या वछीत काज ॥ मे० ॥ ६ ॥ द्यो वुहारो वाट झाफो, जली रज बे सावी ॥ पचवर्णा कुसुमकेरो, फूल पगर रचावी ॥ ठा म ठामे धूपणा, करो चितने चावी ॥ मे० ॥ ७ ॥ गे ह धोलो आज सोलो, दैवनो विवहार ॥ भांती फेरो पात्र तेड्यो, पेखवा परीवार ॥ वाजा विविध प्रकार ना, वजावो इणीवार ॥ मे० ॥ ८ ॥ नारी आवो गित गावो, करो मगल च्यार ॥ करी वधावो कलस

थोडामे थायस्येरे, ओजनिक सुविशाळ ॥ जा० ॥ ॥ २२ ॥ डरु डरु डरता रहेरे, उद्यम नहिन लिगार ॥ जा०॥ आखी सरीया मानवीरे, काजलनो शिनगार ॥ जा० ॥ २३ ॥ इम नीसुणी शा जामनीरे, आतुर थइ अपार ॥ जा० ॥ विप्र वचन वाल्हा करिरे, हुइ विप रीत ते वार ॥ जा० ॥ २४ ॥ परने चिंते जेहवुरे, तेह वु पावे आप ॥ जा० ॥ एतो परतक्ष देखजोरे, जामा लाग्यु पाप ॥ जा० ॥ २५ ॥ वळे आपणी आगशुरे, परशु द्वेपीणी होड ॥जा०॥ शिर मुडावे आपणोरे, जा मनि परे जोइ ॥ जा० ॥ २६ ॥ कीधीथी ठाकुर जाणि रे, अवर परे अरदास ॥ जा० ॥ घोमो फिरी उपर च ड्योरे, ते परे हुइ तास ॥ जा० ॥ २७ ॥ फीरी आवु आगे जइरे, जापजपे मन सुध ॥ जा० ॥ इम कही आ गे चल्योरे, कारज करीय विरुध ॥ जा० ॥ २८ ॥ अ ठ्यायसीमी ढालमेंरे, जामानें जरमाय ॥ जा० ॥ श्री गु णसागर गुरु कहेरे, मा मिलवाने जाय ॥जा०॥२९॥

दुहा ॥ माता सुखनो आसनो, काम कुमर मन रं ग ॥ चाल्यो अति उछरगसु, आणी हेत अजग ॥ १॥ काम कुमर आव्यातणी, वेळाने अधिकार ॥ माय मनो रथ माळनी, ढाल रसाल अपार ॥ २ ॥

ढाल ८९ मी ॥ मेरी सहिया गिरधर आवेगो ॥ ए देशी ॥ मेरी सहिया लालन आवेगो, प्यारो प्राण आधार ॥ मेरो मदन कुमार ॥ यादव कुल शिणगार ॥

म ॥ पाननी बीमी कारिने, आपीश आनिराम ॥ मे० ॥ ॥ १७ ॥ वात सुणशु कुवर केरी, ठेह धरी लगी जेह ॥ आपणा वितक विच्यारी, नाखीश धरी ने ह ॥ मनोरथनी माला नली, गुंथी राखी एह ॥ मे० ॥ १८ ॥ ए नव्यायशीमी नली, ढाल तो सुखकार ॥ कहे श्रीगुणसूरि सघली, ढालमे शिरदार ॥ सानल्यां आवी मिले, सकल वढीत फल सार ॥ मे० ॥ १९ ॥

दुहा ॥ आगे जाता आवीयो, सुदर मदिर एक ॥ हयथट गयथट नरथटा, पूरीत शोन अनेक ॥ १ ॥ वली विशेषे पूठता, विद्या नाखे इश ॥ ए घर तुह्म माता तणो, जणनी पूरी जगीश ॥ २ ॥ नित्य महोव्व नवनवा, दिजे पोली प्रवाय ॥ याचक जय जय उच्चरे, नूरी नणे गुणगाय ॥ ३ ॥

ढाल ९० मी ॥ परम सलुणो साधुजी ॥ ए देशी ॥ मोहन प्यारे चेलणा, चतुराइ दिसेरे ॥ रागे राची रुखमणी, मिलवाने मन हिसेरे ॥ मो० ॥ १ ॥ रूप धरयो रलीयामणो, रूपी वालीक रुमेरे ॥ मिठो नीभीत नाखणो, बोले जीभ्र सुमेरे ॥ मो० ॥ ॥ २ ॥ वेस विराजे साधुनो, महीमा ए अति मोटो रे ॥ पूज्य पठे वडी पागुरी, चलोटो पिण ठोटोरे ॥ मो० ॥ ३ ॥ खाधे लटके लोवडी, लटकतो चालेरे ॥ जयणनो गुण राखतो, हलुए हलुए हालेरे ॥ मो० ॥ ॥ ४ ॥ देह प्रमाणे दिपतो, करमे दम धरावेरे ॥ म

लावो, सात पाच उदार ॥ दोव अक्षतने टहीं, मत
ए मेल्यो सार ॥ मे० ॥ ९ ॥ चोक पूरो मती अधु
रो, रहे एक लिगार ॥ अलग चूरो असुन सवना,
सजो सुन्न आचार॥ वेगे हुवो उतावला, काइ लगावो
वार ॥ मे० ॥ १० ॥ थाल रोला नरी कचोला, कुकु
मा घन सार ॥ रत्न रुडा नही कूना, हेम रजत अ
पार ॥ वधावाने कारणे, घणा मोतीना हार ॥ मे०
॥ ११ ॥ यत्न करणा असुन हरणा, वाटमे न रहा
य ॥ राफ नेसो अध तेसो, कुकुत न कराय ॥ नाक
चिवो चिपडो, वुर मुहोटली जाय ॥ मे० ॥ १२ ॥
नारी परणी अने उपरणी, साजी उज्वल वेस ॥ गों
सवठि कलस सपूर्ण, दधी मधु सुवीशेस ॥ अग्नी ज्वा
ला दिपती, अपरस उण अशेप ॥ मे० ॥ १३ ॥ र
थ सजोडो पाट घोडो, हाथीयो सिणगार ॥ पथे रा
खो सरस नाखो, पित्त वरणी गार ॥ माउला मिली
या नला, साधुरोजी धार ॥ मे० ॥ १४ ॥ हसनी
परे हालतोरे, चालतो सुदर इद ॥ नयणे नीरखी हि
ए हरखी, जाणी तेज जिणद ॥ साहमो जोशु घणु
जेम दुतीया चद ॥ मे० ॥ १५ ॥ गोदी करीशु ही
ये धरीशु, चुबीशु सोवार ॥ मुह माथो दिन सनाथो,
जाणीशु सुविच्यार ॥ विलसशु मन मोकले, अरथना
नडार ॥मे०॥१६॥ हाथे फरशी हिए उरशी, राखीशु
नाखी ताम ॥ देइ मुखमे कवो सुखमे जिमो कुवर का

म ॥ पाननी बीमी कारिने, आपीश आनिराम ॥ मे० ॥ ॥ १७ ॥ वात सुणशु कुवर केरी, ठेह धरी लगी जेह ॥ आपणा वितक विच्यारी, नाखीश धरी नेह ॥ मनोरथनी माला नली, गुथी राखी एह ॥ मे० ॥ १८ ॥ ए नव्यायशीमी नली, ढाल तो सुखकार ॥ कहे श्रीगुणसूरि सघली, ढालमे शिरदार ॥ सानल्या आवी मिले, सकल वगीत फल सार ॥ मे० ॥ १९ ॥

दुहा ॥ आगे जाता आवीयो, सुदर मदिर एक ॥ हयथट गयथट नरथटा, पूरीत शोन अनेक ॥ १ ॥ वली विशेपे पूग्ता, विद्या नाखे इश ॥ ए घर तुह्म माता तणो, जणनी पूरी जगीश ॥ २ ॥ नित्य महोत्व नवनवा, दिजे पौली प्रवाय ॥ याचक जय जय उच्चरे, नूरी नणे गुणगाय ॥ ३ ॥

ढाल ९० मी ॥ परम सलुणो साधुजी ॥ ए देशी ॥ मोहन प्यारे चेलणा, चतुराइ दिसेरे ॥ रागे राची रुखमणी, मिलवाने मन हिसेरे ॥ मो० ॥ १ ॥ रूप धर्यो रलीयामणो, ऋपी वालीक रुमेरे ॥ मिठो नीमीत नाखणो, वोले जीम्र सुमेरे ॥ मो० ॥ ॥ २ ॥ नेस विराजे साधुनो, महीमा ए अति मोटोरे ॥ पूज्य पठे वडी पागुरी, चलोटो पिण गेटोरे ॥ मो० ॥ ३ ॥ खाधे लटके लोवडी, लटकतो चालेरे ॥ जयणनो गुण राखतो, हलुए हलुए हालेरे ॥ मो० ॥ ॥ ४ ॥ देह प्रमाणे दिपतो, करमे दरू धरावेरे ॥ म

नमय नावे ढुकडो, दरसणने दावेरे ॥ मो० ॥ ५ ॥
मुहने दिधी मुहपति, मुनो मयले गात्रेरे ॥ गुण आ
चारे उजलो, अति चारित्र पात्रिरे ॥ मो० ॥ ६ ॥ आ
गे उचो वाहमे, पुजवाने काजेरे ॥ यत्न करेवे जीव
नी, सजम गुण गाजेरे ॥ मो० ॥ ७ ॥ रग रगीला पा
तरा, पडीलेहि लिजेरे ॥ एखणा सुधी आहारनी, ग
वेखणा कीजेरे ॥ मो० ॥ ८ ॥ सुमते सुमतो वे
खरो, गुपतिए करी गाढोरे ॥ दर्शण दिठे जेहने,
चित्त होवे थाढोरे ॥ मो० ॥ ९ ॥ पीहरीयो छ का
यनो, व्रत तो चोखा पालेरे ॥ नियह इद्रि पाच
नी, दुपण सहु टालेरे ॥ मो० ॥ १० ॥ शिल
धरे नव वाडसु, तस क्रोध न कोइरे, समता रसनो
सागरु, निरलोभी अति होइरे ॥ मो० ॥ ११ ॥ स
नमुख दीठो आवतो, शा साहमी आवेरे ॥ देइ प्रद
क्षणा वदना, करती मन सुख पावेरे ॥ मो० ॥१२॥
लेवा चाली पाटलो, हरी आसणे बेठोरे ॥ रुखमणी
ना मन भीतरे, अति अचरिज पेठोरे ॥ मो०॥ १३॥
विनय करीने विनवे, ऋषी उरहा आवोरे ॥ वेसो बी
जे आसणे, जिम साता पावोरे ॥ मो० ॥ १४ ॥ ते
धन थानक जाणीए, जिहा ऋषी ले विश्रामोरे ॥ उ
ठावुछु कारणे, तुह्म मति दु ख पामोरे॥ मो० ॥ १५॥
देवाधीष्टीत एह अछे, हरीके हरीको जायोरे ॥ बेठो
सुख पावे साहि, अवराने असोहायोरे ॥ मो० ॥१६॥

ऋषि भांखे सुण श्राविका, ए केहि चित्यारे ॥ सपा खेलावे मानवी, जाणीं अहिमतारे ॥ मो० ॥ १७ ॥ लब्धि प्रसादे देवता, हमसु नवि बोलेरे ॥ ताजु घाली डुगरा, कर साथे तोलेरे ॥ मो० ॥ १८ ॥ मेरु तणो दाडो करे, धरती छत्राकारोरे ॥ राखे हाथा उ परे, सायर जलनी धारोरे ॥ मो० ॥ १९ ॥ तो तुह्म साचा स्वामीजी, खमवो ए अपराधोरे ॥ दिसोछो तो नान्हडा, सजम किम लाधोरे ॥ मो० ॥ २० ॥ नुमं डल पर जनमीया, प्रथवीपति तातोरे, माता तो म हि मडणी, वैरागे वातोरे ॥ मो० ॥ २१ ॥ आज ल गी गुरु नेटणा, हमने नवि हुइरे॥ आपाहि आपे जा गीया, गति मति जुइरे ॥ मो० ॥ २२ ॥ तिरथवा शी बु सहि, इहां आयो आजोरे ॥ वरस सोलनो पारणो, करवाने काजोरे ॥ मो० ॥ २३ ॥ नाखे रा णी रुखमणी, ए अधीको केहेवायोरे ॥ उत्कृष्टी अव गाहना, वरसी तणो तप थायोरे ॥ मो० ॥ २४ ॥ अवताई उपवासीयो, माता थान हरामोरे ॥ वात व डामु कीजीए, वोहरावणनो कामोरे ॥ मो० ॥ २५ ॥ षट चौरयासीमी नली, ए ढाल कहावीरे॥ श्री गुणसाग र सब लह्यो, माता दरशण पावीरे ॥ मो० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ दरशण पामी माता तणो, मान्यो सुख मनमाहि ॥ तेतो जाणे केवलि, के जाणे चित प्राहि ॥ १ ॥ मनहि मील्यो नयणा मील्या, अने मिलियो

वयणा काय ॥ च्यार मिळणमा एकहि, मिळण मिलि नहि माय ॥ २ ॥

ढाल ९१ मी ॥ साहिब वाहु जिणे सर विनवु ॥ ए देशी ॥ रुखमणी तुतो साची श्राविका, थारो श्रति सोभाग हो ॥ परदेसामे साभल्यो, देव गुरुसु राग हो ॥ रु० ॥ १ ॥ क्षुद्र नहि रुपे भलि, सो महा सुखदाय हो ॥ सत्यें वदे डर पापनो, सरलपणे सुचि काय हो ॥ रु० ॥ २ ॥ स्नेह घणो लज्या घणी, दया घणी दिल माहि हो ॥ सम भावी शुभ द्रष्टणी गुणनि रागणी श्राहि हो ॥रु०॥३॥ धर्म कथक धर्मातमा, कुल तो उभय विसुध हो ॥ दिर्घ द्रष्टीए देखणी श्रर्थ लहे श्रविरुध हो ॥ रु० ॥ ४ ॥ विनयवंति गुण जाणसी पर हित करत जगीस हो ॥ लब्धि लिखी गुण धारणी एव ए एकविस हो ॥ रु० ॥५॥ समकीत गुणने पालवे, थारो निश्चल नाम हो ॥ देव ने देवी चालवे, धर्मिसु धर्म प्रमाण हो ॥ रु० ॥ ६ ॥ पर्व तणी श्राराधना, करती मन उजमाल हो ॥ पोसा पडिकमणा करे, सब वीधी वात रसाल हो ॥ रु० ॥ ७ ॥ शिलवति सीता जिसी, भाग्यवति ससार हो ॥ पचालिनी उपमा, सत्यवति वरनार हो ॥ रु० ॥ ८॥ साहमी साहमणी साचवे, धर्म थानक पोसाल हो ॥ साधु साधावियां तणी, गेरा जिम सभाल हो ॥ रु० ॥ ९ ॥ दिन प्रत्ये चारी प्रकारनो, दान तणो श्रघी

कार हो ॥ अण वोहोराव्या आखमी, जीमवा नेम अपार हो ॥ रु० ॥ १० ॥ इम सुणी गुण दूरथी, गेमतो गुण गेह हो ॥ हु आयो तुझ आगणे, आणी धर्म सनेह हो ॥ रु० ॥ ११ ॥ सार न पूगी एतली, वोहोरो स्वामी आहार हो ॥ अतराइ कोइ माहरे, के थइ चित विसार हो ॥ रु० ॥ १२ ॥ कहे रुखमणी ऋषीजी सुणो, आरती वति आज हो ॥ राधण सींधण वीसरी, वीसरीयो सब काज हो ॥ रु० ॥ १३ ॥ एवडीसी आरती अवे, जाखे सयल विचार हो ॥ पुत्र आगम वेला हिवे, ए जिन जाखीत सार हो ॥ रु० ॥ १४ ॥ सही नाणी सघली मिली, सुके वृक्ष अशोक हो ॥ फूल फले करी गह गह्यो, देखे सघला लोक हो ॥ रु० ॥ ॥ १५ ॥ मुगा लाग्या बोलवा, विरुपा अति रुप हो ॥ कुबज फिरी सरला थया, आधा नयण अनूप हो ॥ रु० ॥ १६ ॥ नीर जराणी वावडी, कमले शोजे उदार हो ॥ कोयळ बोले सुहामणा, मोर करे किगार हो ॥ रु० ॥ १७ ॥ विण ऋतु ऋतुराजीयो, आणी विराज्यो आज हो ॥ जमरा गुंजारव करे, फूल फल्या तरु साज हो ॥ रु०॥१८॥ माहरो मन पिण उलस्यो, पान्हो चढीयो पूर हो ॥ पिण नायो मुझ नान्हमो, ए मन चिंत्या जूर हो ॥ रु० ॥ १९ ॥ उतावली एति कीशी, जे जाख्यो जिनराय हो ॥ पहोर घमीने आतरे, सो तो रहस्ये आय हो ॥ रु० ॥ २० ॥ सा जाखे ऋषी

वयणा काय ॥ च्यार मिलणमा एकहि, मिजण मिलि नहि माय ॥ २ ॥

ढाल ९१ मी ॥ साहिब बाहु जिणे सर विनवु ॥ ए देशी ॥ रुखमणी तुतो साची श्राविका, थारो अति सोभाग हो ॥ परदेसामे साम्भल्यो, देव गुरुसु राग हो ॥ रु० ॥ १ ॥ क्षुद्र नहि रुपे भलि, सो महा सुखदाय हो ॥ सत्यं वदे डर पापनो, सरलपणे सुचि काय हो ॥ रु० ॥ २ ॥ स्नेह घणो लज्या घणी, दया घणी दिल माहि हो ॥ सम भावी शुभ दृष्टणी गुणनि रागणी श्राहि हो ॥रु०॥३॥ धर्म कथक वर्मात मा, कुल तो उभय विसुध हो ॥ दिर्घ दृष्टीए देखणी अर्थ लहे अविरुध हो ॥ रु० ॥ ४ ॥ विनयवति गुण जाणती 'पर हित करत जगीस हो ॥ लब्धि लिखी गुण धारणी एव ए एकविस हो ॥ रु० ॥५॥ समकीत गुणने पालवे, थारो निश्चल नाम हो ॥ देव ने देवी चालवे, धर्मिसु धर्म प्रमाण हो ॥ रु० ॥ ६ ॥ पर्व तणी आराधना, करती मन उजमाल हो ॥ पोसा पडिकमणा करे, सब वीधी वात रसाल हो ॥ रु० ॥ ७ ॥ शिलवति सीता जिसी, भाग्यवति ससार हो ॥ पचालिनी उपमा, सत्यवति वरनार हो ॥ रु० ॥ ८॥ साहमी साहमणी साचवे, धर्म थानक पोसाल हो ॥ साधु साधविया तणी, भेरा जिम सभाल हो ॥ रु० ॥ ९ ॥ दिन प्रत्ये चारी प्रकारनो, दान तणो अधी

धा सुन सकेत हो ॥ रु० ॥ ३१ ॥ लाडु एक उपा
मीयो, तव वोले ऋषीराय हो ॥ ए किस्यु पुण्यात
मा, कर काठो देखाय हो ॥ रु० ॥ ३२ ॥ दुर्जयछे
जिरसे नहि, हरी एकेको खाय हो ॥ चोथा ए तुम
वूऊइ, नहि ऋषी हत्या थाय हो ॥ रु० ॥ ३३ ॥
नय कोइ मति मानजो, तपनि लवधी प्रमाण हो ॥
नस्म होवे हम नोगव्या, जे छे ते सहु आण हो ॥
रु० ॥३४॥ वोहराव्या सघला सहि, खाय गयो ऋषी
वाल हो ॥ चक्री खिर तणी परे, तस जिरयो ततका
ल हो ॥ रु० ॥ ३५ ॥ धर्म तणी वर गोठडी, कर
ता वरते नाम हो ॥ सानलवा सरखी हुइ, अवर क
था अनीराम हो ॥ रु० ॥ ३६ ॥ एक्काणुमी ढालमें,
नोजन माता हाथ हो ॥ श्रीगुणसागर सूरिजी, उल
ट सघली साथ हो ॥ रु० ॥ ३७ ॥

दुहा ॥ नामा नाव विसुधशु, जाप जप्यो परिपू
र ॥ रूप न रचवी राजीयो, छलो गमायो नूर ॥ १ ॥
द्युत खेलण धन वाछना, दाशीसु घरवास ॥ रूप आ
शा शिर मुन्फिया ॥ ते नवि आस निरास ॥ २ ॥
तृश्ना वाह्यो वाणीयो, जलवट वणज कराय ॥ को
इ वाय ऊवूकन्हे, आयो मूलग गमाय ॥ ३ ॥ जल
हि जलने साचवे, ताल न तृपतो होय ॥ जल जल
करता जल गयो, रातो पमीयो सोय ॥ ४ ॥ अरे
किहा ए विप्रते, वादी विगोया जाय ॥ हाथ घसे

राजीया, घरमी घड्थल होय हो ॥ नामा सुतना व्या
हमे, शिर रुमा तो जोय हो ॥ रु० ॥ २१ ॥ वाल त
जी तव वोलीयो, किसी विमासण एह हो ॥ बाल ग
या फिरी आवशे, साजी चहीए देहहो ॥ रु०॥२२॥
मे जाएयोयो मोटको, एठे जपद्रव्य कोद हो ॥ तव ल
गे नय नवी नाखवो, प्राण कुशल जब होइ हो ॥
रु० ॥ २३ ॥ प्राण तजु ततखीण सही, पामीए अप
मान हो ॥ मान गया जग जीवणो, ते तो जेहेर स
मान हो ॥ रु० ॥ २४ ॥ मछी पाणी उतरया, तल
पी तलपी मरी जाय हो ॥ सहिरूपि ते माणसे, अ
मरखतो न सहाय हो ॥ रु० ॥ २५ ॥ पूठेवो युग
तो नही, ऋपीने गृह व्यापार हो ॥ पिण आरती गे
आधली, नाखो काइ विच्यार हो ॥ रु० ॥ २६ ॥
रिते हाथे न पूठीया, नवि फल दायक थाय हो ॥
तोशु आपु देवजी, खीर खरीत सुहाय हो ॥ रु० ॥
॥ २७ ॥ शिली आगन सालगे, फूकि फूकि जोइ
हो ॥ घाघी थाती जाणके, फिरी नाखे ऋपी सोइ
हो ॥ रु० ॥ २८ ॥ शिघा मोदक मोटिका, सिघाहि
पकवान हो ॥ मिठाइ मेवा घणा, फासुक वरसु प्र
धान हो ॥ रु० ॥ २९ ॥ हाजर सहेजे जे हुवे, सो
आणी वहिराय हो ॥ नरीया मोठा माटला, वियाने
प्रनाव हो ॥ रु० ॥ ३० ॥ सहारीया हरी केसरी,
हरी आरोगण हेत हो ॥ लाडु लिधा नवि गया, लि

संतरे माइ ॥ आयो जायो लोक सुहायो, गीरुवोने गु
णवतरे माइ ॥ फि० ॥ ९ ॥ नामा केरा लोक घणेरा,
केसाकेरे काजरे माइ ॥ आवी मीळिया अति उगळि
या, बोले गेडी लाजरे माइ ॥ फि० ॥ १० ॥ ए दुख
तो जाणेयो आगे, नारद वचन विच्यारेरे माइ ॥
ए दिन लीधा काज न सिधा, दिन वदे हरि नाररे
माइ ॥ फि० ॥ ११ ॥ बोले चेलो पामी हेलो, माता म
करे अदेहरे माइ ॥ बेटो करतो सोमे करवो, माणश
मन सदेहरे माइ ॥ फि० ॥ १२ ॥ रुखमणी रानी रा
खी कानी, माया रुखमणी कीधरे माइ ॥ आपण खो
जो वदन सरोजो, हाथा आरीसो लीधरे माइ ॥ फि०
॥ १३ ॥ नारी सुरगी नूपीत अगी, हस्त मुखी हुशी
याररे माइ ॥ आदर देती लोका सेति, वचन वद सु
विच्याररे माइ ॥फि०॥१४॥ लोक प्रवीणा नाखे दीणा,
माता हमनाहि दोपरे माइ ॥ तुम हम ठाकुर हमतुम
चाकर, उसन नरीय कोसरे माइ ॥फि०॥१५॥ स्वामनि
कारज करवो आरज, हम आव्या तुम वाररे माइ ॥
जीन गले एह वचन कहेता, साचो देवी विचाररे मा
इ ॥ फि० ॥ १६ ॥ रुखमणी नाखे रोसन राखे, स्वा
मीनी केरो कामरे माइ ॥ वेगे किजे जग जस लिजे,
ए सीर बोल्यो रामरे माइ ॥ फि० ॥ १७ ॥ वचन वि
चारी हरखी नारी, सारी नारी नावरे माइ ॥ नाजन
आगे धरती रागे, चितनो चोखो चावरे माइ ॥ फि०

शिर धूणवे, [फीरी फीरी पिवताय ॥ ५ ॥

ढाल ९२ मी ॥ पुण्य तणारे फल मिठारे जाणो ॥ ए देशी ॥ फिरी] फिरी पिवतावा कराति, वरते नामा जामरे माइ ॥ सात पूकार अनावी आवी, सा दुख पावि तामरे माइ ॥ फि० ॥ १ ॥ नन स नाली पहिरे फाली, वाली जाक जमालीरे माइ ॥ जवारी मेरे [नानु कुमरपर, [पूछे] कुमर रसालीरे माइ ॥ फि० ॥ २ ॥ तन मन प्यारो नद हमारो, सारो राखे इसरे माइ ॥ जेर [न चाहु तुज आरा हु, ए मूको जगीशरे माइ ॥ फि० ॥ ३ ॥ अवर सहु वातानो सुधो. पिण फिरी नावे केसरे माइ ॥ धुरती धूति खरी विगुती, होशे हास्य विशेपरे माइ ॥ ॥ फि० ॥ ४ ॥ अमरख आणी नामाराणी, ठाणी ए अनीमानरे माइ ॥ रुखमणी नुमीने अति नुमी, करशु आपसमानरे माइ ॥ फि० ॥ ५ ॥ एमविमाशी बहुली दासी, नावी लीधी लाररे माइ ॥ माथे मुरूण करवा नुरूण, पोखी द्वेप अपाररे माइ ॥ फि० ॥ ६ ॥ मणी नो नाजन साथे साजन, वाजानो विस्ताररे माइ ॥ गावत गीत विशेषे आव्या, रुखमणीने दरबाररे माइ ॥ फि० ॥ ७ ॥ आवत निरख्यो मनसुं परख्यो, ए नामा परीवाररे माइ ॥ आसु ढलिया ऋषी अटकलिया, पूछे ताम विच्याररे माइ ॥ फि० ॥ ८ ॥ धुरछे हासु अति नेहासु, नाख्यो सहु वि॰

ततरे माइ ॥ आयो जायो लोक सुहायो, गीरुवोने गु णवतरे माइ ॥ फि० ॥ ९ ॥ नामा केश लोक घणेरा, केसाकेरे काजरे माइ ॥ आवी मीळिया अति उगलि या, बोले ओडी लाजरे माइ ॥ फि० ॥ १० ॥ ए दुख तो जाणयोथो आगे, नारद वचन विच्यारे माइ ॥ ए दिन लीधा काज न सिधा, दिन वदे हारि नारे माइ ॥ फि० ॥ ११ ॥ बोले चेलो पामी हेलो, माता म करे अदेहरे माइ ॥ बेटो करतो सोमे करवो, माणिश मन सदेहरे माइ ॥ फि० ॥ १२ ॥ रुखमणी गानी रा खी कानी, माया रुखमणी कीधरे माइ ॥ आपण खो जो वदन सरोजो, हाथा आरीसो लीधरे माइ ॥ फि० ॥ १३ ॥ नारी सुरगी भूषीत अगी, हस्त मुखी हुशी यारे माइ ॥ आदर देती लोका सेति, वचन वदे सु विचारे माइ ॥फि०॥१४॥ लोक प्रवीणा नाखे दीणा, माता हमनाहि दोषरे माइ ॥ तुम हम ठाकुर हमतुम चाकर, उसन नरीय कोसरे माइ ॥फि०॥१५॥ स्वामनि कारज करवो आरज, हम आज्या तुम वारे माइ ॥ जीन गले एह वचन कहेता, साचो देवी विचाररे मा इ ॥ फि० ॥ १६ ॥ रुखमणी नाखे रोसन राखे, स्वा मीनी केरो कामरे माइ ॥ वेगे किजे जग जस लिजे, ए सीर बोल्यो रामरे माइ ॥ फि० ॥ १७ ॥ वचन वि चारी हरखी नारी, सारी नारी नावरे माइ ॥ नाजन आगे धरती रागे, चितनो चोखो चावरे माइ ॥ फि०

॥१८॥अक्षत धूप दहिस मगळ, किजे विविध प्रकाररे माइ॥ अधम तणी अहि नाणी जाणी, ए खाता उपर खाररे माइ ॥ फि० ॥ १९ ॥ नावि आवी आप जणावी, कापे केस जे वाररे माइ ॥ कान नाक वेणी आंगुलिया, छेदाइ तेहि वाररे माइ ॥ फि० ॥ २० ॥ नावीने नारी जन केरी, एह अवस्था होइरे माइ॥ आप न देखे हरख विशेषे, चाली 'जाइ सोइरे माइ ॥ फि० ॥ २१ ॥ रुखमणी केरी घणु घणेरी, करती जाइ प्रशसरे माइ ॥ एहवी मीठी अवर न दीठी, ध न एहनो कुल वसरे माइ ॥ फि० ॥ २२ ॥ देह विपर्यय जाणी हसता, दिठा लोक ते वाररे माइ ॥ हम सुदरता छे मन हरता, तेहथी हाग प्रकाररे माइ ॥ फि० ॥ २३ ॥ नाचत गावत अति सुख पावत, आवत नामा पासरे माइ ॥ एक मुखीए दुखी रुखमणी, गुण केरो करे प्रकाशरे माइ ॥ फि० ॥ ॥ २४ ॥ नडके तडके नामा नामनी, केश न देखे एकरे माइ ॥ रे रे ब्रोहणी दासडीयो तुझे, खाधी लाच अनेकरे माइ ॥ फि० ॥ २५ ॥ लाच तणु पुछेवु पाछे, वेणि नाकने कानरे माइ ॥ आगुलिया छतरीया दिसे, देह घटायो वानरे माइ ॥ फि० ॥ २६ ॥ चमकी चित नींतर अती चतुरा, व्यापि वेदना जामरे माइ ॥ ढाकी काया चोर तणि परे, निज निज घर गइ तामरे माइ ॥ फि० ॥ २७ ॥ सुसाति करीने स्वा

मनी पूछे, किधो किणे ए कामरे माइ ॥ रुखमणी रच न दोष न दिसे, ए विलसे नृप स्वामरे माइ ॥ ॥ फि० ॥ २८॥ सेवक दुखीए स्वामी लहे दुख, सु खी ए सुखीयो होइरे माइ ॥ तेनी प्रधाना आगे नां खे, जोर वहे जग जोइरे माइ ॥ फि० ॥ २९ ॥ वेणी दडज नाप्यो आप्यो, ए न वधो विपरीतरे माइ ॥ फिर फिरस्ता रुप अनेका, मुऊने विलक वितरे माइ ॥ फि० ॥ ३० ॥ होडे हाम न पुगी कोइ, होमे आया हेठरे माइ ॥ हाणी घणीने लोका हासो, होडे हारी ने ठरे माइ ॥ फि० ॥ ३१ ॥ परखदा माहे पधारो प्रभु जी, देखावो ए कामरे माइ ॥ शिरे लाणा नवि जाय थाप्या, स्याणि नुमो नामरे माइ ॥ फि० ॥३२॥ हरी हासो न मावे हियडे, आप वजावे हाथरे माइ ॥ कोइ पलेखो करण न पावे, स्वामीनि सरिखो साथरे माइ ॥ फि० ॥ ३३ ॥ कृष्ण कुतुहल करतो जाणी, आवी नामा आपरे माइ ॥ केश अपावो कपटी कता, के थाशे सतापरे माइ ॥ फि० ॥ ३४ ॥ थारेही आपे न विसरीयु, वलदेवाशु वातरे माइ ॥ तुम पुरुषोत्तम साखी राखी, इम करे कुण मातरे माइ ॥ फि०॥३५॥ हरीसु हलधर देइ उलभो, माये चहोडी नाररे मा इ ॥ सुधी वाते रुकाटि करता, लहिशे नाम गीमाररे माइ ॥ फि०॥३६॥ कृष्ण कहे सा आप एकेली, ए वहु ली परीवाररे माइ ॥ ॥ किम मुडाइ दादा देखो, ए

॥१८॥अक्षत धूप दहिस मंगळ, किजे विविध प्रकाररे माइ ॥ अधम तणी अहि नाणी जाणी, ए खाता उपर खाररे माइ ॥ कि० ॥ १९ ॥ नात्रि आवी आप जणा वी, कापे केस जे वाररे माइ ॥ कान नाक वेणी आ गुलिया, छेदाइ तेहि वाररे माइ ॥ कि० ॥ २० ॥ नावीने नारी जन केरी, एह अवस्था होइरे माइ ॥ आप न देखे हरख विशेषे, चाली 'जाइ सोइरे माइ ॥ कि० ॥ २१ ॥ रुखमणी केरी घणु घणेरी, करती जाइ प्रशसरे माइ ॥ एहवी मीठी अवर न दीठी, ध न एहनो कुल वसरे माइ ॥ कि० ॥ २२ ॥ देह विप र्यय जाणी हसता, दिठा लोक ते वाररे माइ ॥ हम सुदरता छे मन हरता, तेहथी हाश प्रकाररे माइ ॥ कि० ॥ २३ ॥ नाचत गावत अति सुख पावत, आवत नामा पासरे माइ ॥ एक मुखीए दुखी रुखमणी, गुण केरो करे प्रकाशरे माइ ॥ कि० ॥ ॥ २४ ॥ नडके तडके नामा नामनी, केश न देखे एकरे माइ ॥ रे रे द्रोहणी दासडीयो तुझे, खाधी ला च अनेकरे माइ ॥ कि० ॥ २५ ॥ लाच तणु पुछेवु पाछे, वेणि नाकने कानरे माइ ॥ आगुलिया उतरी या दिसे, देह घटायो वानरे माइ ॥ कि० ॥ २६ ॥ च मकी चित नींतर अती चतुरा, व्यापि वेदना जामरे माइ ॥ ढाकी काया चोर तणि परे, निज निज घर गइ तामरे माइ ॥ कि० ॥ २७ ॥ मुसाति करीने स्वा

मनी पूछे, किधो किणे ए कामरे माइ ॥ रुखमणी रच न दोष न दिसे, ए विलसे नृप स्वामरे माइ ॥ ॥ फि० ॥ २८॥ सेवक दुखीए स्वामी लहे दुख, सुखी ए सुखीयो होइरे माइ ॥ तेणे प्रधाना आगे नांखे, जोर वहे जग जोइरे माइ ॥ फि० ॥ २९ ॥ वेणी दडज नाप्यो आप्यो, ए न वधो विपरीतरे माइ ॥ फिर फिरस्ता रुप अनेका, मुझने वितक वितरे माइ ॥ फि० ॥ ३० ॥ होडे हाम न पुगी कोइ, होणे आया हेठरे माइ ॥ हाणी घणीने लोका हासो, होडे हारी नेठरे माइ ॥ फि० ॥ ३१ ॥ परखदा माहे पधारो प्रभुजो, देखावो ए कामरे माइ ॥ शिरे छाणा नवि जाय थाप्या, स्याणि जुओ नामरे माइ ॥ फि० ॥३२॥ हरी हासो न मावे हियडे, आप वजावे हाथरे माइ ॥ कोइ पलेखो करण न पावे, स्वामीनि सरिखो साथरे माइ ॥ फि० ॥ ३३ ॥ कृष्ण कुतुहल करतो जाणी, आवी भामा आपरे माइ ॥ केश अपावो कपटी कता, केथाशे सतापरे माइ ॥ फि० ॥ ३४ ॥ थारेही आपे न विसरीयु, बलदेवाशु वासरे माइ ॥ तुम पुरुपोत्तम साखी राखी, इम करे कुण मातरे माइ ॥ फि०॥३५॥ हरीसु हलधर देइ उलभो, माथे चहोडी नाररे माइ ॥ सुधी वाते रुकटि करता, लहिशे नाम गीमाररे माइ ॥ फि०॥३६॥ कृष्ण कहे सा आप एकेली, ए वहुलो परीवाररे माइ ॥ ॥ किम मुडाइ दादा देखो, ए

स्यो का व्यवहाररे माइ ॥ फि० ॥३७॥ श्री बलदेव दिलासा कीधा, नामाने नरपूररे माइ ॥ रुखमणी घर लुटेवा कारण, मोकलिया नड नूररे माइ ॥ फि० ॥ ३८ ॥ ए ब्याणुमी ढाल नलेरी, मुडणको अधीकाररे माइ ॥ श्री गुणसागर सूरि वखाणे, हरी सुत च रीत उदाररे माइ ॥ फि० ॥ ३९ ॥

दुहा ॥ तेहज रुप तजी फीर थयो, चेलो पेहेल प्रमाण ॥ चमकी राणी रुखमणी, ए वड गुणनो जाण ॥१॥ विद्याधर माहे वस्यो, विद्या तेह विशेष ॥ रुप करेछे नव नवा, पिण ए काम नरेश ॥ २ ॥ एहवो अवर न जगतमे, एहवो अवर न राय ॥ एहवो अवर न जाइयो, एहवो अवर न थाय ॥ ३ ॥ ए जायो माहरो सहि, ए सम अवर न कोय ॥ तारा दिश सघली जणे, रवि पूरव दिश होय ॥ ४ ॥ केलवतो अतिहि कला, खिसीन जाये खाप ॥ माय मनोरथ पूरवा, पुत्र प्रगट कर आप ॥ ५ ॥ कामदेवनी उपमा, रुप अनोपम सार ॥ अभ्र मडलथी निकल्यो, सहेस किरण दिनकार ॥ ६ ॥ सर्व अवेवा शोभतो, सर्व अनूपण धार ॥ सर्व कला गुण आगलो, दिठो काम कुमार ॥७॥

ढाल ९३ मी ॥ क्यु जाणुं क्यु वनी आवसि ॥ ए देशी ॥ पगे लाग्यो माता तणे, माता लियो उठाय हो ल[illegible] आलिंग्यो अलजे घणु, हेज हिए न समाय हे[illegible] ओ दिन माहरो, दूधे वुठा मे

ह हो ॥ ला० ॥ दर्शण दिठो ताहरो, जाग्यो तनमे नेह हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २ ॥ गती आवी गाहिवरी, आसु वरसे नयणहो ॥ ला०॥ माता पुत्र मिली रह्या, उपज्यो अधीको चयन हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ३ ॥ मुह अने माथो घणु, चुबे वारवार हो ॥ ला० ॥ हु वारी तुझ उपरे, तु मेरो प्राण आधार हो ॥ ला० ॥ ॥ आ० ॥ ४ ॥ वलहारी सुरति तणी, मुरती मोटी सोह हो ॥ ला० ॥ अणियाले लोयणे, माता पनोति मोह हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ५ ॥ आवो मिलो साहेलमी, देखो मेरो लाल हो ॥ ला० ॥ इद्र चली घर आवियो, सव विध रुप रसाल हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ६ ॥ प्रेम गहेली गोरमी, चिगन करे लखकोरू हो ला० ॥ घन वुठा जिम मोरडी, नृत्य करे नर जोरू हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ७ ॥ दाखा पाहे दैवमी, मीठी अति कहाइ हो ॥ ला० ॥ पाणी पापण हेठलो, निरखत निठे नाहि हो ॥ला० ॥ आ०॥ ८ ॥ लहेरी खारा जल तणी, वरस्या पाछे वाय हो ॥ ला०॥ परदेशी प्यारो मिले, शितल कहि न जाय हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ९ ॥ चदन तो शितल कह्यो, तेहथी चद सुचग हो ॥ ला० ॥ चदन चद विचारता, शितल नदन सग हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १० ॥ मिश्री तो मीठी सहि, तेहथी अमृत जोइ हो ॥ ला०॥ मिश्री अमृत दोयमे, मीठो नदन होइ हो ॥ ला० ॥ आ० ॥

स्यो कां व्यवहाररे माइ ॥ फि० ॥३७॥ श्री बलदेव दिलासा कीधा, जामाने जरपूररे माइ ॥ रुखमणी घर लुटेवा कारण, मोकलिया जड जूररे माइ ॥ फि० ॥ ३८ ॥ ए व्याणुमी ढाल जलेरी, मुडणको अधीकाररे माइ ॥ श्री गुणसागर सूरि वखाणे, हरी सुत चरीत उदाररे माइ ॥ फि० ॥ ३९ ॥

दुहा ॥ तेहज रुप तजी फीर थयो, चेलो पेहेल प्रमाण ॥ चमकी राणी रुखमणी, ए वड गुणनो जाण ॥१॥ विद्याधर माहे वस्यो, विद्या तेह विशेष ॥ रुप करेछे नव नवा, पिण ए काम नरेश॥ २ ॥ एहवो अवर न जगतमे, एहवो अवर न राय ॥ एहवो अवर न जाइयो, एहवो अवर न थाय ॥ ३ ॥ ए जायो माहरो सहि, ए सम अवर न कोय ॥ तारा दिश सघली जणे, रवि पूरव दिश होय ॥ ४ ॥ केलवतो अतिहि कला, खिसीन जाये खाप ॥ माय मनोरथ पूरवा, पुत्र प्रगट कर आप ॥ ५ ॥ कामदेवनी उपमा, रुप अनोपम सार ॥ अभ्र मडलथी निकल्यो, सहेस किरण दिनकार ॥ ६ ॥ सर्व अवेवा शोजतो, सर्व अजूषण धार ॥ सर्व कला गुण आगलो, दिठो काम कुमार ॥७॥

ढाल ९३ मी ॥ क्यु जाणु क्यु बनी आवसि ॥ ए देशी ॥ पगे लाग्यो माता तणे, माता लियो उठाय हो लाल ॥ आलिंग्यो अलजे घणु, हेज हिए न समाय हो ॥ १ ॥ आज जलो दिन माहरो, दूधे वुठा मे

ला० ॥ आंखे काजल आजता, विच विच मेलेतान हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २१ ॥ आपेही लाग्यां उठवा, जानुनी गति कारहो ॥ ला० ॥ पाव नरे गिर गिर प रे, माता मोले लार हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २२ ॥ माताको कर साहीयो, हस वचाकी चाल हो ॥ ला० ॥ बोले नापा तोतली, माता पूछे वाल हो ॥ ला० ॥ ॥ आ० ॥ २३ ॥ जाइ लोटे आगणे, धूले धूसर गात हो ॥ ला० ॥ मुठी बाधी धूलशु, कठे लगावे मात हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २४ ॥ माता आपे सुखमी, आपी नाखे दूर हो ॥ ला० ॥ ए नही नही ए नही, एउ तु लाव्य हजूर हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २५ ॥ आमो मामी आकरो, रोवा लाग्यो जाम हो ॥ ला० ॥ बोले माता रुखमणी, ए रहेवादे काम हो ॥ ॥ ला० ॥ आ० ॥ २६ ॥ तव वय लिधो मूलगो, माय नमावे शीस हो ॥ ला० ॥ चिरजीवे चिर नदजे, माता दिए आशीस हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ॥ २७ ॥ वारू वात विनोदशु, करती वरते माय हो ॥ ला० ॥ वरस सोलनो सचियो, दुख देशातर जाय हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २८ ॥ माय मनोरथ गुथती, सफल थइ ते आज हो ॥ ला० ॥ पूरव पुण्य प्रसादथी, मिलीया ए सुभ साज हो ॥ ला० ॥ ॥ आ० ॥ २९ ॥ एतो त्र्याणुमी कही, ढाल महा अनीराम हो ॥ ला० ॥ श्रीगुणसागर सुरिजी, सरिया

॥११॥ सोवनो तो सुखदायकु, सोवनाहिर्यी रयण हो लां० ॥ रयण अने सोना थकी, नदन तो सुख दय न हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १२ ॥ न्याराथी न्यारो ख रो, सरसाथी अति सर्स हो ॥ ला० ॥ निकाथी नीको घणु, निको नदन हर्श हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १३ ॥ हियो सरोवर साकडो, उलट जलनो जोर हो ॥ ला० ॥ लहेर न जाइ जालवी, रह्यीयो होइ सोर हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १४ ॥ सुख माहि दुख उपनो, माजीना मनमाही हो ला०॥ वालपणो नवी देखीयो, ए दुख साले आही हो ॥ ला०॥ आ०॥१५॥ गर्भ तणी विधी साचवी, उदर वह्यो नव मास हो॥ ला०॥ कष्टी महा दुखे जनमीयो, किधो परघर वास हो ॥ ला० ॥ ॥ आ० ॥ १६ ॥ दोष न देणो कोइने, कर्माकेरो दो ष हो॥ ला० ॥ भाग्य लिख्यो फल पाइए, मति करवो रागने रोसहो ॥ ला० ॥ आ० ॥१७॥ मदन कहे मा जी सुणो, ए दुख माणे कोइ हो॥ ला० ॥ वालकरुप सुहामणु, करी देखाडु सोइ हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ॥ १८ ॥ उधो सुतो आगले, चिंतवे सा मुह माहि हो ला० ॥ चपल पणे पाउ धारतो, उठावे धरी बा ही हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १९ ॥ मुठी बाधी सोह तो, मोहतो परीवार हो ॥ ला० ॥ हाशी करे अति कलकली, माताने हर्ष अपार हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ॥ २० ॥ खोले लिधो खातशु, धवरावे पयपान हो

रे आंखे ॥ जे कालो क्रोधी विशेषेरे, ते मत्र वले नि
चु देखे ॥ ९ ॥ नर खोडे दिधा खूटेरे, नर वचन वा
ध्या छुटे ॥ मत्र बले वाधी आणयोरे, नवी छुटे ते न
र ताणयो ॥ १० ॥ ए मर्म हमाने लाधोरे, मत्र वले
माणस गाधो ॥ ते साहमो होइने चूकेरे, ते चोर न
लाइ मूके ॥ ११ ॥ एतो हु जाइने देखुरे, ए मत्र त
णो बल पेखु ॥ ए सुतने किरती देवारे, चली आया
प्रभु ततखेवा ॥ १२ ॥ तव ते ब्राह्मण सोवेरे, दरवाजे
आडो होवे ॥ उठ कहे हलधारीरे, दिए वाट विशेषे
विच्यारी ॥ १३ ॥ विप्र कहे सुण स्वामीरे, तुंछेए अतर
जामी ॥ भामानो भोजन खाधोरे, अति होडे ते फल
लाधो ॥ १४ ॥ प्रभुजी पाग वलीएरे, गुरु बुद्धी वि
च्यारी टलीए ॥ रिस वसे सो भाखेरे, मर्जादा न तेहनी
राखे ॥ १५ ॥ अलगो था घणा खाणारे, मुज मदिर
माहि जाणा ॥ विप्र वाणी एम दाखीरे, न खवाइ जी
वती माखी ॥ १६ ॥ एह वचने हलधर रिसेरे, पग
साहीने तस घीसे ॥ पहुता पोले जाइरे, त काया अधी
की थाइ ॥ १७ ॥ फिरी पूठे जव दिठोरे, ते ब्राम्हण
थानक वेठो ॥ मर्म न लिधो कोइरे, अति कालो पि
लो होइ ॥ १८ ॥ मुजसु इणीपरे मडेरे अवराने ए
किम छडे ॥ ए डाकणी साकणी साचीरे, लही मान म
हा मद माची ॥ १९ ॥ पुनरपी चाली आवेरे, ते धस
मस करतो धावे ॥ दिसे रिस अपाररे, तव पूगी मा

वर्गीत काम हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ३० ॥

दुहा ॥ श्रीवलजद्र तणा वली, सुजट महा कुं जार ॥ आवी हुआ एकठा, रुखमणीने दरबार ॥१॥ मदन कहे माता कहो, एठे कवण विच्यार ॥ जे ते त रुवर वावीया, ते ए फल विस्तार ॥ २ ॥

ढाल ९४ मी ॥ वनमालानी देशी ॥ ते फळ ए विस्तरीयारे, ए नरू आवी परवरीया ॥ दाशीनी वे णी वाढीरे, ते नकटी किधी काढी ॥ १ ॥ ते होडे नामा नाखीरे, हरी हलधर दिधा साखी ॥ सतनामा जाइ पुकारीरे, तिहाथी नरू आया नारी ॥ २ ॥ मा चिंता नवी धरणीरे, तु देखे हमारी करणी ॥ विद्या ब्रा ह्मण किजेरे, लाकलडी हाथ ग्रहीजे ॥ ३ ॥ पेट ब मो तसु हालेरे, ते हलुए हलुए चाले ॥ ते खीली रा ख्या सघलारे, ते सुजट हुआ अति निवला ॥ ४ ॥ तव एक मोकलो किधोरे, प्रजु पासे गयो ते शिधो ॥ सुणी वोले श्रीबलदेवारे, ए मत्र तणा वल लेवा ॥ ॥ ५ ॥ ए वहुतो मोहन गारीरे, ए वहुतो आप ठगा री ॥ ए वहु तो कामण जाणेरे, ए नाये पियु वश आणे ॥ ६ ॥ शिलो दाहिं दातज्युं तोडेरे, शिलो जल पर्वत फोडे ॥ ए मोर चवे मुखे मीठोरे, पिण साप गलतो दिठो ॥ ७ ॥ वाणी एह व्हाकीरे, सापीणथी पिण ए वाकी ॥ आखरनो अधीको आघोरे, जरहो नवी आवे वाघो ॥ ८ ॥ जे काम करे नही पाखेरे, ते काम समा

क्रम दिठारे, माता लोचन अमीय पइठा, हलधर निज घर आयोरे, सुतने जस कलस चढायो ॥ ३२ ॥ ढाल चोराणुमी यारुरे, मकरध्वज बल विस्तारु॥ श्री गुणसागर नाषेरे, एतो पूरव पुण्य प्रकाशे ॥ ३३ ॥

दुहा ॥ माता पूछे कुमरने, किहां अछे ऋषी राय ॥ उदधी कुमरीनि पाखति, कुमरी कवण कहाय॥१॥ कुमरी हरण आदे करी, नामा नुडण अत ॥ दसहि बोल सुणाविया, अचरिजकारी सत॥२॥ कहण सुणन सरीखा नहि, सुतना चरीत्र अनेक ॥ सुरगुरु तो न ल वरणवे, मे मुख रसना एक ॥ ३ ॥ अवर सकल विधी साचवी, सुख दुखदाइ दोय ॥ अब मिलो जइ तातने, तात परम सुख होय ॥ ४ ॥

ढाल ९५ मी ॥ हो नणदल थाको विरो चारित्र लेइ ॥ ए देशी ॥ हो कुमर, जाई मिलो तुम तातने, तात वडो ससार हो ॥ कु० ॥ बोले माता रुखमणी, आणी हेत अपार हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १ ॥ जिम सुख दिधो मा नणी, तिम सुख द्यो नीज तात हो ॥ कु० ॥ तात तुमारा दर्शणे, तिरस्योथो दिन रात हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ २ ॥ स्वर्ग थकी सुख स्वर्गिना, जेह नो स्वामी तात हो ॥ कु० ॥ पढीत जननी गोठमी, तिजो दक्षिण वात हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ ३ ॥ कुमर कहे किहा मिलु, परखदा माहि जाय हो ॥ कु० ॥ तात तुमारो पुत्र वु, इम तो मे न कहाय हो ॥ कु० ॥ जा०

य कुमार ॥ २० ॥ मायकहे सुण लालनेर, ए मोटा ना मद गालण ॥ ए यादव केरो नायकरे, एह तुम्ह पिता सुखदायक ॥ २१ ॥ श्रीहरिवंशे एहवोरे, को हुउ न एठे जेहवो ॥ श्रीबलदेव सुहायोरे, ए तुज उपर अन आयो ॥ २२ ॥ तुम्ह जइने पगे लागोरे, तुम्ह पागही मती जागो ॥ जाणी दीठु सायेरे, मति घालो मुहडे हाथे ॥ २३ ॥ मदन कहे मा सुणि एरे, तेतो परमार्थ ए गुणीए, कालो नाग खेलावेरे, तेतो वादी राय कहावे ॥ २४ ॥ युद्ध किस्यु प्रभुने जावेरे, मृगपतिनो अर्धीके दावे ॥ रण चढीयो रोलावेरे, हल मसल मार मचावे ॥ २५ ॥ विप्र वेश न छडेरे, ते सिंह थइ ,अति मन्डे ॥ बाल शसी सम दाढोरे, गिरि मेरु सरिखो गाढो ॥ २६ ॥ कुंकुम केसर गजेरे, तव मस्तक पुछ विराजे ॥ सिंह नादने करतोरे, ते मंदिरथी निसरतो ॥ २७ ॥ हलधर देखी वीमासेरे, नानी मरीए इणे हासे ॥ ए नारी नहि घर सरखीरे, में धूर छेहा लगे परखी ॥ २८ ॥ उपरणीसु हाथोरे, वामो विटे नर नाथो ॥ आगे धरीने ढूक्योरे, ते चोट करत न चूक्यो ॥ २९ ॥ ते माहोमाहि वलगारे, जण जोवे उभा अलगा ॥ तारूण ताजण करवेरे, उल्हास घणे अनुसरवे ॥३०॥ ते हारयो हरीने आगेरे, हलधरजी धरति लागे ॥ मदन गयो मा पासेरे, आलिंग्यो अति उल्हासे ॥ ३१ ॥ पुत्र परा

काम हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १४ ॥ विद्याधरपति नं
दन, हु एकाकी बाल हो ॥ कु० ॥ लीधा जावे रुखम
णी, जेहनो हरी रखवाल हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १५॥
चोर नहि लपट नहि, नहि नट वीटमे नाम हो॥ कु०॥ सा
हि रह्योबु सुदरी, किउ न धसे नृप शाम हो ॥ कु०
॥ जा० ॥१६॥ स्या तुह्म राणा राजीया, स्यो जीव्यो
जगते माम हो॥ कु० ॥ जेहनी लीजे नामनी, अवर
किस्यु करे काम हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १७ ॥ युद्ध
विना जाउ नहि, सानलज्यो जे सूर हो ॥ कु० ॥ पा
गीहि जब दोडस्ये, तेका कीजे असूर हो ॥ कु० ॥
॥ जा० ॥ १८ ॥ एम सुणी यादव सना, हल हल
हुइ अपार हो ॥ कु० ॥ सबाह्या नट सामठा, गाढा
झूझाए हार हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १९ ॥ मूरछाणो
हलधर महा, सुणी रुखमणी अपहार हो ॥ कु० ॥ उ
ठाइ उनो कियो, रातो थयो अपार हो ॥ कु० ॥
॥ जा० ॥ २० ॥ भ्रकुटी नाली नमाडतो, करतो क
प शरीर हो ॥ कु० ॥ उठ्यो अच्युत उतावलो, मेरु त
णी परे धीर हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ २१ ॥ पाडु नदन
परवडा, अर्जुन निम कुमार हो ॥ कु० ॥ कवण कवण
करी कलकले, न लहे निज परिवार हो ॥ कु० ॥
॥ जा० ॥ २२ ॥ आप आपणे पारखे, गाजता नू
पाल हो ॥ कु० ॥ उग्रसेन आदे करी, अरि कुल केरा
काल हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ २३ ॥ ॥ ए पचाणुमी दा

॥ ४ ॥ राजा राणा पूछशे, ए कुण ए कुण एह हो ॥ कु० ॥ रुखमणी सुत आइयो, थो परदेश जेह हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ ५ ॥ नले पधारयो बापडो, मावित्रा सुख काम हो ॥ कु० ॥ रडवडतोयो पर घरा, जिम तिम आयो ठाम हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ ६ ॥ नान्हा मोठाना कया, में न खमाइ बोल हो ॥ कु० ॥ हु निशाण व जावते, मिलसु घुडाइ ढोल हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ ७ ॥ व रु बावा वड वधवा, हरी हलधरसु सोर हो ॥ कु० ॥ मचाउ अति आकरो, जोउ जादव जोर हो ॥ कु० ॥ ॥ जा० ॥ ८ ॥ नेमीनाथ गाडी करी, छेर्मास सहु परी वार हो ॥ कु० ॥ आप जणावी तातने, करशु आइ जुहार हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ ९ ॥ वाचा मागु तुझ क ने, चाल हमारी लार हो ॥ कु० ॥ अण पूछया आवु नहि, पतिव्रता आचार हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १० ॥ जाण्यु मति पाछे वले, मति समरे उद्देश हो ॥ कु० ॥ कृष्ण तणी छे पाधरी, मानी वात अशेष हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ ११ ॥ बाहे साहि रुखमणी परखदा उपर आय हो ॥ कु० ॥ कीधी पुरुषा पचारणी सानल या दव राय हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १२ ॥ जो जो जोग पांम्यो, अवरजीको झूझार हो ॥ कु० ॥ आवी मी ल्यो उतावला, लागो हमारी लार हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १३ ॥ चदेरी पती मारीयो, कीधो अती सग्राम हो ॥ कु० ॥ आणी राणी रुखमणी, सो अब जाइ नि

बोले मातारे, सांभळ सुत वातारे, विरनीहो माय कही वाड जेरे ॥ त्रीय भाखे कतारे, मोरे गज दतारे, सूरनोहो नाम लही वाडजेरे ॥६ ॥ कुसमकी सेजोरे, सोवत सहेजोरे, विंटीएहो दुहवीयो तु घणोरे ॥ सहेणाळे सेलोरे, खाडासु खेलोरे, खेल खरो असोहामणोरे ॥ ७ ॥ मुझ लोचन तीरोरे, लागत अधीरोरे, कीमहो खमसे माळाकी अणीरे ॥ मुझ हाक न हमीयोरे, तु पाए पडीयोरे, कीम सहस्ये दल कारणीरे॥८॥ भेडतो भगोरोरे, ए मोटो टोरोरे, मोरोहो मरण विच्यारजेरे ॥ सखीयामें वासोरे, न सहाय हासोरे ॥ स्वामीनो काम समारीजेरे ॥ ९ ॥ रायागण आयारे, शोभत सवायारे, पायाहो सुजस प्रगट पणेरे ॥ कोइ छत्र धरावेरे, कोइ चामर ढोलावेरे, भावेहो चित्त राजा तणेरे ॥ १० ॥ गुण लक्षणवतारे, सोहता दतारे, वरसेहो साठे विराजतारे ॥ मदशु भति वहेतारे, काइ समज न लहेतारे, जलहरे जेम गाजतारे ॥ ११ ॥ उचा अति चढीयारे, पर्वतशु अभीयारे, जुडीयाहो हेम जजीरसुरे ॥ ढलकती ढालेरे, मलपता चालेरे, हालेहो आप सरिरसुरे ॥ १२ ॥ घोडा हणहणतारे, ते सघला बणतारे, खणताहो धरती खुरताळशुरे ॥ लबोदर रुडारे, चालता नही कुडारे, सुडाहो वरण विलासशुरे ॥ १३ ॥ रथ राजे वारुरे, चालता चारुरे, सारुहो तुरगम जोतरेरे ॥ शस्त्रासु भरीयारे, रण भा

लमे, आप जणावण हेत हो ॥ कु० ॥ आगुणसागर सु रिजी, मदन कियो संकेत हो ॥ कु० ॥ जा० ॥२४॥

दुहा ॥ गाती फरसे केइ नड, केइ अधर डसंत ॥ केइ हाथ पछाडता, जाणे पाडे तंत ॥ १ ॥ कपावे काया घणी, क्रोध तणे वश जोय ॥ अध हुवा आगे धसे, समझ पडे नहीं कोय ॥ २ ॥ थंन उखाली ना खता, मोडता निज अंग ॥ सुन्नट वहे उतावला, देखवा रण रंग ॥ ३ ॥

ढाल ९६ मी ॥ कागल लिखी दीधोरे ॥ ए देशी ॥ रण रंगे रातारे, नड मोटा मातारे, खाताहो अमल अलवेसुरुरे ॥ रणनेरी दिधीरे, काइ ढील न किधीरे, लीधोहो नेम ए सुंदरुरे ॥ १ ॥ कारिज अणसरीयारे, नोजन परहरीयारे, कारिज जल पियारे ॥ बगतरने अंगेरे, शिर टोप शुचंगेरे, चगाहो खन्ग हाथे लीयारे ॥ २ ॥ वरछा झलहलतारे, खाडा खल खल तारे, ढालताहो नेजा अति नलारे ॥ तीरासु तिरकसिरे, नरी लीधा करकसिरे, बरकसहो राखी राखण कलारे ॥ ३ ॥ हाथा कोडारे, काठा परचडारे, दडाहो वज्र गदा ग्रहीरे ॥ जम दडस्यु जोइरे, बतीसे होइरे, साहेहो साधन जस नणीरे ॥ ॥ ४ ॥ तुटता कसणारे, सूरा तणा रसणारे, ग्रसणाहो परदल बल बहुरे ॥ घोमाने हाथीरे, सदन सहु साथीरे, आरुढहो हुआ ते नड सहुरे ॥ ५ ॥ तव

बोले मातारे, सानल सुत वातारे, विग्नीहो माय क
ही वाड जेरे ॥ त्रीय नाखे कतारे, मोभे गज दतारे,
सूरनोहो नाम लही वाडजेरे ॥ ६ ॥ कुसमकी सेजोरे,
सोवत सहेजोरे, विंटीएहो दुहवीयो तु घणोरे ॥ सहे
णाठे सेलोरे, खाडासु खेलोरे, खेल खरो असोहा
मणोरे ॥ ७ ॥ मुझ लोचन तीरोरे, लागत अधीरोरे,
कीमहो खमसे मालाकी अणीरे ॥ मुझ हाक न हमीयो
रे, तु पाए पडीयोरे, कीम सहस्ये दल कारणीरे ॥८॥
नीडतो नगोरोरे, ए मोटो टोरोरे, मोरोहो मरण वि
च्यारजेरे ॥ सखीयामें वासोरे, न सहाय हासोरे ॥
स्वामीनो काम समारीजेरे ॥ ९ ॥ रायागण आयारे,
शोनत सवायारे, पायाहो सुजस प्रगट पणेरे ॥ कोइ
छत्र धरावेरे, कोइ चामर ढोलावेरे, नावेहो चित्त रा
जा तणेरे ॥ १० ॥ गुण लक्षणवतारे, सोहता दतारे,
वरसेहो साठे विराजतारे ॥ मदशु अति वहेतारे, का
इ समज न लहेतारे, जलहरे जेम गाजतारे ॥ ११ ॥
ऊचा अति चढीयारे, पर्वतशु अभीयारे, जुडीयाहो
हेम जजीरसुरे ॥ ढलकती ढालेरे, मलपता चालेरे, हा
लेहो आप सरिर सुरे ॥ १२ ॥ घोमा हणहणतारे, ते
सघला बणतारे, खणताहो धरती खुरतालशुरे ॥ ल
बोदर रुडारे, चालता नही कुमारे, सुमाहो वरण वि
लासशुरे ॥ १३ ॥ रथ राजे वारुरे, चालता चारुरे,
सारुहो तुरगम जोतरेरे ॥ शस्त्रासु नरीयारे, रण भ्मा

गे धयारीरे, पायाहो धरणीने खोतरेरे ॥१४॥ नर पाय क पालारे, हुशीयार हठालारे, आगेहो होइने हालणा रे ॥ दिसे ऊलहलतारे, रांसे कल कल तारे, वलता हो पूठे नवालणारे ॥ १५ ॥ रणभूमी आयारे, यदु पती रायारे, माल्याहो लोग लडावणीरे ॥ माता मु नी सगेरे, मेली मनरगेरे, रगेहो जग उमावणीरे ॥ ॥ १६ ॥ हरी साथ सरीखोरे, ए सयल परीखोरे, कि धाहो विविध प्रकारशुरे ॥ नर हयवर हाथीरे, सा थाशु साथीरे, झुझेहो धर्म विच्यारशुरे ॥ १७ ॥ नल ढोल ददामारे, काहला अभीरामारे. नाद नीरुपम जु जुउरे ॥ झुझाउ वाजेरे, सरणाइ साजेरे, रागहो जमी री सिंधुउरे ॥१८॥ गोखे चढीया गोरीरे, देखे चित चो रीरे, आगे हो सोहे मारो नाहलोरे ॥ कुलदेवी मनावेरे, प्रीउडो जस पावेरे, आज हो एह उमाहलोरे ॥१९॥ सूरा अति झूझेरे, नर कायर धूजेरे, दीन वचन मुखे जपतारे ॥ जोवे देव तमासोरे, आकाशे वासोरे, वासगीहो थर हर कपतारे ॥२०॥ अतिशे हा आडवरेरे आच्छाद्यो अबरेरे, हाथहो हाथ सुझे नहिरे ॥ नहि वैरविरोधारे, हासा क्रत क्रोधारे, मदन विनोदाहो जाणे सहिरे ॥२१॥ भरू सहु भागेरे, हरी दलने आगेरे, काम करे उठा वणीरे ॥ दल देखी खीसतारे, धाया धसमसतारे, हल धर पाडवपर भणीरे ॥ २२ ॥ ते चोपे चढीयारे, अति गाढा लढीयारे, नमीया हो मदन माया करीरे ॥ हरी

आपण आयोरे, सब जोर दिखायेरे, कांइ न चाले चिना खरीरे ॥ २३ ॥ पग आघा ठावेरे, हरी साइमो आवेरे, पावे हो मुख हरी देखवेरे ॥ हरी लोयण द क्षणरे, वर वाह सुलक्षणरे, फूरके हो ते नर पेखवेरे ॥ २४ ॥ हरी नाखे नाइरे, ते रीस लगाइरे, तोहि तु झ साथे नेह जोरे ॥ हसी बोले नीकोरे, जायो हरी जी कोरे, कुण समो नेहनो नलोरे ॥ २५ ॥ को जोर न चालेरे, का नाख न घालेरे, आपी हो त्रियारुपी नी खडीरे ॥ एह वचने कोप्योरे, अति गाढो रोप्योरे, ना ख हो त्रोडी जिम चिचमीरे ॥ २६ ॥ जेहनो बल आ पोरे, ते ठेयो चापोरे, ए वलि नाम महा वलिरे ॥ घर वेगा जाउरे हरी सुखीया थाउरे नारी हुइ न हुइ नलिरे ॥ २७ ॥ अगुठाथी लागीरे. जाइ माथे ना गीरे. रोमे हो रोम साली घणीरे ॥ तव कोडी उपा यारे किधा हरी रायारे एक न लागो नदन नणीरे ॥२८॥ शस्त्रास्त्र वळ नागोरे हरी बाथा लागोरे काल रुपी हो थयो कान्हडोरे ॥ माताजी देखेरे चिंत्या सु विशेपेरे मतरे दमे माहारो नान्हडोरे ॥ २९ ॥ बेसे मुझ आडारे ए दोइ पवाडारे हाणी होवे घर मा हरेरे ॥ ऋपिरोप विचालेरे, जइ किजे टालोरे, हाथे हो वात वे ताहरेरे ॥३०॥ ऋपि विच करावेरे, ऋपी रोश हरावेरे, कृष्ण करो किस्यु नदसुरे ॥ नदन स मगायोरे, धसी सामो आयोरे, लाग्यो हो पाय आ

णदसुरे ॥ ३१ ॥ आलिंगी लीधोरे, जाणे अमृत पिधोरे, कीधा हो विविध वधामणारे ॥ हरी हरख न मावेरे. सुत दर्शण सुहावेरे, पावे हो आनद अति घणोरे ॥ ३२ ॥ ए ढाल प्रसीद्धिरे, पट नव्वदमी कीधीरे, कीधी हो आप गणावणिरे ॥ कहे गुणसागररे, हरी नद उजागररे. नागर नवल लीला घणीरे ॥ ३३ ॥

दुहा ॥ काम कुमर मिलवे करी ए अधविच विचाल ॥ हर्ष अने विखवाद अति हरी पाम्यो समकाल ॥ १ ॥ नद मिल्यो आनदमे ए हरी हरख अपार ॥ वधव नट धरणी पड्या ए विखवाद अपार ॥ २ ॥ सकेलि माया सहु जे जिम था तिम कीध ॥ जय जय कार जगतमें मदन महा जल लीध ॥ ३॥ मार मार कर उठिया सरघु कहे नृप स्वाम ॥ एकले पुत्र हमारडे. सकल किया गत माम ॥ ४ ॥ माता ऐसा पूत जणे जैसा काम कुमार ॥ जिहा जोउ तिहां तेहवो, आप जणावण हार ॥ ५ ॥

ढाल ९७ मी ॥ सुधारस मुरली बाजे ॥ ए देशी ॥ आप जणायो जगतमेजी, श्री श्री काम कुमार ॥ यादव पाण्डव नोजगारे, मारयो मान अपार ॥१॥ पुत्र पधारीयो, हरख्यो कृष्ण नरेश ॥ हरखी मा सुविशेष हरख्या लोक अशेष ॥ पु० ॥ ए आकणी ॥ उदधी विजय आदे करीरे, प्रणम्या दशेहि दसार ॥ आलिंगी

हियडे धरेरे, श्री बलभद्र उदार ॥ पु० ॥ २ ॥ राजा अरजुन भीमसुरे, मिलवानो अधीकार ॥ राजा रा णा प्रणम्यारे, पगे लाग्यो परीवाररे ॥ पु० ॥ ३ ॥ भानु कुमर नासी गयोरे, माता भामा पास ॥ वात जणावी विस्तरीरे, भामा हुइ उदासरे ॥ पु० ॥ ४ ॥ भोली भामा भामनीरे, आरतिवति होय ॥ जे किर तार वश कियारे, तिणसु जोर न कोय ॥ पु० ॥ ५ ॥ गगन थकि उतारीयोरे, विद्या रुपे विमान ॥ कुमरी राखी भलवेरे, चकीत हुवा राजान ॥ पु० ॥ ६ ॥ रुख मणी प्रभु पगे लागतारे, हरी हासो न समात ॥ कि उ न जणावीयो मुझ भणीरे, सुत आगमनी वात ॥ ॥ पु० ॥ ७ ॥ हरी निरखे मुख रुखमणीरे, रुखमणी हरी मुख जोय ॥ हरी रुखमणी मुख पुत्रनोरे, पुत्र पिता मा जोय ॥ पु० ॥ ८ ॥ अमृत वरसे लोयणारे, परम महा सुख होइ ॥ ते सुख ज्ञानी वाहीरोरे, अ वर न जाणे कोइ ॥ पु० ॥ ९ ॥ भामा छे वडभाग णीरे कहातिथी अभीवार ॥ अब भाग केहनो व मोरे, कुण वडी ससार ॥ पु० ॥ १० ॥ मे पिण वाल पणा थकीरे, काम किया अभीराम ॥ मुजहीसु मं च्या भणीरे, अधीको कुमर काम ॥ पु० ॥ ११ ॥ नगरीनी शोभा घणीरे, कचरो काढेरे दूर ॥ फूल वि खेरे सेरभीरे, अग्र देवे आति भूर ॥ पु० ॥ १२ ॥ वाजा विवीध प्रकारनारे, गुहिरगडे निशान ॥ नादे

अवर गानीयेरे, नाचे पात्र सुजाण ॥ पु० ॥ १३ ॥ घर घर गुडी उछलीरे, घर घर मगल च्यार ॥ वग घर होवे वधामणारे, घर घर उछव सार ॥ पु० ॥ ॥१४॥ पुत्र पिता हत्ती चढीरे, रुखमणी ढोले लार ॥ दस दसारने हलधररे, लोकाको नही पार ॥ पु० ॥ ॥ १५ ॥ गोखे वेठी गोरमीरे, वहुली दे आशीस ॥ मात पितानी पूरज्योरे, आशा अधीक जगीस ॥ ॥ पु० ॥ १६ ॥ धन तु माता रुखमणीरे, थारे एहो पुत्त ॥ घणा किस्यु करे जाइयारे, कारण कोमीक सुत ॥ पु० ॥ १७ ॥ साजनलता मारग चिपेरे, विविध प्रकारे बोल ॥ आया रुखमणी मदिररे, वाग्या जगी ढोल ॥ पु० ॥ १८ ॥ मदन महोछव किजतारे, हरखे सघला लोक ॥ नामाने भानु तणोरे, चितडो थाय सशोक ॥ पु० ॥ १९ ॥ हरी हलधर निज नंदशुरे, अवर अनेरा राय ॥ रुखमणी घेरे आरोगीयारे, दिन केता इम थाय ॥ पु० ॥ २० ॥ दुर्योधन नृप आवीयोरे, हरीसु करे पुकार ॥ मुझ पुत्री वहु तुह्म तणीरे, किउ न करो प्रभु सार ॥ पु० ॥२१ ॥ हरी चित चिंता आकरीरे, जाणी मदन जेवार ॥ कुमरी आणी आपतारे, हरी हरषत तेवार ॥ पु० ॥ २२ ॥ दुर्योधनने हरी कहेरे, परणो एही कुमार ॥ पुत्री सरखी माहरेरे, लघु भ्रातानी नार ॥ पु० ॥ २३ ॥ साजन मेलानी चलीरे, सत्याणुमीरे ढाल ॥ श्री

गुणसागरजी कहेरे, नमीए पुण्य त्रिकाल ॥ पु० ॥ २४॥

चौपइ ॥ खरु खड वाणीछे नवनवी सुणता मि
ठी साकर जेवी ॥ श्रीहरीवश चरित्र जयजयो, चो
थो खड ए पूरण थयो ॥ १ ॥ इति ढालसागर प्र
बंधे हरीवश विस्तारनामा चतुर्थोऽधिकार समाप्त ॥

॥ श्री हरीवश वर्णन ढालसागर पचमो खड प्रारम्भ ॥

दुहा ॥ आचारज इद्रि दमे, आचारज ब्रह्मचारि
॥ आचारज आपे करे, क्रोधादीक परीहार ॥ १ ॥ आ
चार्य व्रत आचरे, आचार्य आचार ॥ सुमती गुप्ती
व्रत पालता, आचार्य गुणसार ॥ २ ॥ आचार्य आ
राध्यता, आपे वाणी विलास ॥ अव पचम अधीका
रनो, पभणु पुण्य प्रकाश ॥ ३ ॥ कृष्ण कहे सची
वा प्रत्ये, मदन कुमरको व्याह ॥ माड्यो आम्बर घं
णे, कगी घणो उछाह ॥ ४ ॥ खेचरपतीने खेचरी,
बोलाव्यो तेहीवार ॥ साथ घणी कन्या तणे, रतीने
लीधी लार ॥ ५ ॥ आया नगरी द्वारीका, हरी वल अ
ने कुमार ॥ साहमा जाइ साचवे, विनय तणो आ
चार ॥ ६ ॥ रुखमणी खेचरणी मिली, माहोमाही आ
नद ॥ वहीनी प्रसाद तुमारडे, ए मुऊ घर आणद
॥ ७ ॥ भूचरणीने खेचरी, देव कुमरी अवतार ॥ स
रखी वए पचासवर, कन्या मेली उदार ॥ ८ ॥ सगा

अवर गानीयोरे, नाचे पात्र सुजाण ॥ पु० ॥ १३ ॥ घर घर गुडी उछलीरे, घर घर मगळ च्यार ॥ वर घर होवे वधामणारे, घर घर उछव सार ॥ पु० ॥ ॥१४॥ पुत्र पिता हत्ती चडीरे, रुखमणी डोले लार ॥ दस दसारने हलधरुरे, लोकाको नही पार ॥ पु० ॥ ॥ १५ ॥ गोखे बेठी गोरमीरे, वहुली दे आशीस ॥ मात पितानी पूरज्योरे, आशा अधीक जगीस ॥ ॥ पु० ॥१६॥ धन तु माता रुखमणीरे, थारे एहो पुत्त ॥ घणा किस्यु करे जाइयारे, कारण कोमीक रुत ॥ पु० ॥ १७ ॥ सान्नलता मारग विपेरे, निविध प्रकारे बोल ॥ आया रुखमणी मदिरेरे, वाग्या जगी ढोल ॥ पु० ॥ १८ ॥ मदन महोछव किजतारे, हरखे सघला लोक ॥ नामाने भानु तणोरे, चितडो थाय सशोक ॥ पु० ॥ १९ ॥ हरी हलधर निज नदशुरे, अवर अनेरा राय ॥ रुखमणी घरे आरोगीयारे, दिन केता इम थाय ॥ पु० ॥ २० ॥ दुर्योधन नृप आवीयेरे, हरीसु करे पुकार ॥ मुझ पुत्री वहु तुझ तणीरे, किउ न करो प्रभु सार ॥ पु० ॥२१ ॥ हरी चित चिंता आकरीरे, जाणी मदन जेवार ॥ कुमरी आणी आपतारे, हरी हरषत तेवार ॥ पु० ॥ २२ ॥ दुर्योधनने हरी कहेरे, परणो एही कुमार ॥ पुत्री सरखी माहरेरे, लघु भ्रातानी नार ॥ पु० ॥ २३ ॥ साजन मेलानी चलीरे, सत्याणुमीरे ढाल ॥ श्री

गुणसागरजी कहेरे, नमीए पुण्य त्रिकाल ॥ पु० ॥ २४॥ चौपइ ॥ खम्ड खड वाणीछे नवनवी सुणता मिठी साकर जेवी ॥ श्रीहरीवश चरित्र जयजयो, चोथो खड ए पूरण थयो ॥ १ ॥ इति ढालसागर प्रबधे हरीवश विस्तारनामा चतुर्थोऽधिकार समाप्त ॥

॥ श्री हरीवश वर्णन ढालसागर पचमो खड प्रारभ ॥

दुहा ॥ आचारज इद्रि दमे, आचारज ब्रह्मचारि ॥ आचारज आपे करे, क्रोधादीक परीहार ॥ १ ॥ आचार्य व्रत आचरे, आचार्य आचार ॥ सुमती गुप्ती व्रत पालता, आचार्य गुणसार ॥ २ ॥ आचार्य आराधता, आपे वाणी विलास ॥ अब पचम अधीकारनो, पभणु पुण्य प्रकाश ॥ ३ ॥ कृष्ण कहे सचीवा प्रत्ये, मदन कुमरको व्याह ॥ माड्यो आरुवर घणे, करी घणो उछाह ॥ ४ ॥ खेचरपतीने खेचरी, बोलाव्यो तेहीवार ॥ साथ घणी कन्या तणे, रतीने लीधी लार ॥ ५ ॥ आया नगरी द्वारीका, हरी वल अने कुमार ॥ साहमा जाइ साचवे, विनय तणो आचार ॥ ६ ॥ रुखमणी खेचरणी मिली, माहोमाही आनद ॥ वहीनी प्रसाद तुमारके, ए मुझ घर आणंद ॥ ७ ॥ भूचरणीने खेचरी, देव कुमरी अवतार ॥ सरखी वए पचासवर, कन्या मेली उदार ॥ ८ ॥ सगा

सणीजा सामटा, वहीन भुया भाणेज ॥ विटी भीली या एकठा, सहु परीवार सहेज ॥ ९ ॥

ढाल ९८ मी ॥ सेहेरानी देशी ॥ गुथी माल णी भलो सेहरो, रचना रची साररे ॥ काम कुंवर शिर सोहतो, सोहे शोभ अपार हो ॥ गु० ॥ १ ॥ पाच पिरोजा हिराना, मुक्ताफल वर ढालरे ॥ माणीक चूनी लसणीया, भला रतन रसालरे ॥ गु० ॥ २ ॥ विविध प्रकारे कारीगरी, करी खाती अनेकरे ॥ देखण आवे देवता. मन आणी विवेकरे ॥ गु० ॥ ३ ॥ मोहन मस्तक उपता काने कुन्डल दोइरे ॥ चंदने सूर्य एकठा, मिलिया तिहा जोइरे ॥ गु० ॥४॥ नखशिख लगी वणता जीके, भला भूषण होइरे ॥ पेहेरया परम पावन पणे, सोहे इद्र सम सोइरे ॥ गु० ॥ ५ ॥ पच स्वर शब्द सुहामणा, वाजता निशाणरे ॥ नाचे पात्र मन भावती, दिजे वछित दानरे ॥ गु० ॥ ६ ॥ गयवर शिर सिंदुरनो, घणो किधलो पूररे ॥ हयवर सार समारिया, चाले दधीहि लूररे ॥ गु० ॥ ७ ॥ साजन मिल्या सामटा, मिली सामटी बालरे ॥ धवल मगल घणा गावती, त्रिय झाक झमालरे ॥ गु० ॥ ८ ॥ कुमर घोडे चढयो मोटके, आया बाग मझाररे ॥ काल सबर हरी उछव, करे विविध प्रकाररे ॥ गु० ॥९॥ खेचरणी खरी खातिसु, गावे नवनवा घोलरे ॥ भूचरणी भरमावबा, करे अति घणा टोलरे ॥ गु० ॥

॥ १० ॥ पहिलि परणी रति रंगसु, पछी पचासने ठाठरे ॥ एक लग्ने तव व्याहनो, नणे ब्राह्मण पाठरे ॥ गु० ॥ ११ ॥ परणी पधारीया मंदीरे, पोहोती मन तणी कोम्नरे ॥ इद्र इद्राणी सारखी, मिली काम रति जोडरे ॥ गु० ॥ १२ ॥ खेचर खेचरणी गया, तव आपणे ठामरे ॥ पुण्य तणा फल नोगवे, नली ना मनी पामेरे ॥ गु० ॥ १३ ॥ उदधी कुमरी आदे क री, नृप कुमरीशु विलासरे ॥ नानु कुमर परणावि यो, पुगी मायनि आशरे ॥ गु० ॥ १४ ॥ काम किर ती अती विस्तरी, घर घर वार वजाररे ॥ देश पुर नगरां घणु, जग माहे जयकाररे ॥ गु० ॥ १५ ॥ व दन विराजत नाराति, करी लछिनो वेसरे ॥ अमरख आणीने किरती, लियो आपे परदेशरे ॥ गु० ॥१६॥ कमालि रमलि करे रगसु, नोगी नमरलो जेमरे ॥ नागर नवल रस रामती, रमे रातदिन तेमरे ॥ गु० ॥१७॥ ए अठ्याणुमी ढालमे, हुवो कुमर परणेतरे ॥ श्री गुणसागर सूरिजी, रुखमणी सुख हेतरे ॥ गु० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ श्री कुवर वर सावनो, चरित्र सुणो नवि लोय ॥ चरम शरिरी आतमा, नाम लिया सुख होय ॥ १ ॥ पूर्व नवतरनो नलो, नाई काम कुमार ॥ आवी मिले किम एकठो, प्रिति तणो व्यवहार ॥ २ ॥

ढाल ९९ मी ॥ केशर वरणो हो काढ कसुंवो मो रा लाल ॥ ए देशी ॥ केटल जीवजे हो, सुख वहु

नामाराणी हो अन्य ते पायो ॥ मा० ॥ १५ ॥ शु
भ तीथी वारे हो कुमर जायो ॥ मा० ॥ जम्बुवतीने हो
हरख सवायो ॥ मा० ॥ रुपे दिपे हो भोगपुरंदर ॥
॥ मा० ॥ लक्षणे शोभे हो सर्व सुहकर ॥ मा० ॥
॥ १६ ॥ तिणही वेला हो तिणही गामे ॥ मा० ॥
सारथीने घरे हो पदम नामे ॥ मा० ॥ मन्त्रिनी नारी
हो तेणे पिण जायो ॥ मा० ॥ बुद्धिसेन, नामे हो सु
त सुहायो ॥ मा० ॥ १७ ॥ सेनापती, हरीनो हो त
सघर पुतर ॥ मा० ॥ जनम्यो जयसेन हो नामे उ
तर ॥ मा० ॥ ए च्यारे कुमर हो निका, कहीए ॥ मा०
॥ एक समाना हो जनम्या लही ए ॥ मा० ॥ १८ ॥
वधाउ आवे हो हरीने आगे ॥ मा० ॥ दानज आ
पे हो तेहने रागे ॥ मा० ॥ घर घर मंगल हो सो
हव गावे ॥ मा० ॥ साव कुमरजी हो, नाम सुहावे ॥
॥ मा० ॥ १९ ॥ भामा जायो हो कुमर, भीरु ॥ मा०
॥ नामे सुभानु हो अधिक अधीरु ॥ मा० ॥ दोइ
घर थावे हो महोछव हेज्जे ॥ मा० ॥ दिन दिन चंद
ज्यु हो चडता तेजे ॥ मा० ॥ २० ॥ साव सुभानु
हो जनम वखाण्या ॥ मा० ॥ भाइ भाइसु हो प्रेम
प्रमाण्या ॥ मा० ॥ कहे गुणसागर हो श्रोता सुणजो
॥ मा० ॥ ढाल नवाणुमी हो वचने थुणजो ॥ मा० ॥ २१ ॥
दुहा ॥ रुप कला गुण आगला, चंद वर्ण शुभ
नयन ॥ कुमर दोइ देखता, लोक लहे अति चयन ॥

॥ १ ॥ यादव नारी कर कमल, कुंवर जमर सुजाण ॥ केलि करे मन जावती, प्यारा प्राण समान ॥ २ ॥ वारु वसन विराजता, वारु जूषण धार ॥ वारु चाल मरालनी, वारु सुख दातार ॥३॥ साब पढायो रतिपति, तिमहि जानु सुजानु ॥ परम मनोहर गुण नीला, लाल न लीला थानु ॥ ४ ॥

ढाल १०० मी ॥ पाचमी वाडे परमेसरु, वखाणी वारु ॥ ए देशी ॥ लालन लीला थान बोले आढे व चन ॥ माननी मन मोहवा, मोहनी तो अयन ॥ १ ॥ हमारे लालना, लिलावत कुमार ॥ जावुवति जागा जणे, प्यारे प्राण आधार ॥ २ ॥ खेलता अती खात सु, मित्राके परीवार ॥ परखदा माहि आविया, करण तात जुहार ॥३॥ साब बेठो काम पे, जानु पे सुजानु ॥ रुपे रजे राजवी, सोहाके निधानु ॥ ४ ॥ जूवे स्याल हो वही, पाडवा वलदेव ॥ कुवर दोय खेलाववा, मां डीया ततखेव ॥ ५ ॥ कोडी कचन हारीयो, ताम सु जानु कुमार ॥ पहीली जीत साबकी, मदन केरे उप कार ॥ ६ ॥ कुकड युद्धे जितीयो, कचन कोडी दोय ॥ ज्याकी पुठे कामठे, जाती क्यु नवी होय ॥ ७ ॥ सु वर्ण सर्व तामही, काम दियो वाटी ॥ जूवा मीठी हा रहे, आपे लुटे आठी ॥ ८ ॥ च्यार कोडी हेमनी, जी तीयो फल हीड ॥ वार नाही देतही, काम दोय को डी ॥ ९ ॥ आठ कोडी वस्तुरे, हारे हारी सोल ॥ ति

नामाराणी हो अन्य ते पायो ॥ मा० ॥ १५ ॥ शु
भ तीथी वारे हो कुमर जायो ॥ मा० ॥ जयवतीने हो
हरख सवायो ॥ मा० ॥ रुपे दिपे हो जोगपुरंदर ॥
॥ मा० ॥ लक्षणे शोभे हो सर्व सुहंकर ॥ मा० ॥
॥ १६ ॥ तिणही वेला हो तिणही गामे ॥ मा० ॥
सारथीने घरे हो पदम नामे ॥ मा० ॥ मंत्रिनी नारी
हो तेणे पिण जायो ॥ मा० ॥ बुद्धिसेन, नामे हो सु
त सुहायो ॥ मा० ॥ १७ ॥ सेनापती, हरीनो हो त
सघर पुतर ॥ मा० ॥ जनम्यो जयसेन हो नामे उ
तर ॥ मा० ॥ ए च्यारे कुमर हो निका, कहीए ॥ मा०
॥ एक समाना हो जनम्या लहीए ॥ मा० ॥ १८ ॥
वधाउ आवे हो हरीने आगे ॥ मा० ॥ दानज आ
पे हो तेहने रागे ॥ मा० ॥ घर घर मंगल हो सो
हव गावे ॥ मा० ॥ साब कुमरजी हो, नाम सुहावे ॥
॥ मा० ॥ १९ ॥ जामा जायो हो कुमर, भीरु ॥ मा०
॥ नामे सुभानु हो अधिक अधीरु ॥ मा० ॥ दोइ
घर थावे हो महोछव हेजे ॥ मा० ॥ दिन दिन चंद
ज्यु हो चडता तेजे ॥ मा० ॥ २० ॥ साब सुभानु
हो जनम वखाण्या ॥ मा० ॥ भाइ भाइसु हो प्रेम
प्रमाण्या ॥ मा० ॥ कहे गुणसागर हो श्रोता सुणजो
॥ मा० ॥ ढाल नवाणुमी हो वचने थुणजो ॥ मा० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ रुप कला गुण आगला, चंद वर्ण शुभ
नयन ॥ कुमर दोइ देखता, लोक लहे अति चयन ॥

॥ १ ॥ यादव नारी कर कमल, कुवर भमर सुजाण ॥ केलि करे मन भावती, प्यारा प्राण समान ॥ २ ॥ चारु वसन विराजता, चारु भूषण धार ॥ चारु चाल मरालनी, चारु सुख दातार ॥३॥ साब पढायो रतिपति, तिमहि भानु सुभानु ॥ परम मनोहर गुण नीला, लाल न लीला थानु ॥ ४ ॥

ढाल १०० मी ॥ पाचमी वाडे परमेसरु, वखाणी चारु ॥ ए देशी ॥ लालन लीला थान बोले आढे व चन ॥ माननी मन मोहवा, मोहनी तो अयन ॥ १ ॥ हमारे लालना, लिलावत कुमार ॥ जावुवति भामा भणे, प्यारे प्राण आधार ॥ २ ॥ खेलंता अती खात सु, मित्राके परीवार ॥ परखदा माहि आविया, करण तात जुहार ॥३॥ साब बेठो काम पे, भानु पे सुभानु ॥ रुपे रजे राजवी, सोहाके निधानं ॥ ४ ॥ जूवे स्याल हो वही, पाडवा वलदेव ॥ कुवर दोय खेलाववा, मां डीया ततखेव ॥ ५ ॥ कोडी कचन हारीयो, ताम सु भानु कुमार ॥ पहीली जीत सांवकी, मदन केरे उप कार ॥ ६ ॥ कुकड युद्धे जितीयो, कचन कोडी दोय ॥ ज्याकी पुठे कामले, जाती क्यु नवी होय ॥ ७ ॥ सु वर्ण सर्व तामही, काम दियो वाटी ॥ जूवा मीठी हा रहे, आपे लुटे आठी ॥ ८ ॥ च्यार कोडी हेमनी, जी तीयो फल हीड ॥ वार नाही देतही, काम दोय को डी ॥ ९ ॥ आठ कोडी वस्तुरे, हारे हारी सोल ॥ ति

जामाराणी हो अन्य ते पायो ॥ मा० ॥ १५ ॥ मु
न तीर्थी वारे हो कुमर जायो ॥ मा० ॥ जम्बुवतीने हो
हरख सवायो ॥ मा० ॥ रुपे दिपे हो जोगपुरंदर ॥
॥ मा० ॥ लक्षणे शोभे हो सर्व सुहकर ॥ मा० ॥
॥ १६ ॥ तिणही वेला हो तिणही गामे ॥ मा० ॥
सारथीने घरे हो पदम नामे ॥ मा० ॥ मत्रिनी नारी
हो तेणे पिण जायो ॥ मा० ॥ बुद्धिसेन, नामे हो सु
त सुहायो ॥ मा० ॥ १७ ॥ सेनापती, हरीनो हो त
सघर पुतर ॥ मा० ॥ जनम्यो जयसेन हो नामे उ
तर ॥ मा० ॥ ए च्यारे कुमर हो निको, कहीए ॥ मा०
॥ एक समाना हो जनम्या लही ए ॥ मा० ॥ १८ ॥
वधाउ आवे हो हरीने आगे ॥ मा० ॥ दानज आ
पे हो तेहने रागे ॥ मा० ॥ घर घर मगल हो सो
हव गावे ॥ मा० ॥ साब कुमरजी हो नाम सुहावे ॥
॥ मा० ॥ १९ ॥ जामा जायो हो कुमर, जीरु ॥ मा०
॥ नामे सुजानु हो अधिक अधीरु ॥ मा० ॥ दोइ
घर थावे हो महोत्सव हेजे ॥ मा० ॥ दिन दिन चद
ज्यु हो चडता तेजे ॥ मा० ॥ २० ॥ साब सुजानु
हो जनम वखाण्या ॥ मा० ॥ जाइ जाइसु हो प्रेम
प्रमाण्या ॥ मा० ॥ कहे गुणसागर हो श्रोता सुणजो
॥ मा० ॥ ढाल नवाणुमी हो वचने थुणजो ॥ मा० ॥ २१ ॥
दुहा ॥ रुप कला गुण आगला, चद वर्ण शुभ
नयन ॥ कुमर दोइ देखता, लोक लहे अति चयन ॥

॥ १ ॥ यादव नारी कर कमल, कुंवर भमर सुजाण ॥ केलि करे मन भावती, प्यारा प्राण समान ॥ २ ॥ चारु वसन विराजता, चारु भूपण धार ॥ चारु चाल मरालनी, चारु सुख दातार ॥३॥ सांब पढायो रतिपति, तिमहि भानु सुभानु ॥ परम मनोहर गुण नीला, लाल न लीला थानु ॥ ४ ॥

ढाल १०० मी ॥ पाचमी वाडे परमेसरु, वखाणी चारु ॥ ए देशी ॥ लालन लीला थान. वोले आढे व चन ॥ माननी मन मोहवा, मोहनी तो अयन ॥ १ ॥ हमारे लालना, लिलावत कुमार ॥ जाबुवति भामा नणे, प्यारे प्राण आधार ॥ २ ॥ खेलंता अती खात सुं, मित्राके परीवार ॥ परखदा माहि आविया, करण तात जुहार ॥३॥ साब बेठो काम पे, भानु पे सुभानु ॥ रुपे रजे राजवी, सोहाके निधानु ॥ ४ ॥ जूवे ख्याल हो वही, पाडवा वलदेव ॥ कुवर दोय खेलाववा, मां डीया ततखेव ॥ ५ ॥ कोडी कचन हारीयो, ताम सु भानु कुमार ॥ पहीली जीत सावकी, मदन केरे उप कार ॥ ६ ॥ कुकड युद्धे जितीयो, कचन कोडी दोय ॥ ज्याकी पुठे कामवे, जाती क्यु नवी होय ॥ ७ ॥ सु वर्ण सर्व तामही, काम दियो वाटी ॥ जूवा मीठी हा रहे, आपे लुटे आठी ॥ ८ ॥ च्यार कोडी हेमनी, जी तीयो फल हीड ॥ वार नाही देतही, काम दोय को डी ॥ ९ ॥ आठ कोडी वस्तुरे, हारे हारी सोल ॥ ति

जामाराणी हो अन्य ते पायो ॥ मा० ॥ १५ ॥ शु
न तीथी वारे हो कुमर जायो ॥ मा० ॥ जबुवतीने हो
हरख सवायो ॥ मा० ॥ रुपे दिपे हो जोगपुरंदर ॥
॥ मा० ॥ लक्षणे शोभे हो सर्व सुहकर ॥ मा० ॥
॥ १६ ॥ तिणही वेला हो तिणही गामे ॥ मा० ॥
सारथीने घरे हो पदम नामे ॥ मा० ॥ मत्रिनी नारी
हो तेणे पिण जायो ॥ मा० ॥ बुद्धिसेन, नामे हो सु
त सुहायो ॥ मा० ॥ १७ ॥ सेनापती, हरीनो हो त
सघर पुतर ॥ मा० ॥ जनम्यो जयसेन हो नामे उ
तर ॥ मा० ॥ ए च्यारे कुमर हो निको, कहीए ॥ मा०
॥ एक समाना हो जनम्या लहीए ॥ मा० ॥ १८ ॥
वधाउ आवे हो हरीने आगे ॥ मा० ॥ दानज आ
पे हो तेहने रागे ॥ मा० ॥ घर घर मगल हो सो
हव गावे ॥ मा० ॥ साव कुमरजी हो नाम सुहावे ॥
॥ मा० ॥ १९ ॥ जामा जायो हो कुमर, जीरु ॥ मा०
॥ नामे सुजानु हो अधिक अधीरु ॥ मा० ॥ दोइ
घर थावे हो महोछव हेजे ॥ मा० ॥ दिन दिन चद
ज्यु हो चडता तेजे ॥ मा० ॥ २० ॥ साव सुजानु
हो जनम वखाणया ॥ मा० ॥ जाइ जाइसु हो प्रेम
प्रमाणया ॥ मा० ॥ कहे गुणसागर हो श्रोता सुणजो,
॥ मा० ॥ ढाल नवाणुमी हो वचने थुणजो ॥ मा० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ रुप कला गुण आगला, चद वर्ण शुभ
नयन ॥ कुमर दोइ देखता, लोक लहे अति चयन ॥

नीतता, तेणे कीयो दोर ॥ माचियो मना घणो, शि ल जगनो सोर ॥ २४ ॥ मदन बधु गुणही सींधु, नंद नद नंद ॥ जव विना कुचाले चाले, मोहनि तो मसद ॥ २५ ॥ एतो सोमी ढालमे, साबको वखाण ॥ सूरि गुणसागरु, पुण्यको प्रमाण ॥ २६ ॥

दुहा ॥ जावुवतीशु हरी कहे, थारो सात्र कुमार ॥ नगरी माहि नारीनो, लोपे सीयल अपार ॥ १ ॥ सा जाषे स्वामी सुणो, माहरो साधु शु लोग ॥ बालक बोली न जाणहि, किस्यो अन्याइ जोग ॥२॥ कटका माहे डाहरो, जट कहावे जेम ॥ काइ करो हरी रायजी, लोगा वाह्या एम ॥ ३ ॥ चारु घणो मुह लागणो, दुवलकह्यो राय ॥ होवे तो घर तेहनो, आटा ठिकर थाय ॥ ४ ॥ पेट गणेसा सारीखो, शकरको सो सोच ॥ किया कुटुबो निर वहे, अवर सकलहि पोच ॥ ५ ॥ कहि सुणी चित नाणिए, जो नवि निरखे नयण ॥ नयणेहि नीरख्या पछे, कहेणा नहि को वेण ॥ ६ ॥ अणजाण्या अण देखीया, कह्यो पर शीर थोक ॥ अणसहता ना शिखव्या, कूठ कहेछे लोक ॥ ७ ॥

ढाल १०१ मी ॥ सियल सलुणि मयणरेहा सतिरे ॥ ए देशी ॥ साम कहे सुण सुदरीरे कूठ कहे नहि लोयरे ॥ पचामे परमेसरुरे, पच करे तिम होयरे ॥ सा० ॥ १ ॥ अगुठाथी घुटियारे घुटीथी तो जानुरे ॥

स दोय कुकुडले, तोही नावे बोल ॥ १० ॥ च्यारसा
ठी कोस्तुभ, कोडी दुणी जोय ॥ अश्ववदे वादही, हे
म हारे सोय ॥ ११ ॥ छपनकोडी दोयसे, युद्द होवे
जोड ॥ लालच लाज लोभवे, लिवरि लीउ वहोर ॥
॥ १२ ॥ वेर न विच्यारी हीए, चहत मान सनमान ॥
मन प्राणशु गमे, होमी करतहे ध्यान ॥ १३ ॥ सांब
कहे मायजी, धरयो डाम्यो आण ॥ फेरीउ सार ना
वही, कवुक जीती जाण ॥ १४ ॥ वित्त चित्त मोकले,
देता शक नाही ॥ सर्व साव सावजी, होइ रह्यो जग
माही ॥ १५ ॥ दान ने दया करे, वालही गोपाळ ॥
देव सेवा साचवे, मानही भूपाल ॥ १६ ॥ मेर एक
जोजन, मेरु जोजन वार ॥ सर्व लोकमे सुणिए, दान
सबल सार ॥ १७ ॥ दान देता शकहि, फिराति सुजस
आश ॥ पुत्र पोधी वावना, वाजीको विलास ॥ १८ ॥
देखी पेखो सुविशेपी, त्याग तेग तास ॥ धर्म नद
हलधरु, पाइया उल्हास ॥ १९ ॥ कृष्ण साथे विन
ति, करत धरता हेत ॥ साबकु निवाजवी, होत क
बुक देत ॥ २० ॥ देव विनती करो, कुमरजी केरे
काज ॥ दायक पायक मोहि स्यो, रिझहि तो राज ॥
॥ २१ ॥ हाथी घोडाकि कवु, नाहिहे प्रवाह ॥ आ
प कुल किज ते, पामे हे उछाह ॥ २२ ॥ मास ए
क राज दियो, हलधरादिक आय ॥ काम भानु कु
मार ए, नमे सकल राय ॥ २३ ॥ निति गडी अ

नीतता, तेणे कीयो दोर ॥ माचियो मना घणो, शील जगनो सोर ॥ २४ ॥ मदन वधु गुणही सींधु, नंद नद नद ॥ जव विना कुचाले चाले, मोहनि तो मसद ॥ २५ ॥ एतो सोमी ढालमे, सावको वखाण ॥ सूरि गुणसागरु, पुण्यको प्रमाण ॥ २६ ॥

दुहा ॥ जावुवतीशु हरी कहे, थारो साव कुमार ॥ नगरी माहि नारीनो, लोपे सीयल अपार ॥ १ ॥ सा जाषे स्वामी सुणो, माहरो साधु शु लोग ॥ बालक बोली न जाणहि, किस्यो अन्याइ जोग ॥२॥ कटका माहे डाहरो, ऊट कहावे जेम ॥ काइ करो हरी रायजी, लोगा वाह्या एम ॥ ३ ॥ चारु घणो मुह लागणो, दुवलकन्नो राय ॥ होवे तो घर तेहनो, आटा ठिकर थाय ॥ ४ ॥ पेट गणेसा सारीखो, शकरको सो सोच ॥ किया कुटुवो सिर वहे, अवर सकलहि पोच ॥ ५ ॥ कहि सुणी चित नाणिए, जो नवि निरखे नयण ॥ नयणेहि नीरख्या पछे, कहेणा नहि को वेण ॥ ६ ॥ अणजाण्या अण देखीया, कह्यो पर शीर थोक ॥ अणसहता ना शिखव्या, ऊठ कहेछे लोक ॥ ७ ॥

ढाल १०१ मी ॥ सियल सलुणि मयणरेहा सतिरे ॥ ए देशी ॥ साम कहे सुण सुदरीरे ऊठ कहे नहि लोयरे ॥ पचामे परमेसरुरे, पच करे तिम होयरे ॥ सा० ॥ १ ॥ अगुठाथी घुटियारे घुटीथी तो जानुरे ॥

जानुथी कटी जइ अडेरे, नाणे कोइ गुमानरे ॥ सा०
॥ २ ॥ केडि थकी हियडे चडिरे, हियडाथी गले जामरे
परम महा दुख आवहीरे, अकुलाइ जन तामरे ॥सा०
॥ ३ ॥ मुलाजा मोटा तणारे, तोहि न तोड्या जातरे
॥ नाके चढ्यो दुख दु समोरे, लोक तदा विल लातरे॥
॥ सा० ॥ ४ ॥ वाड जखे जो काकडीरे, वोलावा लुटत
रे ॥ कुण आगे पूकारीएरे. माता गेरु कुटतरे ॥सा०
॥ ५ ॥ पीहरीयो परजा तणोरे, राजाजीनो नामोरे॥
आप अन्याय जो आचरेरे, केम वसे ते गामोरे ॥
सा० ॥ ६ ॥ प्रभुजी तो जाखी घणीरे, सा ने पति जे
एकरे ॥ वालिक वाला वाउलारे, एक सरीखी टेकरे ॥
सा० ॥ ७ ॥ सुदरीने समजाववारे, साम करे उपायरे
॥ पूरवलि मन साजलिरे, घावक जाणे घायरे ॥ सा०
॥ ८ ॥ जाववति आहिरणीरे, आपण हरी आहिररे ॥
दहि वेचणने आवीयारे, खेले जिहा कुवर धीररे ॥सा०
॥ ९ ॥ सामा वरसा सोलनिरे, सामी वरस सो दाखरे
॥ सामा रुपे रुअडीरे, देखी करे अजीलापरे ॥ सा०
॥१०॥ मास अहारा लपटारे, सरीखो होइ सजावरे ॥
उमासे उ रुपसुरे, राखे चितनो चावरे ॥ सा० ॥ ११ ॥
साव कहे आहिरणीरे, आपण उरहि आवरे ॥ वेचाउ
महि ताहरोरे, अधीको लाज अपाररे ॥ सा० ॥१२॥
कत कहे कुवर सुणोरे आगे कोइ न कामरे ॥ लाजे
धाचा वापजीरे, आज रहे जो मामरे ॥ सा० ॥ १३ ॥

लाते मार्यो तव डोकरोरे, साहि बाला हाथरे ॥ खा चि चाल्यो भितरेरे, प्रगट थयो जग नाथरे ॥ सा० ॥ ॥ १४ ॥ पापी टल्य माता थकिरे, एम कही हरी रा यरे ॥ जांबुवति प्रगट करीरे, भाजी गयो घरी लाजरे ॥ सा० ॥ १५ ॥ हरीणाक्षीसु हरी कहेरे, दिठा सुतनां कामरे ॥ माता मयगल मारणोरे, हरी सामीनी भ्रमी रामरे ॥ सा० ॥ १६ ॥ जे न टले सबधथीरे, अवरां केम टलतरे ॥ अभख भखे जे मानविरे, ते क्यु भख न भखतरे ॥ सा० ॥ १७ ॥ हाथ बुरीने लाकडीरे, बु टी घरतो आपरे ॥ आयो परखदामे चलिरे, पुछे श्रीह री वापरे ॥ सा० ॥ १८ ॥ कुवर एशु किजीएरे, प्रभु ए खुटी थायरे ॥ वात कहेजे कालनीरे, ए तस मुहमे देवायरे ॥ सा० ॥ १९ ॥ रे रे धीठ शिरोमणीरे, रे रे कर्म कुपातरे ॥ करणी कहेणी ताहरीरे, सारखी देखा तरे ॥ सा० ॥ २० ॥ देश निकालो कियोरे, जाजे अ लगो अपाररे ॥ क्रोधे पूर्यो कान्हजी, न करे सोच लिगाररे ॥ सा० ॥ २१ ॥ राजा एहवा चाहीएरे, न्या य धर्म प्रतिपालरे ॥ बेटा उपर वाहणीरे, खेभावे भू पालरे ॥ सा० ॥ २२ ॥ काम कहे सुण तातजीरे, ए मुज वाहलो विररे ॥ कादिए आवे पगे लागवारे, सा हसवत सधीररे ॥ सा० ॥ २३ ॥ केशव कोप वशे क हेरे, भानु कुमरनी मायरे ॥ बेसाडी भल हाथणीरे, लावे तवही अवायरे ॥ सा० ॥ २४ ॥ चम्ते पाणी पे

सवारे, ताम समे अरदासरे ॥ उखध आदी तावनेरे, ए तिनु विपनाशरे ॥ सा० ॥ २५ ॥ विडोही तत्र पा ननोरे, लेइ चाल्यो सोइरे ॥ अति ताण्यो त्रुटे महीरे, अति मथ्यो विख होइरे ॥ सा० ॥ २६ ॥ पग प्रणमी जणणी तणारे, नामा वनमा जायरे ॥ विद्याने वले वा हलोरे, कन्या रुप करायरे ॥ सा० ॥ २७ ॥ वारु वेश विराजतिरे, जोबनवंति नाररे ॥ रुप कला गुण आग लिरे, दिसती झाक झमालरे ॥ सा० ॥ २८ ॥ एकोत र सोमी ढालमेरे, साव कुवरशु रोसरे ॥ श्री गुणसा गर सूरिजीरे, उसन नरि ए कासरे ॥ सा० ॥ २९ ॥

दुहा ॥ नामा आवी वागमे, देखी कन्या रुप ॥ मोही मनमे माननी, पूछे सकल सरुप ॥ १ ॥ ए वन माहे एकली, काइ फिरे सुकुमाल ॥ देखाती सुदर म हा, वलतो उत्तर वाळ ॥ २ ॥

ढाल १०२ मी ॥ हरीयामन लागो ॥ ए देशी ॥ नामा ठग लागो, ठग लागो ठगवा नणी ॥ तोहि नरम न नागोहो ॥ ना० ॥ १ ॥ साधु केवल वाटडी, ठगने वाट पचास हो ॥ ना० ॥ उ रोकावे शेरडी, उफा हे आकाश हो ॥ ना० ॥ २ ॥ उघाडो तनु साधुनो, ठग मुलतानी तीर हो ॥ ना० ॥ जालवी सकीए केट ला, नाखे विंधी शरीर हो ॥ ना० ॥ ३ ॥ ठगउ दे हि आकरी, साधु कहावे काठ हो ॥ ना० ॥ माही र ही फोले घणु, ए जग प्रगट्यो पाठ हो ॥ ना० ॥४॥

विछुनो विष पुछडे, अहि विष दाढे जोय हो ॥ ना० ॥ ठगनो विष हियमे वसे, चतुर विचारो कोइहो ॥ना० ॥ ५ ॥ ठग मुखे मीठा सही, माहि अधीक कठोर हो ॥ ना० ।। पण्डितजननो पारीखो, जेहवो पाको बोर हो ॥ना० ॥ ६ ॥ कोटी प्रकारे ठग तणी, न मीटे सहज सभाव हो ॥ना०॥ आत्रा जावु उपरे, राता माहि कसाव हो ॥ना०॥७॥ कुमरी भणे भामा भणी, वारु वचन विशाल हो ॥ना०॥ हु पुत्री राजा तणी, वाधी जइ मोसाल हो ॥ ना० ॥ ८ ॥ व्याह जोग जाणी करी, बाप हमारो आय हो ॥ ना० ॥ बेसारी सुखपालमे, लेइ चाल्या माय हो ॥ ना० ॥ ९ ॥ आवी वस्यो एवागमे, सुता सघला लोक हो ॥ ना० ॥ मुझने नावे निंदडी, मामी तणो वियोग हो ॥ ना० ॥ १० ॥ हु तव हेठी उतरी, दुर रह्यो सुखपाल हो ॥ ना० ॥ प्रोहर पाछे सोवती, छोडी गयो भूपाल हो ॥ ना०॥११॥ जागी जोयु दहदिसे, चाली गयो ते साथ हो ॥ ना० ॥ युथ भ्रष्ट जिम हरणली, फिरती फिरु अनाथ हो ॥ ना० ॥ १२ ॥ जो तु पुत्र सुजानसु, पुत्री वछे व्याह हो ॥ ना० ॥ घर पधरावजे माहरे, आणी अति उगाह हो ॥ ना० ॥ १३ ॥ सा भाखे सुण स्वामीनी, उखाणो जगमाहीहो ॥ ना० ॥ मुराभा मिठा नहीं, लापशीयाथी प्राही हो ॥ ना० ॥ १४ ॥ हरी सुत जायो ताहरो, थाए मुझ भरथार हो ॥ ना० ॥ तो तो

सवारे, ताम समे अरदासरे ॥ उलध आवी तावनेरे, ए तिनु विपनाशरे ॥ सा० ॥ २५ ॥ विटोही तव पा ननोरे, लेइ चाल्यो सोइरे ॥ अति ताण्यो त्रुटे महीरे, अति मथ्यो विख होइरे ॥ सा० ॥ २६ ॥ पग प्रणमी जणणी तणारे, नामा वनमा जायरे ॥ विद्याने बले वा हलोरे, कन्या रुप करायरे ॥ सा० ॥ २७ ॥ वारु वेश विराजतिरे, जोवनवति नाररे ॥ रुप कला गुण आग लिरे, दिसती झाक झमालरे ॥ सा० ॥ २८ ॥ एकोत र सोमी ढालमेरे, साव कुवरशु रोसरे ॥ श्री गुणसा गर सूरिजीरे, उसन नरि ए कोसरे ॥ सा० ॥ २९ ॥

दुहा ॥ नामा आवी वागमे, देखी कन्या रुप ॥ मोही मनमे माननी, पूछे सकल सरुप ॥ १ ॥ ए वन माहे एकली, काइ फिरे सुकुमाल ॥ देखाती सुदर म हा, वलतो उत्तर वाळ ॥ २ ॥

ढाल १०२ मी ॥ हरीयामन लागो ॥ ए देशी ॥ नामा ठग लागो, ठग लागो ठगवा नणी ॥ तोहि नरम न नागोहो ॥ ना० ॥ १ ॥ साधु केवल वाटडी, ठगने वाट पचास हो ॥ ना० ॥ उ रोकावे शेरडी, उफा डे आकाश हो ॥ ना० ॥ २ ॥ उथाडो तनु साधुनो, ठग मुलतानी तीर हो ॥ ना० ॥ जालवी सकीए केट ला, नाखे विंधी शरीर हो ॥ ना० ॥ ३ ॥ ठगउ दे हि आकरी, साधु कहावे काठ हो ॥ ना० ॥ माही र ही फोले घणु, ए जग प्रगट्यो पाठ हो ॥ ना० ॥४॥

ढाल १०३ मी ॥ कंत तमाकु परिहरो, ए देशी ॥
कुमर सुजानु जाणीए, खेलण काज वसत ॥ मोरा ला
ल ॥ साथे मित्र मनोहरु, वनमे जाइ रमत ॥ मो० ॥
॥ १ ॥ कुमर सुजानु जाणीए ॥ ए आंकणी ॥ हिंडो
ळे अति हिंचती, गाती गीत सुचग ॥ मो० ॥ नारी
नीरोपम निरखता, उपज्यो अंग अनग ॥ मो० ॥
॥ कु० ॥ २ ॥ भुह कमाने सधीया, तिखा लोचन
बाण ॥ मो० ॥ नारी आहिडे नीकली, नाखे विंधी प्रा
ण ॥ मो० ॥ कु० ॥ ३ ॥ महियलरुपे माडीयो, मोहनी
मोटो फद ॥ मो० ॥ कामी मृग आवी पडे, थाई गति
मतिमद ॥ मो० ॥ कु० ॥ ४ ॥ दाढ गलावे आवली, ला
ख गलावे आग ॥ मो० ॥ शिल गलावे सुदरी, रागी
राचे राग ॥ मो० ॥ कु० ॥ ५ ॥ मुरछाणो धरणी प
ड्यो, मत्री करी उपचार ॥ मो० ॥ उठाड घर आणी
यो, माता ते जाणी विच्यार ॥ मो० ॥ कु० ॥ ६ ॥
कन्या मेळी निनाणु ए, सामी ए धुर आण ॥ मो० ॥
भामा कुमर सुजानुनो, व्याह तणी विधी ठाण ॥
॥ मो० ॥ कु० ॥ ७ ॥ भाखे कुमरी मूलगी, भामासु आण
द ॥ मो० ॥ करशु कर कर उपरे, तो वरशु तुज नद ॥ मो०
॥ कु० ॥ ८ ॥ बाळा वात विशेपथी, भाखे भामा सा
थ ॥ मो० ॥ मूऊ परण्ये परणी सहु, परणेवि नहीना
थ ॥ मो० ॥ कु० ॥ ९ ॥ भामा मान्या बोलमा, स्यो
वहुलो विस्तार ॥ मो० ॥ नारी रुही पग पानही, पुरुष

तुठो जाणीए, आपणवे फिरतार हो ॥ ना० ॥ १५ ॥ वरण विचारयो दूधनो, सचलो धोळो होय हो ॥ ना० ॥ आक अने सुरभी तणो, अतर न कियो कोयहो ॥ ना० ॥ १६ ॥ न करी एह विच्यारणा, नही घर जोगी जात हो ॥ ना०॥ मुसो घाल्या पाखमे, हस नी पखो थात हो ॥ ना० ॥ १७ ॥ सिंह प्रते जबुक कहे, कानहयो होइ हो ॥ ना० ॥ केम फिरी खर आवही, तेम ए नामा जोइ हो ॥ ना० ॥ १८ ॥ आप चढी वर हाथणी, आगे साव वेसार हो ना० ॥ लेइ आवी निज घेर, माटीपणो अवधार हो ॥ ना० ॥ १९ ॥ न्हानण धोवण भोजने, आसन शयन विचार हो ॥ ना० ॥ ससुखा अति माचवे, स्वार्थीयो ससार हो ॥ ना० ॥ २० ॥ समय विच्यारे आपणो, सयण सयाणा जेह हो ॥ ना० ॥ श्री हरीचद्र नरिंद्र ज्यु, मरद कहावे तेह हो ॥ ना० ॥ २१ ॥ विमो तेरसोमी ढाळमे, भामा साव कुमार हो ॥ ना० ॥ श्री गुणसागर सूरिजी, करे विनोद अपार हो ॥ ना० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ श्रीवसत ऋतु राजीयो, आयो करीय मडाण ॥ कामदेवनो मीत्र ए, वरतावे जग आण ॥ १ ॥ मोरा आवा अति भला, केसु कुसम सम वान ॥ मधुकर गुजारव करे, कोइल शब्द प्रधान ॥ २ ॥ मलियाचलना वायरा, वाजे अति सुखकार ॥ दुखियाने दुखदायकु, सुखिया सुख दातार ॥ ३ ॥

ढाल १०३ मी ॥ कंत तमाकु परिहरो, ए देशी ॥
कुमर सुभानु जाणीए, खेलण काज वसत ॥ मोरा ला
ल ॥ साथे मित्र मनोहरु, वनमे जाइ रमत ॥ मो० ॥
॥ १ ॥ कुमर सुभानु जाणीए ॥ ए आकणी ॥ हिंडो
ले अति हिंचती, गाती गीत सुचग ॥ मो० ॥ नारी
नीरोपम निरखता, उपज्यो अग अनग ॥ मो० ॥
॥ कु० ॥ २ ॥ भुह कमाने सधीया, तिखा लोचन
बाण ॥ मो० ॥ नारी आहिडे नीकली, नाखे विंधी प्रा
ण ॥ मो० ॥ कु० ॥ ३ ॥ महियलरुपे माडीयो, मोहनी
मोटो फद ॥ मो० ॥ कामी मृग आवी पडे, थाई गति
मतिमद ॥ मो० ॥ कु० ॥ ४ ॥ दाढ गलावे आवली, ला
ख गलावे आग ॥ मो० ॥ शिल गलावे सुदरी, रागी
राचे राग ॥ मो० ॥ कु० ॥ ५ ॥ मुरछाणो धरणी प
ड्यो, मत्री करी उपचार ॥ मो० ॥ उठाइ घर आणी
यो, माता ते जाणी विच्यार ॥ मो० ॥ कु० ॥ ६ ॥
कन्या मेली निनाणु ए, सामी ए धुर आण ॥ मो० ॥
भामा कुमर सुभानुनो, व्याह तणी विधी ठाण ॥
॥ मो० ॥ कु० ॥ ७ ॥ भाखे कुमरी मूलगी, भामासु आण
द ॥ मो० ॥ करशु कर कर उपरे, तो वरशु तुज नद ॥ मो०
॥ कु० ॥ ८ ॥ वाला वात विशेपथी, भाखे भामा सा
थ ॥ मो० ॥ मूऊ परण्ये परणी सहु, परणेवि नहीना
थ ॥ मो० ॥ कु० ॥ ९ ॥ भामा मान्या बोलडा, स्यो
वहुलो विस्तार ॥ मो० ॥ नारी कही पग पानही, पुरुप

कह्यो शिरदार ॥ मो० ॥ कु० ॥ १० ॥ चोरी मांही साहीयो, वरनो दक्षण हाथ ॥ मो० ॥ वामा करशु दा वीयो, देखे सघळो साथ ॥ मो० ॥ कु० ॥ ११ ॥ क न्या निनाणु तणी, दक्षण करशु खाण ॥ मो० ॥ साहि ने विधी साचवी, ते सघली वश आण ॥ मो० ॥ ॥ कु० ॥ १२ ॥ शयन घरे श्री सांवजी, भ्रकुटी चो हडी कपाल ॥ मो० ॥ विहाव्यो कुवर खरो, नाठी गयो ततकाल ॥ मो० ॥ कु० ॥ १३ ॥ सासन्नरथो आयो सहि, जामा जननी पास ॥ मो० ॥ कठ लगाई पूछी यो, जाणी अधीको त्रास ॥ मो० ॥ कु० ॥ १४ ॥ मुक ने मारे मायजी, जाइ साव सनूर ॥ मो० ॥ साव कीहारे डरपणो, ध्यावी चाली हजूर ॥ मो० ॥ कु० ॥ १५ ॥ पगे लागी उभो रह्यो, कडुआणा अति नयण ॥ मो० ॥ अकुलाणी आतुर थइ, बोले काठा वयण ॥ मो० ॥ ॥ कु० ॥ १६ ॥ धूरत धीठ शिरोमणी, जिहा तिहा दुखदा य ॥ मो० ॥ क्यु आयो अण तेडीयो, जामा नूरक खाय ॥ मो० ॥ कु० ॥ १७ ॥ साव कहे तें आणीयो, स कळ लोकनी साख ॥ मो० ॥ बेसारी वड हाथणी, मा ता कूट मतनाख ॥ मो० ॥ कु० ॥ १८ ॥ जणे सुजामा जामनी, होइ खीसाणी आप ॥ मो० ॥ हाथ कमाया कामनो, सोचनको सताप ॥ मो० ॥ कु० ॥ १९ ॥ ठग माता ठग तातजी, जाइपिण ठग जास ॥ मो० ॥ आप ठगारो, जगतनो हु कीम पहुचु तास ॥ मो० ॥ कु० ॥ २० ॥

हेमागद पुत्री भली सूहीरणी तस नाम ॥ मो० ॥ एव साब कुमर घरे रमणी शत अभिराम ॥ मो० कु० ॥ २१ ॥ चरणकमल निजताततनां, प्रणमी भाखे वात ॥ मो०॥ कामकला सुविचारता, हरी हासो न स मात ॥ मो० ॥ कु० ॥ २२ ॥ कन्या सोहि सुभानुने, प रणावी सुखकार ॥ मो०॥ मनमान्या सुख भोगवे, साब सुभानु कुमार ॥ मो० ॥ कु० ॥ २३ ॥ साब कहे वसुदे वसु, बाबाजी अवधार ॥ मो० ॥ थे परदेशा आथमी, पामी नारसु नार ॥ मो० ॥ कु० ॥ २४ ॥ सब विध सु दर सुदरी, घर बेठाही देख ॥ मो०॥ तात प्रसाद तु ह्मारडे, मे पामी सुविशेष ॥ मो० ॥ कु०॥ २५ ॥ बेटा जी तुह्म तो वभा, जोता सब परिवार ॥ मो० ॥ तुम सम अवर न उपनो, ह्मारा वश मझार ॥ मो० ॥ कु० ॥२६॥ तिसोत्तर सोमी ढालमें, जाबुवति उछाह ॥ मो० ॥ श्री गुणसागरजी कहे, होवे मदन विदरभी व्याह ॥ मो० ॥ कु० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ एक दिवस चिंता वसी, रुखमणीने मन एह ॥ विदरभी कुमरी भली, रुप कला गुण रेह ॥ ॥ १ ॥ जो घर आवे कामने, तो पूगे मन आश ॥ सहि करी जाणु सखी, पूरो पुण्य प्रकाश॥ २ ॥

ढाल १०४ मी ॥ आज भलो दिन माहरो ॥ ए देशी ॥ विदरभीसु मन वरयो, जूया भलेरो भाव हो ला ल ॥ वहु करवाने कारणे, चित्तने लाग्यो चाव हो ॥

कह्यां शिरदार ॥ मो० ॥ कु० ॥ १० ॥ चोरी माही साहीयो, वरनो दक्षण हाथ ॥ मो० ॥ वामा करशु दा वीयो, देखे सघळो साथ ॥ मो० ॥ कु० ॥ ११ ॥ कन्या निनाणु तणी, दक्षण करशु खाण ॥ मो० ॥ साही ने विधी साचवी, ते सघली वश आण ॥ मो० ॥ ॥ कु० ॥ १२ ॥ शयन घरे श्री सांवजी, भ्रकुटी चो हडी कपाल ॥ मो० ॥ चिहाव्यो कुवर खरो, नाठी गयो ततकाल ॥ मो० ॥ कु० ॥ १३ ॥ सासन्नरयो आयो सहि, न्नामा जननी पास ॥ मो० ॥ कंठ लगाई पूछी यो, जाणी अधीको त्रास ॥ मो० ॥ कु० ॥ १४ ॥ मुझ ने मारे मायजी, न्नाइ सात्र सनूर ॥ मो० ॥ साव कीहारे डरपणो, घ्यावी चाली हजूर ॥ मो० ॥ कु० ॥ १५ ॥ पगे लागी ऊनो रह्यो, कडुआणा अति नयण ॥ मो० ॥ अकुलाणी आतुर थइ, बोले काठा वयण ॥ मो० ॥ ॥ कु० ॥ १६ ॥ धूरत धीठ शिरोमणी, जिहा तिहा दुखदा य ॥ मो० ॥ क्यु आयो अण तेडीयो, न्नामा नूरक खाय ॥ मो० ॥ कु० ॥ १७ ॥ सांव कहे तें आणीयो, सकल लोकनी साख ॥ मो० ॥ बेसारी वड हाथणी, माता जूट मतनाख ॥ मो० ॥ कु० ॥ १८ ॥ न्नणे सुन्नामा न्नामनो, होइ खीसाणी आप ॥ मो० ॥ हाथ कमाया कामनो, सोचनको सताप ॥ मो० ॥ कु० ॥ १९ ॥ ठग माता ठग तातजी, न्नाइपिण ठग जास ॥ मो० ॥ आप ठगारो, जगतनो हु कीम पहुचु तास ॥ मो० ॥ कु० ॥ २० ॥

हेमागद पुत्री भली सूहीरणी तस नाम ॥ मो० ॥ एव साव कुमर घरे रमणी शत अभिराम ॥ मो० कु० ॥ २१ ॥ चरणकमल निजतातना, प्रणमी भाखे वात ॥ मो०॥ कामकला सुविचारता, हरी हांसो न समात ॥ मो० ॥ कु० ॥ २२ ॥ कन्या सोहि सुभानुने, परणावी सुखकार ॥ मो०॥ मनमान्या सुख भोगवे, साव सुभानु कुमार ॥ मो० ॥ कु० ॥ २३ ॥ सांव कहे वसुदेवसु, बाबाजी अवधार ॥ मो० ॥ थे परदेशा आथमी, पामी नारसु नार ॥ मो० ॥ कु०॥ २४ ॥ सब विध सुदर सुदरी, घर बेठाही देख ॥ मो०॥ तात प्रसाद तुह्मारडे, मे पामी सुविशेष ॥ मो० ॥ कु०॥ २५ ॥ बेटाजी तुह्म तो वडा, जोता सब परिवार ॥ मो० ॥ तुम सम अवर न उपनो, ह्मारा वश मझार ॥ मो० ॥ कु० ॥२६॥ तिरोत्तर सोमी ढालमें, जाबुवति उच्छाह ॥ मो० ॥ श्री गुणसागरजी कहे, होवे मदन विदरभी व्याह ॥ मो० ॥ कु० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ एक दिवस चिंता वसी, रुखमणीने मन एह ॥ विदरभी कुमरी भली, रुप कला गुण रेह ॥ ॥ १ ॥ जो घर आवे कामने, तो पूगे मन आश ॥ सहि करी जाणु सखी, पूरो पुण्य प्रकाश ॥ २ ॥

ढाल १०४ मी ॥ आज भलो दिन माहरो ॥ ए देशी ॥ विदरभीसु मन वरयो, भूया भलेरो भाव हो लाल ॥ वहु करवाने कारणे, चित्तने लाग्यो चाव हो ॥

ला० ॥ वि० ॥ १ ॥ दुत अनोपम मोकल्यो, रुकमीया
राजा पास हो ॥ ला० ॥ पुत्री दे मुझ पुत्रने, धुर आ
शीष प्रकाश हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ २ ॥ रुकमीयो रीसे
रातडो, बोले अति अविचार हो ॥ ला० ॥ आगे अ
मरख अति घणो, मारो छे हरी द्वार हो ॥ ला० ॥
वि० ॥ ३ ॥ ए कुमरी उत्तम खरी, वहिन कुमर घटि
वस हो ॥ ला० ॥ नो वर वर लहेशे नहीं, अण पर
एया परसस हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ४ ॥ हरी घरथी च
डालने, घरे दिधा अति सोह हो ॥ ला० ॥ नाते घा
ठा जेहने, उपावे अदोह हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ५ ॥
दुत तणे मुख साजली, ए अविचारी वात हो ॥ला०
पिछतावो करती घणो, दुचिंती रुखमणी मात हो ॥
ला० ॥ वि० ॥ ६ ॥ मर्म लहि माता तणो, कामने सा
व कुमार हो ॥ ला० ॥ रुप करी चडालनो, कुन्नपर
आवत हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ७ ॥ रुप कला करी सो
हतो, गावे गीत रसाल हो ॥ ला० ॥ विण रखाव उ
पागसु, वाजे मादल ताल हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ८ ॥
सुर गायननी उपमा, भेद सगीतनो जाण हो ॥ ला०
॥ स्वर मडलसु साचवे, राग तणा मडाण हो ॥ ला०
॥ वि० ॥ ९ ॥ ग्राम तिन स्वर सातसु, मुर्छना एकवि
स हो ॥ ला० ॥ गुणपचासा तानसु, जाणपणाना इ
श हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १० ॥ रुप तिहा गुण नवि
हुवे, सुगुण तिहा नहि रुप हो ॥ ला० ॥ रुप अने

गुण एकठा, पूरव पुण्य अनुप हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ॥ ११ ॥ मोह्या राणा राजीया, मोह्या बाल गोपाळ हो ॥ला०॥ मोहि रमणि अती घणी, खग मृग अति सु विलास हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १२ ॥ गगन गति सुर मानवी, थम्भो आप विमान हो ॥ ला० ॥ नाद सुणेवा कारणे, मोहि रह्या धरी ध्यान हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ॥ १३ ॥ नादे मोह्या हरणला, प्राण तजे ततकाल हो ॥ ला० ॥ साप ढिढर माहि पडे, साहिरो लघु लाल हो ॥ ला० ॥ वि० ॥१४॥ नादे स्वर गह्यो, स्वाग विरुप धरत हो ॥ ला० ॥ नारी आगे नाचियो, थेइ थेइ थेइ करत हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १५ ॥ राधावलभ राचियो, ए जग माहि अचम्भ हो ॥ ला० ॥ राणी रुखमणी आगले, कीधो नाटारम्भ हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १६ ॥ नादे ब्रह्मा चउमुखो, रस मोखरनो मुहहो ॥ ला० ॥ वेदि नाख्यो नारदे ॥ देइ तिखा नुह हो ॥ ला०॥वि० ॥ १७ ॥ वेद थकी ए पचमो, नाद कह्यो उपवेद हो ॥ ला० ॥ प्रिती उपावण सादरो, नाद रहे सर्व देख हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १८ ॥ दुखीयाना दुख अपहरे, सु खीयाने सुखकार हो ॥ ला० ॥ श्रवण हृदय हारी ख रो, मनमथ दूत उदार हो ॥ ला० ॥वि० ॥ १९ ॥ ना री जननो वाल हो, नाद निरोपम नाम हो ॥ ला० ॥ चतुरा चितनो पारीखो, नाद महा अभिराम हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ २० ॥ विदरभी नृप कुवरी, वेठी राजा

ला० ॥ वि० ॥ १ ॥ दुत अनोपम मोकल्यो, रुकमीया राजा पास हो ॥ ला० ॥ पुत्री दे मुक पुत्रने, धुर आशीप प्रकाश हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ २ ॥ रुकमीयो रीसे रातडो, बोले अति अविचार हो ॥ ला० ॥ आगे अ मरख अति घणो, मारो छे हरी छार हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ३ ॥ ए कुमरी उत्तम खरी, बहिन कुमर घटि वस हो ॥ ला० ॥ जो वर वर लहेशे नहीं, अण पर णया परसस हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ४ ॥ हरी घरथी च डालने, घरे दिधा अति सोह हो ॥ ला० ॥ नाते घा ठा जेहने, उपावे अदोह हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ५ ॥ दूत तणे मुख साजली, ए अविचारी वात हो ॥ला० पिछतावो करती घणो, दुचिती रुखमणी मात हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ६ ॥ मर्म लहि माता तणो, कामने सा व कुमार हो ॥ ला० ॥ रुप करी चडालनो, कुन्नपर आवत हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ७ ॥ रुप कला करी सो हतो, गावे गीत रसाल हो ॥ ला० ॥ विण रबाब उ पांगसु, वाजे मादल ताल हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ८ ॥ सुर गायननी उपमा, भेद सगीतनो जाण हो ॥ ला० ॥ स्वर मडलसु साचवे, राग तणा मडाण हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ९ ॥ ग्राम तिन स्वर सातसु, मुर्छना एकवि स हो ॥ ला० ॥ गुणपचासा तानसु, जाणपणाना इ श हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १० ॥ रुप तिहा गुण नवि हुवे, सुगुण तिहा नहि रुप हो ॥ ला० ॥ रुप अने

गुण एकठा, पूरव पुण्य अनुप हो ॥ ला० ॥ वि० ॥
॥ ११ ॥ मोह्या राणा राजीया, मोह्या वाल गोपाळ
हो ॥ला०॥ मोहि रमणि अती घणी, खग मृग अति सु
विलास हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १२ ॥ गगन गति सुर
मानवी, थम्नो आप विमान हो ॥ ला० ॥ नाद सुणेवा
कारणे, मोहि रह्या धरी ध्यान हो ॥ ला० ॥ वि० ॥
॥ १३ ॥ नादे मोह्या हरणला, प्राण तजे ततकाल हो
॥ ला० ॥ साप ढिढर माहि पडे, सहिरो लघु लाल हो
॥ ला० ॥ वि० ॥१४॥ नादे स्वर गह्यो, स्वाग विरुप
धरत हो ॥ ला० ॥ नारी आगे नाचियो, थेइ थेइ थेइ
करत हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १५ ॥ राधावलभ राचियो,
ए जग माहि अचम्न हो ॥ ला० ॥ राणी रुखमणी
आगले, कीधो नाटारम्न हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १६ ॥
नादे ब्रह्मा चउमुखो, रस मोखरनो मुहहो ॥ ला० ॥
वेदि नाख्यो नारदे ॥ देइ तिखा नुह हो ॥ ला०॥वि०
॥ १७ ॥ वेद थकी ए पचमो, नाद कह्यो उपवेद हो
॥ ला० ॥ प्रिती उपावण सादरो, नाद रहे सर्व देख हो
॥ ला० ॥ वि० ॥ १८ ॥ दुखीयाना दुख अपहरे, सु
खीयाने सुखकार हो ॥ ला० ॥ श्रवण ऋदय हारी ख
रो, मनमथ दूत उदार हो ॥ ला० ॥वि० ॥ १९ ॥ ना
री जननो वाल हो, नाद निरोपम नाम हो ॥ ला० ॥
चतुरा चितनो पारीखो, नाद महा अभिराम हो ॥
ला० ॥ वि० ॥ २० ॥ विदरभी नृप कुवरी, वेठी राजा

गोद हो ॥ ला० ॥ गवराव्यां ते कुवडा, मोहि गीत वि
नोद हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ २१ ॥ सुदरताइ देहिनी, सु
घडाइ अधीकार हो ॥ ला० ॥ जीम जीम जोवे सन
मुखे, तीम तीम उपजे प्यार हो ॥ ला० ॥ वि०॥२२॥
किहा थकी तुह्म आविया, पूछे राज कुमार हो ॥ ला०
॥ स्वर्ग थकी पाव धारीया, माणस लोक मझार हो
॥ ला० ॥ वि०॥ २३ ॥ देखी नगरी द्वारिका, इहां आ
या जोइ हो ॥ ला० ॥ मदन कुमर सोभागीयो, पूछे
कुमरी सोइ हो ॥ ला० ॥वि०॥ २४ ॥ साव कहे सुण
सुदरी, मदन महा दातार हो ॥ ला० ॥ जोग पुरदर
सुदरु, आप कियो किरतार हो ॥ ला० ॥वि०॥ २५॥
माननीया मन मोहवा, मोहन सुरति आप हो ॥ला०
॥ गीत घणा रति पती तणा, गावे करी आलाप हो
॥ ला० ॥ वि० ॥ २६ ॥ अवर अनेरा मानवी, पामे
उपम जास हो ॥ ला० ॥ सोतो प्रभु आपण अगे,
स्यु वरणिए तास हो॥ ला० ॥ वि० ॥ २७ ॥ अय
रावतिनी उपमा, अवर गजा देवाय हो ॥ला० ॥ पि
ण अयरावति हाथीयो, कहो किण सम कहेवाय हो॥
ला० ॥ वि० ॥ २८ ॥ इद्र तणि उपमा दिया, अवर न
राहो धिक्कार हो ॥ ला० ॥ पिण तो उपमा इद्रने, अवरा
ऐ अविच्यार हो ॥ ला० ॥ वि० ॥२९॥ इस प्रभु सर्व
जगतको, इसो इश नही होइ हो ॥ ला० ॥ राय मदन
राया तणो, पिण तसराय न कोय हो ॥ला०॥ वि० ॥

॥ ३० ॥ प्रभुताइ तो इन्द्रनी, धनद देवको कोस हो ॥ ला० ॥ तेज जलण को जागतो, काकतणो तो रोस हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ३१ ॥ सत्व रामके राज तो, हरीनी थितीनो थोभ हो ॥ ला० ॥ सुरथी नर थकी खग थकी, पामी अधीकी शोभ हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ३२ ॥ रुडामे रुडो घणो, गुरुयोने गुणवत हो ला० ॥ पुण्ये प्रापती पामीए, काम सरीखो कत हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ३३ ॥ कुमरी हुइ अनुरागणी, सु जस सुणत प्रमाण हो ॥ ला० ॥ परणु कुमर कामने, नेहीतर छेडुं प्राण हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ३४ ॥ एत ल छूट्यो हाथीयो, किनही वसना वत हो ॥ ला० ॥ राय कहे गज वश करे, ते वछीत पावत हो ॥ ला० ॥ वि० ॥३५॥ नाद वले वश आणीयो, ते मोहोटो गजरा ज हो ॥ ला० ॥ मागण हारो मागीयो, सारु वछीत काज हो॥ ला० ॥ वि० ॥३६॥ बाप प्रसादे छे सहु, रोटा पोवण हार हो ॥ ला० ॥ नवीछे तेह थकी दिए, ए तु कारज सा र हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ३७ ॥ दे ए विदरभी कुम री, कन्यादान प्रधान हो ॥ ला० ॥ मुझसो वर न वी पामसो, तुठ्यो श्री किरतार हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ३८ ॥ खिज्यो राजा रुकमीयो, रे रे काहि दे गाल हो ॥ ला० ॥ भगी जगी छे सही, बोलो बोल सभा ले हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ३९ ॥ किधा नगरी बाहीरा, ग्राम अपावन थाय हो ॥ ला० ॥ मामो मारेवो नहि,

मारचा माय रीसाम हो ॥ला०वि०॥ ४० ॥ षत्रोनर सोमी ढालमे, वेदरजीनो प्रेम हो ॥ला० ॥ गुणसागर परजुनसु, नग जडाणो हेम हो ॥ ला० ॥वि० ॥ ४१ ॥

दुहा ॥ मदन गयो मदिर चली, निशनर सोवे सोय ॥ निद गइ प्रभु निरखता, मन रलीयायत होय ॥ १ ॥ लेख लेखी सुविशेषथी, दिधो कुमरे जाम ॥ रुखम णी नामे वाचता, पामी अचरिज ताम ॥ २ ॥ पूछे प दमनी प्रेमशु, देव प्रकाशो नाम ॥ थारा मननो भा वतो, हुवु कुमर काम ॥ ३ ॥

ढाल १०५ मी ॥ हसलानी देशी ॥ भाग्य वडो प्रभु पाइयो ॥ एटेर ॥ ए वरहे श्री काम कुमारके, पु रदरहे केरो अवतारके ॥ हुवु हे वभ्रवखती नारके, प्र सशाहे लेशु ससारके ॥ भा० ॥ १ ॥ जे मन मा ने आपणो, करवोहे सोइ भरतारके ॥ नारी जमारो नाहशु, भरवोहे ए जग व्यवहारके ॥ भा० ॥ २ ॥ पि तावर पहिरयो भलो, ककणहे बाध्यो वर हाथके ॥ वे ला साधी वेगशु, कुवर रहे कुवरीने साथ्थके ॥ भा० ॥ ३ ॥ आरण कारण साचवी, तव किधो हे विवाह उल्हासके ॥ रात बशी उठी गयो, आयो हे वधवनी पासके ॥ भा० ॥ ४ ॥ पश्चिम राते सोवती, कुम री हे निंद्रावश थायके ॥ दिन उग्या आवे सही, दा तण हे लेइने धायके ॥ भा० ॥ ५ ॥ दिठी कुमरी निंदर्मे, ककण हे बाध्यो सुवीशेपके ॥ कोरी सामी पहे

रणे, ए नीको हे परणेतर वेसके ॥ ना० ॥ ६ ॥ सां
स नरी पाछी वली, लावी हे राणीने रायके ॥ परत
क्ष चरीत्र देखावता, आपणपेहे उशींगण थायके ॥
ना० ॥ ७ ॥ रायनणे राणी सुणो, ए कारीज हे विपरी
त जोयके ॥ कुलने लगन लावीयो, ए बेटी हे नही वे
रण होयके ॥ ना० ॥ ८ ॥ जलहर जग जीवाडणो, जा
इ हे विद्युत गुण खाणके ॥ वसदेव तस माही ए, उ
पजी हे विषवेली आणके ॥ ना० ॥ ९ ॥ हु चूक्यो वा
चा सही, पापणी हे पुत्रीने हेतके ॥ हिवे उरण थाय
सु, एहने हो डुबमाने देतके ॥ ना० ॥ १० ॥ फाटो
दुध न राखणो, विणठो हे माणसनो त्यागके ॥ करवो
ठे सुण सुदरी, सगपण हे करवो नहि लागके ॥ ना०
॥ ११ ॥ अगुठो सापे मस्यो, छेदे हे शाणा नर जेह
के ॥ राख्यो खोवे देहने, तेहवी हे कुमरी छेहके ॥ ना०
॥ १२ ॥ राजा तेमी मागणे, दिधी हे कुमरी तेहि वा
रके ॥ पाले वाचा आपणी, न कीयो हे नृप सोच ली
गार के ॥ ना० ॥ १३ ॥ खरी ए आपी रीस वसे, जे
शीर हे आवत कलकके ॥ सतवंति सीता सती, रघु
पती हे सा तजीय निशकके ॥ ना० ॥ १४ ॥ डुत्र क
हे हु स्यु करु, नरवि हे हमहिने नेठके ॥ राजसुता सु
क मालिका, करवी हे एहनी अती वेठके ॥ ना० ॥
॥१५॥ लोकोमे अवहेलणा, मनमे हे तस हरख अपा
रके ॥ मन मान्यो पति पाइयो, लोटे हो लाने ससारके

॥ ना० ॥ १८ ॥ सात कहे सुण नाइजी, आपणवेहे दे खावा आजके ॥ देव नुनन समरावियो, निया हे सारे सब काजके ॥ ना० ॥ १७ ॥ धॉ धॉ मांदल वाजहि, नाचे हे तिहा पात्र अनेकके ॥ मगल गावे गोरडी, वरते हे विवाह तरा अनेकके ॥ ना० ॥१८॥ रोस गयो राजा तणो, किजे हे पछतावो एम के ॥ ढाढीने गाढी करी, दिजे हे विदरनी केमके ॥ ना० ॥ १९ ॥ आत तपे अती आकरी, गाढो हे मनमाही कुचयनके ॥ अभी तणा सजोगथी, नाठी हे जीम चुवे नयनके ॥ ना० ॥ २० ॥ मावीता गेरु तणा, अवगुण हे सासेवा आ हिके ॥ कुमारीका सुत जाइयो, कुति हे नृप कादी नाहि के ॥ ना० ॥ २१ ॥ काठ जल बोले नहि, आपण हे उपायो जाणके ॥ वरुवानल जल बालणो, सायर हो न उल्हावे आणके ॥ ना० ॥ २२ ॥ क्रोध वसे मुज आ धलो, कीधो हे कार्य विपरीतके ॥ न कुच वातने कारणे, तोभी हे पुत्रि स्यु प्रीतके ॥ ना० ॥ २३ ॥ सोइ दान श्रवणे सुणी, चमकियो हे रुकमीयो रायके ॥ खबर क री जणाविया, एतो कोइ हे हरी सुत कहिवाय के ॥ ना० ॥ २४ ॥ बूटी चाले आवियो, मिलिया हे नाणे जा धायके ॥ हेज हिए न समावहिं, लीधो हे कठ ल गायके ॥ ना० ॥ २५ ॥ काम साब कुमर नला, आ पया हे निज घर उछाह के ॥ आनद रग वधामणा, सासु हे मन उपज्यो उगाहके ॥ ना० ॥ २६ ॥ दिधो

अधीको दायजो, दिधां हो साथे परीवारके ॥ देइ द दामा जीतना, चाल्यो हे श्री काम तिणवारके ॥ ना० ॥ २७ ॥ आव्या नगरी द्वारिका, हरस्यो हे श्री कृष्ण नरेशके ॥ हरखी माता रुखमणी, हरस्यो हे परीवार अशेषके ॥ ना० ॥ २८॥ जे जे चिंत्या बोलमा, ते तेहे चडीया परीमाणके ॥ वहुअर सासुप्रीतडी, माने हे सुख मेरु समानके ॥ ना० ॥ २९॥ साबअने परजुनजी, तनसु हे जुदा मन एकके ॥ जोडी नल कुबेर तणी, राखे हे हठ न तजे टेकके ॥ ना०॥३०॥ अनिरुद्धादिक कामने, नदन हे गुणवता सोइके ॥ तस सस्या सुत सवने, साखा हे विस्तरती जायके ॥ ना०॥३१॥ पचमोत्तर सोमी ढालमे, वैदरभी हे केरो विवाहके ॥ श्री गुण सागर सूरिजी, लिजे हे शुभ कर्मा लाहके ॥ ना०॥३२॥

चौपइ ॥ खड खड रसछे नव नवा, सुणता मीठा से लमीरस जेवा ॥ श्री हरीवश चारित्र जय जयो, पचम खड ए पूरण थयो॥ १ ॥ इति ढालसागर प्रवधे हरीवश विस्तार नामा पाचमो खड समाप्त ॥

॥ अथश्री ढालसागर प्रवध हरीवस वर्णन ॥

॥ छठो खड प्रारभ ॥

दुहा ॥ गुण पणविसे पूरीया, सुदरने सुकुमाल॥ एहवा उपाध्याय तणां, प्रणमी चरण त्रिकाल ॥ १ ॥ वर छठा अधीकारनो, विस्तरिये विस्तार ॥ पचालि

प्रगटि खगी, सती शिरोमणी सार ॥ २ ॥ छठा ज्ञा ता अग हे, तिहा हे बहु विस्तार ॥ नाख्यो वीर जि णदजी, गणधर सन्ना मझार ॥ ३ ॥ नागसीरी हुति ब्राह्मणी, कडवो तुंबो दिध ॥ मास खमणने पारणे, मु निवर हत्या लीध ॥ ४ ॥ करता करमज सोहिला, नो गवता जजाल ॥ नागसीरी जीम मति करो, फोगट पातिक जाल ॥ ५ ॥ नमती नूर नवतरे, चपा नगरी तेह ॥ नद्रा उरे उपनी, सागरदत्तने गेह ॥ ६ ॥

ढाल १०६ मी ॥ जीहो मथुरा नगरीनो राजीयो ॥ ए देशी ॥ जीहो नरकादिक दुख नोगवि ॥ लाला० ॥ परवश कर कर रीव ॥ जीहो नद्रा घर आवी अवतरयो ॥ ला० ॥ नागसीरीनो जीव ॥ १ ॥ चतुर नर जो जो कर्म विपाक ॥ ए आकणी ॥ जीहो करम करे सो रा क ॥ च० ॥ १ ॥ जीहो अनुक्रमे जाइ दारीका ॥ ला० ॥ सुदर रुप रसाल ॥ जीहो नणी गुणी चोसट कला ॥ ला० ॥ चाले राज मराल ॥ च० ॥ जो० ॥ २ ॥ जी हो वेपारी त्रिजो वसे ॥ ला० ॥ तिहा वली जिणदत्त शेठ, जिहो धनपती सघलाछे घणा ॥ ला० ॥ सघला जेहने हेठ ॥ च० ॥ जो० ॥ ३ ॥ जीहो तस घर घर णी नली ॥ ला० ॥ सागर नामे पुत्त, जीहो रुपवत स हुने गमे ॥ ला० ॥ राखे घरनो सुत ॥ च० ॥ जो० ॥ ॥ ४ ॥ जीहो एक दिवस सागर फिरे ॥ ला० ॥ नगर कुतुहल काज, जीहो रमलीकरे सुकमालीका ॥ ला० ॥

घर उवर कुल लाज ॥ च० ॥ जो० ॥ ५ ॥ जीहो सा
गर रुपे मोहीयो ॥ ला० ॥ घर आव्यो दिलगीर, जी
हो मातपिता पूछे तिहा ॥ ला० ॥ नदन कोइ अत्रि
र ॥ च० ॥ जो० ॥ ६ ॥ जीहो पुत्र कहे तुमे सान्नलो
॥ ला० ॥ जो मुऊ वाछो खेम, जीहो सागरदत्तनी न
दनी ॥ ला० ॥ परणावो मुऊ प्रेम ॥ च० ॥ जो० ॥ ७ ॥
जीहो वात सुणी शेठ हरखीयो ॥ ला० ॥ साजन ली
धा साथ, जीहो सागरदत्त घरे आवीयो ॥ ला० ॥ वे
उ मिल्या देइ हाथ ॥ च० ॥ जो० ॥ ८ ॥ जीहो शेठ
कहे किण कारणे ॥ ला० ॥ आया मुऊ घरबार, जीहो
तुऊ पुत्री मुऊ पुत्रने ॥ ला० ॥ दिजे एह विचार ॥
च० ॥ जो० ॥ ९ ॥ जीहो शेठ कहे मुऊ अगजा ॥ ला० ॥
जिवन प्राण समान, जिहो गेह जमाइ जो रहे ॥ ला०
॥ तो आवो करी जान ॥ च० ॥ जो० ॥ १० ॥ जीहो
इम सान्नली विलखो थयो ॥ ला० ॥ शेठ गयो निज
ठाम, जीहो सागर पूछे बापने ॥ ला० ॥ वात कही ति
णे ताम ॥ च० ॥ जो० ॥ ११ ॥ जीहो सागर आदर
करी कहे ॥ ला० ॥ जीवन प्राण समान, जीहो गेह
जमाइ जो रहु ॥ ला० ॥ वछित न्नोग रसाल ॥ च० ॥
जो० ॥ १२ ॥ जीहो जिनदत्त सागरने कहे ॥ ला० ॥
चिंता मत करो चित्त, जीहो जान सजी तिहा आवीया
॥ ला० ॥ जिम तिम राखे प्रित ॥ च० ॥ जो० ॥ १३ ॥
जीहो हथमेलो सागर ग्रहे ॥ ला० ॥ शेठ सुतानो द्दा

थ, जीहो नोनर सरीखो आकरो ॥ ला० ॥ चिंते न जुड्यो साथ ॥ च० ॥ जो० ॥ १४ ॥ जीहो अनुक्रमे परण्यो प्रेमशु ॥ ला० ॥ सागर करत विचार, जीहो नामे ए सुकुमालीका ॥ ला० ॥ परणामे अशीधार ॥ च० ॥ जो० ॥ १५ ॥ जीहो साझ समे एक मेहेलमा ॥ ला० ॥ सुता स्त्री नरतार, जीहो अग लगावे अगर्सु ॥ ला० ॥ जेह विपय अगार ॥ च० ॥ जो० ॥ १६ ॥ जीहो कर्मनीकाचीत जेहने ॥ ला० ॥ ते केम पामे नो ग, जीहो वछोत्तरसोढाले गुणसागर कहे ॥ ला० ॥ तोही न समके लोग ॥ च० ॥ जो० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ जिमतिम करम न किजीए, किजीए चित्त वि च्यार ॥ धर्म करो निज हितनणी, जिम पामो नवपार ॥ ॥१॥ मन नग देखी वालम तणो, चमकी नारी तेवार ॥ असमजस ए स्यु करे, कोइक खरो विचार ॥ २ ॥

ढाल १०७ मी ॥ हींडोला खाटे त्रण कडा ॥ ए दे शी ॥ रथ असवारी समारथी ॥ साहीव मोरा ॥ कि धा दिधा दान हो ॥ सागरदत्त ग्रह उतरया ॥ सा० ॥ हरख्या सहु साजन हो ॥ १ ॥ कर्म अजव गति, वा धो विविध मति ॥ उदय आवे अति आकरा ॥ सा० ॥ कर्म करे सो होय हो ॥ ए आकणी ॥ सागर वली सुकमालिका ॥ सा० ॥ बेठा जइ एकातहो ॥ पिए च तुराइ नीज नाहनी ॥ सा० ॥ चचल चित्त नीरखंत हो ॥ क० ॥ २ ॥ रग हतो जे परणता ॥ सा० ॥ ते

रग नहि खेलत हो ॥ ए रगमे ते रगमे॥ सा० ॥ अ
तर अनत अनत हो ॥ क० ॥ ३ ॥ प्रतिव्रता गुण
राखवा ॥ सा०॥ आवी करे मनोहार हो ॥ अग फर
स अति आकरो॥ सा० ॥ केम सहे भरथार हो ॥
॥ क० ॥ ४ ॥ जीम अहि छडे काचली ॥ सा० ॥
उव्यो नारी उवेख हो, रे प्रिउ पूछे प्रेमदा ॥ सा० ॥
उठोगे कुण विशेप हो ॥ क० ॥ ५ ॥ कहे पिउ देह
चिंता भणी ॥ सा० ॥ जाइसग्रह अनुखग हो, नारी
पिण जारी भरी ॥ सा०॥ जाणी कपट थइ सग हो ॥
॥ क० ॥ ६ ॥ प्रिउ वारे पिण नवी रहे ॥ सा०॥ नव
लिगत कोइ नेह हो, सागरनो दाव फाव्यो नही
॥ सा०॥ आव्यो करी सुची देह हो ॥ क० ॥७॥ व
यल शक्यो नही छेतरी॥ सा०॥ नेह गहेली नार हो,
जोरे कर ग्रही कतनो ॥ मा० ॥ आण्यो गेह मझार
हो ॥ क० ॥ ८ ॥ सेजे बेसाख्यो हेजथी ॥ सा०॥ मां
भी घणी मनुहार हो, खिण खिणमे इम किम करो
॥ सा०॥ कहोने प्राण आधार हो ॥ क० ॥ ९ ॥ मां
भ्यो प्रथम समागमे ॥ सा०॥ कपट नीहेजा कत हो,
किम रहशे इणे लक्षणे॥ सा०॥ प्रिती रिती मतीवत
हो ॥ क० ॥१०॥ प्रथमज कलवमे मक्षिका ॥ सा०॥
स्यो तेह माही स्वाद हो, स्वामी अवला उपरे
॥ सा० ॥ एवडो स्यो उनमाद हो ॥ क० ॥ ११ ॥
पहेली रामतमे प्रभु॥ सा० ॥ काढी वेठा वेस हो,

आगन्त कीम निरवाहस्यो ॥ सा०॥ मुझथी एह किसे प हो ॥ क० ॥ १२ ॥ महील कहील कारी इसा ॥ सा० ॥ टहीलनि करण हार हो, तोपिण मन माने नही ॥ सा० ॥ अहो योवन शिणगार हो ॥ क० ॥ ॥१३॥ हु तुम पगनी पानही ॥ सा० ॥ तुमे मुझ शीरना मोरु हो, गोद विगाइ पाए पडु ॥सा० ॥ किम रह्या मु ह मचकोड हो ॥ क० ॥ १४ ॥ तुम सुमरे नवी दु हव्या ॥ सा०॥ लहेणे देणे लिगार हो, लालच हुवे को इ वातनी ॥ सा० ॥ कहो सुखे न करो विच्यार हो ॥ ॥ क० ॥ १५ ॥ होवे जमाइ लाडको ॥ सा० ॥ जिमरु शे तिम रग हो, पिण विण स्वार्थ रुसणु ॥ सा० ॥ ते तो बालीक ढग हो ॥ क० ॥ १६ ॥ इम कही खीण विसमी ॥ सा० ॥ चतुरानन चीत चाव हो, निंद्रावश हुइजीके ॥ सा० ॥ सागर लीधो दाव हो ॥ क० ॥ ॥ १७ ॥ बार उघाडी नाशीगयो ॥ सा०॥ सुती मु की नार हो, एहवी में जाणी नही ॥ सा०॥ धीग एह नो अवतार हो ॥ क०॥१८॥ सतोत्तर सोमी ढालमे ॥ सा० ॥ कीजे क्रोड विशेष हो, गुणसागर ए नवी मीटे ॥ सा० ॥ जे विधी लिखीया लेख हो ॥ क० ॥ १९ ॥

दुहा ॥ जागी तव सुकमालीका, पती नवि देखे पा स ॥ गद गद कठ रुदन करे, नाह कीहा गयो नाश ॥ १ ॥ झारी लेइ दाशी तिहा, आवे मनने रग ॥ विलखी शेठ सुता घणी, दाशी देखी विरग ॥ २ ॥

दाशी भाखे स्वामिनी, आमण दुमणी कांइ ॥ पहीले दिन खटपट किशी, गुण अवगुण न जणाइ ॥ ३ ॥ सुती वोडीने गयो, सागरदत्त घर आप ॥ दाशी शेठाणीने कहे, एह जमाइ पाप ॥ ४ ॥ सागरदत्त रीसे भरयो, जीनदत्तने घर जाय ॥ उलभा दे शेठने, निज अगज तुम नाय ॥ ५ ॥ तेडी सुतने हडकीयो, तें कीयो ए अकाज ॥ शेठ सुता परणी करी, छोडी कीम निजलाज ॥ ६ ॥ पुत्र कहे सुण तातजी, जाउ नही तस पास ॥ जोगी जगम व्रत ग्रहु, मत कर अवर विखास ॥ ७ ॥ शेठ सुणी ए वातडी, छोडी आपण कान ॥ आवी वेटीने कहे, पूर्व करम नीदान ॥८॥

ढाल १०८ मी ॥ मुनिवर ढूढणा ॥ ए देशी ॥ अन्य दिवस घरनो धणीरे हा, सागरदत्त सुजाण ॥ कर्म विटवणा ॥ उचो वइठो महीलमारे हा, देखे नगर मभाण ॥ क० ॥ १ ॥ भूखे भागो दुवलारे हा, शेठे दीठो रक ॥ क० ॥हाथे भागो ठिकरोरे हा, मागे भीक नीशक ॥ क० ॥ २ ॥ भिण भिणाट माखी करेरे हा, जे लाभे ते खाय ॥ क० ॥ फाटा त्रुटा लुगभारे हा, केने नावे दाय ॥ क० ॥ ३ ॥ शेठे तेडावी तेहनेरे हा, दीधु आदरमान ॥ क० ॥ मोदक दीधां मोकलारे हा, उपर उनु धान ॥ क० ॥ ४ ॥ नाइ तेडी मरदन कीयारे हा, स्नानकराव्यो तास ॥ क० ॥ आभरण पहीराव्या भलारे हा, तन हुवो तेज प्रकाश

॥ क० ॥ ५ ॥ शेठे आडंबर करीरे हा परणावी नि
ज धीय ॥ क० ॥ सखरा वाघा घर दियारे हा, सुख
भोगवे चिरजीय ॥ क० ॥ ६ ॥ हरख्यो भीखारी घ
णुरे हा, जाग्यो भाग अभंग ॥ क० ॥ कीहा शेठ घ
र पामीयोरे हा, जीहा सुख नवरंग ॥ क० ॥ ७ ॥
मीठा भोजन जिमवारे हा, सासु सुसरा मान ॥ क०॥
शेठ सुता सुकुमालीकारे हा, लावु रुप निधान ॥ क०
॥ ८ ॥ रात समे वेहु जणारे हा, सुवा मंदीर जाय ॥
क० ॥ जिण वेला कर फरशीउरे हा, अगन समो दु
खदाय ॥ क० ॥ ९ ॥ नाठो दुमक तिहा थकीरे हा,
लेइ निज समुदाय ॥ क० ॥ साप कांचली जीम त
जीरे हा, टलीय अलाय वलाय ॥ क० ॥ १० ॥ शे
ठाणी नीज नंदनीरे हा, दिठी वदन विलाय ॥ क० ॥
माता पूछे शु थयोरे हा, रुदन करे रुसकाय ॥ क० ॥
॥ ११ ॥ जननी भाखे सुण सुतारे हा, मत मन आ
णे शोक ॥ क० ॥ सुखदुख लिखीया नवी टलेरे हा,
हससे दुर्जन लोक ॥ क० ॥ १२ ॥ चिंता तजी भजी
धीरमारे हा, घरबेठी दे दान ॥ क० ॥ अंतराय मीट
शेसही रे हा, सुख पामीश असमान ॥ क० ॥ १३ ॥
शेठ सुणी आवी कहेरे हा, बेटी मतकर अदोह ॥ क०॥
पूर्व कर्म उदय थकीरे हा, पतीसु थाए वीछोह ॥
क० ॥ १४ ॥ जे घर आवे ते वहीरे हा, जाचक
आश करेह ॥ क० ॥ तेहने मुहमाग्यो दीएरे हा, ना

कारो न करेह ॥ क० ॥ १५ ॥ वोहोरण आवे साध वीरे हा, गइ गुराणी पास ॥ क० ॥ वशीकरण विधी पूछतारे हा, वोले सा उल्हास ॥ क० ॥ १६ ॥ मन्त्र तन्त्रने जन्त्रडारे हा, औषध मूली तेम ॥ क०॥ कामण मोहण जिनमतिरे हा, करण करावण नेम ॥ क० ॥ ॥ १७ ॥ लीधो चारित्र सादरोरे हा, करती तप उ पवास ॥ क० ॥ मारगथी बाहिर पडीरे हा, सेवति व नवास ॥ क० ॥ १८ ॥ काइकरे व्रत आदर्योरे हां, जो न तजे सकल्प ॥ क० ॥ पग पग सिदाये घणुरे हा, वदे दु ख अनल्प ॥ क० ॥ १९ ॥ आलो गोलो नीतसुरे हा, लागे अपर खीरत ॥ क० ॥ रागीनो म न राचणोरे हा, वैरागी वीरचत ॥ क० ॥ २० ॥ वनवासे दूषण घणारे हा, रागी नरने होय ॥ क० ॥ घरवासे वैरागीयारे हा, दोष न लागे कोय ॥ क० ॥ ॥ २१ ॥ वस्तु अपूरव छे घणीरे हां, आवा दाडम द्राख ॥ क० ॥ खाता मन पाछे पडेरे हा, अणखाया अभीलाख ॥ क० ॥ २२ ॥ मोहपे साची मोटकीरे हां, वसुधामें विख्यात ॥ क० ॥ हाथी छडे वायरेरे हा, मास मास कुण मात ॥ क०॥२३॥ अठोत्तर सो मी ढालमेरे हा, किउ किउ न करे कर्म ॥ क० ॥ छुट वो नहि जीवनेरे हा, एक विना जिन धर्म ॥ क०॥२४॥

दुहा ॥ ललितादिक गोठिल वसे, पाच पुरुष ध नवत ॥ राजा माने अती घणु, जोगी जमर रमत ॥

॥ क० ॥ ५ ॥ शेठे आडंबर करीरे हा परणावी नि
ज धीय ॥ क० ॥ सखरा वाधा घर दियारे हा, सुख
भोगवे चिरजीय ॥ क० ॥ ६ ॥ हरख्यो भीखारी च
णुरे हा, जाग्यो भाग अभंग ॥ क० ॥ कीहा शेठ घ
र पामीयोरे हा, जीहा सुख नवरंग ॥ क० ॥ ७ ॥
मीठा भोजन जिमवारे हा, सासु सुसरा मान ॥ क०॥
शेठ सुता सुकमालीकारे हा, लाधु रुप निधान ॥ क०
॥ ८ ॥ रात समे वेहु जणारे हा, सुवा मंदीर जाय ॥
क० ॥ निण वेला कर फरशीउरे हा, अगन समो दु
खदाय ॥ क० ॥ ९ ॥ नाठो दुमक तिहा थकीरे हा,
लेइ निज समुदाय ॥ क० ॥ साप काचली जीम त
जीरे हा, टलीय अलाय वलाय ॥ क० ॥ १० ॥ शे
ठाणी नीज नंदनीरे हा, दिठी वदन विलाय ॥ क० ॥
माता पूछे शु थयोरे हा, रुदन करे ग्सकाय ॥ क० ॥
॥ ११ ॥ जननी भाखे सुण सुतारे हा, मत मन आ
णे शोक ॥ क० ॥ सुखदुख लिखीया नवी टलेरे हा,
हससे दुर्जन लोक ॥ क० ॥ १२ ॥ चिंता तजी भजी
धीरमारे हा, घरबेठी दे दान ॥ क० ॥ अतराय मीट
शेसही रेहा, सुख पामीश असमान ॥ क० ॥ १३ ॥
शेठ सुणी आवी कहेरे हा, बेटी मतकर अदोह ॥ क०॥
पूर्व कर्म उदय थकीरे हा; पतीसु थाए वीछोह ॥
क० ॥ १४ ॥ जे घर आवे ते वहीरे हा, जाचक
आश करेह ॥ क० ॥ तेहने मुहमाग्यो दीएरे हा, ना

कारो न करेह ॥ क० ॥ १५ ॥ वोहोरण आवे साध वीरे हा, गइ गुराणी पास ॥ क० ॥ वशीकरण विधी पूछतारे हा, वोले सा उल्हास ॥ क० ॥ १६ ॥ मत्र तत्रने जत्रडारे हा, औषध मूळी तेम ॥ क०॥ कामण मोहण जिनमतिरे हा, करण करावण नेम ॥ क० ॥ ॥ १७ ॥ लीधो चारित्र सादरोरे हा, करती तप उ पवास ॥ क० ॥ मारगथी वाहिर पडीरे हा, सेवति व नवास ॥ क० ॥ १८ ॥ काइकरे व्रत आदरयोरे हा, जो न तजे सकल्प ॥ क० ॥ पग पग सिदाये घणारे हा, वदे दु ख अनल्प ॥ क० ॥ १९ ॥ आलो गोलो नीतसुरे हा, लागे अपर खीरत ॥ क० ॥ रागीनो म न राचणोरे हा, वैरागी वीरचत ॥ क० ॥ २० ॥ वनवासे दूषण घणारे हा, रागी नरने होय ॥ क० ॥ घरवासे वैरागीयारे हा, दोष न लागे कोय ॥ क० ॥ ॥ २१ ॥ वस्तु अपूरव छे घणीरे हा, आवा दाडम द्राख ॥ क० ॥ खाता मन पाछो पडेरे हा, अणखाया अभीलाख ॥ क० ॥ २२ ॥ मोहपे साची मोटकीरे हा, वसुधामें विख्यात ॥ क० ॥ हाथी उडे वायरेरे हा, मास मास कुण मात ॥ क०॥२३॥ अठोत्तर सो मी ढालमेरे हा, किउ किउ न करे कर्म ॥ क० ॥ छुट वो नहि जीवनेरे हा, एक विना जिन धर्म ॥ क०॥२४॥

दुहा ॥ ललितादिक गोठिल वसे, पाच पुरुप ध नवत ॥ राजा माने अती घणु, भोगी भमर रमत ॥

॥ १ ॥ रथ वेशी वेशा सहित, आया वन पडूर ॥ वेश्या रथथी उतरी, बेठी आसन पूर ॥ २ ॥ पांचे गोठिल सेवका, मिल दिवो आदेश ॥ जोजन करग्यो भातिशु, जीम खुशी हुवे वेश ॥ ३ ॥

ढाल १०९ मीं ॥ मोरा साहिब हो श्री सितलना थके ॥ ए देशी ॥ एक गोठील हो घणं चतुरसुजाणके, वेश्या आगल आइउ ॥ रंगे रातीं हो मेन्दी लेइ हाथके, पग मरुण मन भाइयो ॥ १ ॥ धन्य वेश्या हो सुहागण नारके, स्यु कीवे इण नातरे ॥ पाच गोठिल हो सेवे चित लायके, पग एक कोइ न चातरे ॥ २ ॥ तिणे मारूयो हो पग रुमी भातके, वेल फूल मन लाइने ॥ कर कोमल हो रंग्या वेउ रंगके, मधुर स्वर गुण गाइने ॥३॥ एक लायक हो सुदग नर आयके, माथे छत्र धरे तिसे ॥ आपे उभो हो करी सेवा सारके, वेश्या मुख देखी हसे ॥४॥ जोवन भर हो एक मोहन वेलके, तेल सुगध शीशी लिए ॥ वेश्या शिर हो घाले तेल फूलेलके, चोटो गुथे द्रढ हिए ॥ ५ ॥ नवरंगी हो सारगी पागके, एक गणिका खोले लिए ॥ एक विंझे हो चामर चित लायके, कर सेती बीडा दीए ॥ ६ ॥ जो भडके हो तडके दे गालके, फिर जवाव नको करे ॥ जे मागे हो हासे करी लाखके, ते हाजर आणी धरे ॥ ७ ॥ ए पाचे हो नर मिठा बोलके, गणिकासु मुसके हसे ॥ घर घरणी हो गेमी ते

मूढके, निश वेश्या मंदिर वसे ॥ ८ ॥ हिवे साधवी हो देखी ते इमके, चिंते चित धन्य ए सहि ॥ हुनो प रणी हो कोइ पाप सजोग के, मुने पतिये मानी न हीं ॥ ९ ॥ एक ए पिण हो अनीमानणी नारके, सिं हासन उपर चढी ॥ पाचे नर हो करे जीजीकारके, देइ जवाप न हठ चढी ॥ १० ॥ जीम लींबु हो देखी गले दाढके, तिम अजा मन टलवले ॥ नोगवता हो मिठा नर पाचके, सजम व्रतथी खलनले ॥ ११ ॥ जो तपनो हो कोइ फलछे साचके, तो पिण हु पूरव नवे ॥ एहणी परे होजो नरतारके, तप सजम न ला हुवे ॥ १२ ॥ आतापना हो कीधी बहु नातिके, आइ गुराणी पाये नमे ॥ व्रत पाली हो सुधो आचार के, जिम तिम दिन दिन निगमे ॥ १३ ॥ हिवे चेली हो गुरुणी सु रीसके, गुरुणीसु नवि मीले ॥ मन माने हो जी हा तिहा जाइके, नोली जीण तीणसु मिले ॥ १४ ॥ हाथ धोवे हो मुख धोवे पायके, माथो धोवे मन र ली ॥ अग धोवे हो दिनमे दस वारके, धोवे साडी निरमली ॥ १५ ॥ निसवासरहो गुरुणी स्यु धेखके, खटपट निपट निर्लज वली, शेठ वेटी हो जाएयो स्वाद न कोइके, गुरणीथी अलगी टली ॥ १६ ॥ पाडी हारक हो मोटी धर्म सालके, वेठी तिहा सुक मालिका ॥ आप गादे हो रहि अटक न काइके, जा प जपे जप मालिका ॥ १७ ॥ पानोशण हो आवे को

॥ १ ॥ रथ बेशी वेशा सहित, आया वन पडूर ॥ वे श्या रथथी उतरी, बेठी आसन पूर ॥ २ ॥ पाचे गो ठिल सेवका, मिल दिधो आदेश ॥ भोजन करच्यो भातिशु, जीम खशी हुवे वेश ॥ ३ ॥

ढाल १०९ मी ॥ मोरा साहिब हो श्री सितलना थके ॥ ए देशी ॥ एक गोठील हो घण चतुरसुजा णके, वेश्या आगल आइउ ॥ रगे राती हो मेन्दी लेइ हाथके, पग मरुण मन भाइयो ॥ १ ॥ धन्य वे श्या हो सुहागण नारके, स्यु कीचे डण नातरे ॥ पा च गोठिल हो सेवे चित लायके, पग एक कोइ न चा तरे ॥ २ ॥ तिणे माग्यो हो पग रुमी भातके, वेल फूल मन लाइने ॥ कर कोमल हो रच्या वेउ रगके, मधुर स्वर गुण गाइने ॥३॥ एक लायक हो सुदर नर आयके, माथे छत्र धरे तिसे ॥ आपे उभो हो करी सेवा सारके, वेश्या मुख देखी हसे ॥४॥ जोबन भर हो एक मोहन वेलके, तेल सुगध शीशी लिए ॥ वेश्या शिर हो घाले तेल फूलेलके, चोटो गुथे द्रढ हिए ॥ ५ ॥ नवरगी हो सारगी पागके, एक गणिका खोले लिए ॥ एक विंझे हो चामर चित लायके, कर सेती वीडी दीए ॥ ६ ॥ जो भडके हो तडके दे गालके, फिर ज बाब नको करे ॥ जे मागे हो हासे करी लाखके, ते हाजर आणी धरे ॥ ७ ॥ ए पाचे हो नर मिठा बो लके, गणिकासु मुसके हसे ॥ घर घरणी हो छोमी ते

मूढके, निश वेश्या मदिर वसे ॥ ८॥ हिवे साधवी हो देखी ते इमके, चिंते चित धन्य ए सहि॥ हुतो प रणी हो कोइ पाप सजोग के, मुने पतिये मानी न हीं ॥ ९ ॥ एक ए पिण हो अनीमानणी नारके, सिं हासन उपर चढी ॥ पाचे नर हो करे जीजीकारके, देइ जवाप न हठ चढी ॥ १० ॥ जीम लींबु हो देखी गले दाढके, तिम अजा मन टलवले ॥ नोगवता हो मिठा नर पाचके, सजम व्रतथी खलनले ॥ ११ ॥ जो तपनो हो कोइ फलछे साचके, तो पिण हु पूरव नवे ॥ एहणी परे होजो नरतारके, तप सजम न ला हुवे ॥ १२ ॥ आतापना हो कीधी बहु नातिके, आइ गुराणी पाये नमे ॥ व्रत पाली हो सुधो आचार के, जिम तिम दिन दिन निगमे ॥ १३॥ हिवे चेली हो गुरुणी सु रीसके, गुरुणीसु नवि मीले॥ मन माने हो जी हा तिहा जाइके, नोली जीण तीणसु मिले ॥ १४ ॥ हाथ धोवे हो मुख धोवे पायके, माथो धोवे मन र ली ॥ अग धोवे हो दिनमें दस वारके, धोवे साडी निरमली ॥ १५ ॥ निसवासरहो गुरुणी स्यु धेखके, खटपट निपट निर्लज वली, शेठ बेटी हो जाण्यो स्वाद न कोइके, गुरणीथी अलगी टली ॥ १६ ॥ पाडी हारक हो मोटी धर्म सालके, बेठी तिहा सुक मालिका ॥ आप गदे हो रहि अटक न काइके, जा प जपे जप मालिका ॥ १७॥ पाम्रोशण हो आवे को

॥ १ ॥ रथ बेठी वेशा सहित, आया वन पडूर ॥ वे
श्या रथथी उतरी, बेठी आसन पूर ॥ २ ॥ पाचे गो
ठिल सेवका, मिल दिधो आदेश ॥ जोजन करग्यो
जातिशु, जीम खुशी हुवे वेश ॥ ३ ॥

ढाल १०९ मी ॥ मोरा साहिब हो श्री मितलना
थके ॥ ए देशी ॥ एक गोठील हो घणु चतुरसुजा
णके, वेश्या आगल आइउ ॥ रगे राती हो मेन्दी
लेइ हाथके, पग मरूण मन भाइयो ॥ १ ॥ धन्य वे
श्या हो सुहागण नारके, स्यु कीवे इण नातरे ॥ पा
च गोठिल हो सेवे चित लायके, पग एक कोइ न चा
तरे ॥ २ ॥ तिणे माम्यो हो पग रुमी भातके, वेल
फूल मन लाइने ॥ कर कोमल हो रग्या वेउ रगके,
मधुर स्वर गुण गाइने ॥३॥ एक लायक हो सुदर नर
आयके, माथे छत्र धरे तिसे ॥ आपे उभो हो करी
सेवा सारके, वेश्या मुख देखी हसे ॥४॥ जोबन भर हो
एक मोहन वेलके, तेल सुगध शीशी लिए ॥ वेश्या
शिर हो घाले तेल फूलेलके, चोटो गुथे द्रढ हिए ॥ ५ ॥
नवरगी हो सारगी पागके, एक गणिका खोले लिए ॥
एक विंझे हो चामर चित लायके, कर सेती वींडी
दीए ॥ ६ ॥ जो भडके हो तडके दे गालके, फिर ज
बाब नको करे ॥ जे मागे हो हासे करी लाखके, ते
हाजर आणी धरे ॥ ७ ॥ ए पाचे हो नर मिठा बो
लके, गणिकासु मुसके हसे ॥ घर घरणी हो गेमी ते

जानरे ॥ तेज प्रताप दिवस मणी, साचा जेहने सा
जनरे ॥ १ ॥ पुण्य थकी सुख संपजे, पुण्य वर्गा
ससारोरे ॥ पुण्य करो तुमे प्राणीया, जीम पामो भ
व पारोरे ॥ पु० ॥ २ ॥ सीयल गुणे सीता सति, चु
लणी तस पटराणीरे ॥ रुपे रंभा सारखी, बोले को
कील वाणीरे ॥ पु० ॥ ३ ॥ तस कुखे आवी अवत
री, सुभ वेला अध रातोरे ॥ जोग सखर भलो चंद्र
मा, माता हरख न मातोरे ॥ पु० ॥ ४ ॥ पुरे मासे दि
न भले, राणीए जाइ बेटिरे ॥ रुप अनोपम मनो
हरु, गुणमणी माणीक पेटीरे ॥ पु० ॥ ५ ॥ मा
त पीता हरखीत थया, द्रोपदी दीधु नामरे ॥ दिन
दिन वाधे नृप सुता, चंपक जिम गीरी ठामरे ॥
॥ पु० ॥ ६ ॥ चंपक वरणी सुंदरी, दिपे अधीके वा
नरे ॥ गंगा गोरी अवतरी, रंभाने अनुमानरे ॥
॥ पु० ॥ ७ ॥ चंद्रमुखी, मृगलोचनी, राज हंस ग
ति चालेरे ॥ राजकुमर दुलती रमे, मातपिता जन
पालेरे ॥ पु० ॥ ८ ॥ चोसठ महिलानी कला, भणी
गुणी चतुराइरे ॥ तप किधा जनमंतरे, तिण नख शी
ख अधीकाइरे ॥ पु० ॥ ९ ॥ एक दिन राणी मनर
ली, कुमरीने शिणगारीरे ॥ भूपण पहीराव्या भला, ज
नमन मोहन गारीरे ॥ पु ॥ १० ॥ सखीय साहेली
परवरी, रमझम करती रंगेरे ॥ करी जुहार पिता भ
णी, बेठी उछरंगरे ॥ पु० ॥ ११ ॥ नृप दिठी नीज

इ नारके, तिण आगल सुख दुख कहे ॥ बिजो कोइ नही हो आल जजालके, आप वसे सुखणी रहे ॥ १८ ॥ पडीकमणो हो जो आवे दायके, तो किण वेला आदरे ॥ किण वेला हो विकथा करे घ्या रके, हारे वस परमादमे ॥ १९ ॥ व्रत पाल्या हो तिणे वरस अनेकके, ठेहडे आलोया नही ॥ कर्म वाध्या हो छुटे नही जीवके, कोड जतन करे कोस हो ॥ २० ॥ हिवे साधवी हो आउखो पालके, बिजे सुर लोके अवतरी ॥ पल्योपम हो नव आउ प्रमाणके, सुरगणीका थइ सुख वरी ॥ २१ ॥ हिवे तिहाथी हो चवी साधवी जीवके, सुन करमें किहा अवतरी ॥ ते सुणजो हो सबध विचारके, सुणता मन आणद धरी ॥ २२ ॥ ढाल नव सोमी हो तप कीधा जीणके, ते तो निश्चे सुख लहे ॥ जिनशासन हो माहे धर्म अमुलके, गुणसागर साचो कहे ॥ २३ ॥

दुहा ॥ देश माहि वे दिपतो, सजल देश पचाल ॥ कपीलपुर नामे नगर, न पडे कदिय दुकाल ॥ ॥ १ ॥ उचो कोट त्रिकोट जीम, परदल भजणहार ॥ दरवाजा च्यारे भला, लाग्या माल अपार ॥ २ ॥ लिखमीधर व्यवहारीया, वसे सदा सुख वास ॥ शेठ सेनापती मन्त्रवि, घर घर लील विलास ॥ ३ ॥

ढाल ११० मी ॥ नमो नमो श्मरणक महा मुनि ॥ ए देशी ॥ राजा राज्य करे तिहा, द्रुपद-नामे रा

जानरे ॥ तेज प्रताप दिवस मणी, साचा जेहने सा
जनरे ॥ १ ॥ पुण्य थकी सुख सपजे, पुण्य वर्मा
ससारोरे ॥ पुण्य करो तुमे प्राणीया, जीम पामो न
व पारोरे ॥ पु० ॥ २ ॥ सीयल गुणे सीता सति, चु
लणी तस पटराणीरे ॥ रुपे रन्ना सारखी, बोले को
कील वाणीरे ॥ पु० ॥ ३ ॥ तस कुखे आवी अवत
री, सुन्न वेला अध रातोरे ॥ जोग सखर न्नलो चद्र
मा, माता हरख न मातोरे ॥ पु० ॥ ४ ॥ पुरे मासे दि
न न्नले, राणीए जाइ बेटिरे ॥ रुप अनोपम मनो
हरु, गुणमणी माणीक पेटीरे ॥ पु० ॥ ५ ॥ मा
त पीता हरखीत थया, द्रोपदी दीधु नामरे ॥ दिन
दिन वाधे नृप सुता, चपक जिम गीरी ठामरे ॥
॥ पु० ॥ ६ ॥ चपक वरणी सुंदरी, दिपे अधीके वा
नरे ॥ गगा गोरी अवतरी, रन्नाने अनुमानरे ॥
॥ पु० ॥ ७ ॥ चद्रमुखी, मृगलोचनी, राज हस ग
ति चालेरे ॥ राजकुमर दुलती रमे, मातपिता जन
पालेरे ॥ पु० ॥ ८ ॥ चोसठ महिलानी कला, न्नणी
गुणी चतुराइरे ॥ तप किधा जनमतरे, तिण नख शी
ख अधीकाइरे ॥ पु० ॥ ९ ॥ एक दिन राणी मनर
ली, कुमरीने शिणगारीरे ॥ न्नूपण पहीराव्या न्नला, ज
नमन मोहन गारिरे ॥ पु ॥ १० ॥ सखीय साहेली
परवरी, रमझम करती रगेरे ॥ करी जुहार पिता न
णी, बेठी उवरगेरे ॥ पु० ॥ ११ ॥ नृप दिठी नीज

इ नारके, तिण आगल सुख दुख कहे ॥ बिजो कोइ नही हो आल जजालके, आप वसे सुखणी रहे ॥ १८ ॥ पडीकमणो हो जो आवे दायक, तो किण वेला आदरे ॥ किण वेला हो विकथा करे च्यारके, हारे वस परमादमे ॥ १९ ॥ व्रत पाल्या हो तिणे वरस अनेकके, छेहडे आलोया नही ॥ कर्म वाध्या हो छुटे नही जीवके, कोड जतन करे कोस हो ॥ २० ॥ हिवे साधवी हो आउखो पालके, बिजे सुर लोके अवतरी ॥ पल्योपम हो नव आउ प्रमाणके, सुरगणीका थइ सुख वरी ॥ २१ ॥ हिवे तिहा थी हो चवी साधवी जीवके, सुन करमें किहा अवतरी ॥ ते सुणजो हो सवध विचारके, सुणता मन आणद धरी ॥ २२ ॥ ढाल नव सोमी हो तप कीधा जीणके, ते तो निश्चे सुख लहे ॥ जिनशासन हो माहे धर्म अमुलके, गुणसागर साचो कहे ॥ २३ ॥

दुहा ॥ देश माहि छे दिपतो, सजल देश पचाल ॥ कपीलपुर नामे नगर, न पडे कदिय दुकाल ॥ ॥ १ ॥ उचो कोट त्रिकोट जीम, परदल भजणहार ॥ दरवाजा च्यारे भला, लाग्या माल अपार ॥ २ ॥ लिखमीधर व्यवहारीया, वसे सदा सुख वास ॥ शेठ सेनापती मत्रवि, घर घर लील विलास ॥ ३ ॥

ढाल ११० मी ॥ नमो नमो मरणक महा मुनि ॥ ए देशी ॥ राजा राज्य करे तिहा, द्रुपद नामे रा

ढाल १११ मी ॥ बिभीषण वात विच्यारो एह ॥ ए देशी ॥ सोनानी भीडका भलिरे, कागल रग रगे ल ॥ मत्रिसर लिखजो भलोरे, रखे करो काइ ढिलरे॥ ॥१॥ मानव मानो भूपति आण॥ स्वामि भगती सुख पामशोरे, लहस्यो कोड कल्याणरे ॥ मा० ॥ ए आक णी ॥ मत्रिसर कागल लिख्योरे, बहु घरू भज उप मान ॥ अक्षर लिखिया परवमारे, वाचत हुइ आसा नेरे ॥ मा० ॥२॥ दूत तेडावी राजवीरे, कागद दिधो हाथ ॥ प्रथम तु जाजे द्वारकारे, जिहा राजा हरी ना थेरे ॥ मा० ॥ ३ ॥ पग झटकी पगे लागजेरे, श्रीप तिने कहेजे जुहार ॥ कागल देइ विनवेरे, हरखित हो य मुरारेरे ॥ मा० ॥ ४ ॥ समुद्रविजे नृप सारीखारे, नमीजे दसे दसार ॥ अतुलिबल बलभद्रजीरे, केहे जे तास जुहाररे ॥ मा० ॥५॥ राज पधारो हित धरी रे, मतकरो ढिल लिगार ॥ द्रुपद सुता छे द्रोपदिरे, वि वाहनो अधीकाररे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इम कही दूत चा लियोरे, हय गय रथ नर वृंद ॥ अनुक्रमें आयो द्वा रीकारे, जिहा छे भूप मुकुंदरे॥ मा० ॥७॥ बाग विचे भेरो दियोरे, भोजन करी बहु भात ॥ वागो सखर वणाइयोरे, सुदर तनु शोभतरे ॥ मा० ॥८॥ लायक पायक परीवर्योरे, आडबर करी दूत, राजसभा ते आवियोरे, बेठा नर रजपूतरे ॥ मा० ॥९॥ पगे ला गी कागद दियोरे, मुख वचन शुभ वाण ॥ कुशल

अंगना, रुपे रती गुणखाणीरे ॥ जणे ते जाणी ना रती, अमृत वाणी सुहाणीरे ॥ पु० ॥ १२ ॥ राजा मनमाही चिंतवे, केहने ए परणावुर ॥ सरीखे सरीखो जो मीले, तो चिहुमे जस पावुरे ॥ पु० ॥ १३ ॥ कुल आचार सुचर भलो, सासु सुसरो साररे ॥ घर लछमी किर्ती घणी, सुलक्षण वर गीरदाररे ॥ पु० ॥ १४ ॥ एतला गुण जोइ करी, बेटि दिजे बापरे ॥ पाछल भाग्य लिख्यो लहे, लोकनको सतापरे ॥ पु०॥१५॥ जाउ पुत्री सुखमा रहो, चिंता को मति करीशरे ॥ परणावीश मन मानीयो, जे जग मोटो इशरे ॥ पु० ॥ १६ ॥ एकसो दसमी ढालमे, पूछ्या जाण सुजाणरे ॥ गुणसागर कहे पुण्यथी, चढशे वात प्रमाणरे ॥ पु० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ वलि पूछ्या वड भागीया, गढ गजणहि चाल ॥ एहवा जसु पासे रहे, कोइ न करे टकाल ॥१॥ सयवरा मडप रगसु, माड्यो अधिक मडाण ॥ कुमरी लाडकी द्रोपदी, वाछा चढे प्रमाण ॥२॥ चोकस वात वणाइने, जोशी तुरत तेडाय ॥ मास लगन शुभ दिन घडी, जोवो जोतिष राय ॥ ३ ॥ जोशी जोयो जुगतिसु, पोष मास शुदि त्रीज ॥ गोधुलिक चोखो अछे, वरस माहि एहिज ॥ ४ ॥ सुणी राजा मन रजीयो, जोशीने दे दान ॥ कुसम माला घाली गले, दिधो आदरमाम ॥ ५ ॥ आप नृप परधान शु, बेठा करे विचार ॥ सभा विच सिंहासने, पासे सहु परिवार ॥६॥

॥ १ ॥ सनमान्यो ते दूतने, राजा अधिक सनेह ॥ आपी पाछी आगन्या, दूत गयो निज गेह ॥ २ ॥

ढाल ११२ मी ॥ लाछल दे मात मलार ॥ ए देशी ॥ हिवे द्रुपद नामे राय, दूजो दूत बोलाय ॥ आज हो वात प्रकाशे निज निज मन तणी ए ॥ हथीणापुर तु जाय, जिहा वसे पंडुराय ॥ आज हो पाच पुत्रशु सुख लीला घणीजी ॥ १ ॥ युद्धिष्टर जेष्टी जाण, भीमसेन बीजो वखाण ॥ आज हो अरजुन त्रीजो नदन तेहनेजी ॥ नकुल चोथो सोय, सहदेव पाचमो जोय, आज हो माहोमाहे प्रीती अधिकी जेहनेजी ॥ २ ॥ वली तस राजमझार, दुर्योधन हितकार ॥ आज हो गागेय विदुर आदी ते सवेजी ॥ नकल वडा वड वीर, तेहने कहे जे धीर, आज हो कृष्ण परे जइ सहुने विनवेजी ॥ ३ ॥ दूत हथीणापुर आय, मिलि विनवीया राय ॥ आज हो वेगे पधारो तेडो तुम भणीजी ॥ दूत प्रत्ये देइ मान, वस्त्र सरव राजान ॥ आ० ॥ केसरीये वाधे करी शोभा घणीजी ॥ ४ ॥ तदनतर वलि राय, त्रीजो दूत बोलाय ॥ आज हो चपापुर नगरी जाजे तु सहीजी ॥ करण तिहा राजान, दिपे करण समान ॥ आ० ॥ अग नराधीप भणी केहेजे वहीजी ॥ ५ ॥ शल्य अने नंदी राय, आदे सहु समुदाय ॥ आ० ॥ वेगेरे पधारो राय मया करीजी ॥ ते पिण साभलि वाय, देइ निशाणे घाय ॥ आ० ॥

खेम पूगी वलिरे, राजेमर कल्याणरे ॥ मा० ॥१०॥ मधुसुदन मन हरखियोरे, वाचो कागळ तेह ॥ कपिलपुर जावा त्रणीरे, जाग्यो अधीक सनेह ॥ मा० ॥११॥ सुणजो सहुको यादवारे, सणजो दसे दमार॥ सोल सहस नृपति सुणोरे, करज्यो एक विच्याररे ॥ मा० ॥ १२ ॥ मान्यो वचन सहु मिलिरे, श्रीपति नो हितकार ॥ आदरशु नोजन दियोरे, दूतने कृष्ण मुरारीरे ॥ मा० ॥ १३ ॥ कृष्ण सीख ले चालियोरे, दूत प्रमोद अपार ॥ वाग माहि जिहा उतरयो रे, करी सजाइ साररे ॥ मा० ॥ १४ ॥ कटक शुनट साथे घणारे, चाल्यो तिहाथी दूत ॥ मारग आवे जोवतोरे, जिहा अचरिज अदनूतरे ॥ मा० ॥ १५ ॥ गाम नगरपुर लाघतोरे, करतो विचे मुकाम ॥ आनद सेति आवियोरे, जीहां कपिलपुर गामरे ॥ मा० ॥ ॥ १६ ॥ सूरज उगे आवियोरे, दूत ते राजदुवार ॥ सना मिलि सहुको जुडयारे, किधो जुगति जुहाररे ॥ मा० ॥ १७ ॥ दूत कहे करजोडनेरे, मानी वात मुरार ॥ नाग्य वडो बे राउलोरे, होसे जय जय काररे ॥ मा० ॥ १८ ॥ सहुको रलियायत थयारे, चढशे वात प्रमाण ॥ इग्यार सोमी ढालमेरे, होसे कोड कल्याणरे ॥ मा० ॥ १९ ॥

दुहा ॥ निसुणी दूत वचनथी, अति हरख्यो राजान ॥ इण कारजथी माहरोरे, होशे जस परधान ॥

॥ १ ॥ सनमान्यो ते दूतने, राजा अधिक सनेह ॥ आपी पाछी आगन्या, दूत गयो निज गेह ॥ २ ॥

ढाल ११२ मी ॥ लाछल दे मात मलार ॥ ए देशी ॥ हिवे द्रुपद नामे राय, दूजो दूत बोलाय ॥ आज हो वात प्रकाशे निज निज मन तणी ए ॥ हथीणापुर तु जाय, जिहा वसे पडुराय ॥ आज हो पाच पुत्रशु सुख लीला घणीजी ॥ १ ॥ युद्धिष्टर जेष्टी जाण, भीमसेन बीजो वखाण ॥ आज हो अरजुन त्रीजो नदन तेहनेजी ॥ नकुल चोथो सोय, सहदेव पाचमो जोय, आज हो माहोमाहे प्रीती अधिकी जेहनेजी ॥ २ ॥ वली तस राजभजार, दुर्योधन हितकार ॥ आज हो गागेय विदुर आदी ते सवेजी ॥ सकल वडा वड वीर, तेहने कहे जे धीर, आज हो कृष्ण परे जइ सहुने विनवेजी ॥ ३ ॥ दूत हथीणापुर आय, मिलि विनवीया राय ॥ आज हो वेगे पधारो तेडो तुम भणीजी ॥ दूत प्रत्ये देइ मान, वश सरव राजान ॥ आ० ॥ केसरीये वाघे करी शोभा घणीजी ॥ ४ ॥ तदनतर वलि राय, त्रीजो दूत बोलाय ॥ आज हो चपापुर नगरी जाजे तु सहीजी ॥ करण तिहा राजान, दिपे करण समान ॥ आ० ॥ अग नराधीप भणी केहेजे वहीजी ॥ ५ ॥ शल्य अने नंदी राय, आदे सहु समुदाय ॥ आ० ॥ वेगेरे पधारो राय मया करीजी ॥ ते पिण साभलि वाय, देइ निशाणे घाय ॥ आ० ॥

कपीलपुर जावा उछरग मन धरीजी ॥ ६ ॥ हिवे चो
थो दूत चलाय, हियडे हरख न माय ॥ आ० ॥ वेगे
मनावो सोयपुर पतिजी, दमगोप सुत शीसुपाल ॥
पाचसे भाइ रसाल, आज हो तिस नमावी कीधी
विनतीजी ॥ ७ ॥ पाचमो दूत पठाय, हथीतिस न
गरे आय ॥ आज हो दमदत्त राजा राज करे जी
हाजी ॥ विनवीयो जइ राय, द्रुपद वचन सुणाय ॥
आ० ॥ वेगे पधारो मन हरखे तिहाजी ॥ ८ ॥ हिवे
छठो दूत तेडाय, द्रुपदराय बोलाय, आज हो मथुरा
नगरी भणी सोतो मोकलेजी ॥ श्रीधर नामे राय, वे
ठोठे सुखदाय, आज हो लेख वाचीने कहे आव्या
भलेजी ॥ ९ ॥ सातमो दूत सुण वाण, करे हुकम
प्रमाण ॥ आ० ॥ आणदे राजग्रहपुर आवीयोजी ॥
सहदेव नामे राय ॥ प्रणमी तेहना पाय ॥ आ० ॥
स्वामी वचन सहु सभलावीयोजी ॥ १० ॥ तोते रा
य बोलाय, आठमो दूत चलाय ॥ आ० ॥ कुरुणपुर
नगरी रायरुपी प्रतेजी ॥ बोले मधुरी वाण, करजे
जइने जाण ॥ आ० ॥ वेलो तु वलजे करजे मुझ फ
त्तेजी ॥ ११ ॥ नवमा दूत शु वात, जातु नगर वैरा
ट ॥ आ० ॥ राय वैराटने जइ एम भाखजेजी ॥ सत
भाइशु आज ॥ विनती करी महाराज ॥ आ० ॥ रा
य कीचकने हेत बहु दाखजेजी ॥ १२ ॥ राय पुत्री
गुण गेह, परणे अधिक सनेह ॥ आ० ॥ वेगे पधारो

नृपती एम कह्योजी ॥ तेणे तिमज किव, आगन्या पाणी दिध ॥ आ० ॥ साभली राय सुख अधिको ल ह्योजी ॥ १३ ॥ नव देश नोतरया राय, दसमो दूत चलाय ॥ आ० ॥ द्रुपद राजानी निज खाते करीजी ॥ जाजे देसादेश, लघु वडा नरेश ॥ आ० ॥ वात प्र कासे शिघ्र हेत धरीजी ॥ १४ ॥ हिवे सकल राजान साभली द्रुपद वाण ॥ आ०॥ कपीलपुर आवण अति उमह्याजी ॥ ढाल बारोत्तरसोमि एह, सुणता पामे नेह ॥ आ०॥ सूरी गुणसागर साजन सुख लह्याजी ॥१५॥

दुहा ॥ सभा सुधरमी कृष्णजी, बेठा बलभद्र पा स ॥ कोष्टिक जोशी तेडीने, पूछे मुहुरत तास ॥ १ ॥ तिणे दान तिथी अटकली, जोग जुगती गुण जाण ॥ सनमुख सारो चद्रमा, राजन शास्त्र प्रमाण ॥ २ ॥ यादव भाद्रव मेह जिम, जूडीया छपनही कोड़ ॥ वा त सुणी विवाहनी, हरख्या होडा होड़ ॥ ३ ॥ कृष्ण कहे सहु साभलो, मतकरो कोइ विलब ॥ करी सजाइ आवज्यो, पर्जुन कुमर अरु सब ॥ ४ ॥ वात थापी ते उठिया, पोहता निज निज गेह ॥ घर जाइ मजन करे, जिणथी दिपे देह ॥ ५ ॥

ढाल ११३ मी ॥ छठी वाडे छेल छबीलो ॥ ए देशी ॥ कीधा सोल श्रृगार ॥ राजदा ॥ द्वारावती नगरी धणीए ॥ आया रुखमणी पास ॥ रा० ॥ जिणसु प्रित अछे घणी ए ॥ १ ॥ रुखमणी अधिक सनेह रा० ॥

कपीलपुर जावा उछरग मन धरीजी ॥ ६ ॥ हिवे चो
थो दूत चलाय, हियमे हरख न माय ॥ आ० ॥ वेगे
मनावो सोयपुर पतिजी, दमगोप सुत शीसुपाल ॥
पाचसे भाइ रसाल, आज हो शिस नमावी कीधी
विनतीजी ॥ ७ ॥ पाचमो दूत पठाय, हथीशिस न
गरे आय ॥ आज हो दमदत्त राजा राज करे जी
हाजी ॥ विनवीयो जइ राय, द्रुपद वचन सुणाय ॥
आ० ॥ वेगे पधारो मन हरखे तिहाजी ॥ ८ ॥ हिवे
छठो दूत तेडाय, द्रुपदराय बोलाय, आज हो मथुरा
नगरी भणी सोतो मोकलेजी ॥ धीधर नामे राय, बे
ठोवे सुखदाय, आज हो लेख वाचीने कहे आव्या
भलेजी ॥ ९ ॥ सातमो दूत सुण वाण, करे हुकम
प्रमाण ॥ आ० ॥ आणदे राजग्रहपुर आवीयोजी ॥
सहदेव नामे राय ॥ प्रणमी तेहना पाय ॥ आ० ॥
स्वामी वचन सहु सभलावीयोजी ॥ १० ॥ तोते रा
य बोलाय, आठमो दूत चलाय ॥ आ० ॥ कुरुणपुर
नगरी रायरुपी प्रतेजी ॥ बोले मधुरी वाण, करजे
जइने जाण ॥ आ० ॥ वेलो तु वलजे करजे मुझ फ
त्तेजी ॥ ११ ॥ नवमा दूत शु वात, जातु नगर वैरा
ट ॥ आ० ॥ राय वैराटने जइ एम भाखजेजी ॥ सत
भाइशु आज ॥ विनती करी महाराज ॥ आ० ॥ रा
य कीचकने हेत बहु दाखजेजी ॥ १२ ॥ राय पुत्री
गुण गेह, परणे अधिक सनेह ॥ आ० ॥ वेगे पधारो

कृष्ण सभामाहि आवीया ए, जुडीया यदु राजान रा० ॥ वदीजन जस गाइया ए ॥ १२ ॥ शीणगा रचा गजराज रा० ॥ मखमल फुल सुहामणी ए, घटा घुघरमाल रा० ॥ गले कंचन मणी मेखला ए ॥ १३ ॥ शिस शिंदुर बणाय रा० ॥ काने वेढ चामर ढले ए, ऐरावण अवतार रा० ॥ ढलकति ढाल भली बनी ए ॥ १४ ॥ कृष्ण चढ्या गजराज रा० ॥ मस्त क छत्र रतने जड्या ए, चामर विंझे च्यार रा० ॥ नगर लोक जोवा चड्या ए ॥ १५ ॥ चचल चप ल तुरग रा० ॥ निला पिला हसला ए, शिणगारचा बहु मूल रा० ॥ आपमी न सके वासला ए ॥ १६ ॥ रातारथ चोसाल रा० ॥ नवल तुरगम जोतरचा ए, चिहु दिश घटा चार रा० ॥ जाणो गगनथी उतरचा ए ॥ १७ ॥ लायक पायक कोड रा० ॥ हरखित साथ उचा घणा ए, सुदर वेश बणाव रा० ॥ चाकर चतु र सुहामणा ए ॥ १८ ॥ चतुरंगी सेन्या साथ रा० ॥ द्वारामतिथी चालिया ए, वाग्या नवल नीशाण रा० ॥ असवारे असी झालीया ए ॥ १९ ॥ बलभद्र कृष्णजी जोड रा० ॥ दसे दसार पासे रह्या ए, सोल सहस राजान रा० ॥ सहुको आव्या गहगह्या ए ॥ २० ॥ सव परजून कुमार ॥ रा० ॥ केसरीए वाघे भला ए, मोटा मोती काति ॥ रा० ॥ रुप कला गुण आगला ए ॥ २१ ॥ गणिका रुप रसाल ॥ रा० ॥ अनगेसना

राज मया करो भोजणी ए, बेसो आसन एह रा० ह दाशी प्रभु तुम तणी ए ॥ २ ॥ रुखमणी कृष्णन रिंद रा० ॥ आसन बेठा एकठा ए, रामत करवा रं ग रा० ॥ रतन जडीत भला सोगठा ए ॥ ३ ॥ ठे इ आरीसो हाथ रा० ॥ मुख द्रुति देखे कानजी ए, रुखमणी राणी हेज रा० ॥ दिपे द्रुति अभीरामजी ए ॥ ४ ॥ श्रीपती सामल मेह रा० ॥ रुखमणी बनी चुडामणी ए, आभरण रतण जडाव रा० ॥ इन्द्र ध नुप दुती निरजणी ए ॥ ५ ॥ रुखमणी पूछे वात रा० ॥ राज चढाउ साभल्या ए, नूपती मिलीया जो र रा० ॥ हय गय पायक खलभल्या ए ॥ ६ ॥ कृ ष्ण कहे सुण नार रा० ॥ कपीलपुर असे जाइसा ए, द्रुपद सुता विवाह रा० ॥ देखी तमासो आइसा ए ॥ ७ ॥ रुखमणी बोले बोल रा० ॥ प्रीतम गमन म ति करो ए, तुम विण घडीय छमास रा० ॥ वाले सर कुरुणा करो ए ॥ ८ ॥ वासर वरस विहाय रा० ॥ तुम विण साहीब किम रहु ए, शोक तणो जजा ल रा० ॥ सुख दुख किण आगल कहु ए ॥ ९ ॥ कृष्ण कहे मे बोल रा० ॥ बोल्यो ते सही पालवो ए, उत्तम आविचल वाच रा० ॥ अपजस दूरे टाल वो ए ॥ १० ॥ रुखमणी भाखे एम ॥ रा० ॥ वालम वेला पधारजो ए, मत मूको विसार रा० ॥ मुने नाह सभारजो ए ॥ ११ ॥ रुखमणी दिधी शिख रा० ॥

खारेकी खरी, खुरसाणी खरबुज ॥ र० ॥ २ ॥ जबर पिपर लिंबडा, लुबझूब वम बोर ॥ र० ॥ पान बिमी वारी भली, बेठा मोर चकोर ॥ र० ॥ ३ ॥ माली मालनी मनरली, पान फूल फल सार ॥ र० ॥ वेचण आवे पोलमे, लेज्यो वचन विच्यार ॥ र० ॥ ४ ॥ कुण आपणो कुण पारको, गुनहो ने दे मार ॥ र० ॥ कृष्ण आणठे आकरी, कोइ न लोपे कार ॥ र० ॥५॥ धान मूल वेपारमे, मत को करो अन्याय ॥ र० ॥ नितीरी पथ चालता, सहुको लागे पाय ॥ र० ॥ ६ ॥ कौतुक जोवण कौतुकी, कुण कुण आव्या लोक ॥ र० ॥ शुरवीर के साहसी, हरखे आया लोक ॥ र० ॥ ७ ॥ डेरा तिहाथी उपड्या, गुमीया गुहीर निशाण ॥ र० ॥ कटक विकट चिहु दिश वहे, धूल चढी असमान ॥ र० ॥ ८ ॥ आगल किधा हाथीया, मदमाता झूझार ॥ र० ॥ घोडा जोड्या जोरमे, हिंसे सहस प्रकार ॥ र० ॥ ९ ॥ नवरग नेजा फरहरे, विचविच तुब अवाज ॥ र० ॥ धोधो धों शद्व सुणी, चोर चरम जाय भाज ॥ र० ॥ १० ॥ गाम नगर पुर पाटणे, श्रीपती करे मुकाम र० ॥ मोटा मोटा राजवी, शेव करे शिरनाम ॥ र० ॥११ ॥ दही दूध घृत भरी घमा, पान फूल फल भेद ॥ र० ॥ धोरी धोला जोफले, आगल भेटे नेट ॥ र० ॥ १२ ॥ जलथल वन गीरी लघता, आया देश पचाल ॥ र० ॥ जिणी दिशे गगा वहे, जाणे वाल

नामे वडी ए, लाखा गमे साथ ॥ रा० ॥ नागी चतुर रुपे वणी ए ॥ २२ ॥ दल वादल मम्मण ॥ रा० ॥ तत्रु ताएया वागमे ए ॥ डेरा हुवा नजीक ॥ रा० ॥ कृष्ण पधारया रगमे ए ॥२३॥ ऋद्धीगत जसगत ॥ रा० ॥ छडीदार आगल वहे ए ॥ सोनागी शिरदार ॥ रा० ॥ एकसो तेरमी ढाले गुणसागर कहे ए ॥ २४ ॥

दुहा ॥ नोवत वाजे वागमे, सरणाइ बहु जात ॥ घडीयाले वाजे घडी, खलकखडी मन खात ॥१॥ मजरो करे दरवारथी, सहु कोइ नरराय ॥ शिख लेइ केशव तणी, निज निज थानक जाय ॥२॥ कृष्ण पधारया मही लमे, नवरग जीहा चित ठाम ॥ सुख सेजा वेठा सुखे, पासे वेठा राम ॥ ३ ॥ वात करे दरवारनी, मारग कुच मुकाम ॥ वार कोस वाधी मजल, पग पग जल तृण ठाम ॥ ४ ॥ सूवो मारग अटकल्यो, वाकी टाली वाट ॥ कोमी सुभट इण कटकमे, घोटक कुजर घाट ॥ ५ ॥ द्वारामति नगरी थकी, आया सघला लोक ॥ उट वलद वेसरजरी, चार रस चिज थोक ॥ ६ ॥ वासर पाचमु कामले, सुणोलोक धरी राग ॥ पान फूल मत तोड़ज्यो, ए मुक मोहन वाग ॥ ७ ॥

ढाल ११४ मी ॥ कुमखडानी देशी ॥ जावु लिंबु आवली, आवा दाडम द्राख ॥ रगीला मोहना ॥ जवीरा रायण जली, नवरगी नवलाख ॥ र० ॥ १ ॥ बिजोराने करमदा, नारेली तरबुज ॥ र० ॥ सुफ सखर

खारेकी खरी, खुरसाणी खरबुज ॥ र० ॥ २ ॥ जंबर पिपर लिंबडा, लुबफूत्र वरु बोर ॥ र० ॥ पान बिमी वारी नली, बेठा मोर चकोर ॥ र० ॥ ३ ॥ माली मा लनी मनरली, पान फूल फल सार ॥ र० ॥ वेचण आवे पोलमे, लेज्यो वचन विच्यार ॥ र० ॥ ४ ॥ कु ण आपणो कुण पारको, गुनही ने दे मार ॥ र०॥ कृ पण आणठे आकरी, कोइ न लोपे कार ॥ र० ॥५॥ धान मूल वेपारमे, मत को करो अन्याय ॥ र० ॥ नि तीरी पथ चालता, सहुको लागे पाय ॥ र० ॥ ६ ॥ कौ तुक जोवण कौतुकी, कुण कुण आव्या लोक ॥ र०॥ शुरवीर के साहसी, हरखे आया लोक ॥ र० ॥ ७ ॥ डेरा तिहाथी उपड्या, गुरीया गुहीर निशाण ॥ र०॥ कटक विकट चिहु दिश वहे, धूल चढी असमान ॥ र० ॥ ८ ॥ आगल किधा हाथीयां, मदमाता कूझार ॥ र० ॥ घोडा जोव्या जोरमे, हिंसे सहस प्रकार ॥ र० ॥ ९ ॥ नवरग नेजा फरहरे, विचविच तुब अवाज ॥ र० ॥ धोंधों धों शब्द सुणी, चोर चरक जाय नाज ॥ र० ॥ १० ॥ गाम नगर पुर पाटणे, श्रीपती करे मुकाम र० ॥ मोटा बोटा राजवी, शेव करे शिरनाम ॥ र० ॥११ ॥ दही दूध घृत नरी घणा, पान फूल फ ल नेद ॥ र० ॥ धोरी धोला जोफले, आगल नेटे ने ट ॥ र० ॥ १२॥ जलथल वन गीरी लघता, आया देश पचाल ॥ र० ॥ जिणी दिशे गगा वहे, जाणे वाल

गोपाल ॥ र० १३ साल चणा गहु घणा, उडद मसु
र अपार ॥ र० ॥ गुदरी घणी ओलडी, मणीका द्रा
ख अपार ॥ र० ॥ १४ ॥ ठाम ठाम मेवा घणा, ध
रती जोवा लाग ॥ र० ॥ पग पग पाणी मोकळा, व
न वाडीना वाग ॥ र० ॥ १५ ॥ देश जिम सरशी स
ही, देखो कृष्ण नरेश ॥ र० ॥ ए मोटोवे राजवी, जे
हनो एहवो देश ॥ र० ॥ १६ ॥ हरी भाखे नृती सुणो,
दिठा देश अनेक ॥ र० ॥ पिण ए देश समो तुमे,
दीठो तुमे कोइ एक ॥ र०॥१७॥ हिवे कपिलपुरनो धणी,
द्रुपद नामे नृप ॥ र० ॥ कृष्ण सामागम सांभली,
करे सजाइ अनूप ॥ र० ॥ १८ ॥ तेड्या मोटा वागी
या, ज्यारे मोटो भाग्य ॥ र० ॥ वागा पहिरया नव
नवा, शिर सारंगी पाग ॥ र० ॥ १९ ॥ सुंदर कुंजर
सज्ज किया, घोडा कंचन साज ॥ र०॥ घोडो वहिल रथ
जोतरया, मिलिया सुभट समाज ॥ र० ॥२० ॥ एक
सो चउदमी ढालमे, गुणसागर सुखकार ॥ र०॥ सुखिया
जिहां तिहां सुख लहे, आदरमान अपार ॥ र०॥२१॥

दुहा ॥ घुरया ददामा ततक्षणे, वली वागी कर
ताल ॥ नवरंग नेजा फरहरे, चतुरंग सैन्य विसाल
॥ १ ॥ सोहव नारी कलस भरी, करे सोल शिणगार
॥ दरवाजे उभी रही, जान हुवे पेसार ॥ २ ॥ सबल
सजाइ सज्ज करी, चढीयो नगरी राय ॥ वादिजन ज
य जयकरे, माधव सनमुख जाय ॥ ३ ॥ गजथी रा

जा उतरी, लागे श्रीपति पाय ॥ आदर देइ कृष्ण जी, मिलिया वेउ उगाय ॥ ४ ॥ हरी पूछे राजा सुणो, कुशल खेम आणद॥राजपाट चढती कला, देश न केइ दद॥५॥राय प्रसाद सदा कुशल, वली विशेपे आज ॥क्रिपा करी पधारीया, राज वधारी लाज ॥६॥

ढाल ११५ मी ॥ नणदलनी देशी ॥ नयन सयन सेति कहे, श्रीपति कटक मुकाम हो ॥ सुदर ॥ राजा वे मिलिया तिहा, तरुवर सितल ठाम हो ॥ सु० ॥ १ ॥ नूपति भेट भली करे, द्रुपद नाम सुजाण हो ॥ सुं० ॥ साजन सगपण राखवा, कोमी करे कुरवाण हो ॥ सु०॥ नृ०॥२॥ गजवाजी रथ पालखी, भेट करी मन कोड हो ॥ सु० ॥ पगे लागी विनती करे, लेता कोइ न खोरू हो ॥ सु० ॥ नृ० ॥ ३ ॥ श्रीपति राख्यो भेटणो, अवसर लागे मीठ हो ॥ सु० ॥ द्रुपद कहे प्रभु ताहरो, दरशण दिठो निठ हो॥ सु०॥नृ० ॥ ४ ॥ इण अवसर तिहा पुरी सरे, मिलिया नगरी ना लोक हो ॥ सु० ॥ आवे कृष्ण नरेसरु, अचरिज जोवा जोग हो ॥ सु० ॥ नृ० ५ ॥साथे कुणकुण वागीया, कुणकुण सिरदार हो ॥ सु०॥भोमी भमर कुमर तिहा, कुणकुण दसे दसार हो॥सु०॥नृ०॥६॥मयमता हाथीनी घटा, हयवर पार न कोइहो ॥ सु० ॥ रथ पायक वर पालखी, दिठा आणद होय हो ॥सु०॥नृ०॥ ॥७॥नगर महोछव नृप करे, आरूवर असमान हो ॥

गोपाल ॥ र० १३ साल चणा गहु घणा, उडद मसु
र अपार ॥ र० ॥ गुदरी घणी ठोलडी, मणीका श्रा
ख अपार ॥ र० ॥ १४ ॥ ठाम ठाम मेवा घणा, ध
रती जोवा लाग ॥ र० ॥ पग पग पाणी मोकला, ब
न वाडीना बाग ॥ र० ॥ १५ ॥ देश तिम सरशी म
ही, देखो कृष्ण नरेश ॥ र० ॥ ए मोटोवे राजवी, जे
हनो एहवो देश ॥ र० ॥ १६ ॥ हरी भाखे नृती सुणो,
दिठा देश अनेक ॥ र० ॥ पिण ए देश समो तुमे,
दीठो तुमे कोइ एक ॥ र०॥१७॥ हिवे कपिलपुरनो धणी,
द्रुपद नामे नृप ॥ र० ॥ कृष्ण सामागम सांभली,
करे सजाइ अनूप ॥ र० ॥ १८ ॥ तेड्या मोटा वागी
या, ज्यारो मोटो भाग्य ॥ र० ॥ वागा पहिरया नव
नवा, शिर सारगी पाग ॥ र० ॥ १९ ॥ सुदर कुंजर
सज्ज किया, घोडा कंचन साज ॥ र०॥ घोडो वहिल रथ
जोतरया, मिलिया सुभट समाज ॥ र० ॥२० ॥ एक
सो चउदमी ढालमे, गुणसागर सुखकार ॥ र०॥ सुखिया
जिहा तिहा सुख लहे, आदरमान अपार ॥ र०॥२१॥

दुहा ॥ घुरया ददामा ततक्षणे, वली वागी कर
ताल ॥ नवरंग नेजा फरहरे, चतुरंग सैन्य विसाल
॥ १ ॥ सोहव नारी कलस भरी, करे सोल शिणगार
॥ दरवाजे उभी रही, जान हुवे पेसार ॥ २ ॥ सबल
सजाइ सज्ज करी, चढीयो नगरी राय ॥ बंदिजन ज
य जयकरे, माधव सनमुख जाय ॥ ३ ॥ गमथी रा

जा उतरी, लागे श्रीपति पाय ॥ आदर देइ कृष्ण जी, मिलिया वेउ उगाय ॥ ४ ॥ हरी पूछे राजा सुणो, कुशल खेम आणद॥राजपाट चढती कला, देश न केइ दद॥५॥राय प्रसाद सदा कुशल, वली विशेषे आज ॥क्रिपा करी पधारीया, राज वधारी लाज ॥ ६ ॥

ढाल ११५ मी ॥ नणदलनी देशी ॥ नयन सय न सेति कहे, श्रीपति कटक मुकाम हो ॥ सुदर ॥ राजा वे मिलिया तिहा, तरुवर सितल ठाम हो ॥ सु० ॥ १ ॥ नूपति नेट नली करे, द्रुपद नाम सुजाण हो ॥ सु० ॥ साजन सगपण राखवा, कोमी करे कुरवाण हो ॥ सु०॥ नू०॥२॥ गजवाजी रथ पालखी, नेट करी मन कोड हो ॥ सु० ॥ पगे लागी विनती करे, लेता कोइ न खोम हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ ३ ॥ श्रीपति राख्यो नेटणो, अवसर लागे मीठ हो ॥ सु० ॥ द्रुपद कहे प्रनु ताहरो, दरशण दिठो निठ हो॥ सु०॥नू० ॥ ४ ॥ इण अवसर तिहा पुरी सरे, मिलिया नगरी ना लोक हो ॥ सु० ॥ आवे कृष्ण नरेसरु, अचरिज जोवा जोग हो ॥ सु० ॥ नू० ५ ॥साथे कुणकुण वागीया, कुणकुण सिरदार हो ॥ सु०॥नोमी नमर कुमर तिहा, कुणकुण दसे दसार हो॥सु०॥नू०॥६॥मयमता हाथीनी घटा, हयवर पार न कोइहो ॥ सु० ॥ रथ पायक वर पालखी, दिठा आणद होय हो ॥सु०॥नू०॥ ॥७॥नगर महोछव नृप करे, आम्बर असमान हो ॥

गोपाल ॥ र० १३ साल चणा गहु घणा, उडद मसु र अपार ॥ र० ॥ गुदरी घणी ठेलडी, मणीका त्रा ख अपार ॥ र० ॥ १४ ॥ ठाम ठाम मेवा घणा, ध रती जोवा लाग ॥ र० ॥ पग पग पाणी मोकला, व न वाडीना बाग ॥ र० ॥ १५ ॥ देश ठिम सरशी स ही, देखो कृष्ण नरेश ॥ र० ॥ ए मोटोछे राजनी, जे हनो एहवो देश ॥ र० ॥ १६ ॥ हरी नाखे नृती सुणो, दिठा देश अनेक ॥ र० ॥ पिण ए देश समो तुमे, दीठो तुमे कोइ एक ॥ र०॥१७॥ हिवे कपिलपुरनो धणी, द्रुपद नामे नृप ॥ र० ॥ कृष्ण सामागम सांभली, करे सजाइ अनूप ॥ र० ॥ १८ ॥ तेड्या मोटा वागी या, ज्यारो मोटो नाग्य ॥ र० ॥ वागा पहिरया नव नवा, शिर सारंगी पाग ॥ र० ॥ १९ ॥ सुदर कुजर सज्ज किया, घोडा कचन साज ॥ र०॥ घोडो वहिल रथ जोतरया, मिलिया मुत्नट समाज ॥ र० ॥२० ॥ एक सो चउदमी ढालमे, गुणसागर सुखकार ॥ र०॥ सुखिया जिहा तिहा सुख लहे, आदरमान अपार ॥ र०॥२१॥

दुहा ॥ घुरया ददामा ततक्षणे, वली वागी कर ताल ॥ नवरग नेजा फरहरे, चतुरग सैन्य विसाल ॥ १ ॥ सोहव नारी कलस नरी, करे सोल शिणगार ॥ देरवाजे उनी रही, जान हुवे पेसार ॥ २ ॥ सबल सजाइ सज्ज करी, चढीयो नगरी राय ॥ बदिजन ज य जयकरे, माधव सनमुख जाय ॥ ३ ॥ गजथी रा

नू० ॥ १७ ॥ चपा नगरीनो धणी, कृष्ण महिपति
ह हो ॥ सु० ॥ सल्य नूप दलबल साहित, आयो
कल अवीह हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ १८ ॥ गधारादि
पती, शकुनी नामे अति सुर हो ॥ सु० ॥ कंपीलपु
आयो तुरत, गज घट घणे पडुर हो ॥ सुं० ॥ नू०
१९ ॥ दमघोष सुत दलपती, जाणे बाल गोपाल
॥ सु० ॥ नगरी चदेरीनो धणी, आयो नृप शिशु
ल हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ २० ॥ कुन्न नगरीनो राजी
, रुकमी नृप कुल चदहो ॥ सु० ॥ वार न लाइ आव
, साथे शेवक व्रद हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ २१ ॥ वय
ट नगरिनो धणी, किचक नाम नरेश हो ॥ सु० ॥
नाइशु आवीयो, किधो नगर प्रवेश हो ॥ सु०
नू०॥२२॥ मथुरा नगरी अधीपती, श्रीधर नाम नरिंद
॥ सु० ॥ आयो मृगपती साहसी, मन धरतो
ाणद हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ २३ ॥ मालव देश तणो
णी, वयरीसाल नरेशहो ॥ सु०॥ आयो धायो धसम
ी, जिहावे द्रुपद देश हो ॥ सु० ॥ २४ ॥ एम गामा
र नगरथी, आया मोटा नूप हो ॥ सु० ॥ कपील
र डेरा दिया, दिपे तेज अनूप हो ॥ सु० ॥ नू० ॥
२५ ॥ द्रुपद महीपति आणीया, करी उछव पुरमां
ंहो ॥ सु० ॥ सहुने सरिखा राखीया, सक्र थयो न
र अगाह हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ २६ ॥ मोटा मदिर
ालीया, धवल उचा आवास हो ॥ सु० ॥ नामाकित

सु० ॥ जादव जोवे जग घटा, गणिका गावे गान हो
॥ सु०॥नू०॥८॥ पूरण कलस शिर पदमनी, सनमुख
आवे तेह हो ॥ सु० ॥ पइसारो नृप मागीउ, जकी
जुकी धरी नहे हो ॥ सु०॥नू०॥९ ॥ दरवार वार ब
णाइउ, सवल कियो छिटकाव हो ॥ सु० ॥ पच वर्ण
फूल विखेरिया, वहु परिमल महकाव हो ॥सु०॥ नू०
॥ १० ॥ विविध विनोद नीहालता, जोता अचरिज
कोड हो ॥ सु० ॥ उचे नवलखा मालिया, आवी र
ह्या मन कोड हो ॥ सु०॥नू०॥११॥ हिवे कपीलपुरनो
धणी, जलीजली जेट अणाय हो॥ सु० ॥ कमलापति
आगल धरे, जिण दिठे सुख थाय हो ॥ सु० ॥ नू० ॥
॥ १२ ॥मेवा देश परदेशना, साकर काजू सार हो ॥
सु० ॥ कला कुद अति उजला, कोला पाक अपार
हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ १३ ॥ साकर वाणी जतनसु, पा
णी जरी जरी कुज हो ॥ सु० ॥ कुसमपुर फणस ज
लि, सितल मधुर सुरजहो॥ सु० ॥ नू० ॥ १४ ॥ एवा
शितल जल पीए, मधुर मीठाइ खाय हो ॥ सु० ॥
जोजन सरस क्रिया पछी, मारग श्रम मीट जाय हो
॥ सु० ॥ नू० ॥ १५ ॥ पडु राजा पिण आवियो, पाच
पुत्र वली साथ हो ॥ सु० ॥ विदुर करण गागेयशु,
दुर्योधन नर नाथ हो ॥सु० ॥ नू० ॥ १६ ॥ राज ग्र
ही नगरी धणी, श्री सहदेव नरिंद हो ॥ सु० ॥ आड
वर करी आविया, मयमत साथ गयंद हो ॥ सु० ॥

य ॥ केसर चंदन कुसुमले, धूपदीप समुदाय ॥ ७ ॥ करी पूजा कामदेवनी, भाखे द्रोपदी नार ॥ देव दया करी मुजने, भलो देजो भरतार ॥ ८ ॥

ढाल ११६ मी ॥ अलबेलानी देशी ॥ नवयौवन रुपे रुयडीरे लाल, हरखीत वदन जमाय ॥ रायजादिरे ॥ करी उलग पाछी वलीरे लाल, आवी जिहां नीज माय ॥ रा० ॥ १ ॥ सीलवती भली द्रोपदीरे लाल ॥ ए आंकणी ॥ आभूषण अंग लुहणारे लाल, अरगजो अंग लगाय ॥ रा० ॥ कोरजमल पहिरावीयोरे लाल, केसर रंगी पाय ॥ रा० ॥ सी० ॥ २ ॥ वेणी दंरू जमावनोरे ॥ ला० ॥ सोहे मूल अमूल ॥ रा० ॥ माथे सोहे राखमीरे ॥ ला० ॥ रतन जडीत शीश फूल ॥ रा० ॥ सी० ॥ ३ ॥ काने कुंडल झलकतारे ॥ ला० ॥ चंद सूरज अनुकार ॥ रा० ॥ कर कंकण वर विंछियारे ॥ ला० ॥ नक वेसर शिणगार ॥ रा० ॥ सी० ॥ ४ ॥ नयन कमल दल सारिखारे ॥ ला० ॥ अंजन रेख वणाय ॥ रा० ॥ दस अंगुलिए मुद्रडीरे ॥ ला० ॥ निलवट तिलक सोहाय ॥ रा० ॥ सी० ॥ ५ ॥ रंग रंगीला सोहतारे ॥ ला० ॥ उढण झीणा चिर ॥ रा० ॥ कर पग मांभ्या मारूणारे ॥ ला० ॥ कान राखी नखशिर ॥ रा० ॥ सी० ॥ ६ ॥ जंघ कमल लता जीसारे ॥ ला० ॥ सोहे राजकुमार ॥ रा० ॥ गंगा गौरी सारखीरे ॥ ला० ॥ रति रंभा अवतार ॥ रा० ॥ सी० ॥ ७ ॥ घोट वहिल आ

हुता जिके, सहुने दिध विमास हो ॥ सु० ॥ नृ० ॥ २७ ॥ जुडीया नृपती झलझला, हुता जं ल हो ॥ सु० ॥ द्रुपद ते सतोखीया, जिमाड्या सुवि शाल हो ॥ सु० ॥ नृ० ॥ २८ ॥ निज निज आवासे रह्या, सघला राजा जाण हो ॥ सु० ॥ गित गान क रे रगशु, पामे कोड कल्याण हो ॥ सु० ॥ नृ० ॥२९॥ रामत राता राजवी, नाटक गित विनोद हो ॥ सु० ॥ सुख शेती बेठा सही, मन धरता प्रमोद ॥ सु० ॥ नृ० ॥ ३० ॥ ढाल सो पन्नरमी भली, मिलिया राय सुजाण हो ॥ सु० ॥ गुणसागर हिवे सान्नलो, विवाह नो मडाण हो ॥ सु० ॥ नृ० ॥ ३१ ॥

दुहा ॥ द्रुपद राजा आपणा, तेड्या शेवक कोड ॥ सयंवरा मडप माडीयो, मनथी आलस छोड ॥ १ ॥ गगा जल निरमल वहे, ठाम मोकली जाण ॥ तास तिरथ रतिसमी, करी तिहा सखर मन्नाण ॥ २ ॥ म डप रायो मोकलो, कचन मुक्ताफल रयण ॥ शोन्ना विविध प्रकारनी, देखत आनद नयन ॥ ३ ॥ फूल पगर सुहामणा, धुप घटी मेहकत ॥ तोरणनी रचना रची, देखी जन हरखत ॥ ४ ॥ लगन तणो दिन आ वीयो, हेम सिंहासन राय ॥ बेठा सघला आयने, वि विध शोन्ना लाय ॥ ५ ॥ सघला माही शोन्नतो, रा जा पड्डु जोय ॥ पुत्र पाच महाबली, गजी न सके कोय ॥ ६ ॥ हिवे मजन करी द्रोपदी, देव जुहारण जा

॥ रा०॥ सी०॥ १६॥ चित्रधारणी शीखवेरे ॥ ला० ॥ गती मती मदाचार ॥ रा० ॥ गुणासागर सूरी ए कहीरे ॥ ला०॥ ढाल सोलोत्तर सोमी सार ॥ रा०॥ सी ०॥१७॥

दुहा ॥ सशी वयणी मृग लोयणी, रुदय कोमल गात ॥ कोकिल कठी हसगती, अमृत वचन सोहात ॥ १ ॥ राजकुमरी राजी घणी, दिठा बहु राजान ॥ मडप विच आणी हिवे, हाथणी जेम आलान ॥ २ ॥ धणीयाणी मन ओलखे, रुचता बोले बोल ॥ एहवी साथे आछे, विनती करे नीटोल ॥ ३ ॥ एक नारी नृपती घणा, सहुको देखणहार ॥ हिमकर देखी सरोवरे, विकस्ये कुमुद हजार ॥ ४ ॥

ढाल ११७ मी ॥ निंदरडी नाहो निवारीए ॥ ए देशी ॥ जिहा बेठाछे कृष्णजी, तिहा आवी हे सखी राजकुमारके ॥ आरीसो आगे धरी, देखाडे हे नला राज कुमारके ॥ १ ॥ सखीय कहे सुण स्वामिणी, मन थीर करीहे निज नयन निहालके॥ जे मन माने ताहरे, तेहने कठेहे नाखे फूलानी मालके ॥ स० ॥ ॥२॥ ए अवसर पाम्यो नलो, मत चूकेहे सखी हीए विच्यारके ॥ द्वारामती नगरी धणी, एतो सनमुख हीे बेठा कृष्ण मुरारके ॥ स० ॥ ३॥ सोलसहेस नृप दिन प्रते, जसु शेवाहे सारे करजोडके ॥ सोलासहस राणी घरे, मन मोहनहे सुदर नही खोडके॥ स०॥४॥ तिन खडनो राजीयो, नर सघलाहे माने जसु आण

णी ज्ञातिरे ॥ ला० ॥ घुघर माल वणाय ॥ रा० ॥ स
खी साहेली फुडरीरे ॥ ला० ॥ लागी जननी पाय ॥
रा० ॥ सी० ॥ ८ ॥ मन मान्यो वर तु लहिरे ॥ ला० ॥
जननी दिये आशिष ॥ रा० ॥ रथ बेठी आणदसुरे
॥ ला० ॥ तुठो मुझ जगदिश ॥ रा० ॥ सी० ॥ ९ ॥
जाइ साथे सारथीरे ॥ ला० ॥ शुभट लिया शिरदार
॥ रा० ॥ रथ रखवाली ते करेरे ॥ ला० ॥ रतन जत
न अधीकार ॥ रा० ॥ सी० ॥ १० ॥ सावधान जोता
थकारे ॥ ला० ॥ कर झाली तरवार ॥ रा० ॥ कुशल
खेमशु आवीयारे ॥ ला० ॥ हरखी राजकुमार ॥ रा०
॥ सी० ॥ ११ ॥ मडप माहि पेसतारे ॥ ला० ॥ दि
ठा श्रीपति राम ॥ रा० ॥ विजा पिण दिठा घणारे ॥
ला० ॥ सहुने करे प्रणाम ॥ रा० ॥ सी० ॥ १२ ॥ च
पक पाडल मालतीरे ॥ ला० ॥ फूल दडो लेइ हाथ
॥ रा० ॥ परीमल बहुलो महमहेरे ॥ ला० ॥ सकल साहेली
साथ ॥ रा० ॥ सी० ॥ १३ ॥ हाथे दरपण झालीयोरे
॥ ला० ॥ निर्मल दिसे रुप ॥ रा० ॥ मणी माणीक
मुठे जड्योरे ॥ ला० ॥ तिण माही देखे नुप ॥ रा०
॥ सी० ॥ १४ ॥ नाम ठाम कुल जातशुरे ॥ ला० ॥
सूरवीर उदार ॥ रा० ॥ मात तात बाधव सहीरे ॥ ला०
॥ राजऋद्धी जडार ॥ रा० ॥ सी० ॥ १५ ॥ जाषा
जाणे जूजूइरे ॥ ला० ॥ दाशी चतुरसुजाण ॥ रा० ॥
कुमरी साथे सचरेरे ॥ ला० ॥ देखाडे राय राणो ॥

के ॥ स० ॥ १४ ॥ हस गमनी इम सचरे, हिवे ति हार्थाहे आणी उमग सचके ॥ उलट घट माही घणो, हठ राणीहे देखी पाण्डव पचके ॥ स० ॥ १५ ॥ देश वास दाशी कहे, रुप जोवन हे पाचे जोधारके ॥ वरमाला घाली गले, मे वरीयाहे पच पाडव भरतार के ॥ स० ॥ १६ ॥ जय जय शब्द हुवो तिहा, हरी हरख्यो हे जादव राजानके ॥ द्रुपद नृप मन रजीयो, जस शोभा हे मुज होशे जीहानके ॥ स० ॥ १७ ॥ मगल नाद सुहामणा, शख वाजे हो घणा ढोल नि शानके ॥ सवरा मडपथी चल्या, कमलापति हे नृपती राया राणके ॥ स० ॥१८॥ ढाल सतरे सोमी भली, गु णसागर हे अधीक रसालके ॥ पुण्ये सहु वछित फले, जग माहि हे होसे जस विसालके ॥ स० १९ ॥

दुहा ॥ पाचे पाडव द्रोपदी, रथ बेशी तिणवार ॥ भाइ साथे वागीया, आवी निज दरवार ॥ १ ॥ आरीम कारीम सहु किया, मजन करी मन रग ॥ चवरि विच बेठा चतुर, पाचे पाण्डव चग ॥ २ ॥ राज कुमरी शिणगार करी, आणि सहियर साहि ॥ अमी य सलुणे लोयणे, वेठि चोरी माहि ॥ ३ ॥

ढाल ११८ मी ॥ सोहलानी देशी ॥ सुहव सुहव गावे सखरो सुहलोजी, सुणता श्रवण सुहाय ॥ सर खी सरखी जोभी एहनीजी, रोहिणी जिम द्विजराज ॥ सु०॥१॥ कुमर कुमर अमर रुपे रुयडाजी, पाचे पडु

के ॥ दशोदसार जादवा ऊपन्या, तिणमाहीहे दिपे ग्यु भाणके ॥ स० ॥ ५ ॥ एहवो बिजो राजवी, नही को इये सखी शिरदारके ॥ जो मन माने ताहरे, तो वर जेहे सखी भल भरथारके ॥ स० ॥ ६ ॥ तिहाथी आ गल सचरी, जिहा बेठाहे सखी बलभद्र वीरके ॥ दा शी कहे ए गुण भरयो, साह सामेहे सखी साहसवीर के ॥ स० ॥ ७ ॥ तिहाथी पिण आगे गइ, जिहा बे ठाहे सखी दसे दसारके ॥ समुद्रविजे राजा वडो, जेहनो सुतहे सखी नेम कुमारके ॥ स० ॥ ८ ॥ तिहाथी आगे आवता, तिणे दिठाहे वसुदेव नरिंदके ॥ बहुते र सहस अते उरी, एहवोहे पती लहीए आणदके ॥ स० ॥ ९ ॥ राजसुता मन चिंतवे, घणी राणीहे घणो पाप ज जालके ॥ पगे नमता पिण आयसे, तिणसुहे माहरे कुण पपालके ॥ स० ॥ १० ॥ जो सुख चाहेहे सखी, तो एहहे सहदेव नरेशके ॥ शूर साहशिक गढपति, जिणही मन हे नही कुरु कलेशके ॥ स० ॥ ११ ॥ राजग्रही नगरी भली, तसु नायकहे सखी देव स्वरुपके ॥ जरासधनो पाटवी, एणे पुठेहे चडता वडा वडा नृप के ॥ स० ॥ १२ ॥ ठाकुरथी चाकर हुवो, तेहनोहे स खी नही सोभाग्यके ॥ इम चिंतवी आगे गइ, कोइ देखु हो सखी मोटे भागके ॥ स० ॥ १३ ॥ एणीपरे सघला राजवी, तिणे दिठाहे सखी नयन निहालके ॥ कुमरी कहे दाशी प्रते, सुहागणहे तु आगल चाल

पंच रंग ढाल्या ढोलियाजी, पगे पुतली जाण ॥ कोमल कोमल माखण सारखी सेजडीजी, रेशम वणियो वाण ॥ सु० ॥ १२॥ पटकुल पटकुल हय रथ हाथीजी, उशीसां अभीराम ॥ झलझला झलझला वागा आपीयाजी, दिधा वली आठ गाम ॥ सु०॥१३॥ आप्या आप्या हय रथ हाथीयाजी, सतोष्या सहु तेम ॥ एकसो एकसो अढारमी ढालेजी, गुणसागर कहे एम ॥ सु० ॥१४॥

दुहा ॥ हिवे द्रोपदी पंचालीपती, धरणीधरने भेट ॥ आपे गजवाजी प्रमुख, दिधे जस होय नेट ॥ १ ॥ जे पिण विजा राजवी, आया हुता साथ ॥ तेने सहु सतोषिया, मोकल करी निज हाथ ॥ २ ॥ कमलापति सेना सजी, दिध ददामा चोट ॥ राजा सहुको चालिया, कोइ नहि मन खोट ॥ ३ ॥ तिण वेला आडो फिरी, आयो बहु परीवार ॥ पाडू महिपति विनवे, सुणजो कृष्ण मुरार ॥ ४ ॥ कृपा करो मुज उपरे, मानो वचन विमास ॥ हथीणापुर पावन करो, मुझ मन पूरो आश ॥ ५ ॥ सघलि मानी कृष्णजी, प्रिती भली ते वात ॥ विजे पिण मिलि करी, कीधो हरी सघात ॥६॥

ढाल ११९ मी ॥ रसियानी देशी ॥ कटक ते कंपीलपुरथी चालियो, डेरा बाहिर दीध सलुणी ॥ धउस ददामा हो वाजे अति भला, द्रुपद नृप जस लीध ॥ स० ॥ १ ॥ चुलणी राणी हो कुमरी भणी कहे, वेटी सुण एक शीख ॥ स० ॥ सासु सुसरानो माने क

कुमार ॥ अपछर अपछर सरखी द्रोपदीजी, परणी प्रेम अपार ॥सु०॥२॥याचक याचक दिधी दक्षणाजी,सुजस थयो ससार ॥ अवसर अवसर दान सुहामणाजी, वुठे जिम जलधार ॥ सु०॥ ३ ॥ कींचित कींचित कामणी तिण समेजी, हरखाणी हरी हास ॥ सहियर सहियर दिठो न सांभलयोजी, पाच पुरुषनो वास ॥ सु०॥४॥ माननी माननी हिवे मन मोकलेजी, वरसे वर दस वार ॥ द्रुपदा द्रुपदा जो ए आदरयाजी, वर कुण नी वारण हार ॥ सु० ॥ ५ ॥ उत्तर उत्तर आपे महिला माननीजी, गरव मकरे हे गिमार ॥ मुनिवर मुनिवर चा रण गुण कह्याजी, सतियामें शीरदार ॥ सु० ॥ ६ ॥ उत्तम उत्तम पात्र सतोखीयाजी, दिधा अढलक दान ॥ सुकृत सुकृत कीधा एणे कुमरीजी, तिण पामी जग मान ॥ सु० ॥७॥ द्रुपद द्रुपद नृपति कनकनाजी, कर मुकावण कोड ॥ माणीक माणीक मणि मोति घणाजी, हय गय रथ अठ जोड ॥ सु० ॥ ८॥ दासी दासी जू जूआ देशनीजी, सखरो वेश बणाय ॥ कोकिल को किल सरखी बोलणीजी, जाणे मनरो भाव ॥ सु० ॥ ॥ ९ ॥ आभ्रण आभ्रण मुगट जडावराजी, कुडल मो ती माल ॥ वाटकि वाटकि नव नव काटकीजी, हाट कना पण थाल ॥ सु० ॥ १० ॥ दिविय दिविय पाटण निपनीजी झारी सखरे घाट ॥ चामर चामर छत्र सु हामणाजी, भद्रासन जल माट ॥ सु० ॥११॥ पच रंग

॥स०॥ अतराय मत करजे धर्मनी, राजमत देखे नूत ॥ स०॥ चु०॥११॥ मात तात निज भ्रात सजारजे, म करे चित्त अदोह ॥ स०॥ कुशल खेमरो कागल मोकले, धरजो प्रियसु मोह ॥ स० ॥ चु० ॥ १२ ॥ रुदन करे नृप कुमरी चालता, आसु लहे मात ॥ स० ॥ बेटी गुण पेटी तु माहरी, सजारीस दीन रात ॥ स० चु० ॥ १३ ॥ मिलणो सुख विछडणो दोहिलो, मात पिता करे विलाप ॥ स० ॥ फिर मिलणो जो पुण्य घणो हुवे, तो दुणो सुख थाय ॥ स० ॥ चु० ॥ १४ ॥ जिम तिम शिख करी माता कहे, बेटी थाय असूर स० ॥ जाइ साथे आवे ताहरे, हथीणापुरछे दूर ॥ स० ॥ चु० ॥ १५ ॥ माताने पगे लागी द्रोपदी, रथे बेठी तिणवार ॥ स० ॥ तिहाथी राणी आमण दुमणी, आवे महील मझार ॥ स० ॥ चु० ॥ १६ ॥ नयन झरे जिम जल धर उमीयो, पामे रती न लिगार ॥स०॥ खिण खिण माही बेटी साजरे, विरह बुरो ससार ॥ स० ॥ चु० ॥ १७ ॥ दाशी दास मिलीने विनवे, राणी सोग नीवार ॥ स० ॥ कुमरी वेगे तुम घर आवशे, दिन दस जिम तिम सार ॥ स० ॥ चु० ॥ ॥१८॥ राणी ठाम करी मन आपणो, वइठी पिण दिलगीर ॥ स० ॥ सा माजी माजी कहती मुझ द्रोपदी, मात कहे कुण वीर ॥ स० चु० ॥ १९ ॥ हथीणापुर भणी सहु राजवी, चाल्या सेन्या लेय ॥ स० ॥ पाय

ह्यो, विण कहे मतजरे शिस ॥ स० ॥ चु० ॥ २ ॥
य पहिली माचार्थी उठजे. आलस नाणे अग ॥ स०
॥ धणीय जिमाडी हो तु जिमजे पछी, मतकरे निच प्र
सग ॥ स० ॥ चु० ॥ ३ ॥ आख्या विहुमा जिम भत
र किस्यो, तिम पाचे जरतार ॥ स० ॥ सरीखा गि
णजे मत अतर करे, तुज सरज्या किरतार ॥ स०
॥ चु० ॥ ४ ॥ अरीहत देव सुगुरु शेवा करे, जि
न धर्म धरजे चित ॥ स० ॥ मुखर्थी मन जाखे वच
न अजाणतो, जाप जपे धरी प्रित ॥ स० ॥ चु० ॥
॥ ५ ॥ निंदा मत करे हो वेटी पारकी, मतकरे मन अ
भीमान ॥ स० ॥ अवगुण ढाकी गुण प्रगट करे,
तप करी मतकरे निदान ॥ स० ॥ चु० ॥ ६ ॥ समकी
त सुधो मनमाही धरे, जिम पामीश शिववास ॥
॥ स० ॥ निज परजन सेती मिलती रहे, वोले व
चन विमास ॥ स० ॥ चु० ॥ ७ ॥ सुधा साध ज
णी आदर करे, देजे अढलक दान ॥ स० ॥ असन
पान खादम सादिम जला, सुख पामी असमान ॥
॥ स० ॥ चु० ॥८॥ कोह्यो काचो कडुओ आकरो, नि
रस लुखो अन्न ॥ स०॥ पड्यो रड्यो पसुपखी चाखीयो,
मत देजे कोइ वन्न ॥ स०॥ चु०॥९ ॥ रात उघाडो र
ह्यो जे सुखडो, विणठो नावे काम ॥ स० ॥ स्वादहिन
मत देजो साधुने, जोजे ठाम कुठाम ॥ स०॥ चु०॥१०॥
पाती जेद मतकरजे जिमण समे, मरम मत बोले मूल

अथ ढाळसागर श्री हरिवंस चरित्र सातमो खंड प्रारंभ·

दुहा ॥ साधु नमु सुरतरु समा, वंछित फल दातार ॥ अब सप्तम अधीकारनो, भविक सुणो विस्तार ॥ १ ॥ भन्नी श्री मणिचूडानि, खेचर कियो अपहार ॥ अर्जुन हुवो वाहरु, वेहुडावि तिणवार ॥ २ ॥ शुरवीर गुण आगलो, पारथ प्रवल प्रताप ॥ देखी पांडू प्रथविपती, विस्मय पाम्यो आप ॥ ३ ॥ धर्म नंद धरमातमा, नृप पदवि थापत ॥ सकल घरानि साहिवी, आपण पे पामत ॥ ४ ॥ अवर जिम दिनकर करी, ध्वज करी देउल जेम ॥ युद्धिष्ठिर राजा करी, प्रथवी शोभी तेम ॥ ५ ॥

ढाल १२० मी ॥ हमीरानी देशी ॥ प्रथवी रसवती खरी, तरुवर अधीक फलतारे ॥ दूध घणो सुरभी तणो, माग्या घन वरसतारे ॥ १ ॥ धरम राजा जग जाण ए ॥ ए आकणी ॥ लाभ घणो व्यापारमें, चाकर वहुला ग्रासोरे ॥ भीक्षुकने भीक्षा घणी, न रहे कोइ निरासोरे ॥ ध० ॥ २ ॥ पुत्रवती तो कामनी, सुहागण सोभागोरे ॥ भोर भलाइ आदरे, घर घर दिजे तागोरे ॥ ध० ॥ ३ ॥ बेटा माने वापने, पूजे मायना पायोरे ॥ गुरुने माने चेलफा, वरते निरतो न्यायोरे ॥ ध० ॥ ४ ॥ इति अनिति नको तिहा, अवर न को विपग्तिोरे ॥ वहु भगती सासु तणी, सोक्या माहि प्रीतोरे ॥ ध० ॥ ५ ॥ पाप हणवे हिंसका, झुठ गिलने

लागी द्रोपदा ह्विवे कृष्णने, कुमरीने शिख देय ॥ स० ॥ चु० ॥ २० ॥ पडु महीपती सेनी हलो मिली, सगप ए राखण सच ॥ स० ॥ द्रुपद राजा निज पुर आवी यो, मिलीने पाण्डव पच ॥ स० ॥ चु० ॥ २१ ॥ गजपुर नगर सिणगारयो चिहु दिशे, मिलीया लोक अपार ॥ स० ॥ उन्नी टोले टोले गोरडी, गावे मगल च्यार ॥ स० ॥ चु० ॥ २२ ॥ उछव मोहछव विविध प्रकारथु, जोता अचरिज कोड ॥ स० ॥ अनुक्रमे आया निज महीलमा, पडू सूतनी जोड ॥ स० ॥ चु० ॥ २३ ॥ प डू नृपती सहु राजा तणी, सतोखी सुखदाय ॥ स० ॥ करी विविध प्रकारे पेरामणी, निज कुल शोभ च ढाय ॥ स० ॥ चु० ॥ २४ ॥ विनय करी पगे लागी द्रोपदी, सहुने दिधी शीख ॥ स० ॥ नृपति पोहोता नि ज निज स्थानके, मारग खाता इख ॥ स० ॥ चु० ॥ २५ ॥ कुति मन हरखीत हुइ घणी, लागी वहुअर पाय ॥ स० ॥ पुत्रवति होजे तु वहु, ए आशीष सो हाय ॥ स० ॥ चु०॥२६॥ नीत नीत नवला रग वधाम णा, नव नव मगल माल ॥ स०॥ गुणसागर सूरि पुण्ये ल्ह्यो, एनुणविस सोमी ढाल ॥ स० ॥ चु० ॥ २७ ॥

चोपइ ॥ खड खड रस बे नव नवो, सुणता मीठा साकर जेवो ॥ श्री हरी वश चारित्र जय जयो, छठो खण्ड ए पूरण थयो ॥ १ ॥ इति श्री साळसागरे श्री हरीवंश चरित्र वर्णनो नाम शष्ठमो खंड समाप्त ॥

अथ ढालसागर श्री हरिवंस चरित्र सातमो खंड प्रारंभ॰

दुहा ॥ साधु नमु सुरतरु समा, वंछित फल दातार ॥ अब सप्तम अधीकारनो, भविक सुणो विस्तार ॥ १ ॥ भद्री श्री मणिचूडानि, खेचर कियो अपहार ॥ अर्जुन हुवो वाहरु, वेहुडावि तिणवार ॥ २ ॥ शुरवीर गुण आगलो, पारथ प्रबल प्रताप ॥ देखी पाडु प्रथविपती, विस्मय पाम्यो आप ॥ ३ ॥ धर्म नंद धरमातमा, नृप पदवि थापत ॥ सकल धरानि साहिबी, आपण पे पामत ॥ ४ ॥ अवर जिम दिनकर करी, ध्वज करी देऊल जेम ॥ युद्धिष्ठिर राजा करी, प्रथवी शोभी तेम ॥ ५ ॥

ढाल १२० मी ॥ हमीरानी देशी ॥ प्रथवी रसवती खरी, तरुवर अधीक फलतारे ॥ दूध घणो सुरभी तणो, माग्या घन वरसतारे ॥ १ ॥ धरम राजा जग जाण ए ॥ ए आकणी ॥ लाभ घणो व्यापारमें, चाकर वहुला ग्रासोरे ॥ भीक्षुकने भीक्षा घणी, न रहे कोइ निरासोरे ॥ ध० ॥ २ ॥ पुत्रवती तो कामनी, सुहागण सोभागोरे ॥ भोर भलाइ आदरे, घर घर दिजे तागोरे ॥ ध० ॥ ३ ॥ बेटा माने बापने, पूजे मायना पायोरे ॥ गुरुने माने चेलडा, वरते निरतो न्यायोरे ॥ ध० ॥ ४ ॥ इति अनिति नको तिहा, अवर न को विपत्तिोरे ॥ वहु भगती सासु तणी, सोक्या माहि प्रीतोरे ॥ ध० ॥ ५ ॥ पाप इणवे हिंसका, झुठ झिलने

॥ ध० ॥२८ ॥ हरि हलधर आदे करी, साजन माहि सनेहोरे ॥ दुर्योधन सनमानीयो, पोहता निज निज गेहोरे ॥ ध० ॥२९ ॥ वीसोत्तर सोमी ढाळमे, त्रिती त णो अधीकारोरे ॥ श्री गुणसागर सूरिजी, धर्म सदा जयकारोरे ॥ ध० ॥ ३० ॥

दुहा ॥ दुर्योधन कहे तातसु, मुख मिठा चित्त कूड ॥ पाण्डव कपटी परगडा, रण कायर घर सूर ॥ ॥ १ ॥ यादव जोर विचारवे, मनमे आणी गुमान ॥ मुझसु हशिया हासते, साले साल समान ॥ २ ॥ जिणशु तेण प्रकारशु, को करी दाय उपाव ॥ जोमी वभाव पाडवा, तो हु राया राव ॥ ३ ॥ इम विचार करता थका, जाइ सघला ताम ॥ एहवे तिहा कण आवीयो, मामो शकुनी नाम ॥ ४ ॥

ढाल १२१ मी ॥ हु तुम साथे न वोलु ऋपभजी ॥ ए देशी ॥ ताम दुर्योधन राय वोलावे, मामाने हेत आणीजी ॥ मुख नीसासो मूकी नाखे, वैरी तणो ब ल जाणीजी ॥ १ ॥ मननो मेलो अधिक कुशेलो, कौ रव कपटी पूरोजी ॥ धन जन वाहृ तणे वले वलीयो, ठलवल करवा सूरोजी ॥ म० ॥ २ ॥ पाडव सज्ञानी शोभा देखी, मुझ हुवे दु ख अपारोजी ॥ वली पाडव ने पचाली हशीया, कियो अध तणो कुमारोजी ॥ म० ॥ ३ ॥ शकुनी कहे पहेलु नवी किधु, वधती वैरी वेलजी ॥ मूळ थकी जो छेदत एहने, तो पामत जस

केलजी ॥ म० ॥ ४ ॥ हिवे पांडव साथे नवी चाले, एहनो सबलो साथजी ॥ भाइ पच माहोमाही सचे, हेत घणो हरी नाथजी ॥ म०॥५॥ एक उपाव अछे मुझ आगल, देव पासा सुख दायजी ॥ देश ब्भावु जीसि कपटे, जुवा खेलावी रायजी ॥ म० ॥ ६ ॥ इम विच्यार करी पिताने, हरख्यो मन राजानोजी ॥ शकुनी भेद पासा नो जाणे, माने माहरु मानोजी ॥ म० ॥ ७ ॥ पाम्डव ने तुमे आही तेभावो, विदुर मोकली तातजी ॥ सभा रचीने द्यूत रमाडु, चाले वन विख्यातजी ॥ म० ॥८॥ सभा करावी द्रव्य लगावी, शोभानो नही पारजी ॥ प घरावी सिंघासण माड्यो, उछव विविध प्रकारजी ॥ ॥ म० ॥ ९ ॥ तेभी हरी हलधरने पाडव, तेड्या दशे दसारजी ॥ बहु सनमानी पाडव साथे, पोखे प्रेम अपारजी ॥ म० ॥ १० ॥ हुवो प्रात सभामा आयो, दुर्योधन भूपालजी ॥ शत भ्रात सुभट सघाते, सेन्या सवि सभालजी ॥ म० ॥ ११ ॥ पायक पोताना सघला मेल्या, योध तणे त्या द्वारजी ॥ आयुध कवच टोप तनु सजीया, आया सभामझारजी ॥ म० ॥ १२ ॥ गाम गामथी तुरगम आवे, मदगल ताजा तगजी ॥ जभीत पाखर झलके अग माही, नाभे शिश मन रगजी ॥ म० ॥ १३ ॥ भिषम द्रोण कर्ण दु शासन, शकुनी सबल सुत एहजी ॥ कृपाचार्यने अश्वथामा, वाहीक अति बल देहजी ॥ म० ॥ १४ ॥ सभा मध्य भड र

॥ ध० ॥२८ ॥ हरि हलधर आदे करी, साजन माहि सनेहोरे ॥ दुर्योधन सनमानीयो, पोहता निज निज गेहोरे ॥ ध० ॥२९ ॥ वीसोत्तर सोमी ढालमे, प्रिती त णो अधीकारोरे ॥ श्री गुणसागर सूरिजी, धर्म सदा जयकारोरे ॥ ध० ॥ ३० ॥

दुहा ॥ दुर्योधन कहे तातसुं, मुख मिठा चित्त कूड ॥ पाण्डव कपटी परगडा, रण कायर घर सूर ॥ ॥ १ ॥ यादव जोर विचारवे, मनमे आणी गुमान ॥ मुझसु हशिया हासते, साले साल समान ॥ २ ॥ जिणशु तेण प्रकारशु, को करी दाय उपाव ॥ जोमी वमावु पाडवा, तो हु राया राव ॥ ३ ॥ इम विचार करता थका, जाइ सघला ताम ॥ एहवे तिहा कण आवीयो, मामो शकुनी नाम ॥ ४ ॥

ढाल १२१ मी ॥ हु तुम साथे न बोलु ऋषभजी ॥ ए देशी ॥ ताम दुर्योधन राय बोलावे, मामाने हेत आणीजी ॥ मुख नीसासो मूकी जाखे, वैरी तणो ब ल जाणीजी ॥ १ ॥ मननो मेलो अधिक कुशेलो, कौ रव कपटी पूरोजी ॥ धन जन वाहृ तणे बले बलीयो, छलबल करवा सूरोजी ॥ म० ॥ २ ॥ पाडव सभानी शोभा देखी, मुझ हुवे दुःख अपारोजी ॥ वली पाडव ने पचाली हशीया, कियो अध तणो कुमारोजी ॥ म० ॥ ३ ॥ शकुनी कहे पहेलु नवी किधु, वधती वैरी वेलजी ॥ मूल थकी जो छेदत एहने, तो पामत जस

॥ म० ॥ २४ ॥ प्रथम माव नाख्यो राजाए, बोल्यो श कुनीआराजी ॥ जित्यो ए दुर्योधन राणो, पाडु तणा सु त हारयाजी ॥ म०॥२५॥ अरिने डावे जुवो खेलावे, वि दुर तणे नही सारेजी ॥ हयवर गयवर रहवर पुरवर, राज अने त्रिय हारेजी ॥ म०॥२६॥ राज सघलो करी आपेवस्य, पचाली तेमावेजी ॥ निरजय थइ जम चा ल्या वेगे, पचाली मदिर आवेजी ॥ म० ॥ २७ ॥ पर पुरुष दिठा आवता, घरमा पेठी नारीजी ॥ दाशीए तिहा राख्या वारी, नवी लोपीजे कारजी ॥ म०॥२८॥ फिरी पाछा आया सुजट, स्वामी अबला नावेजी ॥ जाखे दुर्योधन मछर धरतो, ए परोहितथी शु थावे जी ॥ म०॥२९॥ ऊठ दु शासन जातु वेगे, लाव्य नारी मुज पासेजी ॥ ते दिन सुतु विसरयो जाइ, सहु देखता किधी हाशीजी ॥म०॥३०॥रोस जरयो दु शासन राणो, आवे करत आवाजजी॥देखी द्रोपदी आसु ढाले, शि रहेशे मुज लाजजी ॥ म०॥३१॥ जणे दाशी मोटा तु म राणा, अबलाशु सो प्राणजी ॥ मेरुकि मत तजे मर जादा, मानो वचन राजानजी ॥ म० ॥ ३२ ॥ चरण प्र हार हणी दाशीने, आयो मदिर मांहीजी ॥ नारी नाशी जितर जाइ, दुर्बुद्धी केरू थाइजी ॥ म० ॥ ३३ ॥ रीस करीने मारी ते नारी, लीधी झाली केसजी ॥ धाय पुकार करे विलपती, आवला वाले वेसजी ॥ म० ॥ ॥३४॥ जाइ मारे नथी अवसर, किम आज सजा म

ह्या तरवारी, युद्ध जाणी तिहा प्रौढजी ॥ गंइ निशाण गनीर स्वर वाजे, जोइ विदुर थयो दृग मूढजी ॥ ॥ म० ॥ १५ ॥ धृतराष्ट्र सना मध्ये बेठा, पावल सहु राय राणजी ॥ तिणे समे पाडव पधारया, जिम निशा प्रगटीत नाणजी ॥ म० ॥ १६ ॥ पाडवने सर्व सना देखाणी, जोइ थया रलीयातजी ॥ प्रिती करी दुर्योधने काढी, द्युत क्रिमानी वातजी ॥ म०॥१७॥ आपणे रमीए इहा वेहु नाइ, रमत सनामाहि बेठाजी ॥ जिम अर्जुनने सहदेव तिहा, नकुल चिता माही पेठाजी ॥ म० ॥ १८ ॥ युधीष्टीर कहे सुणो दुर्योधुन, ते द्युत राजवी कर्मजी ॥ परनारी सग पशु वध करवो, ए महत तणो नही धर्मजी ॥ म० ॥ १९ ॥ हशी बोल्यो राय दुर्योधन, सत्य कहु धर्मरायजी ॥ क्षत्री तणो धर्म द्युत आखेठक, करता सुखे दिन जायजी ॥ म० ॥ २० ॥ वलतु वचन कह्यु नलु रमशु, कुणे न राख्या वारीजी ॥ अर्जुननु अनिमान न राख्यु, थइ बेठा जुहारीजी ॥ म० ॥२१॥ दुर्योधन दु शाशन शकुनी, मिली कर्ण कुमती एहजी ॥ पाडव प्रते वायक नाखे, सना सुणता तेहजी ॥ म० ॥२२॥ कायक होड वदीने रमीए, तो ते ठलट थायजी ॥ जे काइ होड करो ते आपु, इम नाखे युधीष्टिर रायजी ॥म०॥२३॥ प्रथम डावमें शु आपवु, कहो युधीष्टिर रायजी ॥ स्वरथ पलाण सहित ए घोडा, आपु मुख केहेवायजी

हो ॥ आवो धावो उतावलां, सियल तणा रखवाल हो ॥ कु० ॥ १ ॥ परमेष्टी मन ध्यावती, जिनशासन शीर ताज हो ॥ दुष्ट तणे हाथेपडी, छोडावो मुऊ आज हो ॥ कु० ॥ २ ॥ गागेयने गुरु देवता, आणी ग्रहि जिम चेरि हो ॥ दुरमती आइ ए सहुने, किण हिन पाठि फेरी हो ॥ कु० ॥ ३ ॥ पाच पति शीर माहरे, पिण नविऊठ्या कोइ हो ॥ मानी मान महाबलि, बेठा निचु जोइ हो ॥ कु० ॥ ४ ॥ हाक वागी पुर शेहेरमा, करे किसु किरतार हो ॥ पाडव केरी प्रेमदा, लुटे सन्ना मऊार हो ॥ कु० ॥ ५ ॥ दुष्ट दु शासन खेंचियो, द्रोपदी चिर चतुर हो ॥ आवी ताम उन्ना रह्या, सानिध्यकारी सुर हो ॥ कु० ॥ ६ ॥ चीर अमुलख दुसरो, ढाक्यो सती शरीर हो ॥ ते पिण खेच्यो तिसरो, पूरयो नवरग चीर हो ॥ कु० ॥ ७ ॥ देखो राड कपटणी, पहिस्या ऊाऊा चीर हो ॥ ल्यो उतारी वेगसु, कहे दु शासन वीर हो ॥ कु० ॥ ८ ॥ इम अनुक्रमे पूरीयां, आठोत्तर सो पर्म हो ॥ शील प्रन्नावे राखीयो, सन्ना माहि शर्म हो ॥ कु० ॥ ९ ॥ श्वेत निला रातन्ना, नारी कुजरवान हो ॥ एक एक पे रग आगला, पूरया श्री न्नगवान हो ॥ कु० ॥१०॥ जैजैकार देवे किया, सतिय तणो सत जाण हो ॥ दुट दु शासन ऊाखो पड्यो, हुवो अधीक खिसाण हो ॥ कु० ॥ ११ ॥ न्नीषम न्नाखे न्नूपति, न्नीम अर्जू

ऊारजी ॥ राजा सहु मुने देखतो अगे, किम रहेशे मु
ज आचारजी ॥ म० ॥ ३५ ॥ नारी चिंते हवे किम
होस्ये, हारेठ मुऊ कतजी ॥ कुण जिवता मुऊने ताणे,
सही थया कलपतजी ॥ म० ॥ ३६ ॥ गागेयने गुरु
द्रोणाचारज, वेठा सहु राजानजी ॥ सभा विच दुर्यो
धन आगे, उभी राखी आणजी ॥ म० ॥ ३७ ॥ क
हे दु शासन वेसो खोले, निठऊरी मे लाजीजी, थारी
ते गम फिरीयो पाणी, खीजवशे ऊहे नाजीजी ॥ म०
॥ ३८ ॥ रिसाणो दु शासन राणो, खेंचे चिर अजा
णजी ॥ गुणसागर सो एऊवीसमी ढाले, होशे सत
परमानजी ॥ म० ॥ ३९ ॥

दुहा ॥ मेलो पालव कहे प्रेमदा, तव बोले इम गा
ज ॥ गाडो पटराणी पणो, पछी करजो लाज ॥ १ ॥
तु हशीथी मुऊने, आज थइ आधीन ॥ लाज न रा
खु ताहरी, इम भाखे मती हीन ॥ २ ॥ कुबुधी वचन
इम साभली, कत सामु जोवे नार ॥ भीम थयो तव
रातडो, वारे धर्म कुमार ॥ ३ ॥ आज जो होइ पुण्य
आपणा, तो किम हरीए चिर, ते माटे नवी बोलवो,
राखो समता धरी धीर ॥ ४ ॥ अबला हुइ अनाथ
णी, उलट्यो दु ख अगाह ॥ ढाकी अग तनु कपती,
नयणे नीर प्रवाह ॥ ५ ॥

ढाल १२२ मी ॥ शियल सरु तरुवर शेवीए ॥ ए
देशी ॥ कुण पत राखे माहरी, कोप्यो दुरीजन काल

कुंता मात हो ॥ कु० ॥ १८ ॥ आगल आवी नामी यो, माताजीने शीस हो ॥ आज पुत्र मे साम्भल्यु, दु हवाणा तुम दिश हो ॥ कु० ॥ १९ ॥ हु आवीश तु म केडले, मेतो घडी न रहेवाय हो ॥ पुत्र पाखे माय श्री, तोले हिणि थाय हो ॥ कु० ॥ २० ॥ एतले विदु र आवीया, माजी कहे एम वाण हो ॥ राजा तुमने ए शु थयो, हूता अधीक सयाण हो ॥ कु० ॥ २१ ॥ विदुर कहे हु शु करु, माहरु कांइ न थाय हो ॥ गागे य द्रोण ए दु ख धरे, पिण दुष्टने न केहवाय हो ॥ कु० ॥ २२ ॥ माजी मेलो इहा किणे, रेहशे अमारे पास हो ॥ राजा नीपम जणावीने, तुम्हे चालो वनवास हो ॥ कु० ॥ २३ ॥ शिख आपी निज नारीने, रेहेज्यो माजी पास हो ॥ सेवी तृष्या अरु भूखमी, दु ख घ णो वनवास हो ॥ कु० ॥ २४ ॥ केम रहेवाये मुझथी, वैरी बहुलो साथ हो ॥ लाज न राखी माहरी, इणे ग्रह्यो मुझ हाथ हो ॥ कु० ॥ २५ ॥ वेश खोले कहे मु झने, साम्भलतां तुम कत हो ॥ जो मुझने नवि तेडशो, तो आणीश मुझ अत हो ॥ कु० ॥ २६ ॥ चाले सा थे प्रेमदा, सासुने पगे लाग हो ॥ माता पिण साथे हुइ, नहि रेहवा मुझ लाग हो ॥ कु० ॥ २७ ॥ वडा तणे पगे लागीने, तात तणी लेइ शिख हो ॥ पां डव वनमे चालिया, धरी मन समता इख हो ॥ कु० ॥ २८ ॥ बाविस सोमी ढालमें, कौरव कीधो कोप हो॥

न वलंगत हो ॥ आण न लोपे राजा तणी, नहि तो आणे तुम अत हो ॥ कु० ॥ १२ ॥ सती वण नवि ले मीए, एहने सीयल समर्थ हो ॥ नारी पाम्ब कने मो कलो, नहितर थाशे अनर्थ हो ॥ कु० ॥ १३ ॥ विदुर कहे मे पेलु कह्यु, आचरता परपच हो ॥ आगले अ नर्थ नीपजे, जो जो एहना सच हो ॥ कु० ॥ १४ ॥ कौरव कामनी रुखडे, रोति वनमझार हो ॥ तो मा हरु कह्यु मानजो, जो सत होय ससार हो ॥ कु० ॥ ॥ १५ ॥ धृतराष्ट्र सुत आवला, हिवडु फुटयु आज हो ॥ सती वीटवी शु कियो, खोइ सभामे लाज हो ॥ कु० ॥ १६ ॥ होइ झाखो राजीयो, छोडी द्रोपदी नार हो ॥ पचाली जग परगटी, सतिय सिरोमणी सार हो ॥ कु० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ वरस बार वनमा वसे, नष्ठ चर्या ए एक ॥ दुर्योधन कहे पाडु सुत, वली कहु वात विवेक ॥ ॥ १ ॥ छता पडे जो वरसमा, तो फिरीने वनवास ॥ बार वरस लगे भोगवे, एछे माहरी भाष ॥ २ ॥ आज्ञा ते अगी करी, द्रोपदी बाधव लेह ॥ युद्धीष्टी र गजपूरे आवीया, गुरु प्रणमि ससनेह ॥ ३ ॥ प्रेमे नमी मा बापने, विरम्या ते तेणीवार ॥ युद्धीष्टीरे मा मी कियो, वात तणो विस्तार ॥ ४ ॥

ढाल मूलगी तेहीज ॥ मारी मान महाबलि, चा लिया वन भ्रात हो ॥ शिख करवा आविया, जिहा छे

नूए सिंचतारे हा ॥ केडे थया लहि विखवाद ॥ मे० ॥ ७ ॥ ते पाचे पुरथी निसरयारे हा, तव नगर थयु निस्तेज ॥ जीव जते पचेद्रि विनारे हा, तनुनु न रहे जेम तेज ॥ मे० ॥ ८ ॥ युधीष्टीर मावित्रने नमिरे हा, बोले एहवा बोल ॥ प्रतिज्ञा अम पालतारे हा, वधशे तुमारो तोल ॥ मे० ॥ ९ ॥ सुपुरुपने मान धन ठेरे हा, रखे धरो मन खेद, धर्म सदा दिल धारयोरे हा, ते साधे अनेक उमेद ॥ मे० ॥ १० ॥ मातजि मोह तणे वशेरे हा, परवश थाए प्राण ॥ विर पलि विर मातनुरे हा, अरिहतानि वहियो आण ॥ मे० ॥११॥ अम तात तणि तक साधयोरे हां, सेवजो गुरुना पाय ॥ आशिष देवो अमनेरे हा, जेहथी विघन पलाय ॥ मे० ॥ १२ ॥ एम अभ्वासी सर्व स्वजननेरे हा, पुरिजन साहमु जोय ॥ काइ करी होय अमे किलामना रे हा, ते खमजो सहु कोय ॥ मे० ॥ १३ ॥ नींतर ते नयणे वल्यारे हां, तव सहु पुरना लोक ॥ पिए पग नवि चाले पुर नणिरे हां, सहुने वाध्यो शोक ॥ मे०॥१४॥ गुणसागर कहे साम्नलोरे हा, ढाल अति रसाल ॥ विसारया न विसरेरे हा, वाहला कोइ काल ॥ मे०॥१५॥

ढाल तेहिज ॥ वधावानी देशी ॥ कृष्ण नरेसर आवियो, काइ आयो हो आयो वहु परीवारशु ए ॥ पाडव साथे वोलियो, काइ वोल्यो हो वोल्यो सकल प्रकारशु ए ॥ १ ॥ कौरव कूटि काढिए, काइ काढि

श्री गुण पाडव नवी करे, मरजादानो लोप हो॥कु०॥२९॥

दुहा ॥ विहावे अति द्रोपदी, कुर अने करमिर ॥ दिया उमाइ पान ज्यु, पाम्व भीम समीर ॥ १ ॥ विदुर विबुध गुरु सारिखो, देइ शिख विशेष ॥ पोहचावी पाछो वल्यो, आसु ढाले अशेष॥ २ ॥ धृष्टदुमन आमो फिरी, कपिलपुर आणत॥ खबर तदा वनवासनी, यादवपति जाणत ॥ ३ ॥

ढाल १२३ मी ॥ हे जादु जगमग जोति सुहावे ॥ ए देशी ॥ ते वात सुणी माय वापनेरे हा, नयणा न माये नीर ॥ मे एक कुताने पाडुएरे हा, धरु न जाए धीर ॥ मेरे साजना साभलजो सहु कोय॥ १ ॥ मौनपणो मुखे आदरिरे हा, पाडु न बोले बोल ॥ धर्म पुत्र धीरज धरिरे हा, तव करे थइ अमोल ॥ मे० ॥ ॥ २ ॥ खेदने खरखरो मत करोरे हा, तातजी अमे वन जाय ॥ सत्य प्रतिज्ञा पालसुरे हा, वधस्ये तव महिमाय ॥ मे०॥३ ॥ सुपुरुष न राचे राज्यनेरे हा, राज्य जाए तो जाउ ॥ सुख दु ख वनथले वेठिएरे हा, पिण एक वचन मत जाउ ॥ मे० ॥ ४ ॥ धैर्य धरिने तातजीरे हा, आपो अम आदेश ॥ बोल न बोलाए दुखेरे हा, रोक्यो कठ प्रदेश ॥ मे० ॥ ५ ॥ हा ना काइ न करी शकेरे हा, वितक जाणिने तेह॥बाधव पाचेने द्रौपदिरे हा, वने चाल्या तजी गेह ॥ मे० ॥ ६ ॥ पडु कुतिने अविकारे हा, ध्वाने बाला आद॥ आसु जले

जणाव्यो हो अरीम पती जोयु धमी ए ॥ ११ ॥ प
यशी पेट दुखदायकु, दुखदायक हो कस तणो परे जो
इस्यो ए ॥ गाफील खिजे वडवमा, काइ तेहथी हो हु
शीयारीमें होइज्यो ए ॥ १२ ॥ फागुण कालीचउदश,
मध्य राते हो करशे तुम्ह सुकुहडो ए ॥ देशी, आग
उतावलो, ए ब्राह्मण हो ब्राह्मण नहीं चुहडो ए ॥१३॥
पच पुत्रसु डोकरी, काइ वहशु हो रातवसा सुख नि
रमली ए ॥ आग जगी फीरी पाडव पुल्या, सा बुढी हो
वेटा वहशु परजली ए ॥ १४ ॥ नीमे नुजाबल साही
यो, साहीयो पुरोहित हजुरमा जालीयो ए ॥ पाडवजी
उवारीया, कांइ काकेहो एह उपद्रव्य टालीयो ए ॥
॥ १५ ॥ लोक मिली हाहा करे, काइ हुवो हो एह अ
कारज अति घणो ए ॥ कौरव तो अति कुरलीयो,
काइ लोगामे हो दोश उतारण आपणो ए ॥ १६ ॥
सक कौरवनी खरी, काइ पाडव हो नाठा जाइबे सही
ए ॥ गिरे पमे ने आखडे, काइ जाणे हो दिन रात
जावे वही ए ॥ १७ ॥ द्रुम गिरीने वन नदी, विसामो
हो नवी लीए शका परहरीए ॥ दर्भांकुर पग विंधी
ए, काइ विंधे हो काटा खुचे काकरीए ॥ १८ ॥ थाकी
माता अति घणी, काइ थाकी हो पचाली पग नवी
भरे ए ॥ नकुल अने सहदेवजी, कांइ थाक्या हो चा
लवाने आलस करे ए ॥ १९ ॥ एक खधोले मायमी,
काइ चोहडीहो बिजे खधोले वहु ए ॥ वधव होइ वा

हो कादि दिजे देशवी ए ॥ राजाजीने थापिए, काइ थापी हो थापी शु विशेषथी ए ॥ २ ॥ पाडव बोले स्वामीजी, काइ स्वामी हो स्वामी वनमें चालतो ए॥ बोल न चूक्यो आपणो, काइ आपणु हो आपणु बो ल्यो पालवो ए ॥३॥ देव प्रसादे तुम्हारडे, काई तुम्हारे हो प्रसादे सहु पाधरु ए ॥ होशे कारज सुदरु, काइ सुदरु हो सघलु कारज सादरु ए ॥ ४ ॥ वाइ सुन द्रा पुत्रशु, काइ लेइ हो पोहोच्या प्रभु द्वागमती ए ॥ पचाली पीहरीए, काई पीहरीए हो पीहरीए न रहि सति ए ॥५॥ साते माणस सचरे, काइ सचरे हो नूख अने त्रप अवगणी ए ॥ माता पुत्र सनेहडे, काइ नेहमे हो राची नारी आति घणी ए ॥६॥ दिवस केतलाने आतरे, काइ आतरे हो पुरोहित पाव धारीयो ए ॥ मोकलियो कौरव तणो, काइ कौरव हो कौरवनो हितकारियो ए ॥७॥ भाखे देव दया करो, काइ दया हो वनवासे मति सचरो ए॥ खमो अपराध अमारडो, अमारो हो मानेवो कह्यो खरो ए ॥८॥ इद्रप्रस्था नामे भलो, पुर आव्यो हो कीधी गाढी विनति ए ॥ वइठा तुम सुख भोगवो, भो गवो हो मानो हमारी वीनति ए ॥ ९ ॥ धोलो दूध विचारी ए, विचारी हो आया वारिणा वाति ए ॥ ला ख घरे उतारीया, काई उतारीया हो जाइ माति घटीया रति ए॥ १० ॥ विदुर कियो उपगार हे, उपगार हो सुरग वणावी पढवडी ए ॥ कागल माहीं जणावीयो,

नने वारे, भीम तणे मन रोस थयो ॥ १ ॥ मांसाहा
री निज आचारी, अबलाने शु चोट करे ॥ जो बलवं
तो गो मयमतो, मुऊ साहमा पग क्यु न भरे ॥ २ ॥
धीय शींचाणी आग तणीपरे, तरु उपाडी आइयो ॥
वृक्ष उखाभी भीम नरेसर, राक्षस उपर धाइयो ॥
॥ ३ ॥ होत लथा बथ होत बथावथ, उपर तले आ
वी दोइ ॥ जाय हेरूवा कुती शेती, कहे हणीयो तुम्ह
सुत कोइ ॥ ४ ॥ खग्ग सबाही आया धाइ, राजा
जमरुपी होइ ॥ गदा उपाडी हेठो पाडी, मारी लीयो
भीमे सोइ ॥ ५ ॥ ताम हेडबा एह कुटबा, साथे
रही साता पावे ॥ भूली पडी पचाली बाला, देवि त
व शोधी लावे ॥ ६ ॥ तव ते थाक्या देवि हेडवा, सा
सु वहुने खाधे धरे ॥ कुतीने राजाजी हठे, भीम हे
डवा व्याह करे ॥ ७॥ मदिर विविध प्रकारे वणावी,
सेज तणी रचना किजे ॥ पान फूलने तेल सुगंधा,
वस्त्र अनोपम पहीरीजे ॥ ८ ॥ भीम सघाते सुखवी
लसता, हेडबाने गर्भ रहे ॥ गर्भ तणी एकाते हेडं
वा, सासुजीशु वात कहे ॥ ९ ॥ शाल दाल घृत र
सोइ, तिवण तो खाटा खारा ॥ देवि हेडवा आप स
मारे, देवर जेठ जिमे सारा ॥ १० ॥ चक्राभीध पुरी
देवशर्मा घरे, पाडवजी आव्या चाली ॥ सासु जेठ त
णे आदेशे, हेरूवा पिहर हाली ॥ ११ ॥ रोज सुणं
ता भीम भणतो, ब्राह्मण नारी किउ रोवे ॥ माथे हाथ

धोया, काइ पुठे हो समरथथी होवे महु ए ॥ २० ॥ राजा अर्जुन कर धरी, काइ चाल्यो हो चाल्यो मारग वकमो ए ॥ माणस पट नीर वाहीया, काइ जाइ हो जाइ सुखमें नीमडो ए ॥ २१ ॥ तेवीमा सोमी दालने, काइ टलीयो हो टलीयो उपद्रव्व धर्मथी ए ॥ श्री गुणसागर सुरिजी, काइ होशे हो होशे सुख सुभ कर्मथी ए ॥ २२ ॥

दुहा ॥ विपम पथ वोली करी, पहुता निश्चल ठाम ॥ साथ सुइ सुखमे सहु, भीम चल्यो जल काम ॥ १ ॥ सरोवर जल लेइ वल्यो, पठे लागी ताम ॥ तिष्ट तिष्ट मुख भाखती, जास हेडबा नाम ॥ २ ॥ आवीयी मारण भणी, पिण पती करवा काज ॥ विनय करी करजोमीने, आगे उभी लाज ॥ ३ ॥ भीम भणे सुण भामनी, तुमे प्रकाशो आप ॥ राखसनाम हेरूबनी, वहीन अछु सकलाप ॥ ४ ॥ तुम हणवा हु मोकली, हु मोही तुम देख ॥ प्रभु हुशीयारी किजीए, राक्षस जोर विशेप ॥ ५ ॥ न्याहो मुझ प्राणेश तुम, हु तुम दाशी समान ॥ वनवाशे खिजमत करु, जिम वाधे मुझ वान ॥ ६ ॥ वनवासे शु न्याहवुं, भाखे भीम कुमार ॥ आडबर आणे अवसरे, करत न शोभ सिगार ॥ ७ ॥

ढाल १२४ मी ॥ योगननी देशी ॥ वात करता हाली चाली, राक्षस तो आइ गयो ॥ लाते मारी बे

हा तिहा शितलताइहो ॥ताप हरे परकी तनु केरो, ए ह तणी अर्धीकाइ हो ॥ २३ ॥ ढाल ए चोवीस सो मी, वक नामा राक्षस हणीयो॥श्री गुणसागर न रहे छानो, भीम वल जगमाही भणीयो ॥ २४ ॥

दुहा॥पाडव प्रभु मन चिंतवे, प्रगट हुवा हम आज ॥कौरव केडे लागशे, मतको विणसे काज ॥ १ ॥ आ धी राते निकल्या, सूतो मूकी गाम ॥ द्वैतवने आया वही, राखवा निज माम ॥ २ ॥ लोक वचनथी सांभ ली, ए सघलो विरतत ॥ दुर्योधन राजा घणो, माने हर्ष अत्यत ॥ ३ ॥ प्रियवद नामे भलो, दूत महा वा चाल॥काकोजी करुणा करी, मोकलीयो सुविशाल॥४॥ खवर हुइछे तुम तणी, दुर्योधन नरनाथ ॥ आवे छे तु म्ह उपरे, करणादिक बहु साथ ॥ ५ ॥

ढाल १२५ मी ॥ पर्थाडो वात करे धुर छेहथीरे॥ ए देशी ॥ द्रोपदिरे द्रोपदि रीसे परजलीरे, बोले रोस अपाररे ॥ कौरवरे कौरव केरू छाडे नहीरे, आवे पमीयो लाररे ॥ द्रो० ॥ १ ॥ राजरे राज लीयो धन सघलोरे, लीयो महातम वीनरे ॥ तो पिणरे पूठन छ मे पापीयोरे, पुण्याइ हम हीनरे ॥ द्रो०॥ २ ॥ धीग मुझरे नारीपणु घर तुम्ह तणेरे, धीग तुम्ह क्षत्री ना मरे ॥ बादीरे उपर बिबीनी परेरे, माडेछे पलाणरे ॥ द्रो० ॥ ३॥ सासुरे सासु प्रत्ये वहुअर कहेरे, वीर जननी ए नामरे ॥ काइरे काइ वरावे हेजथीरे, जाया

लगावी गाढो, ब्राह्मण गहेवरीयो होवे ॥ १२ ॥ ना
पे वरु नामे एक राक्षस, शिळा वीकुरोवी आवे ॥
नगर लोक नयनीत घणेरा, वचने पिण आति
विहावे ॥ १३ ॥ काउसगादिक करणी करता, परमे
ष्टी मनमे ध्यावे ॥ राजा प्रजा एक मनावी, उपद्रव्य
करवा पावे ॥ १४ ॥ राक्षस रोस तजीने सुधो, वात
राजासु इम नासे ॥ एक एक नर नक्षण कारण,
नीत पहोचावे मुझ पासे ॥ १५ ॥ राजा मानी पत्री
ठाणी, आज हमारो छे वारो ॥ माता वहीन टावर
वेटी, रोवेछे ए अवधारो ॥ १६ ॥ केवल ज्ञानी वात
कहीथी, पाडवथी टलशे कारो ॥ सोतो नाया अम दी
न आयो, वोले परदेशी प्यारो ॥ १७ ॥ ए सहुने रो
वता राखो, थारे वारे हु जाशु ॥ राक्षस हणीने लोक
सकलनो, हुतो रखवालो थाशु ॥१८॥ आप गयो रा
क्षस आवासे, हरख्यो देखी उचपणो ॥ सयल कुटवी
धापी खाशु, एहने तनुनो मास घणो ॥ १९ ॥ माहो
माही माच्यो झगडो, धगडे कारीज सारीयो ॥ गदा
प्रहारे वलवल केलवी, भीमे राक्षस मारीयो ॥ २०॥
पुष्फ वृष्टी अबरनी वाणी, जय जयकार ते उछली,
मोटो एह उपद्रव्य टलीयो, लोगानी पूगी रली ॥२१॥
जिनवयणे करतुती देखी, लोका पाडव जाणीया ॥
धन धन माता पिता धन करणी, पाडव सुजस व
खाणीया ॥ २२ ॥ चंदन चप जिहा जिहा जाए, ति

मुझ देह मझाररे॥ कारजरे कारज सकल सिद्धि करु रे, कोइ आगल न लहु हाररे ॥ द्रो० ॥ १४ ॥ विचारे सिद्ध हुवो हरी नदजीरे, गिरी शिखरे बेठो आपरे ॥ व्याधकरे व्याधक खेलत आहिडोरे, करतो दिठो पापरे ॥ द्रो० ॥ १५ ॥ वरज्योरे पिण नटले ए पापथीरे, जिम करतो गिमाररे॥आवेरे धनुष्य सबा ही साहमोरे, नाणे सक लीगाररे ॥ द्रो० ॥ १६ ॥ अर्जुनरे अर्जुन सामो होवतारे, धनुष्य छिनाइ लीधरे॥ खडगेरे लरुता खडग खसोटीयारे, प्रभुसे अधकी किधरे ॥ द्रो० ॥ १७ ॥ बाथेरे बाथे पखीया रोसशुरे, अडीया दोइ झुझाररे ॥ हारयोरे हारयो अर्जुन आगलेरे, हुवो जस विस्ताररे ॥ द्रो०॥१८॥ कुसमरे वृष्टी थइ प्रभु उपररे, प्रगट्यो सुरवर एकरे ॥ माग्यरे माग्य वर मुख भाखतोरे, पुछे आणी विवेकरे ॥ द्रो०॥ १९॥ वरनीरे पावे आपण कुणगेरे, कियो किसो जजालरे ॥ वैताढ्यरे वैताढ्य रथनुपुर भलोरे, पुरवर अधीक रसालरे ॥द्रो०॥२०॥इदररे इदर नामे राजीयोरे, विद्युत माली लघु भ्रातरे॥ काढ्योरे काढ्यो देश बाहिरेरे, करतो अति उतपातरे ॥ द्रो० ॥ २१ ॥ राक्षसरे राक्षस ते तल ताल तणे बलेरे, देश उजाडे सोररे ॥ भाख्योरे भाख्यो उपद्रव्य टालणोरे, ज्ञानी थारो जोररे ॥ द्रो० ॥ २२॥ मुक्योरे मुक्यो तुम लेवा भणीरे, मे दिठा गिरीवर अगरे ॥ वलरे वल जोवा माया करीरे, तुमे हु जि

पुण्य नीकामरे ॥ द्रो० ॥ ४ ॥ पुरुपरे पुरुप सहे किम एवडोरे, पीसुन पराजव काजरे ॥ मझ्गलरे मद मार ण न विसरे, अष्टापद घन गाजरे ॥ द्रो०॥५॥ एक जरे एकजणी नीरजय थइरे, नारी सिंहणी सोयरे ॥ सासुरे पचजणी निज जोवनोरे, वादी गमाव्यो जोयरे ॥ द्रो०॥ ॥ ६ ॥ राकेरे राक तणी परे मुकनेरे, विगोवी प्रवदा माहिरे ॥ पाचरे पाचे उना जोइयोरे, तरणु न त्रुटुं श्राहीरे ॥ द्रो० ॥ ७ ॥ मारेरे अने मरे त्रिय कारणेरे, जेहने शिर एक होयरे ॥ पुरुपरे पुरुप पचनी पदम णीरे, विटवी न उठो कोयरे ॥ द्रो० ॥ ८ ॥ एहरे एह वचन नीसुणी तदारे, अर्जुन जीम सहदेवरे ॥ फूकेरे फूक दिया सिलगे घणीरे, उठीया ततखेवरे ॥ द्रो० ॥ ॥ ९ ॥ युगतीरे युगती वचन समजावीयारे, धर्मनद राखेवा धर्मरे ॥ जेठरे मासतणी नदीनी परेरे, आया ठाम विचारी मर्मरे ॥ द्रो० ॥ १० ॥ प्रियवदरे प्रिय वद चरितव विसरज्यो, मारी मान चल्या मतिवतरे ॥ श्रीगीरिरे श्रीगधमादन आइयारे, गुपतपणो गुणवत रे ॥ द्रो० ॥ ११ ॥ इदररे इदर किल नगर अछे जलोरे, तिहा राखी निश्चल ध्यानरे ॥ राजारे राजा इदर तणो सुतरे, साधे विद्या सुजाणरे ॥ द्रो० ॥ १२ ॥ विद्यारे विद्या विधी अराधतारे, आवी उनी तामरे ॥ जग तीरे जावे श्री अर्जुनजीरे, किधो विद्या प्रणामरे ॥ ॥ द्रो० ॥ १३ ॥ विद्यारे जाखे कारज शुं करुरे, वसो

मुझ देह मझाररे॥ कारजरे कारज सकल सिद्धि करु रे, कोइ आगल न लहु हाररे ॥ द्रो० ॥ १४ ॥ विद्यारे सिद्ध हुवो हरी नदजीरे, गिरी शिखरे वेठो आपरे ॥ व्याधकरे व्याधक खेलत आहिडोरे, करतो दिठो पापरे ॥ द्रो० ॥ १५ ॥ वरज्योरे पिण नटले ए पापथीरे, जिम करतो गिमाररे॥आवेरे धनुष्य सबाही साहमोरे, नाणे सक लीगाररे ॥ द्रो० ॥ १६ ॥ अर्जुनरे अर्जुन सामो होवतारे, धनुष्य बिनाइ लीधरे॥ खडगेरे लडता खडग खसोटीयारे, प्रभुसे अधकी किधरे ॥ द्रो० ॥ १७ ॥ बाथेरे बाथे पडीया रोसशुरे, अडीया दोइ झुझाररे ॥ हारयोरे हारयो अर्जुन आगलेरे, हुवो जस विस्ताररे ॥ द्रो०॥१८॥ कुसमरे वृष्टी थइ प्रभु उपररे, प्रगट्यो सुरवर एकरे ॥ माग्यरे माग्य वर मुख भाखतोरे, पुछे आणी विवेकरे ॥ द्रो०॥ १९॥ वरनीरे पाछे आपण कुणगोरे, कियो किसो जजालरे ॥ वेताढ्यरे वेताढ्य रथनुपुर भलोरे, पुरवर अधीक रसालरे ॥द्रो०॥२०॥इदररे इदर नामे राजीयोरे, विद्युत माली लघु भ्रातरे ॥ काढ्योरे काढ्यो देश बाहिरेरे, करतो अति उतपातरे ॥ द्रो० ॥ २१ ॥ राक्षसरे राक्षस ते तलताल तणे वलेरे, देश उजाडे सोररे ॥ भाख्योरे भाख्यो उपद्रव्य टालणोरे, ज्ञानी थारो जोररे ॥ द्रो० ॥ २२॥ मुक्योरे मुक्यो तुम लेवा भणीरे, मे दिठा गिरीवर अगरे ॥ वलरे वल जोवा माया करीरे, तुमे ह जि

तो जगरे ॥ द्रो० ॥ २३ ॥ रथरे रथ वेगी प्रजु आवी यारे, राक्षस उपर सूररे ॥ जीत्योरे जीत्यो राक्षस जीयारे, सुजस तणा वरतूररे ॥ द्रो० ॥ २४ ॥ इंदररे इंदर सनमान लही घणोरे, प्रणम्या माजी पायरे ॥ चित्रांगदरे चित्रांगद मुखचरीत्र सुणतारे, सहु मन ह रखीत थायरे ॥ द्रो० ॥ २५ ॥ ढालजरे ढाल पचवि ससोमी जलीरे, हणीयो ते तल तालरे ॥ श्रीगुणरे श्री गुणसागर सूरजीरे, पांडव जश विशालरे ॥ द्रो०॥२६॥

दुहा ॥ माता पुत्र अने वहु, वेठा सुख पावंत ॥ क मल एक कंचन तणो, अंबरथी आवंत ॥ १ ॥ पंचा ली करमे लीयो, कमल वास निज सास ॥ लेता मन वाध्यो घणो, पामी अति उल्हास ॥ २ ॥ नामनी ना खे जिमशु, एहवा कमल उदार ॥ आणी आपो मुज जणी, नाह मतलावो वार ॥ ३ ॥

ढाल १२६ मी ॥ शियलसु रंगी चुदडी ए देशी ॥ लावोने कमल सुहामणा, कहे जीम जणी एम वाणरे ॥ हुश करु तुम उपरे, मारा पीउजी जीवन प्राणरे ॥ ला० ॥ १ ॥ ए कमल मुजने गमे, लावो नाथ मतला वो वाररे॥तुम सरिखे प्रितम उतेरे, मुज लाखेणो अवताररे ॥ ला० ॥ २ ॥ जामनीनो मन राखवा, उठ्यो जीम कुवर मतिवंतोरे ॥ पतिव्रताशुं प्रितमी, तिण बोल न फिरी वालतोरे॥ ला०॥३॥चाल्यो मारग वकडो, काइ उलघी विखम वाटरे ॥ देखी कमल वन शोजतो, अवे

हश धरी वन घाटरे ॥ ला० ॥ ४ ॥ लेइ कमल पाछो वल्यो, पुठे हुवो रक्षक देवरे ॥ बाधी राख्यो भीमने. काइ हाली न सके हेवरे ॥ ला० ॥ ५ ॥ फरके नेत्र दाहीणो, माताजी मनमें उचाटरे ॥ भीम सकट माही पड्यो, जोता नवी आयो सुन वाटरे ॥ ला० ॥ ६ ॥ उठा ताम उतावला, बधव च्यारे आणी सनेहरे ॥ पो होंची न सक्या तेहथी ॥ तव बाधीया पिण तेहरे ॥ ला० ॥ ७ ॥ कुता माता द्रोपदी, काइ एकलडी निर धाररे ॥ काउसग्ग ध्यान करी रह्या, सारी रात दिवस मझाररे ॥ ला० ॥ ८ ॥ केवल उछव कारणे, सुरपति आपे तव जायरे ॥ सति उपर सुर आवता, तव जान रह्यो खलायरे ॥ ला० ॥ ९ ॥ ज्ञानवले तव देखीयो, काइ सति तो रही बिदायरे ॥ पाच पाडवने शखचुरु, काइ बाधीया अति दुख थायरे ॥ ला० ॥ १० ॥ सुरप तिए सुर मोकल्यो, सो आयो छेमावण काजरे ॥ ते कहे लेता कमलने ॥ मे बाधीयाछे आजरे ॥ ला०॥ ११ ॥ छोड्यो इद्र आदेशथी, करी प्रिती घणी शखरायरे ॥ कमल लेइने आवीया, काइ प्रणम्या माजी पायरे॥ला० ॥ १२ ॥ माता भिडी हेजथी, काइ चा पे हियडा सा थरे ॥ उपद्रव्य टलियो धर्मथी, हेजे मिलिया सघलो साथरे ॥ ला० ॥ १३ ॥ छविसा सोमी ढालमे, श्री जैन तणो धर्म कीजेरे ॥ श्री गुणसागर सूरिजी, तो ततक्षण कारज सिजेरे ॥ ला० ॥ १४ ॥

दुहा ॥ वोलि गया षट मास जब, पुनरपी सोइ ॥ द्वैत वने आनदंम, वासर जाना जोइ ॥ १ खबर लेइ दुर्योधन, कीधी ढोड तेवार ॥ साहुण हुण सामटे, आयो विपन मझार ॥ २ ॥ हरी सुत त्रागद तणो, सरोवरछे सुविशाल ॥ रखवाला रोकवे, जोर करे नृपाल ॥ ३ ॥ चित्रागद आयो ढी, कोरव साथ विकराल ॥ सिंचाणो जीम चरक लि, लेइ गयो ततकाल ॥ ४ ॥ वूरो वावत पर तणे, वूरो लहे नर आप ॥ केडे पडता पाडवा, कौरव पति सताप ॥ ५ ॥

ढाल १२७ मी॥जीवरे तु शियल तणो कर सग॥ए देशी ॥ किधो लाजे आपणोजी, कौरवपति जेम जोय॥ चित्रागद लेइ गयोजी, परवश दुखियो होयरे॥आ सुण जोजी कौरवपति जेम होय॥१ ॥ए आकणी ॥ हाहाकार सहुको करेजी, जोर न चाले कोइ॥ जेहने शीर आवी पडीजी, नीर वहे शिर सोइरे ॥ आ० ॥ २ ॥ सापे ताक्यो मींडकोजी, मोरे ताक्यो साप ॥ निज स्वार्थनो आधलोजी, मारण न जाणे आपरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ वगलो निंदे हसनेजी, मणिने निंदे काच ॥ काम पड्या यी पारखोजी, सहुने प्यारो साचरे ॥ आ०॥४॥ जीड प ड्या भाइ भलाजी, लोक बिराणा जाण ॥ कौरवपतिनी कामनीजी, वेगे करी विलखाणरे ॥ आ० ॥ ५ ॥ यु धीष्टिर नृप आगलेजी, करती अधीक विलास ॥ गो

त्र तणा गोवालियाजी, सांभल अम अरदासरे ॥ आ०
॥ ६ ॥ कुल मडण कुल केसरीजी, जेठ जुगतसु जो
य ॥ पीभाह भाइ घणुजी, कवण निंद तुम्ह सोयरे ॥
॥ आ० ॥ ७ ॥ मथीयो मिली धनदेवताजी, रतन
किया अपहार ॥ ऋषि अगस्ति पिवताजी, नाम लियो
जल खाररे ॥ आ० ॥ ८ ॥ वडवानल जल बालवे
जी, पाज तणो जसवाद ॥ राम करवे सायरुजी, न त
जे निज मरजादरे ॥ आ० ॥ ९ ॥ गुणग्राहि तो गु
ण ग्रहेजी, अवगुण नाखे दूर ॥ दात वखाण्या स्व
आननाजी, श्री हरी होय हजूररे ॥ आ० ॥१०॥ रा
जा हरि सुत शु कहेजी, वेगे मत लावो वार ॥ दुर्योध
न गेडाववाजी, थाउ शूर अपाररे ॥ आ० ॥ ११ ॥
विनय करीने विनवेजी, अर्जुन भीम कुमार ॥ व्याधी
टली वीण ओपधेजी, मौन तणो अधिकाररे ॥ आ०
॥ १२ ॥ राजा भाखे भाइयोजी, क्षत्री केरो धर्म ॥
वहिला थाउ वाहरुजी, सचवाइ कुल कर्मरे ॥ आ०॥
॥१३॥ आ इशन जो इश नहिजी, चाल्यो श्रीहरी नं
द ॥ चित्रागद साथे अड्योजी, पायो सुजस आणदरे
॥ आ० ॥ १४ ॥ गेडावी कौरवपतिजी, वेशी विमा
ने आय ॥ चित्रागद चतुराइ पणेजी, अर्जुनने पोचा
यरे ॥ आ० ॥ १५ ॥ जव आया राजा कनेजी, दु
र्योधन दु ख पाय ॥ शिक्षक चढियो मस्तकेजी, ताम
घणु अकुलायरे ॥ आ० ॥ १६ ॥ न नमे किलकनी

परेजी, खेचर गरदन साहि ॥ पगे लगायो परवश हठ न काइरे ॥ आ० ॥ १७ ॥ कुशल पूछत बोलियोजी, निज चित्त सरखो ताम ॥ रिपु पिडा मा ले नहिजी, साले तुझ प्रणामरे ॥ आ० ॥ १८ ॥ रो स न आयो पाडवाजी, गीतलस स्यो गेह ॥ सतोषी घर मोकल्याजी, द्रोहि न तजे द्रोहरे ॥ आ० ॥ १९ ॥ दुष्ट न छंडे दुष्टताजी, केसे हु शीख देत ॥ धोइयो सो वारकेजी, काजल होय न श्वेतरे ॥ आ० ॥ २० ॥ स त्तावीससो ढालमेजी, भला भलपण साची ॥ श्री गुण सागरसूरि कहेजी, समय समय घनमाचीरे ॥ आ० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ विदुरने भीषम कहे, दुर्योधन स्यु ताम ॥ दिठा अर्जुन एकणा, सुभट पणाना काम ॥ १ ॥ पा डव उपगारी साहि, प्राण दान दातार ॥ रे कृतघ्न कृतघ्नपणो, क्युं न तजे अविच्चार ॥ २ ॥ शिख न एकाहि मन वसी, सामो थयो सरोप ॥ औषध विविध प्रकारना, माने नहि त्रिदोप ॥ ३ ॥ जयद्रथ राजा आ वियो, भगनिपति सुविच्चार ॥ भक्ती करी भल भो जने, लेइ चाल्यो नार ॥ ४ ॥

ढाल १२८ मी ॥ सुमति सदा दिलमा धरो ॥ ए देशी ॥ साभलजो वात विनोदनि, जयद्रथ राजा वि ख्यात ॥ शयाने ॥ मारगे जाता उतरयो, दुर्योधननो जामात ॥ श० ॥ साभलो वात विनोदनी ॥ १ ॥ कोश ल्या पति दुष्टने, कुताए धरि हेत ॥ शयाने ॥ जमाइ

तु उतरयो, सघला साथ समेत ॥ श० ॥ सा०॥२॥ अर्जुने विद्याने वले, रसोइ निपाइ रग ॥ श० ॥ नो जन पिरस्या नावता, कुताए उज्वल रग ॥ श० ॥ सा० ॥ ३ ॥ मजन नोजन युक्तिसु, उपर आपी त बोल ॥ श० ॥ प्राहुणा जाणी प्रेमसु, सहु करे रग रो ल ॥ श० ॥ सा०॥ ४ ॥ अरहा परहा सहु गया, ते लपटे लेइ लाग ॥ श० ॥ रथमा घाली द्रौपदी, रुद यमा आणी राग ॥ श० ॥ सा० ॥ ५ ॥ जयद्रथ ते महा चोरटो, रथ खेडी नाठो जाय ॥ श० ॥ वाहरे ते पुठे वेगशु, नीम अर्जुन जव धाय ॥ श० ॥ सा० ॥ ॥ ६ ॥ कुता कहे तव हे वत्सो, गुनहि पणे ए रगे मा र ॥ श० ॥ जामात ठे ए माहरो, रखे मारो तुमे ठा र ॥ श० ॥ सा० ॥ ७ ॥ नीम अर्जुन वे नयकरा, वहु वहु नाखता वाण ॥ श० ॥ जयद्रथने जइ मि ल्या, तव तिहा पड्यो नगाण ॥ श० ॥ सा० ॥८॥ नीमे गदाने घाते करी, तेहनो रथ करयो चकचूर ॥ श० ॥ काचा कुन्न तणी परे, देखी दल सहु नाठो दू र ॥ श० ॥ सा० ॥ ९ ॥ अर्धचद्र बाणे अर्जुने, ध्व जा ठत्र दाढि मुठ ॥ श० ॥ जयद्रथना तव ठेदिया, तव नुडो पडयो ते नूच ॥ श० ॥ सा० ॥ १० ॥ मा त वचन सन्नारिने, जीवतो मेल्यो जयद्रथ ॥ श० ॥ लुण हरामी जे हुए, ते स्यो सावे अर्थ ॥ श० ॥सा० ॥ ११ ॥ गुणसागर कहे साजलो, ए कही ढाल रसा

ळ ॥ श० ॥ टाल्यो केहनो नवि टळे, जेहने जेहवो दु
ए ढाल ॥ श० ॥ सा० ॥ १२ ॥

दुहा ॥ मुजानी परे कुटियो, मृठ अने शिर केस॥
ाण सघाते कापिया, जाड कियो सुविशेस ॥ १ ॥

ढाल तेहिज ॥ जगरुमळ ठमी जायोरे वाला, शा
न मेरो जागशे ॥ ए देशी ॥ देवरूपि एक दिवस आ
यो, करण अति उपकाररे ॥ पामवाशु प्रगट नाखे,
कौरवा अविचाररे ॥ दे० ॥ १ ॥ जोर जोर पण नव
गडे, प्रत्यक्ष देख्यो एहरे ॥ कट थकी गेडाइ आ
णी, ग्रह्यो अवगुण तेहरे ॥ दे० ॥ २ ॥ आगथी उगा
रीया अहि, साह पाम्यो त्रासरे ॥ सिंह आखी समा
धी किधा, वैद्य पुत्र विपनाशरे ॥ दे० ॥ ३ ॥ दूध दि
धो साप मुखे, गरल हुवे जेमरे ॥ आवमे उपगार करी
यो, होइ जाइ तेमरे ॥ दे० ॥ ४ ॥ उत्तमा उपकारनी
मति, किया अपर करतरे ॥ कियाहिथी निच न करे,
अछतो द्वेप धरतरे ॥ दे० ॥ ५ ॥ बिंदुनो तो सिंधु
जाणे, साधु जे ससनेहरे ॥ सिंधुनो तो बिंदु माने,
निच माणस जेहरे ॥ दे० ॥ ६ ॥ शेप नागछे सहस फ
णपति, जीव्हा दोइ हजाररे ॥ वर्णवेजो निचनी गति,
तोहि न लहे पाररे ॥ दे० ॥ ७ ॥ गज अकुश दिपत
माही, नावा नीर मझाररे ॥ करी तोपिण निच आगे,
हारीयो किरताररे ॥ दे० ॥ ८ ॥ चद्रने जे करी कालि
मा, भूलीयो भगवानरे ॥ निचनो मुख करत कालो,

वाधतो थो वानरे ॥ दे० ॥ ९ ॥ दशादिसा थेइ अठे दावी, कहे दुर्वासा शापरे ॥ लाखने रस सरिखो करे, देइ राखी गापरे ॥ दे० ॥ १० ॥ व्याप विसनो वाधी मूकी, करे रही विधायरे ॥ निचनी तो जीन परगुण, कही न सके न्यायरे ॥ दे० ॥ ११ ॥ हेतु तो कह्या मे नव, कौरवा समझायरे ॥ घडेतो चोपड गटो, लागतो न देखायरे ॥ दे० ॥ १२ ॥ सनामाही अति उछाही, बे प्रवाहे वयणरे ॥ नाखे नोले स्वजन टोले, कियो अधिक कुचयनरे ॥ दे० ॥ १३ ॥ पाडवने हणे जे नर, लहे आधो राजरे ॥ पुरोहित सुत ग्रह्यो विरुो, करे विप्र अकाजरे ॥ दे० ॥ १४ ॥ प्रौढ विद्या नामे कृत्या, करे साधन साररे ॥ सबल दल बल साजी सुदर, अठे आवणहाररे ॥ दे० ॥ १५ ॥ करी मसुरती सना विसर्जी, चिंतवे चित चावरे ॥ अति उपद्रव्य हरण जाणो, तप तणो सुप्रनावरे ॥ दे० ॥ १६ ॥ काउसग्ग करत सघला, धरे श्री जिन ध्यानरे ॥ सूरने सनमुखा निश्चल, रह्या मेरु समानरे ॥ दे० ॥ १७ ॥ वोलीया इम दिवश साते, ध्यानसु धीरे गातरे ॥ आठमे दिन दिशाने मुखे, उठीयो अति वातरे ॥ दे० ॥ १८ ॥ घणा हाथी घणा घोडा, घणा रथ घणा लोकरे ॥ उदधीना कल्लोलनी परे, सबल दल बल योगरे ॥ दे० ॥ १९ ॥ आइया तव ध्यानमाथी, वहु सासु दोयरे ॥ घाली रथमे लेइ चाल्या, नारी जोर न काइरे

ल ॥ श० ॥ टाल्यो केहनो नवि टले, जेहने जेहवो इ
ए ढाल ॥ श० ॥ सा० ॥ १२ ॥

दुहा ॥ मुजानी परे कुटियो, मुछ अने शिर केस॥
वाण सघाते कापिया, जाड कियो सुविशेस ॥ १ ॥

ढाल तेहिज ॥ जगरुमल छमी जायोरे वाला, गा
म मेरो जागशे ॥ ए देशी ॥ देवकापि एक दिवस आ
यो, करण अति उपकाररे ॥ पाम्नाशु प्रगट जाखे,
कौरवा अविचाररे ॥ दे० ॥ १ ॥ जोर जोर पणु नव
छडे, प्रत्यक्ष देख्यो एहरे ॥ कट वकी छेडाइ आ
णे, ग्रह्यो अवगुण तेहरे ॥ दे० ॥ २ ॥ आगथी उगा
रीया अहि, साह पाम्यो त्रासरे ॥ सिह आखी समा
धी किधा, वैद्य पुत्र विपनाशरे ॥ दे० ॥ ३॥ दूध दि
धो साप मुखे, गरल हुवे जेमरे ॥ आधमे उपगार करी
यो, होइ जाइ तेमरे ॥ दे० ॥ ४ ॥ उत्तमा उपकारनी
मति, क्रिया अपर करतरे ॥ कियाहिथी निच न करे,
अवतो द्वेप धरतरे ॥ दे० ॥ ५ ॥ बिदुनो तो सिंधु
जाणे, साधु जे ससनेहरे ॥ सिंधुनो तो बिंदु माने,
निच माणस जेहरे ॥ दे० ॥ ६ ॥ शेप नागवे सहस फ
णपति, जीन्या दोइ हजाररे ॥ वर्णवेजो निचनी गति,
तोहि न लहे पाररे ॥ दे० ॥ ७ ॥ गज अकुश दिपत
माही, नावा नीर मजाररे ॥ करी तोपिण निच आगे,
हारीयो किरताररे ॥ दे० ॥ ८ ॥ चद्रने जे करी कालि
मा, जूलीयो जगवानरे ॥ निचनो मुख करत कालो,

भाखे सुण भामनीरे, एहनो कृत्या नाम ॥ केडे ला
गी ए जेहनेरे, तेहनो फोडे ठाम ॥ रे० ॥ ५ ॥ काति
काढी तब कापवारे, लागी काया जाम ॥ कामनि तो
अति कुपतिरे, वाणी वदे अभीराम ॥ रे० ॥ ६ ॥ स
हणहारोतो को नाहेरे, देवी तुमारो कोप ॥ तो स्या
माटे इम कीजीएरे, मर्यादानो लोप ॥ रे० ॥ ७ ॥ मु
वाने शु ए मारिएरे, काइ देवि देखोरे विमास ॥ एम
सुणी अबरे गइरे, करती हड हरू हाशरे ॥ रे० ॥
॥ ८ ॥ राणी नवि रहे रोवतिरे, जाणी मूवा भरतार
॥ विण भरतारा भामनीरे, पामे दुख अपार ॥ रे० ॥
॥ ९॥ आसु लुहिए आखनारे, भीलीणी भाखे सार॥
सुख दुख आपद सपदारे, लागी डोले लार॥ रे० ॥
॥ १० ॥ उगे आडबर घणेरे, आथमता नहि वार॥
दोय अवस्था भोगवेरे, दिन माहि दिनकार ॥ रे० ॥
॥ ११॥सरखो न रहे सरवदारे, ग्रहगण नायक चद
॥ एक पखवाडे वाधतोरे, बीजे थाए मद ॥रे० ॥१२॥
लेहरी वाधे जिम सायरारे, तिमही घटती जाय ॥ जे
हवो माणस वज वजेरे, तेहवो सिलो थाय ॥ रे० ॥
॥ १३ ॥ सब दिन न हुवे सारिखारे, झूठो जग व्यव
हार ॥ रोया राज न पामिएरे, उद्यमनो अधीकार ॥
॥ रे० ॥ १४ ॥ मणी कालि सरीता जलेरे, सिचि सि
चि पिउ देह ॥ मुर्गा मीटजासे सहिरे, बेठा थाशे एह
॥ रे० ॥ १५ ॥ पात्र भरी पाणी तणोरे, पदमनी पो

॥ दे० ॥ २० ॥ तिहां वृकोदर द्रुपद नंदन, समर सुर स
काजरे ॥ मात वछल पिसुन पिसा, उपजंते आजरे ॥
दे० ॥ २१ ॥ कसाघाते घणु हणता, पिपरी पाडतरे
॥ ताम ते तो असुररुपी, तरशसु तामतरे ॥ दे० ॥२२॥
दिन वचन विचारी वीरा, पुहवी वावतरे ॥ आप आ
पणे आयुधासु, उल्हसता आवतरे ॥ दे० ॥ २३ ॥
पिसुन नाठा जाइ आठा, कोन सामो होइरे ॥ विघन ट
ळीयो दैव वलीयो, धर्मथी जय जोइरे ॥ दे० ॥२४॥
आठावीस सोमी ढालमाही, पुरोहित सुत रोसरे ॥
श्रीगुणसागर सूरि साखी,हुओ हिया सोसरे॥दे०॥२५॥
दुहा ॥ तृपा व्यापी अति आकरी, खेद करता नूर
॥ आया ते सरोवर चली, पियो जल भरपूर ॥ १ ॥
जल पियो तृपता हुया, तरु तले ले विश्राम ॥ मुर
छाए धरणी पड्या, नामी न लाजे ताम ॥ २ ॥
ढाल १२९ मी ॥ रतनशी गुरु गुण मिठडारे ॥ए
देशी ॥ पुठे आवी द्रोपदीरे, मृत रुपी पड्यो कंत ॥
देखी अकुलाणी घणीरे, आरती अति व्यापत ॥ १ ॥
रे रे दैव कुलक्षणारे, किस्यु कुसहज्यो अंग ॥ पडी
यामे पाडे घणुरे, करतो रंग विरंग ॥ रे० ॥ २ ॥
एतले आवी भीलडीरे, पचालीनी पास ॥ पूछणहारी
ए जेतलेरे, सोर मच्यो आकाश ॥ रे० ॥ ३ ॥ करती
आडंबर घणोरे, धरति रुप कराल ॥ कृत्या नामे ए
राक्षशीरे, आइ गइ ततकाल ॥ रे० ॥४॥ भीलणी

भाखे मुण भामनीरे, एहनो कस्या नाम ॥ केडे ला गी ए जेहनेरे, तेहनो फोडे ठाम ॥ रे० ॥ ५ ॥ काति काढी तव कापवारे, लागी काया जाम ॥ कामनि तो अति कपतिरे, वाणी वदे अनीराम ॥ रे० ॥ ६ ॥ स हणहारोतो को नाहेरे, देवी तुमारो कोप ॥ तो स्या माटे इम कीजीएरे, मर्यादानो लोप ॥ रे० ॥ ७ ॥ मु वाने शु ए मारिएरे, काइ देवि देखोरे विमास ॥ एम सुणी अवरे गइरे, करती हड हरू हाशरे ॥ रे० ॥ ॥ ८ ॥ राणी नवि रहे रोवतिरे, जाणी मूवा नरतार ॥ विण नरतारा नामनीरे, पामे दुख अपार ॥ रे० ॥ ॥ ९॥ आसु लुहिए आखनारे, नीलीणी नाखे सार॥ सुख दुख आपद सपदारे, लागी डोले लार॥ रे० ॥ ॥ १० ॥ उगे आडवर घणेरे, आथमता नहि वार॥ दोय अवस्था नोगवेरे, दिन माहि दिनकार ॥ रे० ॥ ॥ ११॥सरखो न रहे सरवदारे, ग्रहगण नायक चद ॥ एक पखवाडे वाधतोरे, वीजे थाए मद ॥रे०॥१२॥ लेहरी वाधे जिम सायरारे, तिमही घटती जाय ॥ जे हवो माणस वज वजेरे, तेहवो सिलो थाय ॥ रे० ॥ ॥ १३ ॥ सब दिन न हुवे सारिखारे, कूठो जग व्यव हार ॥ रोया राज न पामिएरे, उद्यमनो अधीकार ॥ ॥ रे० ॥ १४ ॥ मणी कालि सरीता जलेरे, सिचि सि चि पिउ देह॥ मुर्गा मीटजासे सहिरे, बेठा याशे एह ॥ रे० ॥ १५ ॥ पात्र नरी पाणी तणोरे, पदमनी पो

खे प्यार ॥ आलस मोडी उठियारे, नारी कह्यो गुवे च्यार ॥ रे० ॥ १६॥विसमय पाम्यो पाडवारे, एतो अ चरिज कोय ॥ एतले प्रगट्यो देवतारे, परम महा सु ख होय ॥ रे० ॥ १७ ॥ सुर जाखे स्वामी सुणोरे, हु हर पामर देव ॥ तूठो तप वलि तुम्ह तणेरे, आयो कर वा सेव ॥ रे० ॥ १८ ॥ कत्या कत्य निवारवारे, माहा रा कीया काज ॥ ए सचलाहि जाणजोरे, जग मोटो जिनराज ॥ रे० ॥ १९ ॥ समय समरवो हु सहिरे, ब हुली करी अरदास ॥ आजूपण आपी घणारे, देव ग यो आकाश ॥ रे० ॥ २० ॥ एगुणतिस सोमी ढालमे रे, पाप नाठा जाणय ॥ श्री गुणसागर सूरिजीरे, पाम्व पुण्य प्रमाण ॥ रे० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ विविध प्रकारे रसवाति, अति रसवाति अ पार ॥ आपण काजे निपाति, आइ गयो अणगार ॥ ॥ १ ॥ जाव घणो आदरपणो, प्रति लाजो ऋषी रा य ॥ पाच दिवस सुहामणा, जय जय शब्द सुणाय ॥ ॥ २ ॥ बोले शासन देवता, सवछर ए बार ॥ पोहतो वरस ए तेरमो, गुप्त पणानो सार ॥ ३ ॥

ढाल १३० मी ॥ वली नकुल कहे सुणो वात॥रा जाजी, गोधीक नामे तिहाजी ॥ थइ अश्व पालक अ जीराम राजाजी, रहेसु अश्वशाल होशे जिहाजी ॥ ॥ १ ॥ वली बोल्यो तिहा सहदेव ॥ रा०॥ गोविंद नामे गोवालीउजी, करशु गोपालानु काम॥रा०॥ निश्चय ठाम

ए वाते निहालियोजी ॥ २ ॥ वली द्रौपदी कहे सुणो वात ॥ रा० ॥ हु तिहा सैरध्री नामे सहिजी, रहेसु सुदर्शना राणिने पास॥रा०॥ तेहने रिझवसु सेवामा रही जी ॥ ३ ॥ अंगिकारि निज निज काम ॥ रा०॥ निज निज वेष धारीनेजी, पोहोता विराट नगर नजिक, श्रोताजी, परखी नहि नर नारिनेजी ॥४ ॥ तेतो आव्या नगर समीप, श्रोताजी, शस्त्र शशिकोट कोटमा धरयाजी ॥ तेहनो भेद न जाणे कोय श्रोताजी, कल्पांत जोए तेहवा करयाजी ॥५॥ ते सहुणे पुरमा किध प्रवेश ॥ रा० ॥ राज धारे जूदा जूदाजी, विराटे आपी बहुमान ॥रा०॥ निज निज कामे थाप्या सूधाजी ॥ ६ ॥ सर्वे सुखे समाधे तेह, श्रोताजी, रहेछे विराटना राज माजी ॥ कोइ दुहवे नहिं तिलमात्र, श्रोताजी, सावधान निज निज काममाजी ॥ ७ ॥

दुहा ॥ चोरि नाम ए आपणा, मत्स देशमे जाय॥ वयराटा राजा घरे, रहीया पाडव राय ॥ १ ॥

ढाल तेहिज ॥ इणपुर कबल कोइ न लेशी ॥ ए देशी ॥ कक विप्रनो नाम धरावे, राजाजी अहकार रखावे ॥ भीम रसोइदार सुहायो, वृहनटा हरिनद कहायो ॥ १ ॥ नकुल निरोपम नाम धराएयो, ग्वाल तणी मति तो लहु आएयो ॥ पचाली सैरन्ध्री दासी, माजी राख्या आला रासी ॥ २ ॥ नगर तणे परीसर जव आवे, पितृयवने हथीयार छिपावे ॥ समीत त

णा तरु उपर ठावि, ग्वाल सफल नय वात बतावि ॥ ३ ॥ समो पिठाणे सोइ माटी, मुढ विचाले मारे आटी ॥ चतुर शिरोमणी पाचे भ्राता, एकाते मूकी ज माता ॥ ४ ॥ वयराटा घर चाली आया, निज वि ज कामे सयल लगाया ॥ पुछता ए उत्तर पाया, पर्व रुव घर हम आप सवाया ॥ ५ ॥ पाडवजी तो अडे वनवाशी, तेह थकी हम फिरा उदाशी ॥ राजा नां खे नाग्य हमारो, दरशण लाधो आज तुमारो ॥६॥ सुखमे रहिए ए घर सपे, अठे तुमारो राजा जपे ॥ प्रात समे माजीने वदे, शीख लहि सहुए आनदे ॥ ७ ॥ सुदर्शना नामे पटराणी, वीर घणानी बहिन कहाणी ॥ चिडोत्तर सो किचक नाइ, नृपने सालानी अधीकाइ ॥ ८ ॥ जेमल नामे दूत विकराल, दुर्योधन मेल्यो सुविशाल ॥ पारुवानी जे खबरज लावे, लख पसाय अनोपम पावे ॥ ९ ॥ चाल्यो दूत करीने जुहार, लावु खबर वेगे तुमलार ॥ गाम नगर पुर जो तो रंगे, मागे जंग ए नूपति सगे ॥ १० ॥ लावो मुज पासे लरुवा दूतो, शक्ति न होय तो बाधीयो पुतो ॥ वडा बना इम नूपती जीती, लेतो दान महा बल शेती ॥ ११ ॥ मछ देश वेराटो राजा, पुरी स ना अधीक दिवाजा ॥ वेठो नूपती परखद्या पूरी, क कविप्रसु सना सनूरी ॥ १२ ॥ आयो जेठी तिहा क णचाली देखी सना झाकझमाली ॥ उनो रायने करीय

जुहार, राजा पूछे कवण विचार ॥१३॥ सुण स्वामी हथी णापूर नृप, दुर्योधननो दूत अनूप ॥ देश देशना जीती राणा, आव्यो आप मनावी आणा ॥१४॥ होय वलीयो कोइ मुझने साधो, नहीतर पुतलु पाए बाधो ॥ किचक तव मुठीए वल घाल, उठ्यो कोप करी विकराल ॥१५॥ आयो नृपती हाली चाली, दूते फगोल्यो पाए झा ली ॥ ककनणे वालीयो बलवत, खाय घणुने छे मय मत ॥१६॥ स्वामी जो इहाकण आवे, देश सहुना पुतलां छोडावे ॥ राजाए तव पुरुषज नेज्यो, सुतो नीम उठावे हेजो ॥१७॥ चालो स्वामी राय बोलावे, कक विप्र तुम वात वणावे ॥ खाई अन्न खुटाडा कोस, एम वात कहे तिहा जोस ॥ १८ ॥ लेइ चाटवो उठ्यो जाम, धरती धणवा लागी ताम ॥ चाली आयो सना मझार, देखी दूतने हरख्यो अपार ॥ १९ ॥ आवी कक पाए शिर नाम्यु, पछी जोयु जेमल जेम सामु ॥ इहा ए जो ध किहाथी आव्यो, स्या पुतला पगे बाधी लाव्यो ॥ ॥ २० ॥ इहा आइने वाकरी वाइ, नही जीवतो जा ए नाइ ॥ एम कही माहो माही वलग्या, लोग सहु जुवे जइ अलगा ॥ २१ ॥ वागे हाथ उठे पडवदा, खम्हेडे मोल नासे नर टदा ॥ लात प्रहारे प्रथवी पि ण ध्रुजे, उडे खेह सूरज नवी सुझे ॥ २२ ॥ उठी क चेरी राजा पिण नाग्यो, पडीयो मल्ल नुजावल ला ग्यो ॥ एतो पाढव नीमजी दिसे, एम विच्यारयो वि

णा तरु उपर ठावि, ग्वाल सफल नय वात बतावि ॥ ३ ॥ समो पिछाणे सोद माटा, मुड वित्राले मोटे आटी ॥ चतुर शिरोमणी पाचे भ्राता, एकाते मूकी ज माता ॥ ४ ॥ वयराटा घर चाली आया, निज नि ज कामे सयल लगाया ॥ पुछता ए उत्तर पाया, पं रुत्र घर हम आप सवाया ॥ ५ ॥ पाडवजी तो भवे वनवाशी, तेह थकी हम फिरा उदाशी ॥ राजा भ खे भाग्य हमारो, दरशण लाधो आज तुमारो ॥६॥ सुखमे रहिए ए घर सपे, अठे तुमारो राजा जपे ॥ प्रात समे माजीने वदे, शीख लहि सहुए आनदे ॥ ७ ॥ सुदर्शना नामे पटराणी, वीर घणानी वहिन क हाणी ॥ विडोत्तर सो किचक भाइ, नृपने सालानी अधीकाइ ॥ ८ ॥ जेमल नामे दूत विकराल, दुर्योधन मेल्यो सुविशाल ॥ पारुवानी जे खबरज लावे, लाख पसाय अनोपम पावे ॥ ९ ॥ चाल्यो दूत करीने जु हार, लावु खबर वेगे तुमलार ॥ गाम नगर पुर जो तो रगे, मागे जग ए नूपति सगे ॥ १० ॥ लावो मुज पासे रुरवा दूतो, शक्ति न होय तो बाधीयो पु तो ॥ वडा बरा इम नूपती जीती, लेतो दान महा वल शेती ॥ ११ ॥ मछ देश वैराटो राजा, पुरी स भा अधीक दिवाजा ॥ वेठो नूपती परखधा पूरी, कं कविप्रसु सभा सनूरी ॥ १२ ॥ आयो जेठी तिहा प णचाली देखी सभा जाकझमाली ॥ उभो रायने करीय

आव्यो अश्व चडीरी ॥ फिरता वन आराम, सैरद्री द्रष्टे पमीरी ॥ ४ ॥ सतीशुं आय नखत, चालो मूझ घेरेरी ॥ हु जग मोठो राय सहु मुझ आण धरेरी ॥ ५ ॥ आपु नवलख हार, चोकी रत्न जमीरी ॥ करी थापु पटनार, तुझशुं प्रित खरीरी ॥ ६ ॥ बोली चटक लगाय, फिट कुबुद्धी शु लवेरी ॥ वालु तारो राज, आगे शियल हवेरी ॥ ७ ॥ आव्यो चाबख लेइ, किचक कोप करीरी ॥ वेन सुदर्शणां ताम, आवी आडी फिरीरी ॥ ८ ॥ बाइ ए वारो वीर, इम किम काम करेरी ॥ एतो निरलज दास, एहने कुण वरेरी ॥ ॥ ९ ॥ मोटी राजकुमार, परणावु वरनारी ॥ रहवा द्यो एहथी हठ, एहनी जात न सारी ॥ १० ॥ एक वार मुझ हार, आपे नेह धरीरी ॥ पूरु मन तणी खात, न करु आश फिरीरी ॥ ११ ॥ बहीन भणे सुण वीर, तु मति चिंता करेरी, होशे धीरे काज, जाउ आप घरेरी ॥ १२ ॥ हरखाणो तव राय, होशे काम भलेरी ॥ हुवो विकल नरेश, लाग्यो तास पलोरी ॥ ॥ १३ ॥ एकत्रीसा सोमी ढाल, गुणसागर एम भापी ॥ लेशे दु ख अघोर, पापी पाप प्रकाशी ॥१४॥

दुहा ॥ एक दिवस राणी राउली, निपजावी पकवान ॥ गोत्रज तणी पूजा करी, आपी सहुने मान ॥ ॥ १ ॥ पात्र कर धरी प्रेमदा, किधो सैरद्री साद ॥ मंदिर आपो मारा वीरने, गोत्रज तणो प्रसाद ॥२॥

थ्या विसे ॥ २३ ॥ जाण्यो भीम तणो जडवाय, भ
ख्यो मुख थकी एम वाय ॥ भीम करतो जाणी गाढो.
भीमे पगाडी पाड्यो ठाढो ॥ २४ ॥ भीसे सोमी ग
ले भणीयो, भीमे मल्ल महा वल हणीयो ॥ श्रीगुण
सागर सूरि वदीतो,पुण्ये पाम्व जगजस जीत्यो ॥२५॥

दुहा ॥ एक दिवश परीवारशु, किचक नामे नृप॥
वेन तणे घर भ्यावीयो, दिठो सेरद्री रूप ॥ १ ॥ बही
न भणी एम पूछीयो, ए कुण नारी होय ॥ किहां थ
की आवी अछे, रूपे रभा सोय ॥ २ ॥ जे आपण घ
र वालीयो, तेह तणी ए नार ॥ रहेछे मुझ आगले
दाशीपणे सुविच्यार ॥ ३ ॥ लाज तजी निरलजपणे,
वहीन भणी कहे एम ॥ एकवार मुझ मदिरे, मोकल
ज्यो धरी प्रेम ॥ ४ ॥ वात मतकर ए भाइजी, करता
होय अकाज ॥ शिल न लोपे सुदरी, एहनो पती शि
रताज ॥ ५ ॥ राय वैराटे इम कह्यो, ए कोइ कारण
रूप ॥ रूडी रिते राखज्यो, भलावी मुझ भूप ॥ ६ ॥

ढाल १३१ मी ॥ रामचद्रके वागमे ॥ आवो मो
री रह्योरी ॥ ए देशी ॥ उठी चल्यो तब राय, मनमा
रिस घणेरी ॥ तेडाव्योरे खवास ॥ करे वात बुरेरी
॥ १ ॥ एकली देखी जो नार, कहेज्यो हेत धरीरी ॥
शु करशे मुझ राय, पाडु लाज खरीरी ॥ २ ॥ एक
दिवस नृपनार, रती खेल भणीरी ॥ आवे वन उद्या
न, साथे सखीय घणीरी ॥ ३ ॥ साथे किचक राय,

णी राय ऊखाणो हाकलियो नृपालजी॥ द्रो० ॥७॥ आज मुकुछ तुऊने जाणी, काले तारी वातजी ॥ आण वहे माहरी राय राणा, आज घणी आस्यतजी ॥ द्रो० ॥ ८ ॥ एम कहीने वल्यो पाछो, गयो निज आवासजी ॥ पचाली लिहाथी आवी, मछरालीनी पासजी ॥ द्रो० ॥ ९ ॥ राणी आगल किधु सघलु, हियु फाटता रोयजी॥ अम देश तो सहु उजड थइ, सार न लीए कोइजी ॥ द्रो० ॥ १० ॥ अनेकपरे आशासना दिधी, राणीए रोती राखीजी ॥ कहेतां माहरा दातज घाटा, छे मुऊ अतर साखीजी ॥ द्रो० ॥ ११ ॥ ते दिन दोहीलो गयो रामाने, रात पडी जे वारजी ॥ अवसर लेइ आवी एकाकी, विनवीयो भरतारजी ॥ द्रो०॥१२॥ किचके मुऊने एणीपरे भाख्यो, आणीश तारो अतजी ॥ आतम घात करु ते पेहेली, तिण कारण मुऊ कतजी ॥ द्रो० ॥ १३ ॥ मे विनवाया गोद बिछाइ, तुम तणा वड वीरजी ॥ ते पिण सानली हेवु घाल्यु, करी नही मुऊ भिरजी ॥ द्रो० ॥ १४ ॥ भीम भ्रकुटी भाले चडावी, वचन वदे सुणनारजी ॥ एतला दिन आपण दु ख लिधा, ते धर्म तणो उपगारजी ॥ द्रो० ॥ १५ ॥ मुऊ आणाए एतलो कीजे, किचक भणी तुम जायजी ॥ आपणे दोय एकाते मिलशु, करी मतो एकठायजी ॥ द्रो०॥१६॥ कत तणे आदेशे आवी, वात न जाणे कोइजी ॥ सो

माजी किम मने मोकलो, शु नथी जाणता वात ॥ काल एणे तुम देखता, करयो घणो उतपात ॥ ३ ॥ दूध देखी मजारने, हुवे लालच जेम ॥ न गिणे लाज पर नारनी, लपट माणस तेम ॥ ४ ॥ वाद न केडे तुजने मे वारयो छे एह ॥ नाम लीए जो ताहरु, तो टलि आवजे गेय ॥५॥ परवश प्रेमदा शु करे, लेइ चाली ते पात्र ॥ आव्यो घर जव ढुकडो, थरहर कंपे गात्र ॥६॥

ढाल १३२ मी ॥ श्री रामजीए नारी गमाइ, सीता शुध न पाइजी ॥ ए देशी ॥ द्रौपदी मनमा जोयु विमाशी, किचक कुबुद्धी पूरोजी ॥ एकलडा जाता इणे मदीर, रहे किम शियल सनूरोजी ॥ द्रौ० ॥ १ ॥ एम जपाती आवी वाला, किचक तणे आवासजी ॥ दिधु पात्र दूरथी उभी, लीधु हाथ खवासजी ॥ द्रौ० ॥ २ ॥ मेली थाल वली जव पाछी, किचक ध्यायो पूठजी ॥ रे उभी रडा किहा जाइस, वाणी वदे इम जूठजी ॥ द्रौ० ॥ ३ ॥ पामी त्रास ते सभा सनमुख, नारी नाठी जायजी ॥ आवी उभी राजा शरणे, का मी केडे थायजी ॥ द्रौ० ॥ ४ ॥ कक वीप्र देखता मारी, नारी लाते तामजी ॥ वैराटने सर्व सुभट जोता, कीधी सभा गत मामजी ॥ द्रौ० ॥ ५ ॥ नाथ प्रते इम वदे वाणी, सांभलो माहाराजजी ॥ ए पापीडो मुझने पीडे, मूकावे मुझ लाजजी ॥ द्रौ० ॥ ६ ॥ कक न पो वैराट सभानी, लाज लेइ मछरालजी ॥ इम नीसु

णी राय ऊखाणो हाकलियो नृपालजी॥ द्रो० ॥७॥ आज मुकुलु तुऊने जाणी, काले तारी वातजी ॥ आ ण वहे माहरी राय राणा, आज घणी आस्यतजी ॥ द्रो० ॥ ८ ॥ एम कहोने वल्यो पाछो, गयो निज आ वासजी ॥ पचाली तिहाथी आवी, मछरालीनी पा सजी ॥ द्रो० ॥ ९ ॥ राणी आगल किधु सघलुं, हि यु फाटता रोयजी॥ अम देश तो सहु उजड थइ, सार न लीए कोइजी ॥ द्रो० ॥ १० ॥ अनेकपरे आशासना दिधी, राणीए रोती राखीजी ॥ कहेतां माहरा दातज घाटा, ठे मुऊ अतर साखीजी ॥ द्रो० ॥ ११ ॥ ते दिन दोहीलो गयो रामाने, रात पडी जे वारजी ॥ अवसर लेइ आवी एकाकी, विनवीयो न रतारजी ॥द्रो०॥१२॥ किचके मुऊने एणीपरे नास्यो, आणिश तारो अतजी ॥ आतम घात करु ते पेहेली, तिण कारण मुऊ कतजी ॥ द्रो० ॥ १३ ॥ मे विन वाया गोद बिछाइ, तुम तणा वड वीरजी ॥ ते पि ण सांभली हेवु घाल्यु, करी नही मुऊ निरजी ॥ द्रो० ॥ १४ ॥ भीम भ्रुकुटी भाले चडावी, वचन वदे सुण नारजी ॥ एतला दिन आपण दु ख लिधा, ते धर्म तणो उपगारजी ॥ द्रो० ॥ १५ ॥ मुऊ आणाए एत लो कीजे, किचक भणी तुम जायजी ॥ आपणे दोय एकाते मिलशु, करी मतो एकठायजी ॥ द्रो०॥१६॥ कत तणे आदेशे आवी, वात न जाणे कोइजी ॥ सो

माजी किम मने मोकलो, शु नथी जाणता वात ॥ काल एणे तुम देखता, करयो घणो उतपात ॥ ३ ॥ दूध देखी मजारने, हुवे लालच जेम ॥ न गिणे लाज पर नारनी, लपट माणस तेम ॥ ४ ॥ वाद न केजो तुम्ने. मे वारयो छे एह ॥ नाम लीए जो ताहरु, तो टलि आवजे गेय ॥५॥ परवश प्रेमदा शु करे, लेइ चाली ते पात्र ॥ आव्यो घर जव दुकमो, थरहर कपे गात्र ॥६॥

ढाल १३२ मी ॥ श्री रामजीए नारी गमाइ, सीता शुध न पाइजी ॥ ए देशी ॥ द्रोपदी मनमा जोयु विमाशी, किचक कुबुद्धी पूरोजी ॥ एकलडा जाता इणे मदीर, रहे किम शियल सनूरोजी ॥ द्रो० ॥ १ ॥ एम ऊपाती आवी वाला, किचक तणे आवासजी ॥ दिधु पात्र दूरथी उभी, लीधु हाथ खवासजी ॥ द्रो० ॥ २ ॥ मेली थाल वली जव पाछी, किचक आयो पूठजी ॥ रे उभी रहा किहा जाइस, वाणी वदे इम कूठजी ॥ द्रो० ॥ ३ ॥ पामी त्रास ते सन्मा सनमुख, नारी नाठी जायजी ॥ आवी उभी राजा शरणे, कामी केडे थायजी ॥ द्रो० ॥ ४ ॥ कक वीप्र देखता मारी, नारी लाते तामजी ॥ वैराटने सर्व सुभट जोतां, कीधी सभा गत मामजी ॥ द्रो० ॥ ५ ॥ नाथ प्रते इम वदे वाणी, छोडावो माहाराजजी ॥ ए पापीडो मुझने पीडे, मूकावे मुझ लाजजी ॥ द्रो० ॥ ६ ॥ कक भणे वैराट सभानी, लाज लेइ मछरालजी ॥ इम नीसु

ल्लीयाजी ॥ ए देशी ॥ रात समे जड नीमजी ॥ मन मोहना॥ स्नान करी सुची देह ॥ लाल मन मोहना ॥ केस समारया कामनी ॥ म० ॥ घाली फूलेल सनेह ॥ ला० ॥ १ ॥ सेथो लाल सुहावीयो ॥ म० ॥ नक वेसर रुडी नथ ॥ ला० ॥ निलवट मोती पूरियो ॥ म० ॥ सोवन चुडी हथ ॥ ला० ॥ २ ॥ बाह मनोहर कचुकी ॥ म० ॥ मस्तक ढंक्यो चीर ॥ ला० ॥ पग पीतावर ढलकतो ॥ म० ॥ झणके नेउर गुहिर ॥ ला० ॥ ३ ॥ नाख्यो कठे लहकतो ॥ म० ॥ पचाली उर नो हार ॥ ला० ॥ हसी बोली एम जामनी ॥ म० ॥ तुम जोती जग नार ॥ ला० ॥ ४ ॥ नारी वेश नीमे कर्यो ॥ म० ॥ करवा किचक जग ॥ ला० ॥ चाल्यो मध्य बजारथी ॥ म० ॥ लटके जोतो अग ॥ ला० ॥ ॥ ५ ॥ आव्यो किचक मदिरे ॥ म० ॥ दिठो अनो पम घाट ॥ ला० ॥ मोती झुत्रख बाधीया ॥ म० ॥ लटके हिंडोला खाट ॥ ला० ॥ ६ ॥ असुर थाशे आ वता ॥ म० ॥ सुवु वार ठिगार॥ ला०॥देइ शीर नीते पोढियो ॥ म०॥चरणे चापी किमाड ॥ला०॥७ ॥ एट ले किचक आवियो ॥ म० ॥ पेरी तनु शिणगार ॥ ॥ ला० ॥ पेठो मदिर एकलो ॥ म० ॥ सेवक रहियो बार ॥ ला० ॥ ८॥ लालच धरतो आवियो ॥ म० ॥ मोहनी मोटो बध ॥ ला० ॥ दिपक देखी पतंगीयो ॥ ॥ म० ॥ पडीयो तिम मती अध ॥ ला० ॥ ९ ॥ आ

लश्रृंगार सज्या तनु सुंदर, पेख्या दरपण जोइनी ॥
॥ द्रो० ॥ १७ ॥ मारग जातां किचके दिठी, बाली
झाकझमालीजी ॥ कामातुर अकुलाणो राजा, फेरी को
ट निहालीजी ॥ द्रो० ॥ १८ ॥ दिवश गत हिंडु तु
म्ह जोता, लागी लेह तुमारीजी ॥ आज मनोरथ थ
या पूरण, किधी सार अम्हारीजी ॥ द्रो० ॥ १९ ॥
मुख पचाली वायक बोली, सुणो सुभट एक वात
जी ॥ कोइ मंदिर देखाडो एकाते, तो रमीए तुम स
घातजी ॥ द्रो० ॥ २० ॥ हिंमोला खाट झबुके उचो,
मणीमय मारा आवासजी ॥ आवज्यो रात समे
तुम राणी, जिम पुगे मुज आसजी ॥ द्रो० ॥ २१॥
इम संकेत करीने चाल्यो, किचक नीज आवासजी
॥ भामनीए सहु वात प्रकाशी, भीम भणी उलहास
जी ॥ द्रो० ॥ २२ ॥ ए बत्तिस सोमी ढाले, वात ज
णावी तासजी ॥ श्री गुणसागर सूरि प्रकाशे, जो
जो कुविसन विनाशजी ॥ द्रो० ॥ २३ ॥

दुहा ॥ भीम भणे सुण भामनी, आप सुरंगो वे
श ॥ थाशु किचकनि कामनी, हुंश धरी सुविशेश ॥
॥ १ ॥ देइ आलिंगन एहने, पोचाडु जम लोक ॥
तो तु मुझने जाणजो, भीम तणो बल रोक ॥ २ ॥
आज पछी कोइ नारीनो, नाम लिए नही तेह ॥
खोभा मजार तणीपरे, भमतो राखु एह ॥ ३ ॥

ढाल १३३ मी ॥ समुद्र विजय सुत चदलो, साम

लीयाजी ॥ ए देशी ॥ रात समे जइ जीमजी ॥ मन मोहना॥ स्नान करी सुची देह ॥ लाल मन मोहना ॥ केस समारया कामनी ॥ म० ॥ घाली फूलेल सनेह ॥ ला० ॥ १ ॥ सेथो लाल सुहावीयो ॥ म० ॥ नक वेसर रुडी नथ ॥ ला० ॥ निलवट मोती पूरियो ॥ म० ॥ सोवन चुडी हथ ॥ ला० ॥ २ ॥ बाह मनोहर कचुकी ॥ म० ॥ मस्तक उढ्यो चीर ॥ ला० ॥ पग पीतावर ढलकतो ॥ म० ॥ झणके नेउर गुहिर ॥ ला० ॥ ३ ॥ नाख्यो कठे लहकतो ॥ म० ॥ पचाली उर नो हार ॥ ला० ॥ हसी बोली एम जामनी ॥ म० ॥ तुम जीती जग नार ॥ ला० ॥ ४ ॥ नारी वेश भीमे कर्यो ॥ म० ॥ करवा किचक भग ॥ ला० ॥ चाल्यो मध्य बजारथी ॥ म० ॥ लटके जोतो अग ॥ ला० ॥ ॥ ५ ॥ आव्यो किचक मदिरे ॥ म० ॥ दिठो अनो पम घाट ॥ ला० ॥ मोती झुमख बाधीया ॥ म० ॥ लटके हिंडोला खाट ॥ ला० ॥ ६ ॥ असुर थाशे आ वता ॥ म० ॥ सुवु वार लिगार ॥ ला०॥देइ शीर भींते पोढियो ॥ म०॥चरणे चापी किमाड ॥ला०॥७ ॥ एट ले किचक आवियो ॥ म० ॥ पेरी तनु शिणगार ॥ ॥ ला० ॥ पेठो मदिर एकलो ॥ म० ॥ सेवक रहियो वार ॥ ला० ॥ ८॥ लालच धरतो आवियो ॥ म० ॥ मोहनी मोटो बध ॥ ला० ॥ दिपक देखी पतगीयो ॥ ॥ म० ॥ पडीयो तिम मती अध ॥ ला० ॥ ९ ॥ आ

ज सफल दिन माहरो ॥ म० ॥ करतो मन सुविचार ॥ ला० ॥ आवी अवाशे ऊभो रह्यो ॥ म० ॥ कर सु कूट्यो द्वार ॥ ला० ॥ १० ॥ बोलावी बोले नहि ॥ म० ॥ एहनु पूगी ते शीश ॥ ला० ॥ उठो उठो न ंद्रे तुमे ॥ म० ॥ साद किया दश विस ॥ ला० ॥ ॥ ११ ॥ किमाड कठीन खडखडावीयु ॥म० ॥ तव सां भल्यु शु यार ॥ ला० ॥ चरण संकोचा आपणा ॥ ॥ म० ॥ राय उघाड्यो द्वार॥ला०॥१२॥पोल देइने प रवरयो ॥ म० ॥ खोलतो खुणा चार ॥ ला० ॥ खिड की मडप ऊसरी ॥ म० ॥ नवि दिठी त्या नार ॥ ला० ॥ १३ ॥ एम सघले जोता थकां ॥ म० ॥ किचके दि ठो सोय ॥ ला० ॥ कुण कुबुद्धी इहां आवीयो ॥ म० ॥ ए तनु नारी न होय ॥ ला० ॥ १४ ॥ भीम मधुर ए म बोलियो ॥ म० ॥ आवो कत सुजाण ॥ ला० ॥ वार घणी मुजने थइ ॥ म० ॥ नाथजी जीवन प्राण ॥ ला० ॥ १५ ॥ एम कही उठ्यो भीमडो ॥ म० ॥ कि चक पाडी चीस ॥ ला० ॥ हा हा हिवे हु नही करु ॥ ॥ म० ॥ मूको मुजने इश ॥ ला० ॥ १६ ॥ कर झाली ने पटकियो ॥ म० ॥ करतो आक्रंद साद ॥ ला० ॥ भीम भणे परनारसु ॥ म० ॥ वली करजो उन्माद ॥ ॥ ला० ॥ १७ ॥ मारी कीधो कोथलो ॥ म० ॥ शिर चाप्यु धरू माहि ॥ ला० ॥ किचक परतक्ष पामीयो ॥ म० ॥ पाप तणा फल आहि ॥ ला० ॥ १८ ॥ भीमे

ताम वीच्यारियो॥ म० ॥ ए नृत्य केली साल ॥ ला० ॥ धनुर विद्या इहाकण जणे ॥ म० ॥ देखी निये वाल ॥ ला० ॥ १९ ॥ जारवट जार उचो करी ॥ म० ॥ चा पीयो ते माय ॥ ला०॥ पुनरपी जीम वीचारीयो ॥ म० ॥ रखे जाणे कोइ आय ॥ ला० ॥ २० ॥ रक्त तणी स लीका जरी ॥ म० ॥ जारोट लीखीयो नाम ॥ ला० ॥ राजा वात जणाववा ॥ म० ॥ त्रण अक्षर तिणी ठाम ॥ ला० ॥ २१ ॥ काम करी किचक तणो ॥ म० ॥ जी म गयो निज थान ॥ ला० ॥ सकल संबध आवी कह्यो ॥ म० ॥ नारी जणी बहु मान ॥ ला० ॥ २२ ॥ तेतीसासोमी ढालमे ॥ म० ॥ श्री गुणसागर जोय ॥ ॥ ला० ॥ किचक प्रत्यक्ष पापीयो ॥ म० ॥ कीधाना फल सोय ॥ ला० ॥ २३ ॥

दुहा ॥ राय कचेरी आवियो, पूरी सजा अजी राम ॥ किचक जाइ सहु मिली, वेठा करी प्रणाम ॥ ॥ १ ॥ राजा पूछे सादरो, तुम बंधव गुण खाण॥ ह मणा अमे दिठा नथी, कुण कारण राजान ॥ २ ॥ अम जाइ काले चर्मी, गया हता काइ वार ॥ राते पिण आव्या नथी, अम मदिर निरधार ॥ ३ ॥ राये शेवक मूकीया, किचक तणे दरबार॥पूछे जइ सा ना रीने, किहा छे तुम जरतार ॥ ४ ॥ साझ समे शोजा धरी, तेडी शेवक साथ ॥ गया पूछ्या विण मुझने, हजी नवि आव्या नाथ ॥ ५ ॥

ज सफल दिन माहरो ॥ म० ॥ करतो मन सुविचार ॥ ला० ॥ आवी अवाशे उनो रह्यो ॥ म० ॥ कर सु कूट्यो द्वार ॥ ला० ॥ १० ॥ बोलावी बोले नहि ॥ म० ॥ एहनु पूगी ते शीश ॥ ला० ॥ उठो उठो न रे तुमे ॥ म० ॥ साद किया दश विस ॥ ला० ॥ ॥ ११ ॥ किमाड कठीन खडखमावीयु ॥म० ॥ तव सां भल्यु शु यार ॥ ला० ॥ चरण सकोचा आपणा ॥ ॥ म० ॥ राय उघाड्यो द्वार॥ला०॥१२॥पोल देइने प रवरयो ॥ म० ॥ खोलतो खुणा चार ॥ ला० ॥ खिड की मडप उसरी ॥ म० ॥ नवि दिठी त्या नार ॥ ला० ॥ १३ ॥ एम सघले जोता थका ॥ म० ॥ किचके दि ठो सोय ॥ ला० ॥ कुण कुबुद्धी इहा आवीयो ॥ म० ॥ ए तनु नारी न होय ॥ ला० ॥ १४ ॥ भीम मधुर ए म बोलियो ॥ म० ॥ आवो कत सुजाण ॥ ला० ॥ वार घणी मुजने थइ ॥ म० ॥ नाथजी जीवन प्राण ॥ ला० ॥ १५ ॥ एम कही उठ्यो भीमडो ॥ म० ॥ कि चक पाडी चीस ॥ ला० ॥ हा हा हिवे हु नहीं करु ॥ ॥ म० ॥ मूको मुजने इश ॥ ला० ॥ १६ ॥ कर झाली ने पटकियो ॥ म० ॥ करतो आक्रद साद ॥ ला० ॥ भीम भणे परनारसु ॥ म० ॥ वली करजो उन्माद ॥ ॥ ला० ॥ १७ ॥ मारी कीधो कोथलो ॥ म० ॥ शिर चाप्यु धरू माहि ॥ ला० ॥ किचक परतक्ष पामीयो ॥ म० ॥ पाप तणा फल प्राहि ॥ ला० ॥ १८ ॥ भीमे

एणे सैरद्री सभा मांही मारी, मृत्यु हुवो एम रा
य विच्यारी ॥ कि० ॥ ९ ॥ वालीयो आद मिल्या सहु
लोग, भारोट अलगो कियो बल योग ॥ काढ्यो कि
चक मिली बहु साथ ॥ देखी राणी भीड्यो लेइ बा
थ ॥ कि० ॥ १० ॥ बेन भाइनो अग निहाले, तिम
तिम आखे आसुडा ढाले ॥ वात विविध प्रकारे दा
खी, सहु मिली एम रोती राखी ॥ कि० ॥ ११ ॥ भा
इ मिली सुविचारण किजे, सैरद्रीने साथे दहीजे ॥
एह थकी किचकनो नासो, सती किहा पामे घर वा
सो ॥ कि० ॥ १२ ॥ शवका किचक काज ए किजे,
केस ग्रही सैरद्री लीजे॥थरहर थरहर ध्रुजे सोइ, भीम
कहे चिंता नही कोइ ॥ कि० ॥ १३ ॥ कुरु कुरु करी
किचक कागा, सैरद्रीने नाखण लागा ॥ भीम भूजा
बले वृक्ष उखाली, किचक वधव मारया वाली ॥
॥ कि० ॥ १४ ॥ बाधव शोक करत सरोखी, राजा ए
राणी सतोखी ॥ एका किना ए जे काजो, ठेड्यो तो
ए विनाशे राजो ॥ कि० ॥ १५ ॥ डोकरडी घर वाघ
ज पइठो, एह उखाणो परतक्ष दिठो ॥ एतो आग
न तरे देखाया, हाथशु रे उल्हाशी जाय ॥ कि०॥१६॥
एतो कोएक उठी उपाधी, साध नही ए रोग असा
धी ॥ मुकने तो आयो जोगवणो, काठाठे नृप पद भो
गवणो ॥ कि० ॥ १७॥ भूर जालमें हुवु पडीयो, सिंह
तणी शिकारे चमीयो ॥ मसली पेट उपाए पिभ, सा

ढाल १३४ मी ॥ सोइ सयाणो जे अवसर साचे ॥ ए देशी ॥ किचक भाइ मिळी सव आवे, राजासुं एम वात सुणावे ॥ हजीय न आव्या किचक राय, राजाजी मन चिंता थाय ॥ कि० ॥ १ ॥ शेवक तेडी पूछ्यो अभीराम, ठाकुर तुमारा गया कुण काम ॥ नृत्य तणी साला नरनाथ ॥ तिहा सुधी हता अमे सहुसाथ ॥ कि० ॥ २ ॥ पछी अमने शिखज आपी, आप एकीला गया थिर थापी ॥ द्वारपाले पिण एम ज भाख्यो, निकळता वार अमे नवी झाख्यो ॥ कि० ॥ ३ ॥ राजा शोध करेवा रगे, उठ्यो सुभट लेइ बहु सगे ॥ घर घर शेरी चोक मझार, जोता न लाधो शोध लिगार ॥ कि० ॥४ ॥ बेहेन सुदर्शणा वात ए जाणी, भाइ न लाधो होइ विराणी ॥ नृत्यशालाए आवे सहु साथ, पग न लाभे जोता नरनाथ ॥ कि० ॥ ॥ ५ ॥ धरति विवर दिठो तिणे ठाम, दिसेछे इहा थयो सग्राम ॥ भारोटे अक दिठा अति राता, बेन भणे इहा सही मुझ भ्राता ॥ कि० ॥ ६ ॥ मुहता प्रधान तेडावी राजा, वचवे सहि अक्षर ताजा ॥ वाचता एम विचारे सुजाण, मे मारयो एम कहे कुण वाण ॥ ॥ कि० ॥ ७ ॥ एतले राय आवी एम वाच्यु, में मार्‍यो मुख कहे तव साचु॥राणी आखे नाखे बहु नीर, तुमे मारयो दिसे मुझ वीर ॥ कि० ॥ ८ ॥ कोएक पाप उदय थयो आज, किचक तणो एम थयो अकाज ॥

थ मझार ॥ केतलाएक अतिशय तीसाजी, पाम्वना सुविचार ॥ व० ॥ ३॥ दूत जलो तो खरोजी, साचो ए उपमान ॥ मछ देश महिमा घणोजी, दिन दिन चडते वान ॥ व० ॥ ४ ॥ सुशर्मा राजा कहेजी, एतो सुखी वात ॥ नगर तणी गौ वालवेजी, पांडव परगट थात ॥ व० ॥ ५ ॥ खुणश हमारी छे खरीजी, वैराटा नृपसाथ ॥ स्वामी काज समारताजी, सुजस दियो जग नाथ ॥ व० ॥ ६ ॥ कौरवपति सेना सजीजी, साथे सहु परिवार ॥ हय गय रथ पायक घणाजी, भीषमजी पिण लार ॥ व० ॥७॥ घम घम वाजे घुघराजी, पाखर जडीया पलाण ॥ उम्ी रज घमसाणसुजी, गयण गयो वर जाण ॥ व० ॥ ८ ॥ देखी दल वल आपणोजी, मुलकाणो मन राय ॥ कुण क्षत्री मुझ आगलेजी, युद्धे जीवता जाय ॥ व० ॥ ९ ॥ सुशर्मा दक्षण दिशेजी, जाइ लाग्यो जाम ॥ गौ हरता ते ग्वालीयाजी, आइ पूकारया ताम ॥ व० ॥ ॥ १० ॥ क्षत्री सहु चढी चालियाजी, सजी जाया कर बाण ॥ पाडव चार साथे हुवाजी, वाग्या ढोल निशाण ॥ व० ॥ ११ ॥ जला जला भट पाखरयाजी, सबाह्या अति सूर ॥ नृप हुवो गोवा हरुजी, वाजीया रण तूर ॥ व० ॥ १२ ॥ नृप लम्वे जड लम्थडाजी, भाग्या जाइ भूर ॥ उगता रवी आगलेजी, तम जिम नासे दूर ॥ व० ॥१३॥ खीसती जाणी आ

प सघाते माडी किम्मा ॥ कि० ॥ १८ ॥ काम पखे ए वीर बोलाया, अमृत काजे महा विप पाया ॥ जइ तू राख्यो चाहे चूमो, तो मतकर एह कदाग्रह कूडो ॥ कि०॥१९॥ आप जलो जगनु जलु जावे, आप मुवा जेम बुड कहावे ॥ सो हणीया तस हणता एको, करे किशी ए प्राणी विवेको ॥ कि० ॥ २० ॥ जे दिन सो दिन आघो लहवु, दिनपणे दिलासा दउवु ॥ गमीमानी रही जे राणी, शामाटे त्रोमीजे ताणी ॥ कि० ॥ २१ ॥ चोतीस सोमी ढाले जणीया, जीम किचक सघला हणीया ॥ श्री गुणसागर सूरि वदीतो, शिल पसाए जगजस जित्यो ॥ कि० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ चतुर महाचर चोकशी, फिरी आया प्रभु पास ॥ खवर न पामी पाम्डवा, सोच घणो चित्त तास ॥ १ ॥ विदुरने जिपम तणो, वदन विलोके राय॥ प्रथवी सघली शोधता, पाडव खबर न थाय ॥ २ ॥

ढाल १३५ मी ॥ मेतारज मुनिवर धन धन तुम अवतार ॥ ए देशी ॥ वलवता पाडव प्रथवी माही प्रसिद्ध, गुणवता पाडव प्रगट होसे सो सिद्ध ॥ ए आकणी ॥ विदुर अने जिपम जणेजी, वाणी अधिक अनूप॥ पाम्डवानी सहनाणकाजी, साम्जळ कौरव नूप ॥व०॥१॥नीति अनिती न जीतीकाजी, रोग न अधीको सोग ॥ पाम्डव छे जे देशडेजी, होशे सुखीया लोग ॥ ॥ व० ॥ २ ॥ अरिहता अतिशय जीसाजी, दिशे ग्र

र अरती मत आण ॥ ४ ॥

ढाल १३६ मी ॥ आंठेलालनी देशी ॥ तव सै रंध्री बाल, बोले वचन रसाल ॥ आठे लाल ॥ कुंवर पे चटक लगायनेजी ॥ १ ॥ अहो कुंवर कहु तुज, जुद्ध करणनि बूझ ॥ आ० ॥ तो सारथीठे सोहामणो जी ॥ २ ॥ ए नरविंदल वेश, ठे सारथी सुविशेश ॥ ॥ आ० ॥ अद्भुत रुप सोहामणोजी ॥ ३ ॥ हरींनं दनो रथ आप, खेमतो परम प्रताप ॥ आ० ॥ ते र थ खेमशे ताहरोजी ॥ ४ ॥ ल्यो तुम एहने संग, हो से जीत अनंग ॥ आ० ॥ हुश मतरालीश को हिवे जी ॥ ५ ॥ हस्ता रोता एह, आव्यो परुणो गेह ॥ ॥ आ० ॥ कुंवरे पुछ्यो सारथीजी ॥ ६ ॥ कहे विंदल महाराज, एतो आगे काज ॥ आ० ॥ आपणने गौ वालताजी ॥ ७ ॥ मायने महेलणी पास, पेरी बगत र तनु खास॥ आ० ॥ रणरंग रमवा सज्ज थयोजी ॥ ॥ ८ ॥ बहीन न्हणे सुण न्हाय, जीती कौरव राय ॥ आ० ॥ लावज्यो ध्वज रलीयामणीजी ॥ ९ ॥ एह म नोरथ आज, मुझ पुतलाने काज ॥ आ० ॥ होशे व स्त्र सादरोजी ॥ १० ॥ रणमे आयो चाल, देखी द ल विकाल ॥ आ० ॥ जाणे घटा कादंबनीजी ॥११॥ अहो बहनडा बाल, चडीयो मेह असराल ॥ आ० ॥ वाल रथ पाठो घरेजी ॥ १२ ॥ कहे अर्जुन अनू प, एह दुर्योधन नृप ॥ आ० ॥ एह दल उभा एह

पणीजी, सुशर्मा कोपत ॥ मोटा जडने मोकलेजी, वे राटो रोपत ॥ व० ॥ १४ ॥ सुशर्माए बांधीयोजी, वे राटो भूपाल ॥ जोर न चाले कोइनोजी, सोचे बाल गोपाल ॥ व०॥१५॥ पांडव चारे धाइयाजी, धसमसता धूताळ.॥ सुशर्मा खाथो कियोजी, नाठा जड ततकाल ॥ ॥ व० ॥ १६ ॥ मछ राय छेडावियोजी, भीम भूजा बल जोय ॥ साथे तो वलीया भलाजी, नवलाथी शुं होय ॥ व० ॥ १७ ॥ हरख धरी तेही स्थानकेजी, रात रह्यो राजान ॥ कक तणे मुख सांभळीजी, पांडवनो आख्यान ॥ व० ॥ १८ ॥ अधीकामें अधीको घणोजी, सुजस सुणी निज कान ॥ सत्य क रीने सरदहेजी, लीधी सबही मान ॥ व० ॥ १९ ॥ चाकर जेहना एहवाजी, शूर महा सनूर ॥ ठाकुरनो केहवो किस्योजी, दिसे एह हजूर ॥ ब० ॥ २० ॥ पें त्रिसा सोमी ढालमेंजी, भीमे जणाव्यो आप ॥ श्री गुणसागर सूरि कहेजी, न छपे तेज प्रताप ॥ ब०॥२१॥

दुहा ॥ प्रात हुवा कौरवपति, उत्तर दिशानी गा य ॥ वाली वलीया वेगशु, ग्वाल पूकारया आय ॥ ॥ १ ॥ राजानो सहु रावणो, राजा साथे जोय ॥ उ त्तरा कुवर एकलो, घर रखवालो होय ॥ २ ॥ बुबार व श्रवणे सुणी, बोले राज कुमार ॥ म्हारे नहीं कोइ सारथी, करे जणावणा सार ॥ ३ ॥ महीलाने माय आ गले, गाल मारतो जाण ॥ सैरन्ध्री बोली हशी, कुंव

॥ आ० ॥ गुणसागर पाण्डव तणोजी ॥ ७७ ॥

दुहा ॥ उत्तरा कुमर मन लाजीयो, पाछो फिरयो स ग्राम ॥ हाथ जोडी उभो रह्यो, अर्जुनपे अभीराम ॥ ॥ १ ॥ खीजडे छे हथीयार वर, धनुष्य बाण उदार॥ कवच प्रमुख अयुध सहु, तु जइ लाव्य कुमार ॥२ ॥ आदेश लेइ अर्जुननो, आव्यो ते नृप वन्न ॥ अहि रुपे आयुध सवे, दिठा तिहा नृप तन्न ॥ ३ ॥ डर आणी पाछो फीरयो, देखी काला नाग ॥ अर्जुनपे आवी क ह्यो, कोइ न फावे लाग ॥ ४ ॥

ढाल १३७ मी ॥ साहिबारे मारा मेरु तणी परे धीर ॥ ए देशी ॥ हरीनद आपे आयनेरे लाला, ली धा कर हथीयार ॥ वज्र कवच तनुथी जड्योरे ॥ ला० ॥ उपर साखी उदार ॥ १ ॥ चडी आयो लाला, पार थ प्रबल प्रताप ॥ ए आकणी ॥ आवी रणने सनमु खेरे ॥ ला० ॥ पूरयो शंख जेवार ॥ कर्ण आदे सहु राजीयारे ॥ ला० ॥ चमक्या चित्तमझार॥ च० ॥२ ॥ नाद शखनो साभलिरे ॥ ला० ॥ पभणे श्री गागेय, ए वाला रुप सुहामणोरे ॥ ला० ॥ पिण अर्जुन अह मेव ॥ च० ॥ ३ ॥ कौरवपति तव कलकल्यारे ॥ ला० ॥ अहो अहो जगदिश, ठे शत्रु मुझ उपरेरे ॥ ला०॥ एतो विश्वारे वीस ॥ च० ॥ ४ ॥ द्रोण वदे भट सा भलोरे ॥ ला० ॥ हमणा होशे उतपात, इण अवसर टलवो भलोरे ॥ ला० ॥ शुकन अपशुकन थात ॥ च०

नाजी ॥ १३ ॥ लाख सवा गजराज, देखी पामे घन
लाज ॥ आ० ॥ कालीघटा तेहनी वनीजी ॥ १४ ॥
धरयो दुर्योधन नृप, मेघाडंबर अनूप ॥ आ० ॥ मे
घ समो वड गाजतोजी ॥ १५ ॥ खड्ग झाला प्रका
श, विजली सम आकाश ॥ आ० ॥ निलाबर नेजा
जलाजी ॥ १६ ॥ ए दल अधिक अलोल, थाइ द्रढता
ममडोल ॥ आ० ॥ तजी कायर सूरीमा जजोजी ॥
॥ १७ ॥ दल कौरवनो जोय, नयानित हुवो सोय ॥
आ० ॥ हा हा मुझ मारे खरोजी ॥ १८ ॥ अहो ब्रह
नडा वाल, चाल्य घरे रथ वाल ॥ आ० ॥ ए दल
अधिक डरामणोजी ॥ १९ ॥ कहे हरी नद तेवार, रे
कायर शिरदार ॥ आ० ॥ घर आगल शु फूलतोजी
॥ २० ॥ इहा नही छे सेल, एछे खाडानो खेल ॥आ०
॥ खेल खरो असुहामणोजी ॥ २१ ॥ झूझण लाग्या
सूर, वागीया रणतूर ॥ आ० ॥ सुभट समरमे सक्क
थयाजी ॥ २२ ॥ पसरियो दल पूर, देखी कुमर घर
नूर ॥ आ० ॥ अगे बूटी भुजणीजी ॥ २३ ॥ रथथी
पडीयो ताम, नासण लाग्यो जाम ॥ आ० ॥ पारथ
पग पाछो धरयोजी ॥ २४ ॥ हरीनद साह्यो हाथ,
घाली गला माही बाथ ॥ आ० ॥ आपणो मरम प्र
काशियोजी ॥ २५ ॥ हु अर्जुन अभीराम, शिखवु तु
झ सग्राम ॥ आ० ॥ आज शोभा तुझने देउजी ॥
॥ २६ ॥ बत्रिसा सोमी ढाल, जगमे सुजस विशाल

॥ आ० ॥ गुणसागर पाम्व तणोजी ॥ २७ ॥

दुहा ॥ उत्तरा कुमर मन लाजीयो, पाछो फिरयो स ग्राम ॥ हाथ जोडी उभो रह्यो, अर्जुनपे अभीराम ॥ ॥ १ ॥ खीजडे छे हथीयार वर, धनुष्य बाण उदार ॥ कवच प्रमुख अयुध सहु, तु जइ लाव्य कुमार ॥२ ॥ आदेश लेइ अर्जुननो, आव्यो ते नृप वन्न ॥ अहि रुपे आयुध सवे, दिठा तिहां नृप तन्न ॥ ३ ॥ डर आणी पाछो फीरयो, देखी काला नाग ॥ अर्जुनपे आवी क ह्यो, कोइ न फावे लाग ॥ ४ ॥

ढाल १३७ मी ॥ साहिबारे मारा मेरु तणी परे धीर ॥ ए देशी ॥ हरीनद आपे आयनेरे लाला, ली धा कर हथीयार ॥ वज्र कवच तनुथी जड्योरे ॥ ला० ॥ उपर साभी उदार ॥ १ ॥ चडी आयो लाला, पार थ प्रबल प्रताप ॥ ए आकणी ॥ आवी रणने सनमु खेरे ॥ ला० ॥ पूरयो शंख जेवार ॥ कर्ण आदे सहु राजीयारे ॥ ला० ॥ चमक्या चित्तमझार॥ च० ॥२ ॥ नाद शखनो साभलिरे ॥ ला० ॥ पभणे श्री गागेय, ए वाला रुप सुहामणोरे ॥ ला० ॥ पिण अर्जुन अह मेव ॥ च० ॥ ३ ॥ कौरवपति तव कलकल्यारे ॥ ला० ॥ अहो अहो जगदिश, छे शत्रु मुझ उपरेरे ॥ ला०॥ एतो विश्वारे वीस ॥ च० ॥ ४ ॥ द्रोण वदे भट सा भलोरे ॥ ला० ॥ हमणा होशे उतपात, इण अवसर टलवो भलोरे ॥ ला० ॥ शुकन अपशुकन वात ॥ च०

॥५॥सुभट दल जासो वयारे॥ ला०॥चउ दिश हुवो अ धार, धरणी पेड ध्रुजे घणोरे ॥ ला० ॥ आयो अर्जु न इणीवार ॥ च० ॥ ६ ॥ मूकी धण पाछा वल्यारे ॥ ॥ ला० ॥ तव भाखे हरी सुत, कायर किम पाछा व लोरे ॥ ला० ॥ रे राणी जाया रजपुत ॥ च० ॥ ७ ॥ लज्जा पामी राजीयोरे ॥ ला० ॥ आवी उनारे शूर, वायो गयण घमसाणसुरे ॥ ला० ॥ वाजीया रणतुर ॥ च० ॥ ८॥ कर्ण कहे सहु साभलोरे ॥ ला० ॥ दु ख म आणशो कोय, आ रण अर्जुन मे वर्योरे ॥ ला० ॥ ए म कही आयोरे सोय ॥ च० ॥ ९ ॥ दल देखी कौरव तणोरे ॥ ला० ॥ वैराटा सुत कहे एम, तिलक सुभट कुण एहमेरे ॥ ला० ॥ कहो अर्जुन मुझ तेम ॥ च० ॥ १० ॥ कृपाचार्य रथ तणोरे ॥ ला० ॥ निलि ध्व ज अही नाण, कनकदड व्वज रथ भलोरे ॥ ला० ॥ ए द्रोण गुरु गुण खाण ॥ च० ॥ ११ ॥ ए दोइ मुझ उपगारीयारे॥ला०॥दिधी कला असमान, ए गुरु चरण पसायथीरे॥ला०॥हु वरु धनुष्य वाण॥च०॥१२॥धनुष्य ध्वजे द्रोण सुतजीरे ॥ला०॥करे अमरसु रे वाद, नाग केतुवर रथ भलोरे ॥ ला० ॥ दिसे दुर्योधन आद॥ च० ॥ १३ ॥ पीली पताका रथ तणीरे ॥ ला० ॥ ए कर्ण अभीराम, एम सघला अर्जुन कहेरे ॥ ला० ॥ सुभट महारथी नाम ॥ च० ॥ १४ ॥ बाणे अवर ग इयोरे ॥ ला० ॥ दल पसर्या चिहु दीस उर, आया

कर्ण रथ सनमुखेरे ॥ ला० ॥ करी आडंबर जोर ॥
च० ॥ १५ ॥ अर्जुन रथना नादथीरे ॥ ला० ॥ सु
भट न धरेरे धीर, सींह तणी परे गाजतोरे ॥ ला०॥
आवो उभो वड वीर ॥ च० ॥ १६ ॥ शस्त्र छेदि क
र्णनारे ॥ ला० ॥ कहे अर्जुन तजी रीस, इण अवस
र अग रायजीरे ॥ ला० ॥ पूगी सघली जगीस ॥
च० ॥ १७ ॥ विंद्याचल गजनि परेरे ॥ ला० ॥ अ
डीया दोइ ततखेव, अचरिज पामी अवरेरे ॥ ला० ॥
मिलिया कौतकि देव ॥ च०॥१८॥ मोटा नरने मोडतोरे
॥ ला० ॥ एकलडो हरी नंद, मुर्छाइ धरणि विपेरे ॥
ला० ॥ पडीया कर्ण नरिंद ॥ च० ॥ १९ ॥ द्रोण गु
रु तव आवियारे ॥ ला० ॥ हरखाणो मन नूप, आ
ज गुरु भले आवियारे ॥ ला० ॥ देवा शोभ अनूप
॥ च०॥२०॥ प्रथम बाणे हरीनंदजीरे॥ ला० ॥ किधो
गुरु प्रणाम,मूकी बाण वर दुसरोरे॥ला०॥ छेदे ध्वज अ
भीराम ॥ च० ॥२१॥ अनर्थ जाणी आकरोरे॥ला०॥
प्रभु दया दिल आण, कौरवना दल उपरे ॥ ला० ॥
मूके मोहन बाण ॥ च० ॥ २२ ॥ सैन्य सकल धर्णी
पड्योरे ॥ ला० ॥ न रही शुद्ध लिगार, वार मणना
जो घडेरे ॥ ला० ॥ तोपिण न लहेरे सार ॥ च० ॥
॥ २३ ॥ निल ध्वज कौरव तणीरे ॥ ला० ॥ पिले क
र्ण विराज, लेजे ध्वज रलीयामणीरे ॥ ला० ॥ तुऊ
भगनीनेरे काज ॥ च० ॥ २४ ॥ निपम भय मतम

॥५॥सुभट दल जासो वयारे॥ ला०॥चउ दिश हुवो अ धार, धरणी पेउ भुंजे घणोरे ॥ ला० ॥ आयो अर्जु न इणीवार ॥ च० ॥ ६ ॥ मूकी भण पाछा वल्यारे ॥ ॥ ला० ॥ तब भाखे हरी सुत, कायर किम पाछा व लोरे ॥ ला० ॥ रे राणी जाया रजपुत ॥ च० ॥ ७॥ लज्जा पामी राजीयोरे ॥ ला० ॥ आवी उभारे शूर, गायो गयण घमसाणसुरे ॥ ला० ॥ वाजीया रणतुर॥ च० ॥ ८॥ कर्ण कहे सहु सांभलोरे ॥ ला० ॥ हु खम आणशो कोय, आ रण अर्जुन मे वरयोरे॥ ला०॥ ए म कही आयोरे सोय ॥ च० ॥ ९ ॥ दल देखी कौरव तणोरे ॥ ला० ॥ वेराटा सुत कहे एम, तिलक सुभट कुण एहमेरे ॥ ला० ॥ कहो अर्जुन मुझ तेम ॥ च० ॥ १० ॥ कृपाचार्य रथ तणोरे ॥ ला० ॥ निलि ध्व ज अही नाण, कनकदंड ध्वज रथ भलोरे ॥ ला० ॥ ए द्रोण गुरु गुण खाण ॥ च० ॥ ११ ॥ ए दोइ मुझ उपगारीयारे॥ला०॥दिधी कला असमान, ए गुरु चरण पसायथीरे॥ला०॥हु धरु धनुष्य बाण॥च०॥१२॥धनुष्य ध्वजे द्रोण सुतजीरे ॥ला०॥करे अमरसु रे वाद, नाग केतुवर रथ भलोरे ॥ ला० ॥ दिसे दुर्योधन आद॥ च० ॥ १३ ॥ पीली पताका रथ तणीरे ॥ ला० ॥ ए कर्ण अभीराम, एम सघला अर्जुन कहेरे ॥ ला० ॥ सुभट महारथी नाम ॥ च० ॥ १४ ॥ बाणे अबर ग ह्यूयोरे ॥ ला० ॥ दल पसरया चिहु दीस उर, आया

दारो ॥ ४ ॥ जिनवर आराधी, सुर विधी साधी, सि
घासण वेसतो ॥ ते सघला वीरा साहस धीरा,
प्रभुना पग प्रणमतो ॥ ५ ॥ वादलने टलवे पूजा
मिलवे, सहस किरण दिनकारो ॥ देखावे आपो
प्रबल प्रतापो, जगमाही जयकारो ॥ ६ ॥ तिम
कुर्ता जाया तेज सवाया, आप आपणी सोह ॥ पे
खता पेखी वात विशेखी, लोगाइहा पोह ॥ ७ ॥ पा
त्र जाणी जण जण आणी, नामता निज शिसो ॥
चिरजीवजो मो कोम्ह वरीसो, भाट भणे आशिसो ॥
॥ ८ ॥ तव वेगे ववावा आवे गावा, गाम तणी वर
गोरी ॥ नाचती पात्रो सुललीत गात्रो, चतुर महा
चित चोरी ॥ ९ ॥ निशाण धडुके ढद न चूके, नादे
अवर गाजे ॥ दिजे वहु दानो अति सनमानो, उत्स
व अधीक विराजे ॥ १० ॥ वयराटो राजा अधीक दि
वाजा, करतो आवे ताम ॥ चरणे शिर नामी निज हि
त कामी, करत घणो गुण ग्राम ॥ ११ ॥ ते निज क
रजोडे देवा लोडे, सपत सरीसो राजो ॥ अभीमान
न राखे फिर फिर भाखे, तुम्हे सारया हम काजो ॥
॥ १२ ॥ सगपण करवे अति विस्तरवे, नेह तणो
अधिकारो ॥ आतासु ऊलझी जाइ न सुलजी, लट
जगनो व्यवहारो ॥ १३ ॥ कुवरनी भगनी छे शुभ ल
गनी, शुभ लक्षण शुभकारी ॥ अति रुप रसाली
झाक झमाली, वाली छे सुविचारी ॥ १४ ॥ अहेयनने

धरीरे॥ ला० ॥ कुंवर जिम शक्र, लेइ ध्वज पाछो वल्योरे ॥ ला० ॥ कंपे अटारीरे लक ॥ च० ॥ २५॥ कौरव राय पाछो वल्योरे ॥ ला० ॥ धरतो मन संताप, गोधन वाली उत्तरारे ॥ आ०॥ आयो अर्जुन प्रताप ॥ च० ॥ २६ ॥ सत्रीसा सोमी ढालमेरे ॥ ला० ॥ अर्जुन देखायोरे आप, गुणसागर पांडव तणोरे ॥ ला० ॥ चढतो तेज प्रताप ॥ च० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ मत्स्यराय घर आवीयो, पामी खबर तेवार ॥ उत्तरा कुमर एकलो, हुवो कौरव लार ॥ १ ॥ नूप च ढाइ कारणे, उद्यम करे अशेश ॥ आवी ताम वधामणी, जित्यो कुमर नरेश ॥ २ ॥ कंक विप्रने रायजी, बेठा सभा मझार ॥ सारी पासा खेलता, उलटनो अधिकार ॥ ३ ॥ करत प्रशंसा पुत्रनी, कंक कहे सुविचार ॥ वृहनडा जस सारथी, जीते क्युं न कुमार ॥४॥

ढाल १३८ मी ॥ वेदनी देशी ॥ एतले चली आया जगत सुहाया, हरी सुत भितर जाया ॥ कुमर पगे लागी उभो आगी, आलिंगे तव राया ॥ १ ॥ मुह माथो चुंबी अवर अबि, वारवार प्रशंशो ॥ आप णपे करतो मुख उच्चरतो, कुंवर कुल अवतंशो ॥ २ ॥ तव कुमर भाषे मर्म प्रकाशे, जीतो जास प्रससो ॥ ते तीजेवासर आप उदोघर, प्रगट कुल अवतंसो ॥३॥ ॥ दिन त्रीजो पामी पांडव स्वामी, प्रगट थया सुख कारो ॥ तव नाही धोइ पावन होइ, पहेरी धोती उ

हरी जाणी तेह ॥ नाग आप्यो मे एह ॥ १८॥ कटक वले थाए ते करजो, युद्ध करता मत उसरजो॥ वराए तो जइने वरजो ॥ १९ ॥ सुए अणिए चपाए जेती, अवनि नवि आपु एहुने तेती ॥ फोगट थाशे ए फजिती ॥ २० ॥ एतो रुडी ढाल पुराणी, गुणसागर एम बोले वाणी ॥ जिनवाणी नजो प्राणी ॥ २१ ॥

दुहा ॥ एम सुणी कहे दूत तव, राजन मानो वयण ॥ गोत्र विरोध नहि नलु, जुउ विचारी सयण ॥ ॥ १ ॥ किचक वक किम वीर जीसा, हेरूवादिक हण्या जेण ॥ ते नीम आगले सही नागशो, केहेशो न कह्यो केण ॥ २ ॥

ढाल तेहीज ॥ रुकमणी राणी मेहेलमां ॥ ए देशी ॥ दूत कहे सुणो रायजी, नीम तणी नडवाय हो राज ॥ उड्या जाए आकाशमां, तुम सरिखा केइ राय हो राज॥ दूत कहे सुणो रायजी ॥ १ ॥ अर्जुन आगल नहि आशरो, तुमारो तिलमात्र हो राज ॥ राधा वेध साध्यो जिणे, बोलो विचारी गात्र हो राज ॥ दूत० ॥ २ ॥ विद्याधर दल जीतीने, तुमने जिवितदान हो राज ॥ ते माटे ते पुज्य छे, का थाउ अज्ञान हो राज ॥ दूत० ॥ ३ ॥ तु अपकार करे सदा, ते करे उपकार हो राज ॥ धर्म पुत्र धरमातमा, तुमारो हितकार हो राज ॥ दूत० ॥ ४ ॥ अवनी मेघ वरसावता, युधीष्टीर जलधार हो राज ॥ वालि राखेछे वीरने,

पाणी निर वहो लिघु ॥ ४ ॥ हिवे तो अमे आप्या श्री जी, दिलनी भलीपरे भागीशु दाभी ॥ वडाशु रुमीप रे वाजी ॥ ५ ॥ अब ए अवरे रह्यो न जाए, लोक माहि पिण हासि थाए ॥ वलतु वल न खमाए ॥ ६ ॥ तुमे तो गे ठाढा हिम, अग्निना भडका सरिखु हु नीम ॥ हिवे नहि पालु निम ॥ ७ ॥ युधिष्टीर कहे तुमे सूरा, सफल पराक्रममा सदा पूरा ॥ नहि मेहलो अधूरा ॥ ॥ ८ ॥ तोपण गुले जो समझो गुडा, तो आपण नहि थइए जुडा ॥ बाधव थाए उम्दा ॥ ९ ॥ सहुनी आण लहि अदभुत, जय नामा तव मोकल्यो दूत ॥ गजपुरे तेह पोहचत॥१०॥कृष्णनो दूत हु वु राजान, साभली सर्वे थइ सावधान॥कथन सुणो धरी कान॥११॥ तेरे वरस महा दु खे गाली, पाण्डवे पुरी प्रतिज्ञा पाली, हिवे तुमे जूव सभाली ॥ १२ ॥ एहनो तुमे हिवे आपो राज, जेम तुमारि वाधे लाज ॥ करो विचारी काज ॥१३॥राज्य नापोतो आपो पच गाम, इद्रप्रस्थ तिलप्रस्थ अभिराम काशी ॥ गजपुर वारणावति नाम ॥१४॥ दूत वचन दुर्योधन काने सुणी, अहो मुने युद्धे आरो खो, बोलीन ज्यु उखो ॥ १५ ॥ मुछ मरडीने दंतज घरमी, आलस मोडीने अधर ते करडी ॥ आख्ये आखो तरडी ॥ १६ ॥ हारयु राज आवे किम हेव ॥ एतो मारा शत्रु स्वयमेव ॥ साभलो वात सत्येव ॥ ॥ १७ ॥ आज लगे ए जिहा रह्या जेह, प्रथवी मा

मा०॥२॥पांच नाइ पांडव केवराइ, अर्जुन जोर अपारो॥ नीमशेन ज्यारे नारथ रचशे, तारेनही उगरानो आरो ॥हो राजा॥मा०॥३॥ केवु होय तो हमणा किजे, तुम्हे कृष्णजी कारो ॥ प्रथवी एक कणी को न आपु क्या करे धर्म बिचारो ॥ हो राजा ॥ मा०॥ ४ ॥ क्षत्री होय ते खाण्डानी गत जाणे,एतो गाय चरावनहारो ॥ राज निती माही ए शुरे जाणे,मही लुटावन हारो हो राजा॥मा०॥५॥

अथ द्वितीय पद लिख्यते ॥ गइ नोम तुमारी हो पाडवो॥ ग०॥ जिणे वात न मानी हमारी हो पाडवो ॥ ग० ॥ ए टेक ॥ क्षत्री होय ते वेरज खेडे, शु करे नक्ती ससारी ॥ बापकी जाता बल जे न करे, नूप नही पिण निखारी हो पाडवो ॥ ग०॥ १ ॥ ए अवनी माही अमर न रेणा, कहे धरम विचारी ॥ गोतर गर दन अमे जो करीए, तो शी गत थाए अमारी हो पा डवो ॥ ग० ॥ २ ॥ द्युत विद्या दलमाही रमीया, हा रथा गरथ नडारी ॥ ए लाखाग्रह माही तुमनेरे बा ल्या, शी रे सगाइ सगारी हो पाण्डवो ॥ ग०॥३॥ पाप तणोरे एणे पायोरे माड्यो, पचालीरे पूकारी ॥ अधनो सुत जो अवनी लेशे, तारे पोरससे गवारी हो पाण्डवो ॥ ग० ॥ ४ ॥ आ अवनी उवे पण्ड नाखु, उठ्यो नी म पूकारी ॥ सूरनो स्वामी शिखज आपे, ल्यो कौर वने मारी हो पाडवो ॥ ग० ॥ ५ ॥

अथ तृतीय पद लिख्यते ॥ किधा अमने दषारी ट

आज लगे निरधार हो राज ॥ दूत० ॥ ५॥ देव दा णव जेणे दम्या, जेणे मारयो कंस हो राज ॥ आश्र वाए तेहने, तेनो जग अवतंस हो राज ॥ दूत० ॥६॥ पावक सरिखा पांडवा, तुंतो घास समान हो राज ॥ वनमाली वायु परे, प्रेरेछे वली तास हो राज ॥ दूत० ॥ ७ ॥ तव भीष्म द्रोण विदुर कहे, साची मानो ए वात हो राज ॥ मनना आमला मेलीने, मिलि वेसो स हु भ्रात हो राज ॥ दूत० ॥ ८ ॥ शिखामण ते सांभ ली, वली कोप्यो विशेष हो राज ॥ अग्निज्वाला परे उपण्यो, धरतो दिलमा द्वेश हो राज ॥ दूत० ॥९ ॥ तव कृष्ण दूत कहे कोपिने, आव्यो तेहने मोत हो रा ज ॥ युद्धे ते सहु जाणजो, जाशे गोफण गोला सुत हो राज ॥ दूत० ॥ १० ॥ एम कही दूत आव्यो व ही, कृष्ण पासे संदेश हो राज ॥ मांडीने सर्वे कह्यो, एके एक आशेश हो राज ॥ दूत० ॥ ११ ॥ सज्जन सहु ढाले जुग, दुर्योधन दिल मांहि हो राज ॥ कप ट राख्यो गुणसागर कहे, हिवे आगले शु था य हो राज ॥ दूत० ॥ १२ ॥

अथ भारथना ध्रुपद लिख्यते ॥राग विहाग॥ मानो वात हमारी हो राजा ॥ मा० ॥ पांच गाम पांडवने दिजे, उर सब भोमी तुम्हारी॥हो राजा ॥ मा०॥ १ ॥ कुरुदेश हस्तनापूर नगरी, अंग देश पंचालो॥ उत्तर देश अयोध्या नगरी, दखण देश बंगालो ॥हो राजा

जी ॥ रा० ॥ सुडना करे उलालाजी ॥ रा० ॥ ध्वज
घुघरी घट वाजेजी ॥ रा० ॥ रथ देखी रवीरथ लाजे
जी ॥ रा० ॥ ७ ॥ इन जाणे आयुव शालाजी ॥रा०
घरणी चातुर्घंटवालाजी ॥ रा० ॥ घव घव धाता च
क्रधाराजी ॥ रा० ॥ प्रथवीना थाय पचकाराजी॥रा०
॥ ८ ॥ न्हाना तीक्ष्ण तोखाराजी ॥ रा० ॥ खेडता
रथ थाए होकाराजी ॥ रा० ॥ हयवरना थाए हिलो
लाजी ॥ रा० ॥ जाणे समुद्र तणा कलोलाजी ॥
रा० ॥ ९ ॥ न्हूये तो पगनवी मडेजी ॥ रा० ॥ रवि
रथ हयवर मान खडेजी ॥ रा० ॥ तूर निर्घोषे गइ
तद्राजी ॥ रा० ॥ तिहां अश्व थया उनींद्राजी ॥ रा०
॥ १० ॥ खणाए धरा खुर घातिजी ॥ रा० ॥ उडे डुं
गरा उजातीजी ॥ रा० ॥ पवन वेगी जलपताजी ॥
॥ रा० ॥ एहवा ते अश्व असख्याताजी ॥रा०११॥ च
र्म कवच सनाहाजी ॥रा०॥ अगे पहिरया उछाहाजी
॥ रा० ॥ क्रपाण फल तुणीरजी ॥ रा० ॥ धनुरधर
महा धीरजी ॥ रा० ॥ १२ ॥ सिंहनाद मुखे बोलेजी
॥ रा० ॥ विश्वने जाणे तृण तोलेजी ॥ रा० ॥ सग्रा
म तणा महा रसीयाजी ॥ रा० ॥ पायक जाए वहु
धशीयाजी ॥ रा० ॥ १३ ॥ रथ रेणुन्हरे रवी ढायो
जी ॥ रा० ॥ जाणे वरशालो आयोजी ॥ रा० ॥ सर्व
शब्द उठ्यो समकालेजी ॥ रा० ॥ त्रिभुवन कम्पयो
तिण तालेजी ॥ रा० ॥ १४ ॥ हाथीसु मिलीया हाथी

द्युम्न सेनापति, पांडवे कर्यो धरी प्रेम ॥ पांडवने कौ रव मिल्या, रामने रावण जेम ॥ १४॥ साम दाम ने द मुकीने, केवल नीग्रह एक ॥ ठरावी रणक्षेत्रमा, व ढवु एह विशेष ॥ १५ ॥

ढाल तेहीज ॥ तुम हे पीताम्बर पेहेरोजी मुखने म रकलडे ॥ ए देशी ॥ रणनु मुहुरत निरधारीजी, राज वी रण रशीया ॥ आयुद्ध अरची अधिकारीजी ॥राज०॥ धूप दीप अक्षत फूलेजी ॥ राज०॥ उवे आयुद्ध बहु मू लेजी॥राज०॥१॥नीशाण तणो नीर्घोपजी॥राज०॥जाणे ते वीर रस पोपेजी॥राज० ॥ अरुणोदय वेला रणे धाता जी॥रा० ॥ रवी सरीखा थया वीर राताजी ॥रा०॥२॥ कोलाहल रणे उगलियोजी ॥ रा०॥ सिंहनाद माहि जहीं भलीउजी ॥ रा० ॥ रणतूरना थाय रणकाराजी ॥ रा० ॥ भेरीना वाजे भणकाराजी ॥ रा० ॥ ३ ॥ ढक्का हल डणकाराजी ॥ रा० ॥ हुडक पम्फरो पूकाराजी ॥ रा० ॥ घण धरणी लाज राखेजी ॥ रा० ॥ धीर पण शीर धारेजी ॥ रा० ॥ ४ ॥ गयवर गाजे घन ला जेजी ॥ रा० ॥ वाजा रणाना बहु वाजेजी ॥ रा० ॥ हयवरना जो रहे स्वाराजी ॥ रा० ॥ चिहुदिशे रथना चित्काराजी ॥ रा० ॥ ५ ॥ वली सुभट शब्द भयका राजी ॥ रा० ॥ कोदण्ड तणा टणककाराजी ॥ रा० ॥ ग यवरनी घटा तिहा चालेजी ॥ रा० ॥ पोढा परवत स्या मालेजी ॥ रा० ॥ ६ ॥ मदझर मयगल रोशाला

हेगेरे, बेठो किम रहेछे, खारो लागे ए खरोरे ॥ १ ॥ रथे बे वेशीरे, वाण नाखे वीहींशीरे, अनीमन्यु त व हृशी, वलमा वोलियोरे ॥ नले तुमे आव्यारे, मु जने घणु नाव्यारे, संग्रामे सोहाव्या रखे धृजो हियोरे ॥ २ ॥ ब्रहदवल रुध्योरे, अनीमन्युए गुद्योरे, कैक वे तव खुद्यो, क्रपाचार्यनेरे ॥ ते चारे युद्धे जडीयारे, हथीयारे वढीयारे, अंगो अगे अडीया, लागे नय लोकनेरे ॥ ३ ॥ कैकव क्रपा जूझेरे, रथ रहित तनु धृजेरे, खरूगे खगाशलुझे, अलुझे न एकलारे ॥ ख रूगाडोप धरतारे ॥ फणटोप हरतारे, महा कोप कर ता, महा योद्धे मिल्यारे ॥ ४ ॥ ब्रहदवल वले वाध्यो रे, अनीमन्यु शुं वाध्योरे, रथ ध्वज सारथी तेहना छेदीयारे ॥ एहवे रथ खेडीरे ॥ प्रथवी उखेडीरे ॥ नि ष्मे न करी जोडी, पांडव दल नेदीयोरे ॥ ५ ॥ निप मने जोरेरे, पांरूव दले ठोरोरे, नाशी चिहुएगे, अ थीर थयु आतिरे ॥ तव अनिमन्यु उप्योरे, निषमशु कोप्योरे, अहो मुने लोप्यो, ध्वज छेद्यो ते वतीरे ॥६॥ दुरमुख नृप केरोरे, सारथी सवेरोरे ॥ नेद्यो नलेरो वार लागी नहीरे ॥ तव निष्म क्रोधीरे, अनीम न्युसु योधीरे, एह महा विरोधी, आज मारु सहीरे ॥ ७ ॥ तव पाडव सेनाथीरे, दश नृप थया साथीरे, अनिमन्यु लही हाथी, उपराळे आवीयारे ॥ तव नि षम तिहा धायोरे, रथे वेशी आयोरे, दल दुरे नसा

जी ॥ रा० ॥ रथवाला रथ सार्थीजी ॥ रा० ॥ नाथी सु मिलीया नाथीजी ॥ रा० ॥ घोडाचड घोडाचड घा तीजी ॥ रा० ॥१५॥ रण थयु शायर रुपजी ॥रा०॥ कलोला तुरग अनूपजी ॥रा०॥ गज रुपे जाणो मेह जी ॥ रा० ॥ मिन रुपी थया खेहजी ॥ रा० ॥ १६ ॥ तिहा मगर थया रथ राशीजी ॥ रा० ॥ पाला जल माणसा नाशीजो ॥ रा० ॥ प्रवहण थया विमानजी ॥ रा० ॥ शस्त्र ते वडवाग्नी मानजी ॥ रा० ॥ १७ ॥ रणतुर मीशे निर्घोपेजी ॥ रा० ॥ सेना वेलाने पोखे जी ॥ रा० ॥ एहवुं रण रणायर राजेजी ॥ रा० ॥ का यर देखीने नाजेजी ॥ रा० ॥ १८ ॥ ढाल रसीली गुणसागर बोलेजी ॥ रा० ॥ सग्राम सागरने तोले जी ॥ रा० ॥ साजलता सूरा जागेजी ॥ रा० ॥ का यर तो दूरे नाभेजी ॥ रा० ॥ १९ ॥

दुहा ॥ वीर रस वाजे विस्तरयो, आवीने रण मां हे ॥ एहवु ते तिहा देखीने, पार्थ पुत्र तिणे ठाए ॥ ॥ १ ॥ अनीमन्यु तव ऊछली, पड्यो कौरव दल मां हे ॥ बाण धारा जल वरसता, शत्रु जवाशा सुकाए ॥ ॥ २॥ तेहवो तिहा देखीने, दल पाम्यु सहु क्षोन ॥ देखी पडता आजने, कहो कुण माडे थोन ॥ ३ ॥

ढाल लेहिज ॥मेवाडा राणारे ॥ ए देशी ॥ अरजु न सुत आयोरे, अनीमन्यु सोहायोरे, न जाए सा ह्यो एतो भ्माकरोरे ॥ क्रपाचार्य कहेगेरे ॥ ब्रहदबलल

वी ठो तुम्हे, द्रुपद पुत्रक्कीव ॥ शिखंडीए रथे थापीने, तस पूठे रही अतिव ॥ ६ ॥ भिष्मने भेदे बाणशु, गांगेय नही नाखे बाण ॥ क्कीव शिखंडीया उपरे, एह उपाय एक जाण ॥ ७ ॥ कथन सुणी एह कृष्णनां, पांडव करी प्रमाण ॥ बलथी ठल बहुअठे, जो होए बुद्दि विनाण ॥ ८ ॥

ढाल तेहिज ॥ आख्याननी देशी ॥ प्रभात थाते परवरचा, रण मध्ये सघला रायरे ॥ पांडव कौरव मिल्या साहमा, धव धव क्रोधे थायरे ॥ १ ॥ राजद रणरंग रसे भरथा, आदरया शस्त्र अनेकरे ॥ वीर रसे विराजता, गाजता सिंह जेम नेकरे ॥ रा० ॥ ॥ २ ॥ शिखंडीयो रथे थापीने, तिहां पार्थ रही पूठेरे ॥ भिष्मपे ज्यु भालीने, सभाली निज मुठेरे ॥ रा० ॥ ३ ॥ भिषम क्किवने भेदवा, समर्थ नही तक जोयरे ॥ आकर्णांत ताणी बाणे मारचो, भिषम नाखे सोयरे ॥ रा० ॥ ४ ॥ चर्म नर्म भेदीने हणे, भेद्या माहरा प्राणरे ॥ ए शीखंडीयानु नही गजु, सही अर्जुन बाणरे ॥ रा० ॥ ५ ॥ एम सारथीने कही ततखिण, पड्यो रथ मझाररे ॥ तव शोकातुर थइ कौरव, आवी रथ विंट्यो तेणीवाररे ॥ रा० ॥ ६ ॥ अंत समयना वचन सुणवा, सहु थया सावधानरे ॥ तेवारे भीषमे तिहां सान किधी, कोइ करावो जलपानरे ॥ रा० ॥ ७ ॥ बाण बले प्रथवी भेदीने, निर्मल काढ्यु नीर

यो, शत्रु न फावीयोरे ॥ ८ ॥ तव भिपम निज बाणेरे, तसु ध्वजने ठाणेरे, छेदी मने जाणे, रखे अरि जीततारे ॥ तव उत्तर कुमारेरे, शल्य गजने सहारेरे ॥ तव शल्यने ठारे, देखी अरि दिपतारे ॥९॥ अमोघा स्वर्ण शक्तिरे, मेली निज भक्तिरे, सहु जोता सशक्ति, उत्तर मारीउरे ॥ तव पार्थ बाणने पूरेरे, दल नाठु दूरेरे ॥ आयो अर्जुन सुरे, नरहे वारीउरे ॥ १० ॥ तव भिपम भुजालोरे ॥ धरी धनुप क्रोधालोरे, आवी उजमालो, सेनाशु अभ्योरे ॥ धृष्टद्युमन थयो साहमोरे ॥ महा मच्यो सग्रामोरे, लेवा विश्रामो, रवी शायरे पड्योरे ॥११॥ दिनकर गयो दूरेरे, न रह्यो हजुरेरे, महा सग्रामे दिनपणे, आथ म्योरे ॥ प्रितीवती ढालेरे, कही गुण वीचालीरे ॥ नमीए प्रहकाले, युद्धथी जे सम्योरे ॥ १२ ॥

दुहा ॥ रणने मेली राजवी, पोहोता निज निज था न ॥ पेहले दिवशे युद्ध एम, थयु ते धरजो कान॥१॥ रात्री समये सहु राजवी, पाडव कृष्ण समाज ॥ मि लीने करे मत्रणु, किम सिधाशे काज ॥ २ ॥ भिष्म सर्वथा अजित ए, जित्यो किणे न जाय ॥ तो दुर्यो धन ए जीवता, कहोने केम जिताय ॥ ३ ॥ तव कृ ष्ण कहे उपाय एकछे, भिष्मने नियम छे एह ॥ विण हथीयारा स्त्री क्लिवने, न मारे गुण गेह ॥ ४ ॥ ताढा उपराढा प्रत्ये, भिष्मनना बे बाण ॥ भेदे भिष्मने भेदीए, साचलो बात निवाण ॥ ५ ॥ ते माटे पार्थ

वी गो तुम्हे, द्रुपद पुत्रक्लीव ॥ शिखंमीए रथे थापीने, तस पूठे रही अतिव ॥ ६ ॥ भिष्मने भेदे वाणशु, गागेय नही नाखे बाण ॥ क्लीव शिखंमीया उपरे, एह उपाय एक जाण ॥ ७ ॥ कथन सुणी एह कृष्णना, पांडव करी प्रमाण ॥ वलथी ठल बहुअछे, जो होए बुद्धि विनाण ॥ ८ ॥

ढाल तेहिज ॥ आख्याननी देशी ॥ प्रभात थाते परवस्था, रण मध्ये सघला रायरे ॥ पांडव कौरव मिल्या साहमा, धव धव क्रोधे थायरे ॥ १ ॥ राजद रणरंग रसे भरया, आदरया शस्त्र अनेकरे ॥ वीर रसे विराजता, गाजतां सिंह जेम नेकरे ॥ रा० ॥ ॥ २ ॥ शिखंडीयो रथे थापीने, तिहां पार्थ रही पूठे रे ॥ भिष्मपे ज्यु भाळीने, सभाली निज मुठेरे ॥ रा० ॥ ३ ॥ भिषम क्लिवने भेदवा, समर्थ नही तक जोयरे ॥ आकर्णांत ताणी बाणे मारयो, भिषम नाखे सो यरे ॥ रा० ॥ ४ ॥ चर्म नर्म भेदीने हणे, भेद्या मा हरा प्राणरे ॥ ए शीखंडीयानु नही गजु, सही अर्जुन बाणरे ॥ रा० ॥ ५ ॥ एम सारथीने कही ततखिण, पड्यो रथ मझाररे ॥ तव शोकातुर थइ कौरव, आवी रथ विंट्यो तेणीवाररे ॥ रा० ॥ ६ ॥ अंत समयना वचन सुणवा, सहु थया सावधानरे ॥ तेवारे भीष्मे तिहां सान किधी, कोइ करावो जलपानरे ॥ रा० ॥ ७ ॥ बाण वळे प्रथवी भेदीने. निर्मल काढ्यु नीर

रे ॥ प्रपीतामहने पायने, सावधान कीध शरीररे ॥ रा० ॥ ८ ॥ तव दुर्योधनने भीषम भाखे, रेरे दुरम ति देखरे ॥ पारथ समो प्रथवी विषे, पराक्रमी नहि को ए पेखरे ॥ रा० ॥ ९ ॥ सुणी शीख ठेहली मान मेहली, कर तु एहसु मेळरे ॥ जो राज्यने जीववु वा छे, तो वचन माहारा मत ठेलरे ॥ रा० ॥ १० ॥ दुर्योधने तो काने न धरया, भीषम सामु रह्यो भालिरे ॥ क्रोधे करीने नजर करडी, गर्वे दिए मने गालिरे ॥ रा० ॥ ११ ॥ गागेय तव देव वाणीए, सावद्य तजी व्रतधाररे ॥ अणसण तव अगी करीने, तज्या च्यारे आहाररे ॥ रा० ॥ १२ ॥ समाधी मरण करीने, बारमे देवलोकरे ॥ अमरनो अवतार पाम्यो, जाण्यो धर्म फल थोकरे ॥ रा० ॥ १३ ॥ प्रात समय रवि प्रगट्यो, तव रणागणने जायरे ॥ द्रोणने करी सैन्या पति, दुर्योधन गयो धायरे ॥ रा० ॥ १४ ॥ अर्जुने निज गुरु जाणीने, द्रोणने कर्यो प्रणामरे ॥ बाण रुप दक्षिणा आपी, सभाली ल्यो स्वामरे ॥ रा० ॥ १५ ॥ तेवारे जोरावर ते युद्धे लागा, तुरग पाम्या त्रासरे ॥ अस्ताचल रवी आथम्यो, तव पोहोता सहु निज वासरे ॥ रा० ॥ १६ ॥ बारमे दिने त्रिगर्ताधीप, अर्जुन शशक्तानरे ॥ गया जीतवा तव सैन्य लेइ, आव्यो भगदत्त तिहा राजानरे ॥ रा० ॥ १७ ॥ गजे बेठो सेना अवगाही, दुष्टने दुर्दातरे ॥ कमलीनीने जेम

करीवर भेदे, तिम करि ते कल्पांतरे ॥ रा० ॥१८॥
ते सुणी अर्जुन आवीयो, ते युद्ध तजी ततकालरे
॥ गज सहित ते भगदत्तने, युद्धे हण्यो ते तालरे
॥ रा० ॥ १९ ॥ रसीली ढाले गुणसागर वोले, उदय
जेहनो होयरे ॥ तेह घरे रग वधामणा, महा हर्ष
पामे सोयरे ॥ रा० ॥ २० ॥

दुहा ॥ भगदत्त पडते कौरवे, चिंता लही चक्र
व्युह ॥ रच्यो तिहा एक रातमा, मेली सैन्य समुह
॥ १ ॥ अर्जुन तो युद्धे गयो, शशक्तक जितन हेत ॥
प्रात समय अभीमन्यु तव, भीमादीक सुभट समेत
॥ २ ॥ चक्रव्युहमा सचरयो, तिहा दुर्योधन ने कर्ण ॥
क्रपा क्रतवर्म द्रोण आदे, महा शस्त्रे आवर्ण ॥ ३ ॥
तेहने अवगणी आघो वरयो, दुर्योधने रुध्यो भीम ॥
तव अभीमन्यु पड्यो एकलो, शूर विद्यानो शीम ॥
॥ ४ ॥ जयद्रथ युद्धे चड्यो, दिव्यास्त्र शस्त्रे युद्ध
॥ वडी वार किधु तिणे, दिवश रह्यो एक मुहुर्त॥५॥
जयद्रथे बल ताकीने, अभीमन्यु पमाड्यो अत ॥
कौरव तिहा कलरव करे, अरिनो पामी अंत ॥ ६ ॥

ढाल तेहिज ॥ श्री विरने वादी पुछे श्री गौतम
स्वामी ॥ ए देशी ॥ अर्जुन आव्यो तिहा हेलाएजी,
जयदरथ मारुं आ वेलाएजी ॥ अभीमन्युने वेर वि
रोधेजी, एम प्रतिज्ञा किधी क्रोधेजी ॥ १ ॥ क्रोधे कृ
रीने युद्ध माड्यो, द्रोणादीक सघाते ॥ चमुतो वहु चू

री नाखी, शस्त्र अस्त्रने घावे ॥ २ ॥ अनुपदे तव आवीया, शल्यकी वायु पुत्र ॥ दुर्योधनने नीम झुझे, नुरीस्त्रवा शल्यकी तत्र ॥ ३ ॥ अर्जुने उगारी सर्व सैन्यजी, जयदरथ दिठो महा मळीनजी ॥ ते पट योद्धा जोर तिहा झुझेजी, तनमन थया क्रोधे ध्रुजेजी ॥ ॥ ४ ॥ क्रोधे करीने नुरीस्त्रवाना, भुज उपाडी नाखीया ॥ तव सत्यकीए नेठोरे मारयो, शत्रु विजा शकीया ॥ ५ ॥ पार्थ पिण जयदरथना, तुरग रथ सारथी हणी, दिनाते जयदरथ मारयो, अरि गण सघलो अवगणी ॥ ६ ॥ चौदे दिहाडे अक्षोहीणी सातजी, पाडवे चूरी देखाडी हाथजी, तव कौरव चिंते ए पाडव पूराजी, न्याय निति न थाए अधुराजी ॥ ७ ॥ न्याय निते जीत्या न जाए, करु इहा अन्याय ॥ धाडी मे लीधा ए पहुतो, राते मारु ठाय ॥ ८ ॥ घुयडनी परे लेउ घेरी, पाडव वायशनी परे ॥ एम चिंतीने धाड लेइ, पोहतो कोइक अवसरे ॥ ९ ॥ तव नीम पुत्र हेडवा जायोजी, अस्त्र लेइने साहमो आयोजी ॥ घटोत्कचने करी झूझ झाझोजी, जग माहे जेहनो सघलो आझोजी ॥ १० ॥ आझावत ते अस्त्रजोरे, कौरव सेन्या ते मथे ॥ माया युद्धे वहु मारीया, तव कर्ण कोप्यो बळ छते ॥ ११ ॥ बाण वहुला नाखीया, पिण तेह पाछो न उसरे ॥ तव वहनीकणा दत्त शक्ती मेहली, प्राण तेहना अपहृ

री ॥ १२ ॥ घटोत्कछनो करी सहारजी, पांडव सेना
मा थयो हाहाकारजी ॥ कौरव सेना मन हरखाणीजी,
कर्ण समो को नही वाणीजी ॥ १३ ॥ वाणी नही को
इ कर्ण सरीखो, प्रजाते धरी प्रेम ॥ रणागणमा आ
वीया, साहमे साहमा सागर जेम ॥ १४ ॥ विराट द्रु
पद द्रोणे मारया महा युद्धने जोरे करी ॥ पाडवनु द
ल थयु झाखु, अति आनद पाम्या अरी ॥ १५ ॥
आ सुदर ढाले तक जोइ, गुणसागर इणीपरे कही ॥
हरखनी केडे शोक हरी हरख शोक ते कर्मे लही ॥१६॥

दुहा ॥ पाडव दल थीर करी, धृष्टद्युमन साहमो था
य ॥ द्रोणने कहे रहे उभो, जीवतो आज ना जाय ॥
॥ १ ॥ गजश्व नट क्षय पमाड्या, युद्ध तव जाम्यो
जोर ॥ एहवे मालव रायनो, अश्वस्थामा गर्ज ते घो
र ॥ २ ॥ अश्वस्थामा नामे तेह गज, पड्यो रणमा जा
म ॥ अश्वस्थामा मारीउ, जनसहु भाखे ताम ॥ ३ ॥
द्रोणे ते वात साभली, विशस्थुल थयो जाम ॥ शोका
कुल लहीने ढले, ते धृष्टद्युमनने हण्यो ताम ॥ ४ ॥
द्रोण तव धरणी ढल्यो, अणसण करीने सोय ॥ मरण
समाधी ते मरी, ब्रम्हदेव लोके सुर होय ॥ ५॥

ढाल तेहिज ॥ गर्व न करशो गात्रनो ॥ ए देशी ॥
अश्वस्थामा तिहारे उचल्यो, आव्यो पाण्डव दल
माय ॥ जलधरनी परे वरसतो, बाण धारा ते ठाय ॥
जोरो जोयोरे युद्धनो ॥ १ ॥ पाण्डवना दल उपरे, अस्त्र

री नाखी, शस्त्र अस्त्रने घावे ॥ २ ॥ अनुपदं तव आवीया, शल्यकी वायु पुत्र ॥ दुर्योधनने भीम झूझे, भूरीस्त्रवा शल्यकी तत्र ॥ ३ ॥ अर्जुने उगारी सर्व सैन्यजी, जयद्रथ दिठो महा मलीनजी ॥ ते पट योद्धा जोर तिहा झूझेजी, तनमन थया क्रोधे धुजेजी ॥ ॥ ४ ॥ क्रोधे करीने भूरीस्त्रवाना, भुज उपाडी ना खीया ॥ तव सत्यकीए नेठोरे मारयो, शत्रु बिजा शकीया ॥ ५ ॥ पार्थे पिण जयद्रथना, तुरग रथ सारथी हणी, दिनाते जयद्रथ मारयो, अरि ग ण सघलो अवगणी ॥ ६ ॥ चौदे दिहाडे अक्षोही णी सातजी, पाडवे चूरी देखाडी हाथजी, तव कौरव चिंते ए पाडव पूराजी, न्याय निति न थाए अधुरा जी ॥ ७ ॥ न्याय निते जीत्या न जाए, करु इहा अन्याय ॥ धाडी मे लीधा ए पहुतो, राते मारु ठा य ॥ ८ ॥ घुयडनी परे लेउ घेरी, पाडव वायश नी परे ॥ एम चिंतीने धाड लेइ, पोहतो कोइक अ वसरे ॥ ९ ॥ तव भीम पुत्र हेडवा जायोजी, अस्त्र ले इने साहमो आयोजी ॥ घटोत्कछने करी झूझ झाझो जी, जग माहे जेहनो सघलो आझोजी ॥ १० ॥ आ झावत ते अस्त्रजोरे, कौरव सेन्या ते मथे ॥ माया यु द्धे बहु मारीया, तव कर्ण कोप्यो बळ वते ॥ ११ ॥ बाण बहुला नाखीया, पिण तेह पाछो न ऊसरे ॥ त व वहनीकणा दत शक्ती मेहली, प्राण तेहना अपह

परे, अवनि आकाश प्रळयांत ॥ तिर ते त्रिभुवने विस्त रया, जाणे कोप्यो कृतात॥जो०॥१३॥ पन्नग अस्त्र क र्यों मुक्यु, पार्थे गरुड अस्त्र ताम॥ एम अस्त्र अनेक अ फल्या करया, अर्जुने तेणे ठाम ॥ जो० ॥ १४ ॥ शं खचूड निशा निधे, कर्ण मार्यो दिनात॥ करण पड्यो कौरव तणी, भागी सघली भ्रात ॥ जो० ॥ १५ ॥ आशा बलवंती जगमां कही, तव शल्य कर्यो शेना नि॥ रणांगणमा आविया, हजु हुश अछे जीत्यानि ॥ जो०॥१६॥ शल्य ते शल्य सारिखो, बाणनो वरसतो मे ह ॥ तिहा युधिष्ठीर एक थीर रह्या, थयु युद्ध अछेह ॥ १७ ॥ दीशी दावानल सारिखो, शकुनी आव्यो तक जोय॥ उत्तर वयर सभारिने, शल्य युधीरे सोय ॥ १८ ॥ शक्ति मेलिने सहारीयो, दिनाते दल माहे॥ एतो ढाल रसाल ए, वदे गुणसागर उछाहे ॥जो०॥१९॥

दुहा ॥ शल्य पडते महा शल्य थयो, कौरवने ते काल ॥ लोक माही लाजतो, मुख ढके मछराल ॥ १ ॥ दुर्योधन तव नाशीने, अलोप थयो ते आप॥ कोइ सरोवर माहि जइ पड्यो, अताग देखी आप॥ २ ॥

ढाल तेहिज ॥चडि आव्यो लाल पार्थ प्रबल प्रता प ॥ ए देशी ॥ धो धो नगारा वाजता, वाहला, चड्यो दुर्योधननो सेन॥वन माहि बोली विधुरा॥वा०॥मुख मे हलता फेन ॥ १ ॥ माहरा नाथ गुमानी, कुण लेशेरे म्हारो मुजुरो आजुनो ॥आवी मीलोरे, म्हारा नृप अ

नारायणी नामे ॥ मुक्यु महा कोधे करी, विश्व कप्युं ते ठामे ॥ जोरो० ॥ २ ॥ जाणे कोलियो करशे विश्व नो, सैन्य लीधु सर्व घेर ॥ तेहने समर्थ नहि कोइ वा रवा, जोरावर पिण थया जेर ॥ जोरो० ॥ ३ ॥ तव कृष्णने वचने पाडवे, आयुध मेहली दूर, विनय करि ते स्वपरि करे, हेजे रही हजुर ॥ जोरो० ॥ ४ ॥ न क्तिनी युक्ति तुठि तदा, शक्ति ते थइ शात ॥ बार पो होर युद्द ते थयु, अनेकनो आव्यो तिहा अत ॥ जो० ॥ ५ ॥ कर्ण सेनापति थापियो, कौरव मिलि ते ठाम ॥ रणागण माहि आवियो, वर्त्यो माहा सग्राम ॥ जो० ॥ ६ ॥ तव कर्णांत ताणी कोदन्ने, कर्णने पार्थ दोय ॥ कल्पात काल रवीनि परे, क्रोधे कोप्या कुल होय॥ ॥ जो० ॥ ७ ॥ बले पूरा ते बिहु सहि, बाणावलि पि ण तुल्य ॥ सरिखे समाने वें नडे, नूजवे जेहना अतु ल्य ॥ जो० ॥८॥ नीम नुजा वलि नालीने, नाज्यो दु शासन ॥ नूजा काढी नुज बले, वीर हरख्या धरि म न ॥ जो० ॥ ९ ॥ रविए रेहेवाणु नहि, नाशी गयो निज गेह ॥ रात्रि पडी तव तजी, थानक पोहोता तेह ॥ जो० ॥ १० ॥ कर्णे प्रतिज्ञा तव करि, अर्जुनने मारु आज ॥ शल्यने सारथी थापिने, शखनो करी अवाज ॥ जो० ॥ ११ ॥ रणागण माहि आवियो, ग र्जना करतो घोर ॥ दशो दिशी बहिरी करी, नय ला गो चिहु नर ॥ जो० ॥ १२ ॥ सजल जलद घटानि

दाना घाय ॥ मा०॥१० ॥ मल्लपरे ते बे मिल्या ॥ वा० ॥ पोढा पर्वत माही ॥ मा० ॥ उचा निचा उछले ॥ ॥ वा० ॥ घडो घडी धरती घेराए ॥ मा० ॥ ११ ॥ रोषारुए थया रातमा ॥ वा० ॥ जोया केणे न जाय ॥ मा० ॥ दुर्योधन नाठो घणु ॥ वा० ॥ प्रथवीए न मेली पाय ॥ मा० ॥ १२ ॥ लघु लाघवी कला ल ही ॥ वा० ॥ छलवीण नवी भेनराय ॥ मा० ॥ जघमा गदा जोरे शु ॥ वा० ॥ भीम मारे महाकाय ॥ मा० ॥ १३ ॥ भूए पाडीने भीमभे ॥ वा० ॥ मारी पाटुना प्रहार ॥ मा० ॥ मुकुट भागी भुगो करयो ॥ वा० ॥ पूरव कोप सभार ॥ मा० ॥ १४ ॥ गुणसागर कहे सा भलो ॥ वा० ॥ एतो ढाल रसाल ॥ मा० ॥ विघन घ णा वाका भमा॥वा०॥आवी पोहोते काल॥मा० ॥१५॥

दुहा ॥ सवधी जाणी ते समय, बलभद्र वहु रि साय॥पाम्व सहुने अवगुणी, निसरी दूरे जाय ॥ १ ॥ पाडव तव पुठे गया, आगे कृष्ण करेह ॥ वलभद्रने मनाववा, निज मने आणी नेह ॥ २ ॥ धृष्टद्युमन खेडीयो, रक्षाने रणमाही ॥ थिर करीने थापीया, र ह्या रण अवगाही ॥ ३ ॥

ढाल तेहिज ॥ शियल सुरगी चूनडी ॥ ए देशी ॥ होजी दुर्योधनने ते आवी कहे, होजी कृतवर्म कृपा अश्वस्थाम ॥ होजी अत समये आव्या अमे, होजी तम स्वरुप जोवाने काम ॥ १ ॥ साहेबीया वोल वो

भीमानी ॥कुण०॥२॥ए आकणी॥वाते वगडो खोलतां, ॥वा०॥किहा एक लाधी भाल॥जल मध्ये तिहा जाणी ने ॥ वा० ॥ सहु बोले समकाल ॥ मा० ॥ ३ ॥ पाड व पिण पोहोता तिहा॥माहरा बंधु गविल॥ कुण कर शेरे जोरे युद्ध आजुनो, रणमा आवोरे माहारा रणना रगिला ॥ ए आकणी ॥ तु अभीमानी राजवी ॥ वा० ॥ तु सूरा माहि सूर ॥ माहारा०॥ तुझने न घटे नास वु ॥ वा० ॥ नहि रहे नासतां नूर ॥ मा० ॥ ४ ॥ का तु कुलने लाजवे ॥ वा० ॥ पुरप तनु करी मलीन ॥ ॥ मा० ॥ पाणीमा पोढयो थको ॥ वा० ॥ दिसेछे म हादीन ॥ मा० ॥ ५ ॥ अर्जुन रुपे आयले ॥ वा० ॥ कहेने किम रहेवाय ॥ मा० ॥ ए सरोवरनो स्यो आ सरो ॥ वा० ॥ सोपास्ये जो समुद्र सोपाय ॥ मा० ॥ ॥ ६ ॥ अथवा तु जो डसरे ॥ वा० ॥ सेनासु युद्ध न थाय ॥ मा० ॥ तो मन माने जेहशु ॥ वा० ॥ ते एकसु वढोरण ठाय ॥ मा० ॥ ७ ॥ जेणे तेणे वाते जाणीये ॥ वा० ॥ माथे आव्यु छे मोत ॥ मा० ॥ ते माटे दिन तातजी ॥ वा०॥ मरे तु सूरा तन साहित॥ ॥ मा० ॥ ८ ॥ तव तिहा दुर्योधन बोलीयो ॥ वा० ॥ गदा युद्ध भीमने साथ ॥ मा० ॥ मानी सरथी म गरस्यो ॥ वा० ॥ नीसरयो कौरव नाथ ॥ मा० ॥ ९ ॥ पाडव कौरव सहु मीली ॥ वा० ॥ बेठा सभा बनाय ॥ मा० ॥ भीम दुर्योधन बे भडे ॥ वा० ॥ मारे ग

॥ १ ॥ पुत्र हण्याथी शोके अति, कौरवने पाडव नद ॥ स्वजनादिक सहु साथना, करिअ मृत कार्य नरिंद ॥ २ ॥ सरस्वति सरिता तटे, पाडवे मृत काज ॥ जजमणीउ पालिया, सर्वेने शुभ साज ॥ ३ ॥

इति पान्डव कौरव संग्राम चरित्र संपूर्ण

ढाल मूलगी तेहिज ॥ भजो नरराम राम ॥ ए देशी ॥ दुर्योधन सेनापति भीषम, किधो बलियो जाणी॥ धृष्टद्युमन पांडव थीर थाप्यो ॥ कटक तणो आगे वाणी होराजा किधो आज भारथ ॥१॥ अभिमन्यु कुमर अधीक बलवतो, सर्व सुभटने आगे ॥ रण रगे रमवा रलियायत, व्रहतबलसु भांगे हो राजा ॥ कि०॥२ ॥ भीष्मकेतु अभिमन्यु कापे, भीषम भीष्म होवे ॥ छेदे केतु भीमनी भूपति, देव तमासो जोवे हो राजा ॥ कि०॥३॥ उत्तर कुवरने दु खदाइ, सल्य नरेसर देखी ॥ अर्जुन कौरवना दल मोडे, भीष्म रीस विशेषी हो राजा ॥ कि०॥ ॥ ४ ॥ शढ शीखडी आगे राखी, इद्र तणो सुत कोपे ॥ भीष्म तनु तव बाणे विंध्यो, प्रभु मरजादा नलोपे हो राजा ॥ कि० ॥ ५ ॥ तृष्यावत नदी सुत जाणो, अर्जुन पावे पाणी ॥ सथारो करी स्वर्ग बारमे, हुवो अमर विमानी हो राजा ॥ कि० ॥ ६ ॥ द्रोणाचार्य सेन्या नायक, होइ रणमे आवे ॥ आरम्भी आरम्भ घणेरो, करतो शक न पावे हो राजा ॥ कि० ॥ ७ ॥ श्री भगदत्त हरायो अर्जुन, जयदरथ अर्जुन नद ॥

त्तरे जे कहो ते करु अमे ॥ ए आकणी ॥ होजी तुमे तो सहुने तजी, होजी सुता मरण शयाए॥ होजी तो पिण आपो आगन्या, होजी ते काज करु उछाहे ॥ सा० ॥ २ ॥ होजी आपोजो तुमे आगन्या, होजी तो पाम्वना शिस, होजी मुख आगे आणी मेलीए, होजी एह अमारी आशीस ॥ सा० ॥ ३ ॥ होजी वयण सुणी वेधालुया, होजी आपे थइ उजमाल ॥ होजी वासो थापीने मोकल्या, होजी दुर्योधने ततकाल ॥ सा० ॥ ४ ॥ होजी ते तिने रणमा जई, होजी युद्ध करीने जोर ॥ होजी धृष्टद्युमन श्रीखडीया हणी, होजी शुन्य लही रणठोर ॥ सा० ॥ ५ ॥ होजी पाडवना पाच पुत्रना, होजी माथा लेइ पच ॥ होजी मुह आगले आणी मेलीया, होजी दुर्योधन लहि प्रपच ॥ सा० ॥ ६ ॥ होजी शीसु शीर उलखी बोलियो, होजी तुमने पडो धिकार ॥ होजी वालहत्या मुझ आपीने, होजी नारयो अति पापने नार ॥ सा० ॥ ॥ ७ ॥ होजी मुखे एम कहितो थको, होजी पोहोतो ते परलोक ॥ होजी ते पिण त्रीणे किहाइ गया, होजी पामी लाजने शोक ॥ सा० ॥ ८ ॥ होजी गुणसागर एम उच्चरे, होजी ढाल नली रसाल ॥ होजी मरण अकाले ते मरे, होजी जेहने पापनो ढाल ॥ सा०॥९ ॥

दुहा ॥ नक्तिनाव विनये करी, बलनद्रने बहु मान ॥ देइ मनावी पाम्वा, आव्या करी रण स्थान ॥

सारारे परीवरयो, चाल्यो श्रीहरी राज ॥ प्रा०॥२१॥ माता बंधव अंगना, पुत्रा केरोरे साथ ॥ विधीसु देइ प्रदक्षीणा, वाद्या श्री जगनाथ ॥ प्रा० ॥ २२ ॥ देश ना सुणीरे स्वामीनी, नवी पाम्या प्रतीबोध ॥ सम ता रुपेरे प्राणीया, छोडे वयर विरोध ॥ प्रा० ॥२३॥ राजेमतिरे संजम लीयो, नवही दसारा तेम ॥ महा नेमी रहनेमीशु, अवर ग्रहे व्रतनेम ॥ प्रा० ॥२४ ॥ सुर पोहता निज स्थानके, हरी पोहता पुरमाही ॥ प्र भु विचरेरे महीतले, साथे घणा सुर प्राही ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ चालीसा सोमी ढालमें, राजेमती जिन प्यार ॥ श्री गुण सागर सूरिजी, निवह्यो अधीक अपार ॥ प्रा० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ गजपुर पती गर्जे महा, पांडव प्रवल प्र ताप ॥ आज्ञा इश्वरता पणे, पाले प्रथवी आप ॥१॥ नारद नाम महामुनी, चाली आयो ऋपी जाम ॥ बाप मायशु पाडवा, किधो ताम प्रणाम ॥ २ ॥ असजती ने अवरती, जाणी द्रोपदी देव ॥ मान्यो नही मुनी वरु, फिर चाल्यो ततखेव ॥ ३ ॥

ढाल १४१ मी ॥ चंद्रावलानी देशी ॥ रीस वसे चित्त चिंतवेरे, एक पुरुषनी नार, गरव करे मनमे घ णुरे, हु मोटी ससारे जाणी ॥ पाच पुरुषनी नार वखा णी ॥ मद आठेहीसु राती अती, न्याय रहे रसर गे रती ॥ १ ॥ जी नारदजीरे, कदली तरुनी उप

थारे खेलता, भाभीयासुरे भाय ॥ रगे राणीरे रुख मणी, बोली बोल लगाय ॥ प्रा० ॥ १०॥ भाइ भला सुख भोगवे, रमणी सोल हजार॥ स्या तुम कुमर रा जला, नारी एकहि लार ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ तिर्थंकररे आगे हुवा, भोगवी भोग विलास ॥ मुक्ति पहुतारे ते सही, तुम्ह को उपर आश ॥ प्रा० ॥ १२॥ जाबुवाति पभणे सखी, वादि करो तुम्ह खेद ॥ पुरुप नाहि ए हेजडे, मे लीधोछेरे भेद ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ नारी विना नर कीउ रहे, पेखी पारेवा प्रेम ॥ अन्नरथीरे आवे धरयो, कामनी उपर केम ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ भामा भां खेरे भोलभी, तु नवी समझिरे वात ॥ नारी भरेविरे दोहिली, सासामे दिन जात ॥ प्रा० ॥ १५॥ देवरी येरे डाह्यो खरो, फिरे निपुणस्यारे न्याय ॥ व्याह म नावेरे जोरशु, हरख्यो यादवराय ॥ प्रा० ॥ १६ ॥ राजेमतीरे व्याहवा, आव्या तोरण बार ॥ हिसा दे खीरे बाहुड्यो, चढीयो गढ गिरनार ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ राजुल राणीरे विनवे, नव भवना भरतार ॥ तुझ वि णँ व्यापीरे वेदना, सो जाणे कीरतार ॥ प्रा० ॥१८॥ सजम लीधोरे सादरो, सहस नरा परीवार ॥ घाती कर्म ने खय करी, पाम्या केवल सार ॥ प्रा० ॥ १९ ॥ स मोसरण देवे रच्यो, मिलीया चोसठ इन्द्र ॥ वन रखवा लोरे आवीयो, प्रणम्यो कृष्ण नरिंद ॥ प्रा० ॥ २० ॥ दान देइरे सतोखीया, मेली सुदर साज ॥ दसही द

धान कहावे, पचाली जगमे जस पावे ॥ तेहने पग अगुठ आणी, लाखमे नागे नावे तुझ राणी ॥ जी० ॥ ७ ॥ एम कही ऋषीजी गयोरे, नृपने तो रढ लागी ॥ विषया वसे आतुर थयोरे, देखणनी मती जागी ॥ देखणनी मती जागी जाम, सुर आराधन किधो ताम ॥ सुर नाखे सा अवर न चाहे, शु कर सो इण साथ उमाहे ॥ जी० ॥ ८ ॥ नृपनो हठ जाणी करीरे, सुर आयो त्रिय हेत ॥ आपी निंद्रा आकरीरे, किधी अधीक अचेत ॥ किधी अधीक अचेत जेवारे, पूरव सगीत काम समारे ॥ राजाना मदीरथी लीधी, पद्मनाभने जइने दिधी ॥ जी० ॥ ९ ॥ महील माही अति नलोरे, व्रक्ष अशोक उदार ॥ आणी राणी द्रोपदीरे, कियो अति अवीचार ॥ कियो अति अविचार विमासे, राजाने इम वात प्रकाशे ॥ ए कामथी तु जाणजे राजा, जग वाज्या अपकीरती वाजा ॥ जी० ॥ १० ॥ हिवे मुझने मत तेडावजेरे, ए कहुछु तुझ आज ॥ सती शिरोमणी ए खरीरे, धीरे करजे काज ॥ धीरे करजे काज निवेरो, एथी मतकरजे हठ घणेरो, सुर गयो एम कहीने वाणी, एकतालीस सोमी ढाल कहाणी, श्री गुणसागर सूरि वखाणी ॥ जी० ॥११॥

दुहा ॥ जागी राणी द्रोपदी, जाण्यो ए अपहार ॥ आरतीवती अति खरी, मनशु करे विचार ॥ १ ॥ हथीणापुर किहा रह्यो, सासु सुसरो जेठ ॥ मुझ प्रित

मारे, जाणी काळ विणास ॥ फल मुके तिम द्रौपदिरे पडीयो चाहे पास ॥ पडीयो चाहे पास ते एतां, मु ऊने तो अण आदर देता ॥ तो हु जोरे विणसु का म, एम कही ऋषी चाल्यो ताम ॥ जी० ॥ २ ॥ सोल हजार ए देशमारे, वरते हरीनी आण ॥ पहोचावु तेही स्थानकेरे, जिहा न चाले हरी प्राण ॥ जिहा न चाले हरीनो प्राण, सोधु सो जइ निश्चल ठाण ॥ द्वी प समुद्र उलघी जाय, नारद करवा काज उमाय ॥ ॥ जी० ॥ ३ ॥ धातकी खड भरतमेरे, सुरककाह उ छाह ॥ पद्मनाभ राजा भलोरे, सात सया त्रय नाह ॥ सातसया त्रीय केरो नाह, आपुणपे जाणे गुण गा ह ॥ नारी निरोपम शु सुख वाशी, भोग पुरदर लि ल वीलाशी ॥ जी० ॥ ४ ॥ नारद चाली आइयोरे, महील माही मनरग ॥ राजा राणी साचवेरे, शेवा धर्म सुचग ॥ शेवा धर्म सुचगपणेरे, अति आदरशु नृप भणेरे ॥ मुऊ अतेउर सरीखो रुडो, किहा ए दिठो मती भाखो कूडो ॥ जी० ॥ ५ ॥ नारद भाखे रायजीरे, स्यो झूठो अहकार ॥ कुवा मींडक सारी खोरे, तु दिसत अपार ॥ तु दिसत अपार नरेशर, अवर न दीठी नार अलवेशर ॥ जीणेहि जेतो दे स्यो पेस्यो, ते तोही मन वात विशेस्यो ॥ जी० ॥ ६ ॥ जवुद्वीपे जाणीएरे, खेत्र भरत सुस्थान ॥ हथीणा पुरमे हर्षशुरे, पाडव नारी प्रधान ॥ पाडव नारी प्र

धान कहावे, पचाली जगमे जस पावे ॥ तेहने पग अगुठे आणी, लाखमे नागे नावे तुझ राणी ॥ जी० ॥ ७ ॥ एम कही ऋषीजी गयोरे, नृपने तो रढ लागी ॥ विषया वसे आतुर थयोरे, देखणनी मती जागी ॥ देखणनी मती जागी जाम, सुर आराधन किधो ताम ॥ सुर नाखे सा अवर न चाहे, शु कर सो इण साथ उमाहे ॥ जी० ॥ ८ ॥ नृपनो हठ जाणी करीरे, सुर आयो त्रिय हेत ॥ आपी निंद्रा आ करीरे, किधी अधीक अचेत ॥ किधी अधीक अचेत जेवारे, पूरव सगीत काम समारे ॥ राजाना मदीरथी लीधी, पद्मनाभने जइने दिधी ॥ जी० ॥ ९ ॥ महील माही अति नलोरे, व्रक्ष अशोक उदार ॥ आणी राणी द्रोपदीरे, कियो अति अवीचार ॥ कियो अति अविचार विमासे, राजाने इम वात प्रकाशे ॥ ए कामथी तु जाणजे राजा, जग वाज्या अपकीरती वाजा ॥ जी० ॥ १० ॥ हिवे मुझने मत तेडावजेरे, ए कहुवुं तुझ आज ॥ सती शिरोमणी ए खरीरे, धीरे करजे काज ॥ धीरे करजे काज निवेरो, एथी मतकरजे हठ घणेरो, सुर गयो एम कहीने वाणी, एकतालीस सोमी ढाल कहाणी, श्री गुणसागर सूरि वखाणी ॥ जी० ॥११॥

दुहा ॥ जागी राणी द्रोपदी, जाएयो ए अपहार ॥ आरतींवती अति खरी, मनशु करे विचार ॥ १ ॥ हथीणापुर किहा रह्यो, सासु सुसरो जेठ ॥ मुझ प्रित

म पांडव किहा, सखरो कारण तेय ॥ २ ॥ किहा ते मदीर मालीया, किहा रत्नाली सेज ॥ किहा दाशी मलीयागिरी, वालपणानो हेज ॥ ३ ॥ ए हिंमोळो माहरो, पिण नवी ए मुझ वाग॥ कोइ वैरी मुझ अपहरी, एम चितवे महा नाग ॥४॥ उलग्गा देइ आकरा, राणी विविध प्रकार ॥ देवमत उगे उतरे, आज अवे तुजवार ॥५॥ नृप अंतेउरशु चली, आणी जणावे आप ॥ केळवणी करतो घणी, ताम प्रकाशे पाप ॥ ६ ॥

ढाल १४२ मी ॥ वदलीनी देशी ॥ राजा कुमरी प्रते वोले, नारी कुण तारा तोले हो ॥ सुंदर वयण सुणो ॥ ते नगरी माही सारी ॥ मृगनयणी पदमनी नारी हो ॥ सु० ॥ १ ॥ तुझ रुपे रंभा हारी, तुझ नयनाकी वलीहारी हो ॥ सु० ॥ तोरी वात कही ब्रह्मचारी, रचीपची विध आप समारी हो ॥ सु० ॥ २ ॥ तुझ कारण देव मनायो, त्रिजे उपवासे आयो हो ॥ ॥ सु० ॥ तोने तिहाथी आणी, एही साची सद्दनाणी हो ॥ सु० ॥ ३ ॥ मनमे मतको ग्र आणो, मुझ नगरी सबलो थाणो हो ॥ सु० ॥ कुण राजा रावण राणो, मुझथी को नावि सपराणो हो ॥ सु० ॥ ४ ॥ हमसु हठ गेड हठिली, राजकुमरी रंग रंगिली हो ॥ ॥ सु० ॥ माननी मन मान निवारो, मुझ विनतडी अवधारो हो ॥ सु० ॥ ५ ॥ सहु राज तणी धणीयाणी, तुझ करी थापु पटराणी हो ॥ सु० ॥ मुझ घरे पेहली

जे राणी, तुझ आगल आणशे पाणी हो ॥ सु० ॥
॥ ६ ॥ धन्य दिन दरशण पायो, धन्य तुझसु प्रेम ल
गायो हो ॥ सु० ॥ लिलापति नाम धराउ, गज गम
नी विरह गमाउ हो ॥ सु० ॥ ७॥ मुझ देखी कुमरी
तु लाजी, हिवे किण वाते तु राजी हो ॥ सु० ॥ मन
गाठ गोडी कर बोलो, गुघट पट परहो खोलो हो ॥
सु०॥८॥ कुमरी राजा प्रते भासे, व्रत राखण एम वि
मासे हो ॥ सु० ॥ जे हुवे शियल अटको, तस वाल
न होवे वको हो ॥ सु० ॥ ९ ॥

दुहा ॥ काल क्षेपणा कारणे ॥ देवी करे अरदास,
लागी मुवानो नहि समो, मागी लिया षट मास ॥
॥ १ ॥ एटला माहि वाहरु, थाशे देव मुरार ॥ नहि
तो वश हु ताहरे, राजा आरति निवार ॥ २ ॥ पाड
व बलने हरी तणा, रथ जल थलमे जाय ॥ मनोरथ
अनुसारथी, किहाहि न खलाय ॥ ३ ॥

ढाल १४३ मी ॥ राम पधारीयाजी, ब्राह्मण केरे
गेह ॥ ए देशी ॥ धन धन धन सतीजी, आपुण राखे
एम ॥ काल खेपणा करे घणीजी, नीरवाहे निज नेम
॥ ध० ॥ १ ॥ साठ सहस वरसा लगेजी, सुदरीए त
प कीध ॥ काया करी अती दुबलीजी, प्रभु पासे व्र
त लीध ॥ ध० ॥ २ ॥ सतिया माहि सीरोमणीजी,
सत्यवति त्रीय देखी ॥ राजा रावण आगलेजी, राखी
टेक विशेप ॥ ध० ॥३॥ स्ववश तो अति सोहिलोजी,

शिल तणो सुविचार ॥ पिण तो परवश दोहिलोजी, राखेवो आचार ॥ ध० ॥ ४ ॥ लेखण खटीका काम नीजी, हाथ पराइ जाय ॥ सात्रत पाणी नावहिजी, लागे वचन ए ग्राह्य ॥ ध० ॥ ५ ॥ रागी तो रावण घणोजी, दुति राणी तास ॥ तो पिण शियल नव ख डीयोजी, त्रिभुवनमे शाबास ॥ ध० ॥ ६ ॥ गुफा मा हि एकलीजी, राजुल राणी आप ॥ पडतो देवर उध रयोजी, शीयल गुणे थिर थाप ॥ ध० ॥ ७ ॥ चेडा नृपतीनी सुताजी, सतानिक निज नार ॥ एवती प ति वेतरयोजी, सुजस घणो ससार ॥ ध० ॥ ८ ॥ कष्ट पडीया कामनीजी, न तजे नेम लिगार ॥ मोटा माणस तेहनेजी, प्रणमे प्रात अपार ॥ ध० ॥ ९ ॥ दो उपवासे पारणोजी, आवील तपसु प्रेम ॥ करति वरते द्रोपदिजी, सानिध होवे केम ॥ ध० ॥ १० ॥ युधीष्टीर नृप जागीयोजी, देवी न दिसे ताम ॥ अरहु परहु सोधी घणुजी, सुद्ध न लाधी जाम ॥ ध० ॥११॥ आज अम्हारा राजमाजी, कोन करे अन्याय ॥ लोह जड्यो शिर केहनोजी, कुलहिणीत ते थाय ॥ ध० ॥ ॥ १२ ॥ बाप कन्हे आया चलिजी, जाखी सघली वात ॥ पाखरीया जड मोकल्याजी, वसुधा माही वि रुयात ॥ ध० ॥ १३ ॥ सुभट सहु फिरी आवीयाजी, खबर न हुइ कोय ॥ राजा पडुजी खरोजी आरती वतो होय ॥ ध० ॥ १४ ॥ कुंतीशु पाडु कहेजी, द्वारा

मती तु जाय ॥ वात जणावो मुरारनेजी, जिम ए का म सराय ॥ ध० ॥ १५ ॥ बेतालीस सोमी ढालमेजी, कुती करवा काम ॥ श्री गुणसागरजी कहेजी ॥ किम भेटे नृप शाम ॥ ध० ॥ १६ ॥

दुहा॥कुती आडवर घणे, वेशी वड गजराज ॥ आवी नगरी द्वारीका, कारीज करवा काज॥ १ ॥ आप हरीसा वागमे, दुत मोकल्यो एक॥ खबर कर ण भत्रीजने, प्रभु तव करे विवेक ॥ २ ॥

ढाल १४३ मी ॥ शियल सलुणी मयणरया स तीरे ॥ ए देशी ॥ शोभा विविध प्रकारशुरे, किधी न गरीमे प्राहीरे ॥ जण जण जय जय उचरेरे, वाजा वा जता उबाहीरे ॥ १ ॥ भतीज भुवा शु सादरोरे ॥ ए आकणी ॥ पेसारा विधी साचविरे, हय गय रथ पा यक साररे ॥ वेसी वडे गजराजीएरे, साथे सहु परी वाररे ॥ भ० ॥ २ ॥ देतो दान महाबलिरे, हरजी हरखे आवतरे ॥ दरशण देखी दुरथीरे, प्रभुजी सुख पावतरे ॥ भ० ॥ ३ ॥ हाथीथी तव उतरीरे, प्रणमी भुवाना पायरे ॥ भगति करी भल भावसुरे, चितनो चोखो चावरे ॥ भ० ॥ ४ ॥ जन्म कृतारथ तव मा हरोरे, माहरो जीव सो उल्हासरे ॥ दिठो दरशण ता हरोरे, सुफल हुइ सव आशरे ॥ भ० ॥ ५ ॥ कंठे ल गायो प्रेमसुरे, आणी अधीक जगीसरे ॥ फूली अ ग नमावहिरे, तव भुवाजी दिए आशीषरे ॥ भ० ॥

॥ ६ ॥ चिरंजीवे चिरनदजेरे, चिर लगी पाळजे रा जरे ॥ चिर आश्रीत सहु लोकनारे, प्रभु पूरे वंछित काजरे ॥ भ० ॥ ७ ॥ भुवा भतिजो एकठारे, बेठा वड गजराजरे ॥ नगरिमें पाउधारीयारे, घर घर हु वो उछायरे ॥ भ० ॥ ८ ॥ भोजाइ भगति महारे, न णादिसु नेह उदाररे ॥ बहुत्तर सहस सुहामाणिरे, प्र णमे हेत अपाररे ॥ भ० ॥ ९ ॥ हलधरने हरजी त णिरे, नारी अधीक उमेदरे ॥ विसामण विधी साचवी रे, टलियो सघलो खेदरे ॥ भ० ॥ १० ॥ भोजन भ कती करी खरीरे, हरी पुछयो आगमनी वातरे ॥ वात सुणता विशेपथीरे, हरी हासो हिए न समातरे ॥ भ० ॥ ११ ॥ एकेलो हु एतलिरे, केरो थाउ रखवालरे ॥ ए पान्डव पाचे महा वलिरे, न रखाणी एकहि बालरे ॥ ॥ भ० ॥ १२ ॥ कृष्ण कहे फूइ साभलोरे, मतकरो चिं ता लिगाररे॥पाताळाथी पेदा करुरे, सोपु तुझ सुखका ररे ॥ भ० ॥ १३ ॥ आशासना दिधी घणीरे, आपी बहुला मालरे॥ पोहोचावी हथीणापुररे, सा आवी तत कालरे ॥ भ० ॥ १४॥ कृष्णे साद फिरावियोरे, त्रिहु खं ड खबर कढायरे ॥ लाधी नहि इहा द्रोपदिरे, हरी मन झाखो थायरे ॥ भ० ॥ १५ ॥ त्रेतालिसा सोमी ढाल मेरे, हरजी करधो ए कामरे ॥ श्री गुणसागर सूरिजी रे, कहे मोटानो मोटो नामरे ॥ भ० ॥ १६ ॥

दुहा॥ एतले नारद आवियो, दिधो बहु सनमान ॥

आरति अति उतावली, पूछे श्री जगवान ॥ १ ॥ गा
म नगरपुर पाटणा, फिरता नव नव देश ॥ किहा
दिठी तुमे द्रोपदि, वात कहो सुविशेष ॥ २ ॥
सुरकका नगरी जली, पद्मनाज नृप गेह ॥ मे पंचा
ली सारखी, दीठी पिण सदेह ॥ ३ ॥ हरी जांखे ना
रद प्रत्ये, थारा काम मुनिंद ॥ एम कहि उठी गयो,
निश्चे लह्यो नारिंद ॥ ४ ॥

ढाल १६४ मी ॥ बाबा कीशनपुरी ॥ ए देशी ॥ मा
धव कागल लिखीयो जलो, गजपुर नगर अछे गुण
निलो ॥ पाडू जूपति पाडव जू धणी, कागल माहि लि
खी हेत जणी ॥ १ ॥ मेरो जाग्य जलो मेरो जाग्य
जलो ॥ ए आकणी॥ दूत तेडी हरी कागल नृप दियो,
करी जुहार तेणे उचो लियो॥ द्रोपदि खबर कहेजे सु
खदाय, हथीणापुर तु वेगे जाय ॥ मे० ॥ २ ॥ धात
की खड इहाथी दूर, अमरकका नगरी धनपूर ॥ पद्म
नाज नृप महील मझार, तिहा छे द्रोपदि राज कुमार
॥ मे० ॥ ३ ॥ कहेजे कृष्ण हुवा असवार, साथे ल
शकर अपरपार ॥ पूरव सागर तट वैताल, तिहा चा
ल्या वागी करनाल ॥ मे० ॥ ४ ॥ झाझो कटक साथे
लावज्यो, अमपासे वेगा आवज्यो ॥ दूत शिख लेइ चा
ल्यो गजपुरे, अनुक्रमे गयो नगरी परसरे ॥ मे० ॥
॥ ५ ॥ पाडुरायने कियो जुहार, कागद दियो हरख
अपार ॥ वाची कागद हुवो सतोप, पाडव लस्कर क

री बहु जोप ॥ मे० ॥ ६ ॥ हिवे नारायण जोर मम्र
ण, गाम नगर करता मेलाण ॥ अनुक्रमे दरीया कां
ठे गया, भली ठाम जइ डेरा दिया ॥ मे० ॥ ७ ॥ पा
डव आव्या मननीरली, हरी दिठा मन वाग फली ॥
माहो माही मिल्या ससनेह, जिम हरखे जन वुठा मे
ह ॥ मे० ॥ ८ ॥ श्रीपति पाम्डव करे विचार, जादव
जोर जुडयो दरबार ॥ कृष्ण कहे सुणजो सहु नूप,
आगे सागर पदम सरुप ॥ मे० ॥ ९ ॥ लाख दो जोज
णनो मान, किम उलघ्यो जाइ असमान ॥ आप आ
पणी मती केलवो, पाछे अरिपुर अछे भेलवो ॥ मे०॥
॥ १० ॥ बोल्या बलभद्र दसे दसार, जलनीधी तरवो
तुम्ह आधार ॥ निसुणी सहु राजानी वात, हिवे हरी
करे कवण अवदात ॥ मे० ॥ ११ ॥ त्रण उपवास कि
या शोकमा, जिणथी हुवे वर्गीत थोकमा ॥ त्रिजे दिन
सुर प्रगट थयो, माधव मनमा आनद भयो ॥ मे०॥
॥ १२ ॥ सुर भाखे सुण केशवराय, किण कारण स
मरयो चित लाय ॥ कृष्ण कहे सुणो सुरराय, पदम
नाभ नृप कियो अन्याय ॥ मे० ॥ १३ ॥ ढाही को
ट पाडु कागरा, मागे भिख चुणे सागरा ॥ सुर बोले
मतकरो हरी रिस, इहा बेठा तुम फले जगीश ॥ मे०॥
॥ १४ ॥ पदमनाभ तुम्ह लागे पाय, द्रोपदी पिण
आणुं इण ठाय ॥ सघली नगरी आणु इहा, सायर त
री थे जावो किहा ॥ मे० ॥ १५ ॥ को तो नगरी साय

र धरु, तरली माटी उपर करु ॥ तिणे मूरख जो कियो अकाज, तुमे हठ मतकरो महाराज ॥ मे०॥१५॥ कृष्ण कहे ए सघलु भलु, पिण एकवार जइ एहने मिलु ॥ सायर मारग मांगु उछाह, एह तणी मुझने ज स चाह ॥ मे० ॥ १७ ॥ चमालिसा सोमी ढाल, कहे गुणसागर अधीक रसाल ॥ द्रोपदी सीयल तणे सु प्रकार, उपनो हियडे हरख अपार ॥ मे० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ दिधो मारग मोकलो, पाडवने नृप शाम ॥ पट रथ सायर उतरी, आया ककापुरी ताम ॥१॥ दारुक नामा सारथी, नृप कन्हे गयो तेह ॥ सिंघासण लाते हण्यो, काढि भाला रेह ॥ २ ॥ दुरवचने नीभ्रछियो, रे रे लपट नृप ॥ कृष्ण वारे आविया, था साहमो धरी चूप ॥ ३ ॥ राजा कोप्यो ततक्षणे, दूतने देइ अपमान ॥ चमीयो आडबर घणे, दलबलने मडाण ॥ ४ ॥ करी शिणगार शोभा धरी, हाथ ग्रहि शर चाप ॥ गज अइरावत पर चडी, आयो सनमुख आप ॥ ५ ॥ कृष्ण कहे पाडव प्रते, अरी साथे सग्राम ॥ तुम करशो के हु करु, भाखे पाडव ताम ॥६॥

ढाल १४५ मी ॥ वीराजी गज थकी उतरो ॥ ए देशी ॥ हमे हरसा सग्रामने, तुमे देखो एक वारोरे ॥ हरी पगे लागी रथ चड्या, वचन कह्यो अविचारोरे ॥ १ ॥ पाडव कहे हरजी सुणो ॥ ए आकणी ॥ पदमनाभ के अम्हे नहि, एम कही सनमुख चाल्यारे ॥

माधव तिहा विचारीयो, पहेले वचने पाल्यारे ॥ पा०॥
॥ २॥ बेहु दल एकठा मिल्या, वाग्या त्राणना शोकोर॥
पायकसु पायक जिभे, नाठा काठा लोकोरे॥ पा० ॥३॥
सहदेव जोशी योगणी, डावी भैरव घेररे ॥ लोह को
ट भड कटकमे, कृष्ण दुहाइ फेररे ॥ पा० ॥ ४॥ द
समन भूप भुजग मन, कुल नकुल परे धावेरे॥ धर्म
पुत्र पुकारीया, वडा वडा विरुद बोलावेरे ॥ पा०॥ ५॥
पदमनाभ चडी आइयो, पडी ददामा ठोरोरे ॥ हल
कारा वड वागीया, पमी लडाइ जोरोरे॥ पा० ॥ ६॥
अर्जुने बाण सभारीया, जिम धोरीधर धीरोरे ॥ स
नमुख को आवे नही, पासे वहे हथीयारोरे॥ पा० ॥
॥ ७ ॥ अर्जुने भीरु करण भणी. भीम गदा लेइ धा
योरे ॥ पदनाभ मन चितवे, ए दाणव किहाथी आयोरे
॥ पा० ॥ ८ ॥ आप भूप रोसे चड्यो, पाच लाखपे
जायोरे ॥ पाच सहस कर एकठा, अरजुनने ठहरा
योरे ॥ पा० ॥ ९ ॥ पदमनाभ परपचथी, अर्जुन म
न अकुलावेरे ॥ शस्त्र सघलाहि चालवे, हाथ कोइ
नवी फावेरे ॥ पा० ॥ १० ॥ दिश मुझाणी पाडवा, उ
भा तव पिछतायोरे ॥ सूरवीर पिण शु करे, वचन ब
ले बेतरायोरे ॥ पा० ११ ॥ नाठा भाग्या आवीया,
पाचे पाण्डव सूरोरे ॥ विलखाणा मन आपथी, कायर
देह न नूरोरे ॥ पा० ॥ १२ ॥ कृष्ण कहे पाडव सु
णो, रहो उभा मती कूरोरे॥ हिवे नाशी किहा जाइसो,

द्वारका तो रही दूरेरे ॥ पा० ॥ १३ ॥ एही वचन मृ ऋ मानजो, दुममन दूर नसावुरे ॥ पदमनाभने जी वतो, अपुठो तास वधावुरे ॥ पा० ॥ १४ ॥ पेता लीसा सोमी ढालमे, सनमुख उठ्यो सोइरे ॥ श्री गु णसागर देखजो, हिवे कुण तमाशो होइरे ॥पां० ॥१५॥

दुहा॥ऋऋ करण माधव चड्यो, करी आम्बर जोर ॥ पदमनाभ सेना सजी, उभो एकणकोर ॥ १ ॥ आज अमारो जय हुशे, पदमनाभनो नाश ॥ एम कही रथ उपर चड्या, दारुक सारथी पास ॥ २ ॥

ढाल १४६ मी ॥ कडखानी देशी ॥ धजा रथ फ रहरे देखी वैरी डरे, एक रथ सहस रथ आखी दिसे ॥ जाणे गढ भेलशे कोभी सुभट मेलस्ये, कृष्ण लोचन अरुण हुउ रीसे ॥ १ ॥ हिवे गढ भेलवा चड्यो वसुदे व सुत, सूर जीम तेज दिपे सवायो ॥ अमर ककापु री रतन माणक भरी, भय करी थिर हरी कोण आ यो ॥ हि० ॥२॥ पाच पाम्ब तणी वात श्रवणे सुणी, रोस धरी रथ चडी कृष्ण आवे ॥ दूरथी अटकल्यो, गाम नृप खलभल्यो,एकुण सामत तुम सबल दावे ॥हि०॥३॥ देव दिठे पडया रथेरथ आथाम्या, कृष्ण मुख हाथशु शख वायो ॥ तिसरो भाग लशकर तणो घाटि गयो, मिट गयो भूप वलतो न आयो ॥ हि० ॥ ४॥ धनुष्य सारग मनरग हरी कर धरी, पिण वढण काज तिण वार नाठो ॥ भाग त्रिजो कटक सुभट पग चातरया,

पदम पग गोडीया हुतो नाठो ॥ हि० ॥ ५ ॥ अमर कका जडी नगर जागज पडी, खलभल्या लोक सहु एम जाखे ॥ भुप ए लपटी ज्याइ अजूता घटी, नासतां जागता कवण राखे ॥ हि० ॥ ६ ॥ अमरकका जिहा कृष्ण आवे तिहा, रथथी उतरी कोट देखे ॥ ढाहि ढ म ढेर करी सुसाहि ततखिणे, रुप नरसिहनो करी सु विशेषे ॥ हि० ॥ ७ ॥ हिवे कृष्ण नरसिंहनो रुप सबलो कियो, अमरककापुरी कोट पाड्यो ॥ वड व डा मेहेल तो रण पड्या धडहडी, पोलनो वार हरी आप उघाड्यो ॥ हि० ॥ ८ ॥ अमरकका धणी, चि त चिता घणी, एकले कवण ए काम कियो ॥ कटक नाशी गयो, कोट पिण इण लियो, कोटि दे राखीए आ प जियो ॥ हि० ॥ ९ ॥ आप आलोच करि हियो नि ज ठाम करी, द्रोपदि पासे नूपाल आवे ॥ माहरी ध मेंरी वेहेन मुज रावले, सुमती दे ताहरी दाय आवे ॥ हि० ॥ १० ॥ द्रोपदी कहे सुण वाणी कल्याण मुज, पदम तु रदन करे देश सारो ॥ सार जमारथी लाल वहु मालले, लाग्य हरी पाय जो जाग्य थारो ॥ हि० ॥ ११ ॥ दिन दिवो धरी लेइ अतेउरी, त्रणो दात ध री साथ मोरे ॥ मन हठ परहरी हाथ जोडी करी, रा खले माधवा शरण तोरे ॥ हि० ॥ १२ ॥ हु कहु तिम करो कृष्णथी मत डरो, चरण लागी करी एम जाखो ॥ स्वामीनो शरण ससार तारण तरण, मुज गुन्नह माफ

कर माम राखो ॥ हि० ॥ १३ ॥ कृष्ण बोल्या तव बुट स्यो किम हिवे, बहिन तें माहरी केम आणी॥मारी शत खड नुजदंड शीर मुड करी, करु तेम वेल वहे जेम घाणी ॥ हि० ॥ १४ ॥ हिवे मुकने मिल्यो कोप सघलो टल्यो, जा घर ताहरे पदम पापी ॥ द्रोपदि ले इ करी तिहा थकी सचरी, द्वारका गमनरी वात थापी ॥ हि० ॥ १५ ॥ कृष्ण पांडव मिल्या, द्रोपदी ले इ वल्या, बहु रथ पाछली राते चाल्या ॥ नाग्य मोठे कीसन नाहि कोइ बसन, घणा पकवान लेइ साथ घा ल्या ॥ हि० ॥ १६ ॥ द्रोपदी सिल वले किसन शोभा ग्य बले, पाडु सुत नाग्य वले विजय पायो ॥ पारको वध धावली पारकी, पारकी जइ जलनीधीमे सवायो ॥ हि० ॥ १७ ॥ ढाल सेतालीसा सोमी सुहामणी, द्रो पदी सिल थकी काज सरीया ॥ श्रीगुणसूरि गुरु नवीक ने शिखवे, सियल केडे व्रत सघलाही धरीया॥हि०॥१८॥

दुहा ॥ तिणे कालेने तिण समे, धातकी खड मझार ॥ पूरव धातकी नरतमे, चपा नगरी सार ॥ १ ॥ नगरी बाहीर उद्यानमे, विराजे श्रीजिनराज ॥ कपीलपूर मुख परखदा, बेठी अधिक सकाज ॥ २ ॥

ढाल १४७ मी ॥ इडर आवा आवलीरे ए देशी॥ जिन दरशन मन उलसेरे, आणद अग न माय ॥ जिन देशना सहुको सुणेरे, सुणता आवे दाय ॥ १ ॥ जिनेसर इम नाखे उपदेश ॥ ए आकणी ॥ तिण वे

ला सुणी तिहारे, शख शब्द घननाद ॥ चित्त थम
क्यो नृप चितवेरे, मन उपनो विखवाद ॥ जि० ॥२॥
कोइ नवो इहा उपनोरे, वासुदेव वलवत ॥ मुझ सरी
खो जाणीएरे ॥ जीण वले अचल चलत ॥ जि० ॥
॥ ३ ॥ हरी पूछे जिनने नमीरे, शख शब्द सबंध ॥
जिन बोले ये मत डरोरे, पदमनाभ प्रबंध ॥ जि० ॥
॥४॥एक खेत्र एकणसमेरे, चक्री जिन वलदेव॥वासुदेव
पिण जोमलेरे, नवी उपजे नितमेव ॥ जि० ॥ ५॥ पद
मनाभसु झूझतारे, कृष्ण बजायो शख ॥ ते साभ
ली तुझ उपनीरे, वासुदेव निशक ॥ जि० ॥ ६ ॥ क
पील वात सुणी हरखीयोरे, टाल्यो मन सदेह ॥ जि
न वादी एम विनवेरे, कृष्ण मिलण मुझ नेह ॥ जि० ॥
॥ ७ ॥ वलतु मुनीसुव्रत भणेरे, वासुदेव सुण वाण ॥
हुउ न होशे हुइ नहीरे, ए तु निश्चे जाण ॥ जि० ॥
॥ ८ ॥ हरी हरीने नवी मिलेरे, जो करे कोड उपाय॥
देखिश ध्वज हरी रथ तणीरे, सागर तट तिहा जाय
॥ जि० ॥ ९ ॥ प्रभुने वादी गज चडीरे, कपील चा
ल्यो ततकाल ॥ सागर विच दिठी तिसेरे, धजा पि
त शितलाल ॥ जि० ॥ १० ॥ शंख बजायो मन रली
रे, कृष्ण सुणो अरदास ॥ एकवार देदार दियोरे ॥
मुझ मन पूरो आश ॥ जि० ॥ ११ ॥ हरी पिण शंख
बजाइउरे, शखे शंख मिलत ॥ घणी जोमी अमो आ
वीयारे ॥ रथ पाछा न वलत ॥ जि० ॥ १२ ॥ हरख

घरी पाछो वल्योरे, सुरकका भणी जाय॥ पद्मनाम पिण साहमोरे, आवी लाग्यो पाय ॥ जि० ॥ १३ ॥ पद्म भणी तव पुछीयोरे, किस्यो नगरी प्रकार ॥ कुण वैरी ए तुझनेरे, सताप्यो निरधार ॥ जि० ॥ १४ ॥ स्वामी ताहरी साहीबीरे, लेवा कारण आज ॥ हरी आपण आव्यो हतोरे, मे आणयो तस वाज ॥ जि० ॥ १५ ॥ कंपील क्रोधातुर थयोरे, साम्भली एहवी वाण ॥ आणा थकी अलगो कियोरे, पाम्यो दु.ख असमान ॥ जि० ॥ १६ ॥ तेडावी तस नदनेरे, थाप्यो नर पती पाट ॥ राजा निज स्थानक गयोरे, टाली दु ख उचाट ॥ जि० ॥ १७ ॥ सडतालीस सोमी कहीरे, ढाल अनोपम एह ॥ गुणसागर जिन वाणीएरे, उप जे अधीको नेह ॥ जि० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ मारग जाता इम कहे, पाम्डवने हरी राय ॥ सुस्थीक सुर भेटी करी, हु आवीश सुखदाय ॥ १ ॥ थान पात्र तरी जानवी, लेजो जइ विश्राम ॥ प्रवहण पाछो मूकज्यो मुझ कारण अभीराम ॥ २ ॥ गगाने तट आवीया, पाम्डव पच उदार ॥ छठी राणी द्रोपदी, रथ वाहन अति सार ॥ ३ ॥ नावा मोठी मनोहरु, बेठो सघलो साथ ॥ खेम कुशळ जल उतरया, चित चिंतवे नर नाथ ॥ ४ ॥

ढाल १४८ मी ॥ इण पुर कवल कोइ न लेशी ॥ ए देशी ॥ चित चिंतवे तव नर नाथो, एक मतो छे

सघलो सायो ॥ होणहार मेव्यो नवी जाय, सघला नी मती सरखी थाय ॥ १ ॥ कूप कुडनो जूदो पाणी, तुरू तुडनी जूदी वाणी ॥ मस्तके मस्तके मती छे जुइ, पिण सहुनि एकज हूइ ॥ २ ॥ सहु सयाणा सोचो का इ, भावीनो बल मोटो भाही ॥ पाटवजी सरीखा जो चूके, सुमति सरोवर तो कुण ढुके ॥ ३ ॥ हासि मिसे उपाय उठावे, सातकर्म वेताल जगावे ॥ एह अजा णपणो जय मोटो, जाणी बुझी खाजे खोटो ॥ ४ ॥ नाव छिपावे एम विचारी, कितनो एक बलवत मूरारी ॥ हासो काम विणा सणहारो, हासाथी चिड थाइ पीया शे ॥ ५ ॥ शाम तदा सुरने सतोखी, भिती पनोती परघल पोखी ॥ श्री गगा तटी चाली आया, नाव न देखे तव हरी राया ॥ ६ ॥ एक हाथे रथ खेडु घोडा, बिजे हाथ तिरे जल थोडा ॥ पाट नदिनो जोजन बा सठ, ते पिण जोजन देव तणो पट ॥ ७ ॥ जल अध विचे आया जामो, थाक्या अति न तिराइ तामो ॥ चित भितरे ए चिंता थापी, पाण्डव तो बलवता आ पी ॥ ८ ॥ नाव विना ए पयरी उपाणी, हय रथने नी रवाहे राणी, एह अचभो दिसे भारी, किम आया भ री आगें हारी ॥ ९ ॥ जाणी हरी चिंताए चप्यो, गगा देवीनो आसण कप्यो, गगा देवीए दिधो थाह, हरी मन उपज्यो अधीक उछाह ॥ १० ॥ पाणी पय री काठे लागे, पाडव आवी उभा आगे ॥ श्री हरी

पाडव प्रेम अपारो, अब उपजे मन माहि विकारो ॥
॥ ११ ॥ दुषण तो हरीनो नवि दिसे, पाडवनो तो विसवा विशे ॥ लुगडातो धोवत कुहाडा, न रहे साजो होइ अति जाडा ॥ १२ ॥ अडतालिस सो ढालसु भाखी, चद सूरज दो दिधा साखी ॥ श्री गुणसागर सूरि प्रकाशे, मति चुक्या नर गाढा घासे ॥ १३ ॥

दुहा ॥ कृष्ण कहे पाडव सुणो, तुम बलवत अपार ॥ गगा जल भुजबले तिरया, नारी लिया वली लार ॥१॥ जल अधविचे आवियो, हु अति थाक्यो ताम ॥ गगादेवीए माहरी, सानिध्य करी सकाम ॥ २ ॥ तो हमथी बलवत तुमो, भाखे हरी ससनेह ॥ पद्मनाभ नृप आगले, हारया एह सदेह ॥ ३ ॥ गाथा ॥ सरला भाखे सरली वाणी, नवि मेले कोइ दुजी आणी॥ आहिल्या भास्यो हरी मम जार, गगा दाख्यो हर भरतार॥४॥

दुहा ॥ कपट तजी पाडव भणे, आणी सरलो भाव ॥ जोवा तुम बल कारणे, हमे छिपावी नाव ॥ ५ ॥

ढाल १४९ मी ॥ मारा घणारे पीयारा प्रभुजी ॥ ए देशी ॥ निसुणी एह कहाणी, हरी हृदयामा रीस भराणी ॥ हो कुबुद्धी, यु क्यु अकल तुझ आइ ॥ बालपणेथी भेला, वस्ता थइ एवडी वेला हो ॥ कु० ॥
॥ १ ॥ गोवरधन गिरिराज, मे उपाड्यो बल काज हो ॥ कु० ॥ वली बालपणे महा भाग्य, मे नाथ्यो काली नाग हो ॥ कु० ॥ २ ॥ वली जरासध लभा

इ, हुवता पिण अधीक वधाइ हो ॥ कु० ॥ तप आठ
म करी मे साध्यो, सुर आयो आप आराध्यो हो ॥
॥ कु० ॥ ३ ॥ हिल खलवण कहाय, उलर्घा जोत्यो
वडराय हो ॥ कु० ॥ पदमोतर जगडो जेथ, तिहा हु
ता आपण सहु सेथ हो॥कु० ॥ ४ ॥ लडना पदमोत
र जग, तुम नागी आव्या मुज सग हो ॥ कु० ॥ दे
खी मुज वल काठो, नृप पदमोतर गयो नाठो हो ॥
॥ कु० ॥ ५ ॥ देइ पुर तणा दरवाजा, जइ पेठो मेहे
ल माही राजा हो ॥ कु० ॥ पदमोतर अस्त्री रुप, ति
हा आवी नम्यो ते नृप हो ॥ कु० ॥ ६ ॥ ते वल ना
व्यो तुम दाय, हजी केतो वल जोवाय हो ॥ कु० ॥
एतो आव्या पुएय पसाय, कृष्ण जाता तुमारु शु जा
य हो ॥ कु० ॥ ७ ॥ तुम प्रत्ये मिली तुम नार, कृष्ण
वाट जुवे वत्रिस हजार हो ॥ कु० ॥ आपण सरियां
काम, तरे कुण बिचारो साम हो ॥ कु० ॥ ८ ॥ पि
ण एटली तो नवि जाणी,जे रोशे हरी पटराणी हो
॥ कु० ॥ कृष्णनी वाट विचाल, जोता हुसे वालगोपा
ल हो ॥ कु० ॥ ९ ॥ जात जो गगा मझार, तो कु
ण आपत समाचार हो ॥ कु० ॥ नीगुण नीठोर मुखे
मीठ, तुझ ऋदय कठण अति धीठ हो ॥ कु० ॥ १० ॥
तुम वात सकल मे लाधी, तुम पाचे वडा अपरा
धी हो ॥ कु० ॥ हिवे तजवो तुम्ह साथ, एम नाखे
श्री जदुनाथ हो ॥ कु० ॥ ११ ॥ न कबु वातके का

ज, तुम्ह किधो अधीक अकाज हो ॥ कु० ॥ तुम्ह नीस्नेहि थया आज, मुझ लेखे न किधा काज हो ॥ कु० ॥ १२ ॥ लोह दड उपाडीने आयो, केशवजी कोपे भरायो हो ॥ कु० ॥ एगुणपचास सोमी ए ढाल, गुणसागर कहे सुविशाल हो ॥ कु० ॥ १३ ॥

दुहा ॥ नूप भुजगम सारिखा, जालविया सुख होय ॥ आसगे असुहामणा, पांग्वनी परे जोय ॥ १ ॥ केशव कोपे पूरीयो, देखी थरहरी वाल ॥ आडी फिरी उभी रही, भाखे वचन रसाल ॥ २ ॥

ढाल १५० मी ॥ रायजी अमने हिंदुआणा राय गराशीयारे लोल ॥ ए देशी ॥ कृष्णजी तुमने कहु करजोरु के, सुणो प्रभु विनतीरे लोल ॥ प्रभुजी नहि कोइ तुमारो दोपके, निठोर थया मुझ पतीरे लोल ॥ प्रभुजी तुमसु एवकी हाशके, करवी केम घटेरे लोल॥ प्रभुजी लिख्या छठीना लेखके, मिटाड्या नवि मिटेरे लोल ॥ १ ॥ प्रभुजी दोश नहि तुम कोइके, किरतार एहि गमेरे लोल ॥ प्रभुजी छोरु कुछोरु थायके, मावित्र तोहि खमेरे लोल ॥ वधव तुमारी मोटी लाजके, काज विचारीयेरे लोल ॥ प्रभुजी विनवु गोद बिछायके, रोस निवारीएरे लोल ॥ २ ॥ प्रभुजी तुमे मोटा माहाराजके, मनमा जाणीयेरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी पोतानो परीवारके, दिलमें आणीएरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी मोटा होय दातारके, बोले मुख मीठडुरे

इ, हुवता पिण अधीक वमाइ हो ॥ कु० ॥ तप आठ
म करी मे साध्यो, सुर आयो आप आराध्यो हो ॥
॥ कु० ॥ ३ ॥ हिल खलवण कहाय, उलर्घा जीत्यो
वडराय हो ॥ कु० ॥ पदमोतर झगडो जेथ, तिहा हु
ता आपण सहु सेथ हो॥कु० ॥ ४ ॥ लडना पदमोत
र जग, तुम नागी आव्या मुज सग हो ॥ कु० ॥ दे
खी मुझ वल काठो, नृप पदमोतर गयो नाठो हो ॥
॥ कु० ॥ ५ ॥ देइ पुर तणा दरवाजा, जइ पेठो मेहे
ल माही राजा हो ॥ कु० ॥ पदमोतर अस्त्री रुप, ति
हा आवी नम्यो ते नृप हो ॥ कु० ॥ ६ ॥ ते वल ना
व्यो तुम दाय, हजी केतो वल जोवाय हो ॥ कु० ॥
एतो आव्या पुण्य पसाय, कृष्ण जाता तुमारु शु जा
य हो ॥ कु० ॥ ७ ॥ तुम प्रत्ये मिली तुम नार, कृष्ण
वाट जुवे वत्रिस हजार हो ॥ कु० ॥ आपण सरियां
काम, तरे कुण बिचारो साम हो ॥ कु० ॥ ८ ॥ पि
ण एटली तो नवि जाणी,जे रोशे हरी पटराणी हो
॥ कु० ॥ कृष्णनी वाट विचाल, जोता हुसे बालगोपा
ल हो ॥ कु० ॥ ९ ॥ जात जो गगा मझार, तो कु
ण आपत समाचार हो ॥ कु० ॥ नीगुण नीठोर मुखे
मीठ, तुझ ऋदय कठण अति धीठ हो ॥ कु० ॥१०॥
तुम वात सकल में लाधी, तुम पाचे वडा अपरा
धी हो ॥ कु० ॥ हिवे तजवो तुम्ह साथ, एम भाखे
श्री जदुनाथ हो ॥ कु० ॥ ११ ॥ न कबु वातके का

॥ लो० ॥ प्रभुजी मेलो मननी रीसके, वेहेला रथ जो डवोरे ॥ लो० ॥ ८ ॥ एहवा वचन सुणी जदुरायके, मनसु विचारीयोरे ॥ लो० ॥ हठे मिलियो अबला अं तके, एम मन वालियोरे ॥ लो० ॥ केशव उपाडी लो ह दडके, कोप करी तिहारे ॥ लो० ॥ पांचे रथ किया चकचूरके, पाडव उभा जिहा रे ॥ लो० ॥ ९ ॥ नाखे रोस धरी हरी रायके, आण माहरी वहेरे ॥ लो० ॥ पारुव तुमारो सहु परिवारके, रेहवा नवि लहेरे ॥ लो० रेहेज्यो द्रष्ट थकी तुमे दूरके, पासे मति आवज्योरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी मन फाटो न सधायके, सहि एम जाणजोरे ॥ लो० ॥ १० ॥ प्रभुजी रथ मर्दनने ठामके, कोठो वसावीयोरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी सैन सकल तेणी वारके, सनमुख आवियोरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी द्वारापुरी सहु साथके, पोहोता ते सहिरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी एकसो प चासमी ढालके, गुणसागर कहिरे ॥ लो० ॥ ११ ॥

दुहा ॥ पाडव प्रभु सोचे घणु, कीयो किसो कीर तार ॥ ॥ विगडी वात विशेषथी, खीज्यो देवमुरार ॥१॥ जेह त्रुठे ते जग त्रुठीये, जेह रुसे जग रोस ॥ सोतो प्रभुजी पामीए, त्रुसाहि सतोष ॥ २ ॥ पाचे पारुव द्रो पदी, तिहाथी आया गेह ॥ पाडुराय कुता मिलि, जाग्यो अधीक सनेह ॥ ३ ॥ विलख्या अगज देखने, पूछे पाडु विचार ॥ कुति बेठी साभले, पासे सहु परीवार ॥ ४ ॥

ढाल १५१ मी ॥ एकली नारी साथ मारगमे नवि

॥ लो० ॥ प्रभुजी मोटा न कथे आलके, करे मण दिठडुरे ॥ लो० ॥ ३ ॥ द्रौपदी ताहरा पतिना बोलके, खीण खीण साभलेरे ॥ लो० ॥ द्रौपदी इणे कीधा जे कामके, वैरी पिण नवी करेरे ॥ लो० ॥ द्रौपदी मारी एकज वातके, गदा पाणी नवी फीरेरे ॥ लो० ॥ एहने बल देखाडु आजके, हरी मन रीस धरेरे ॥ लो० ॥ ॥ ४ ॥ राणी विलखाणी तेणीवारके, आखे आसु ढलेरे ॥ लो० ॥ भाइजी एवडो मकरो रोसके, उनी एम टलवलेरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी फूइ कुताजीनी लाजके, दिलमा आणवीरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी पडुराय मयायके, मनमा जाणविरे ॥ लो० ॥ ५ ॥ प्रभुजी गौब्राह्मण प्रतिपालके, सहु तुमने कहेरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी तुम्ह शरणे जे आयके, सो नर नीरवहेरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी नीठोर थया तुम आजके, किम होशे सहिरे ॥ ॥ लो० ॥ प्रभुजी कठण मरमनी वातके, वाक केहनो नहिरे ॥ लो० ॥ ६ ॥ प्रभुजी माणस होशे एह तो, वात घणी थइरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी बाहे ग्रह्यानी लाजके, राखो हेत लेइरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी करणी तणा फल एहके, तुमारी बेनडिरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी पूरव भवनो पापके, तास वेला पडीरे ॥ लो० ॥ ७ ॥ प्रभुजी एवडी तुमारी धाकके, हिवे हु कीम सहुरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी अखड एवा तण राखके, झाझु शुं कहुंरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी राखो एटली लाजके, गेरु करी गोढवोरे ॥

॥ लो० ॥ प्रभुजी मेलो मननी रीसके, वेहेला रथ जो डवोरे ॥ लो० ॥ ८ ॥ एहवा वचन सुणी जदुरायके, मनसु विचारीयोरे ॥ लो० ॥ हठे मिलियो अबला अं तके, एम मन वालियोरे ॥ लो० ॥ केशव उपाडी लो ह दडके, कोप करी तिहारे ॥ लो० ॥ पांचे रथ किया चकचूरके, पाडव उना जिहा रे ॥ लो० ॥ ९ ॥ नाखे रोस धरी हरी रायके, आए माहरी वहेरे ॥ लो० ॥ पाण्डव तुमारो सहु परिवारके, रेहवा नवि लहेरे ॥ लो० रेहेज्यो द्रष्ट थकी तुमे दूरके, पासे मति आवज्योरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी मन फाटो न सधायके, सहि एम जाणजोरे ॥ लो० ॥ १० ॥ प्रभुजी रथ मर्दनने ठामके, कोठो वसावीयोरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी सेन सकल तेणी वारके, सनमुख आवियोरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी द्वारापुरी सहु साथके, पोहोता ते सहिरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी एकसो प चासमी ढालके, गुणसागर कहिरे ॥ लो० ॥ ११ ॥

दुहा ॥ पाडव प्रभु सोचे घणुं, कीयो किसो कीर तार ॥ ॥ विगडी वात विशेपथी, खीज्यो देवमुरार ॥१॥ जेह त्रुठे ते जग त्रुठीये, जेह रुसे जग रोस ॥ सोतो प्रभुजी पामीए, ग्रुसाहि सतोष ॥ २ ॥ पाचे पाण्डव द्रो पदी, तिहाथी आया गेह ॥ पाडुराय कुता मिलि, जाग्यो अधीक सनेह ॥ ३ ॥ विलख्या अगज देखने, पूछे पाडु विचार ॥ कुति वेठी सामले, पासे सहु परीवार ॥ ४ ॥

ढाल १५१ मी ॥ एकली नारी साथ मारगमे नवि

॥ लो० ॥ प्रभुजी मोटा न कये आलके, करे भण दिठडुरे ॥ लो० ॥ ३ ॥ द्रोपदी ताहरा पतिना बोलके, खीण खीण साभलेरे ॥ लो० ॥ द्रोपदी हणे कीधा जे कामके, वैरी पिण नवी करेरे ॥ लो० ॥ द्रोपदी मारी एकज वातके, गदा पाणी नवी फेरेरे ॥ लो० ॥ एहने वल देखाडु आजके, हरी मन रीस धरेरे ॥ लो० ॥ ॥ ४ ॥ राणी विलखाणी तेणीवारके, आखे आसु ढलेरे ॥ लो० ॥ भाइजी एवडो मकरो रोसके, उनी ए म टलवलेरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी फूइ कुताजीनी लाजके, दिलमा आणवीरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी पडुराय मयायके, मनमा जाणविरे ॥ लो० ॥ ५ ॥ प्रभुजी गौब्राह्मण प्र तिपालके, सहु तुमने कहेरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी तुम्ह शरणे जे आयके, सो नर नीरवहेरे ॥ लो० ॥ प्रभु जी नीठोर थया तुम आजके, किम होशे सहिरे ॥ ॥ लो० ॥ प्रभुजी कठण मरमनी वातके, वाक केहनो नहिरे ॥ लो० ॥ ६ ॥ प्रभुजी माणस होशे एह तो, वात घणी थइरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी बाहे ग्रह्यानी ला जके, राखो हेत लेइरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी करणी तणा फल एहके, तुमारी बेनडिरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी पूरव भ वनो पापके, तास वेला प्रडीरे ॥ लो० ॥ ७ ॥ प्रभुजी एवडी तुमारी धाकके, हिवे हु कीम सहुरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी अखड एवा तण राखके, फाफु शुं कहुंरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी राखो एटली लाजके, गेरु करी गोढबोरे ॥

॥ १० ॥ पणी हरी बोल्या एम, गगा तिरीने हो थे कि म आइया ॥ नावा हती अम्ह पास, तिण हम तिरी या हो पाचे जाइया ॥ ११ ॥ वळी माधव बोलत, किम ते नाणी हो सनमुख नावडी ॥ निज भुज तरशे केम, ह री बल जोस्या हो अमे एम तेवडी ॥ १२ ॥ वचन सु णी निज कान, कृष्ण रिसाणो हो बोले आकरो ॥ कृ तघ्न मुंढ नीटोल, पाडव ते दिठा हो वचन कह्यो वू रो ॥ १३ ॥ लाख जोयण दो मान, सागर उलघी हो आणी तुम वहु ॥ मुझ बल तोहि न दिठ, थें मन कु डा हो जगत जाण सहु ॥ १४ ॥ मुख न देखारूजो मुढ, एम उलभो हो देइने हरी गया ॥ अमे पिण तिहां थी एथ, दुमना आया हो तुम्ह दरसण थया ॥ १५ ॥ पाडुराय सुणी वात, वलता बोले हो पुत्र ये वूरी क री ॥ कृष्ण किया कुण काम, माम वधारी हो तुम्हे तो एवी करी ॥ १६ ॥ मोतीने मन लाख, लाखने मू ले हो मोती तो मिले फिरी ॥ पिण मन भाग्यो जाण, ते रग नावे हो कोड जतन करी ॥ १७ ॥ पाडुराय महीपती ताम, कुती तेडीने हो वचन एसो कहे ॥ मत करो अवर विचार, श्रीपति पासे हो जायवा मन वहे ॥ १८ ॥ कहेज्यो घरनो सुल्प, माधव लज्या हो रा खो हिवे माहरी ॥ ते पूरया मन कोड, वली हु श्रीप ति हो भुवा ताहरी ॥ १९ ॥ एम दीधी नृप शिख, कुती चाली हो पोहती एम अनुक्रमे ॥ द्वारामतीनो

जावु हो ॥ ए देशी ॥ पाडव बोल्या बोल, माता पी
ताजी हो एक वचन सुणो ॥ श्रीपति सेति प्रीत, अ
केरी हुती हो सुख पिण हुतो घणो ॥ १ ॥ सव्रनी रु
ठो जाण, केहेने जइ कहीए हो देशवटो दियो ॥ वचन
कह्या दसवीस, ते तो हम साले हो एक जाणे हियो
॥ २ ॥ पूछे पाडु नरिंद, ए किम खटपट हो थ हरीसु
करी ॥ सायर काठे जाय, हरी पाय लागी हो उना
हेत धरी ॥ ३ ॥ सुस्थीत सुर आराध, श्रीपती साथे
हो पट रथ लेइ करी ॥ पहुता पेले पार, जिहा कण
दिसे हो अमर कका पुरी ॥ ४ ॥ माधव कियो सुबो
ल, जूझ करीने हो कटक नगाडीयो ॥ कियो नरसिंह
रुप, गढमढ पाडी हो पदम नसाडीयो ॥ ५ ॥ द्रोपदी
आणीने दिध, हरी पगे लागी हो पदम पाछो वल्यो ॥
रथ चढी पूरण प्रित, जलधी उलधी हो हरी सुरने मि
ल्यो ॥ ६ ॥ अम्ह दिधो आदेश, गगा जइने हो पा
र तुमे करो ॥ हु पिण आइस वेग, नाइजी पाण्डव
हो मन धीरज धरो ॥ ७ ॥ हम पिण गगा आय, ना
व चढीने हो गगातट लह्यो ॥ हरीनी जोता वाट, त
रु तले वेठा हो हियडो गह गह्यो ॥ ८ ॥ एतले क
ष्ण नरेश, शिख करीने हो सुर शेती वली, आया
गगा तीर, नीर निहाले हो तरणी अटकली ॥ ९ ॥
नाव न लाधी काइ, हरी भुज बले हो गगा उतरी ॥
अमे लाग्या हरी पाय, हिली मिलीने हो उना हेत धरी

नो शी लावे निर, स्वाद न आवे हो मूल एम धारज्यो ॥ ३० ॥ कुती मार्नी वात, तिहा थकी आवी हो प ती सुतने कह्यो ॥ हिवे कुण करे विचार, गजपुर मा ही हो किम जाइ रह्यो ॥ ३१ ॥ जिहां लगे पुण्य प्र काश, तिहा लगे बधव हो सुजन मेलावमो ॥ गुणसा गर कहे एम, जिहा लगे सूरज हो तिहा लगे तावडो ॥ ३२ ॥ पाडुराय मथुरा निवास, नगर वसावी हो र ह्या मननी रली ॥ सुखमें पाले राज, एकावनसोमी हो ढाल नाखी नली ॥ ३३ ॥

दुहा ॥ श्री जिन नेम दयालजी, अतिशयवत अ शेस ॥ अरती असुख दु ख टालता, विचरे देश विदे श ॥ १ ॥ नहिलपुर आया सही, हरख्या लोक अपा र ॥ राजा वदन आवीयो, साथे सहु परीवार ॥ २ ॥ सुलसा सुधी श्रावीका, नारी निरोपम नाम ॥ षट न दनसु आवीया, श्री जिन वदन ताम ॥ ३ ॥

ढाल १५२ मी ॥ कुमखडानी देशी ॥ दे उपदेश सुहामणोरे, ए ससार असार ॥ सुदर सुखकारी ॥ धन जोबन परीवार सहुरे, कोइ न आवे लार ॥ सु० ॥ ॥ १ ॥ दसे द्रष्टाते दोहिलोरे, माणसनो नव एह ॥ सु० ॥ आलस तजी आतुर थइरे, किजे धर्म सनेह ॥ सु० ॥ २ ॥ श्री जिन वाणी साभलीरे, ते षट ही सुकुमार ॥ सु० ॥ समझावे माता पिता रे, लेवा सजम नार ॥ सु० ॥ ३ ॥ बत्रीसे वर कामनीरे,

राय, माधव आवी हो नुवाने पाये नमे ॥ २० ॥ पुरुपोत्तम करजोम, कुती पुत्री हो केम पधारीया ॥ कुती नाखे एम, तेतो रिसे हो पाडव वारीया ॥ २१ ॥ त्रण खम प्रथवी माही, आण तुम्हारी हो सघली शिर वहे ॥ नाइ नलपण जाण, ठाम वतावो हो वीरा जिहा रहे ॥ २२ ॥ गेरु उपर रिस, मात पितानी हो पाणी वल रहे ॥ वली मनावे आप, खोले बेसाडी हो शिख वचन कहे ॥ २३ ॥ जो यें करसो रोस, तो नाइ पाडव हो जइने किहा वसे ॥ वली मोटो सताप, देखी दुरजन हो दुर्योधन सुत हसे ॥ २४ ॥ वाहुवल नरतने जिम, रोस धरीने हो वधव निपेदीयो ॥ आणी नाइ सनेह, पडता अपुठो हो तास झीलीलियो ॥ २५ ॥ आप उगेरी रुख, कोइ न कापे हो जो फल नवीदिए ॥ ए सोहे तुम पास, दूर मतकाढो हो को गुण लेइ हिए ॥ २६ ॥ रहेता पिहरनी उल, आश विरानी हो नुवाने हुती घणी ॥ थोडामा दियो गेद, वात विचारे हो एतो आवी वणी ॥ २७ ॥ दीन वचन सुणी एम, माधव नाखे हो नुवा दु ख मती धरो ॥ तंबु मतआणशो एह, पाडवथी माहरे हो अधीक न को खरो ॥ २८ ॥ कहेजो सुतने जाय, दक्षीण सागर हो वेल वहे जिहा ॥ तिहा रहेज्यो चित लाय, पाडु मथुरा हो नगरी वाशी तिहा ॥ २९ ॥ कहे चिर लगी पालजो राज, अदिठ शेवाथी हो कारीज सारज्यो ॥ उ

तो थाय ॥ सु० ॥ १४ ॥ कुप वागने गौतणोरे, परत
ख देखी विचार ॥ सु० ॥ देता दान न थाकीएरे, दा
न वडो ससार ॥ सु० ॥ १५ ॥ दिधा राणी देवकीरे,
मोदक खरा अमोल ॥ सु० ॥ एतले त्रिजो आवीयो
रे, सघाडो समतोल ॥ सु० ॥ १६ ॥ बावनसोमी ढा
लमेरे, दाता करता दोय ॥ सु० ॥ श्री गुणसागर सू
रिजीरे, एक सरीखा होय॥ सु० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ सोइ लाडु थाल सोइ, विधी वदन पिण सो
इ ॥ सोइ भाव उदारसु, प्रतीलाभ्या मुनी दोइ ॥
॥ १ ॥ दैव योग एवो हुवो, त्रिजो जुगल जिवार ॥ श्री
हरी जननीने घरे, आया सही तिणीवार ॥ २ ॥
उही लाडु उही विधी, वोहराव्या मुनी तेह ॥ पिणतो
शका उपनी, राणीने मन एह ॥ ३ ॥

ढाल १५३ मी ॥ पूछी हो पूछे कोइनार ए देशी ॥
पूछे हो पूछे राणी वात, फिरि फीरि हो आया तुम्ह
घर माहरेजी ॥ वारी हो वारी हु सोवार, वारी हो वा
री दर्शण ताहरेजी ॥ १ ॥ मिलीया हो मिलीया साधु
अपार, न मिल्यो हो न मिल्यो योग अहारनोजी ॥
करवी हो पिंड गवेपणा सुध, करवो हो उद्यम सुधा
चारनोजी ॥ २ ॥ मुनिवर हो मुनिवर भाखे वाण, वाणी
हो वाणी अमृत सारखीजी ॥ हम पट हो हम पटवध
व जाण ॥ न सके हो कोइ जुदा पारखीजी ॥ ३ ॥ भ
दिल हो भदिलपुर अवतार, सुलसाहो सुलसा माता मा

अमरगीने अवतार ॥ सु० ॥ बत्रीशे कंचन तणीरे, को
डी तजी तेहीवार ॥ सु० ॥ ४ ॥ जिन मुख संजम
उच्चरेरे, पाले सुधाचार ॥ सु० ॥ दो उपवासे पारणो
रे, सदा करे सुखकार ॥ सु० ॥ ५॥ स्वामी पधारया
द्वारीकारे, वदन श्रीहरी राय ॥ सु० ॥ आयो आडंब
र घणोरे, वाणी सुणया सुख थाय ॥ सु० ॥ ६ ॥ प
ट बधवनो पारणोरे ॥ एकण दिन सुविशेष ॥ सु० ॥
संघाडा त्रण जुजुवारे, पामी प्रभु आदेश ॥ सु० ॥
॥ ७ ॥ नगरी माही आवीयारे, जूदा पभीया जाम
॥ सु० ॥ एक जुगल हरी मंदीरेरे, आया तव अभि
राम ॥ सु० ॥ ८ ॥ दिठा राणी देवकीरे, विधी वदन
अधीकार ॥ सु० ॥ अंतरजामी आत्मारे, हेज जणा
वण हार ॥ सु० ॥ ९ ॥ लाडु तो हरी केसरीरे, वोह
राव्या भरी थाल ॥ सु० ॥ निज हाथे उलटपणेरे, आ
णी भाव रसाल ॥ सु० ॥ १० ॥ जेहनो चित्त देवा
तणोरे, तेहने चित्त मजोय ॥ सु० ॥ वित्तवतने चित्त
नहींरे, चित्त वीत्त पुण्ये होय॥ सु० ॥११ ॥ चित्त वी
त्त दोइ संपज्यारे, पात्र पोखे तो वादी ॥ सु० ॥ पात्र
वडो संसारमारे, सुकृत सहुनि आदी ॥ सु० ॥१२ ॥
पोखी न जाणे पात्रनेरे, पोखे काया जेह ॥ सु० ॥
विण शिंगाही जाणीएरे, ढोर सरीखो तेह ॥ सु० ॥
॥ १३ ॥ व्याजे दिया दुणो वधेरे, चतुर गुणो व्यव
साय ॥ सु०॥खेति संहेसे गुणा हुवेरे, दान दिया अन

ढाल १५४ मी ॥ मेतारज मुनिवर धन धन तुम्ह अवतार ॥ ए देशी॥ बलीजाउ प्रभुजी, भाजो एह सदेह ॥ साधु सलुणा देखताजी, उपनो अधीक सनेह ॥ व० ॥ १ ॥ सांभल राणी देवकीजी, भाखे श्री जगनाथ ॥ ए षट नदन ताहराजी, नीसुणे सघलो साथ ॥ व० ॥ २ ॥ सारद नामे सारदाजी, सारद देवी होय ॥ वडवखती तुझ सारखीजी, नारी न बीजी कोय ॥ व० ॥ ३ ॥ कस कर्म आदे करीजी, संभलाव्यो विरतत ॥ हरखी राणी देवकीजी, वादी श्री भगवत ॥ व० ॥ ४ ॥ घर आवी एम चिंतवेजी, जाया नदन सात ॥ बालपणे न रमाडीयोजी, एकहि धीग मुझ मात ॥ व० ॥ ५ ॥ भाग्यवती सा भामनीजी, बालिक जेहने गोद ॥ हुलरावे हियडे धरीजी, वासर जाय विनोद ॥ व० ॥ ६ ॥ मे कुण कुण पूरव भवेजी, प्रोढा पातिक कीध, केसर वरणो नानडोजी, एहवो मुझ दैवे न दीध ॥ व० ॥ ७ ॥ एम केहती धरती खीलेजी, सजल सलुणा नेण ॥ थया अणागमता काननेजी, वाली सखीय न वेण ॥ व० ॥ ८ ॥ अरती अलुर वाधी घणीजी, आहट दुहट ध्यान ॥ पगे लागवा आवीयोजी, एटले श्री नृप कान ॥ व० ॥९॥ च्यार च्यारसे मायनेजी, हरी नमे नित्य आय ॥ एम छ मासे वांदताजी, नीज जननीना पाय ॥ व० ॥ ॥ १० ॥ निज पखेरा आतरोजी, मोटा नाणे कोइ ॥

हरीजी ॥ निस हो तिस अने दोइ नार, पति हो क्षे डी कनकानि परीहरीजी ॥ ४॥ भेट्या हो भेट्या नेम जिणद, जाण्यो हो जाण्यो जिन जग तारणोजी ॥ लीधो हो लीधो सजम भार, किजे हो दोइ उपवासे पारणोजी ५॥ जोडा हो जोडा तीने आज, आया हो वोहरण थारे आविकाजी ॥ लालच हो लाडुनी नही कोइ, लालचि हो शिवनी पुण्य प्रभाविकाजी ॥ ६ ॥ राणी हो चितमु चिते ताम, मुझसु हो निमितीये एम भाखीयोजी ॥ थारे हो थारे उत्तम नद, होशे हो होशे एम कहि दाखीयोजी॥७॥म्हारो हो म्हारो कान नरिंद, जेहवा हो तेहवा पट जाणीएजी॥मुझथी हो मुझथी सुल सा सोय,मोटी हो मोटी आज वखाणीएजी॥८॥वदन हो वदन नेम जिणद,आवी सा उतावलीजी॥देखी हो देखी तेह मुनिंद, उपजे हो उपजे अति मननी रलीजी॥९॥सु रहि हो सुरहिनी परे जोय, हिंसे हो हिंसे हेज हिए घणोजी॥नयणा हो नयणा ज्ञानी होय, उलखी हो उलखी ले जण आपणोजी ॥ १० ॥ ढालज हो ढालज मीठी भुर, त्रेपन हो त्रेपनने सोमी भलीजी॥श्री गुण हो श्री गु णसागर सूरि, माता हो माता सुत मनसा रलीजी॥११॥

दुहा ॥ पूछे राणी देवकी, नेम जिणदा पास॥ए पट मुनिवर देखता, माहरे मन उल्हास ॥ १ ॥ ए भव के पर भव तणो, सगपणको व्यवहार ॥ देव दया क री दाखवो, ज्ञान तणा भडार ॥ २ ॥

२ ॥ ए देशी ॥ राणीजी हो जायो पुत्र रतन, जिहो कोमल जिम गजतालु ॥ लाला ॥ नामे गजसुक माल ॥ रा० ॥ १ ॥ जिहो हरख्यो श्रीहरी राजीयो ॥ ला० ॥ हरख्या दसेही दसार, जिहो हरखी माता देवकी ॥ ला० ॥ हरख्यो सहु परिवार ॥ रा० ॥ २ ॥ जिहो बंदिखाना छोडीया ॥ ला० ॥ किधा बहु मंडाण, जिहो नगरीनी शोभा घणी ॥ ला० ॥ वाजे गुहिर निसाण ॥ रा० ॥ ३ ॥ जिहो यादव नारी सामटि ॥ला०॥आवे गावे गीत, जिहो आरण कारण किजीए ॥ ला० ॥ साचवीए शुभ रित ॥ रा० ॥ ४ ॥ जिहो दिजे मयगल मोटका ॥ ला० ॥ दिजे हयवर हार, जिहो दिजे सोना सावटु ॥ ला० ॥ दिजे अरथ भंडार ॥ रा० ॥ ५ ॥ जिहो बारसमो दिन आवीयो ॥ ला० ॥ नाम दियो अभिराम, जीहो चंदकला जिम वाधतो ॥ ला० ॥ रुप कला गुणधाम ॥ रा० ॥ ६ ॥ जीहो खेलावणी हुलरावणी ॥ ला० ॥ चुंबावणी चित लाय, जीहो न्हवरावणी पहेरावणी॥ला०॥आगी अंग लगाय ॥ रा० ॥ ७ ॥ जीहो आखलडी अंजावणी ॥ ला० ॥ भाले करावण चंद, जीहो गाला टोकी सामली ॥ ला० ॥ आलिंगन आनंद ॥ रा० ॥ ८ ॥ जीहो पगमंडण ग्रहि आगुली ॥ ला० ॥ ठमुक ठमुकती चाल, जीहो बोलण भापा तोतली ॥ ला० ॥ रिंझावणी अति ख्याल ॥ रा० ॥ ९ ॥ जीहो रोटी दहिय जिमा

मेह अने शशी देवताजी, सहुने सरीखा जोइ ॥ व० ॥ ११ ॥ उपजाणे अरती तणोजी, माता मनहि म झार ॥ श्री हरीजीनो आवणोजी, तिणही वार वि चार ॥ व० ॥ १२ ॥ वीनय करीने वीनवेजी, जननी श्री हरी राय ॥ माय मया करी जाखीएजी, आरती एव डी काइ ॥ व० ॥ १३ ॥ अति लावो निसासडोजी, मेलहि बोली माय ॥ सात नदन मे जाइयाजी, तुझ सरीखा हरी राय ॥ व० ॥ १४ ॥ पट बाध्या सुलसा घरेजी, तु पिण गोकुल माहि ॥ हुश न पुगी महारी जी, बाल रमाडण प्राहि ॥ व० ॥१५ ॥ उ दिनथी प रवश पणेजी, वैरी केरे वास॥ नदन होवे आठमोजी, तो मुझ पूरे आस ॥ व० ॥ १६॥ माय मनोरथ पूर वाजी, कान्हे किया उपवास॥ देव चवीने आवीयोजी, राणी उदर निवास ॥ व० ॥ १७ ॥ जो जो सच्यो पुण्यनाजी, माग्या नदन होइ॥चेलणा चुथा कारणेजी, रोइ न लहिए सोइ ॥ व० ॥ १८ ॥ चोपन सोमी ढालमेंजी, माधव केरी मात॥ श्री गुणसागर सूरि क हेजी, सुख माही दिन जात ॥ व० ॥ १९ ॥

दुहा ॥ जविक जीव प्रतिबोधवा, जिनवर करे वि हार ॥ पाप तिमर निरघाटवा, सहस किरण दिनकार ॥ १ ॥ गर्ज दिवस पूरा करी, जायो सुंदर नद ॥ घ र घर रग वधामणा, घर घर अति आनद ॥ २ ॥

ढाल १५५ मी ॥ नमिराय धन धन तुम अवता

तरुवर वासो ॥ हाट मिल्यो वाजीगर केरो, पसरे प्रग
ट तमासो ॥ तिरथ मेलो जेहवो तेहवो, जग व्यवहा
र विमासो]॥ जे० ॥ २ ॥ अभ्र पटल जिम उपजे
विणसे, तनु धन जोवन जाणो ॥ गगन नगर सरी
खो साचो, पदमनी प्रेम प्रमाणो ॥ साजन साथ स
रिस सुहावो, विद्युतवान वखाणो ॥ जे० ॥ ३ ॥ (२
अथ शरण भावना ॥) मृग शावक वन माही फिर
तो, करतो केली विचारो ॥ सिंहसूरि देखी सुविसेखी,
ले चलियो निरधारो ॥ काल तणी असवारी होता,
कोइ न राखण हारो ॥ जे० ॥ ४ ॥ (३ अथ स
सार भावना) ॥ चउगति फेरी करीय घणेरी, अम
र थयो ए प्राणी ॥ नरगतिरी अवतार अनता, पाप
तणी अहि नाणी ॥ नरभवे धन वन रामा रामा, वि
जी वात न जाणी ॥ जे० ॥ ५ ॥ (४ अथ
एकत्व भावना ॥) जिहा तिहा नर आप एकिलो,
फिरे रमतो सोइ ॥ परभवे जाता जोइ पनोता, साथे
नावे कोइ ॥ का धन का धनियाणी धरति, धर्म सखाइत
होइ ॥ जे० ॥ ६ ॥ (५ अथ अन्यत्व भावना)॥
जीव सचेतन देहि अचेतन, एक कहो किम होवे ॥
उ शिव वछे उ भव इछे, उजागे उ सोवे ॥ आतम देहि
विचारे जूदि, सोइ अघ मल धोवे ॥ जे० ॥ ७ ॥ (६ अ
थ अशुचि भावना ॥) काय अशुचि अनेक प्रकारे,
धोया सुधि न पावे ॥ दसाहि द्वार श्रवे निसवासर,

वणी ॥ ला० ॥ लिला बाल विनोद, जीहो सबहीपरे माय देवकी ॥ ला० ॥ पावे अधिक प्रमोद ॥ रा० ॥ ॥ १० ॥ जीहो पढ्यो गुणयो मति आगलो ॥ ला० ॥ जदुपती जीवन जोय, जीहो प्यारो प्राण थकी खरो ॥ ला० ॥ माताजीने सोइ ॥ रा० ॥ ११ ॥ जीहो ए टले नेम समोसरया ॥ ला० ॥ वदन देवमुरार, जी हो लघु भाइ आगे करी ॥ ला० ॥ परीवरीयो परिवा र ॥ रा० ॥ १२ ॥ जीहो सोमल ब्राह्मणनि सुता ॥ ॥ ला० ॥ परणावणने काज, जीहो मूकि मदिर आप णे ॥ ला० ॥ जइ वादे जिनराज ॥ रा० ॥ १३ ॥ जी हो पूजी प्रणमी साभले ॥ ला० ॥ बेठि परखदा बार, जीहो श्री जिनवाणी विस्तरी ॥ ला० ॥ भविकजना सुखकार ॥ रा० ॥ १४ ॥ जीहो पंचावन सोमी ढाल में ॥ ला० ॥ कुवर गजसुखमाल, जीहो श्री गुणसा गर सूरिजी ॥ ला० ॥ धर्म सुणे सुविसाल ॥ रा० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ उपदेसे श्री नेम जिन, जीवा जीव विचा र ॥ दान शियल तप भावना, श्री जिन धर्म उदार ॥ १ ॥ भव भय हरवा भावना, बार तणो विस्तार ॥ विवराशु विवरी कहे, त्रिभुवन तारण हार ॥ २ ॥

ढाल १५६ मी ॥ ए जग थिर नही ॥ ए देशी ॥ जे क्षण जायछेरे, फिरी नावेछे तेह ॥ चेत चेत नर चेतिए हो, कर कर धर्म सनेह ॥ जे० ॥ १ ॥ (१ अथ अनित भावना) ॥ ए ससार असार विच्यारो, पखी

काल अनतो सोवत, अवहि क्यु नवि जागे ॥जे०॥१४॥ आगे जीव अनत विगुतो, पडीया घन प्रमादे ॥ विषया वाह्या न रह्या साह्या, माची रह्या उनमादे ॥ पिण परमार्थ एह न जाणयो, तरवो गुरु प्रसादे ॥ जे०॥१५॥ एकसो छप्पनमी ढाले. श्रीमुख जिन उपदेशा ॥ नविक जना मन मान्या कानी, किधा क्रोध किलेसा ॥ श्री गुणसागर सूरि सुहावे, समताजाव विशेसा ॥ जे० ॥१६॥

दुहा ॥ जिन वाणी श्रवणे सुणी, गज सुखमाल कुमार ॥ विषयाथी विरच्यो खरो, मनसु करे विचार ॥ १ ॥ विषया विषहीथी बुरी, विषीया नाम कुनाम ॥ विषया वाह्या मानवी, दो जव गमे निकाम ॥ २ ॥ आग अने विषया कही, एक सरीखी जोय ॥ सिलगीने वाहिर पडी, हाथ न आवे सोय ॥ ३ ॥ धुरही दावी राखीए, लहे अति विस्तार ॥ ए निश्चय मनमा धरयो, व्याह तणो परीहार ॥ ४ ॥

ढाल १५७ मी ॥ कानजी मेलोने कावलीरे ॥ ए देशी ॥ प्रजु प्रणमी घरे आवीयोरे, माताजीनी पास ॥ अनुमतीने उतावलोरे, सजमसु उल्हास ॥ १ ॥ माता अनुमत दिजीएरे, लेसु सजम जार ॥ जइ जोउ उतावलोरे, मुक्ती मनोहर नार ॥मा० ॥ २ ॥ मूर्गणी मा देवकीरे, वात सुणता ताम ॥ जाया तु मुज वाल्होरे, प्राण थकी अजिराम ॥ मा० ॥ ३ ॥ दुरलज उवर फूल जीउरे, साजलवो जग माही ॥ तो देखेवो

ते किम सोच लहावे ॥ साते धाते पृरित ए तनु, बा हिर सोह देखावे ॥ जे० ॥ ८ ॥ (७ अथ आश्रव भावना ॥) श्रवण नयणने घाण घणी परे, रसना फरस कहिजे ॥ हरिण पतग भमरने मछी, मयगल मरण लहिजे ॥ एक एक इंद्रिय कारणे एतो, पचे क्यु न कशीजे ॥ जे० ॥९ ॥ (८ अथ सवर भावना)॥ आश्र व रोक्या होवे सवर, सवरथी फल मोटो ॥ व्यापारी व्या पार करता, जाणी न खाइ खोटो ॥ समझ समझरे जीव सलुणा, दु ख घणो सुख थोभो ॥ जे० १० ॥ (९ अ थ निर्जरा भावना ॥) उदय उदिरण दुनी प्रकारे, कर्म निर्जरा कहिए ॥ श्री जिनशासन ठाडी अनेरा, एतो मर्म न लहीए ॥ तप जप दु कर करणीने बले, निश्चल हुइने रहिए ॥ जे० ॥ ११ ॥ (१० अथ लो क भावना ॥) चउद राज तिम उचो निचो, लोक प्रमाण विचारो ॥ सात पाचने एक राजुवर, चउदप णे अवधारो ॥ कियो न किणहि कोइ न करेगो, जिम बे तिम निरधारो ॥ जे० ॥ १२ ॥ (११ अथ बो ध भावना ॥) थावरथी ए त्रसपणो दुर्लभ त्रसथी इंद्री पूरा ॥ पाचे इंद्रीमें माणसनी गती, आर्य खेत्र सनूरा ॥ साधु योग सजमनो धरवो, जोतो पुण्य अ कूरा ॥ जे० ॥ १३ ॥ (१२ अथ धर्म भावना ॥) धर्म विना सब धदो दिसे, काइ हाथ न लागे ॥ धर्म विना रुलीयो भव भवमे, रे मन मूरख आगे ॥ वित्यो

सोमल सुसरो आवियोरे, शिर माटीनी पाल ॥ अं
गारा लेइ खेरनारे, धगधगता ततकाल ॥ मा० ॥
॥ १६ ॥ मेलि मस्तके चालीयोरे, साधु न चूक्यो
ध्यान ॥ चडते परीणामे लह्योरे, केवल पद निरवाण
॥ मा० ॥ १७ ॥ षटमासी रजनी थइरे, सुत विरहे
विकराल ॥ प्राति पधारी प्रभु कन्हेरे, देखण गजसु
खमाल ॥ मा० ॥ १८ ॥ वाग उपर हिंसांतिरे, सुरहि
आवे जेम ॥ सुत मुख निरखण साजलिरे, माता आ
वी तेम ॥ मा० ॥ १९ ॥ अकुलाणी अणदेखवेरे, पु
छ्या त्रिभुवन स्वाम ॥ नंद हुउ आनंदमेरे, पोहोचा
अविचल ठाम ॥ मा० ॥ २० ॥ फरसी बेदी डाली
जीउरे, ढली पर्णी सा माय ॥ रोवे गोरी गहवरीरे, ह
री हलधर दु ख थाय ॥ मा० ॥ २१ ॥ हरी पूछ्यो
जिनवर कह्योरे, धसाकि छुटशे प्राण ॥ बंधव हता ते
जाणवोरे, स्वामी कह्या सहि नाण ॥ मा० ॥ २२ ॥
सेरी वाटे आवतारे, सोग धरी हरीराय॥ सोमल्ल सा
साहीमे मुउरे, किधाना फल पाय ॥ मा० ॥ २३ ॥
उत्कृष्टा पातिक जे केरेरे, उत्कृष्टी हि वार ॥ पापे
पचे घणु आपणेरे, नाहि संदेह लिगार ॥ मा० ॥
॥ २४ ॥ जे हुवा त्रिभुवनपतिरे, तेहनो सोग न को
य ॥ कीधी हरी समझावणीरे, नेम जिणंदा जोय ॥
॥ मा० ॥ २५ ॥ सत्तावन सोमी ए ढालमेरे, मुगती
गया सुखमाल ॥ श्री गुणसागर सुरिजीरे, प्रणमु चर

भिहारे, तिम तुम दरसण ग्राही ॥ मा० ॥ ४ ॥ पान फूलनो जीव तुरे, कोमल केली समान ॥ लहुतने अ ात लाडीलोरे, लाल न लिला थान ॥ मा० ॥ ५ ॥ चारीत्र काठोछे खरोरे, जिन वचने विख्यात ॥ मिण तणे दाते करीरे, लोह चणा न चवात ॥ मा० ॥ ॥ ६ ॥ वाक भरेवो कोथलोरे, चालवो खाडा धार ॥ सायर तरवो भुज वलेरे, दुःकर सजम भार ॥ मा० ॥ ७ ॥ धुरी होइ उतावलोरे, गमी घर व्यापार ॥ प गी परीसह उपज्योरे, ढिला पडेही अपार ॥ मा० ॥ ॥ ८ ॥ लुदल जावे जातीनोरे, दोगें एक न होय ॥ ना घर ना सजमपणोरे, वादी गमे भव दोइ ॥ मा०॥९॥ कुमर कहे माजी सुणोरे, रागीनो ए माग ॥ जाणेवो जुगतो सहिरे, पिण जुदो वैराग ॥ मा० ॥ १० ॥ जे वछक एह लोकनारे, नवि वछक परलोक ॥ ते कायर ने दोहिलोरे, जालवणो जगी जोग ॥ मा० ॥ ११ ॥ सूरवीरने साहसीरे, त्रिकरण सुधा जास ॥ तेहने तो सहु पाधरोरे, काइ न दोहिलो तास ॥ मा० ॥ १२ ॥ जोबनने धन कारीमोरे, अने कारमी देह ॥ साणपणा नो नाम एरे, सजम साथे सनेह ॥ मा० ॥ १३ ॥ घ नजीवो सञ्जोगथीरे, त्रपती न पावे जीव ॥ सतोखी सुखीया महारे, समतावत सदिव ॥ मा० ॥ १४ ॥ स मझावी सजम लिउरे, नेमी जिनेश्वर हाथ ॥ ध्यान ध रयो समसानमेरे ॥ दुउ दियो जगनाथ ॥ मा०॥१५॥

ती उपजे अति घणीरे, हरी हलधरने जोय ॥ म० ॥ ॥ ८ ॥ नाइ सुतने सुदरीरे, अवर अनेरा कोइ ॥ दिस्या लिए सादरीरे, श्रीहरी अनुमति होइ॥ म०॥ ॥ ९ ॥ केता एक दिक्षा ग्रहिरे, केता नगरी मझार ॥ आया हरी निज मदिरेरे, उपकर्मो अधिकार ॥ ॥ म० ॥ १० ॥ मदीरा नगरी बाहिरेरे, कीधी सघली जाम ॥ दिपायन तप आकरोरे, तपवा लाग्यो ताम ॥ म० ॥ ११ ॥ जरत कुमर उदाशीनरे, वनही माही वसत ॥ खाडो पथ्थर उपरेरे, घाढो करी घसत॥ म० ॥ १२ ॥ खिस्यो अणि तत्र आकलोरे, पाणी माही पसत ॥गिलीयो मोठे माछलेरे, पडीयो जाले तुरत ॥ ॥ म० ॥ १३ ॥ उदरथी कियो टूकडोरे, तिर तणे आकार ॥ निकलीयो ते तिरशुरे, खायो हरीण गिमार ॥ म० ॥ १४ ॥ हरीण गयो वनमे चलीरे, मारयो जरत कुमार ॥ तरकस माहि राखीयोरे, सोइ तिर ते वार ॥ म०॥ १५ ॥ आठावन सोमी ढालमेंरे, साचा श्री जिन बोल ॥ श्री गुणसागर सूरिजीरे, अमिय समो निर मोल ॥ म० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ चद चले सूर्ज चले, चले सोइ नरिंद॥शेप चले सायर चले, चले सुवडगिरिंद ॥ १ ॥ पिण न चले नवीतव्यता, एहनो जोर अपार ॥ साव प्रमुख अति सामटा, खेलण चल्या कुमार ॥ २ ॥

ढाल १५९ मी ॥ हिवे राणि पदमावतिरे हा ॥ ए

ए त्रीकाळ ॥ मा० ॥ २६ ॥

दुहा॥ हलधर श्री हरीसुं कहे, पुण्य घटनो आप॥ दिसेछे तेहि कारणे, उपज्यो ए संताप ॥ १ ॥ मोटा ना तो कुकरा, आसगे नहि कोइ ॥ भाइ हणयो सुख मालु सो, वडो अचम्भो जोइ ॥ २ ॥

ढाल १५८ मी ॥ कपुर होवे अति उजलोरे ॥ ए देशी ॥ श्री वलदेव विनो करीरे, पूछया नेमी जिनेश ॥ होतार्थ जे आगलोरे, सुख दुःख हरख किलेश॥१॥ मया करी स्वामी करो प्रसाद, जे उगे ते आथमेरे, कोइ नहि विखवाद ॥ ए आकणी ॥ए नगरी ए सा हिवीरे, ए श्री कृष्ण नरेश ॥ कब लगी रेहसे एह वोरे, यादव जोर विशेप ॥ म० ॥ २ ॥ नेम कहे स हु साम्भलोरे, झुठो जग व्यवहार ॥ मिलता दिन ल गे घणारे, विछडता नही वार ॥ म० ॥ ३ ॥ रंग कु सुम पतगनोरे, दिसे अधीक सुचंग ॥ दिवस दशाने आतरेरे, सो फीर थाइ विरंग॥म० ॥४॥तन धन जो बन कारमोरे, परीअणने परीवार ॥ च्यार दिवसनो चह चहोरे, पाछे विरस अपार ॥ म० ॥ ५ ॥ द्वारा मति नगरी तणोरे, मदिरा हेते विणास ॥ वारसमे व रसे होसेरे, करसे ए श्री व्यास ॥ म० ॥ ६ ॥ निज खाडे श्री हरी तणोरे, जरत कुमरने हाथ ॥ वन कौ सबे निश्चेशुरे, मरण कह्यो जगनाथ ॥ म० ॥ ७ ॥ एह सुणता वातडीरे, खलभलीया सहु कोय ॥ आर

॥ जा० ॥ १० ॥ ए मूरख मुझ नंदनेरे हां, खिजा
व्या तुम्ह आज ॥ जा० ॥ क्षमा करो ऋपीरायजीरे
हा, तुम्हने सघली लाज ॥ जा० ॥ ११ ॥ चदन क
चन सेलडीरे हा, अगर रसोइ वस ॥ जा० ॥ सता
प्या ए अति घणारे हां, टंचन राखे डस ॥ जा० ॥
॥ १२ ॥ व्यास कहे हरीजी सुणोरे हा, जूठी अव म
नोहार ॥ जा० ॥ करयो नियाणो आकरोरे हा, ते न
मिटे किरतार ॥ जा० ॥ १३॥तुम्ह दो वंधव वाहिरोरे
हा, अवर न छेडू कोइ ॥ जा० ॥ सजमधारी उगरेरे
हा, तुगरसे गृहि होइ ॥ जा० ॥ १४ ॥ तव घर आ
यो आपणेरे हा, माधव महीमावत ॥ जा० ॥ क्षायक
समकितनो घणीरे हां, निश्चेवत अनत ॥ जा० ॥
॥ १५ ॥ व्यासे नियाणो वाधीयोरे हा, द्वारामती दु.
ख हेत ॥ जा० ॥ उपज्यो अग्नी कुमारमेरे हा, आ
णी मिल्यो सकेत ॥ जा०॥ १६ ॥ ए गुणसाठसो ढा
लमेरे हा, लिजे सजम जार ॥ जा० ॥ श्री गुणसाग
रसूरि वधेरे हां, साधानो परीवार ॥ जा० ॥ १७ ॥

गाथा ॥ खड खड रस छे नव नवा, सुणता मिठा साकर लवा, श्री हरीवश चरित्र जय जयो, आठमो खड ए पूरण थयो॥ १ ॥ इति ढालसारे हरीवस चरित्रे आठमो खड समाप्त ॥

अथ ढालसागरे श्रीकृष्ण चरित्र वर्णन नवमो खड प्रारम्भ

दुहा ॥ मन वचन क्रम शुद्धसु, नेमी नमु सुख

देशी ॥ आवि मदिरा वासनारे हा, हरस्या कुवर जा
म ॥ जावि बलवंति ॥ सघला आव्या आसनारे हा ॥
खाधी मदिरा ताम ॥ जा० ॥ १ ॥ गारु चढ्यो वयला
घणोरे हा, घुमता चालत ॥ जा० ॥ दिठो दिपायण
जतिरे हा, तव अमरप पालत ॥ जा० ॥ २ ॥ सव
कहे सहु सामलोरे हा, एहनो किजे नास ॥ जा० ॥
नगर अने घर यादवारे हा, एहथी छे विपनास ॥
॥ जा० ॥ ३ ॥ लात धबुका लाकडीरे हा, गाढो कु
ट्यो तेह ॥ जा० ॥ मुवो जाणि मुकियोरे हा, दियो स
घुकण एह ॥ जा० ॥ ४ ॥ कुमर साप डसावियोरे
हा, सूरि डाढमे वाल ॥ जा० ॥ लग्नवार ते वर हुवेरे
हा, आइ मील्यो ततकाल ॥ जा० ॥ ५ ॥ प्रतिकेश
व केशव करेरे हा, पावे सही वीपनास ॥ जा० ॥ सी
तापती नल पाडवारे हा, जोगविरे वनवास ॥ जा०॥
॥ ६ ॥ दुःशासन खेच्या खरारे हा, पचालिना चीर ॥
॥ जा० ॥ जूजा उखाडी जीमजीरे हा,हणीया सोइ वी
र ॥ जा० ॥७॥ किचक तणा कुसीलथीरे हा, बधव
शतहि सहार ॥ जा० ॥ सयण सयाणो स्यु करेरे हा,
जाविनो अधिकार ॥ जा० ॥ ८ ॥ रिसवसे तिहा ता
पसेरे हा, किधो इम नियाण ॥ जा० ॥ दुखदाइ द्वा
रामतिरे हा, होज्यो तपाहि प्रमाण ॥ जा० ॥ ९ ॥ वा
त सुणी उतावलारे हा, हरी हलधर आवत ॥ जा०
॥ विविध प्रकारे खामणारे हा, पगे लागी खामत ॥

'यो हु नव वैरागीहो ॥ थो अनुमति तो लेउ दिक्षा, जिन वचने रढ लागी हो ॥ अ०॥९॥ समझाव्यो बाबा ने बुढो, समझाव्यो निज तातो हो ॥ चारित्रने उमा ह्यो अधीको, अवगमे नहि वातो हो ॥ अ०॥१०॥ साठ अने एकसोमी ढाले, हरीनो लहि आदेसो हो ॥ श्री गुण सागर सूरि पयपे, वाध्यो भाव विशेसो हो ॥ अ०॥११॥

. दुहा ॥ मातासु विनती घणी, काम करे करजोड ॥ सजम लेवा मेलवे, केलवणीनी कोड ॥ १ ॥ जिम थी तिम धसकी पडी, न रही सुद्ध लिगार ॥ बाहे ध री बेठी करी, करी करी अति उपचार ॥ २ ॥

ढाल १६१ मी ॥ सोदागर लाल चलण न देशा ॥ ए देशी ॥ प्यारे हमारे लाल ॥ एसी न कीजे, तु म विण आ छे लाल कहो किम किजे ॥ प्या० ॥ छ तिया मेरी लाल तिखी काति, कालज कापे लाल अ ति अकुलाती ॥ प्या० ॥१ ॥ तुम विरहेरे लाल वित क विते, फीर क्यु चाहु लाल वेदि न छिते ॥ प्या० दु:ख छतिया मेरे लाल आगज उठि, तनु जालेरे ला ल न समझे झुठी ॥ प्या० ॥ छतियामे लाल दु ख न समावे, दाडिम ज्युरे लाल फाटी आवे ॥ प्या० ॥ ॥ २ ॥ तुम्ह वीरहेरे लाल वितक विते, फीर किउ चाहु लाल उदिन छिते ॥ प्या० ॥ दु ख हु तेरे लाल जेते भारे, तुम्ह आइरे लाल नीठ विसारे ॥ प्या० ॥ ॥ ३ ॥ च्यारे दिनाकी लाल करीय उजवाली, पुनरपि

कार ॥ अब नवमा अधिकारनो, नवीक सुणो सुवि
चार ॥ १ ॥ कामदेव एम चिंतवे, सारीजे निज का
ज॥ससारीक सुख जोगव्या, सार्वाजे शिन राज॥ २ ॥
ढाल १६० मी ॥ श्री रामजीए नार गमाड हो ॥
ए देशी ॥ अनुमती मागे हो, विनो करी पगे लागे
॥ मदन उजो हरी आगे, मोह निंदथी जागे ॥ अ०
॥ १ ॥ अनुमती नाम सुणता मुरछ्या, हरी हलधर
शु देवा हो ॥ वज्रपात सम वात विचारी, धरणी प
ड्या ततखेवा हो ॥ अ० ॥ २ ॥ सजम स्योने स्यो
तु कुवर, किजे जोग विलासहो ॥ विणाइ धामे जे वि
प खाइ, ते तो पावे हास हो ॥ अ० ॥ ३ ॥ कुवर
कहे जिन वचने शका, मुजने काइ नावे हो॥ द्वार थ
की निज मदिर लाग्यो, काढण कोइ न पावे हो ॥
अ० ॥ ४ ॥ पडीत मूरख बुढा बाला, कायर सूरा जो
इ हो ॥ राजा राणी रविसुत आगे, रहेण न पावे को
इ हो ॥ अ० ॥ ५ ॥ आदीनाथ आदी चोवीसे, जिन
वर चक्री बारे हो ॥ केशव युग गण हरने हलधर, ए
सहुए यम सारे हो ॥ अ० ॥ ६ ॥ मात पीताने बधव
वेटा, वार अनता पाया हो ॥ परजव जाता कोइ प
नोता, मुजने आडा नायाहो ॥ अ० ॥ ७ ॥ जूल्यो
बु तो अतिही जूल्यो, अब जूल्यो नवी जाइ हो ॥ अ
णजाण्या विष खाधो केवल, जाण्या विष न खवाइ हो
॥ अ० ॥ ८ ॥ जगत तणी स्थिती क्षणीक देखी, थ

त्रिभुवन जोसु ॥ प्या० ॥ ११ ॥ देव युगति लाल कहि समझावी, काम कुमरे लाल माय मनावी ॥ प्या० ॥ एकसठ सोमी लाल ढाल सुहावी, कहे गुणसूरि लाल नविक मन नावी ॥ प्या० ॥ १२ ॥

दुहा ॥ मातानी अनुमति लइ, अत पुरमां जाय ॥ समझावे अतेउरी, वाणी वदे सुखदाय ॥ १ ॥ प्री तीवत नीसुणो प्रिया, इमे ग्रहाग दिख ॥ पाछे रुमा चालजो, एह हमारी शिख ॥ २ ॥

ढाल १६२ मी ॥ वीसजणासु वाद न कीजे ॥ ॥ ए देशी ॥ वोले राणी अति वीलखाणी, नाखे नय णे पाणीजी ॥ आरतिवंत आतुर सघली, नाखे गद गद वाणीजी ॥ वो० ॥ १ ॥ प्रीतम प्रेम विहुणी वा णी, किम नाखोछो आजजी, चारीत्रनी चतुराइ छां डो, तुम्हने करवो राजजी ॥ वो० ॥ २ ॥ तुम्ह प्रनु इद्र तणे अवतारे, हम इंद्राणी रुपजी ॥ लिजे लाहो नरनव केरो, सानल जादव नूपजी ॥ वो० ॥ ३ ॥ नारीने कारण नर जगमें, कष्ट करतां कोडजी ॥ एक मना उन्ना नृप आगे, सेव करे करजोडजी ॥ वो० ॥ ॥ ४ ॥ अधीक नयकर सागर लघे, आटविमे पयसं तजी ॥ रोल महा सग्रामे सूरा, आतुर थइ धसतजी ॥ वो० ॥ ५ ॥ अहिल्या रुपे इद्र विगुतो, ए प्रगटो अवदातजी, एक लाख हजारा केइ, न सरयु खा धी लाचजी ॥ वो० ॥ ६ ॥ पाराशर सरीखा पातरी

थाइ लाल रंगनी झाली ॥ प्या० ॥ दडय मनाइ ला
ळ ए दिन लोके, कहा करो हो लाल तोडा तोडे॥प्या०॥
॥ ४ ॥ वेटा केरी लाळ आस्या एति, काहिय न जा
इ लाल अवर जेति ॥ प्या० ॥ देश प्रदेशा लाल सु
खनीरे साइ, माताने हुवे लाल सुतथी वडाइ॥ प्या०
॥ ५ ॥ सुंदर जाइ लाळ सुंदर जायो, नेह वसेरे लाल
ज्यु घर आयो ॥ प्या० ॥ सुंदर जाइ लाल खरीय स
पूति, सिंहणी ज्यु रे लाल सुखनर सूती ॥ प्या० ॥
॥ ६ ॥ उची लेइरे लाळ आने अडाइ, निचि किएरे
लाल जात वनाइ ॥ प्या० ॥ दुःख न सहाइ लाल क
हि जे कासु, सोझा वासो लाल होसे हासु ॥ प्या० ॥
॥ ७ ॥ लाल नगीनो लाल तु मुझ किको, तुझ विण
लागे लाल ए सहु फिको ॥ प्या० ॥ रोवत अति हे
लाल रुखमणी राणी, नर नर आवे लाल नयणे पा
णी ॥ प्या० ॥ ८॥ मदन कहे लाल मायन रोजे, जेम
दिन आयो लाल कियु सोखे सोजे ॥ प्या० ॥ मोहन
किजे लाल मोहन माच्यो, संग अनेके लाल प्राणी
नाच्यो ॥ प्या० ॥९॥ अथीर मेळोरे लाल कहो किम
गाजे, सर्द घन ज्युरे लाल फोगट गाजे ॥ प्या० ॥
जन्म जरारे लाल पूठे लागी, कियु छुटिजे लाल तेह
थी नागी ॥ प्या० ॥ १० ॥ उत्कृष्टीरे लाल किजे
करणी, तो तो मीटेरे लाल यमांकि फरणी ॥ प्या० ॥
अजर अमररे लाल अब हम होसु, सिद्ध थइने लाल

ग युगली जालवतां, हुवा मोक्ष हजुरजी ॥ बो० ॥
॥ १७ ॥ तुम वाट पाडी मुक्ति पथनी, जाणी श्री जि
नरायजी ॥ सहस ब्याण तजे समकाले, तो वैरागी था
यजी ॥ बो० ॥ १८ ॥ चारीत्र कठण होवे कता, कर
वो केसा लोचजी ॥ परघर आसा धरवि नीतकि, नो
क्षाकेरो सोचजी ॥ बो० ॥ १९ ॥ उन्हो पाणी आठ
ण वाणी, पिधो कहो किम जायजी ॥ अणुवाणा पा
ए चालेवु, फीरी पछतावो थायजी ॥ बो० ॥ २० ॥
नाह विना नारी नीरधारी, निपट नीकामी होयजी ॥
अगुठाविण आगुलीया जिम, नारीनिहाली जोयजी
॥ बो० ॥ २१ ॥ सासरमे सुखसाता न लहे, नलहे पिय
र मानजी ॥ धणी गया धणियापो छुटे, घर आगण म
साणजी ॥ बो० ॥ २२ ॥ बेटा पोता जनक जमाइ,
गाठे झाझा दामजी ॥ अलवेसर अलगाथी कहिए, तो
पिण नाम कु नामजी ॥ बो० ॥ २३ ॥ धन धन दवदं
ति सतवति, धन धन पाडव नारजी ॥ आपदमाहि
साग आहारी, हुइ खिजमतदारजी ॥ बो० ॥ २४ ॥
नारीने पियु साथे जलो, का घर का वनवासजी ॥ प
तिव्रता व्रत साचो ते, सुख दुख सरीखो जासजी ॥
॥ बो० ॥ २५॥ पिउनी लारे सजमलेसा, साधसा निज
काजजी ॥ महेल मुगतमें सामी सरसी, करसा अवि
चल राजजी ॥ बो० ॥ २६ ॥ वासठने एकसोमी ढा
ले, हरख्या काम कुमारजी॥ श्री गुणसागर निजपद

यो, पातरीयो श्री व्यासजी ॥ सत्यकी वेला शु पातरी यो, पाम्यो प्राण विणासजी ॥ वो० ॥ ७ ॥ ब्रह्मा पुत्रिसु पातरीयो, तापस तरुणी देखजी ॥ वरशी तप तरु गली चाटतो, राच्यो रुप विशेपजी ॥ वो० ॥ ८ ॥ भरत सुंदरी साथे मोह्यो, दिख्या लेण न दिधजी ॥ साठ सहस वरसा तप तपवे, काया खिणी किधजी ॥ वो० ॥ ९ ॥ प्रजापति नृप किधो किरावर, ते तो न करे कोइजी ॥ दसकंधर दस माथा शेति, लंका सरीखी खोइजी ॥ वो० ॥ १० ॥ रामचंद्र सीताने काजे, किधो किम विलापजी ॥ पवन जय पद्मनीने लीधे, देह तजेतो आपजी ॥ वो० ॥ ११ ॥ शांतनु नंदन आरतीवतो, निपम पूरी आशजी ॥ करमता कुंतिने कारण, पान्डव हुवो उदाशजी ॥ वो० ॥ १२ ॥ देव हमारे सुसरे सुंदरी, सासु काजे किलेसजी ॥ अष्टदश अक्षोहणीसु, मारयो वडो नरेशजी ॥ वो० ॥ ॥ १३ ॥ पान्डव हरी पर खंड शिधाव्या, पंचालीने काजमजी ॥ नाम कहु केता जग जोता, पार न पावे स्वामजी ॥ वो० ॥ १४ ॥ भैरव झंपा कमलनी पूजा, करवत कासि माहिजी ॥ पंचाग्नी साधे सीर उंधे, धुंउ घुंटे प्राहिजी ॥ वो० ॥ १५ ॥ एहवि कलपना करीने कामी, वंछे नारी भोगजी ॥ नाह पामीनें परहरीए, किण दीठो परलोकजी ॥ वो० ॥ १६ ॥ काम कहे काम नी तुमे नीसुणो, भोग भोगवी भल भूरजी ॥ योगी यो

लागी ॥ ए मदनतणी परे त्यागी हो ॥ सं० ॥ १०॥ अतेउर ए विधि किजे, पिउ साथे सजम लिजे, राजे मती पासे रहीजे हो ॥ स० ॥ ११ ॥ भानु कुमरे पिण लिधो, चारीत्र साथे चित्त दिधो ॥ तिनो पिण काज सिधो हो ॥ स० ॥ १२ ॥ रुखमणी आदे पट नारी, ए आठे सुविचारी ॥ चारीत्र लिधो सुखकारी हो ॥ स० ॥ १३ ॥ मदन महा मुनिराया, परमारथसु चित लाया ॥ ए साध सकलहि सुखदाया हो ॥ स० ॥ १४॥ त्रेसठ अने सोमी ढाले, मुनी चोखु चारीत्र पाले, गुणसागर कुल उजयाले हो॥स०॥१५॥

दुहा ॥ हरी हलधर जिनने नमी, आसु ढाले अपार ॥ मन मेली कुवर कन्हे, घर आया तेहिवार ॥ ॥ १ ॥ मेहेल मांहि नावि सुदरी, सभा माहि सुकुमार॥अणदेख्या हरी जाणीयो, सुनो सहु ससार ॥ २ ॥

ढाल १६४ ॥ मी राम रसे राची घणु ॥ ए देशी ॥ श्री हरीजी आलगे नहि, ते वात न जाइ कहि हो ॥ श्री० ॥ १ ॥ रोम रोमसम राचियो, रुखमणी केरो राग हो ॥ खाचि काळ्यो दु खहि, नहि उपधनो लाग हो ॥ श्री० ॥ २ ॥ सूना मदीर मालिया, सूनी घर पटसाल हो ॥ सूनी सेज डरामणी, विण रुखमणी सुकुमाल हो ॥ श्री० ॥ ३ ॥ खाट हिंचोले हिंचता, हरीनो हियो भराय हो ॥ उचो नीचो देखहि, पतित्रता नहि पाय हो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ भोजन तो भावे नहिं,

थाप्यो, श्री अनीरुद्ध कुमारजी ॥ चो० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ उछव माड्यो अतिघणो, सजमनो महाण ॥ धन विलसे मन मोकले, साजन मिल्या सुजाण ॥१॥ नृपतने नृपतिनी सुता, मीत्रोने परीवार ॥ सजम ले वा चालियो, श्री परजून कुमार ॥ २ ॥

ढाल १६३ मी ॥ दर्थासुत विनतडी सुणजो ॥ ए देशी ॥ सजम लेवा सचरीयो, समतारससु चित न रीयो ॥ प्रभु परीवारे परवरीयो हो ॥ स० ॥ १ ॥ हाथी उपर आरोहे, सीर छत्र महा मन मोहे ॥ चामरकी सोना सोहे हो ॥ स० ॥ २ ॥ तव वाजा वाजे वारु, तव नाचे पात्र उदारु ॥ तव दीजे दान अपारु हो ॥ स० ॥ ३ ॥ हरी हलधर साथे आवे, लोकानो पार नवि पावे ॥ पुरमाहि होइ सिधावे हो ॥ स० ॥ ४ ॥ माधवजी सरीखो तातो, रुखमणीजी सरीखि मातो॥ एह अचनानि वातो हो ॥ स० ॥ ५ ॥ आपणपे तो प्रभुताइ, ए सवि वाते वडाइ ॥ गाडी जे ए ठकुराइ हो ॥ स० ॥ ६ ॥ चिवी विवी अति वूढी, साचि पति तणी तो कूढी ॥ न तजाइ मनकि गूढी हो ॥ स० ॥ ७ ॥ खेचरनी धरती साधी, नृचरनी प्रभुता लाधी प्रभु चाहे सीव आराधी हो ॥ ॥ स० ॥ ८ ॥ एम सुणता आया, जिनराज समीपे सोहाया ॥ तव श्री मुखे सजम पाया हो ॥ स० ॥ ॥ ९ ॥ साव कुमर वर वैरागी, व्रत साथे महा लय

मदन कुमरनि मूरति, जोवता जग मांहि हो ॥ मारी खी अणदेखवे, पुरुषोत्तम दु ख प्राहि हो ॥ श्री० ॥ ॥ १६ ॥ हेलविया हीरा तणा, फरके फरके हाथ हो ॥ रुखमणी रुखमणी मदनने, सभारे जगनाथ हो ॥ श्री० ॥ १७ ॥ चोसठने सोमी ढालमे, उलभो अधी कार हो ॥ श्री गुणसागर वखाणीयो, प्रेम परम रस सार हो ॥ श्री० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ साव अने परजुनने, अधीको धर्म सनेह ॥ तप जप किजे एकठा, सोखीजे निज देह ॥ १ ॥ चारित्र पाले नीरमलो, ते मोटो मुनिराय ॥ सुमति गु पति खप करे, जीती विषय कपाय ॥ २ ॥ एषणा सु ध आहारनि, करे गवेखणा शुद्ध ॥ सुद्धाचारी साधु नो, मारग ए अविरुध ॥ ३ ॥ सतावासे, गुण धरे, साधुतणा सुखकार ॥ मुनिवर महियल सचरे, ने मिनाथनि लार ॥ ४ ॥

ढाल १६५मी ॥ प्रणमी सहगुरु पाय, गुणरे गासु रा जेमति सतीजी॥ए देशी॥साव परजुन मुणिंद,चारीत्र पा ले निरमलोजी॥प्रणमे पाय नरिंद, आराधे मार्ग भलोजी ॥ १ ॥जगम थावर जीव, आप समाना राखिएजी॥ जाणी दोप अपार, मृपा भाख न भाखीएजी ॥ २ ॥ स्वामी जीव जिनदेव, गुरु अदत्ता न आदरेजी ॥ वाडी विसुध विशेप, सुधो सीयल समाचरेजी ॥ ३ ॥ अतर बाहिर भेद, परीग्रह सहु परीहरेजी ॥ रात्री

नहीं पाणी प्यास हो ॥ आरवा न लागे मोवता ॥ लाना लिए निसास हो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ जो कदाचि त देवथी, पलक मिलति जोय हो ॥ सुपने रुखमणी सु खरी, वात करे हरि सोय हो ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जा ग्याथी काइ नहीं, अरतिवत मुरार हो ॥ आव्य नि रासी निद्रडी, फीरी ज्यु देखुं नार हो ॥ श्री० ॥७ ॥ उठत वेसत चालता, सहस रुखमणी होय हो ॥ आ स्या आगे रुखमणी, सुख पामे अवलोय हो ॥ श्री० ॥ ८ ॥ आसन शयन विलोकता, वेदन तो असमा न हो ॥ साजनिया साले नहि, साले ए अहि ठाण हो ॥ श्री० ॥ ९ ॥ अवरा पासेवे नहीं, रुखमणीको सु विलास हो ॥ आवलिया नवि पुगहिं, आवा केरी आ स हो ॥ श्री० ॥ १० ॥ सिता विगेहो रामजी, नय ण श्रावण मेह हो ॥ झडमडी वरसे सही, नारी नी रोपम नेह हो ॥ श्री० ॥ ११ ॥ हु कुण तु कुण इम कही, लखमणजीसु राम हो ॥ झूरी झूरी पजर हुवा, मुद्रा ककण नाम हो ॥ श्री० ॥ १२ ॥ अवरा साथे न एहवो, जेहवो त्रीयसुं चाव हो ॥ मेळावा निकोप री, वेद कियो उपाव हो ॥ श्री० ॥ १३ ॥ रुप नहि काइ एहवो, कला एहवि नाहि हो ॥ मटका मोटा मो हवा, नारी न अवरा माहि हो ॥ श्री० ॥ १४ ॥ आ ल्हर चारु रुखमणी, हीए वसी हरी राय हो ॥ वासर तो निठे नहि, रयणी छमासी थाय हो ॥ श्री० ॥ १५ ॥

मदन कुमरनि मूरति, जोवता जग माहि हो ॥ मारी खी अणदेखवे, पुरुषोत्तम दु ख प्राहि हो ॥ श्री० ॥ ॥ १६ ॥ हेलविया हीरा तणा, फरके फरके हाथ हो ॥ रुखमणी रुखमणी मदनने, सनारे जगनाथ हो ॥ श्री० ॥ १७ ॥ चोसठने सोमी ढालमे, उलनो अधी कार हो ॥ श्री गुणसागर वखाणीयो, प्रेम परम रस सार हो ॥ श्री० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ साव अने परजुनने, अधीको धर्म सनेह ॥ तप जप किजे एकठा, सोखीजे निज देह ॥ १ ॥ चारित्र पाले नीरमलो, ते मोटो मुनिराय ॥ सुमति गुपति खप करे, जीती विषय कषाय ॥ २ ॥ एषणा सुध आहारनि, करे गवेखणा शुद्ध ॥ सुद्धाचारी साधुनो, मारग ए अविरुध ॥ ३ ॥ सतावासे, गुण धरे, साधुतणा सुखकार ॥ मुनिवर महियल सचरे, नेमिनाथनि लार ॥ ४ ॥

ढाल १६५मी ॥ प्रणमी सद्दगुरु पाय, गुणरे गासु राजेमति सतीजी ॥ ए देशी ॥ साव परजुन मुणिंद, चारीत्र पाले निरमलोजी ॥ प्रणमे पाय नरिंद, आराधे मार्ग भलोजी ॥ १ ॥ जगम थावर जीव, आप समाना राखिएजी ॥ जाणी दोष अपार, मृषा नाख न भाखीएजी ॥ २ ॥ स्वामी जीव जिनदेव, गुरु अदत्ता न आदरेजी ॥ वाडी विसुध विशेष, सुधो सीयल समाचरेजी ॥ ३ ॥ अतर बाहिर भेद, परीग्रह सहु परीहरेजी ॥ रात्री

भोजन त्याग, पट काया रक्षा करेजी ॥ ४ ॥ जित्या विपय विकार, पाच इंद्रीना पाडूत्राजी ॥ निरलोभी अणगार, आतमराम रमाडवाजी ॥ ५ ॥ आणी ख मा गुण सार, पर्डीलेहण नल भावशुजी ॥ करण वि सुध विहार, चतुर महा चित चावशुजी ॥ ६ ॥ स जम सुध विसुध, मन वचन काय करी जिएजी ॥ शिता दिरूनी पिड, विविध प्रकारे सही जीएजी ॥ ॥ ७ ॥ मरणातिक उपसर्ग, आया अहिया सिजीए जी ॥ आदि थकी ए टेक, पाळा पावन दिजीएजी ॥ ॥ ८ ॥ साधु गुणे शिरदार, दु कर तप करणी करेजी ॥ पामी लबधी अपार, सुर थइने सचरेजी ॥ ९ ॥ एकातरथी माडी, मासा आया उल्हशीजी ॥ उत्कृ ष्ठा तप किध, कचन जिम काया कशीजी ॥ १० ॥ पच विगयनो त्याग, अरस विरस अन लिजीएजी ॥ समता साथे सनेह, कदही क्रोध न किजीएजी ॥११॥ वर्षा काल विशेप, तरु मूले वासो रहेजी ॥ डास मसा शु द्वेप, नाणे निश्चलता रहेजी ॥ १२ ॥ शियाले अ ति थाडे काया थर हरेजी ॥ शितल वाजे वाय, वाए शिलक विस्तरेजी ॥ १३ ॥ ग्रीषमकाले जोय, लूतावढ वाजे आकरीजी ॥ गिरी शिर धरीयो ध्यान, तदा शी लावे अनुसरीजी ॥ १४ ॥ सुता कुसमरी सेज, इहा काकरामें सथरीएजी ॥ चालता चढी गजराज, इहा अणवाणे पाउ धारीएजी ॥ १५ ॥ करता सोल शिण

गार, इहा उढण जिर्ण पछेवडीजी ॥ चुवा चदन वा
स, इहा मलसु मैली देहडीजी ॥ १६ ॥ पाडे था जग
त्रास, इहा साती होइ चाले खराजी ॥ आलस नही
लिगार, साधु किरियासुं सादराजी ॥ १७ ॥ परीसा
सहे वावीस, सूरपणाथी जितीयाजी॥हिंसादिक अढा
र, पाप सहु अलगा कियाजी ॥ १८ ॥ तेज तपत
दिनकार ॥ चद जिम चढती कलाजी ॥ सायर जेम
गनीर, गुण आचारे आगलाजी ॥ १९ ॥ पढीया
द्वादश अग, नवीक नरा प्रति बुझवेजी ॥ नावे नाव
ना वार, आपे आपो सुझवेजी ॥ २० ॥ आया गढ
गिरनार, कर्म सवल दल नाशीयोजी ॥ पाम्या केव
ल ज्ञानें, लोकालोक प्रकाशीयोजी ॥ २१ ॥ च्यार
प्रकारा देव, खेचर नूचर आवीयाजी ॥ जादव जाद
वराय, मुनी दरशण सुख पावीयाजी ॥ २२ ॥ करि
केवल उछाह, ऋषीमुख देशना साजलेजी ॥ जीवा
जीव विचार, सशय नव नवना टलेजी ॥ २३ ॥ मा
लव देशे स्वामि, साथे सहुसु चालीयाजी ॥ निस्ता
रया वहु लोक, पाप परा नवना टालीयाजी ॥ २४ ॥
पासठ सोमी ए ढाल, वैरागी सुखीया सहुजी ॥ पन्न
णे श्री गुणसूरि, रागी दु ख पावे वहुजी ॥ २५ ॥

दुहा ॥ द्वारामतीनो द्वेषीयो, ते द्वीपायण देव ॥
तप वले पोहची नवीशके, पिण न तजे अहमेव ॥
॥ १ ॥ नावीनो वल आवीयो, काल विनाश जेवार॥

भोजन त्याग, पट काया रक्षा करेजी ॥ ४ ॥ जित्या
विषय विकार, पाच इन्द्रीना पाडूवाजी ॥ निरछोनी
अणगार, आतमराम रमाडवाजी ॥ ५ ॥ आणी क
मा गुण सार, पर्डीलेहण नल नावशुजी ॥ करण वि
सुध विहार, चतुर मह्रा चित चावशुजी ॥ ६ ॥ स
जम सुध विसुध, मन वचन काय करी जिएजी ॥
शिता दिकनी पिड, विविध प्रकारे सही जीएजी ॥
॥ ७ ॥ मरणातिक उपसर्ग, आया अहिया सिजीए
जी ॥ आदि थकी ए टेक, पाग पावन दिजीएजी ॥
॥ ८ ॥ साधु गुणे शिरदार, दु कर तप करणी करेजी
॥ पामी लवधी अपार, सुर थइने सचरेजी ॥ ९ ॥
एकातरथी माडी, मासा आया उल्हशीजी ॥ उत्कृ
ष्टा तप किध, कचन जिम काया कशीजी ॥ १० ॥
पच विगयनो त्याग, अरस विरस अन लिजीएजी ॥
समता साथे सनेह, कदही क्रोध न किजीएजी ॥११॥
वर्षा काल विशेप, तरु मूले वासो रहेजी ॥ डास मसा
शु द्वेष, नाणे निश्चलता रहेजी ॥ १२ ॥ शियाले अ
ति थाडे काया थर हरेजी ॥ शितल वाजे वाय, वाए
शिलक विस्तरेजी ॥ १३ ॥ ग्रीषमकाले जोय, लूतावढ
वाजे आकरीजी ॥ गिरी शिर धरीयो ध्यान, तदा शी
ळावे अनुसरीजी ॥ १४ ॥ सुता कुसमरी सेज, इहा
काकरामे सथरीएजी ॥ चालंता चढी गजराज, इहा
अणवाणे पाउ धारीएजी ॥ १५ ॥ करता सोळ शिण

लवे वाल गोपाल हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ९ ॥ नारी
माखे नाहसु, सघला साथे तोड हो ॥ ता० ॥ जोमी
थी मुझथी खरी, अबका जाउ गोड हो ॥ ता० ॥
वा० ॥ १० ॥ वालक बलता विनवे, माताजीसु एम
हो ॥ ता० ॥ जठराग्नीथी राखिया, आज न राखे
केम हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ११ ॥ सेवकसु स्वामी क
हे, नित्यहि रेहेता पास हो ॥ ता० ॥ ताप न देता
लागवा, अवका जाउ नास हो ॥ ता० ॥ वा० ॥
॥१२ ॥ आ रेणीथी आणीयो, आडो घोमो घाली हो
॥ ता० ॥ अव मुझ मूकि माइजी, का जाउ मुह ठा
लि हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १३ ॥ मीत्र मनोहर माह
रा, मतिसागर तुझ नाम हो ॥ ता० ॥ एह उपद्रव्य
जो टले, तो तुझ नाम सकाम हो ॥ ता० ॥ वा० ॥
॥ १४ ॥ कयने देखी कामनी, कामनिया पिण कथहो
॥ ता० ॥ जे जिम था ते तिम वल्या, अह अह म
गवत हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १५ ॥ वहोत्तरकुल वहोत्तर
कोडीनो, नगरी माहि निवास हो ॥ ता० ॥ साठि कहि
पुर वाहिरी, ए सहु लह्यो विनास हो॥ता०॥वा०॥ १६ ॥

ढाल उदय रतनजी कृत ॥ नगगी वलति देखिने
रे, घणु हुवा दिलगीर ॥ हियडु लाग्यु फाटवारे माइ,
नयणे वछुटा निररे ॥ माधव एम वोले ॥ १ ॥ वधव
वेहु तिहा मिलारे, वात करे करुणा ए ॥ दु ख साले
द्वारका तणुरे माइ, कथ्यु काइ न जायरे ॥ मा०॥२॥

॥ लोक पड्या परमादमे, स्वदछाहार विहार ॥ २ ॥
ढाल १६६ मी ॥ साहीन बाहु जिणेसर विनवु ॥ ॥ ए देशी ॥ तापस वळ पाम्यो ते देवता, उलका पात अपार हो ॥ हो तापस ॥ किधी वाय विकुर्वणा, आणी पुरी मझार हो ॥ १ ॥ तापस बाले नगरी द्वारीका, द्विपायन अति क्रोध हो ॥ ॥ ता० ॥ रिस वसे नर आधलो, नवी पामे प्रतिबोध हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ २ ॥ काष्ट घणाने तृण घणा, जुहरनो सम दाव हो ॥ ता० ॥ आणी मेल्यो एकठो, पामीने प्रस्ताव हो ॥ ता० ॥बा० ॥ ३ ॥ हाहाकार हुवो घणो, आरड नेरड नूरहो ॥ ता० ॥ दूर गया जे मानवी, आणी किया हजुर हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ ४ ॥ गढ मढ पोल प्रकारशु, मदिर महील उदार हो ॥ ता० ॥ राज भुवन सुविशेषथी, बलता न लागे बार हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ ५ ॥ बाल हत्या ने गौ हत्या, ब्रह्मह त्या ने नार हो ॥ ता० ॥ चार हत्या चडालनी, किधी कोडी प्रकार हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ ६ ॥ पार नही पशु पर्खीया, पदमनी करे पूकार हो ॥ ता० ॥ अरे अदेखा पापीया, करे किसु कीरतार हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ ७ ॥ गेरु गोरु आपणा, गती आगे राख हो ॥ ता० ॥ बलती बाला वलवले, दीन मह्रा अति भाख हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ ८ ॥ माहो माहि आफले, सहि न जाइ झाल हो ॥ ता० ॥ निकलवा पावे नहि, वि

लवे वाल गोपाल हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ९ ॥ नारी भाखे नाहसु, सघला साथे तोड हो ॥ ता० ॥ जोमी थी मुझथी खरी, अबका जाउ छोड हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १० ॥ बालक वलता विनवे, माताजीसु एम हो ॥ ता० ॥ जठराग्नीथी राखिया, आज न राखे केम हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ११ ॥ सेवकसु स्वामी कहे, नित्यहि रेहेता पास हो ॥ ता० ॥ ताप न देता लागवा, अबका जाउ नास हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ॥१२ ॥ आ रेणीथी आणीयो, आडो घोमो घाली हो ॥ ता० ॥ अब मुझ मूकि भाइजी, का जाउ मुह ठालि हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १३ ॥ मीत्र मनोहर माहरा, मतिसागर तुझ नाम हो ॥ ता० ॥ एह उपद्रव्य जो टले, तो तुझ नाम सकाम हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ॥ १४ ॥ कयने देखी कामनी, कामनिया पिण कथहो ॥ ता० ॥ जे जिम था ते तिम वल्या, अइ अइ भगवत हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १५ ॥ बहोत्तरकुल वहोत्तर कोडीनो, नगरी माहि निवास हो ॥ ता० ॥ साठि कहि पुर वाहिरी, ए सहु लह्यो विनास हो॥ता०॥वा०॥ १६ ॥

ढाल उदय रतनजी कृत ॥ नगरी बलति देखिने रे, घणु हुवा दिलगीर ॥ हियडु लाग्यु फाटवारे भाइ, नयणे वछुटा निररे ॥ माधव एम बोले ॥ १ ॥ बधव वेहु तिहा मिलारे, वात करे करुणा ए ॥ दु ख साले द्वारका तणुरे भाइ, कथ्यु काइ न जायरे ॥ मा०॥२॥

किहा द्वारकाने साहिबीरे, कीहा गजदलनो ठाठ ॥ साजन मिलावो किहा गयोरे भाइ, खिणमे हुवा घन घाटरे ॥ मा० ॥ ३ ॥ माधव कहे सुणो बधवारे, जा ण्या पूर्वला पाप ॥ अग्नी चउदसे परजलीरे भाइ, का ढो मायने बापरे ॥ मा० ॥ ४ ॥ मातपिता कहे सुणो टाबरारे, न फिरे नेमनी वाण ॥ नूए सयारो आद रोरे, तजी अन्नने पानरे ॥ मा० ॥ ५ ॥ रथ जोडी री खन आणीनेरे, लागी चौदिसे लाह ॥ आपण बहुज ण ताणीएरे भाइ, बलद लेवा कुण जायरे ॥ मा० ॥ ॥ ६ ॥ रथे जुता वे बधवारे, अग्नी विचे पाडी वाट ॥ देवतातो कोप्यो सहिरे भाइ, तुटीने पडीयो माट रे ॥ मा० ॥ ७ ॥ रथ घोमाने वेलु वलेरे, बले बे तालीस लाख ॥ अडतालिस क्रोड पाला बलेरे भाइ, खिणमाहि होइ गइ खाखरे ॥ मा० ॥ ८ ॥ हरी भाखे वलदेवनेरे, धिग धिग जीवत मोय ॥ नगरी बले मु ऊ देखतारे, मारो जोर न चाले कोयरे ॥ मा० ॥ ९ ॥ बलती नगरी देखीनेरे, हु राखि न सकु एम ॥ इंद्र धनुष्य अमे धारीयोरे भाइ, ते बल भागो केमरे ॥ मा० ॥ १० ॥ जेणी दिसे आपणे जोवतारे, सेवक सेहेस अ नेक ॥ हाथ जोडी रहेता खमारे भाइ, आज न दी से एकरे ॥ मा० ॥ ११ ॥ वादल विज तणी परेरे, ऋ द्धि विललाइ सोय ॥ एणी वेलामा आपणुरे, सगो न दी सेकोयरे ॥ मा० ॥ १२ ॥ मोटा मोटा राजवीरे, सरणे

रहेतां आय ॥ उलटो सरणो ताकीयोरे जाइ, वेरण वेला पायरे ॥ मा० ॥ १३ ॥ हरी जाखे बलदेवनेरे. सांभलो बधव वात ॥ धरति आपणसु फिर गइरे जा इ, कोइ दुसमनने वतायरे ॥ मा० ॥ १४ ॥ माधव व चन सांभलीरे, हलधर बोले एम ॥ पाडव फिरी कुंता तणारे जाइ, चालो तेने गामरे ॥ मा० ॥ १५ ॥

ढाल तेहिज मूलगी ॥ हरी माताने रोहिणी, श्री वसुदेव तिवार हो ॥ ता० ॥ अणसणने बले पामीयो, देव तणो अवतार हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १७ ॥ सो ल सहस इरीनी त्रीया, अणसण बले सुर लोक हो ॥ ता० ॥ पोहाते यादवनी त्रिया, अवर अनेरो जो य हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १८॥नेमिनाथनो शीष्यबु, कर तो एम पूकार हो ॥ ता० ॥ नदन श्री वासुदेवनो, देवालियो उबार हो ॥ ता० ॥ बा०॥१९॥श्री हरी हलधर निकल्या, उभा वाहिर जाय हो ॥ ता० ॥ वलती दे खी द्वारिकां, दुख हिए न समाय हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ २० ॥ हलधर श्री हरीसु कहे, आपा अलगी वात हो ॥ ता० ॥ नगरी अवर वसावसा, सांभल सुदर भ्रात हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ २१ ॥ सगो सगानी ज रू अछे, सगो सगा आधार हो ॥ ता० ॥ प्रभुजी पा डव सजारीया, आपदने अधीकार हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ २२ ॥ पाडु मथुराने चल्या, केवल बधव दोय हो ॥ ता० ॥ पाणीहि पावा जणी, साथ न त्रिजो कोय

हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ २३ ॥ न हय न गय वाहणी, पाला पुलाया सोइ हो ॥ ता० ॥ अंतर नयणे नीर खज्यो, दिन पलटे इम होइ हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ॥२४॥ गर्व मतकरजो लहिनो, कोइ एक लिगार हो ॥ता०॥ जो न हुइ नीज कलनी, त्रिजा कवण विचार हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ २५ ॥ लछि आवती जालि, जा ता जाय विगोय हो ॥ ता० ॥ एतो पडयो आशनो, द्वारामाति पति जोय हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ २६ ॥ फि टरे लछी कुलक्षणी, छटकी देखायो छेह हो ॥ ता० ॥ दैव कराव्यो हरी कियो, निगुणी सरसो नेह हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ २७ ॥ निजवल परवल पाधरो, दिन पाधरो जेवार हो ॥ ता० ॥ दिन वाके वाकु स हु, घणु किस्यु वितार हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ २८ ॥ हरी ह लधर तनु वल घणो, सुर वलनो नवी पार हो ॥ ता० ॥ एकही आडो नावीयो, मेटण व्यास विकार हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ २९ ॥ पट मासा लगी द्वारीका, व ली बुझाणी जाण हो ॥ ता० ॥ सायर जल विंटी वल्यो, पूरवले परीमाण हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ३० ॥ गासठ सोमी ढालमें लछि न चाले लार हो॥ता०॥श्री गु णसागर सूरिजी,पुण्य वमो ससार हो॥ता०॥वा०॥३१॥

दुहा ॥ कर्मे इंद्र विगोइयो, कर्मे चंद्र कलंक ॥ क र्मे मोटा राजवी, वनमें भम्या निशंक ॥ १ ॥ सतवं ते आदे साति, कर्मे करी सदोश ॥ कर्मागल नवि बु

टिया, हरी हर ब्रह्मा सरोस ॥ २ ॥

ढाल१६७मी॥माहाविदेह खेत्र सुहामणो॥ ए देशी॥ की धाकर्मन छटिए, राय रंक सम जाय लालरे॥ हरी हलधर दोइ चालिया, पांडव मथुरा जाय लालरे ॥ कि० ॥ ॥ १ ॥ हस्ती कल्पनामे सहि, आयो पुर अभीराम ॥ ला० ॥ दोइ बंधव तिहा बागमे, तरु तले ले विस राम ॥ ला० ॥ कि० ॥ २ ॥ साजन जन लोगा तणो, हरीने बहुलो दुःख ॥ ला० ॥ एताहिमे आकरि, आवी लागी भूख ॥ ला०॥कि० ॥ ३ ॥ भुंडी भूख अ भागणी, वाल्हा खाए तारुं नाम ॥ ला० ॥ आप ज णावण आकति, न गणे ठाम कुठाम ॥ ला०॥ कि० ॥ ४ ॥ हलधरसु हरजी कहे, ए वैरीनो वास॥ ला० ॥ नृपथे दत डरामणो, मति आणो विसवास ॥ ला० ॥ कि० ॥ ५ ॥ ल्यो मुझ करनी मुद्रडी, वेची सारो काम ॥ ला० ॥ लावो खावा सुखडी, बाकी लावो दा म ॥ ला० ॥ कि० ॥ ६ ॥ हलधर पुरी माहे चल्यो, कंदोइनी पास ॥ ला० ॥ नामांकित सा मुद्रडी, जोइ वाचे उल्हास ॥ ला० ॥ कि० ॥ ७ ॥ वात जणावी रायने, राजा दलबल साज ॥ ला० ॥ घेरी लीधो सा कडे, नाद कियो बलराज ॥ ला०॥कि० ॥ ८ ॥ नाद सुणी हरी धाइयो, मारे लात किमाड ॥ ला० ॥ उडीने अलगा पड्या, आणी जिती राड॥ला०॥कि०॥ ॥ ९ ॥ भाग भली पिण खोखरी, तो पिण हाडी योग

॥ला०॥राजा वशी पगे लागीयो, पगे लाग्या सहु लोग ॥ ला०॥ कि०॥ १० ॥ पुनरपी आया बागमे, हलधर शु नृप स्वामी ॥ ला०॥ आरोगी ते सुखडी, चाल्या आगे ताम ॥ ला० ॥ कि०॥११ ॥ वन कोसंबे पोहोंचीया, त्रष्या व्यापी अपार ॥ ला० ॥ सुतो हरी तरु गयडो, पुगी वेला वार ॥ ला० ॥ कि० ॥ १२ ॥ हलधर जल लेवा गयो, आयो जरत कुमार ॥ ला० ॥ सो वाण तिहा साधीयो, जाणी हरण तेवार ॥ ला० ॥ कि० ॥ १३ ॥ विंधाणो पग बाणशु, धिग धिग करतो सोय ॥ ला० ॥ जरत कुमर हरी आगले, आवी उभो होय ॥ ला० ॥ कि० ॥ १४ ॥ हरी भाखे सुण भाइला, तुझने कोइ न दोश ॥ ला० ॥ जारे जा उतावलो, हलधर करशे रोस ॥ ला० ॥ कि० ॥ १५ ॥ सहनाणी ने आपीयो, कौस्तुभ रत्न प्रधान ॥ ला० ॥ लेइ चाल्यो एतले, बुथ्या हरीना प्राण ॥ ला० ॥ कि० ॥१६॥ गशठ सोमी ढालमे, कृष्ण तणो निरवाण ॥ ला० ॥ श्री गुणसागर सूरिजी, प्रवचन वचन प्रमाण ॥ लालरे ॥ कि० ॥ १७ ॥

ढाल उदय रत्नजी कृत ॥ गर्व न करजोरे गात्रनो, आखर एह असाररे ॥ राखु केहनुरे नही रहे, कर्म न फिरे किरताररे॥गर्व०॥१॥सडण पडण विद्धसण, जे हवो माटीनु भडरे॥ क्षिणमा वाजे ते खाखरु, ते किम रहे अखभरे ॥ग०॥२॥मोहने पुगीने जे जिमे, पान

खाय चूटी चूटी वींटरे॥ ते मोह वधाणा फाडुए, काग डा चरकता वींटरे ॥ ग० ॥ ३ ॥ मोह मरमीने मोजो करे, कामनीसु करे गजे केलरे ॥ ते जइ सुए सम सानमां, मोह ममताने मेलरे ॥ ग० ॥ ४ ॥ हस हस बोलता हेजमा, नरनारी लाख कोडिरे ॥ ते जइ सुए मसाणमां, धनकण कचन गेम्हिरे ॥ ग० ॥ ५ ॥ को ड उपाय जो किजीए, तो पिण नवि रहे नेटीरे ॥ स जन मिळी सहु तेहने, करे अगननी भेटिरे ॥ ग० ॥ ॥ ६ ॥ कृष्ण सरिखो जुउ राजीउ, बलभद्र सरिखो जो वीररे॥जगल माहे जुउ तेहने, ताकी मारशे तीररे॥ ग० ॥ ७ ॥ बत्रीस सहस अतेउरी, गोवालीणी सो ल हजाररे ॥ तिरसे तरफे ते श्रीकमो, नही को पाणी पानाररे ॥ ग०॥ ८॥ कोड सिला करे धरी, गिरधारी धरयु नामरे ॥ वेठा न थाय ते वले, जुउ कर्मना कामरे ॥ ग० ॥ ९ ॥ जन्मता केणे नवि जाणीउ, मरता नही को रोनाररे॥ महा अटवी माहे एकलो, पड्यो करे पू काररे ॥ ग० ॥ १० ॥ गबिलो छत्र धरावतो, फेरवतो चारे दिश फोजरे ॥ वनमा वासुदेव जिहा वसा, वसे जिहा वनचर रोजरे ॥ ग० ॥ ११ ॥ गजे बेसी जेह गाजता, थती जिहा नगारानी ठोररे ॥ घुअड होला तीहा घुघवे, सावज करेछे सोररे ॥ ग० ॥ १२ ॥ ज रा कुमर तीण जगल वसे, ते खेलेछे सकाररे ॥ हरी पगे पदम ते हेरीउ, मृगनी भ्राते तेणे ठाररे ॥ ग०॥

॥ला०॥राजा वशी पगे लागीयो, पगे लाग्या सहु लोग ॥ ला०॥ कि०॥ १० ॥ पुनरपी आया बागमे, हलधर श्रु नृप स्वामी ॥ ला०॥ आरोगी ते सुखडी, चाल्या आगे ताम ॥ ला० ॥ कि०॥११ ॥ वन कोसत्रे पोहोंचीया, त्रष्या व्यापी अपार ॥ ला० ॥ सुतो हरी तरु छाय डी, पुगी वेला वार ॥ ला० ॥ कि० ॥ १२ ॥ हलध र जल लेवा गयो, आयो जरत कुमार ॥ ला० ॥ सो बाण तिहा साधीयो, जाणी हरण तेवार ॥ ला० ॥ कि० ॥ १३ ॥ विंधाणो पग बाणशु, धिग धिग करतो सो य ॥ ला० ॥ जरत कुमर हरी आगले, आवी उभो होय ॥ ला० ॥ कि० ॥ १४ ॥ हरी भाखे सुण भाइला, तुझने कोइ न दोश ॥ ला० ॥ जारे जा उतावलो, ह लधर करशे रोस ॥ ला० ॥ कि० ॥ १५ ॥ सहनाणी ने आपीयो, कौस्तुभ रत्न प्रधान ॥ ला० ॥ लेइ चा ल्यो एतले, छुट्या हरीना प्राण ॥ ला० ॥ कि० ॥१६॥ बाशठ सोमी ढालमे, कृष्ण तणो निरवाण ॥ ला० ॥ श्री गुणसागर सूरिजी, प्रवचन वचन प्रमाण ॥ लालरे ॥ कि० ॥ १७ ॥

ढाल उदय रत्नजी कृत ॥ गर्व न करजोरे गात्रनो, आखर एह असाररे ॥ राखु केहनुरे नही रहे, कर्म न फिरे किरताररे॥गर्व०॥१॥सडण पडण विद्धसण, जे हवो माटीनु भंडरे॥ क्षिणमा वाजे ते खाखरु, ते कि म रहे अखभरे ॥ग०॥२॥मोहने पूगीने जे जिमे, पान

भु जाणीयो, हलधर बोले ताम ॥ २ ॥

ढाल १६८ मी ॥ गुराजी थें मुने गोडे न राख्यो ॥ ए देशी ॥ उठो प्रभुजी पिवो पाणी, अणमिलता ए ती वार लगाणी ॥ तु मुझ बधव प्राण पियारो, भाइ जी मानो बोल हमारो ॥ उ० ॥ १ ॥ हुतो शेवक आ दि तुमारो, गोकुलमा तु फिरत कुमारो ॥ ते दिनथी तु प्रितम प्यारो, हु न रहु तुमथी खिण न्यारो ॥ उ० ॥ २ ॥ पूर्व भवतर नेह घणेरो, गगदत्तने ललीताग भलेरो ॥ चारीत्र पाली देव विमानी, पुनरपी आप ण प्रित थपाणी ॥ उ० ॥३॥ एतितो प्रभु कदही न की धी, हम तुम्ह एकला सप्रासिधी ॥ वासर जाणी आ ज अपूठो, कहेरे बधव तु पिण रूठो ॥ उ० ॥ ४ ॥ दु ख भरी आख्या आसु ढाले, उचो निचो खरोही नि हाले ॥ कोइ नही जे रोतो राखे, रान रोज मिली ए ही साखे ॥ उ० ॥ ५ ॥ खाधे धरी चाल्या वलदेवा, षटमास लगी करता सेवा ॥ सुर द्रष्टात अनेक बतावी, दाघ दियो हलधर समजावी ॥ उ० ॥ ६ ॥ चारण ऋ षि समजावा आयो, जिननो प्रेरयो वली मन भायो ॥ सजम लेइ पाले निरतो, विषय कषाय थकी मन वि रतो ॥ उ० ॥ ७ ॥ रुखमणी आदि आठे देखि, इग्या रे अग पढी सुविशेखी ॥ वरस विस व्रत पाली सारी, मास सलेखणा मोक्ष सिधारी ॥ उ० ॥ ८ ॥ सब अ ने परजुन मुनिसा, चारीत्र पाली सोल वरीसा ॥ ग्र

॥ १३ ॥ तीर मारयो तेणे तार्णाने, पग तले बल पूररे ॥पग भेदीने ते निसरयो, तीर पड्यो जइ दूररे ॥ ग० ॥ १४ ॥ आप बले तब उठी कहे, रे रे हुं कृष्णरे ॥ बाणे केणे मुझने विंधीउ, एहवो कोण छे पापीष्टरे ॥ ग० ॥ १५ ॥ शब्द ते कृष्णनो सांभली, वृक्ष तले जरा कुमाररे, कहे वसुदेव पुत्रहुं, रहुं आरण्य मझाररे ॥ ग० ॥ १६ ॥ कृष्ण रखोपाने कारणे, वरस थया मुझने बाररे ॥ पिणमें न दीठु कोइ मानवी, आज ल गे नीरधाररे ॥ ग० ॥ १७ ॥ दुष्ट कर्म तणे उदे, इ हां आव्या तुमे आजरे ॥ मुझने हत्यारे आपवा, व ली लगाडया लाजरे ॥ ग० ॥ १८ ॥ कृष्ण कहे उठो आव वधवा, जिण कारण तु सेवेछे वन्नरे ॥ ते हु कृष्ण ते मारीउ, न मिटे श्री नेमना वचनरे ॥ ग० ॥ १९ ॥ ए निसाणी पाडवाने आपजो, तु इहांथी जारे वेगरे ॥ नहीं तो बलभद्र मारशे, उपजशे उदवेगरे ॥ ग० ॥ ॥ २० ॥ आ समे किम जाउ वेगलो, जोरे मोकलेवे मुरारेरे ॥ फिरी पाछो जोतो थको, वरसतो आंसु जलधा ररे ॥ ग ०॥ २१ ॥ दृष्टि अगोचर ते थयो, ए ढाल अ ति रसालरे ॥ उदयरत्न कहे एटली थइ, सहुको सुण जो उजमालरे ॥ ग० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ जरत कुमर वेगे करी, पाडव मथुरा जाय ॥ जल लेइ हरी पाखती, हलधर आयो धाय ॥१॥ उ ठो प्रभु पाणी पिवो, देव न बोले जाम ॥ रिसाणो प्र

वे हो, रुप नहि ए फद ॥ रु० ॥ माननिया मत मो हनि हो, पाछा फिरयारे मुणिंद ॥ रु० ॥ ४ ॥ एको गहिल गिमारडी हो, राचे रुप रसाल ॥ रु० ॥ सब बीधी सुदर नारिना हो, होसे कवण हवाल ॥ रु० ॥ ॥ ५ ॥ चद समावे तापने हो, ए जग प्रगटी रीत ॥ रु० ॥ लहे ताप जग चदथी हो, एतो अति विपरीत ॥ रु० ॥ ६ ॥ सूर कह्यो उद्योतमे हो, जोरे करे अंधार ॥ रु० ॥ सूर नहि ए साचलो हो, राहु तणो अवतार ॥ रु० ॥ ७ ॥ नाव करीछ निरमे हो, जावण पेले पार ॥ रु० ॥ जो वोले जलधारमे हो, तो कुण राखणहार ॥ रु० ॥ ८ ॥ अजरामर कारी कह्यो हो, आछा अमृत पान ॥ रु० ॥ कुण वडतण वाधवो हो, करता जगनो जान ॥ रु० ॥ ९ ॥ दिठे दरिशण साधुने हो, सजम गुणनो पोख ॥रु०॥ जो रे असजम उपजे हो, तो ए मोटो दोष ॥ रु० ॥ १० ॥ जाणी लाभ विशेषथी हो, साह करे व्यापार ॥ रु० ॥ तोटे जे विरचे नहि हो, पावे नाम गिमार॥ रु० ॥ ११ ॥ आज पछी वस्ती विशे हो, मे नावेवो एह ॥ रु० ॥ किधो निश्चे आकरो हो, जगल साथे नेह॥रु०॥१२ ॥ ॥ दु कर तप करणी करे हो, समता रुपी होइ ॥ रु० ॥ वनमाहि आहारानि हो, करे गवेपणा सोइ ॥ रु०॥ ॥१३॥मास खमण करता भला हो, साठि महा सुखकार ॥ रु० ॥ पाच खमण पण एटला हो, चार चोमा

त्रुजे सथारो साधी, मोटा मोटी पद्वी लाधी ॥ उ०॥ ॥ ९॥ साढे त्रिकोटी कुमर कहिया, मदन सामिने सा थे लहिया ॥ ते सघलाए शिव गती पामी, नाथ नि रजन अतरजामी ॥ उ० ॥ १० ॥ अनीकयसादिक ते पट वधु, क्रियावत महा गुणसिंधु ॥ विमल पणे विमलाचल आवी, अमल विमल गति उत्तम पावि॥ उ० ॥ ११ ॥ जादवने जादवनी नारी, मोक्ष गया ब हु कर्म निवारी ॥ नामसु गोत सदा सुखदाइ, त्रिवि धि त्रिकाल नमु चितलाइ ॥ उ० ॥ १२ ॥ अडसठ अने सोमी ढाले, श्रीवलदेव महा व्रत पाले ॥ श्रीगुणसा गर सूरि सोहावे, हर्ष धरी ऋषीना गुणगावे॥उ०॥१३॥

दुहा॥ श्रीवलदेव महा मुनी, द्विविध शिष्य सयूत ॥ पडित राज शिरोमणी, समदम गुण सपूत ॥ १ ॥ तुगीया गिरी शिखरे, ध्यान तणो अधिकार॥भिक्षा ले वा पुरी भणी, आवे श्री अणगार ॥ २ ॥

ढाल १६९ मी ॥ झुमखडानी देशी ॥ भिक्षा ले वा पुर भणी हो, आवे श्रीअणगार ॥ रुडा साधु नमु ॥इयां मारग सोधता हो, गयवरनी गति सार ॥ रु डा साधु नमु ॥ १ ॥ कुवा काठे कामनी हो, सात पा चनी जोड ॥ रु० ॥ काढे पाणी हेजशु हो, खाचे हो डा होड ॥ रु० ॥ २ ॥ रुपे मोही भामनीहो, गाफील थइ ते वार ॥ रु० ॥ फासो देइ सुतने गले हो, न ल हे शुद्धि लिगार ॥ रु० ॥ ३ ॥ श्री ऋषीजी चित चिंत

र ॥ ज० ॥ २ ॥ लुण विना जिम रसवती, भोजन वि
ण तबोल॥ दान विना कमला जिसी, साच विना जि
म बोल ॥ ज० ॥ ३ ॥ कथ विना जेम कामनी, सील
विना सिणगार, पुत्र विना घर आगणो ॥ राय विना द
रबार ॥ ज० ॥ ४॥ करणी तिम वड भावना, न लहे
सोभ लिगार॥ भार थकी भारे घडो, भाव वधो ससा
र ॥ ज० ॥ ५ ॥ दान नाम धनथी हुवे, सिल रोकेवो
चित्त ॥ तप करी काया सोखवि, भावे न लागे वित्त॥
ज० ॥ ६ ॥ श्री मरुदेवा स्वामिनी, आदिनाथनी मा
त ॥ भाव बले भवजल तरी, ए भगट्यो अवदात ॥
ज०॥७॥श्री भरते सर भावना, भावे ते केवल लाव ॥
तिमही आठ पटोधरा, भावन जोर अगाध ॥ ज० ॥
॥ ८ ॥ पुत्र एलाची जोइ ज्यो, किण विध सारया का
ज ॥ एम द्रष्टात अनेकजी, परतक्ष दिसे आज ॥
ज०॥९॥ दूध जीमण जिम भावना, काजी क्षूद्र प्रणाम
॥भावनाठे भव नासनी, लाभ घणो विण दाम ॥ज०
॥१०॥ सत्तर सोमी ढालमे, भाव कियो शिरदार ॥ श्री
गुणसागर न्यायए, हरिण लह्यो पद सार ॥ ज० ॥११॥

दुहा ॥ जरत कुमर जाइ कह्यो, भुवा भाइया
साथ ॥ विद्धसण द्वारामति, काल कियो जगनाथ ॥
॥१॥ ए आभरण हरी कठनो, आप्योछे धरी नेह ॥
भुवाजी हिवे आजथी, आस मत करसो एह ॥ २ ॥

ढाल १७१ मी ॥ भाग्य प्रबल नृप चदनोरे ॥ ए

सी सार ॥ रु० ॥ १४ ॥ पठि अपठि राखके हो, ते
से ध्यान अनूप ॥ रु० ॥ मतिको देखे खेचरी हो, मो
हे माहरे रुप ॥ रु० ॥ १५ ॥ अमृतवाणी वीशपथी
हो, विधीसु दीए उपदेस ॥रु० ॥ वाघ सिंघ प्रतिबो
धीया हो, हींसा तजेरे असेस ॥ रु० ॥ १६ ॥ हरिण
एक हख्यो खरो हो, सेवा करे सुजाण ॥ रु० ॥ साथे
फिरे जिम चेलणा हो, पाम्यो पुण्य प्रमाण ॥ रु० ॥
॥ १७॥ एक दिवस रथ कारने हो, जाणी भोजन यो
ग॥ रु० ॥ साधु पधारया वोहोरवा हो, मिलीयो शुभ
सजोग ॥ रु० ॥ १८ ॥ वोहोरावे रथकारजी हो, वो
होरे श्री ऋपीराय॥ रु० ॥ भावना भावे हरिणलो हो,
घमी पोहोति आय ॥ रु० ॥ १९ ॥ तुटि शाखा तरु
ताणि हो, चपाणा ते तिन ॥ रु० ॥ स्वर्ग पचमे देव
ता हो, सुर सुखमें लयलिन ॥ रु० ॥ २० ॥ ए गुण
त्तरसोमी ढालमे हो, राम ऋपी निरवाण ॥ रु० ॥ श्री
गुणसागर सूरिजी हो, किजे सघ कल्याण ॥ रु०॥२१॥

दुहा ॥ राम ऋपी सुरगति लहि, तपतणे परकार
॥ दान गुणे रथकारजी, मृगलो वडो विचार ॥ १ ॥

ढाल १७० मी ॥ आजतो आणद वधामणा, दि
ठा ऋषभ जिणद॥ए देशी॥ साधु कहे भवि सामलो,
पहनो एह विचार ॥ दान सीयल तपने विषे, भावन
नो अधीकार ॥ १ ॥ जगमें मोटी भावना, भावो हृद
य मझार ॥ भाव थकी भवनीधी तरे, पामे भवनो पा

मझावणीरे, माता साथ करतरे माय ॥ उपज्यो ते वि णसे सहीरे, एम कहे अरिहतरे माय ॥ कु० ॥ ११॥ इद्र चद्र नर देवतारे, जिण चक्री गणधाररे माय ॥ जम आगल नवी छुटीयारे, अवरा किस्यो विचाररे माय ॥ कु० ॥ १२ ॥ चाल्या ते चाली गयारे, नही ते चालण हाररे माय ॥ समझी न करे आपणीरे, सा चो सोइ गिमाररे माय ॥ कु० ॥ १३ ॥ चावनचावी आपणोरे, पथी पथ पुलायरे माय ॥ तिम आगल कि रतारनेरे, रच न रहेणो जायरे माय ॥ कु० ॥ १४ ॥ ए उपदेश विशेपथीरे, माताजी सुसता थायरे माय ॥ धरम करेवा कारणेरे, खिण लाखेणी जायरे माय॥कुं० ॥ १५ ॥ एकोत्तर सोमी ढालमेरे, धर्म नंदना बोलरे माय ॥ श्री गुणसागर सूरिजीरे, अमीय समा निर मोलरे माय ॥ कु० ॥ १६ ॥

दुहा॥ पाडव प्रभु मन चिंतवे, साधु योग जो था य ॥ तो तो कारज सारीए, ज्ञान वले जिनराय ॥ १॥ धर्मघोष मुनिश्वरु, पाच सया परीवार ॥ पाडव मथु रा आवीया, सर्व जीवा हितकार ॥ २ ॥ पाडव ताम पधारीया, वदन श्रीगुरु देव ॥ देशना सुणे सुहामणी, साचवता अति शेव ॥ ३ ॥

ढाल १७२ मी ॥ हनुमतो वीर आयो ॥ ए देशी ॥ समझो हो तुम्हे भवी प्राणी, ए जगत विणाशि जाणी ॥ श्री जिन धर्म आराधो, समताए शिवही सा

देशी ॥ कुंति कालिम कापीयोरे, धरणी पडी ततकाल रे माय ॥ दु ख भरती अति रोवतिरे, त्रिलरे सा श्रस रालरे माय ॥ कु० ॥ १ ॥ हाहा ए स्यु निपनुरे, अण चितव्यु वली श्रामरे माय ॥ जाइ नामे घणु पामतारे, शितलता अभिरामरे माय ॥ कु० ॥ २ ॥ हरी हलध रनी सुरतिरे, मुरती अवर न कोयरे माय ॥ मरदाना मरदा सिरेरे, एह अवस्था होयरे माय ॥ कु० ॥३॥ इन्द्रपुरी द्वारामतिरे, सघलाही जगनो साररे माय ॥ कनक मय सुर निरमइरे, जली वली हुइ ठाररे माय ॥ कु० ॥ ४ ॥ गुण संभारो एहनारे, निरमल गंगा नीररे माय ॥ हरूकुदण लागी हिएरे, नयणे चाल्या निररे माय ॥ कु० ॥५ ॥ परउपगार शिरोमणीरे, हा बंधव हा भ्रातरे माय ॥ वहीला आवो वालहारे, कर वा मोसु वातरे माय ॥ कु० ॥ ६ ॥ हियडा हिवे तु स्युं रह्योरे, गयो ते तुझ आधाररे माय ॥ जाइ माधव मि लस्ये क्यारे, जिडनो भजण हाररे माय ॥ कु० ॥७॥ द्राभ्ना डाया पापीयारे, तापस थारी वाटरे माय ॥ परू ज्यो मारे कोसणेरे, उपायो उचाटरे माय ॥ कु० ॥ ॥ ८ ॥ उग्यो आडबर घणेरे, आथमता नही वाररे माय ॥ सूर सरीखो जादवारे, होइ गयो भवहाररे मा य ॥ कु० ॥ ९ ॥ साजनीया साले घणुरे, संभारया सो वाररे माय ॥ जेविण घडी नवी चालतुंरे, किम चालसे जम वाररे माय ॥ कु० ॥ १० ॥ धर्मनद स

वतरनी वली, नाखो श्री गुरुराज ॥ नवसायरने तार वा, तुम्ह वम सफरी जिहाज ॥ २ ॥

ढाल १७३ मी ॥ वीर वखाणी राणि चेलणा जी ॥ ए देशी ॥साधु कहे नृप साम्नलोजी, पूर्व नवतर वात ॥ पाचहि तुम परन्नव तणाजी धुरथी सुणो अ वदात ॥ सा० ॥ १ ॥ एक स्थानक वसता हुताजी, पच सहोदर सार ॥ करसणनी अजीविकाजी, आप दनारे नडार ॥ सा० ॥ २ ॥ सुरतिने सातनु जा णीएजी, देवने सुमति सुजाण ॥ नामे सुनद्रक पाचमोजी, प्रितीतणो मडाण ॥ सा० ॥ ३ ॥ श्री जसोधर गुरु पाखतीजी, लीधो सजम नार ॥ सुमति गुपति व्रत पालताजी, महियल करेरे विहार ॥ सा० ॥ ॥ ४॥तप जप करणि आगलाजी, आगला गुणेरे आ चार ॥ शास्त्र कला करी आगलाजी, आगला धर्म विचार ॥ सा० ॥ ५ ॥ सुरति कर्यो कनकावलिजी, रतनावलिय विशेख ॥ सातनु सूरी मुगतावलिजी, सुम ति तणो तप देख ॥ सा० ॥ ६ ॥ सिंहानि केडी न साचव्योजी, आंबिल तप वृवमान॥साधु सन्नद्रनो जा णावोजी, ए तप पच प्रधान ॥ सा ० ॥ ७ ॥ मास स लेहणा विधी करीजी, स्वर्ग अनुत्तर पाम॥ ए तुम आ विने उपनाजी, पचह्वी पाडव नाम ॥ सा० ॥ ८ ॥ एम सुणि व्रत आदर्याजी, परीक्षतने देइ राज ॥ पच मुनिसर मोटकाजी, सारे सारे आपणा काज ॥

धो ॥ स० ॥ १ ॥ त्रिवीध वाता वैरागो, जोग जयंक
र नागो ॥ जोगे जुल्या जे जोला, जटके जिम गिरी
टोला ॥ स० ॥ २ ॥ दिसे कारमी काया, वाधी रही
अति माया ॥ पहीरण खाण अणूगे, रोग व्यथा करी
पूरी ॥ स० ॥ ३ ॥ चिहु गती माहे नर गाढो, रुल
ता नवि हुउ थाढो ॥ आज लगी अत नवी आवे, द
रसणथी दोलत पावे ॥ स० ॥ ४ ॥ त्रिकर्ण सुध रा
खीजे, करणी फल चाखीजे ॥ आठ मदनो परीहारो,
करता भवनो पारो ॥ स० ॥ ५ ॥ इद्री जीतेवा काठा,
इद्रीयाना फल घाठा ॥ नरक नीगोदमे पडीया, काल
घणो रडवडीया ॥ स० ॥ ६ ॥ विकथा चारु निवारी,
पाम्या प्रभुता नारी ॥ विकथा वाही डोकरडी, सघलाए
नाखे खरडी ॥ स० ॥ ७ ॥ विसन वीलुधा विगुता, हिंवे
वे एहा हुना ॥ साता साते फरशीजे, तजीया शिव द
रशीजे ॥ स० ॥ ८ ॥ पाप अठारे परीहरीए, अपज
सथी अति डरीए ॥ दिन दु खी उद्धरीए, पुण्ये करी
घर भरीए ॥ स० ॥ ९ ॥ श्री गुरुराया ए वाणी, अ
म्रतपान समाणी ॥ समता केरी सहनाणी, पाडव पा
चा सोहाणी ॥ स० ॥ १० ॥ बहोत्तरने सोमी ढाले, पा
डव पाप पखाले ॥ सूरि गुणसागरजी साचो, श्री जि
नमत हिरो जाचो ॥ स० ॥ ११ ॥

दुहा ॥ सदगुरु केरी देशना, दूध सरीखी जाण॥
घूट घूट पिधी पाडवा, पूछे जोडी पाण ॥ १ ॥ पूर्वभ

गति मझारतो ॥ सरसी राखी स्वामीजी, अलगी न करी एक लीगारतो ॥ ध० ॥ ४ ॥ आरज देश अ नारजे, विचरे हे स्वामी करत विहारतो ॥ प्रतिबोध्यां भविजन घणां,केइ समकित केइ व्रत धारतो॥ध०॥५॥ जाणी समय निरवाणनो, स्वामी आव्या हे गढ गीर नारतो ॥ दिधी भली देशना, जीव घणाना काम समा रतो ॥ ध० ॥ ६ ॥ पच सया षट तिससु, सथारो हे किधो सुविसालतो ॥ शोग धरता सामठा, आया इद्र हे चलि ततकाल तो ॥ ध० ॥ ७ ॥ स्वामी प धारया शिवपुरी, जनम जरानो हे प्रभु आण्यो अ ततो ॥ ज्ञानादिक वर आठसु, सिद्धगुणे हे सोहे भ गवततो ॥ ध० ॥ ८ ॥ ससकार काया भणि, चदन काठे हे किधोभे तामतो ॥ हाढा लीधी सुरपतिए, सुर लोके हे पूजण अभीरामतो ॥ ध०॥९॥ द्वीप गया नं दिश्वरे, आठ दिवसहे उच्छव अधिकार तो ॥हरी पोहता निज स्थानके, समरता हे श्री जिन गुण सारतो॥ध० ॥ १०॥ श्री गिरनारे जिन तणा, दिख्या नाण हे अ ने निरवाणतो ॥ कल्याणीक तिने भला, ते माटे हे ए स्थानक प्रधानतो ॥ ध० ॥ ११ ॥ नेम जिणद आ णदमे, जय जय हे जिनवर जगदिश तो ॥ रग वि नोद वधामणा, पूरवज्योहे श्री सघ जगीसतो ॥ध०॥ ॥ १२ ॥ चमोत्तर सोमी ढालमे, भाख्यो भाख्योहे नि रवाण कल्याणतो ॥ मेरु परे जे मोटीको, गुणसागरहे

सा० ॥ ९ ॥ मात कुताने द्रोपदिजी, चारित्र लियो ते हीवार ॥ कर्मपखे तिम धर्मनेजी, पद्म तजी नहि लार ॥ सा० ॥ १० ॥ तिहुत्तर सोमी ए ढालमेजी, पाड वनोरे वैराग ॥ श्री गुणसागर सावसेजी, मुनिवर मोक्षनो माग ॥ सा० ॥ ११ ॥

दुहा ॥जगजीवन जगवछलु, जगपति जग प्रतिपाल ॥ विचरेछे महिमडले, श्री जिन नेम दयाल ॥ १ ॥ नेम दयाले देवता, सौरीपुरी उद्यान ॥ रेवतकाचल मस्तके, हार मनाइ जाण ॥ २ ॥ जरासधना युद्धमे, जरा व्यापना काल ॥ दल रोकी सहु राखिया, नूप अपुठो वाल ॥ ३॥ दहनकाले द्वारामति, जो जिन हुतो माहि ॥ तो द्विपायन द्वारिका, वालि न शकतो प्राहि ॥ ४ ॥ गुण अनत नगवतना, कहिता न आवे अत ॥ गगनवमे गुण आगला, गाढो विद्यावत ॥ ५ ॥

ढाल १७४ मी ॥ धन धन सीयल सोरोमणी ॥ ए देशी ॥ धन धन नेम जिनेसरु, धन धन यादव वस उदारतो ॥ पुरुष रतन जिहा उपना, तेतो त्रीनुवनना शीणगारतो ॥ ध० ॥ १ ॥ जीव घणा प्रनु तारीया, तारीतारी राजेमति वर नारतो॥पहिले मुगते मोकली, जाणो जाणो राखे ठाम समारतो ॥ ध० ॥२ ॥ प्रिती पनोती पालवी, गाढि गाढि हे काठी जगमे जोयतो ॥ राजुल साथे नेमजी, ठेहा ठेहे हे निपाहि सोइतो ॥ ध०॥३॥किहा नर नव किहा सुरनवे, किहारे मनोहर मु

गति मझारतो ॥ सरसी राखी स्वामीजी, अलगी न करी एक लीगारतो ॥ ध० ॥ ४ ॥ आरज देश अनारजे, विचरे हे स्वामी करत विहारतो ॥ प्रतिबोध्या भविजन घणा,केइ समकित केइ व्रत धारतो॥ध०॥५॥ जाणी समय निरवाणनो, स्वामी आव्या हे गढ गीरनारतो ॥ दिधी छेली देशना, जीव घणाना काम समारतो ॥ ध० ॥ ६ ॥ पच सया षट तिससु, सथारो हे किधो सुविसालतो ॥ शोग धरता सामठा, आया इद्र हे चलि ततकाल तो ॥ ध० ॥ ७ ॥ स्वामी पधारया शिवपुरी, जनम जरानो हे प्रभु आएयो अततो ॥ ज्ञानादिक वर आठसु, सिद्धगुणे हे सोहे भगवततो ॥ ध० ॥ ८ ॥ ससकार काया भणि, चदन काठे हे किधेछे तामतो ॥ हाढा लीधी सुरपतिए, सुर लोके हे पूजए अभीरामतो ॥ ध०॥९॥ द्वीप गया नंदिश्वरे, आठ दिवसहे उत्त्व अधिकार तो ॥हरी पोहता निज स्थानके, समरता हे श्री जिन गुण सारतो॥ध० ॥ १० ॥ श्री गिरनारे जिन तणा, दिख्या नाण हे अने निरवाणतो ॥ कल्याणीक तिने भला, ते माटे हे ए स्थानक प्रधानतो ॥ ध० ॥ ११ ॥ नेम जिणद आणदमे, जय जय हे जिनवर जगदिश तो ॥ रग विनोद वधामणा, पूरवज्योहे श्री सघ जगीसतो ॥ध०॥ ॥ १२ ॥ चमोत्तर सोमी ढालमे, भाख्यो भाख्योहे निरवाण कल्याणतो ॥ मेरु परे जे मोटीको, गुणसागरहे

सूरि साधु सुजाणतो ॥ ध० ॥ १३ ॥

दुहा ॥ पाडव पाच महामुनी, छठी कुता माय ॥ पचाली ए सातहि, तप करी सोले काय ॥ १ ॥ गुण आचारे आगला, दुक्कर दुक्कर कार ॥ चरम शरीरी प्राणीया, पुनरपी नही अवतार ॥ २ ॥

ढाल १७५ मी ॥ ते मुनी वदो ते मुनी वदो ॥ ए देशी ॥ मुनिसर पाडव पच सुहावदा, सुहावदारे सुहावदा ॥ महामुनीसर कहावदा, वन आगणे जिहा आवदा, तिहा मोती थाल वधावदा ॥ मु० ॥ १ ॥ गाम नगर पुर पाटण विचरे, भवी नरा मन भावदा ॥ ज्ञान ध्यानसुं तत्व पिछानी, एकातम समझावदा ॥ मु० ॥ ॥ २ ॥ राग द्वेष दो दूर निवारी, त्रिकर्ण सुध करावदा ॥ च्यार कषाय तजण चतुराइ, इद्री पाच दमावदा ॥ मु० ॥ ३ ॥ पिहरीया पट काया केरा, भय साते नवी आणदा ॥ मद आठे परीहरी नव विध, सियल सदा सुख जाणदा ॥ मु० ॥ ४ ॥ दसही प्रकारे धर्म धरदा, इग्यारे अग पठावदा ॥ वारे व्रत प्रतीमा पाले, क्रिया तेर तजावदा ॥ मु० ॥ ५ ॥ चउदे भेदे जीव विचारी, कोढा कारज सारदा ॥ जगम तिरथ जिवन जगना, आप तरे पर तारदा ॥ मु० ॥ ॥ ६ ॥ इती कल्पपुर वनमे आया, वहीरण साधु खदा वदा ॥ मोक्ष कल्याणीक नेम तणो सुणी, शेत्रुजे सिधावदा ॥ मु० ॥ ७ ॥ अठारे हजार मुनी परीवारे,

सघारो ग्रहावदा ॥ माताजीसु पाचे पाडव, केवल मोक्ष लहावदा ॥ मु० ॥ ८ ॥ अवर मुनिश्वर केइ म गति, केइ स्वर्ग वसावदा ॥ शेप कर्म बाकी सोवन ने, सुर सुखनो चित लावदा ॥ मु० ॥ ९ ॥ पचाली पचम सुर लोके, नवही माही रहावदा ॥ अणगम तो आहार दियाथी, अजुह पार न पावदा ॥ मु० ॥ ॥ १० ॥ नारद ऋषी विधी वात करीने, निश्चल मन फरसावदा ॥ पाप पखाली अणसण पाली, शिव गति नु दरसावदा ॥ मु० ॥ ११ ॥ पचाहत्तर सोमी ढाले, पाण्डव शिव पद पावदा ॥ श्री गुणसागर सुरि उजागर, नागर गुरु गुण गावदा ॥ मु० ॥ १२ ॥

दुहा ॥ सघ चतुरविध तिर्थमे, शातिनाथ दातार॥ थूलिभद्र आचारमे, मत्रमे नवकार ॥१॥ मणीमा मणी चितामणी, ग्रह गणमे दिनकार ॥ श्री गौतम गुरु गणधरा, तरुमे सुरतरु सार ॥ २ ॥ सुर माहि जिम सुरपती, नरमें नरपती जेम ॥ वसामे हरी वसजी, विश्व वदीतो तेम ॥ ३ ॥

ढाल १७६ मी॥ श्रेणीक राय हुरे अनाथी निग्रथ ॥ ए देशी ॥ मे गायो श्रीहरी वश उदार, सरीयारे मन वछित काज ॥ मे० ॥ पामी परसंसा खरी, अधिकाइरे उपनी आज ॥ में० ॥ १ ॥ वारे दसमा जिन तणे, वस ए उतपन ॥ मे० ॥ विस्तरी शाखा घणी, काइ हुवारे बहु पुरुष रतन ॥ मे० ॥ २ ॥ अपर ना

म सोहामणो, नृप यदुथी जोय ॥ मे० ॥ राय यादव
राजीया, काइ पुहवीरे परसिद्ध सोय ॥ मे० ॥ ३ ॥
विसमो वली बावीसमो, ए वंशे जिणंद॥मे०॥उपजीया
आणंद, काइ आयारे तिहा चोसठ इंद्र ॥ मे० ॥४॥
कृष्णने बलदेवजी, वसमे अवतंस ॥ मे० ॥ वासी न
गरी द्वारीका, काइ किधोरे आंर कुळ विध्वंस ॥ मे०॥
॥ ५ ॥ मात फूइयाए नाइ नला, धर्म नंदने जिम ॥
॥ मे० ॥ शक्र सुत शोना धरी, काइ प्रौढीरे पौरखनी
शिम ॥ मे० ॥ ६ ॥ सब अने परजुनना, बळ तणो
नही पार ॥ मे० ॥ एक एकाथी वमा, काइ अगणीत
रे हरी वंश कुमार ॥ मे० ॥ ७ ॥ इंद्रनगरी द्वारीका,
द्वारीका पिण सोय ॥ मे० ॥ उपमा सरखी सही, कां
इ अंतररे न दिसे कोय ॥ मे० ॥ ८ ॥ नित हरख वि
नोदमें, नित हरख विलास ॥ मे० ॥ द्वारीका नगरी
तणो, काइ नितकोरे वधतोरे वास ॥ मे० ॥ ९ ॥
नित्य सुत जनमोछवु, नित्य सुत निसाल ॥ मे० ॥ नि
त्य सुत परणेतना, काइ करीएरे घर घर कल्याण ॥
मे० ॥ १० ॥ खेल खेलनातो खरा, घुघराना घमकारज
मे० ॥ धोक धपमप मादला, काइ वाजेरे वाजींत्र अ
पार ॥ मे० ॥ ११ ॥ किजीए जिन सेवना, साधु नाग
ती अपार ॥ मे० ॥ नली नावे नावना, काइ नाविया
रे नल नाव उदार ॥ मे० ॥ १२ ॥ प्रघल नाव प्र
नावना, परम पुण्य प्रकाश ॥ मे० ॥ श्रीफला श्री

कागणी, कांइ पुगिरे पुगी मन आश ॥ मे० ॥ १३ ॥
नारी निकी शोभती, पहेरीयां पटकुल ॥ मे० ॥ तनु
सोल शिणगार करी, काइ बोलेरे मुख मीठा बोल ॥
मे० ॥ १४ ॥ रगरोल कचोलभा, थाले मोती सार ॥
मे० ॥ करे सुगुरु वधामणा, काइ वरतेरे जिनमतनी
वार ॥ मे० ॥ १५ ॥ आज अछे दिवालिका, नारी का
क झमाल ॥ मे० ॥ आज परव पजूसणां, काइ किजे
रे उछव सुविसाल ॥ मे० ॥ १६ ॥ मीले साहमी सा
मटा, साहमीणी सुविचार ॥ मे० ॥ धवल मगल चा
रसु, काइ जन जनरे जय जयकार ॥ मे० ॥ १७ ॥
गछ स्वगछ परिमाणसु, विजयवत विशेष ॥ मे० ॥
श्री विजय गछ राजीया, काइ दिपेरे गुरु धर्म नरेश
॥ मे० ॥ १८ ॥ विजयऋपी विद्याबली, धर्मदास मु
निश ॥ मे० ॥ क्षमासागर खेमजी, काइ जेहनिरे ज
गमाहि जगिश ॥ मे० ॥ १९ ॥ श्री पद्मसागर सूरिजी,
सुजस सुजस भरपूर ॥ मे० ॥ पाय प्रणमी श्रीगुरु त
णा काइ पभणेरे गुणसागर सूरि ॥ मे० ॥ २० ॥ स
मत सोल वहोत्तरे, मास श्रावण शुद्ध ॥ तिज सोम सु
मुहूरता, काइ वासररे वारु अविरुद्ध ॥ मे० ॥ २१ ॥
कुर्कटेश्वर नगरमें, पार्श्व स्वामी पसाय ॥ सघने उछ
कपणे, काइ रचियोरे मे चरित सुभाय ॥ मे ॥ २२ ॥
ढालसागर नाम ए, श्री हरिवसनो विस्तार ॥ शुद्ध
भावे साभले, काइ पामेरे सुख सपत्ति सार ॥ मे० ॥

म सोहामणो, नृप यदुथी जोय ॥ मं० ॥ राय यादव राजीया, काइ पृहवीरे परसिद्धा सोय ॥ मे० ॥ ३ ॥ विसमो वली बावीसमो, ए वंशे जिणंद॥मे०॥उपजीया आणंद, काइ आयारे तिहा चोसठ इंद्र ॥ मे० ॥४॥ कृष्णने वलदेवजी, वसमे अवतंस ॥ मे० ॥ स्वामी नगरी द्वारीका, काइ किधोरे आंर कुल विध्वस ॥ मे०॥ ॥ ५ ॥ मात फूइयाए जाइ जला, धर्म नदने निम ॥ ॥ मे० ॥ शक्र सुत शोभा धरी, काइ प्रौढीरे पौरखनी शिम ॥ मे० ॥ ६ ॥ सव अने परजुनना, बल तणो नही पार ॥ मे० ॥ एक एकाथी वमा, काइ अगणीत रे हरी वंश कुमार ॥ मे० ॥ ७ ॥ इंद्रनगरी द्वारीकां, द्वारीका पिण सोय ॥ मे० ॥ उपमा सरखी सही, कांइ अतररे न दिसे कोय ॥ मे० ॥ ८ ॥ नित हरख विनोदमें, नित हरख विलास ॥ मे० ॥ द्वारीका नगरी तणो, काइ नितकोरे वधतोरे वास ॥ मे० ॥ ९ ॥ नित्य सुत जनमोछवु, नित्य सुत निसाल ॥ में० ॥ नित्य सुत परणेतना, काइ करीएरे घर घर कल्याण ॥ मेँ० ॥ १० ॥ खेल खेलनातो खरा, घुघराना घमकार मे० ॥ धोक धपमप मादला, काइ वाजेरे वाजींत्र अपार ॥ मे० ॥ ११ ॥ किजीए जिन सेवना, साधु भाग ती अपार ॥ में० ॥ भली भावे भावना, काइ भावियारे भल भाव उदार ॥ मे० ॥ १२ ॥ प्रघल भाव प्रभावना, परम पुण्य प्रकाश ॥ में० ॥ श्रीफला श्री

॥ २३ ॥ एकसो व्हुत्तरे ए, ढालनो सोजाग ॥ आदे तो आशावरी, काइ अतेरे धन्याश्री राग ॥ मे० ॥ ॥ २४ ॥ जब लगे गिरी मेरुजी, सकल गिरीवर इश ॥ तब लगे हरीवस ए, काइ थाज्योरे धीर विश्वा विस ॥ मे० ॥ २५ ॥

कलश ॥ हरिवस गायो सुजम पायो, ज्ञान वृद्धि प्रकाशनो ॥ पाप त्राठो गयो नाठो, पुण्य आयो आशनो ॥ १ ॥ कर्ण पुत्र कलत्र कमला, पढत सुणत सोहाम णो, पुज्य श्री गुणसूरि जपे, सघरग वधामणो ॥ २ ॥ ॥इति हरिवस ढालसागर खड ९ ढाळा १७८ समाप्त॥

[illegible]

॥ [illegible] ॥

जैन धर्म सवधी छपेला पुस्तकोनु सूचीपत्र.